| | | |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

सिद्धान्तकौमुदी–

# अर्थप्रकाशिका

## अर्थात्

( सिद्धान्तकौमुदी गत उदाहरणों के अर्थ एवं विशिष्ट शब्दों का परिचय )

लेखक–

आचार्य राधारमण पाण्डेय

उप-प्रधानाचार्य (अवकाश प्राप्त)

क्वीन्स कालेज, वाराणसी

**मोतीलाल बनारसीदास**

दिल्ली : वाराणसी : पटना

प्रकाशक—
सुन्दरलाल जैन
© मोतीलाल बनारसीदास
पो० बा० ७५, नेपाली खपरा, वाराणसी

मुद्रक
जय भारत प्रेस
बाँसफाटक, वाराणसी.



प्रथम संस्करण
१९६६


...पया



सर्वविध पुस्तक प्राप्तिस्थान—
मोतीलाल बनारसीदास : बैंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली–७
मोतीलाल बनारसीदास : पो० बा० ७५, नेपाली खपरा, वाराणसी
मोतीलाल बनारसीदास : माहेश्वरी मार्केट, बाँकीपुर, पटना

# देश का नामकरण

प्रत्येक द्वीप, वर्ष, वन, पर्वत, नदी, नद, नगर तथा स्थानों के नामकरण का कुछ न कुछ आधार अवश्य होता है। किसी वस्तु की अभिव्यक्ति के पश्चात् ही उसका नामकरण होता है क्योंकि उस वस्तु को अभिव्यक्त करने के लिए कोई संज्ञा अवश्य होनी चाहिये। ऐसा भी होता है कि विद्वान् किसी किसी नाम का काल्पनिक हेतु कल्पित भी कर लेते हैं। उदाहरणार्थ कनखल को ही लीजिये। उत्तराखण्ड का यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है। स्कन्द पुराणके गंगा-माहात्म्य खण्ड में लिखा है—खलः को नाम मुक्ति वै भजते तत्र मज्जनात्। अतः कनखलं तीर्थं नाम्ना चक्रुर्मुनीश्वराः। अन्य विद्वान् कथासरित्सागर ३।४ के आधार पर इसको कनकखल (सुवर्ण का खलिहान) का अपभ्रंश मानते हैं। परन्तु यह सब कल्पना ही है क्योंकि अग्निपुराण १०९।१७ में कणखल शब्द का उल्लेख हैं। कण=अन्न का खलिहान। इससे निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि वह उत्तम तथा प्रचुर अन्न का विस्तृत स्थान रहा होगा। अतः उसका यह नामकरण हुआ।

वर्धमान ने गणरत्नमहोदधि में वाराणसी की व्युत्पत्ति में लिखा है कि वराणसो देशः, तत्र भवा नगरी वाराणसी। अर्थात् वराणस जनपद में स्थित होने के कारण नगरी का नाम वाराणसी पड़ा। इसी प्रकार हिमाधिक्य के कारण हिमालय नाम पड़ा। कलिन्द पर्वत से निकलने के कारण यमुना का नाम कालिन्दी हुआ। दरद जनपद में बहने के कारण सिन्धु का एक नाम दारदी भी है। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु के नाम पर विचार करने से यही निष्कर्ष निकलता है कि सभी नामकरण का कुछ न कुछ आधार अवश्य होता है। अब यह विचारणीय है कि हिन्दुस्तान का प्राचीनतम नाम क्या है तथा वह नामकरण क्यों हुआ।

हिन्दुस्तान का प्रागैतिहासिक काल का एक नाम अजनाभवर्ष श्रीमद्भागवत में मिलता है—अजनाभं नामैतद्वर्षं भारतमिति यत आरभ्य व्यपदिशन्ति। श्रीमद्भागवत ६-७-३। परन्तु यह नाम इस पुस्तक के अतिरिक्त अन्य किसी प्राचीन साहित्य में नहीं मिलता। कुछ विद्वानों की धारणा है कि यही नाम प्राचीनतम है। इसका दूसरा प्राचीन नाम भारतवर्ष है। प्रायः समस्त भारतीय वाङ्मय में यह नाम उपलब्ध है। इस नामकरण के तीन दृष्टिकोण कहे जाते हैं—

(१) ऋग्वेद में अग्नि का एक पर्याय भारत मिलता है—तस्मा अग्निर्भारतः शर्म संयत् ऋ० ४-२५-४। अग्निर्वै भरतः सर्वदेवेभ्यो हव्यं भरति—कौषीतकी ३।२। एष (अग्निः) हि देवेभ्यो हव्यं भरति तस्माद् भरतोऽग्निरित्याहुः। शतपथ १।४।२।२। महाभारत में भी अग्नि का पर्याय भरत मिलता है—भरत्येव प्रजाः सर्वास्ततो भरत उच्यते—महाभारत वनपर्व २११-१। अर्थात् अग्नि का नाम भरत है क्योंकि वह समस्त प्रजा का पालन-पोषण करता है। अग्नि के साथ ही प्रजा का भी क्षेत्र विस्तृत होता गया अर्थात् जहाँ जहाँ आर्यजन यज्ञादि करते तथा बसते गये उस समस्त प्रदेश का नाम भारतवर्ष पड़ गया।

(२) सृष्टि के आदि मानव मनु का नाम भी भरत मिलता है क्योंकि उन्होंने सब प्रजाओं को उत्पन्न करके उनका पालन-पोषण भी किया—प्रजानां भरणाच्चैव मनुर्भरत उच्यते। निरुक्तवचनैश्चैव वर्षं तद् भारतं स्मृतम्—मत्स्य पुराण-११४-५। मनु ने इस देश में मानव को जन्म देकर उनके वंश का अभिवर्द्धन किया अतः इस देश का नामकरण भी उन्हीं के आधार पर भारतवर्ष हुआ।

ऋग्वेद काल में आर्यों की एक प्रतापी शाखा का भी नाम भरत था। व्यास तथा सतलज नदियों को पार कर वे जन जिस देश में बसे, वह देश भारत कहलाया—यदं गवा भरताः संतरेयुर्गव्यन् ग्राम इषित इन्द्रजूतः—ऋग्वेद ३-३३-११। स्थूल रूप से यह कहा जा सकता है कि उस समय केवल कुरु जनपद प्रदेश का नाम भारत रहा होगा।

(३) दुष्यन्त के पुत्र शाकुन्तलेय भरत महाप्रतापी चक्रवर्ती राजा हुए हैं—ऐतरेय ८।२३ तथा शतपथ १३।५।४।११ के अनुसार उन्होंने यमुना तट पर अठहत्तर तथा गंगा तट पर पचपन यज्ञ किये थे। शतपथ ब्राह्मण में तो यहाँ तक लिखा है कि उन्होंने समस्त भूमण्डल को जीत कर एक हजार से भी अधिक यज्ञ के घोड़ों को इन्द्र को अर्पित किया—शकुन्तला नाऽपित्यप्सरा भरतं दधे परः सहस्रानिन्द्रायाश्वान्मेध्यान् य आहरद्विजित्य पृथिवीं सर्वामिति —शतपथ १३।५।४।१३। अतः उनके नाम पर देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

बौद्ध साहित्य में इसका नाम जम्बूद्वीप भी मिलता है। पुराणों में इसी को कुमारीद्वीप भी कहते हैं। परन्तु ये नाम अधिक प्रचलित न हो सके।

वर्तमान काल में समस्त विश्व में इस देश का प्रचलित नाम हिन्दुस्तान अथवा इण्डिया है। कुछ लोगों की धारणा है कि यह नाम विदेशियों द्वारा रक्खा गया है परन्तु यह उनका भ्रम है। यह नाम भी भारतीय ही है। ऋग्वेद में महान् नद सिन्धु का नाम आया है। सिन्धु के इस पार का पञ्चनद अथवा वाहीक जनपद भारतीय सीमा के अन्तर्गत था ही, उसके उस पार का भी प्रदेश, जहाँ तक का जल सिमटकर सिन्धु में आता है और जिसमें कुभा (काबुल), सुवास्तु (स्वात), गौरी (पंजकोरा), गोमती (गोमल), क्रमु (कुर्रम) आदि नदियाँ हैं—सिन्धव अथवा सप्त-सिन्धव कहलाता था। आर्य जन इस नाम से पूर्णतया परिचित थे।

सीमा—प्रत्येक देश की सीमा समय-समय पर बदलती रहती है। प्राचीन काल में हमारा देश बड़ा विस्तृत था अर्थात् समस्त पूर्वी अफगानिस्तान, कपिश, हिन्दूकुश का प्रदेश या काफिरिस्तान, कम्बोज, गल्चाभाषी प्रदेश आदि भारत के अन्तर्गत थे। भारत की सीमा का उल्लेख अनेक पुराणों में मिलता है—उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमवद्दक्षिणं च यत्। वर्षं तद् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा। वायु पुराण ४५।७५। उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥ विष्णु पुराण २।३।१। आयतो ह्याकुमारीक्यादागङ्गाप्रभवाच्चवै। वायु पुराण ४५।८१। आयेतस्तु कुमारीतो गंगायाः प्रभवावधिः। मत्स्य पुराण ११४।१०। भारतमहासागर के उत्तर तथा गंगा के उद्गम के दक्षिण के देश का नाम भारतवर्ष है। गंगा के सबसे ऊपरी स्रोत जाह्नवी का उद्गम जंस्कर शृंखला में है। भारत महासागर के पूर्वी भाग का प्राचीन नाम महोदधि (बंगाल की खाड़ी) था—प्राप तालीवनश्याममुपकण्ठं महोदधेः—रघुवंश ४–३४, तथा पश्चिमी भाग का नाम रत्नाकर (अरबसागर) था—रत्नाकरं वीक्ष्य मिथः स जायां रामाभिधानो हरिरित्युवाच। रघुवंश १३।१।

विभाग—प्राचीन काल में भारतवर्ष के मुख्य दो भाग थे, प्राच्य तथा उदीच्य। अमरसिंह ने लिखा है—देशोऽयं भारतं वर्षम् शरावत्यास्तु योऽवधेः। देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः। इसकी विभाजक नदी का नाम शरावती था। शरावती के विषय में विद्वानों में बड़ा मतभेद है। विल्फोर्ड ने वाणगंगा को, जो रुहेलखण्ड के बदायूँ जिले से होकर बहती है, शरावती माना है। उन्होंने वाण तथा शर के अर्थ को ध्यान में रखकर ऐसा निश्चय कर लिया होगा। आर० एल० मित्र के ललितविस्तर के अनुसार अवध के फैजाबाद के समीपस्थ सरयू नदी का प्राचीन नाम शरावती प्रतीत होता है। नन्दलाल दे श्रावस्ती का विकृत रूप शरावती मानते हैं। उनका अनुमान है कि इस नदी के तट पर स्थित होने के कारण नगरी का नाम श्रावस्ती पड़ गया। आजकल श्रावस्ती को सहेत-महेत कहते हैं। अब श्रावस्ती नदी को राप्ती कहते हैं। कुछ विद्वान् पंजाब की राबी नदी को शरावती मानते हैं परन्तु उपर्युक्त स्थापनाओं में से कोई भी समुचित नहीं जान पड़ती क्योंकि पाणिनि की अष्टाध्यायी के अनेक सूत्रों तथा उनके भाष्य में अनेक प्राच्य तथा उदीच्य स्थानों का उल्लेख है। उनमें से अनेक स्थानों का निर्णय हो चुका है। यदि इनमें से किसी भी नदी को शरावती मान लिया जाय तो उनकी संगति नहीं बैठती। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का मत है कि शरावती का दूसरा नाम शरदण्डा हो सकता है। दोनों में अर्थसाम्य तथा प्रथम के दो अक्षरों की समानता है। वाल्मीकि रामायण में वर्णन है कि जब अयोध्या का दूत भरत को उनके मामा के यहाँ से बुलाने के लिए केकय की राजधानी गिरिव्रज (शाहपुर) गया था तो उसको शरदण्डा नदी पार करनी पड़ी थी। अतः शरदण्डा दृषद्वती

श्री

# अपना उद्देश्य

एक जनश्रुति है कि किसी वैयाकरण और नैयायिक में विद्या-विवाद हो रहा था। नैयायिक ने अपशब्द का प्रयोग कर दिया। वैयाकरण ने आपत्ति की। इस पर नैयायिक ने कहा "अस्माकूनां नैयायिकानाम् अर्थरि तात्पर्यम् नतु शब्दरि"।

इसी प्रकार की एक दूसरी जनश्रुति है कि महावैयाकरण महर्षि पाणिनि किसी जंगली मार्ग, से एकाकी यात्रा कर रहे थे। मध्य में एक व्यक्ति ने उनसे कहा "महाशय, इस मार्ग में व्याघ्र रहता है आप इधर से न जाइये।" यह सुनकर महर्षि ने सोचा कि "विशेषेण आसमन्तात् जिघ्रतीति व्याघ्रः; अर्थात् जो अच्छी तरह चारों ओर सूँघे वह व्याघ्र है। व्याघ्र से क्या हानि है जो मैं इधर से न जाऊँ" और उसी मार्ग से चलते गये। मार्ग में व्याघ्र मिला और उनको मार डाला। इस जनश्रुति का पोषक एक श्लोक पञ्चतन्त्र में उपलब्ध है—सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिनेः...... ॥ इस जनश्रुति का तात्पर्य यह नहीं है कि महर्षि को व्याघ्र शब्द का अर्थ ज्ञात नहीं था। उनको तो संस्कृत वाङ्मय के प्रत्येक शब्द का यथार्थ ज्ञान था। इस जनश्रुति के उद्धरण का अभिप्राय केवल यह है कि परवर्ती वैयाकरण केवल रूपसाधनिका पर विशेष ध्यान देते थे, किसी शब्द में अनुस्वार, विसर्ग, ह्रस्व, दीर्घ, णत्व, तालव्य शकार तथा मूर्धन्य षकार किस प्रकार हो गया केवल इसकी छानबीन अच्छी तरह करने लगे, शब्दों के अर्थ पर विशेष ध्यान देना छूट गया। इसका परिणाम यह हुआ कि भाष्यान्त व्याकरण पढ़ा हुआ विद्वान् श्रीमद्भागवत आदि क्लिष्ट ग्रन्थों का अर्थ नहीं कर सकता था। हमारे गुरुजन ने भी इसी प्रकार हमको पढ़ाया। कोई भी सुबुद्ध वैयाकरण किसी शब्द की सिद्धि किस धातु तथा प्रत्यय से हुई, ठीक ठीक बतला देगा, परन्तु प्रत्येक शब्द का अर्थ नहीं बतला सकता।

एक बार ब्रह्मीभूत आचार्य केशव प्रसाद मिश्र ने मुझसे कहा कि हम लोग सिद्धान्तकौमुदी पढ़ जाते हैं, सभी शब्दों की सिद्धि कर लेते हैं परन्तु उन सबका अर्थ-ज्ञान नहीं कर पाते। तुम सिद्धान्तकौमुदी के सूत्रों के उदाहरणों के अर्थ लिखो। उन्होंने दो चार उदाहरणों के अर्थ पर प्रकाश भी डाला। मुझको यह कार्य महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक जान पड़ा। मैंने इसका श्रीगणेश भी कर दिया। परन्तु खेद है कि थोड़े ही दिनों के बाद आचार्य जी चल बसे और मैं उनके निर्देशन से वञ्चित रह गया। मैं कुछ हतोत्साह हो गया। कार्य में शैथिल्य ही नहीं अवरोध हो गया। कुछ दिनों बाद उनकी आज्ञा का पालन करना कर्तव्य समझकर येन केन प्रकारेण इसको करने लगा और चिर काल के बाद अब सम्पन्न हो सका।

इसके लिखने का लक्ष्य केवल यह है कि वैयाकरण शब्दसिद्धि मात्र पर ध्यान न देकर उनके अर्थों पर भी ध्यान दिया करें। यदि वे लोग अर्थ-ज्ञान के लिये थोड़ा सा भी सचेष्ट रहेंगे तो वे अत्यधिक लाभान्वित हो सकेंगे। कौमुदी के बहुत उदाहरण सुपरिचित हैं उनके अर्थ लिखने की कोई आवश्यकता न थी, फिर भी उनका छोड़ना समुचित न जान पड़ा, इसलिए राम, कृष्ण, हरि, नर वानर आदि का भी अर्थ लिख दिया गया। कौमुदी में संस्कृत वाङ्मय वेद, उपनिषद्, पुराण, इतिहास, काव्य आदि से तथा भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षा, राजनीति, धर्म तथा दर्शन आदि से शब्द लिये गये हैं। इनमें कुछ शब्द तो ऐसे हैं जो अभी तक कहीं मिल ही न सके।

यदि किसी कोश में मिले भी तो कोशकार ने अर्थ लिखने के स्थान पर वहाँ लिख दिया है कि पाणिनि के अमुक सूत्र का उदाहरण।

पाणिनि ने अनेकों बन, नदी, पर्वत, ग्राम नगर आदि के नामों की सिद्धि के लिए नियम बनाये हैं। इनकी पहचान असम्भव नहीं तो कठिन तो है ही। इनमें से अनेक ग्राम तथा नगर नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं। जो बचे भी हैं उनमें से अधिकांश के नामों में इतना परिवर्तन हो गया कि उनका पहचानना असंभव न भी हो तो दुष्कर अवश्य है। फिर भी जिनकी पहचान विद्वानों ने अब तक की है उनका विवरण अलग से दिया गया है। कारण उनका केवल आधुनिक नाम लिख देने से काम न चलता। उदाहरणों के सामने उनका नाम लिख दिया गया है। इसी प्रकार पाणिनि काल में प्रचलित मुद्राएँ तथा परिमाण भी अलग से लिखे गये हैं। उदाहरणों के जो अर्थ लिखे गये हैं वे किसी न किसी आधार पर लिखे गये हैं केवल अनुमान से नहीं। हाँ कहीं कहीं अनुमान का आश्रय भी वाध्य होकर लेना पड़ा है।

उदाहरणार्थ-अयस्कुशा शब्द का अधिकांश कोशों में संग्रह ही नहीं है। सर मानियर विलियम ने इसका अर्थ लिखा है "एक रस्सी, जिसमें लोहा लगा हो" सम्भवतः उनका तात्पर्य उस रस्सी से है जिसमें लोहे के तार भी बटे हों। परन्तु यह अर्थ जँचता नहीं क्यों कि पुरातन काल में ऐसे सूक्ष्म तार अधिक मात्रा में मिलते ही न होंगे जो रस्सी में वटे जायँ, अतः यह अर्थ समुचित नहीं जान पड़ता।

सिद्धान्तकौमुदी के स्त्रीप्रत्यय प्रकरण में जानपद ४-१-४२ सूत्र का उदाहरण कुशी तथा कुशा दिया गया है। काशिकाकार तथा कौमुदीकार दोनों ने लोहे के छड़ के अर्थ में कुशी तथा काष्ठदण्ड के अर्थ में कुशा उदाहरण दिये हैं। तत्त्वबोधिनीकार ने लिखा है—"छन्दोगाः स्तोत्रीया गणनार्थानौदुम्बरान् शङ्कून् कुशा इति व्यवहरन्ति" इससे प्रतीत होता है कि कुशा काष्ठदण्ड के लिए प्रयुक्त होता था। कौमुदीकारने अयस्कुशा का विग्रह "अयः सहिता कुशा अयस्कुशा" लिखा है। इसका अर्थ हुआ कि अयस्कुशा ऐसी लकड़ी के खण्डको कहते थे जिसमें लोहा लगा हो। किसी लकड़ी में लोहा लगा देने मात्र से उसको अयस्कुशा नहीं कहेंगे। लोहा तो अनेक प्रकार की लकड़ियों में लगा होता हैं जैसे बल्लम, फावड़ा, कुल्हाड़ी, हँसिया आदि इन सबके भिन्न भिन्न नाम भी प्रचलित्त हैं।

हल में एक वह भाग होता है जिसमें फाल लगा रहता है उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में उसको कृषक चौभी कहते हैं। मेरा अनुमान है कि उसी के लिए यह शब्द प्रचलित रहा होगा। चौभी हल का मुख्य भाग है उसके लिए कोई शब्द मिला भी नहीं है। यह केवल मेरा अनुमान है साधिकार में नहीं कहता कि अयस्कुशा चौभी को ही कहते है। इसी प्रकार कुछ शब्दों का आनुमानिक अर्थ भी लिखा गया है।

इस पुस्तक को लिखने के लिए कुछ मेरे मित्रों की सम्मति थी कि यह संस्कृत में ही लिखा जाय, परन्तु मुझको यह समुचित नहीं जान पड़ा। पहला कारण तो यह कि संस्कृत में लिखने से केवल संस्कृतज्ञ ही लाभ उठा सकते थे अब राष्ट्रभाषा जानने वाले भी समानरूप से लाभ उठा सकते हैं। दूसरा तथा प्रधान कारण यह था कि संस्कृत में लिखने से मघवा का अर्थ बिडौजा हो जाता जिससे उद्देश्य की पूर्ति न हो पाती। उदाहरणार्थ भस्त्रफला रसभरी मकोय को कहते हैं। इसका पर्याय कठिनता से मिल पाता। तथा इसी प्रकार अनेक बनस्पति वाचक शब्द जो इसमें आये हैं उनका अर्थ यदि संस्कृत में ही लिखा जाता तो कोई लाभ न हो पाता। और भी अनेक प्रकार के शब्द हैं जिनके अर्थ राष्ट्रभाषा में लिख देने से अधिक स्पष्ट हो गये हैं।

शब्दानुक्रमणी प्रस्तुत करने में श्री शम्भुनाथ राय एम० ए० तथा श्री कृष्णकुमार पाण्डेय बी० एस सी० ने बड़ी सहायता की है। अतः उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

स्वर तथा वैदिक प्रकरण के कुछ उदाहरणों का अर्थ ठीक ठीक नहीं ज्ञात हो सका। केवल उनका उल्लेख

दिया गया है। वैदिक उदाहरणों का अर्थ सायण भाष्य के आधार पर लिखा गया है क्योंकि आज कल अनेक व्युत्पन्न तथा प्रतिभाशाली विद्वान् अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार वैदिक मन्त्रों का भिन्न भिन्न अर्थ करते हैं। उनमें से किस का अनुसरण किया जाय। इस असमञ्जस के कारण प्राचीनतम भाष्यकार का ही अनुसरण करना पड़ा। उदाहरणों के अर्थ लिखने में जिन पुस्तकों की सहायता ली गयी है उनका उल्लेख प्रारम्भ में कर दिया गया है तथा उनके विद्वान् लेखकों का आभार भी हृदय से स्वीकार करता हूँ। यदि वे पुस्तकें प्रकाशित न होती तो इस कार्य के सम्पन्न होने में और भी अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता।

इस कार्य की सम्पन्नता के लिए मैं भारत के परम प्रसिद्ध कला मर्मज्ञ तथा पुरातत्त्वकोविद राय श्री कृष्ण दास जी का चिरऋणी रहूँगा, जिन्होंने केवल मुझको प्रोत्साहित ही नहीं किया प्रत्युत सतत व्यस्त रहते हुए भी इसके अधिकांश के देखने का कष्ट भी किया। अपने परम सुहृद् पं० अनन्तशास्त्री फड़के का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने इसको आदि से अन्त तक देखा तथा अनेक सुझाव दिये। इस कार्य में और भी अनेक सज्जनों का सहयोग मुझको प्राप्त हुआ उन सबका नाम न लिख कर मैं उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। यदि इस कार्य से छात्रों का लेश मात्र भी लाभ हुआ तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूँगा।

**राधारमण पाण्डेय**

# विषयानुक्रमणी

नदी है जिसको आजकल चितांग कहते हैं। यही प्राचीन शरावती है। शरावती को पुनीत नदी भी होना चाहिये। क्षीरस्वामी ने लिखा है—प्रागुदञ्चौ विभजते हंसः क्षीरोदके यथा। विदुषां शब्दसिद्धयर्थं सा नः पातु शरावती। अतः चितांग नदी के पूर्व तथा दक्षिण का भाग प्राच्य तथा पश्चिमोत्तर भाग उदीच्य कहा जाता था।

ब्रह्मावर्त्त—प्राच्य तथा उदीच्य भारत के और भी अनेक अवान्तर भाग थे। सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों के मध्यवर्ती प्रदेश को ब्रह्मावर्त्त कहते थे—सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्। तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते। मनु २।१७।

आर्यावर्त्त—भारत के एक विस्तृत भाग का नाम आर्यावर्त्त था। ऊपर कहा जा चुका है कि देश की सीमा में परिवर्तन हुआ करता है तदनुसार इसकी सीमा भी परिवर्तित होती रही है—आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्। तयोरवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधाः। मनु २।२२। पूर्व सागर से पश्चिम सागर तक तथा हिमालय से विन्ध्य तक के भाग को आर्यावर्त्त कहते थे। महाभाष्यकार पतञ्जलि की आर्यावर्त्त की सीमा इससे भिन्न है। उन्होंने लिखा है—प्रागादर्शात् प्रत्यक्कालकवनाद्दक्षिणेन हिमवन्तमुत्तरेण पारियात्रमार्यावर्त्तः। अर्थात् आदर्श ( सरस्वती के लुप्त होने का प्रदेश राजस्थान के रेगिस्तान में स्थित सिरसा के आगे का विनशन ) से पूर्व कालक वन ( संथाल परगना ) से पश्चिम, हिमालय के दक्षिण तथा पारियात्र ( भूपाल से पश्चिम विन्ध्य पर्वतके पश्चिमी भाग से लेकर राजपूताने के अड़ावला पहाड़ तक का सिलसिला ) से [उ]त्तर तक का प्रदेश आर्यावर्त्त है। हेमचन्द्र ने इसी का [ना]म उत्तर भारत, आर्य भूमि, जिनचक्रि की जन्मभूमि, [पु]ण्यभूमि तथा आचारवेदी लिखा है। आर्यावर्तो जन्मभूमि जिनचक्र्यर्द्धचक्रिणाम्। पुण्यभूराचारवेदी मध्ये विन्ध्यहिमालयोः॥

मध्यभारत—प्रयाग के पश्चिम, विनशन के पूर्व तथा हिमालय और विन्ध्य के मध्य भाग को मध्यभारत अथवा [म]ध्य देश कहते थे। आगे चलकर, मगध भी इसी में [स]म्मिलित हो गया था।

अन्तर्वेदी—गंगा तथा यमुना के मध्यवर्ती भाग को अन्तर्वेदी कहते थे। इसका एक पर्याय समस्थली भी था—गंगायमुनयोर्मध्यमन्तर्वेदिः समस्थली।

हिमालय—जम्बूद्वीप के भारतादि वर्षों के विभाजक सात वर्षपर्वत हैं। हिमवान् हेमकूटश्च निषधो मेरुरेव च। चैत्रः कर्णी च शृंगी च सप्तैते वर्षपर्वताः॥ हारावली। हिमवान् अर्थात् हिमालय हमारे भारत का वर्षपर्वत है। सिन्धु तथा ब्रह्मपुत्र नदियाँ हिमालय के उत्तर के समीपवर्ती स्थानों से निकलकर सिन्ध पश्चिम की ओर तथा ब्रह्मपुत्र पूर्व की ओर चलकर हिमालय की उत्तरी सीमा बनाती हैं। इस प्रकार बहुत दूर जाकर दोनों दक्खिन को ओर मुड़ जाती हैं। वे ही स्थान हिमालय की पश्चिमी तथा पूर्वी सीमाएँ हैं। हिमालय की चौड़ाई १५० मील से २०० मील तक है। भूगोलवेत्ताओं ने इस चौड़ाई को तीन भागों में विभक्त किया है। १—बाहरी शृंखला अथवा बाह्य हिमालय या उपगिरि। २—भीतरी शृंखला अथवा लघुहिमालय या बहिर्गिरि। ३—गर्भशृंखला अथवा बृहत् हिमालय या अन्तर्गिरि।

बाहरी शृंखला—प्राचीन काल में इसको बाह्य हिमालय या उपगिरि कहते थे। सिन्ध तथा गंगा के मैदान का उत्तरी किनारा समुद्र की सतह से १००० से ५००० फीट तक ऊँचा तथा २५ से ५० मील तक चौड़ा है। इस भाग में छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। इस उपत्यका में हरिद्वार से देहरादून तक की पहाड़ियाँ, व्यास तथा सतलज के बीच सोलासिंगी शृंखला, व्याससे राप्ती तक की सुप्रसिद्ध शिवालिक शृंखलाएँ (मैनाक), राप्ती घाटी की डुँडवा शृंखला तथा नेपाल तराई की चूड़िया चौकी शृंखलाएँ हैं। इन शृंखलाओं के नीचे दक्खिन की ओर के मैदान को भाभर, तराई अथवा दून ( संस्कृत द्रोणी ) कहते हैं।

भीतरी शृंखला—प्राचीन जन इसको लघुहिमालय अथवा बहिर्गिरि कहते थे। यह शृंखला बाहरी शृंखला के उत्तर प्रारम्भ हो जाती है। इन दोनों शृंखलाओं की सन्धि स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है। इसमें काश्मीर की पीरपंजाल शृंखला, काँगड़ा-कुल्लू-कन्नौर की धौलाधार शृंखला, जौनसार तथा गढ़वाल की नागा टिब्बा शृंखला तथा नेपाल

की महाभारत श्रृंखलाएँ हैं। इसकी चौड़ाई ५० से ७० मील तक है। हजारा, काश्मीर, चम्बा, काँगड़ा, शिमला, गढ़वाल, कुमाऊँ, नेपाल, सिक्किम आदि प्रसिद्ध नगर इसी में हैं। ये नगर चार पाँच हजार फीट से लेकर आठ नौ हजार फीट तक की ऊँचाई पर स्थित हैं।

गर्भ श्रृंखला—प्राचीनकाल में इसको बृहत् हिमालय अथवा अन्तर्गिरि कहते थे। भीतरी श्रृंखला के उत्तर यह श्रृंखला प्रारम्भ होती है। इस पर सदा हिमपात होता रहता है। इसमें नंगा पर्वत, बन्दर पूँछ, केदारनाथ, नन्दादेवी, धौलागिरि, गोसाइं थान, गौरीशंकर, कांचनजंघा आदि शिखर हैं। इस श्रृंखला से चेनाव, यमुना, तीस्ता आदि नदियाँ निकलती हैं। सतलज, गंगा, घाघरा, गंड़की कोसी आदि इस श्रृंखला के और उत्तर से इसको काटकर दक्षिण की ओर नीचे उतरती हैं। इसके शिखरों पर बस्तियाँ नहीं हैं। इसकी ऊँचाई नौ दस हजार फीट से लेकर बारह तेरह हजार फीट तक है। गंगा के सबसे ऊपरी स्रोत जाह्नवी का उद्‌गम जंस्कर श्रृंखला में है। वही श्रृंखला भारतवर्ष की उत्तरी सीमा है।

भूगोल के आधुनिक विद्वानों ने गर्भ श्रृंखला अथवा बृहत् हिमालय को चार भागों में विभक्त किया है। पंजाब हिमालय, कुमायूँ हिमालय, नेपाल हिमालय तथा आसाम हिमालय।

पंजाब हिमालय—यह गर्भ श्रृंखला का बिलकुल पश्चिमी भाग है। यह सिन्धु नदी से सतलज नदी तक लगभग ३५० मील फैला हुआ है। इस श्रृंखला का उच्चतम शिखर नंगा पर्वत है। यह २६००० फीट ऊंचा है। यह शिखर अपने नाम को पूर्णतया सार्थक किये हुए है। इस श्रृंखला के मध्य में नुमकुम नाम का एक विशाल शिखर लगभग २३४१ फीट ऊँचा है। मुख्य श्रृंखला नुमकुम से दक्षिण की ओर नीची होती गयी है। उत्तरी ढाल पर नंगा शिखर तथा स्थान स्थान पर झीलें हैं। यह भाग घने जंगलों से ढका हुआ है। इस भाग को तोड़कर कोई नदी दक्षिण की ओर नहीं जा सकती है। परन्तु सौभाग्य से इस भाग में अनेक दर्रे हैं। उनमें जोजि ला ११५७८ फीट सबसे मुख्य है। एक मार्ग इसी दर्रे से लद्दाख को काश्मीर की घाटी से जोड़ता है। पंजाब हिमालय के पूर्वार्द्ध भाग में धान के खेत तथा चट्टानें अधिक हैं तथा पश्चिमार्द्ध में नंगा पर्वत के आस पास केवल बर्फ से ढकी चट्टानों का आधिक्य है।

कुमायूँ हिमालय—यह सतलज से काली नदी तक फैला हुआ है। इस भाग का उच्चतम शिखर नन्दा देवी २५६४५ फीट ऊँचा है। २०००० फीट से उँचे अन्य अनेक शिखर हैं। उदाहरणार्थ त्रिशूल २३३६० फीट, नन्दकोट २२५१० फीट। दूनगिरि २३१८४ फीट, बद्रीनाथ २३१९० फीट, केदारनाथ २२७२० फीट तथा बन्दर पूँछ २०७२० फीट ऊँचे हैं। कुमायूँ हिमालय के उत्तर से गंगा के स्रोत जाहनवी तथा अलकनन्दा ने उसको तोड़कर हिमालय की गर्भ श्रृंखला के पार अपना मार्ग बनाया है। हिमालय के इस भाग में बहुत बड़ी बड़ी हिमानी ( Glaciers ) पायी जाती हैं। उनमें केदारनाथ गंगोत्री तथा सरस्वती की हिमानियाँ मुख्य हैं।

नेपाल हिमालय—यह कुमायूँ हिमालय की सीमा से लेकर तीस्ता नदी तक फैला हुआ हैं। इस भाग में गौरीशंकर २९००० फीट, कांचन जंघा २८१४६ फीट, मकबू २२७९०, धौला गिरि २६७९५ तथा गोसाईं थान २६२९१ फीट ऊँचे शिखर हैं। कुमायूँ हिमालय की तरह इस भाग को भी अनेक नदियों ने पार किया हैं। उन सभी नदियों का उद्‌गम इन शिखरों के उत्तर की ओर ही है। कर्नली, काली गंडक, बूढ़ी गण्डक, त्रिशूली गण्डक तथा अरुणा कोसी नाम की नदियाँ मुख्य श्रृंखला को काट कर दक्षिण की ओर बहती हैं तथा भारत और तिब्वत के मध्य यातायात के लिए मार्ग बनाती हैं।

आसाम हिमालय—इस भाग का पर्यवेक्षण भारत के प्राचीन भूगोल के विद्वानों ने नहीं किया था। यह भाग तीस्ता नदी से लेकर भारत की पूर्वी सीमा तक फैला हुआ है। इस भाग में केवल नमचा बढ़वा नामक २५४४५ फीट ऊँचा एक ऐसा शिखर है जिसकी समानता नेपाल हिमालय के शिखरों से की जा सकती है। इसी शिखर के दक्षिणी मोड़ के समीप ब्रह्मपुत्र हिमालय से नीचे उतर कर मैदान में आती है।

हिमालय से निकलने वाली नदियाँ—हिमालय भारत की अनेक प्रसिद्ध तथा बड़ी नदियों का जन्मदाता भी है। ऋग्वेद के अनुसार निम्नलिखित नदियाँ इससे निकलती हैं—गंगा, यमुना, शुतुद्रु ( सतलज ),

परुष्णी ( रावी ), सरस्वती, असिक्नी ( चेनाव ), वितस्ता (व्यास), मरुद्वृढा ( सिन्ध ) सुषोमा, त्रिष्टामा, रसा, सुसर्तु, श्वेत्या, कुभा ( काबुल ), मेहत्नु, क्रमु ( कुर्रम ) तथा गोमती ( गौरी )। वाराह तथा पद्म पुराणों में भी कुछ परिवर्तन के साथ प्रायः इन्हीं नदियों का उल्लेख मिलता है।

सिन्धु—यह नदी हिमालय में १०३८०० वर्ग मील तक फैली है। इसकी सहायक नदियाँ भी ५१५१० वर्ग मील हैं। यह नदी दक्षिणी तिब्बत में सिंगीकतल नाम के शिखर से निकलती है। इसके उद्गम के समीपवर्ती जन वहाँ इसको सिंगीकम्पा कहते हैं। वहाँ से निकल कर यह लद्दाख श्रृंखला के समानान्तर उत्तर-पश्चिम की ओर बहती है। इसमें अनेक बड़ी-बड़ी हिमानियों का भी जल आता है। दिव्यगंगा की सात धाराओं में इसकी गणना की जाती है। इन सात धाराओं अथवा नदियों के भिन्न-भिन्न नाम महाभारत तथा मत्स्य पुराण में मिलते हैं। दिव्य गंगा को त्रिपथगा भी कहते हैं। मत्स्यपुराण में नलिनी, ह्लादिनी तथा पावनी पूर्ववाहिनी, सीता, यारकन्द, वंक्षु तथा सिन्धु पश्चिमवाहिनी और सातवीं भागीरथी दक्षिणवाहिनी कही गयी हैं। महाभारत में कुछ परिवर्तन के साथ उनके नाम नलिनी, पावनी, सरस्वती, जम्बू, सीता, गंगा तथा सिन्धु उल्लिखित हैं। उसमें इन सभी का उद्गम बिन्दुसर लिखा है जो कि कैलाश, मैनाक तथा हिरण्यश्रृंग नामक हिमालय के तीन शिखरों के मध्य में स्थित है।

इन सातों नदियों में सिन्धु प्रसिद्ध सिन्ध ( Indus ) नदी है। गंगा के विष्णुपदी, जाह्नवी, मन्दाकिनी, भागीरथी आदि अनेक नाम हैं। सरस्वती पूर्वी पंजाब की प्रसिद्ध नदी है। सीता को कुछ लोग जैक्सर्तेस, कुछ लोग सीरदरिया तथा कुछ लोग यारकन्द कहते हैं परन्तु अधिक प्रसिद्ध यारकन्द ही मालूम पड़ता है क्योंकि इसी के तट पर यारकन्द बसा हुआ है। आधुनिक आक्सस नदी का प्राचीन नाम वंक्षु है। यह मेरु पर्वत से निकलती है। नलिनी अथवा वस्वोकसा का आधुनिक नाम पद्मा है। नन्दलाल दे कुरुक्षेत्र के घग्घर ( दृषद्वती ) को पावनी मानते हैं परन्तु यह समुचित नहीं जान पड़ता।

मत्स्यपुराण के अनुसार ये सातों नदियाँ उस प्रदेश से होकर बहती हैं जहाँ अधिकांश म्लेच्छ जन रहते हैं। हिमालय पर्वत के निचले भाग में स्थित शैलोद पर्वत से शैलोदका नदी निकलती है। शैलोद पर्वत कैलाश के पश्चिम स्थित है। शैलोदा नदी सीता ( चाइकन्द ) तथा वंक्षु ( आक्सस ) के मध्य बहती है। वंक्षु नदी जिस प्रदेश से होकर बहती है उसमें चिनमरु, कालक, चुलक, तुषार, बर्बर, कार, पह्लव, पारद (पार्थिअन) और शक (सीदियन) जन रहते हैं। सिन्ध वरद, कुटज गान्धार, औरस ( औरग ) तथा सौवीर जनों के प्रदेश में होकर बहती है। गंगा नदी यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, विद्याधर, कलाप, ग्रामक, किम्पुरुष, किरात पुलिन्द, कुरु पञ्चाल, कौशिक, मत्स्य, मागध, अङ्ग, वंग, ब्रह्मोत्तर तथा ताम्रलिप्त जनों के निवास स्थान से होकर बहती हैं। ह्लादिनी ( ब्रह्मपुत्र ) से सिक्त प्रदेश में आपकनिपाद, धीवर, ऋषीक, किरात, स्वर्णभूमिक ( भोटिया ) जन रहते हैं। पावनी की पहिचान अभी तक नहीं हो सकी है। सम्भवतः यह भारत के पूर्व तथा चीन के पश्चिम बहने वाली कोई नदी होगी।

सिन्ध की सहायक नदियों में मुख्य इरावती ( रावी ) है। इसका उद्गम कपिष्ठल ( कैथल ) है। असिक्नी ( चेनाव ) तथा विपाशा ( व्यास ) नदियाँ केकय जनपद में बहती हैं। शुतुद्रु ( सतलज ) तथा कुभा ( काबुल ) नदियाँ पुष्कलावती ( चारसड्ढा ) से निकल कर सिन्ध में मिली हैं। सुवास्तु ( स्वात ) तथा गौरी ( पंजकोरा ) भी सिन्धु में ही मिली हैं।

वैदिक साहित्य में चौदह नदियों की चर्चा है उनमें त्रिष्टामा, रसा, सुसर्तु तथा श्वेत्या आदि कुभा के ऊपर की सिन्ध की सहायक नदियाँ हैं। सीलमावती तथा ऊर्णावती भी सिन्ध की सहायक हैं। ये दोनों उस प्रदेश की नदियाँ हैं जो ऊन तथा बहुमूल्य पत्थर के लिये प्रसिद्ध था। ऋग्वेद की आपगा जिसका पर्याय ओघवती है सरस्वती की एक छोटी सहायक नदी है। वहाँ के जन उसको इन्दुमती कहते हैं। यह थानेश्वर के ऊपर सरस्वती तथा दृषद्वती के मध्य में बहती थी।

सिन्ध उत्तर भारत की सबसे प्रसिद्ध नदी है। गंगा को छोड़ कर बड़ाई में कोई नदी इसकी समानता नहीं कर

सकती। ऋग्वेद में इसका बड़ा ही मनोहर वर्णन मिलता हैं। इसकी वहने की शक्ति अतुलनीय कही गयी है।

जम्बुदीवपण्णत्ति नामक एक जैन ग्रन्थ में गंगा, रोहिता–लौहित्य ( ब्रह्मपुत्र ), सिन्ध तथा हरिकान्त नदियों का उद्‌गम दो पद्महृदों से लिखा है। इनमें एक ह्रद भीतरी शृंखला तथा दूसरा गर्भ शृंखला में हैं। जैनियों का पद्म-ह्रद महाभारत का विन्दु सर पाली साहित्य का अनोतत्त तथा संस्कृत साहित्य का मानसरोवर है। महाभारत में गंगा का उद्‌गम मानसरोवर लिखा है। सिन्ध की प्रधान धारा का सम्वन्ध पश्चिमी मानसरोवर से है ही। शुतुद्रु का उद्‌गम भी वहीं है।

सिन्ध नदी प्रारम्भ में दो नदियों की सम्मिलित धारा के रूप में चलती है। एक धारा कैलाश के उत्तर-पश्चिम से निकल कर उत्तर-पश्चिम की ओर तथा दूसरी कैलाश के उत्तर-पूर्व में स्थित एक झील से निकल कर उत्तर-पश्चिम की ओर बहती हैं। दूसरी धारा कुछ दूर चल कर दक्षिण पश्चिम की ओर बहने लगती है। जहाँ दोनों धाराओं का संगम हुआ है वहाँ से वहुत दूर तक उत्तर पश्चिम की ओर वहकर काराकोरम शृंखला के नीचे वह दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। यही मोड़ हिमालय की पश्चिमी सीमा हैं। फिर वहाँ से सिन्ध सर्पाकार होकर दक्षिण पश्चिमी मार्ग का अनुसरण करती हुई अरब सागर में गिरती हैं। उसने अपने मुहाने पर कराची के समीप दो प्रसिद्ध डेल्टा ( delta ) बनाये हैं। आर्य जन सबसे बड़े को प्रसिअन तथा दूसरे को पतल ( प्रस्थल ) कहते थे।

वितस्ता ( झेलम )—इस नदी का उद्‌गम पीर पंजाल शृंखला है। वहाँ से निकल कर यह पूँछ के नीचे वक्राकार मार्ग से पश्चिम को ओर वहकर दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। फिर कुछ पश्चिम तथा दक्षिण को जाकर झेलम नगर के पूर्व तथा मीरपुर के पश्चिम होती हुई अंग तथा भ्रंग मगिअन के मध्य में चेनाव से मिल जाती है।

चन्द्रभागा—इस नदी का आधुनिक नाम चेनाब है। यह नदी दो धाराओं के मिलने से बनी है। बारलाच दर्रे ( १६००० ) के दक्षिण-पश्चिमी भाग से चन्द्रा तथा उसी दर्रे के उत्तर-पश्चिमी भाग से भागा नाम की धाराएँ निकलती हैं। समुद्र से ७५०० की ऊँचाई पर स्थित टण्डी नामक स्थान पर दोनों धाराएँ परस्पर मिल जाती हैं। यह नदी गर्भ शृंखला के १८० मील के प्रदेश को सींचती है। इस में अनेक हिमानियों का जल आता है। इसका एक वैदिक नाम असिक्नी भी है।

इरावती—वैदिक साहित्य में इसको परुष्णी कहते हैं। इसका आधुनिक नाम रावी हैं। यह बंगटल के चट्टानी प्रदेश से निकल कर पीर पंजाल के दक्षिणी ढालों तथा धौला धार के उत्तरी ढालों को सींचती हुई काश्मीर में चम्बा के दक्षिण पश्चिम की ओर बह कर लाहौर के आगे अहमदपुर तथा सराय सिन्ध के मध्य में झेलम में गिर जाती है।

विपाशा—आजकल इसको व्यास कहते हैं। यह रावी के उद्‌गम के पास हीरोत्तंग में पीर पंजाल शृंखला से निकली है। इसमें भी अनेक हिमानियों का जल आता है। यह चम्बा से दक्षिण-पश्चिम की ओर वह कर कपूरथला के दक्षिण-पश्चिम कोण पर सतलज से मिल जाती है।

शुतुद्रु—इसका आधुनिक नाम सतलज है। यह हिमालय के उत्तर से आने वाली नदी है। इसका उद्‌गम मानसरोवर के पश्चिमी भाग में है। यह वहाँ से पश्चिम की ओर वह कर कामता तथा शिमला की पहाड़ियों पर कुछ दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़कर वक्राकार होती हुई ऊपर से पश्चिम चलकर कपूरथला के दक्षिण-पश्चिम कोण पर व्यास से मिल जाती है। यहाँ से इसका नाम लुप्त हो जाता है तथा व्यास के ही नाम से फीरोजपुर तथा बहावलपुर के आगे चलकर चेनाब से मिली है। इसके आगे अलीपुर तथा ऊँच के मध्य में तीनों धाराएँ मिलकर बहती हैं। कुछ आगे चलकर सिन्ध में मिल जाती हैं। मानसरोवर में कामता पर्वत तक सतलज में तीन सहायक नदियाँ मिली हैं। १–कुभा ( काबुल ), २–क्रमु ( कुर्रम ) ३–गोमती ( गोमल )।

कुभा—सिन्धु की पश्चिमी सहायक नदियों में कुभा नाम की वैदिक नदी सबसे मुख्य हैं। आजकल इसको काबुल नदी कहते हैं। संस्कृत साहित्य के आधार पर कुछ विद्वान् इसको भारत की पश्चिमी सीमा मानते हैं। इसी नदी को एरिअन कोफस तथा प्लिनी कोफेन कहते थे। पुराणों की कुहू नदी भी यही है। टालेमी ने इसका नाम कोआ लिखा है। यह भी हिमालय से निकल कर

( हाटक ) के कुछ ऊपर सिन्धु से मिली है। इसकी दो सहायक नदियाँ सुवास्तु ( स्वात ) तथा गौरी (पंजकोरा) प्राग में इसमें मिली हैं।

क्रमु—इसका आधुनिक नाम कुर्रम नदी है। वन्नू के समीप इसकी एक सहायक नदी तची इसमें मिली है। इसाखेद के दक्षिण क्रमु सिन्ध से मिली हैं।

गोमती—आजकल यह गोमल नाम से प्रसिद्ध है। यह डेरा इस्माइलखाँ तथा चन्दवान के मध्य में पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है और कुछ दूर जाकर सिन्ध में मिल जाती है।

सरस्वती—सरस्वती तथा दृषद्वती नाम की उत्तरापथ की दोनों नदियाँ ऐतिहासिक हैं। सरस्वती का उद्गम शिमला के ऊपर हिमालय श्रृंखला में है। इसके उद्गम स्थान को प्लक्षप्रास्रवण कहते हैं। वहाँसे निकल कर यह दक्षिण की ओर शिमला तथा सिरमूर राज्य में होकर वहती है। पटियाला के आगे चल कर सिरस से कुछ दूर राजस्थान के मरुस्थल के उत्तरी भाग में लुप्त हो जाती हैं। मनु ने उस स्थान का नाम विनशन लिखा है। उसी को अदर्श अथवा आदर्श भी कहते हैं। सिद्धान्तशिरोमणि के गोलाध्याय के भुवनकोश में इसको कहीं दृश्य कहीं अदृश्य नदी लिखा है—दृश्यादृश्या च भवति तत्र तत्र सरस्वती। सर्वप्रथम यह चलौर ग्राम के समीप बालू में लुप्त हुई है तथा भवानीपुर में फिर प्रकट हो जाती है। आगे जा कर बालछापर में फिर लुप्त हो गयी है और वड़ाखेरा में फिर प्रकट हो जाती हैं। पृथूदक ( पेहोआ ) के समीप उर्नई में इसमें मार्कण्डा नदी मिलती हैं। आगे चलकर दृषद्वती ( घरघर या घर्घर ) इसमें मिली हैं। इस नदी ने तीन तीर्थस्थानों का निर्माण किया है—चमसोद्भेद, शिरोद्भेद तथा नादोद्भेद। ऋग्वेद में लिखा है कि यह नदी बड़ी वेगवती है तथा यह समुद्र में मिली है। सम्भव है वैदिक काल में जब कि राजस्थान में समुद्र था, यह समुद्र में गिरती रही हो।

दृषद्वती—यमुना नदी के समीप बहने वाली इस नदी का उद्गम सिरमूर की पहाड़ियाँ हैं। श्री जयचन्द विद्यालंकार इसको घग्घर कहते हैं। रैप्सन इसको चौतंग या चितांग अथवा चित्रान्त कहते हैं। गजेटिअर में इसका नाम रची लिखा है। श्रीमद्भागवत के आधार पर भी इसका नाम रक्षी प्रतीत होता है क्योंकि श्रीकृष्ण ने द्वारका से हस्तिनापुर जाते समय दृषद्वती को पार कर सरस्वती को पार किया था। यह सिरमूर से पश्चिम की ओर चल कर अम्वाला तथा शाहावाद जिलों से होकर बहती है। यह पृथूदक ( पेहावा ) के समीप सरस्वती से मिली है।

गङ्गा—गंगा का उद्गम महाभारत में बिन्दुसर, जम्बूदीवपण्णत्ति में पद्मह्रद पालि ग्रन्थों में अनोत्तत्त तथा अन्य संस्कृत ग्रन्थों में मान्सरोवर लिखा है। कनखल के ऊपर इस नदी के अनेक नाम हैं। हिमालय पर्वत पर इसकी भिन्न भिन्न धाराओं के नाम गंगा, अलकनन्दा, भागीरथी, मन्दाकिनी तथा जाह्नवी हैं। ये सभी नाम संस्कृत साहित्य में इसके पर्याय मान लिये गये। बदरीनाथ शिखर के समीप अलका नाम के हिमानी प्रदेश से अलकनन्दा नाम की धारा निकली हैं। मूल धारा यही मालूम पड़ती है। अन्य सभी धाराएँ इसमें मिलती गयी हैं। इस मूलधारा में कहीं कहीं कोई अन्य धारा मिली हैं वहाँ सर्वत्र एक प्रयाग भी प्रतिष्ठित होता गया है। केदारनाथ शिखर से निकलने वाली मन्दाकिनी नाम की धारा रुद्रप्रयाग के समीप अलकनन्दा में मिली हैं वहाँ देवप्रयाग हैं। भागीरथी का उद्गम गोमुखी नाम की हिमानी है। गंगोत्तरी पहुँचने पर उत्तर से आने वाली जाह्नवी उसमें मिलती है। जाह्नवी का उद्गम स्थान स्कीदिभन ( Skithian mt. ) पर्वत है उसके उत्तर तिब्वत ( त्रिविष्टप ) हैं। बहुधा यह लोकोक्ति सुनी जाती है कि जहाँ तक जाह्नवी वहाँ तक भारतवर्ष। इस प्रकार मन्दाकिनी, भागीरथी तथा जाह्नवी की सम्मिलित धाराओं से मिली हुई अलकनन्दा देवप्रयाग के ऊपर गंगा कही जाती हैं तथा हृषीकेश के नीचे जनता में इसी नाम से प्रसिद्ध हैं।

यह हरिद्वार के समीप पर्वत को छोड़कर मैदान में आती है। हरिद्वार से बुलन्दशहर तक यह दक्षिणाभिमुख, बुलन्दशहर से प्रयाग तक दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। प्रयाग से राजमहल तक पूर्व की ओर बह कर बंगाल में गंगासागर के समीप समुद्र में मिल जाती है। इसके तट पर भारत के अनेक प्रसिद्ध नगर तथा तीर्थस्थान हैं। यह संसार की सर्वश्रेष्ठ पुनीत तथा स्वास्थ्यवर्द्धक जल वाली नदी कही जाती है।

यमुना—यह बन्दर पूँछ की ढालों से निकलती है। इसके उद्गम स्थान पर यमुनोत्री का प्रसिद्ध मन्दिर है। इससे

अधिकृत हिमालय प्रदेश का क्षेत्रफल ४५०० वर्गमील है। यह गंगा की सबसे बड़ी पश्चिमी सहायक नदी है। गंगा तथा सिन्धु के समान ही इसका भी वैदिक नाम आज तक प्रचलित है। सेवालिक शृंखला तथा गढ़वाल शृंखला को काट कर यह उत्तर भारत के मैदानों में प्रवेश कर गंगा के समानान्तर दक्षिण की ओर बहती है तथा प्रयाग पहुँच कर गंगा में मिल जाती है। देहरादून जिले में पश्चिम से आकर इसमें दो नदियाँ मिली हैं उनमें एक का नाम उत्तरी टोंस है। आगरा तथा प्रयाग के मध्य में दाहिनी ओर से इसमें चार सहायक नदियाँ मिली हैं। जिनके नाम क्रमशः चर्मण्वती (चम्बल), काली सिन्ध (सन्ध्या), वेत्रवती (वेतवा) तथा शुक्तिमती (केन) हैं।

रामगंगा—इक्षुमती—इसका उद्गम अल्मोड़ा के कुमायूँ उत्तर शृंखला है। बरेली के नीचे इसमें एक छोटी नदी मिली है यह फर्रुखाबाद तथा हरदोई के मध्य में गंगा से मिल जाती है। कुछ लोग इसको वाहुदा तथा इक्षुमती ईखन) भी कहते हैं। अयोध्याकाण्ड ६८ अ० में इसकी चर्चा मिलती है।

गोमती—यह गंगा की एक सहायक नदी है। पीलीभीत के समीप हिमालय से निकल कर बनारस . वाराणसी) तथा गाजीपुर (गाधिपुर) के मध्य में यह गंगा में मिली है। इसकी सहायक नदी सई है। सई का प्राचीन नाम स्पन्दिका मिलता है। कनिंघम के अनुसार गोमती की सहायक नदी धूतपापा यही है क्योंकि आजकल धूतपापा नाम का एक तीर्थ फैजाबाद के समीप इसी नदी के तट पर स्थित है।

सरयू—इसका उद्गम मानसरोवर है। इसकी मुख्य धारा को घाघरा कहते हैं। यह एक ऐतिहासिक नदी है। अयोध्या का प्राचीन नगर इसी के तट पर स्थित है। यह छपरा जिले में गंगा से मिली है। बहराइच जिले के उत्तर-पश्चिम कोने पर एक सहायक नदी इसमें मिली है। वहीं से इसका नाम सरयू हो जाता है। इसके दाहिने तट पर स्थित बहरामघाट में एक अन्य सहायक नदी (चौकी) इसमें मिली है। बहराइच जिले से निकलने वाली पाँच अन्य नदियाँ इसमें गोंडा जिले में मिलती है। गोरखपुर जिले में बरहलगंज के समीप कुर्ना नदी इसमें मिली है। सारन जिले की पश्चिमी सीमा पर छोटी गण्डक भी इसमें मिलती है।

अचिरवती—सरयू की सहायक नदियों में सबसे बड़ी नदी अचिरवती हिमालय शृंखला से निकल कर गोंडा, बहराइच तथा बस्ती जिलों से होकर गोरखपुर जिले में बरहज के पश्चिम सरयू में मिलती है। आजकल इसको राप्ती कहते हैं। इसी के तट पर श्रावस्ती (आधुनिक सहेत महेत) स्थित थी। इसका एक नाम इरावती भी था। इसीको अजिरवती भी कहते थे। इत्सिंग के अनुसार अजिरवती का अर्थ अजगर वाली नदी (अजिर-अजगर) होता है। कपिल जी नदी में सोने की मछली के रूप में उत्पन्न हुये थे। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का मत है कि इसी नदी का एक नाम सदानीरा भी है क्योंकि महाभारत के अनुसार गण्डक तथा सरयू के मध्य में सदानीरा नदी थी अतः राप्ती का ही एक नाम सदानीरा भी था।

रोहिणी—यह एक छोटी नदी थी जो शाक्य तथा कोलिय राज्यों को विभक्त करती थी। कनिंघम ने आधुनिक रोवई अथवा रोहवैनी को रोहिणी माना है। यह गोरखपुर में राप्ती से मिली है।

गण्डक—गंगा की दूसरी सहायक नदी गण्डकी अथवा गण्डक है। इसका उद्गम दक्षिणी तिब्बत की पहाड़ियाँ हैं। नेपाल में बाईं ओर से चार तथा दाहिनी ओर से दो सहायक नदियाँ इसमें मिलती हैं। बाँयीं ओर से इसमें मिलने वाली नदियाँ बुढ़िया गण्डक, मादी, सेनी तथा काली हैं। नेपाल में अपनी सहायक नदियों के कारण इसका आकार मानचित्र में बारहसींगे के सींग के समान दिखाई देता है। गोरखपुर तथा चम्पारन जिले के मध्य में यह भारत में प्रवेश करती है। वहाँ से आगे चल कर यह सारन तथा मुजफ्फरपुर जिलों की प्राकृतिक सीमा का काम करती है। इसकी प्रधान धारा भारत तथा मुजफ्फरपुर के मध्य में गंगा से मिलती है। इसकी एक छोटी धारा बसाढ़ में इससे अलग होकर चम्पारन जिले में अरगज के समीप निकलने वाली एक नदी से मिलकर मुँगेर जिले में सोनरिया घाट के समीप गंगा से मिलती है।

ब्रह्मपुत्र—ब्रह्मपुत्र तथा सुरमा असम की दो मुख्य नदियाँ हैं। ब्रह्मपुत्र का उद्गम मानसरोवर का पूर्वी

भाग है। समचा जाकर यह दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। फिर सदिया जिले की उत्तर-पूर्वी सीमा से होकर असम की घाटी में घुसती है। सदिया से दक्षिण-पश्चिम की ओर गैरो पर्वत के ऊपर तक बहती है, फिर दक्षिण की ओर मुड़कर गोआलुन्दो घाट के ऊपर गंगा में मिल जाती है। तिव्वती प्रदेश में इसका नाम सुनपा है। पूर्वी वंगाल में इसको यमुना कहते हैं। मानसरोवर से दो सौ मील चलने पर इसमें एक सहायक नदी मिली है। यह ज्यों-ज्यों पूर्व की ओर जाती है इसमें अनेक सहायक नदियाँ मिलती जाती हैं। इसकी सबसे बड़ी सहायक नदी लोहित अथवा लौहित्य है। इसी के कारण इसका एक नाम लौहित्य भी मिलता है। लौहित्य सदिया जिले में ब्रह्मपुत्र से मिली है।

सुलेमान—प्राचीन भूगोल-शास्त्री इस पर्वत को अञ्जन गिरि कहते थे। पाणिनि ने (त्रिककुत् पर्वते ५।४।१४७ में) इसका उल्लेख किया है। अथर्ववेद में भी तीन चोटियोंवाले इस पर्वत का उल्लेख मिलता है। कीथ ने इसकी पहिचान त्रिकोट से की है जो उत्तरी पंजाब तथा काश्मीर के मध्य की कोई चोटी थी। अथर्ववेद में लिखा है कि यहाँ एक प्रकार का सुरमा (त्रैककुद अञ्जन) उत्पन्न होता था। अतः लोगों का अनुमान है कि सुलेमान का ही प्राचीन नाम त्रिककुत् था जो कि आज भी उत्तम प्रकार के सुरमे का उत्पत्ति-स्थान है। सुलेमान के समानान्तर शीनगर की पर्वत-शृंखला है जो कि ओब नदी के पूर्व है और इन दोनों शृंखलाओं के पीछे टोबा तथा काकड़ की शृंखलाएँ हैं। पर्वतों की यही तीनों शृंखलाएँ त्रिककुत् कहलाती थीं। यहाँ उत्तम श्रेणी का अञ्जन प्राप्त होता था। महाभारत में लिखा है कि बाहीक (पंजाब) की गौरवर्ण की स्त्रियाँ मैनसिल के समान चमकीले कोणवाले नेत्रों में त्रैककुद अंजन लगाती थीं (कर्णपर्व ४४।१८)। आजकल भी सुलेमानी सुरमा पंजाब तथा सिन्ध के दूर-दूर के प्रदेशों में जाता है। सिन्ध में इसी अञ्जन को सौवीराजन भी कहते थे। इस पर्वत का सबसे ऊँचा शिखर तख्त-ए-सुलेमान (सालोमन का सिंहासन) ११२९५ फीट ऊँचा है। इसी शृंखला में भारत से बलूचिस्तान जाने के लिए अनेक संकुचित मार्ग हैं।

भारतवर्ष में हिमालय शृंखला के अतिरिक्त सात अन्य पर्वतों की मुख्य शृंखलाएँ हैं। इनको कुलपर्वत कहते हैं। "महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमान् ऋक्षपर्वतः। विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वताः" ॥ मत्स्य पु० ९५। महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षवान्, विन्ध्य तथा पारियात्र ये सात कुलपर्वत हैं।

महेन्द्र—जेनरल कनिंघम ने अपने भारत के प्राचीन भूगोल में महेन्द्र मलै को महेन्द्र पर्वत निश्चित किया है। यह शृंखला गंजाम को महानदी की घाटी से पृथक् करती है। इस शृंखला में समस्त पूर्वी घाट सम्मिलित हैं। पूर्वी घाट महानदी तथा गोदावरी नदी के मध्य में स्थित है। कालिदास ने रघुवंश ४।३८-४३ में कलिङ्ग के राजा को महेन्द्रनाथ लिखा है—"उत्कलादर्शितपथः कलिङ्गाभिमुखे ययौ। श्रियं महेन्द्रनाथस्य जहार न तु मेदिनीम्" ॥ मल्लिनाथ ने इसकी टीका में "महेन्द्रनाथस्य" की व्याख्या "कलिङ्गस्य" की है। कलिङ्ग जनपद गंजाम के आस-पास तक ही सीमित न था प्रत्युत गोदावरी तक विस्तृत था। कथासरित्सागर १९।९२ में गोदावरी नदी के तट पर राजा माहेन्द्रि की राजधानी की स्थिति का स्पष्ट उल्लेख है। इस पर्वत से निम्नलिखित नदियों के निकलने का उल्लेख भिन्न-भिन्न पुराणों में मिलता है—१ त्रिभागा या त्रिसामा विष्णु-पुराण, २ ऋषिकुल्या, इक्षुदा मार्कण्डेय पुराण। ३ त्रिदिवा मा० पु०। ४ लाङ्गूलिनी। ५ मूली मा० पु०, ६ शरवा। ७ विमला मत्स्यपुराण। आधुनिक भूगोल से इन नदियों का ठीक-ठीक परिचय प्राप्त करना कठिन है, फिर भी विद्वानों ने इनमें से कुछ का निर्णय करने का प्रयत्न किया है।

त्रिभागा—त्रिभागा तथा ऋषिकुल्या एक ही नदी का नाम जान पड़ता है। यह गंजाम जिले की बिलकुल उत्तरी नदी है। यह गंजाम नगर के आगे खाड़ी में गिरती है। इसी के तट पर गंजाम नगर स्थित है। आजकल इसको ऋषिकुलिया कहते हैं।

लांगूलिनी—यह कालाहाँडी के पर्वत से निकलकर दक्षिण की ओर बहकर गंजाम के नीचे चन्द्रपुर में बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसका वर्तमान नाम लाँगुलिया है।

इक्षुदा—इक्षुदा वह नदी हो सकती है जिसके तट पर आधुनिक इच्छापुर नगर स्थित है।

अन्य नदियों के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता, या तो वे अब नष्ट हो गयीं या अब छोटे-मोटे नालों के रूप में रह गयी हैं और उनका नाम भी लोग भूल गये।

मलय—यह पाण्डय देश का मुख्य पर्वत है। वीरचरित में इसके ढाल की चर्चा मिलती है। यह शृङ्खला कावेरी नदी से घिरी हुई है। रघुवंश ५-३ में इसका उल्लेख है—"कावेरीवलयितमेखलस्य सानावेकस्मिन्मलयगिरेर्दिवः पतामि" ॥ बाल रामायण में लिखा है कि इस पर्वत पर इलायची, मिर्च, चन्दन तथा सोपारी के वृक्ष प्रचुरता से पाये जाते हैं। दक्षिण भारत में ये सभी वृक्ष आजकल भी उपलब्ध हैं। अतः यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि घाटों का दक्षिणी भाग, जो कि मैसूर के दक्षिण से लेकर ट्रावंकोर की पूर्वी सीमा बनाता है, वही मलय शृंखला ( Cordamasm Hills = इलायची की पहाड़ियाँ ) है। कालिदास ने रघुवंश ४।५१ में मलय तथा दर्दुर को दक्षिण भारत के स्तनों के समान कहा है। मार्कण्डेय पुराण में भी मलय तथा दर्दुर का साथ-साथ उल्लेख मिलता है—"महेन्द्र-मलयाद्री च दर्दुरे च वसन्ति ये"। मा०पु० ५८-२१। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दर्दुर दक्षिणी घाट का वह भाग है जो मैसूर की दक्षिण-पूर्वी सीमा बनाता है। इस शृंखला में चार नदियों का उल्लेख मिलता है—१. कृतमाला, २. ताम्रपर्णी, ३. पुष्पजा, ४. उत्पलावली।

ताम्रपर्णी—इनमें ताम्रपर्णी प्रसिद्ध नदी है। यह प्राचीन पाण्डय जनपद में होकर बहती है। राजशेखर ने इसका विशद वर्णन किया है। इसका आधुनिक नाम तम्बरवरी है। यह पश्चिमी घाट के ढाल से निकलकर तिन्नेवली जिले से होती हुई पूनकली नाम के एक छोटे नगर के समीप मेनर की खाड़ी में गिरती है। शेष नदियों का निश्चय करना कठिन है। आधुनिक मानचित्र में मलय शृंखला से निकलकर आठ नदियाँ पूर्व की ओर तथा ग्यारह पश्चिम की ओर बहती हैं। इन नदियों का नाम प्राचीन काल की किसी भी नदी के नाम से नहीं मिलते। इसशृंखला से निकलनेवाली कुछ अन्य नदियों के नाम पद्म पुराण के भूमिखंड में अवश्य हैं जिनमें चित्रा अथवा चित्रलोपा आधुनिक चिन्दिन्थूरा हो सकती है। कुछ विद्वान् वैगा अथवा वैपई को प्राचीन कृतमाला कहते हैं।

द्रविड़ भाषा में मलय का शब्दार्थ पर्वत है। पार्जिटर ने नीलगिरि से लेकर कुमारी अन्तरीप तक के पश्चिमी घाट को मलय माना है। इस पर्वत के एक शिखर पर अगस्त्य ऋषि का आश्रम है। मलय शृंखला का दूसरा नाम श्रीखण्डाद्रि अथवा चन्दनाद्रि भी है। पार्जिटर की धारणा है कि आधुनिक नीलगिरि का ही प्राचीन नाम दर्दुर है।

सह्य—यह अपरान्त अथवा पश्चिम भारत का मुख्य पर्वत है। कालिदास ने इसको पृथ्वी का नितम्ब कहा है—"नितम्ब इव मेदिन्याः"—रघुवंश। यह पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग है। पुराणों में वर्णित इससे निकलनेवाली नदियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह शृंखला ताप्ती से लेकर नीलगिरि तक चली गयी है। इससे मिला हुआ एक छोटा सा पर्वत विदूर है जो कि गुजरात में है। विदूर पर्वत पर वैदूर्य ( नीलम ) मिलता है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी के ४।३।८४ सूत्र में वैदूर्य मणि का उत्पत्ति-स्थान विदूर का स्पष्ट उल्लेख किया है। पार्जिटर ने विदूर की पहिचान सतपुड़ा से की है। पतञ्जलि के मत से वैदूर्य की कानें बालवाय पर्वत में थीं। विदूर के वैकटिक (रत्नतराश) वहाँ से लाकर उन्हें सुचारु बनाते थे अतः उनको वैदूर्य कहने लगे। बहुत सम्भव है कि दक्षिण का बीदर प्राचीन विदूर हो।

'महाभारत' से ज्ञात होता है कि सह्य शृंखला में दक्षिणी विन्ध्य तथा सतपुड़ा शृंखला का कुछ भाग सम्मिलित है। त्रिकूट पर्वत भी सह्य का एक भाग है। इसीसे वहाँ के निवासी त्रिकूटक कहलाते थे। ऋष्यमूक तथा गोमन्त भी सह्य के ही भाग हैं। पार्जिटर का मत है कि अहमदनगर से नीलदुर्ग तथा कल्याणी तक विस्तृत शृंखला ऋष्यमूक है। ऋष्यमूक पर्वत तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित अनगन्दी से आठ मील की दूरी पर स्थित है। पम्पा नदी इसी पर्वत से निकलकर पश्चिम की ओर बहकर तुंगभद्रा नदी में मिली है। हनुमान् तथा सुग्रीव इसी पर्वत पर सर्वप्रथम रामचन्द्र से मिले थे। ऋष्यमूक पर्वत जिला बिलारी में पड़ता है। पार्जिटर के अनुसार नासिक के

दक्षिण-पूर्व का पर्वत गोमन्त है। राय चौधरी के मत से गोमन्त के उत्तर वनवासी था, अतः गोमन्त को मैसूर राज्य में होना चाहिये।

भारतीय जन आजकल सह्य पर्वत को सियद्री कहते हैं। इस शृंखला से निम्नलिखित नदियाँ निकलती हैं—गोदावरी, भीमरथा, कृष्णा अथवा कृष्णवेणा, वञ्जुला या मञ्जुला, तुङ्गभद्रा, सुप्रयोगा, वाह्या तथा कावेरी।

गोदावरी—सह्य से निकलनेवाली नदियों में गोदावरी बड़ी प्रसिद्ध नदी है। आजकल लोग इसको गोदा भी कहते हैं। यह पश्चिमी घाट के पूर्वी भाग से नासिक के समीप निकली है तथा राजमहेन्द्री के नीचे अनेक शाखाओं में विभक्त हो जाती है। वहाँ उसको सप्तगोदावरी कहते हैं। इस स्थान पर शिवजी का एक प्राचीन विशाल मन्दिर है। यह गोदावरी जिले में बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसने अपने मोहाने पर एक विशाल डेल्टा बना दिया है। मद्रास तथा हैदरावाद से होकर बहने में इसमें बायीं ओर से दस तथा दाहिनी ओर से ग्यारह सहायक नदियाँ मिलती हैं।

भीमरथा—आजकल लोग इसको भीमा कहते हैं। यह पूना जिले से निकलकर हैंदराबाद के रायचूर जिले के उत्तर गुण्डलूर के समीप कृष्णा में मिली है।

कृष्णा—दक्षिण भारत की यह प्रसिद्ध नदी पुराणों की कृष्णवेणा, जातकों की कण्हपेण्णा तथा खारवेल के अभिलेख की कण्हपेमं गा है। यह पश्चिमी घाट के महाबलेश्वर से निकलकर दक्षिण पठार से होती हुई पूर्व की ओर बहकर पूर्वी घाट को तोड़कर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। यह मद्रास प्रेसिडेन्सी, हैदराबाद राज्य तथा बम्बई प्रेसिडेन्सी से होकर बहती है। आलमपुर के उत्तर जगयपेट के नीचे के एक स्थान तक यह हैदराबाद राज्य की प्राकृतिक सीमा का कार्य करती है इसमें बायीं ओर से पन्द्रह तथा दाहिनी ओर से चार सहायक नदियाँ मिलती हैं जिनमें भीमा, तुङ्गभद्रा, पलेर तथा मुनेर प्रसिद्ध नदियाँ हैं। महाभारत के वनपर्व का देवहृद इसी के जल से निर्मित हुआ है। यह हैदराबाद के पूर्व-दक्षिण के एक प्रसिद्ध तथा विशाल जिला देवरकोंड में है।

वञ्जुला अथवा मञ्जुला—भीष्मपर्व में इस नदी का उल्लेख मिलता है। आजकल इसको मंजिरा कहते हैं। यह वालाघाट से निकलकर हैदराबाद में कन्दलवाडी के पूर्व गोदावरी में मिलती है। इसमें बायीं ओर से तीन तथा दाहिनी ओर से पाँच नदियाँ मिलती हैं। उनमें तीर्णा तथा करञ्जा उल्लेखनीय है। हरिवंश पुराण में उल्लिखित खट्वाङ्गी इसी का नाम मालूम पड़ता है।

तुङ्गभद्रा—कृष्णा की निचली सहायक नदियों में यह सबसे मुख्य नदी है। मैसूर की पश्चिमी सीमा पर पश्चिमी घाट से निकलनेवाली तुङ्गवेला तथा भद्रा नाम की दो नदियाँ मिलकर इस नाम को धारण कर लेती हैं। यह मद्रास प्रेसिडेन्सी के कर्नूल जिले में नन्दिकोटपुर के उत्तर आलमपुर के कुछ आगे कृष्णा में गिरती है। आजकल इसको तुम्बरदा कहते हैं। इसमें बायीं ओर से सात तथा दाहिनी ओर से छह नदियाँ मिली हैं जिनमें बरदा, हगरी तथा हिन्दरी प्रसिद्ध हैं।

सुप्रयोगा—सम्भवतः हिगरी नदी यही है जो कि मैसूर के दक्षिण-पश्चिम से निकलकर वेल्लरी जिले में तुङ्गभद्रा से मिली है। इसका एक नाम वेदवती भी है। महाभारत के भीष्म पर्व में तथा अन्य पुराणों में भी इसकी चर्चा मिलती है। वाह्या नदी की पहिचान नहीं हो सकी हैं।

कावेरी—दक्षिणी भारत की एक दूसरी प्रसिद्ध कावेरी कुर्ग के पश्चिमी घाट से निकलकर दक्षिण की ओर बहकर मैसूर होती हुई मद्रास प्रेसिडेन्सी तञ्जोर जिले में बंगाल की खाड़ी में गिरती है। यह [illegible] मोहाने पर एक विस्तृत डेल्टा बनाती है। इसमें [illegible] से दस तथा दाहिनी ओर से आठ नदियाँ मिली हैं जिनमें भवानी तथा अमरावती प्रसिद्ध हैं। प्राचीन काल में कावेरी मोतीके लिए प्रसिद्ध थी।

शुक्तिमान्—इस पर्वत की पहिचान में बड़ा मतभेद है। महाभारत के सभा पर्व में लिखा है कि भीम ने हिमालय के ढाल के समीप के दलदल के प्रदेश को अल्प काल में अपने अधीन कर लिया, फिर अन्य देशों को,

जिनमें भल्लात तथा शुक्तिमान् पर्वत भी थे जीता—सभापर्व ३०-४,६। यदि यह वर्णन सत्य है तो शुक्तिमान् को हिमालय तथा काशी के मध्य में होना चाहिये। परन्तु उपर्युक्त प्रसङ्ग में शुक्तिमान् का उल्लेख प्रमादवश किया गया जान पड़ता है जैसे अर्जुन के उत्तर दिग्विजय में सुह्य चोल, तथा प्राग्ज्योतिषकी चर्चा अथवा नकुल के पश्चिम दिग्विजय में उत्सव संकेतों की चर्चा भ्रामक है। मर्यादा पर्वत तथा कुल-पर्वत भिन्न-भिन्न हैं, अतः हिमालय की कोई शृंखला शुक्तिमान् नहीं हो सकती।

जेनरल कनिंघम ने शुक्तिमती (केन) नदी का जन्मदाता छतीसगढ़ तथा वस्तर के मध्य में स्थित पर्वतशृंखला को शुक्तिमान् माना है। बेगलर हजारीबाग जिले के उत्तर में स्थित पर्वत को शुक्तिमान् मानते हैं। पार्जिटर गैरो, खासी तथा त्रिपुरा की पहाड़ियों को शुक्तिमान् मानते हैं। सी. वी. वैद्य पश्चिम भारत में इसका निर्णय करते हैं, उनकी धारणा है कि काठियावाड़ की शृंखला शुक्तिमान् है। डा० रमेशचन्द्र मजूमदार सुलेमान शृंखला को शुक्तिमान् कहते हैं। राय चौधरी मध्यप्रदेश के रायगढ़ जिले में सक्ति से लेकर मानभूम की डाल्मा पहाड़ी तक विस्तृत शृंखला को शुक्तिमान् समझते हैं। परन्तु केन नदी का सम्वन्ध शुक्तिमान् से नहीं हो सकता, क्योंकि मार्कण्डेयपुराण में शुक्तिमती का जन्मदाता विन्ध्य पर्वत लिखा है। शुक्तिमान् से निकलनेवाली नदियों में शुक्तिमती का नाम किसी भी पुराण में नहीं मिलता। वा० पु० में लिखा है कि "ऋषिका सुकुमारी च मन्दगा मन्दवाहिनी। कूपा पलाशिनी चैव शुक्तिमत्प्रभवाः स्मृताः॥" मा० पु० में लिखा है—"ऋषिकुल्या कुमारी च मन्दगा मन्दवाहिनी। कृपा पलाशिनी"। मत्स्य पुराण में ऋषिका तथा पलाशिनी के स्थान पर काशिका तथा पाशिनी नाम मिलते हैं। मजूमदार की धारणा है कि कूपा (कुभा) काबुल नदी, पाशिनी (पञ्जशीर), कुमारी (कुनार), मन्दगा मन्दवाहिनी (हेलमन्द) तथा ऋषिकुल्या (इसिकला) हैं। उनका मत है कि शुक्तिमान् हिन्दूकुश से दक्षिण भारत के पश्चिमी सीमान्त की समूची शृंखला का नाम है।

परन्तु उनकी धारणा भ्रान्त है; क्योंकि कुलपर्वतों का परिगणन दक्षिणावर्त क्रम से ही किया गया जान पड़ता है। महेन्द्र पर्वत दक्षिण भारत के उत्तरी छोर पर है, वहाँ से पूर्वी तट के साथ दक्षिण चलते हैं तब नालमलइ से एलामलइ तक की शृंखला मलय है। फिर पश्चिमी तट के साथ उत्तर घूमकर सह्य पर आते हैं। अब इसी के आगे शुक्तिमान् की स्थिति होनी चाहिये, अतः अनुमान किया जाता है कि हैदराबाद के गोलकुण्डावाले पठार का नाम शुक्तिमान् रहा होगा, क्योंकि वह पठार पूर्वी घाट (महेन्द्र-मलय) तथा पश्चिमी घाट (सह्य) के मध्य में स्थित होता हुआ भी दोनों से पृथक् है। ऋक्ष पर्वत सह्याद्रि के उत्तरी छोर से पश्चिम से पूरब की ओर भारत के आर-पार चला गया है। उसके पूरबी छोर से उत्तर घूमकर विन्ध्य तथा विन्ध्य के आगे पारियात्र हैं। इस पठार की सबसे प्रसिद्ध नदी मूसी का प्राचीन नाम मूषिका अथवा ऋषिका हो सकता है। मन्दगा आधुनिक मनेर, मन्दवाहिनी मुनेर तथा पलाशिनी अथवा पाशिनी पालेर नदियाँ हैं। अतः सह्याद्रि के उत्तरी किनारे से पूर्व की ओर बढ़ती हुई वाहियाँ शुक्तिमान् हो सकती हैं। इस शृंखला में खान देशकी पहाड़ियाँ, अजन्ता तथा भीतर घुसा हुआ हैंदरावाद-गोलकुंडा पठार सम्मिलित हैं।

**ऋक्ष**—हरिवंश पुराण में लिखा है कि माहिष्मती नगरी (जवलपुर के पास आधुनिक भेड़ाघाट) ऋक्ष तथा विन्ध्य पर्वत के मध्य में नर्मदा नदी के तट पर स्थित थी। ऋक्ष पर्वत की उत्तरी शृंखला विन्ध्य है जो नर्मदा घाटी को घेरे हुए है अतः ऋक्ष पर्वत विन्ध्य की दक्षिणी शृंखला अथवा सतपुड़ा पहाड़ हो सकता है। विष्णु पुराण में इससे निकलनेवाली नदियाँ तापी, पयोष्णी, निर्विन्ध्या तथा दशार्णा उल्लिखित हैं। तापी ताप्ती है। इसी को तापनी भी कहते थे। इसका एक नाम तपनात्मजा भी मिलता है। पयोष्णी सम्भवतः ताप्ती की सहायक पूर्णा हो सकती है, परन्तु बी. सी. लाह का मत है कि पूर्णा सह्याद्रि से निकलकर हैदरावाद के नन्देर जिले की ठीक पश्चिमी सीमा पर गोदावरी से मिली है। अस्तु, महाभारत के वनपर्व में दोनों नदियाँ, तापी तथा पयोष्णी का मान

साथ-साथ आया है। दूसरे स्थल पर उत्तर-यात्रा के वर्णन में यह नदी नर्मदा के दक्षिण विदर्भ ( बरार ) में स्थित कही गई है। प्राचीन काल में पयोष्णी भारत की पवित्रतम नदी समझी जाती थी। "एकतः सरितः सर्वा गङ्गाद्याः सलिलोच्चयाः। पयोष्णी चैकतः पुण्या तीर्थेभ्यो हि मता मम" ॥ महाभारत ३।८८-८९। निर्विन्ध्या नामक नदी की चर्चा कालिदास ने मेघदूत में की है। यह विदिशा ( भेलसा ) तथा उज्जयिनी के मध्य में अर्थात् दशार्णा तथा शिप्रा के मध्य में स्थित है। आजकल इसको काली सिन्ध कहते हैं। यह चर्मण्वती ( चम्बल ) की सहायक नदी है। दशार्णा का आधुनिक नाम धसान है यह वेत्रवती ( वेतवा ) की सहायक है।

डा० वासुदेवशरण का मत है कि ब्राह्मणी तथा वैतरणी ( उड़ीसा ) नदियों का उद्गम भी इसी पर्वत में है अतः छोटा नागपुर की पहाड़ियों का राँची तक विस्तृत सिलसिला भी ऋच के ही अन्तर्गत है।

विन्ध्य—यह पर्वत आज भी अपने इसी नाम से प्रसिद्ध है। यह नर्मदा की घाटी के उत्तर की ओर है। आधुनिक भूगोल के विद्वान् इसको उत्तर भारत की दक्षिणी सीमा मानते हैं। यह पर्वत पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में बिहार तक लगभग सात सौ मील लम्बा है। इसके भिन्न-भिन्न भागों के भिन्न-भिन्न स्थानीय नाम पड़ते गये हैं। उदाहरणार्थ, कैमूर, भरनेर आदि। इस पर्वत की ऊँचाई १५०० फीट से लेकर २००० फीट तक है। इसका एकाध शिखर ५००० फीट ऊँचा है। विद्वानों की धारणा है कि यह पर्वत अरावली के तलछट से बना है। विन्ध्य तथा सतपुड़ा की शृंखलाएँ नर्मदा के उद्गम के समीप अमरकण्टक में परस्पर मिल गई हैं।

मार्कण्डेय पुराण में ऋक्ष से निकलनेवाली नदियों के नाम शोण, महानद, नर्मदा, सुरथा, अद्रिजा, मन्दाकिनी, दशार्णा, चित्रकूटा, चित्रोत्पला, तमसा, करमोदा, पिशाचिका, पिप्पली, श्रोणी, विपाशा, वञ्जुला, सुमेरुजा, शुक्तिमती, शकुली तथा त्रिदिवा हैं। वाराह पुराण में महानद के स्थान पर ज्योतिरथा का उल्लेख है। उसमें अद्रिजा का नाम नहीं है। ब्रह्माण्ड तथा वायु पुराणों में भी इन नदियों का उद्गम ऋच में ही लिखा है। इसके विपरीत विष्णु पुराण तथा ब्रह्म पुराण उपर्युक्त नदियों का उद्गम विन्ध्य में मानते हैं। मा० पु० के अनुसार विन्ध्य से निकलनेवाली नदियाँ सिप्रा, पयोष्णी, निर्विन्ध्या, तापी, निषधावती, वेण्वा, वैतरणी, सिनिवाली, कुमुद्वती, करतोया, महागौरी, दुर्गा और अन्तःशिरा हैं।

वाराहपुराण की सूची में अन्तःशिरा के स्थान पर अन्त्यागिरा, करतोया के स्थान पर तोया तथा वेण्वा के स्थान पर वेण्या का उल्लेख है। इसमें मणिजाल, शुमा, शीघ्रोदा तथा पाला नाम की चार अधिक नदियों का उल्लेख है। मार्कण्डेय पुराण में इनसे मिलती-जुलती तीन नदियों का उल्लेख नहीं है। मा० पु० की कुछ नदियों का उल्लेख वाराह पुराण में नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि मा० पु०, वाराह पुराण तथा अन्य पुराणों में विन्ध्य से निकलनेवाली जिन नदियों का उल्लेख है उनका उद्गम विष्णु तथा ब्रह्म पुराणों में ऋक्ष में लिखा गया है। दशार्णा नदी के उद्गम के वर्णन में टालेमी मार्कण्डेय तथा उससे मिलते-जुलते पुराणों से सहमत प्रतीत होता है। परन्तु जब वह नर्मदा को विन्ध्य से निकलनेवाली नदी लिखता है तो यह मालूम पड़ता है कि वह उनसे पूर्णतया सहमत नहीं था। उसके इस भ्रम का कारण यह प्रतीत होता है कि उसने रेवा को विन्ध्य से तथा नर्मदा को ऋच से निकलनेवाली मान लिया है। भागवत तथा वामन पुराणों में ये दोनों नदियाँ भिन्न-भिन्न मानी गई हैं, परन्तु स्कन्द पुराण के रेवा खण्ड में दोनों को एक ही नदी माना गया है। तथ्य तो यह है कि नर्मदा नदी का प्रधान स्रोत ऋक्ष से निकलकर विन्ध्य से निकलनेवाली तथा उत्तर-पश्चिम की ओर बहनेवाली रेवा के स्रोत से मिला है। यहाँ से दोनों का मार्ग एक ही हो गया है। मा० पु० की परम्परा के अनुसार ऋक्ष से नर्मदा के सम्बन्ध के विषय में हम ऋक्ष तथा पारियात्र को मध्यभारत तथा पश्चिमी भारत में विन्ध्य के ही दो ऊपरी शृंग समझते हैं अर्थात् ऋच पूर्वी तथा पारियात्र पश्चिमी शृंग हैं। मध्यभारत में ऋक्ष तथा विन्ध्य से निकलनेवाली नदियाँ या तो गङ्गा, यमुना तथा सोन की सहायक हैं या चम्बल, ताप्ती या नर्मदा की।

परन्तु अभी तक इनमें से अनेक नदियों की पहिचान नहीं हो सकी।

शोण—इसको आजकल सोन कहते हैं। यह गंगा की निचली सहायक नदियों में सबसे बड़ी नदी है। प्राचीन काल में इसको शोण तथा हिरण्यवाह कहते थे। यह जबलपुर के आगे अमरकण्टक के समीप मेकल शृंखला से निकल कर उत्तर-पश्चिम की ओर बघेलखण्ड, मिर्जापुर तथा शाहाबाद जिलों में होकर बहती हुई पटना के पास गङ्गा से मिली है। मगध (दक्षिणी विहार) में राजगृह (राजगिरि) के नीचे इसका नाम सुमागधा या सुमागधी भी था। बघेलखण्ड में इसमें दो बायीं ओर से तथा तीन दाहिनी ओर से सहायक नदियाँ मिली हैं तथा मिर्जापुर में एक बायीं ओर से और तीन दाहिनी ओर से। इसमें पलामू में एक तथा शाहाबाद में भी एक नदी मिली है। बघेलखण्ड की नदियों में जोहिला, मिर्जापुर की नदी रेंड तथा कन्हर प्रसिद्ध हैं। पलामू की नदी का नाम कोयल है। महाभारत के वनपर्व में वर्णित सोन की सहायक यतिरथा नदी की पहिचान अभी तक नहीं हो सकी है।

नर्मदा—मध्य भारत तथा पश्चिम भारत की प्रसिद्ध नदी नर्मदा मेकल शृंखला से निकल कर कुछ दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती हुई भोपाल तथा मध्यप्रदेश की प्राकृतिक सीमा का कार्य करती है। यह इन्दौर होती हुई बम्बई के रेवा काँठे के आगे चलकर भड़ोच के समीप समुद्र में गिरती है। जब यह नदी दो बड़ी-बड़ी पर्वत-शृंखलाओं (विन्ध्य तथा सतपुड़ा) के मध्य से बहती है तब इन शृंखलाओं से निकलनेवाली अनेक छोटी-छोटी नदियाँ इसमें मिलती हैं। इन्दौर में घुसने के पूर्व बायीं ओर से तेरह तथा दाहिनी ओर से तीन नदियाँ इसमें मिली हैं। इसके आगे इसमें कोई नदी नहीं मिली। भारतीय साहित्य में इसके अनेक पर्याय मिलते हैं जैसे रेवा, सोमोद्भवा, मेकलसुता आदि। अन्तिम नाम इसके उद्गम की ओर संकेत करता है। मेकल शृंखला ऋक्ष के एक भाग का ही नाम है। विन्ध्य से मिली हुई अमरकण्टक की पहाड़ी रेवा का उद्गम है। मौडला के कुछ ऊपर रेवा नर्मदा में मिल गई है। उसके आगे दोनों का नाम नर्मदा हो जाता है। महाभारत के अनुसार नर्मदा अवन्ति राज्य की दक्षिणी सीमा का काम करती थी।

पारियात्र—पारियात्र अथवा पारिपात्र निषादों का मुख्य पर्वत है। बौधायन धर्मसूत्र १-१-२५ तथा पतञ्जलि के महाभाष्य ६-३-१०९ के अनुसार यह पर्वत आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा है। स्कन्द पुराण कुमारी खण्ड के अनुसार यह मध्यभारत की दक्षिणी सीमा है। पार्जिटर ने भोपाल के पश्चिम विन्ध्य शृंखला के एक भाग को पारियात्र निर्णीत किया है। शाकटायन व्याकरण सूत्र २।२।७५ में लिखा है कि 'उत्तरो विन्ध्यात्पारियात्रः।' पार्जिटर ने भोपाल से पश्चिम विन्ध्य शृंखला के पश्चिमी भाग से लेकर राजपूताने के अड़ावला पर्वत तक की शृंखला को पारियात्र निश्चित किया है। पार्वती तथा पर्णाशा (बनास) से लेकर वेत्रवती (बेतवा) तक की कुल नदियों का उद्गम जिस भाग से हुआ है उसको पारियात्र कहते हैं।

चर्मण्वती—आधुनिक चम्बल का प्राचीन नाम चर्मण्वती था। यह अड़ावला शृंखला से निकलकर पूर्वी राजस्थान में से उत्तर-पूर्व की ओर बहती हुई आगरा के नीचे यमुना से मिली है। इसमें अनेक छोटी-मोटी नदियाँ मिली हैं जिनमें काली सिन्ध तथा बेरच उल्लेखनीय हैं। बेरच धुन्ध नदी में मिली है। धुन्ध के संगम के आगे दोनों सम्मिलित नदियों का नाम पर्णाशा हो जाता है। आजकल इसे बनास कहते हैं।

ऋक्ष, विन्ध्य तथा पारियात्र से सम्बद्ध अनेक छोटी-छोटी शृंखलाएँ हैं जैसे ऊर्ज्जयन्त, रैवतक, अर्बुद, कोलाहल, चित्रकूट, अमरकण्टक, वैभ्राज तथा वात्सवन आदि।

ऊर्ज्जयन्त—गुजरात में जूनागढ़ के समीप स्थित आधुनिक गिरनार का प्राचीन नाम ऊर्ज्जयन्त था। गिरनार की दूसरी ओर की शृंखला का नाम रैवतक है। राजस्थान के सिरोही राज्य में अड़ावला शृंखला का आबू पर्वत अर्बुद है। इसी पर वसिष्ठ का आश्रम था। बुन्देलखण्ड की एक छोटी पहाड़ी का नाम कोलाहल था। बाँदा जिले में चित्रकूट पर्वत है। मेकल शृंखला के एक भाग का नाम अमरकण्टक है। यह नागपुर जिले के गोंडवाने में स्थित है। इसी पर्वत से सोन तथा नर्मदा नदियाँ निकली हैं। अमर-

कण्टक का ही एक नाम सोम पर्वत तथा दूसरा सुरथाद्रि भी था। विहार में राजगृह के समीप का वैभार पर्वत प्राचीन वैभ्राज है।

उपर्युक्त पर्वतों के अतिरिक्त कुछ प्रसिद्ध पर्वतों के नाम पाणिनि की अष्टाध्यायी में आये हैं जिनमें से कुछ का निर्णय हो चुका है, जैसे—किंशुलकागिरि, शाल्वकागिरि, अञ्जनागिरि, भञ्जनागिरि,, लोहितागिरि, कुक्कुटागिरि, उदक पर्वतइत्यादि।

किंशुलकागिरि—भारत के उत्तर-पश्चिम किनारे अफगानिस्तान से बलूचिस्तान तक उत्तर-दक्षिण लम्बी पर्वतों की जो दीवार है उसी की बड़ी-बड़ी चोटियों के ये नाम जान पड़ते हैं। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की धारणा है कि सिन्ध-बलूचिस्तान की सीमा पर उत्तर-दक्षिण विस्तृत हाला नामक पर्वत ही प्राचीन काल का शाल्वकागिरि है। उसके पश्चिम बलूचिस्तान की मकरान शृंखला सम्भवतः किंशुलकागिरि है। उस प्रदेश को आजकल भी हिंगुलाज देश तथा वहाँ की एक नदी को हिंगुला कहते हैं। हिंगुला किंशुलका का विकृत रूप जान पड़ता है। इस देश का प्राचीन नाम पारद भी था। यूनानी लेखकों ने इसे पारदीनी लिखा है, जो कि पाणिनि के पार्दायन तथा पार्दायनी से सम्बद्ध जान पड़ता है। मध्यकालीन साहित्य में पारद के अर्थ में हिंगुल शब्द का प्रयोग भी मिलता है। सम्भवतः लाल हिंगुल के उत्पत्ति-स्थान होने के कारण यह स्थान किंशुलक कहलाने लगा। किंशुक तथा किंशुलक एक ही शब्द के दो रूप हैं। हिंगुला देवी भी लाल रंग की मानी जाती हैं।

अञ्जनागिरि—सुलेमान पर्वत शृंखला का प्राचीन नाम अञ्जनागिरि था—यह ऊपर कहा जा चुका है।

लोहितागिरि—अफगानिस्तान में दो अन्य ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं। एक मध्य अफ़गानिस्तान में काबुल के दक्षिण-पश्चिम कोह बाबा का पहाड़ और दूसरा उसके आगे उत्तर-पूर्व की ओर हिन्दूकुश पहाड़। इनमें हिन्दूकुश का प्राचीन नाम लोहितागिरि था। अर्जुन के दिग्विजय के प्रसङ्ग में काश्मीरविजय के पश्चात् लोहित जीतने का उल्लेख है। लोहितागिरि का ही दूसरा नाम रोहितगिरि था। पा० सू० ४।३।९१ की व्याख्या में काशिकाकारने रोहितगिरि की पर्वतीय आयुधजीवी जातियों की चर्चा की है। यह लड़ाकू जाति थी। इस प्रकार लोहितगिरि हिन्दूकुश हो सकता है। आजकल भी वहाँ के जन लड़ाकू स्वभाव के ही होते हैं। समस्त अफ़गानिस्तान का भी प्राचीन नाम रोह कहा जाता है और वहाँ के निवासी रोहेला अथवा रुहेला कहलाते थे।

भञ्जनागिरि—सुलेमान (अञ्जनागिरि तथा हिन्दूकुश (लोहितागिरि) के मध्य में स्थित कोह बाबा पहाड़ अफगानिस्तान का केन्द्रीय जल-विभाजक है। यहीं से बिखरकर जलधाराएँ अफ़गानिस्तान की चारों दिशाओं में जाती हैं, अतः इस पर्वत का प्राचीन नाम भञ्जनागिरि हो सकता है; क्योंकि यह जलधाराओं को तोड़कर चारों ओर प्रवाहित होने के लिए बाध्य करता है।

कुक्कुटागिरि—यह पर्वत भी सम्भवतः इसी प्रदेश का कोई पर्वत हो सकता है। एक शृंखला कोह बाबा से पश्चिम की ओर हेरात तथा हरिरूद (सरयू) नदी के समानान्तर गयी है। वह कुछ नीची है। इस कारण ईरानी जन उसको उपरिश्येन (उपरिश्येन—बाज पक्षी के बैठने का अड्डा) कहते थे। यूनानियों ने उसका नाम परोयमिस लिखा है। यह बाह्लीक (बल्ख) के दक्षिण की पर्वतमाला है। इसी का भारतीय नाम कुक्कुटागिरि प्रतीत होता है।

उदक पर्वत—इस पर्वत का निर्णय अभी तक नहीं हो सका है।

सिन्धु—सिन्धु जनपद प्राचीन काल में सिन्ध नदी के पूर्वी किनारे को तरफ फैला हुआ अर्थात् सिन्ध-सागर दोआब समझा जाता था। यह जनपद सिन्ध तथा झेलम नदियों के मध्य में स्थित है। पाणिनि ने सिन्धु शब्द से सिन्धुक (सिन्ध का निवासी), सैन्धव (जिसके पूर्वज सिन्ध जनपद में रहे हों, नमक, घोड़ा) सक्तुसिन्धु (जिनको सत्तू प्रिय हो) तथा पानसिन्धु (जिनको पेय पदार्थ प्रिय हों) आदि बने हुए शब्दों का उल्लेख किया है, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि सिन्धु जनपद प्राचीन काल में दो भागों में विभक्त था, एक का नाम था सक्तुसिन्धु तथा दूसरे का पानसिन्धु।

सक्तुसिन्धु सम्भवतः उत्तरी सिन्ध के लिए प्रयुक्त होता था। डेरा इस्माईल खाँ की ओर आजकल भी वहाँ के

निवासियों का प्रिय भोजन सत्तू है, वह सौगात में भी भेजा जाता है।

पानसिन्धु दक्षिणी सिन्ध का नाम हो सकता है; क्योंकि वहाँ के निवासी पानप्रिय होते थे। महाभारत द्रोण पर्व ७६।१८ में जयद्रथ को क्षीरान्नभोजो कहा गया है। जयद्रथ सौवीर (आधुनिक सिन्ध) के उत्तरी भाग का तथा उसके ऊपर दक्षिणी सिन्ध का राजा था। वहाँ के जन का प्रधान भोजन क्षीर था। पा० सू० ८।४।६ का उदाहरण है 'क्षीरपाणा उशीनराः।' उशीनर जनों में क्षीरपान का पर्याप्त प्रचार था। चेनाब के पश्चिम सिन्ध तथा पूरब उशीनर जनपद (आधुनिक झंगमघिआना) थे। आजकल भी माण्टेगुमरी से लैयादेराजात तक का प्रदेश उत्तम जाति की गायों के लिए प्रसिद्ध है। चरक, चिकित्सास्थान ३०।११७ से भी यहाँ की क्षीरपान-प्रथा की पुष्टि होती है।

**सौवीर**—आधुनिक सिन्ध प्रान्त अथवा सिन्ध नदी के निचले काँठे का प्राचीन नाम सौवीर था। इस जनपद की राजधानी रोरुव (रौरुक) वर्तमान रोड़ी थी। यहाँ बसनेवाले जन सौवीर कहलाते थे। महाभारत के आदि पर्व से ज्ञात होता है कि सौवीर गन्धर्वों की एक उप-जाति के जन थे। इस देश में अनेक प्रकार की उत्तम वस्तुएँ पायी जाती थीं, जैसे सौवीरा। अमरसिंह ने अपने कोश में इसका एक पर्याय काञ्जी लिखा है। यह एक प्रकार का पेय पदार्थ है, परन्तु भावमिश्र भावप्रकाश, सन्धानवर्ग द्वितीय भाग में लिखते हैं कि 'सौवीरन्तु यवैरामैः पक्वैर्वा निस्तुषैः कृतम्। गोधूमैरपि सौवीरमाचार्याः केचिदूचिरे।' अमर सिंह ने २।६।१००३३ गन्धक से बनाये गये सुरमे को (सौवीर) लिखा है। अञ्जन बनाने के काम में आनेवाले सीसे को भी (सौवीर) कहते हैं। वर्तमान काल में डेरा इस्माईल खाँ में सुरमे का निर्माण प्रचुर मात्रा में होता है। आगे चलकर उन्होंने ही लिखा है कि 'सौवीरं वदरं घोण्टा कोलं कुवलफेनिले' २।४।३६। अर्थात् उन्नाव को भी सौवीर कहते हैं। महाभारत में सिन्धु तथा सौवीर की चर्चा साथ-साथ की गई है। इससे यह प्रतीत होता है कि ये दोनों जनपद आस-पास ही थे। पाणिनि ने कुछ सौवीर गोत्रों का उल्लेख भी (४।१।१५०) में किया है जिनसे फाण्टाहृतायनि, मैमृतायनि आदि शब्द बनाये हैं। आजकल भी सिन्धी जन के नामों के अन्त में जो आनी देखा जाता है उसका मूल प्रत्यय पाणिनि का आयनि प्रत्यय ही प्रतीत होता है, जैसे वस्वानी, असरानी, कृपलानी आदि। इससे भी सौवीर के निर्णय की पुष्टि होती है। एक गोत्र का नाम भागवित्ति था जिनकी पहिचान बुगतियों से की जाती है। ये लोग आजकल सिन्ध के उत्तरी भाग में पाये जाते हैं।

**अपकर**—पाणिनि सूत्र ४।३।३२ के अनुसार अपकर एक जनपद का नाम जान पड़ता है। यह सिन्धु के समीप ही रहा होगा; क्योंकि उक्त सूत्र में दोनों का प्रयोग एक साथ किया गया है। वहाँ का निवासी अपकरक तथा वहाँ उत्पन्न होनेवाला पदार्थ अपकरक कहलाता था। सम्भवतः जिला मियाँवाली के भक्खर का प्राचीन नाम अपकर रहा हो, क्योंकि इसकी स्थिति की एक विशेषता है। यहीं सिन्ध नदी को पार कर गोमती (आधुनिक गोमल) के किनारे गोमल दर्रे से होकर गजनी मार्ग जाता था। महमूद गजनवी इसी मार्ग से भारत आता-जाता था।

**पारस्कर**—पाणिनि सूत्र ६।१।१५७ में एक प्रदेश-विशेषबोधक (पारस्कर) शब्द का प्रयोग मिलता है। शब्द-साम्य से यह सिन्ध जनपद के पूर्वी एक जिला थरपारकर का प्राचीन नाम जान पड़ता है। सिन्धी भाषा में 'थर' शब्द मरुस्थल का वाचक है। कच्छ के इरिण (रन्न) प्रदेश के उत्तर का समस्त भाग पारस्कर में सम्मिलित प्रतीत होता है।

**शर्करा**—वर्तमान रोड़ी के उस पार सिन्ध नदी के दाहिने किनारे का प्रसिद्ध स्थान सक्खर प्राचीन काल का शर्करा है। पाणिनि ने ४।२।८३ सूत्र से शर्करा, शार्कर, शार्करिक, शार्करिक, शार्कर तथा शार्करीय रूपों को बनाया है।

**दात्तामित्री**—सौवीर जनपद में काशिकाकारने दात्तामित्री नाम की एक नगरी का उल्लेख किया है। एक यूनानी राजा डिमिट्रिअस था। उसने भारत पर शासन किया था। उसको भारतीय जन दत्तामित्र कहते थे। प्राकृत में इसका नाम दिमित्र अथवा दिमित था। उससे बसाई गई नगरी का नाम दात्रामित्री रहा होगा, परन्तु उसकी स्थिति का निर्णय अभी तक नहीं हो

सका है। नासिक गुफा के लेखों में दात्तामित्री नगरी के निवासी दानदाता का उल्लेख दातामितीयक नाम से हुआ है।

**ब्राह्मणक**—अष्टाध्यायी ५।२।७१ के आधार पर ब्राह्मणक एक देश का नाम प्रतीत होता है। यूनानी लेखकों ने इसका नाम ब्राखमनोई लिखा है। यह सिन्ध प्रदेश के मध्य में मीरपुरखास से लगभग पचीस मील उत्तर वर्तमान ब्राह्मणावाद हो सकता है। राजशेखर की काव्यमीमांसा में प्रयुक्त ब्राह्मणवह भी इसी का नाम है। अरब भूगोल लेखक अबूरिहाँ ने इसका नाम बमनहवाँ ( ब्राह्मणवह का ही विकृत रूप ) लिखा है।

**शौद्रायण**—ब्राह्मणक जनपद से मिला हुआ शूद्रों का भी एक जनपद था। पाणिनि के ऐषुकारिगण में शौद्रायण का उल्लेख मिलता है। इस गण के सभी नाम निवासिजन के ही नाम पर रखे गये हैं। पतञ्जलि ने अब्राह्मणक तथा अवृषलक देशों का उल्लेख किया है। सम्भवतः अब्राह्मणक संज्ञा शौद्रायण की तथा अवृषलक ब्राह्मणक जनपद की रही हो। ब्राह्मणक जनों के समान शौद्रायण जनों ने भी सिकन्दर से युद्ध किया था। यूनानी लेखकों ने शौद्रायण जनों को सोडराई लिखा है। डायडोरस ने सोडराइयों को सिन्ध नदी के पूर्वी तट के प्रदेश में तथा मस्सनइयों को पश्चिम तट के प्रदेश में रहनेवाले लिखा है। टालेमी ने मस्सनई का शुद्ध रूप मुसरनई दिया है जो कि पाणिनि का मसुर अथवा मसूरकर्ण है। मिठनकोट से नीचे सिन्ध नदी के पश्चिम मुजरक का जिला प्राचीन मसूरकर्ण प्रदेश था।

**मुचकर्ण**—यूनानी लेखकों के अनुसार सिकन्दर ने शौद्रायण तथा मसूरकर्णों से सन्धि करने के पश्चात् सिंध देश के मुसकर्ण नामक प्रदेश में प्रवेश किया था; जो कि उस समय भारत का सबसे समृद्धिशाली प्रदेश कहा जाता था। पाणिनि का मुचकर्ण यही हो सकता है। ये लोग उपरले सौवीर जनपद में शौद्रायण के दक्षिण रहते थे। कनिंघम के अनुसार इनकी राजधानी अलोर ( आधुनिक रोहक ) नगर थी।

**वर्णु**—अष्टाध्यायी ४।२।१०३ में वर्णु शब्द का उल्लेख है। उपरिलिखित सूत्र की व्याख्या में काशिकाकार ने 'वर्णु' शब्द को देशवाचक तथा नदवाचक लिखा है—"वर्णुर्नाम नदस्तत्समीपो देशो वर्णुः"। इस व्याख्या से मालूम पड़ता है कि कुर्रम राज्य के अन्तर्गत कुर्रम कहलानेवाली नदी ही प्राचीन काल में बन्नू की घाटी में प्रवेश करने पर वर्णु कहलाती थी। वर्णु नदी का समीपस्थ प्रदेश पा० सू० ४।२।७७ के अनुसार वार्णव कहलाता था। आधुनिक बन्नू का प्राचीन नाम वर्णु था। बन्नू घाटी में कुर्रम नदी ( वैदिक क्रमु ) तथा गम्बिल अथवा तोची नदियाँ बहती हैं। ये दोनों सम्मिलित होकर सिन्ध में मिली हैं। यद्यपि आधुनिक बन्नू ( एडवर्डसबाद ) सन् १८४८ ई० में बसाया गया तथापि बन्नू घाटी—जिसके कारण नगर का नाम बन्नू पड़ा—का नाम प्राचीन ग्रंथों में उपलब्ध होता ही है।

**उदमाण्ड**—अटक के उत्तर कुछ मील की दूरी पर ओहिन्द नाम का नगर है। इसी का प्राचीन नाम उदमाण्ड था। यह काबुल नदी ( कुभा ) के तट पर स्थित है। प्राचीन काल में यह व्यापार का बड़ा भारी केन्द्र था। प्राचीन काल में पूर्व भारत से गान्धार जनपद तक जानेवाला मार्ग उत्तर पथ कहलाता था, सम्भवतः उसी के स्थान पर आजकल शाही सड़क ( Grand trunk Road ) बनायी गयी है। पा० सू० ५।१।७७ में उत्तर पथ का उल्लेख है। यह उत्तरपथ यूनानी लेखकों को भी ज्ञात था। उदमाण्ड इसी मार्ग पर स्थित था। सिन्ध नदी को पार करके बाहर जानेवाली व्यापारिक वस्तुएँ उदभाण्ड में एकत्र होती थीं और वहाँ से व्यापार के लिए इधर-उधर जाती थीं। पाणिनि का जन्म-स्थान सलातुर ( लहुर ) उदमाण्ड से केवल चार मील की दूरी पर कुभा-सिन्धु ( काबुल-सिन्ध ) के सङ्गम के कोण में स्थित है। उदभाण्ड से साठ मील पूर्व गन्धार की पूर्वी राजधानी तक्षशिला थी तथा उसकी पश्चिमी राजधानी पुष्कलावती ( चारसड्डा ) साठ ही मील पश्चिम की ओर थी।

**बाहीक**—बाहीक एक विशिष्ट जाति के जन थे। इनका निवासस्थान भी बाहीक कहलाता था। बाहीक जन सिन्ध तथा सतलज के मध्यवर्ती प्रदेशमें रहते थे। कर्ण पर्व ( महाभारत ) में उल्लेख है कि बाहीक जन पवित्र भारत के बाहर पञ्जाब की पांच नदियों तथा

सिन्ध से सिक्त प्रदेश में निवास करते थे। इससे यह भी विदित होता है कि पंजाब की पाँच नदियों शुतुद्रु (सतलज), विपाशा (व्यास), इरावती (रावी), चन्द्रभागा (चनाव) तथा वितस्ता (झेलम) में सिन्ध की गणना नहीं की जाती थी। "बहिष्कृता हिमवता गङ्गया च बहिष्कृता। सरस्वत्या यमुनया कुरुक्षेत्रेण चापि ये॥ पञ्चानां सिन्धुषष्ठानां नदीनां येऽन्तरे स्थिताः। तान् धर्मबाह्यानशुचीन् बाहीकानपि वर्जयेत्॥ पञ्चनद्यो वहन्त्येता यत्र पीलुवनान्युत। शुतद्रुश्च विपाशा च तृतीयैरावती तथा। चन्द्रभागा वितस्ता च सिन्धुषष्ठा बहिर्गिरेः। आरट्टा नाम ते देशा नष्टधर्मा न तान् व्रजेत्। पञ्चनद्यो वहन्त्येता यत्र निःसृत्य पर्वतात्। आरट्टा नाम बाहीका न तेष्वार्यो द्व्यहं वसेत्॥" उपर्युक्त नदियों के पाँचों सम्मिलित स्रोत सिन्ध में मिलने से पहिले पञ्चनद कहलाता है जैसा कि पा० सू० ५।४। ७५ से भी स्पष्ट होता है।

बाहीक जनपद की सीमा का ठीक-ठीक निर्णय करना असम्भव है। व्याकरण साहित्य में अनेक बाहीक ग्रामों के नाम आये हैं। उनमें से कुछ का निर्णय हो चुका है परन्तु अभी अनेक ग्रामों का निश्चय करना शेष है। इतना तो निश्चय ही है कि बाहीक जनपद में मद्र, केकय तथा शिवि अथवा उशीनर अवश्य सम्मिलित थे। उशीनर प्राचीन काल के भारत की एक विशिष्ट जाति के जन थे। शिवि नाम के एक प्रसिद्ध राजा के नाम पर उस जाति के जन शिवि भी कहलाने लगे। जनपद के कारण उशीनर तो कहलाते ही थे। पा० सू० ४।२। ११८ के आधार पर ज्ञात होता है, कि उशीनर बाहीक जनपद में सम्मिलित था। पाणिनि ने उशीनरों के लिए एक विशेष सूत्र २।४।२० लिखा है जिससे ज्ञात होता है कि ये लोग पर्याप्त प्रसिद्ध तथा प्रभावशाली जन थे। ऊपर उद्धृत सूत्रों पर वामन की व्याख्या से यह ज्ञात होता है कि बाहीक जनपद में निम्नलिखित प्रदेश भी सम्मिलित थे—सुशमि, अह्वर, अह्वजाल तथा सुदर्शन। परन्तु इनमें से अभी किसी की पहिचान न हो सकी। केवल अह्वर को कुछ विद्वान् पुराणमीर मानते हैं जैसा कि जनरल कनिंघम ने लिखा है कि उनको वहाँ पर कुछ भग्नावशेष प्राप्त हुए थे। यूनानी लेखकों के आधार पर यह तो निश्चय है कि शिवि जन झेलम-चनाव दोआब में रहते थे। महाभारत में उल्लेख है कि सौवीर शिवियों से भिन्न जन थे। वामन ने पा० सू० ८।४।९ की व्याख्या में लिखा है कि उशीनर दूध पीनेवाले तथा बाहीक सौवीर पीनेवाले होते हैं। पा० सू० २।४।२० से ज्ञात होता है कि सौवीर एक पेय पदार्थ होता है। उशीनर देश मोटे सूती कपड़ों के लिए प्रसिद्ध था।

पाणिनि ने उशीनर जनपद के ऐसे स्थानों का उल्लेख किया है जिनके अन्त में कन्था शब्द जुड़ा रहता था, जैसे—सौशमिकन्थ, चिह्णकन्थ, आह्वरकन्थ आदि। कन्था शब्द का शक भाषा में नगर अर्थ होता है। महाभारत में उशीनर जनपद के एक राजा का नाम शिवि लिखा है—वनपर्व १९४।२। शिवियों की राजधानी शिविपुर थी जो कि आधुनिक शेरकोट (झंग जिले की एक तहसील) है। शेरकोट में प्रचुर मात्रा में अवशेष पाये गये हैं। कावेरी नदी के तट पर रहनेवाले शिवि इनसे भिन्न थे।

पाणिनि ने बाहीक जनपद के ग्राम तथा नगरों में कोई भेद नहीं किया है। दोनों को पर्याय के रूप लिखा में है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि बाहीक जनपद के ग्राम भी नगर के समान ही समृद्धिशाली थे। यूनानी लेखकों ने लिखा है कि बाहीक जनपद में लगभग पाँच सौ समृद्धिशाली नगर थे।

संकल—पाणिनि सूत्र ४।२।७५ में नगरवाचक संकल शब्द का उल्लेख मिलता है। सम्भवतः झंग जिले के संगलवाला टीबा का प्राचीन नाम संकल रहा हो। यह कठ क्षत्रियों का निवासस्थान था।

कत्रि—पा०सू०४।२।९५ में 'कत्रि' शब्द प्रयुक्त हुआ है। अनुमान किया जाता है कि अल्मोड़ा जिले का 'कत्यूर' प्राचीन काल का कत्रि रहा होगा।

फलकपुर—पा०सू०४।२।१०१ में इसकी चर्चा है। जालन्धर जिले का वर्तमान फिल्लौर प्राचीन काल का फलकपुर हो सकता है।

मार्देयपुर—उपरिलिखित पा०सू० में ही इसकी भी चर्चा है। बिजनौर जिले का आधुनिक मडावर प्राचीन काल का मार्देयपुर प्रतीत होता है; क्योंकि यह स्थान अति प्राचीन जान पड़ता है।

चक्रवाल—पा०सू०४।२।८० में इसका नाम आया है। सम्भवतः यह जिला झेलम का वर्तमान चकवाल है।

संड्डु-खंड्डु—पा०सू०४।२।७७ में इनका उल्लेख है। सिल्वांलेवी इनको अटक के समीप आधुनिक उंड तथा खुंड मानते हैं—(जर्नल एशियाटिक सोसायटी १९१५ पृ० ७३)

पर्शु—वराहमिहिर ने बृहत्संहिता १४।१८ में इस देश को भारत के नैर्ऋत्य कोण में स्थित लिखा है। उसी में ८०।२ यहाँ के मोतियों की खान का भी वर्णन है। यहाँ के मोती श्वेतवर्ण, गुरु तथा महागुणकारी होते हैं। वराहमिहिर के वर्णन के आधार पर इस देश को सागर के तट पर स्थित होना चाहिये। पं० गिरीशचन्द्र का अनुमान है कि यह बसरा का ही प्राचीन नाम है, क्योंकि यह भारत के नैर्ऋत्य कोण में सागर के तट पर स्थित है तथा यहाँ उत्तम प्रकार के मोती भी पाये जाते हैं।

पाणिनि ने ५।३।११७ में इस शब्द का उल्लेख किया है। इस देश में रहनेवाली जाति पर्शव तथा एक व्यक्ति पार्शव कहा जाता था। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल लुडविग तथा वेबर के आधार पर पर्शु को फारस मानते हैं। ऋग्वेद ८।६।४६ में भी पर्शु का उल्लेख मिलता है। कीथ भी पारस को ही पर्शु मानते हैं। शब्दसाम्य से भी फारस ही प्राचीन पर्शु जान पड़ता है।

मद्र—मद्र जनपद का निर्णय पूर्णतया हो चुका है। मद्र जन रावी-झेलम दोआब में रहते थे। उक्त दोआब को मद्र जनपद कहते थे। यह जनपद बाहीक का उत्तरी भाग था। इस जनपद की राजधानी शाकल ( स्यालकोट ) थी जो कि आपगा ( अय्यक ) नदी के तट पर स्थित थी। यह छोटी नदी जम्मू की पहाड़ियों से निकलकर स्यालकोट होती हुई चेनाब से मिलती है। पतञ्जलि ने शाकल की गणना वाहीक ग्रामों में की है। महाभारत काल में इस देश का राजा शल्य था। मत्स्यपुराण के अनुसार सत्यवान् के पिता अश्वपति ने भी इस जनपद पर शासन किया था। कुछ विद्वानों की धारणा है कि मद्रदेश भी बाहीक नाम से पुकारा जाता था। सम्भव है कि मद्र जनपद बाहीक का भाग होने के कारण उस नाम से भी सम्बोधित होता रहा हो। हेमचन्द्र के अभिधानचिन्तामणि के अनुसार इस जनपद का एक नाम टक्क भी था—'बाहीकाष्टक्कनामानो बाह्लीका बाह्लिकाह्वयाः।'' ४।२५। जेनरल कनिंघम ने लिखा है कि टक्क नाम के जन अब भी रावी के समीपवर्ती पर्वतों पर मिलते हैं। उनका मुख्य व्यवसाय कृषि है।

पा०सू० ४।२।१०८ से विदित होता है कि पाणिनि काल में यह जनपद दो भागों में विभक्त था—पूर्वमद्र तथा अपरमद्र। रावी तथा झेलम नदियों के मध्य में चेनाब नदी बहती है। चेनाब तथा रावी के मध्य का भाग ( स्यालकोट तथा गुजरांवाला ) पूर्वमद्र एवं चेनाब तथा झेलम के मध्य का भाग अपरमद्र कहलाता था। कथासरित्सागर में लिखा है—"शाकलं नाम मद्रेषु बभूव नगरं पुरा। चन्द्रप्रभाख्यस्तत्रासीद्राजाङ्गारप्रभात्मजः॥" ४४।१७। उसी के आगे लिखा है "संगमं चन्द्रभागाया इरावत्याश्च यत्र ते। स्थिताः सूर्यप्रभस्यार्थे राजानो मित्रबान्धवाः।"४६।२। अर्थात् शाकल ( स्यालकोट ) चन्द्रभागा ( चेनाब ) तथा इरावती ( रावी ) के संगम के समीप स्थित था।

श्युआन चुआंग के समय ( सातवीं शताब्दी ) शाकल के अवशेष पाये जाते थे। पा०सू०४।३।१२८ पर वामन की व्याख्या से विदित होता है कि शाकल नाम का एक महान् गणितज्ञ वहाँ रहता था। पा०सू०४।२।११७ की व्याख्या में वामन ने शाकल के बाद मन्थु नाम के एक अन्य नगर का उल्लेख किया है जो कि सम्भवतः आधुनिक मुण्ड हो सकता है।

मद्र जनपद में जर्तिक नाम के जन भी रहते थे। सम्भवतः ये जन जाटों के पूर्वपुरुष हो सकते हैं। वर्तमान काल में पंजाब के अधिकतर भागों में जाट पाये जाते हैं। जर्तिक जन मद्र शासकों की प्रजा थे। कुछ विद्वानों ने जर्तिक तथा आरट्ट को मद्र का पर्याय माना है, परन्तु इसका समर्थक कोई पुष्ट प्रमाण अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ। आरट्ट देश घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था—'आरट्टजश्चटुलनिष्ठुरपातमुच्चैश्चित्रञ्चकार पदमर्द्धपुलायितेन।' "माघ ५।१०। पञ्जाब के पूर्वोत्तर प्रदेश में आज भी उत्तम जाति के घोड़े पाये जाते हैं। रावलपिंडी में गुजरात के जन आज भी अपने जिले को हैरट अथवा ऐरट कहते हैं। यह आरट्ट का विकृत रूप मालूम पड़ता है। राजतरङ्गिणी ५।१५० में उल्लेख है कि टक्क देश गुर्जरराज (गुजरात का राजा) के अधीन था। पुराणों में टक्क का उल्लेख नहीं मिलता।

वैदिककालीन भारत में मद्रजनों का उच्च स्थान था। प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि उत्तर भारत के ऋषि वेदाध्ययन के लिए मद्र जनपद जाया करते थे। वृहदारण्यक ३।७।१ में उद्दालक आरुणि ने याज्ञवल्क्य से कहा है कि मैं यज्ञाध्ययन के लिए मद्र जनपद में पतञ्जल कापेय्य के घर रहता था। ऐतरेय ब्राह्मण ८।१४।३ में मद्र के एक भागविशेष का नाम उत्तरमद्र भी मिलता है। वह हिमालय के आगे उत्तर कुरु के समीप था।

गन्धार—पा० ने अष्टाध्यायी ४।१ ६९ में इस जनपद का नाम गान्धारि लिखा है। यहाँ के राजा तथा राजकुमार गान्धार कहे जाते थे, परन्तु उन्हीं के गणपाठ में इसका नाम गन्धार मिलता है। यूनानी लेखकों ने इस जनपद को गन्दराइ तथा गन्धराइति लिखा है। वह गान्धारि शब्द के अधिक निकट जान पड़ता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का अनुमान है प्राचीन काल में किसी व्यक्तिविशेष का नाम गान्धारि था उसी के आधार पर उसके जनपद का नाम भी गान्धारि हो गया। यह जनपद काबुल नदी की घाटी से तक्षशिला तक विस्तृत था। इस जनपद की दो राजधानियाँ थी। पश्चिमी गन्धार की राजधानी पुष्कलावती थी। वह सुवास्तु (स्वात) तथा कुभा (काबुल) नदियों के सङ्गम पर स्थित थी उसका आधुनिक नाम चारसड्डा है। मार्कण्डेय पुराण ५७।३९ में "पुष्कला:" नाम के एक जनपदविशेष का उल्लेख भी मिलता है। बहुत सम्भव है गन्धार के एक अङ्ग को पुष्कल भी कहते हों, अत एव उस भाग की राजधानी का नाम पुष्कलावती पड़ गया। इस जनपद की पूर्वी राजधानी तक्षशिला थी।

उड्डियान—सुवास्तु तथा गौरी (पञ्जकोरा) नदियों के मध्य में एक छोटे से जनपद का नाम उड्डियान था। वह भी गन्धार का ही एक भाग था। वहाँ के बने हुए कम्बल (पाण्डुकम्बल) अधिक प्रसिद्ध थे। इस कम्बल से प्राचीन काल में रथ सजाये जाते थे। यह लाल रंग का होता था और विशेषतया इससे सैनिक रथ मढे जाते थे। वेस्सन्तरजातक ६।५०० में उल्लेख हैं कि ये पाण्डु कम्बल गान्धार जनपद (उड्डियान) से आते थे। जातकों में तो यहाँ तक लिखा है कि पाण्डु कम्बल राजसिंहासन पर तथा राजगजेन्द्र पर बिछाये जाते थे। वर्तमान काल में भी स्वात घाटी में उत्तम श्रेणी के कम्बल बनते हैं।

कम्बोज—यह एक प्राचीनतम जनपद हैं। हरिवंश पुराण १३, ७६३, ६४; ७७५।८३ में लिखा है कि राजा सगर ने यवनों के वेष-भूषा के अनुसार उनके सिरों को मुड़वा कर उनका अपमान किया था—'अर्द्धंशकानां शिरसो मुण्डयित्वा व्यसर्जयत्। यवनानां शिरः सर्वं काम्बोजानां तथैव च॥ पारदा मुक्तकेशाश्च पल्लवाः श्मश्रु-धारणः॥ निःस्वाध्यायावषट्काराः कृतास्तेन महत्मना॥ महाभारत तथा जातककथाओं तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कम्बोज के घोड़ों की बड़ी प्रशंसा मिलती है अतः जान पड़ता है कि वहाँ उत्तम जाति के घोड़े प्रचुर मात्रा में पाये जाते थे।

आयुर्वेद के ग्रन्थों में माषपर्णी (बन उड़द) का एक पर्याय काम्बोजी मिलता है—"हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा" अमर० २।४।१६८। कालिदास ने—"काम्बोजाः समरे सोढुं तस्य वीर्यमनीश्वराः। गजालानपरिक्लिष्टैरक्षोटैः सार्द्धमानताः॥" रघुवंश ४।६९। ज्ञात होता है कि कम्बोज में अखरोट प्रचुरता से पाये जाते थे। डा० राक्सवर्ग का कहना है कि भारत के ठीक उत्तर तथा पूर्वोत्तर प्रदेश में अखरोट साधरणतया पाया जाता है। महाभारत सभापर्व २७।२२,२३ में लिखा है कि अर्जुन ने बल्ख-विजय के पश्चात् काम्बोजों के साथ दरद जनों को पराजित किया था। दरद जन वर्तमान हुंजा तथा गिलगित प्रदेश के निवासी थे। हिन्दूकुश पहाड़ ने बल्ख से इस प्रदेश को पृथक् कर दिया है, अतः यह कहा जा सकता है कि काम्बोज हिन्दूकुश के समीपवर्ती प्रदेश के निवासी थे। एल्फिन्स्टन का कहना है कि इस प्रदेश के निवासी काफिर लोग अब भी अपने को कमोह कहते हैं।

लैसन ने कम्बोज को काश्कर के दक्षिण तथा आधुनिक काफिरिस्तान के पूर्व माना है। रायस डेविड के अनुसार यह जनपद भारत के ठीक पश्चिमोत्तर प्रदेश में स्थित था। कम्बोज की राजधानी द्वारका (सौराष्ट्र की द्वारका नहीं) थी। यह मध्य एशिया के पठारों से उतरकर वंक्षु नदी (आक्सस) को पार कर भारत में प्रवेश करने का द्वार था,

अतः उसका नाम द्वारका पड़ा। आजकल उसको 'दर्वाज' कहते हैं।

पाणिनि के आधार पर कहा जा सकता है कि यह एक राज जनपद था। पं० जयचन्द्र विद्यालंकार पुष्ट प्रमाणों के आधार पर हिन्दूकुश के उत्तर-पूर्व बदख्शाँ से पामीर तक विस्तृत प्रदेश को कम्बोज मानते हैं। उनका कहना है कि आजकल भी वंक्षु के ऊपर के प्रदेश में तथा पामीर की गल्चा भाषा में जाने के अर्थ में शव् धातु का प्रयोग प्रचुरता से पाया जाता है, जो कि 'शवतिर्गतिकर्मा कम्बोजेष्वेव भाष्यते' से ठीक सङ्गत होता है। महाभारत में कम्बोज तथा वाह्लीक का उल्लेख एक साथ मिलता है, अतः मालूम पड़ता है कि ये दोनों जनपद पड़ोसी थे। डा० मोतीचन्द ने भी इसी स्थापना का समर्थन किया है। उनका कहना है कि कम्बोज का ईरान से भी सम्बन्ध अवश्य था। कश्मीर के राजा मुक्तापीड ललितादित्य अवन्ति को जीतकर उत्तर की ओर गये—राजतर० ४।१६३। वहाँ काम्बोजों को पराजित कर उनके घोड़ों को छीना। तुखार के जन अपने घोड़ों को छोड़कर भाग गये। इनके बाद भौट्टों तथा दरदों का उल्लेख है। वल्विस्तान, बोलन तथा दरदिस्तान की स्थिति निश्चित हो जाने के कारण कम्बोज अब काफिरिस्तान, बल्ख, बदख्शाँ तथा पामीर में ही हो सकता है। बौद्ध साहित्य से भी इसी की पुष्टि होती है। पेतवत्थु की टीका परमत्थदीपिनी में कम्बोज के साथ द्वारका का नाम भी आया है। जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि यह काठियावाड़ की द्वारका से भिन्न द्वारका है। मध्यकालीन अरब के भूगोल लेखक इद्रिसी के वर्णन से भी कम्बोज की स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। वह बदख्शाँ के सौन्दर्य, उर्वरा भूमि, घोड़े, खच्चर, रंगविरंगे बहुमूल्य पत्थर, कस्तूरी आदि का वर्णन कर चुकने पर कहता है कि बदख्शाँ कनोज की सीमा पर है। इसमें सन्देह नहीं कि इद्रिसी का अभिप्राय आधुनिक कन्नौज से नहीं था प्रत्युत कम्बोज से था। 'कनोज' कम्बोज का ही विकृत रूप है। यह भी स्पष्ट ही है कि उसके समय कम्बोज की सीमा संकुचित हो गई थी; क्योंकि उसने बदख्शाँ का उल्लेख पृथक् राज्य के रूप में किया है।

प्राचीन काल में कम्बोज तथा परमकम्बोज जनपद उस समस्त भूभाग में विस्तृत था जिसमें बरवी, शिघ्नी, सरीकोली, जेबकी, संग्लची अथवा इश्काश्मी, मुञ्जानी, युद्घा और याघ्नोबी आदि गल्चा भाषा की शाखायें मुख्यतः पामीर, वंक्षु के ऊपरी भाग तथा पश्चिम में बदख्शाँ तक बोली जाती हैं।

रघुवंश ४।७० से ज्ञात होता है कि कम्बोज की उपज में रत्न मुख्य थे। मार्कोपोलो नामक यात्री ने बदख्शाँ के नीलम तथा लाल रत्नों की प्रशंसा की है। कप्तान वुड ने वंक्षु के उद्गम की यात्रा में वंक्षु नदी के दाहिने तट पर घरन जिले में इश्काश्म से बीस मील की दूरी पर लाल रत्न की खानों को सुना था तथा कोक्चा नाम की घाटी में नीलम की खानों को स्वयं देखा भी था। बदख्शाँ की चाँदी की खानें भी प्रसिद्ध थीं।

आजकल पञ्जाब में कम्बोह नामक कृषक जाति के कुछ जन पाये जाते हैं। समझ में नहीं आता कि कम्बोजों से उनका कैसा सम्बन्ध था। उनमें अनेक अनुश्रुतियाँ प्रचलित हैं। कुछ लोग अपने को कश्मीर से आया हुआ मानते हैं। कुछ लोग गढ़ गजनी को अपना मूल निवासस्थान मानते हैं। उनका कहना है कि महाभारत के युद्ध में उनके पूर्वज कौरवों की सहायता के लिये आये थे। उनका नेता सोदक्ष था, वह अपने अधिकांश सहचरों के साथ युद्ध में मारा गया। शेष जन नाभा में बस गये। कुछ लोगों की धारणा है कि कम्बोह शब्द ईरानी 'कइ' तथा 'अम्बोह' से बना हुआ समस्तपद है। अतः ये जन ईरान के 'कइ' वंश के हैं। परन्तु यह विचारणीय है कि अधिकांश अनुश्रुतियों से यह मालूम पड़ता है कि इनका मूल निवास सिन्ध के पार था तथा इनका सम्बन्ध ईरानियों से अवश्य है, अतः ये जन पामीर के प्राचीन कम्बोज ही हैं। महाभारत उद्योगपर्व में लिखा भी है कि 'सुदक्षिणश्च काम्बोजो यवनैश्च शकैस्तथा।१८।२१। सुदक्षिण का ही विकृत रूप सोदच जान पड़ता है। उसके मारे जाने पर उसके अनुयायी पञ्जाब में ही रह गये होंगे।

कम्बोज घोड़ों तथा खच्चरों के लिये ही प्रसिद्ध न था; प्रत्युत बकरों, चूहों तथा कुत्तों के ऊन से बने दुशालों के लिए भी प्रसिद्ध था। महाभारत के उपायन पर्व में वर्णन है—"और्णान् वैलान् वार्षदंशान् जातरूपपरिष्कृतान्। प्रावाराजिनमुख्यांश्च काम्बोजः प्रददौ बहून्। अश्वांस्तित्तिर-कल्माषांस्त्रिशतं शुकनासिकान्। उष्ट्रवामीस्त्रिशतं च

पुष्टान् पीलुशमीङ्गुदैः।" सभापर्व ५१-३-४। 'बैल' शब्द केवल विशिष्ट जाति के चूहों का ही वाचक नहीं, प्रत्युत बिलों में रहनेवाले अन्य जानवरों का भी वाचक है। वृषदंश साधारणतया बिल्ली का पर्याय माना जाता है; परन्तु यह कुत्ते का भी पर्याय हो सकता है, क्योंकि इसका खण्डार्थ बैलों को काटनेवाला भी है।

**द्व्यक्ष**—डा० मोतीचन्द के अनुसार बदख्शाँ का प्राचीन नाम द्व्यक्ष था। इसी का फारसी रूप बदख्शां है क्योंकि दोनों का अर्थ 'दो आँखवाला' होता है। महाभारत में द्व्यक्ष, त्र्यक्ष तथा ललाटाक्ष इन तीन जनपदों के नाम साथ-साथ आये हैं।

**त्र्यक्ष**—मार्कण्डेयपुराण में त्र्यक्ष के लिये त्रिनेत्र शब्द का प्रयोग किया गया है। सम्भवतः यह ऊपरी चित्राल का प्राचीन नाम हो; क्योंकि विड्डल्फ इसको 'तुरिखो' कहते हैं जो कि त्र्यक्ष का ही विकृत रूप जान पड़ता है।

**ललाटाक्ष**—इसके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। डा० मोतीचन्द का अनुमान है कि यह लद्दाख का प्राचीन नाम हो सकता है।

**वरणावती**—पा० सू० ४।२।८२ के उदाहरणों में वरणा नाम की एक नगरी का उल्लेख मिलता है। काशिकाकारने पा० सू० ४।२।८५ की व्याख्या में वरणावती नाम की नदी का उल्लेख किया है। इसी का नाम वीरणावती भी था। अथर्ववेद ४।१।७ की वरणावती यही है। यूनानी लेखकों ने 'ओरनोस' नाम के एक दुर्ग का उल्लेख किया है। आर्लस्टाइन ने उसको वरणा ही निश्चित किया है। यह स्थान पर्वतों से घिरा हुआ है। यह आश्वकायनों की राजधानी थी। यहीं सिकन्दर तथा आश्वकायनों में घमासान युद्ध हुआ था। इसी स्थान के समीप वरणावती हो सकती है।

**सुवास्तु**—इस नदी का नाम वैदिक काल से मिलता आ रहा है। आजकल इसको स्वात कहते हैं। इसमें पश्चिम की ओर गौरी (पञ्जकोरा) नाम की एक नदी मिलती है। इन्हीं नदियों के बीच उड्डियान नाम का जनपद था। यह जनपद गन्धार का ही भाग था। सुवास्तु तथा गौरी नदियों के मध्य में आश्वकायन जाति के वीर जन रहते थे। इनकी राजधानी मशकावती (मस्सग) थी।

**मशकावती**—मशकावती नदी का भी नाम है। प्राचीन काल में स्वात के निचले भाग को स्थानीय जन मशकावती भी कहते थे। उसके तट पर स्थित होने के कारण नगरी का नाम भी मशकावती पड़ गया। पतञ्जलि ने पा० सू० ४।२।७१ के भाष्य में मशकावती का उल्लेख नदी के रूप में किया है।

**पुष्कल**—सुवास्तु तथा कुभा के सङ्गम का समीपवर्ती देश पुष्कल नाम से भी प्रसिद्ध था। इसकी राजधानी पुष्कलावती (चारसद्दा) थी। पुष्कलावती नाम की एक नदी भी है। पा० सू० ४।२।८५; ६।१।२१९ तथा ६।३।११९ में काशिकाकारने पुष्कलावती का उल्लेख नदी के रूप में किया है। मशकावती की भाँति स्वात नदी के ही निचले भाग को स्थानीय जन प्राचीन काल में पुष्कलावती कहते थे। यूनानी लेखकों ने लिखा है कि इस प्रदेश में अस्तेनेनोई नाम के एक लड़ाकू जाति के जन रहते थे। सम्भवतः ये जन पाणिनि के हास्तिनायन ही थे।

**अम्बष्ठ**—टालेमी के अनुसार यह देश अम्बुतल जाति के लोगों का निवासस्थान था। ये लोग टाकी के पूर्ववर्ती प्रदेश में रहते थे, जो कि वर्तमान लाहौर का जिला हो सकता है। मत्स्यपुराण में अम्बष्ठा, वृषला तथा सौवीर, मद्र का साथ-साथ उल्लेख मिलता है—'सुव्रतस्य तथाम्बष्ठा कुशस्य वृषला पुरी' ४८।२०। अमरकोश में अम्बष्ठ को यूथिका (जुही), पाठा, चुक्र (चुक्, अम्लवेत) का पर्याय लिखा है। लाहौर जिले में उक्त वस्तुएँ प्रचुरता से उपलब्ध होती हैं। पा०सू०४।१।१७०,१७१ तथा ८।३।९७ की व्याख्या में वामन ने अनेक बार अम्बष्ठ का उल्लेख किया है। महाभारत के अनुसार अम्बष्ठ जन कौरवों के पक्ष से महाभारत युद्ध में लड़े थे। इनकी गणना औदीच्यों में की गयी है। यूनानी लेखकों ने 'संवस्तइ' या 'अम्बस्तनोई' इन्हीं के लिये लिखा है। ये जन चेनाब नदी के निचले भाग में रहते थे। टाकी तथा लाहौर के मध्य में अम्बा कापा नामक गाँव आज भी वर्तमान है। बहुत सम्भव है यह प्राचीन काल में अम्बष्ठों का मुख्य नगर रहा हो।

बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र पृ०२१ (F.w.Thomas)

में सिन्ध के संगम के पास अम्बष्ठ देश की चर्चा है। अम्बष्ठसुत्त में अम्बष्ठ ब्राह्मण कहे गये हैं। इसके विपरीत स्मृतियों में इनको ब्राह्मण तथा वैश्य से उत्पन्न संकर जाति का कहा गया है। जातकों के अनुसार ये कृषि करते थे। मालूम पड़ता है कि इस जाति के जन प्रथमतः लड़ाकू स्वभाव के थे, उनमें से कुछ लोगों ने पौरोहित्य, कृषि तथा चिकित्सा आदि को अपना व्यवसाय बना लिया। मनुस्मृति १०।४७ में इनकी चिकित्सा के व्यवसाय की चर्चा मिलती है—'अम्बष्ठानां चिकित्सितम्।'

पौर—मत्स्यपुराण में सौवीर, केकय तथा मद्रों के साथ पौर जनों की चर्चा की गयी है; परन्तु उनके स्थान का उल्लेख नहीं किया गया है। सिकन्दर के इतिहासलेखकों ने दो पौरों की चर्चा की है। उनमें से एक पौर झेलम के समीपवर्ती प्रदेश में रहते थे जो सम्भवतः संस्कृत साहित्य के पौरव ही थे। दूसरे चेनाव के बाहर रहते थे जो पौरों के शासक थे। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि पौर जन आरट्ट तथा अम्बष्ठ के मध्यवर्ती प्रदेश में रहते थे।

सुदास—वाल्मीकि रामायण में इस जनपद का नाम आया है। यह जनपद वाहीक सेपृथक् था, क्योंकि रामायण ही में लिखा है कि जो दूत भरत को उनके मामा के यहाँ से ले कर लौटे तो वे सुदास जनपद के उत्तर से वाहीक जनपद के मध्य से आये। भरत को केकय से लौटने में उतने ही दिन्न लगे थे जितने दिनों में दूत वहाँ पहुँचे थे। भरत की यात्रा में उन स्थानों की चर्चा नहीं की गयी है जिनकी चर्चा दूतों के जाने में की गयी थी। सम्भवतः नवीनता के ध्यान से ऐसा किया गया।

भरत ने सर्वप्रथम पञ्जाव की चार बड़ी नदियों—ह्लादिनी—शोर मचानेवाली झेलम, दूरपारा—चौड़े पाटवाली चेनाव, तिर्यक्स्रोता—टेढ़ी-मेढ़ी बहनेवाली रावी तथा शुतुद्रु—सतलज को पार किया। तत्पश्चात् यमुना को पार कर अहिस्थल (रामनगर) के समीप हिरण्यवती नदी को पार कर तोरण के दक्षिण वारणस्थल पहुँचे। तोरण तथा वारणस्थल का निर्णय नहीं हो सका है। हिरण्यवती सम्भवतः रामगंगा हो सकती है जिसकी सहायक नदी कोसी 'कुमारसम्भव' में वर्णित महाकोसी है (कु०स० ६।३३)।

वारणस्थल से चलकर भरत वरूथ तथा उज्जिहान गये। अभी तक इनका भी परिचय नहीं प्राप्त हो सका है। उज्जिहान के आगे उन्होंने उत्तर से आनेवाली नदी को पार किया। वह नदी गुर्रा हो सकती है। इसके बाद उन्होंने कुछ और अपरिचित स्थानों से होते हुए अयोध्या के पश्चिम गोमती को पार किया। अयोध्या पहुँचने के पहिले वे कलिङ्ग नगर भी गये थे। प्लिनी ने गङ्गातट पर स्थित एक कलिङ्ग नगर की चर्चा की है। सम्भव है यह नगर कलिङ्ग शासित होने के कारण उक्त नाम से सम्बोधित होता रहा हो, परन्तु वह कहाँ था—अभी तक ज्ञात नहीं हो सका।

सुदास जनपद कहाँ था? इस विषय में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि यह मद्र जनपद के उत्तर रहा होगा। इसको सिन्ध नदी के पूर्व ही कहीं होना चाहिये। मालूम पड़ता है कि इसी का दूसरा नाम शौद्रायण था जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। यूनानी लेखकों ने इसी जनपद को सोडरोई लिखा है। इस जनपद के निवासियों ने भी सिकन्दर से युद्ध किया था।

केकय—यूनानी लेखकों ने कहीं भी इसकी चर्चा नहीं की है। उन्होंने एक जाति कैथेयी का उल्लेख अवश्य किया है जो कि चेनाव के पूर्व के निवासी थे। उनका रहन-सहन तथा वेश-भूषा सौवीरों की-सी थी। स्ट्रैबो ने लिखा है कि इस जाति के जन बड़े सुंदर होते थे। वाल्मीकि रामायण से भी ज्ञात होता है कि राजा दशरथ कैकेयी का अत्यधिक समादर इसी कारण करते थे कि वह सभी रानियों में अत्यधिक रूपवती थी। वर्तमान कत्त्यवर के कत्ति जन लम्बे, हृष्ट-पुष्ट तथा गौर वर्ण के होते हैं। ये लोग सिन्धु तट से निर्वासित होकर यहाँ आये थे। इससे प्रतीत होता है कि ये ही जन संस्कृत साहित्य के केकय हैं। महाभारत में भी सैन्धवों के साथ-साथ केकयों का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। विष्णुपुराण ४–१४–१० में लिखा है कि श्रीकृष्ण की एक बूआ केकयराज से व्याही थीं।

पं० भगवद्दत्त की धारणा है कि प्राचीन वर्णु (बन्नू) केकय जनपद का एक भाग था, क्योंकि बन्नू के पास भरत

तथा कक्की नाम के दो ग्राम अब भी वर्तमान हैं। उन्हीं के पास अक्करा नाम का एक दूसरा भी ग्राम है। मालूम पड़ता है कि भरत के मामा ने इन ग्रामों को भरत को भेंट में दिया था। इसके विपरीत डा० वासुदेवशरण ने लिखा है कि केकय जनपद वर्तमान झेलम, शाहपुर तथा गुजरात प्रदेश का प्राचीन नाम था, जिसमें सैन्धव पर्वत (खिउड़ा की नमक की पहाड़ी) है। केकय जनपद एक राज जनपद था। वहाँ के निवासी कैकेय कहलाते थे। पाणिनि के भर्गादिगण में केकय का नाम आया है। डा० अग्रवाल के मत का समर्थन वाल्मीकि रामायण से होता है। जब भरत को बुलाने के लिए अयोध्या से दूत केकय की राजधानी गिरिव्रज गये थे तो उनकी यात्रा के वर्णन में सबसे बड़ी तथा प्रसिद्धतम नदी सिन्ध के विषय में एक शब्द भी नहीं कहा गया, अतः यह निर्विवाद है कि गिरिव्रज सिन्ध नदी के पूर्व तथा झेलम के पश्चिम ही था।

गिरिव्रज—यह केकय जनपद की राजधानी का नाम था। गिरिव्रज का शब्दार्थ होता है पर्वत-समूह। अतः नमक की पहाड़ियों के मध्य में ही कहीं इसको ढूँढ़ना चाहिये। नमक की पहाड़ी झेलम से सिन्ध तक विस्तृत है। यदि भारत के मानचित्र में नमक की पहाड़ी की समतल भूमि में स्थित वर्तमान जलालपुर से एक सीधी रेखा सरयू तट पर स्थित अयोध्या तक खींच दी जाय तो वाल्मीकि रामायण में वर्णित दूत-यात्रा में आये हुए स्थान ठीक-ठीक उसी रेखा पर पड़ेंगे। जलालपुर के समीप एक प्राचीन किला है। आजकल लोग उसको गिरिझक कहते हैं। इसका भी अर्थ पर्वतसमूह ही है। कहा जाता है कि इसको भरत ने बनवाया था। सम्भवतः यही प्राचीन गिरिव्रज है, यहां प्राचीन मुद्राएँ प्रचुरता से पायी गयी हैं। जेनरल कनिंघम के अनुसार इसी गिरिझक को प्राचीन गिरिव्रज कह सकते हैं।

सौभूत—पाणिनि सूत्र ४।२।७५ में सौभूत नाम के एक स्थान की चर्चा है। यूनानी लेखकों ने सोफाइट नाम के एक स्थान को चर्चा की है। सम्भव है इसी का प्राचीन नाम सौभूत रहा हो। यह स्थान भयंकर कुत्तों के लिए विख्यात था। इससे मालूम पड़ता है कि यह स्थान केकय जनपद में ही खिउड़ा के आस-पास कहीं रहा होगा। वाल्मीकि रामायण से ज्ञात होता है कि यहाँ भयंकर दांत-वाले विशालकाय कुत्ते होते थे। वे केकयराज के भवन में पाले जाते थे। इसी कारण पाणिनि ने उन कुत्तों का पर्याय कौलेयक लिखा है।

कश्मीर—आधुनिक पञ्जाब के उत्तर कश्मीर प्रदेश स्थित है। इसकी चर्चा रामायण में कहीं नहीं मिलती। कुरुक्षेत्र के महायुद्ध में भी यहाँ के किसी राजा के भाग लेने की चर्चा नहीं की गयी। महाभारत में इस देश की चर्चा से असभ्य जाति की ओर संकेत अवश्य किया गया है। इससे जान पड़ता है कि यह प्रदेश प्राचीन काल में आर्यों से शासित न था प्रत्युत यहाँ असभ्य जन रहा करते थे। उनका सभ्य जगत् से सम्बन्ध नहीं के समान था। हरिवंशपुराण में वर्णन है कि कश्मीर के राजा गोनर्द ने मथुरा पर आक्रमण करने के समय जरासन्ध की सहायता की थी—'कश्मीरराजो गोनर्दो दरदाधिपतिर्नृप।'—हरिवंश ४६७१, परन्तु यह उल्लेख नहीं किया गया कि वह म्लेच्छ अथवा आर्य था। मुद्राराक्षस में पारसीक, सिन्धु मलय तथा कुलूत (कुलू) राजाओं के साथ कश्मीर के राजा पुष्कराक्ष को भी म्लेच्छ कहा गया है—'तस्य म्लेच्छराजस्य बलस्यमध्यात् प्रधानतमाः पञ्च राजानः परया भक्त्या राक्षसमनुवर्तन्ते, तथा हि—कौलूतश्चित्रवर्मा मलयनरपतिः सिंहनादो नृसिंहः। काश्मीरः पुष्कराक्षः क्षतरिपुमहिमा सैन्धवः सिन्धुषेणः। मेघाचः पञ्चमोऽस्मिन् पृथुतुरगबलः पारसीकाधिराजः।"—मुद्राराक्षस १-२।

त्रिकाण्डशेष में कश्मीर का एक पर्याय कीर भी मिलता है। "अथ कश्मीरे कीराः स्युः शास्त्रशिल्पिनः" भूमिवर्ग ८। जेनरल कनिंघम ने इसकी पुष्टि में लिखा है कि 'कश्मीरी जन कीर तथा म्लेच्छ भी कहे जाते हैं। हेमचन्द्र ने कश्मीरियों का एक पर्याय माधुमत भी दिया है—'काश्मीरास्तु माधुमताः' ४।२४। माधुमत शब्द मधुमती (सिन्ध) से बना हुआ है। इस प्रदेश का विस्तार भिन्न-भिन्न समय में चाहे जितना भी रहा हो परन्तु प्राचीन काल में हिमालय तथा पीर पञ्जाल की पहाड़ी का मध्यवर्ती भाग कश्मीर जनपद में अवश्य सम्मिलित था।

कश्मीर जनपद वितस्ता (व्यास) से सिक्त है। वामन ने पा० सूत्र १।४।३१ की व्याख्या में ठीक ही लिखा है कि "कश्मीरेभ्यो वितस्ता प्रभवति।" कश्मीर केशर के

विख्यात हैं इसीलिये केशर को कश्मीरजन्मा अथवा कश्मीरज कहते हैं। "कुचकश्मीरजचिह्नमच्युतोरः।" माघ २०१६। भावमिश्रने तीन प्रकार की केशरों की चर्चा करते हुये कश्मीर के केशर को सर्वोत्तम लिखा है—"कश्मीरदेशजे क्षेत्रे कुङ्कुमं यद्भवेद्धि तत्। सूक्ष्मकेशरमारक्तं पद्मगन्धि तदुत्तमम्। वाह्लीकदेशसञ्जातं कुङ्कुमं पाण्डुरं मतम्। केतकीगन्धयुक्तं तन् मध्यमं सूक्ष्मकेशरम्। कुङ्कुमं पारसीके यन्मधुगन्धि तदीरितम्। ईषत्पाण्डुरवर्णं तदधमं सूक्ष्मकेशरम्" ॥ भाव प्र०भा० १। अमरकोश में कमल की जड़ के लिये एक पर्याय कश्मीर लिखा है—"मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे" अमर—२—४।१४५ हेमचन्द्र ने श्रीपर्णी (खँभारी) का एक पर्याय काश्मीरी लिखा है। अतः उपर्युक्त वस्तुएँ कश्मीर में प्रचुरता से पायी जाती हैं।

जेनरल कनिंघम ने कश्मीर के एक प्राचीन तथा प्रधान नगर का वर्णन भी नगरी के नाम से किया है जिसको सम्राट् अशोक ने बसाया था तथा वह कश्मीर की वर्तमान राजधानी श्रीनगर के समीप ही स्थित थी। वर्तमान श्रीनगर को कश्मीर के एक राजा प्रवरसेन ने बसाया था। राजतरङ्गिणी में तीन अन्य नगर हुस्कपुर, जुस्कपुर तथा कनिष्कपुर का भी उल्लेख मिलता है। बारामूला के दो मील दक्षिण-पूर्व स्थित वर्तमान उस्कर का प्राचीन नाम हुस्कपुर, श्रीनगर से चार मील उत्तर आधुनिक तक्रू प्राचीन जुस्कपुर तथा श्रीनगर से दस मील दक्षिण वर्तमान कर्णपुर का प्राचीन नाम कनिष्कपुर हो सकता है। श्रीनगर से दक्षिण-पूर्व सत्रह मील दूर वितस्ता के दक्षिण तट पर स्थित अवन्ति वर्मा का बसाया हुआ अवन्तिपुर है, राजतरङ्गिणी ५-४४ में इसका भी उल्लेख है।

श्रीनगर से दक्षिण-पूर्व ही आठ मील की दूरी पर वितस्ता के ही तट पर स्थित वर्तमान पामपुर का प्राचीन नाम पद्मपुर था। वेलूर घाटी के पश्चिम वितस्ता के दोनों तटों पर बसा हुआ सोपुर का प्राचीन नाम शूरपुर था। राजतरङ्गिणी में कश्मीर के और भी अनेक स्थानों का नाम मिलता है। बारामूला का प्राचीन नाम वराहमूल था। वेलूर घाटी के दक्षिण राबी तट पर स्थित चम्बा को प्राचीन काल में 'चम्पा' कहते थे। चेनाब की सहायक नदी तोही के तट पर प्राचीन राजपुर था, जिसको आजकल राजौरी कहते हैं। बारामूला के दक्षिण आधुनिक मानचित्र का पूँछ प्राचीन काल का पर्णोत्स हो सकता है। राजतरंगिणी में कश्मीर के निवासियों को खश कहा गया है। उसी में आगे चलकर खशों को विल्ववन का निवासी भी लिखा है—"खशकान् विल्ववनजान् मध्येकृत्य नृपान्तिकम्।" इससे ज्ञात होता है कि खशजन कश्मीर के दक्षिण के वनों तथा पर्वतों पर रहते थे तथा वहाँ विल्व के वृक्षों की अधिकता थी। महापद्मसर सम्भवतः वेलूर झील का प्राचीन नाम हो।

जेनरल कनिंघम ने लिखा है कि कश्मीर प्राचीन काल में क्रम राज्य तथा मडव राज्य नाम के दो बड़े जिलों में विभक्त था जो स्थानीय बोलचाल की भाषा में कमराज तथा मिराज कहे जाते थे। रा० त० के आधार पर कहा जा सकता है कि फलपुर तथा परिहासपुर ( वितस्ता तथा सिन्ध के सङ्गम पर स्थित ) तथा वूलर झील के पश्चिम का सोपुर कमराज में थे अन्य नगर मिराज में, दोनों राज्यों की विभाजक रेखा वितस्ता थी।

द्रुमती—कश्मीर में द्रुमती नाम की एक नदी की चर्चा मिलती है। महाभाष्यकार पतञ्जलि को यह नदी ज्ञात थी, सम्भवतः वह वर्तमान द्रास नदी हो सकती है।

देविका—पा० सू० ७।३।१ में देविका नदी का नाम आया है। उक्त सूत्र की व्याख्या में भाष्यकार ने उदाहरण दिया है—'देविकाकूलाः शालयः' अर्थात् देविका नदी के तट पर उत्पन्न होनेवाला धान। वर्तमान समय में भी इस नदी के तट पर उत्तम श्रेणी का धान उत्पन्न होता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण खण्ड १।१६७।१८ में लिखा है कि 'उमा देवीति मद्रेषु देविका या सरिद्वरा', इससे ज्ञात होता है कि यह नदी मद्र देश में भी बहती थी। वामन पुराण अध्याय ८४ से ज्ञात होता है कि जम्मू की पहाड़ी से निकल कर स्यालकोट, शेखूपुरा जिलों में होती हुई राबी में मिलनेवाली देग नदी का ही प्राचीन नाम देविका था क्योंकि अब भी यह नदी प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु में अपने दोनों तटों पर उपजाऊ मिट्टी प्रचुर मात्रा में छोड़ देती है, इस कारण उस मिट्टी में उत्तम श्रेणी के धान पैदा होते हैं। आजकल भी पञ्जाब में स्यालकोट के चावल की पर्याप्त प्रतिष्ठा है, वे ही देविकाकूल चावल हैं।

मिद्य—पा० सू० ३–१–११५ में मिद्य नाम के एक नद का उल्लेख है। यह जम्मू से निकलनेवाली बई नदी का ही प्राचीन नाम हो सकता है। गुरुदासपुर जिले में रावी से मिलती है। कालिदास के रघुवंश ११–८ से ज्ञात होता है कि मिद्य तथा उद्धय नाम की दोनों नदियाँ ग्रीष्म काल में सूख जाती हैं परन्तु वर्षा ऋतु में इनका वेग बड़ा प्रबल होता है। 'मिनत्तिकूलम् मिद्यो नदः। उज्झत्युदकम् उद्धयो नदः।' उपर्युक्त सूत्र की व्याख्या से भी यही मालूम पड़ता है।

उद्धय—वर्तमान उमा नदी का ही प्राचीन नाम उद्धय था। यह नदी जम्मू के जसरोत जिले से होकर पंजाब के गुरदासपुर जिले में रावी से मिली है। काशिका के उद्धयेरावति तथा मिद्येरावति उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये दोनों नदियाँ राबी की सहायक हैं। जिस प्रकार गंगाशोणम् तथा गंगा-यमुने आदि उदाहरणों से प्रधान तथा सहायक नदियों के नामों को मिलाकर समास किया गया है उसी प्रकार इन दोनों को भी मिलाकर समस्त पद बनाया गया है।

दरद—कश्मीर के उत्तर-पश्चिम अर्थात् गिलगिट-हुंगा प्रदेश प्राचीन काल में दरद जनपद के नाम से प्रसिद्ध था। वर्तमानकाल में भी गिलगिट की घाटी में दरद जन पाये जाते हैं। महाभारत वन पर्व १७७–१२ में चीनियों तथा तुखारों (तातारों) के साथ हिमालय के उत्तर भी इनकी स्थिति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। वामन ने पा० सू० ४।२।८३ की व्याख्या में सिन्ध नदी का उद्गम दरद जनपद में लिखा है—"दरदात् प्रभवति दारदी सिन्धुः।" उपर्युक्त व्याख्या से यह ज्ञात होता है कि किसी समय दरदजन कश्मीर के राजा के अधिकार में स्थित ललाटाच (लद्दाख) तक फैले हुये थे।

सर्वप्रथम लिट्नर ने दरदों के निवासस्थान का नाम दरदिस्तान रक्खा था। उन्होंने दरदिस्तान में हिन्दूकुश तथा काधन के मध्यवर्ती समस्त प्रदेश को उसमें सम्मिलित किया है। उन्होंने दरदों में केवल शिनकी के पर्वतीय भाग में रहनेवाली जाति को ही नहीं सम्मिलित किया प्रत्युत चिलसिस, अस्तोरिग्रस, हुञ्ज के जनों को तथा चित्राली और काफ़िरों को भी उनमें सम्मिलित किया है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में दरद जनपद संकुचित था क्योंकि उसमें चित्रालियों, काफिरों तथा हुञ्जों के देशों का पृथक्-पृथक् उल्लेख मिलता है। 'दरद' शब्द का प्रयोग केवल दरद भाषा-भाषी अर्थात् शीन भाषा-भाषियों गिरगिट, गुरेज, चिलस तथा सिन्ध और स्वात के कोहिस्तान के ही लिये किया गया है। बिडल्फ के अनुसार (दरदिस्तान की भाषायें तथा जातियाँ। द्वितीय भाग पृष्ठ ४५–४८) 'दरद' शब्द का फारसी रूप 'दूएद' (बलिपशु) है। जिस प्रकार दह्यु (लुटेरा) शब्द से दहिस्तान देश तथा 'दहेइ' जाति का नामकरण हो गया। चित्राल प्रदेश में 'दरद' शब्द पूर्णतया अप्रचलित है।

महाभारत द्रोणपर्व दरदों को पर्वतीय तथा कश्मीर और कम्बोज का पड़ोसी कहता है। मनु १०।४३, ४४ के अनुसार धार्मिक कृत्यों को त्याग देने से दरदों ने अपने क्षत्रियत्व को नष्ट कर दिया। इनकी गणना पारदों के समान म्लेच्छों में की गयी है। वर्तमानकाल में भी दरदों तथा कम्बोजों में कुछ समान प्रथायें प्रचलित हैं। बिडल्फ ने उनकी एक विलक्षण प्रथा का उल्लेख भी किया है। इस प्रथा का नाम 'कोबह' (गोवध) है। किसी के घर किसी सम्मानित अतिथि के आने पर यह प्रथा सम्पन्न की जाती है। अतिथि के आने पर उसको अतिथिशाला में ले जाकर उसके सामने एक बैल खड़ा कर दिया जाता है। अतिथि अपनी तलवार निकालकर एक ही प्रहार में उस बैल की गर्दन काट देने का प्रयत्न करता है। यदि अतिथि स्वयं ऐसा करना न चाहे तो वह अपने किसी अनुयायी को उस प्रथा को सम्पन्न करने के लिये नियुक्त कर देता है। अन्त में वह शव उसके अनुचरों में वितरित कर दिया जाता है। वर्तमानकाल में भी यह प्रथा शिघ्नान, बदख्शाँ, वरवान, चित्राल, यासिन, गिलगिट हुंज तथा नगर में प्रचलित पायी जाती है। अतः उक्त प्रदेश का ही प्राचीन नाम दरद जनपद होना सङ्गत प्रतीत होता है।

सलातुर—महावैयाकरण पाणिनि का जन्म स्थान सलातुर था, इसी कारण इनको सालातुरीय कहते हैं। सलातुर पेशावर के पश्चिमोत्तर सिन्ध तथा कुभा के संगम के कोण में स्थित ओहिन्द से चार मील पश्चिम स्थित है। आज-कल इसको लहुर कहते हैं। यहाँ एक कुँआ वर्तमान

है। जिसको तत्स्थानीयजन पाणिनि-कूप कहते हैं। आर्य तथा अनार्य सभी स्थानीयजन अपने अपने छोटे बच्चों को उस कूप का जल इस दृष्टि से पिलाते हैं कि उनकी बुद्धि पाणिनि के समान प्रखर हो जाय। इस प्रचलित परम्परा से यह निश्चित किया जाता है कि इसी स्थान का प्राचीन नाम सलातुर था। भारत के पश्चिमोत्तर सीमा-प्रदेश में जन्म होने के कारण उनकी प्रधान कृति अष्टाध्यायी में उसके आस-पास के देश, नगर, ग्राम, वन, नदी पर्वत आदि के नाम प्रचुरता से मिलते हैं।

**कूचवार**—पा० सू० ४।३।९४ में वर्मती, कूचवार तथा तूदी का नाम आया है। वर्मती आधुनिक बीमरान का प्राचीन नाम हो सकता है। कूचवार चीनी तुर्किस्तान में उत्तरी तारिम अपत्यका का प्राचीन नाम प्रतीत होता है क्योंकि आज-कल उसको कूचा कहते हैं। चीनी भाषा में उसी को कूची कहते हैं। यह प्राचीन राज्य था। चीन से पश्चिम जानेवाले रेशम के मार्ग पर यह एक प्रसिद्ध व्यापार-केन्द्र था। चीन के व्यापारी तुरफान से कूचा होकर काशगर जाते थे और वहाँ से कम्बोह (पामीर) वाह्लीक होते हुये भारत पहुँच जाते थे।

**कापिशी**—अष्टाध्यायी ४।२।९९ सूत्र में प्रयुक्त कापिशी अपने हरे अंगूरों के लिये प्रख्यात थी—कापिशायनी द्राक्षा। यहाँ एक विशेष प्रकार की सुरा बनती थी जो भारत में भी आती थी उसको 'कापिशायन' कहते थे। कापिशायनं मधु। कापिशी नगरी में प्राप्त वहाँ के सिक्कों पर हाथी का चित्र बना हुआ है जो ऐरावत (इन्द्र का वाहन) प्रतीत होता है। श्युआन चुआँग ने इसका नाम कियापेशी लिखा है जो कि काबुल नदी के उत्तर आधुनिक ओपिआन मानी जाती है। रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर के अनुसार अफगानिस्तान का उत्तरी भाग कपिशा नाम से प्रसिद्ध था। प्रो० लैसन के अनुसार गुर्वाद नदी की तलहटी में कपिशा थी। किसी समय यह गन्धार जनपद की राजधानी थी। उनका कहना है कि आजकल भी अफगानिस्तान के उत्तरी भाग में अंगूर प्रचुरता से पाया जाता है अतः प्राचीन कपिशा वहीं थी। डा० वासुदेवशरण की धारणा है कि कापिशी कापिशायन प्रान्त की राजधानी थी। काबुल से उत्तरपूर्व हिन्दूकुश के दक्षिण आधुनिक बेग्राम प्राचीन कापिशी है। इस स्थान पर एक प्रस्तर अभिलेख प्राप्त हुआ है जिसमें कापिशी का उल्लेख है, अतः बेग्राम का ही प्राचीन नाम कापिशी हो सकता है।

**उरसा**—पा० सू० ४।२।८३ की वामन की व्याख्या में तथा महाभारत सभापर्व २७।१९ में उरसा की चर्चा मिलती है। जेनरल कनिंघम तथा श्युआन् चुआँग ने इसको कश्मीर तथा तक्षशिला के मध्य में मुजफ्फराबाद के पश्चिम स्थित माना है। आजकल उसको 'रुश' कहते हैं। राजतरङ्गिणी के आधार पर इस प्रदेश को सिन्ध नदी से कुछ दूर कश्मीर की सीमा पर स्थित होना चाहिये। डा० वासुदेव शरण का मत है सिन्ध तथा कृष्णगङ्गा—झेलम के मध्य का प्रदेश जो कि पश्चिमी गन्धार तथा अभिसार ( वर्तमान पूँछ रजौरी ) के मध्य में है वही प्राचीन उरसा है। आजकल उसको 'हजारा' कहते हैं। अष्टाध्यायी ४।२।१२४ की की व्याख्या में वामन ने अभिसारी को अभिसारक लिखा है।

**अभिसार**—राजतरङ्गिणी के अनुसार इस देश में दार्व जन रहते थे। "शूरं दार्वाभिसारेशं शर्वर्यां नरवाहनम्" रा० त० ५।२०८। दार्व का नाम महाभारत में भी आया है "तत-स्त्रिगर्त्ताः कौन्तेयं दार्वाः कोकनदास्तथा। क्षत्रिया बहवो राजन्नुपावर्तन्त सर्वशः॥" २७।१८। अभिसार देश को अपेक्षाकृत उष्ण प्रदेश भी होना चाहिये; क्योंकि कश्मीर के राजा शीत काल में निवास करने के लिये अभिसार जाया करते थे—"शीते दार्वाभिसारादौ षण्मासान् पार्थिवोऽवसत्।" रा० त०। १–१८०। जेनरल कनिंघम के मानचित्र में यह स्थान तक्षशिला तथा उरसा के मध्य में स्थित दिखाया गया है। बहुत सम्भव है आजकल के डूँगर का प्राचीन नाम दार्व रहा हो।

**कच्छ**—अष्टाध्यायी ४।२।१३३ में कच्छ जनपद का उल्लेख है। यह जनपद सिन्ध के ठीक दक्षिण है। पाणिनि ने कच्छ के निवासियों को काच्छक, उनके हँसने तथा बोलने के ढंग को भी काच्छक तथा उनके सिर के बालों को काच्छिका लिखा है। कच्छी बोली में वाक्य के अन्तिम भाग को कुछ शीघ्रता से बोलते हैं, अतः उनकी बोली में विशेषता होने के कारण उसके लिये काच्छक का प्रयोग किया जाता था। कच्छ जनपद के लोहाने क्षत्रिय प्रसिद्ध हैं। पाणिनि ने नडादिगण में नाडायन, चारायण के समान

लौहायन शब्द सिद्ध किया है। यह अनुमान किया जाता है कि लोहाने का ही प्राचीन नाम लौहायन है। लोहाने क्षत्रिय आजकल भी अपने सिर के बालों को विलक्षण ढंग से बनवाते हैं। यही कारण है कि उनके बालों के लिये भी एक विशेष नाम रखना पड़ा। काशिकाकारने इसी सूत्र के प्रत्युदाहरण में कच्छी बैलों को काच्छक कहा है। यहाँ के बैलों का सींग पतला होता है। ये बैल आकार में तो छोटे होते हैं, परन्तु बड़े चंचल होते हैं; अतः उनका भी विशेष नाम रखना पड़ा।

पाणिनि ने एक दूसरे सूत्र ४।२।१२६ में कच्छान्त देशवाची शब्दों का उल्लेख किया है। जैसे—दारु-कच्छ, पिप्पली-कच्छ आदि। दारु कच्छ से काठियावाड का सागरतटवर्ती प्रदेश और पिप्पली कच्छ से रेवा काँठे का सूरत से बड़ोदा तक का किनारा, जिसमें पिपला राज्य है, अभिप्रेत है। उसी समुद्र तट पर भृगुकच्छ है जिसको आजकल भड़ोंच कहते हैं। खँभात की खाड़ी के ऊपर साबरमती नदी (श्वभ्रमती) की धारा समुद्र में गिरती है। उसकी दाहिनी ओर का समुद्र तट दारुकच्छ तथा बाईं ओर का पिप्पली-कच्छ कहलाता था।

उपर्युक्त सूत्र में ही अग्नि उत्तरपदवाले भी कुछ शब्द आये हैं जैसे काण्डाग्नि तथा विभुजाग्नि। विभुजाग्नि कच्छ प्रदेश का भुज हो सकता है तथा काण्डाग्नि कण्डाला बन्दरगाह के उत्तर-पूर्व तपता हुआ रेगिस्तान। ये दोनों स्थान कच्छ के छोटे बड़े रेगिस्तान प्रतीत होते हैं।

**बाह्लीक**—महाभारत सभापर्व ५१-२६ में चीन के साथ वाह्लीक का नाम आया है। यह जनपद ऊनी तथा रेशमी कपड़ों के लिये विख्यात था। सम्भवतः यह आधुनिक बल्ख का प्राचीन नाम है। भावप्रकाश में कश्मीरी केशर के वर्णन के प्रसङ्ग में बाह्लीक की केशर का भी वर्णन किया गया है। वाह्लीक हींग के वृक्ष का भी एक पर्याय है—"सहस्रवेधिजतुकं बाह्लीकं हिङ्गु रामठम्" अमर २-६-४०। राक्स वर्ग का कहना है कि यह वृक्ष फारस में प्रचुरता से पाया जाता है, अतः यह अनुमान किया जाता है कि फारस के एक भाग का नाम रामठ भी था। वहाँ खोरासान वृक्ष भी बहुत पायें जाते हैं। महाभारत में हूणों के साथ रामठों की भी चर्चा की गयी है। हमारे यहाँ के साहित्य में बाह्लीक जाति के घोड़ों का वर्णन अनेक स्थलों पर मिलता है—"तद्देशास्तु सैन्धवाः वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लीकादयः।" हेमचन्द्र ४–३००।१।

महाभारत में शल्य को बाह्लीकपुङ्गव कहा गया है। सम्भवतः वह बाह्लीक का राजा था। बाह्लीकों का दरदों के साथ सम्बन्ध भी मिलता है। पार्जिटर के अनुसार दो वाह्लीक जातियाँ थीं। एक पञ्जाब के मैदानों में मद्र जनपद के पड़ोस अर्थात् चेनाव तथा सतलज के मध्य में थी और दूसरी चेनाव तथा व्यास के मध्य में हिमालय के निचली ढाल पर। आगे चल कर यही नाम विकृत होकर वाहीक हो गया, क्योंकि वे लोग सरस्वती, कुरुक्षेत्र तथा मध्यदेश के स्थानों के बाहर होने के कारण वाहीक कहलाने लगे। क्योंकि ब्राह्मण लोग मध्यदेश के बाहर के लोगों को अपवित्र मानते थे। वास्तव में बाह्लीक का प्रतिनिधित्व उत्तरी अफगानिस्तान का बल्ख ही करता है।

**हाटक**—महाभारत में मानसरोवर की स्थिति हाटक देश में उल्लिखित है। "सरोमानं समा साद्य हाटकानभितः प्रभुः। गन्धर्वरक्षितं देशमजयत् पाण्डुनन्दनः।" सभापर्व २८।५। इस देश में किम्पुरुष अथवा किन्नर तथा अन्य अर्द्ध दिव्य व्यक्तियों का निवास स्थान पुराणों में वर्णित है सभापर्व २८।४। हाटक देश अपने चितकबरे घोड़ों के लिये विख्यात था—"तत्र तित्तिरकल्माषान् मण्डूकाख्यान् हयोत्तमान्। लेभे स करमत्यन्तं गन्धर्वनगरात्तदा" सभापर्व २८-६। महाभारत के तङ्गण जन भी यहीं रहते थे—"मेरुमन्दरयोर्मध्ये शैलोदामभितो नदीम्। ये वै कीचकवेणूनां छाया रम्यामुपासते। खशा एकाशनाह्यर्हाः प्रदरा दीर्घवेणवः। पारदाश्च कुलिन्दाश्च तङ्गणाः परतङ्गणाः॥" सभापर्व ५२–२।३ वाराही संहिता में दरदों तथा अभिसारों के साथ तङ्गणों का भी उल्लेख मिलता है—"अभिसार दरद तङ्गण कुलूत सैरिन्ध्र वनराष्ट्राः।" १४।२९। हाटक देश के उत्तर हरिवर्ष अथवा उत्तरकुरु की स्थिति का वर्णन है। उत्तरकुरु जन चीन के तातारी हो सकते हैं।

**शैलोदा**—मेरु तथा मन्दर पर्वत के मध्य में बहने वाली एक नदी का नाम शैलोदा है। इसके तट पर अनेक जाति के जनों के रहने का उल्लेख मिलता है। मत्स्य पुराण के अनुसार शैलोदा अथवा शैलोदका नदी अरुणाचल से

निकलती है, अरुणाचल कैलाश पर्वत के पश्चिम है। यह नदी पश्चिमी सागर में गिरती है। मार्कण्डेय पुराण में इसका नाम सीतोदा लिखा है। अभी तक मेरु तथा मन्दर की स्थिति का ठीक-ठीक निर्णय नहीं हो सका है। पार्जिटर ने शैलोदा को पश्चिमी तिब्बत में स्थापित किया है। डा० मोतीचन्द की धारणा है कि यारकन्द नदी ही, जिसको जरफशान भी कहते हैं और चीनी जन जिसको सीन्तो कहते हैं, शैलोदा है। तथा कारकोरम शृंखला का प्राचीन नाम मेरु तथा कुत्लुन् शृंखला का प्राचीन नाम मन्दर है।

**शक**—शक जन ( यूनानी सेकई ) सीदिजन जाति के सोसक हो सकते हैं। विष्णु पुराण में लिखा है कि ये लोग आधा सिर बनवाते थे—"यवनान् मुण्डितशिरसः, अर्धमुण्डान् शकान् प्रलम्बकेशान् पारदान्, पह्लवांश्च श्मश्रुधरान्" वि० पु० ४।३।२१। महाभारत में लिखा है कि शक जन काम्बोज राजकुमार के साथ सुयोधन के पक्ष से युद्ध करने के लिये कुरुक्षेत्र में गये थे। द्रोणपर्व में लिखा है कि शक जन काले कलूटे, दुश्चरित्र, स्त्रैण तथा कलहप्रिय होते हैं—"काकवर्णाः दुराचाराः स्त्रीलोलाः कलहप्रियाः।" द्रोणपर्व ६३ ४२।

**हूण**—हूण जन मङ्गोलिया के रहने वाले हूंग तू हैं। इन्हीं हूणों ने ईसा पूर्व १७६ में ता-यू० ची को अपने देश से निकाल दिया था। ये अपने रहने के लिये स्थायी घरों को नहीं बनाते थे। ये जन चीन तथा रोमन अधिकृत प्रदेशों के लिये महान् उत्पात स्वरूप थे। रघुवंश से ज्ञात होता है कि उन्होंने एक बार ऊपरी सिन्ध के तटों पर अपना अधिकार कर लिया था। बाणभट्ट के हर्ष चरित से मालूम होता है कि भारत पर इनके आक्रमण की आशंका सदा बनी रहती थी।

**पह्लव**—दाढ़ी रखनेवाले पह्लव सम्भवतः लम्बे बाल वाले पारद ही थे इन्हीं को प्राचीन काल में परोप मिसदई भी कहते थे। हिन्दू कुश के उत्तरी ढाल पर Gedrosia में ये लोग रहते थे। किसी समय इनका सम्बन्ध ईरान से था। कालयवन के मथुरा पर आक्रमण करने के समय पह्लवों ने उसकी सहायता की थी—'शकास्तु खारा दरदाः पारदास्तङ्गणाः खशाः। पह्लवाः शतशश्चान्ये म्लेच्छा हैमवतास्तथा। स वै परिवृतो राजा दस्युभिः शलभैरिव। नानावेशायुधैर्भीमैर्मथुरामभ्यवर्तत। गंजवाजिखरोष्ट्राणामयुतैरर्बुदैरपि। पृथिवीं कम्पयामास सैन्येन महता वृतः ॥" हरिवंश ६६४१-३ ॥

**कालयवन**—इनके विषय में बड़ा मतभेद है। किसी का मत है कि ये कालयवन यूनानी थे। महाभारत में कम्बोज राजकुमार के साथ सुयोधन के पक्ष से लड़ने के लिये केवल पश्चिम के ही यवन नहीं गये, प्रत्युत पूर्व के भी यवन गये थे। पूर्व के यवन कामरूप के राजा के साथ राजसूय यज्ञ में भी गये थे—"प्राग्ज्योतिपाधिपः शूरो म्लेच्छानामधिपो बली। यवनैः सहितो राजा भगदत्तो महारथः।" सभापर्व ३१।७१।७२ उसी प्रसङ्ग में दक्षिण के यवनों की भी चर्चा है। दक्षिण के यवनों को सहदेव ने परास्त किया था, पाण्ड्यां द्रविडांश्चैव सहितांश्चौड्रकेरलैः। आन्ध्रांस्तालवनांश्चैव कलिङ्गानुष्ट्रकर्णिकान् ॥ अटवीं च पुरीम् रम्यां यवनानां पुरं तथा। दूतैरेव वशे चक्रे करञ्चैनानदापयत् ॥" सभापर्व ५१।१४ कालिदास ने प्राचीन पारसियों के लिये भी यवन शब्द का प्रयोग किया है—"पारसीकांस्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना ॥ इन्द्रियाख्यानिव रिपूंस्तत्त्वज्ञानेन संयमी ॥ यवनीमुखपद्मानां सेहे मधुमदं न सः। बालातपमिवाब्जानामकालजलदोदयः ॥" रघुवंश ४।६०।६१।

कालिदास के कुछ शतक परवर्ती दण्डी ने अरब के नाविकों के लिये भी यवन शब्द का प्रयोग किया है। "प्रत्युषस्यदृश्यत किमपि वहित्रम्। अमुत्रासनयवनाः" दशकुमार ६। उपर्युक्त उद्धरणों से विदित होता है कि यवन शब्द केवल यूनानियों के लिये ही सीमित न था। उणादि सूत्र २।७४ में यवन शब्द की सिद्धि 'यु' धातु ( जिसका अर्थ मिलना अथवा अलग होना होता है ) से की गयी है। उसके अनुसार 'यवन' शब्द का शब्दार्थ मिश्रित हुआ। हमारे साहित्य में 'म्लेच्छ' शब्द सीमावर्ती सभी असभ्य अथवा अर्धसभ्य जाति वालों के लिये प्रयुक्त किया जाता था। किरात पुलिन्द, शबर आदि सभी असभ्य थे—"भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः" अमर २-१०।२०। अतः यवन शब्द भी समस्त म्लेच्छों का साधारण पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाने लगा था। परन्तु वे लोग भी आर्यों से प्रभावित होकर उनकी समानता करने के लिये शस्त्र-शास्त्र में प्रवीणता प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगे और अन्ततो गत्वा कुछ समय के बाद सभ्य होने लगे। उनसे ज्ञान प्राप्त

करने में फिर आर्यों को कोई आपत्ति न थी। डा० कन ने गर्गसंहिता में एक विलक्षण श्लोक का उल्लेख किया हैं। म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्। ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैवविद्द्विजाः।" गर्ग संहिता की प्रस्तावना पृ० ३५।

मालूम पड़ता है कि पूर्वी यवनों के राजा कालयवन ने मथुरा पर आक्रमण करने के समय जरासन्ध की सहायता की थी।

**हारहूर**—वाराही संहिता में हारहूर नाम के एक प्रदेश का उल्लेख है जो कि उत्तरभारत में था। इस देश की अंगूरी लता को हारहूरा कहते थे—"द्राक्षा तु गोस्तनी। मृद्वीका हारहूरा च"—हेमचन्द्र ४।२२१।२२२। अंगूर की लतायें काबुल के एक भाग में प्रचुरता से उत्पन्न होती हैं अतः हारहूर को वहीं होना चाहिये। महाभारत में हारहूर देश में सिंहपुर नाम के एक नगर की भी चर्चा है जिसको अर्जुन ने अभिसार तथा उरसा विजय के पश्चात् तथा वाह्लीक जाने के पूर्व जीता था—"ततः सिंहपुरं रम्यं चित्रायुधसुरक्षितम्। प्राधमद् बलमास्थाय पाकशासनिराहवे॥" सभापर्व २०-२७। उपर्युक्त उद्धरण से मालूम पड़ता है कि सिंहपुर हारहूर की राजधानी का नाम था। महाभारत के आधार पर हारहूर की स्थिति उरसा (हजारा) के उत्तर अथवा पश्चिमोत्तर होनी चाहिये। श्युआन् युआंग का वर्णन इसके विपरीत है, उन्होंने लिखा है कि सिंहपुर तक्षशिला से दक्षिण-पूर्व ११७ मील पर स्थित था। परन्तु उनका दिशा तथा दूरी का उल्लेख बहुधा भ्रामक सिद्ध हो चुका है, अतः उनकी धारणा मान्य नहीं। उनके वर्णन से यह निश्चय है कि सिंहपुर नामक नगर अवश्य था।

अंगूर भारतीय फल नहीं है इसका यहाँ आयात बहुत प्राचीन नहीं है। प्राचीन काल में अफगान व्यापारी इसको काबुल से छोटे छोटे बक्सों में लाकर भारत में बेचते थे। जब भारत का खोतन के साथ व्यापारिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुआ तब खोतन से हिमालय के दक्षिण मुनक्के का तथा अंगूर का आयात प्रचुरता से होने लगा। वर्तमान काल में भी भारत में अंगूर की उपज नहीं के बराबर है। अब भी खोतन के अंगूर, विशेषतया केरिया के समीप स्थित बोगजलंगर के, पर्याप्त प्रसिद्ध हैं। ग्रेनर्ड के अनुसार 'तुर्फन' के अंगूर समस्त संसार में सर्वोत्तम होते हैं। महाभारत में हारहूरों की गणना पश्चिमी जाति में की गयी है तथा रामठों के साथ इनका नाम आया है। रामठ हींग का पर्याय है। रामठ उत्पन्न होने के कारण वह देश भी रामठ कहलाने लगा। हींग विशेषतया दक्षिण फारस, बलूचिस्तान अफगानिस्तान तथा दक्षिण में चेनाब घाटी तक उत्पन्न होती है, अतः रामठ देश को इन्हीं में कहीं होना चाहिये। डा० मोतीचन्द की धारणा है कि रामठ देश कलात राज्य का खरान जिला हो सकता है। यहाँ हींग भी उत्पन्न होती है और प्राचीन एरिया (हेरात), आर्कोशिया (कन्धार) से मिला हुआ भी है, अतः हेरात ही का प्राचीन नाम हारहूर हो सकता है। यहाँ उत्तम श्रेणी का अंगूर भी उत्पन्न होता है। यहाँ के फलों के बगीचे दसवीं शताब्दी तक प्रसिद्ध थे।

**त्रिगर्त्त**—कुछ विद्वानों का अनुमान है कि जालन्धर दोआब का ही प्राचीन नाम त्रिगर्त्त था। हेमचन्द्र जालन्धर को त्रिगर्त्त कहते हैं—"जालन्धरास्त्रिगर्त्ताः स्युः" ४।२४। इसी आधार पर जालन्धर दोआब को त्रिगर्त्त मान लिया गया। जालन्धर देश तथा जन दोनों का वाचक हो सकता है। जालन्धर का प्रयोग इसी अर्थ का बोध कराने के लिये किया भी गया है। कुरुक्षेत्र में राजा सुशर्मा (त्रिगर्त्त का राजा) था क्रेपतन के पश्चात् त्रिगर्त्तन जन भागकर जालन्धर के दोआब में जाकर बसे थे। बहुत सम्भव है उनके वहाँ बस जाने के कारण जालन्धर भी त्रिगर्त्त कहा जाने लगा हो।

अनेक स्थलों पर यह उल्लेख मिलता है कि त्रिगर्त्त सूखा प्रदेश था। पा० सू० १-४-८८ की व्याख्या में वामन ने उदाहरण दिया है—'अपत्रिगर्त्तेभ्यो वृष्टो देवः' अर्थात् त्रिगर्त्त को छोड़कर वर्षा हुई। दशकुमारचरित के षष्ठ उल्लास की एक कथा में लिखा है कि एक समय त्रिगर्त्त में बारह वर्ष तक अवर्षण हो गया। वहाँ के समस्त जलाशय सूख गये—"अस्ति त्रिगर्त्तो नाम जनपदस्तत्र नववर्षद्वादश वर्षाणि दशशताक्षः। क्षीणस्रोतसः स्रवन्त्यः, पङ्कशेषाणि पल्वलानि।" उपर्युक्त उद्धरणों से मालूम पड़ता है कि जालन्धर दोआब त्रिगर्त्त नहीं हो सकता, क्योंकि उक्त दोआब सतलज तथा व्यास नदियों से सिक्त है।

सम्भव है त्रिगर्त्त सतलज के पूर्व का मरु प्रदेश हो, क्योंकि महाभारत में लिखा है कि त्रिगर्त्त जन मत्स्य तथा साल्व के राजाओं से सदा सताये जाते थे—"अथ राजा त्रिगर्त्तानां सुशर्मा रथयूथपः। प्राप्तकालमिदं वाक्यमुवाच त्वरितो बली ॥ असकृन्निकृतः पूर्वं मत्स्यसाल्वेयकैः प्रभो। सूतेन चैव मत्स्यस्य कीचकेन पुनः पुनः ॥" विराटपर्व ३०।१,२। इससे यह प्रकट होता है कि त्रिगर्त्त मत्स्य तथा साल्व जनपदों की सीमा पर था।

विलफोर्ड ने लुधियाना से लगभग पचीस मील पश्चिम सतलज के बायें तट पर स्थित वर्तमान तेहोरा को त्रिगर्त्त की राजधानी निश्चित किया है। पाणिनि ने ५-३-११६ में त्रिगर्त्त जनपद में आयुधजीवी संघों का उल्लेख किया है उनके अनुसार रावी, व्यास तथा सतलज नदी-दूनों के बीच का पर्वतीय काँगड़ा प्रदेश, जिसमें उत्तर की ओर लुधियाना और पटियाला तथा दक्षिण की ओर मरु प्रदेश का कुछ भाग सम्मिलित था, त्रिगर्त्तषष्ठ कहलाता था। इसी का प्राचीन नाम जालन्धरायण भी था, जिसका उल्लेख राजन्यादिगण ४।२।५३ में हुआ है। आज भी त्रिगर्त्त काँगड़ा का प्रदेश जालन्धर कहा जाता है।

**रोणी**—पाणिनि ने ४।२।७८ में रोणी नाम के एक स्थान का उल्लेख किया है। यह जिला हिसार का आधुनिक रोड़ी का प्राचीन नाम जान पड़ता है। यह शैरीषक (आधुनिक सिरसा) के पास है। किसी का मत है कि बीकानेर से सत्तर मील पर आधुनिक रोणी का प्राचीन नाम रोणी हो सकता है। केवल अक्षरों की समानता को देखकर ही विद्वानों ने यह अनु... किया है कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिल सका।

**ऐषुकारिभक्त**—पाणिनि ने ४।२।५४ में ऐषुकारिभक्त नाम के एक नगर का उल्लेख किया है। उत्तराध्ययन सूत्र में लिखा है कि कुरु जनपद में इषुकार नाम का एक समृद्धिशाली मनोहर तथा विशाल नगर था १४-१। मालूम पड़ता है कि आधुनिक हिसार का प्राचीन नाम ऐषुकारि रहा होगा।

**नड्वल**—पाणिनि ने ४।२।८८ में नड्वल नाम के एक नगर की चर्चा की है। यह मारवाड़ का नडौल नगर हो सकता है।

**तौषायण**—पाणिनि के ४।२।८० में इसका पाठ है। सम्भवतः यह हिसार जिले की फतेहाबाद तहसील में स्थित आधुनिक दोहावे का प्राचीन नाम हो सकता है। यह स्थान बहुत प्राचीन मालूम पड़ता है यहाँ बहुत से अवशेष भी पाये जाते हैं।

**सरालक**—पाणिनि सू० ४।३।९३ में इसका उल्लेख है जिला लुधियाने का आधुनिक 'सहराला' प्राचीन सरालक प्रतीत होता है। सहरालिये वैश्य अपने पूर्व पुरुषों का निवास स्थान सहराला मानते हैं।

**प्रस्थल**—महाभारत से ज्ञात होता है कि त्रिगर्त्त का राजा प्रस्थलाधिप भी कहलाता था—"सुशर्मा च नरव्याघ्रस्त्रिगर्त्तः प्रस्थलाधिपः।" विराट् पर्व १७-१९। शल्य पर्व के सत्ताईसवें अध्याय से भी यही विदित होता है। नन्दलाल डे ने वरुआ के कोष के आधार पर पटियाला को ही प्रस्थल का विकृत रूप मान उसी को प्राचीन प्रस्थल निश्चित किया है। परन्तु यह समुचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि पटियाला बहुत प्राचीन नगर नहीं है। यह आला नाम के किसी साधु की पत्ति (दान या भाग) होने के कारण पटियाला कहा जाने लगा। वस्तुतः पर्वत के समीप की समतल भूमि को प्रस्थल कहते हैं अतः मालूम पड़ता है कि समस्त त्रिगर्त्त का नाम किसी समय प्रस्थल भी था।

**कालकूट**—महाभारत सभापर्व के अनुसार कालकूट अथवा कलकूट कुलिन्द प्रदेश में था। जब अर्जुन भीम और कृष्ण जरासन्ध को परास्त करने के लिये गुप्तरूप से निकले थे तो यद्यपि उनको कुरु जनपद से पूर्व की ओर जाना चाहिये था तथापि अपने जाने की वास्तविक दिशा को छिपाने के उद्देश्य से वे लोग पहिले कुरुजंगल (वर्तमान रोहतक-हिसार) की ओर गये। वहाँ से उत्तर की ओर कुरुक्षेत्र में पद्मसर की तरफ मुड़े। कुरुक्षेत्र से ११२ मील तथा कौल ग्राम से दो मील पश्चिम आज भी पद्मसर नामक सरोवर एक प्रसिद्ध तीर्थ है। उसके बाद कालकूट जनपद पार करके तराई के सटे हुये मार्ग से सरयू तथा गण्डक को पार करते हुये मिथिला पहुँचे। वहाँ से नीचे गंगा पार करके एकदम गोरथ गिरि और राजगृह जा पहुँचे। इस मार्ग में कालकूट ठीक टोंस तथा यमुना के प्रदेश (देहरादून कालसी) में पड़ता है। वह यमुना की

ऊपरी धारा का यामुन प्रदेश था। अथर्व वेद में हिमालय पर उत्पन्न होने वाले यामुन अञ्जन का उल्लेख मिलता है। अञ्जन के कारण यामुन पर्वत का नाम कालकूट होना उचित भी जान पड़ता है। मालूम पड़ता है कि शिमला शृंखला के कालका का प्राचीन नाम कालकूट रहा होगा और वही विकृत होकर कालका हो गया।

भारद्वाज—पाणिनि सूत्र ४।२।१४५ की व्याख्या में काशिकाकार ने भारद्वाज शब्द को देशवाचक माना है न कि गोत्रवाचक। पाणिनि ने भारद्वाजों की शाखा को आत्रेय कहा है। मार्कण्डेय पुराण की जनपदसूची में आत्रेय तथा भारद्वाज साथ-साथ उल्लिखित हैं। पार्जिटर का कहना है कि गढ़वाल प्रदेश को प्राचीन काल में भारद्वाज कहते थे।

सैरन्ध्र—पटियाला के उत्तर २३ मील पर स्थित वर्तमान सरहिन्द सम्भवतः वाराही संहिता का १४–२६ सिरन्ध्र अथवा सैरन्ध्र है। महाभारत में लिखा है कि द्रोपदी विराट की सभा में सैरन्ध्री नाम धारण कर दासी के रूप में रहती थी—'नास्मि देवी न गन्धर्वी न यक्षी न च राक्षसी। सैरन्ध्री तु भुजिष्यास्मि सत्यमेतद् ब्रवीमि ते ॥" विराट पर्व ९–१७। सैरन्ध्री का शब्दार्थ सिरन्ध्र देशवासिनी भी होता है। पाण्डव लोग सिरन्ध्र के समीप होकर ही विराट् नगर गये भी थे। अतः यह निश्चित सा जान पड़ता है कि सरहिन्द ही प्राचीन सैरन्ध्र है।

कुलूत—जालन्धर के पूर्वोत्तर सतलज के दक्षिण तट पर कुलूत राज्य स्थित था। महाभारत सभापर्व के सत्ताईसवें अध्याय में उत्तर भारत के वर्णन में उलूक नाम के एक देश की चर्चा है सम्भवतः कुलूत ही के लिये उलूक का प्रयोग किया गया है। श्युआन् चुआंग ने भी सातवीं शताब्दी की अपनी यात्रा के विवरण में 'क्युलूतो' नाम के एक देश का उल्लेख किया है। मुद्राराक्षस में लिखा है (१–५) कि जब मलयकेतु ने मगधराज चन्द्रगुप्त पर आक्रमण किया था तब उसका सहायक कुलूत का राजा भी था। मालूम पड़ता है कि आधुनिक कुल्लू का ही प्राचीन नाम कुलूत था। कुलूत देश के उत्तर चन्द्रभागा की दून का प्रदेश 'चम्पा' आधुनिक (चम्बा) कहा जाता था।

कुरुक्षेत्र—वास्तव में कुरुजनपद, कुरु, कुरुक्षेत्र तथा कुरु जाङ्गल नाम के तीन अवान्तर भागों में विभक्त था। गङ्गा तथा यमुना का मध्यवर्ती प्रदेश प्रधान कुरुराष्ट्र था। उसकी राजधानी हस्तिनापुर थी। हरियाना तथा हाँसी, हिसार का प्रदेश कुरुजांगल नाम से प्रसिद्ध था। उसके उत्तर की ओर कुरुक्षेत्र था। कुरुक्षेत्र में स्थाण्वीश्वर (थानेश्वर) कैथल (कपिष्ठल) तथा कनभि मुख्य नगर थे। ये तीन प्रदेश एक दूसरे से मिले हुए थे। कुरुक्षेत्र सरस्वती के दक्षिण से दृषद्वती के उत्तर तक विस्तृत था—"दक्षिणेन सरस्वत्या दृषद्वत्युत्तरेण च। ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे ॥" महाभारत वन पर्व ८३।८४। कुरुक्षेत्र का एक भाग समन्तपञ्चक भी कहलाता था—"तरुन्तकारुन्तकयोर्यदन्तरम् रामह्रदानाञ्च मचक्रुकस्य। एतत् कुरुक्षेत्रसमन्तपञ्चकं पितामहस्योत्तरवेदिरुच्यते।" शल्यपर्व ७–९। समन्तपञ्चक का शब्दार्थ पाँच सरोवरों का समीपवर्ती प्रदेश होता है। ये सरोवर कुरुक्षेत्र में परशुराम द्वारा मारे गये क्षत्रियों के रक्त से बने थे और परम पवित्र माने जाते थे—"ततो रामह्रदान् गच्छेत् तीर्थसेवी समाहितः। तत्र रामेण राजेन्द्र तरसा दीप्ततेजसा। क्षत्रमुत्साद्य वीरेण ह्रदाः पंच निवेशिताः ॥" वन पर्व ८३–२७।

भारत की अनेक प्राचीन घटनाओं से कुरुक्षेत्र का सम्बन्ध बड़ा घनिष्ठ था। प्रागैतिहासिक काल की अनेक घटनायें वहाँ घटी थीं। पुराणों में लिखा है कि आदित्य तीर्थ अथवा सूर्यतीर्थ में तप करने के पश्चात् सूर्य को ग्रहों का आधिपत्य प्राप्त हुआ था। विष्णु ने मधु कैटभ नामक दैत्यों का वध भी वहीं किया था। शल्य पर्व ४८–१७ २२। सूर्यतीर्थ सम्भवतः थानेश्वर के दक्षिण पूर्व कुछ मील पर स्थित है। ब्रह्मयोनि नाम के स्थान पर ब्रह्मा ने सृष्टि का श्रीगणेश किया था तथा उसी स्थान पर विश्वामित्र को ब्रह्मत्व की प्राप्ति हुई थी शल्यपर्व ३९–३५, ३७। शल्यपर्व में बलभद्र की यात्रा के वर्णन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ब्रह्मयोनि पृथूदक के समीपवर्ती था।

पृथूदक—पृथूदक थानेश्वर के पश्चिम चौदह मील पर स्थित आधुनिक पेहोवा माना जाता है। परन्तु वर्तमान पेहोवा सरस्वती के तट पर स्थित है और महाभारत के अनुसार उसको बायें तट पर स्थित होना चाहिये—सरस्व-

त्युत्तरे तीरे यस्त्यजेदात्मनस्तनुम्। पृथूदके जप्यपरो नैनं श्वो मरणं तपेत्॥" शल्यपर्व ४४-३३, ३४।

पृथूदक स्थान का बड़ा महत्त्व माना जाता है। यहीं सरस्वती में स्नान करने से राजा वेन का कुष्ठरोग निवृत्त हुआ था। जब वेन के पुत्र पृथु का जन्म हुआ तो प्रजा को बड़ा हर्ष हुआ। वेन के मरने पर पृथु ने विधिपूर्वक अपने पिता की अन्त्येष्टि क्रिया की। क्रिया की समाप्ति के पश्चात् पृथु बारह दिन तक वहीं सरस्वती के तट पर बैठ कर प्रत्येक यात्री को जल देते रहे। इस कारण उस नगर का नाम पृथूदक पड़ गया।

**स्थाण्वीश्वर**—कुरुक्षेत्र के स्थाणु तीर्थ में स्थाणु (शिव) ने सरस्वती की आराधना की थी तथा वहीं उनके पुत्र स्कन्द ने तारकासुर से युद्ध करने के लिये देवसेनानी निर्वाचित हुये थे -- शल्यपर्व ४२-४७। इसका आधुनिक नाम थानेश्वर है। इसके आस-पास का समस्त प्रदेश महाभारत के युद्ध के अनेक दृश्यों से सम्बद्ध है। चक्रतीर्थ वह स्थान है जहाँ श्रीकृष्ण ने अजेय भीष्म पितामह को मारने के लिये अपना प्रणभङ्ग कर रथचक्र को उठा लिया था भीष्म पर्व १०६। चक्रव्यूह नामक स्थान पर द्रोणाचार्य ने कौरव सेना की चक्रव्यूह की रचना की थी—द्रोण पर्व ३४। यहीं अभिमन्यु मारा गया था—द्रोण पर्व ४८। इसी कारण उस स्थान को आजकल 'अभिन' भी कहते हैं।

**शर्यणावत**—ऋग्वेद १-८४-१४ में उल्लेख है कि इन्द्र ने शर्यणावत में प्राप्त दधीचि की अस्थि से वृत्र का वध किया था। कुछ विद्वानों की धारणा है कि शर्यणावत शब्द शर्यणा से बना हुआ है। शर्यणा एक प्रदेशविशेष का नाम है—और शर्यणावत एक सरोवर है। यह कुरुक्षेत्र में है। "शर्यणा नाम देशः तेषामदूरभवं सरः शर्यणावत्। शर्यणावच्च वै नाम कुरुक्षेत्रस्य जघनार्धे सरः स्पन्दते—ऋग्वेद १।८४।१३।२ सायण भाष्य। अतः यह अनुमान किया जाता है कि रामह्रद का ही एक नाम शर्यणावत् भी था तथा वहाँ के निवासी शर्यणावत कहे जाते थे। महाभारत में लिखा है—"ततो गच्छेत धर्मज्ञदधीचस्य महात्मनः। तीर्थं पुण्यतमं राजन् पावनं लोकविश्रुतम्। यत्र सारस्वतो जातः सोऽङ्गिरास्तपसो निधिः॥" वन पर्व ८३-१८६।१८७। इसी को सरस्वती तीर्थ भी कहते थे। अङ्गिरा ऋषि का जन्म स्थान भी यही है। सोमतीर्थ की यात्रा के पश्चात् बलभद्र भी वहाँ गये थे। तारकासुर यहीं मारा गया था—शल्य पर्व ४३-४६-८।

महाभारत आदि पर्व २०८-७ में लिखा है कि सुन्द तथा उपसुन्द नाम के दो असुर कुरुक्षेत्र में किसी समय शासक रह चुके थे। नमुचि नामक राक्षस का भी सम्बन्ध कुरुक्षेत्र से था। ऋग्वेद १-५३ में भी इस ओर संकेत मिलता है। महाभारत के वर्णन से ज्ञात होता है कि कुरुक्षेत्र के मुख्य चार प्रधान द्वार थे जिनके रक्षक मङ्कण, मचक्रु, तरुन्त तथा अरुन्त नाम के चार यक्ष थे—वन पर्व ८३-६-१५।५२।२००। प्रथम द्वार का नाम सप्त सारस्वत अथवा सात नदियों का सङ्गम था —"सप्त सारस्वतं तीर्थं ततो गच्छेन्नराधिप। यत्र मङ्कणकः सिद्धो महर्षिर्लोकविश्रुतः" वन पर्व ८३-११६। गदा पर्व में इन सातों नदियों का नाम भी दिया गया है। परन्तु प्रयाग की त्रिवेणी के समान कुछ नदियाँ अदृश्य भी हैं। वहीं दो अन्य संगमों की चर्चा की गई है; परन्तु वर्तमान मानचित्रों में उनका कहीं पता नहीं चलता। पश्चिमी में कौशिकी तथा दृषद्वती का तथा थानेश्वर के नीचे सरस्वती तथा अरुणा का संगम हुआ है।

**कपिष्ठल**—कौशिकी तथा दृषद्वती नदियों के सङ्गम के समीप व्यास स्थली नामक तीर्थ है, आजकल उसका नाम 'वस्थली' हो गया है। कर्नाल जिले में सरस्वती तथा दृषद्वती के सङ्गम के समीप कपिष्ठल नाम का तीर्थ है जिसको आधुनिक समय में कैथल कहते हैं—"कपिष्ठलस्य केदारं समासाद्य सुदुर्लभम्। अन्तर्धानमवाप्नोति तपसा दग्धकिल्विषः॥" वन पर्व ८३-७४।

**स्रुघ्न**—यह स्थान थानेश्वर के दक्षिण-पश्चिम लगभग पचास मील पर स्थित है। पाणिनि के समय यह नगर बड़ा ही प्रसिद्ध था, क्योंकि उनके सूत्र ४।३।७४, ४।३।६० तथा ४।३।६५ की व्याख्या में काशिकाकार ने स्रुघ्न से आने वाले दूत तथा मार्ग के लिये तथा स्रुघ्न की दिशा में जाने वाले मार्ग के लिये भी स्रौघ्न शब्द का उदाहरण दिया है।

**परीणत्**—कुरुक्षेत्र के दक्षिण रोहतक जिला है। प्राचीन काल में यह यौधेय गण की राजधानी था। इसी का प्राचीन नाम रोहितक अथवा रोहीतक था। महाभारत सभापर्व

३२-२-६ में उल्लेख है कि इन्द्रप्रस्थ के पश्चिम का यह प्रथम स्थान है जिसको नकुल ने पश्चिम दिग्विजय की यात्रा में सबले पहिले जीता था। आधुनिक मानचित्र में भी यह इन्द्र प्रस्थ के ठीक पश्चिम है। थार्टन ने लिखा है कि यह दिल्ली से पश्चिमोत्तर बयालीस मील पर है। राजतरङ्गिणी में भी इस स्थान की चर्चा मिलती है—"रोहीत-देशजातानां निवेशाय द्विजन्मनाम्। महागुणो लोणमठं प्रणज्येष्ठं चकार सः॥" राज० तर० ४।१२। महाभारत काल में यह वन्य प्रदेश था। राजतरङ्गिणी में भी इसके एक भाग को रोहितक जंगल लिखा है—"तथा रोहितकारण्यं मरु-भूमिश्च केवला।" ३।१६। रोहितक वृक्षों की अधिकता के कारण इस प्रदेश का रोहितक नाम पड़ना प्रतीत होता है। डा० राक्सवर्ग ने लिखा है कि यह वृक्ष बहुत बड़ा तथा काँटेदार होता है और बहुत दिनों में बढ़ता है। उत्तर प्रदेश में भी यह वृक्ष यत्र तत्र पाया जाता है यहाँ इसको रेवा अथवा जंगली बबूल कहते हैं। इसका लैटिन नाम Andersonia Rohitak है। इस प्रदेश के निवासी मत्त मयूरक भी कहे जाते थे। परन्तु इस नामकरण का कारण ज्ञात नहीं है। सम्भवतः वे लोग आधुनिक मेयरजनों के (जो कि मेयरवारा-मेवाड़ और मारवाड़ के मध्य में पाये जाते हैं) पूर्व पुरुष रहे होंगे।

**सिरीश**—रोहितक के आगे सिरीश प्रदेश है। पाणिनि ने कुमुदादिगण ४।२।८० में सिरीश का उल्लेख किया है। सम्भवतः सिरीश वृक्ष (सिरस) की प्रचुरता के कारण उस प्रदेश का यह नाम पड़ा हो। इस जनपद का राजा सैरीशक कहा जाता था। सम्भवतः यह जनपद हाँसी तथा भाटनेर के मध्य में स्थित आधुनिक सिरसा के समीप स्थित रहा होगा।

**इन्द्रप्रस्थ**—इन्द्रप्रस्थ को युधिष्ठिर ने बसाया था। इसको हरिप्रस्थ, शक्रप्रस्थ आदि अनेक नामों से पुकारते थे। यह प्राचीन काल में बड़ा प्रसिद्ध नगर था—"हरिर्हरिप्रस्थमथ प्रतस्थे।" शिशुपालवध-३।१ "उवास नगरे रम्ये शक्रप्रस्थे महामना।" आदि पर्व १-२१६-६३। यह नगर खाण्डवप्रस्थ वन के मध्य में था। यह यमुना के बायें तट पर था, क्योंकि सौराष्ट्र से राजसूय यज्ञ में युधिष्ठिर से मिलने के लिए इन्द्रप्रस्थ जाते समय श्रीकृष्ण को यमुना पार करना पड़ा था—"यमुनामतीतवानथ शुश्रुवानमुम्" शिशु० १३-१। नई दिल्ली इन्द्रप्रस्थ के स्थान पर बसी हुई है। वहाँ प्राप्त हुये अवशेषों से उसके इन्द्रप्रस्थ के स्थान पर होने में कोई सन्देह नहीं, अन्तर केवल इतना है कि वर्तमान दिल्ली यमुना के दाहिने तट पर है और इन्द्रप्रस्थ बायें तट पर था। बहुत सम्भव है यमुना ने अपना प्राचीन मार्ग छोड़ दिया हो।

**व्रज**—श्री कृष्ण का बाल्यकाल मथुरा से कुछ दूरी पर स्थित नन्द के गोकुल में व्यतीत हुआ था, इस प्रदेश को व्रज कहते हैं। इस प्रदेश का दूसरा नाम शूरसेन भी था। इसकी गणना सोलह महाजनपदों में थी। यह जनपद कुरु के दक्षिण तथा चेदि के पश्चिमोत्तर यमुना के तटपर स्थित था। व्रज की राजधानी मथुरा थी। श्रीकृष्ण ने मथुरा के समीप ही वृन्दावन में यमुना में रहने वाले कालिय सर्प का दमन किया था। मथुरा से लगभग पन्द्रह मील पश्चिम गोवर्द्धन पर्वत है।

**मथुरा**—रामचन्द्र के छोटे भाई शत्रुघ्न ने मथुरा को बसाया था—वन पर्व १-१२। ३-४। शूरसेन जनपद की राजधानी यहीं थी। श्री कृष्ण ने यहीं कंस का वध किया था। मथुरा यमुना नदी के दाहिने तट पर अर्ध चन्द्राकार बसी हुई है। कालयवन के आक्रमण के पश्चात् श्रीकृष्ण ने मथुरा को त्याग दिया। परन्तु उस पर उनका अधिकार बना ही रहा। क्योंकि उसके आक्रमण के बहुत पीछे सुभद्रा के विवाह के अवसर पर अर्जुन को दहेज में दस हजार उत्तम गायें दी गयी थीं—"प्रददौ कृष्णस्तस्मै गवामयुतमेव च। श्रीमान् माथुरदेश्यानां दोग्ध्रीणां पुण्यवर्चसाम्॥" आदि पर्व २१६-४६। श्युआन चुआँग की भारत यात्रा के समय भी मथुरा अत्यन्त समृद्ध नगरी थी। भारतीय इतिहास वेत्ताओं को सन् १०१७ में महमूद गजनी की निर्दय लूट भली-भाँति विदित ही है।

**पाञ्चाल (प्रत्यग्रथ)**—गङ्गा तथा राम गङ्गा के मध्य में पांचाल जनपद था। इसको प्रत्यग्रथ भी कहते थे। महाभारत में प्रत्यग्रथ नाम नहीं मिलता और पाणिनि के साहित्य में पांचाल। परन्तु कोशों में दोनों नाम मिलते हैं—"प्रत्यग्रथा-स्त्वहिच्छत्रा साल्वास्तु कार कुचियाः" हेमचन्द्र। इस जनपद में रथस्था अथवा रथस्या (रामगंगा) नाम की नदी बहती

है। यह जनपद उत्तर पांचाल तथा दक्षिण पांचाल नाम के दो भागों में विभक्त था। उत्तर पांचाल की राजधानी का नाम अहिच्छत्रा, अहिक्षेत्र अथवा अहिस्थल था। द्रुपद के समय उत्तर पांचाल चम्बल के तट से लेकर उत्तर की ओर गंगा द्वार तक विस्तृत था। इस भाग को द्रोणाचार्य ने द्रुपद से ले लिया था—"आहिच्छत्रं च विषयं द्रोणः समभिपद्यत" महाभारत आदि पर्व १३७–७०। रामायण की अहिस्थली भी यही है। रामायण अयोध्याकाण्ड में उल्लेख है कि भरत ने केकय जनपद से लौटने के समय अहिस्थली में रामगंगा को पार किया था। रामगंगा का एक नाम हिरण्यवती भी था।

श्युआन् चुआँग ने वहाँ एक नागह्रद का होना लिखा है। यहाँ राजा आदि का बनवाया हुआ एक किला है जिसको आदिकोट कहते हैं। यह किला गांधन नदी तथा रामगंगा के मध्य में है। इतिहास के अधिकांश विद्वानों ने बरेली के समीपवर्ती रामनगर को अहिच्छत्र माना है। परन्तु इस स्थापना में कुछ आपत्तियाँ उपस्थित की जा सकती हैं। जेनरल कनिंघम तथा श्युआन् चुआँग आदि ने अहिच्छत्र में एक किले का होना अवश्य लिखा है और रामनगर के पास कोई किला नहीं है। रामनगर को अहिच्छत्र मानने में सबसे बड़ी आपत्ति यह है कि महाभारत में अहिच्छत्रा का जो वर्णन मिलता है वह इस स्थापना के विरुद्ध है। आदि पर्व तथा दम्भ पर्व १२१–१२८ के अनुसार द्रोण के पिता भरद्वाज तथा द्रुपद के पिता पृषत् की मित्रता थी, अतः द्रुपद भरद्वाज के आश्रम में नित्य आया जाया करते थे तथा द्रोण के साथ खेलते और पढ़ते थे। पृषत् के मरने पर द्रुपद पांचाल का राजा हुआ। जब द्रोण परशुराम से धनुर्वेद का अध्ययन करके आये तब द्रुपद से मिले और कहा कि हम आप के बालमित्र हैं मेरा नाम द्रोण है। इस पर द्रुपद ने उनका अपमान किया। उन्होंने कहा कि मूर्ख! कहीं दरिद्र तथा सम्पन्न व्यक्तियों में मित्रता हो सकती है। इस पर रुष्ट होकर द्रोण उनके राज्य से निकल कर हस्तिनापुर पहुँचे और कौरव तथा पाण्डवों को धनुर्विद्या की शिक्षा देने लगे। उन्होंने गुरुदक्षिणा में अर्जुन द्वारा द्रुपद को पराजित कर उनका आधा राज्य अर्थात् उत्तर पांचाल ले लिया। दक्षिण पांचाल उनको छोड़ दिया। तब द्रुपद से कहा कि अब तो मैं आप का मित्र हो सकता हूँ न, क्योंकि अब हम दोनों बराबर हैं। द्रुपद बड़ा लज्जित हुआ।

उत्तर पाञ्चाल की राजधानी अहिच्छत्र में द्रोण के नाम पर एक वृहत् सरोवर बना, जिसका नाम द्रोण सागर पड़ा। रामनगर के आस-पास इस प्रकार का कोई सरोवर नहीं है।

महाभारत, उद्योगपर्व से ज्ञात होता है कि महाभारत युद्ध की तैयारी होने के समय दुर्योधन के मित्र राजाओं को सेनायें अहिच्छत्रा में ठहरायी गयी थीं, क्योंकि इतनी सेनाओं को हस्तिनापुर में कैसे ठहराया जा सकता था। दुर्योधन के मित्र राजा लोग प्रतिदिन उसकी सभा में उपस्थित हुआ करते थे। हस्तिनापुर से रामनगर लगभग सौ मील की दूरी पर है अतः इतनी दूर की यात्रा प्रतिदिन असम्भव है। श्युआन् चुआँग ने लिखा है कि अहिच्छत्रा अति सुरक्षित स्थान है, क्योंकि यह पहाड़ों से घिरा हुआ है। रामनगर के आस-पास कोई पहाड़ नहीं है। अतः अहिच्छत्रा की स्थिति कहीं अन्यत्र होनी चाहिये। नैनीताल जिले में काशीपुर नाम का एक स्थान है। वह अहिच्छत्र हो सकता है क्योंकि वह हस्तिनापुर से दस बारह कोस की दूरी पर है, पर्वतों के समीप है। वहाँ प्राचीन दुर्ग के अवशेष भी प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं अतः काशीपुर को अहिच्छत्र होने के अनेक पुष्ट प्रमाण मिलते हैं।

पद्मपुराण में अहिच्छत्र में एक देवी के स्थान का वर्णन मिलता है। रामनगर में देवी का कोई मन्दिर नहीं है। काशीपुर में किले के पूर्व लगभग एक मील पर देवी का एक मन्दिर भी है। काशीपुर के उत्तर पर्वतश्रृंखला का प्रारम्भ हो जाता है। वहाँ तीन वृहत् सरोवर हैं। उनमें से एक का नाम द्रोण सागर है। वह किले के प्राकार से सटा हुआ है। स्थानीय जनों का कहना है द्रोण का आश्रम वहीं था। दूसरे सरोवर का नाम गिरिताल है। यह दो मील लम्बा तथा एक मील चौड़ा है। तीसरे को खोखरे का ताल कहते हैं। यह भी पर्याप्त लम्बा चौड़ा है। अतः काशीपुर को अहिच्छत्र मानने में कोई भी आपत्ति नहीं मालूम पड़ती।

**काम्पिल्य** – दक्षिण पाञ्चाल की राजधानी का नाम काम्पिल्य था। यह बदायूँ तथा फर्रुखाबाद के मध्य में गङ्गा के तट पर स्थित आधुनिक काँपिल अथवा कपिलो माना जाता

है। दक्षिण पाञ्चाल के दूसरे प्रसिद्ध नगर का नाम माकन्दी था, परन्तु अभी तक इसका निश्चय नहीं हो सका। वह भी फर्रुखाबाद के समीप ही कहीं रहा होगा। कथा सरित्सागर में उसकी चर्चा मिलती है। "अस्ति माकन्दी नाम नगरी जाह्नवी तटे।" किसी समय दक्षिण पाञ्चाल में कान्यकुब्ज जनपद भी सम्मिलित था।

**आसन्दीवत्**—कान्यकुब्ज का प्राचीन नाम आसन्दीवत् था। पाणिनि के ८।२।१२ तथा ४।२।८६ सूत्रों में इसका उल्लेख है। यह परीक्षित के पुत्र जनमेजय की राजधानी थी। जन्मेजय ने अपना राजसूय यज्ञ यहीं किया था। आसन्दीवत् का शब्दार्थ 'राजसिंहासन का स्थान' होता है। इसी के ठीक स्थान पर आजकल कन्नौज बसा हुआ है। काशिकाकार वामन ने इसको भी अहिस्थल का पर्याय माना है।

**रथस्था**—पाणिनि ने पारस्करादिगण ६।१।१५७ में रथस्था नदी का उल्लेख किया है इसी का नाम रथस्था भी है। पतञ्चलि ने इसका नाम रथस्या लिखा है। जैमिनीय ब्राह्मण की भूमिका में डा० कलान ने भी इसका नाम रथस्था ही स्वीकृत किया है। महाभारत के आदिपर्व १७२। २० में सरस्वती तथा गण्डकी के मध्य में रथस्था नाम की पवित्र नदी का उल्लेख है। ऋक् प्रातिशाख्य ४।७।५ में भी रथस्या नदी का नाम आया है, इससे ज्ञात होता है कि एक ही नदी का रथस्था, रथस्पा या रथस्या नाम है। इम्पीरियल गजेटिअर उत्तर प्रदेश से ज्ञात होता है कि पाञ्चाल जनपद की रामगंगा नदी, जिसका एक नाम रथवाहिनी भी है, का ही प्राचीन नाम रथस्था था। आजकल भी रामगंगा के ऊपरी भाग को स्थानीय जन रुहुत कहते हैं। यूनानी लेखकों ने लिखा है कि गंगा से ११९ मील पूर्व 'रहदफा' नाम की एक नदी है। रुहुत तथा रहदफा ये दोनों ही रथस्था के ही विकृत रूप जान पड़ते हैं। ऊपर लिखा जा चुका है कि पाञ्चाल का एक नाम प्रत्यग्रथ भी था तथा वहीं रथस्था नदी भी बहती है। दोनों का अर्थ भी समान है—जहाँ रथ स्थिर हो जाय। अथवा पीछे मुड़ जाय'।

यद्यपि यूनानी लेखकों के अनुसार 'रहदफ' एक नगर ज्ञात होता है। जो कि सीमा प्रान्त से पाटलिपुत्र नाम वाले उत्तरपथ, राजमार्ग (G. T. R.) पर स्थित एक पड़ाव था; तथापि झेलम तथा व्यास, सतलज तथा यमुना के मध्य के पड़ावों के वर्णन से यह नदी का ही नाम मालूम पड़ता है। यह गंगा तथा सरयू के मध्य में बड़ी नदी भी है। गंगा तट पर स्थित हस्तिनापुर से रामगंगातट पर स्थित बरेली की दूरी तथा बरेली से कन्नौज की दूरी बराबर है, कन्नौज के पास रामगंगा गंगा से मिली है। राजमार्ग के पड़ावों के लिये दूरी समान होनी भी चाहिये अतः 'रहदफ' नदी का नाम प्रतीत होता है।

**प्रकण्व**—पाणिनि के अनुसार प्रकण्व भारत की पश्चिमी सीमा पर स्थित था। पाणिनि सू० ६।१।१५३ में 'प्रस्कण्व' एक ऋषि के नाम के लिये आया है। उस सूत्र के प्रत्युदाहरण के लिये 'प्रकण्व' देश के लिये प्रयुक्त हुआ है। हिरोदोतस ने 'परिकनिओई' नाम की एक जाति का उल्लेख किया है। स्टेनकोनों ने फरगना के जनों को परिकनिओई निश्चित किया है। इससे ज्ञात होता है कि फरगना का प्राचीन नाम प्रकण्व था।

**गब्दिका**—पाणिनि ने सिन्ध्वादिगण ४।३।९३ में गब्दिका का उल्लेख किया है। महाभाष्यकार गब्दिका को आर्यावर्त्त के बाहर मानते हैं। सम्भव है धौलाधार से ऊपर चंबा राज्य में गद्दियों का गद्देरन प्रदेश प्राचीन गब्दिका हो।

**पटच्चर**—पा० के पलद्यादिगण ४।२।११ में पटच्चर का उल्लेख मिलता है। इस समय जहाँ पाटोदी है बहुत सम्भव है सरस्वती के दक्षिण पाटोदी के आस पास का समस्त प्रदेश पटच्चर नाम से प्रसिद्ध रहा हो। यह आभीरों का निवास स्थान था।

**वर्मती**—पा० सू० ४।३।९४ में वर्मती का नाम आया है। सम्भव है यह बीमरान का प्राचीन नाम हो। यह स्थान बहुत प्राचीन मालूम पड़ता है तथा यहाँ खरोष्ठी के कुछ लेख भी प्राप्त हुये हैं।

**साङ्काश्य**—पा० सू० ४।२।८० से 'साङ्काश्य' एक स्थान का नाम प्रतीत होता है। रामायण में भी साङ्काश्य का उल्लेख मिलता है। किसी समय इस पर मिथिला के राजा जनक के भाई कुशध्वज का अधिकार था। प्रो० एच० एच० विल्सन ने अपने विष्णुपुराण में काशी को साङ्काश्य माना है परन्तु यह उनका भ्रम है क्योंकि काशी के लिये इस नाम का प्रयोग कहीं भी नहीं मिलता। श्युआन् चुआंग ने

कान्यकुब्ज जाते समय इस स्थान को देखा था। उसने इसका नाम 'सेंगकियासे' लिखा है। आजकल इसको 'संकसिआ' कहते हैं। यह फर्रुखाबाद जिले में इक्षुमती (ईखन) नदी के तट पर स्थित है। महाभारत काल में यह दक्षिण पाञ्चाल का एक भाग था।

**कौशाम्बी**—कुरुक्षेत्र के युद्ध में द्रुपद तथा उनके पुत्रों के मारे जाने पर दक्षिण पाञ्चाल कुरु जनपद में विलीन हुआ जान पड़ता है। क्योंकि अश्वमेध पर्व में दक्षिण पाञ्चाल की पृथक् सत्ता का उल्लेख नहीं मिलता। कुछ दिनों के बाद जब कुरु जनपद की राजधानी हस्तिनापुर गंगा में डूब गयी, तब पाण्डवों ने प्रयाग के पश्चिम लगभग तीस मील पर स्थित कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया। उसको नव कौशाम्बी कहने लगे। आजकल उसका नाम कोसम है। जेनरल कनिंघम को कोसम में पत्थर का एक खम्भा मिला था जिस पर कौशाम्बी लिखा था। कथासरित्-सागर में कौशाम्बी की चर्चा मिलती है। वत्स जनपद की यह राजधानी थी। वत्सराज उदयन भी यहीं रहते थे। इसका एक नाम वत्सपत्तन भी था—"कौशाम्बी वत्सपत्तनम्" हेमचन्द्र ४।४१। महाभारत में अनेक स्थलों पर इसकी चर्चा मिलती है। पाणिनि ने भी ४।२।९७ में नद्यादिगण में इसका उल्लेख किया है।

**प्रतिष्ठान**—यह प्राचीन काल में राजा पुरूरवा की राजधानी था। यह प्रयाग से पूर्व गंगा के बायें तट पर स्थित था। हरिवंश पुराण में इसकी स्थिति का स्पष्ट उल्लेख किया गया है १४११।१२। विक्रमोर्वशीय नाटक से भी इसकी स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। उसमें लिखा है कि प्रतिष्ठान नगरी का प्रतिबिम्ब सङ्गम के समीप गंगा के पुनीत जल में पड़ता रहता है। अतः आधुनिक झूँसी को प्रतिष्ठान मानना समुचित जान पड़ता है। यह गंगा के तट पर प्रयाग के पूर्व स्थित है तथा अतिप्राचीन भी जान पड़ता है।

**अश्मक**—उपरिलिखित प्रतिष्ठान के अतिरिक्त प्राचीन काल में एक और भी प्रतिष्ठान था। वह अश्मक जनपद की राजधानी था। अश्मक जनपद गोदावरी के दक्षिण सह्याद्रि पर्वत शृंखला (पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग) तक विस्तृत था। आजकल उसको पैठन कहते हैं। पाणिनि ने ४।१।१७३ में अवन्ति तथा अश्मक को साथ-साथ लिखा है। उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह एक राज जनपद था।

अश्मक जनपद के सम्बन्ध में पुराणों में एक कथा मिलती है। लिखा है कि राजा कल्माषपाद की पत्नी मदयन्ती को वसिष्ठ के आशीर्वाद से पति के समागम के विना ही गर्भ रह गया। सात वर्ष तक प्रसव नहीं हुआ। उसने किसी नुकीले पत्थर से गर्भाशय को विदीर्ण कर दिया। जो बच्चा पैदा हुआ उसका नाम अश्मक पड़ा। उसके वंशज भी अश्मक कहलाये तथा जनपद का नाम भी अश्मक पड़ गया।

**अजाद**—यह नाम कहीं नहीं मिलता। केवल पा० सू० ४।१।१७१ की व्याख्या से ज्ञात होता है कि यह एक जन-पद था। मालूम पड़ता है कि बकरियों के चरागाह की अधिकता के कारण उस जनपद का यह नाम रख दिया गया। सम्भव है यह चम्बल तथा यमुना मध्यवर्ती इटावा जिले का प्रदेश हो, क्योंकि आजकल भी यहाँ बकरियों के चरने के लिये पर्याप्त चरागाह हैं तथा वहाँ बकरियाँ भी उत्तम जाति की पाई जाती हैं उनको यमुना पारी कहते हैं।

**वारणावत**—महाभारत में वर्णित गंगा दोआब के छोटे-छोटे स्थानों में वारण अथवा वारणावत उल्लेखनीय है। यहीं लाक्षागृह का निर्माण कराकर कौरवों ने पाण्डवों को जला देने का षड्यन्त्र किया था। यह स्थान गंगा तट पर स्थित था; क्योंकि पाण्डवों ने वारणावत से निकलकर गंगा को पार किया था। वह हस्तिनापुर के दक्षिण पूर्व स्थित था आदि पर्व १४८।१९।२१। उपर्युक्त वर्णन से ज्ञात होता है कि इलाहाबाद जिले का बरावें—जो कि फतेहगढ़ से उत्तर पश्चिम की ओर आठ मील पर है प्राचीन वारणावत है। यह प्राचीन स्थान मालूम पड़ता है। वहाँ एक छोटे से राजा भी रहते हैं।

**हरिद्वार**—इसका एक नाम मायापुरी भी है। यह सिवालिक शृंखला की दक्षिणी तलहटी में गंगा तट पर स्थित है। संस्कृत साहित्य का गंगाद्वार यही है। गंगा नदी यहीं पर्वत को छोड़कर समतल भूमि में उतरी है। इसके समीप कनखल नाम का एक कस्बा है। प्राचीन काल में हरिद्वार के समीपवर्ती पर्वतों का नाम कनखल था; क्योंकि

महाभारत वन पर्व १३५-५ में कनखल का प्रयोग बहुवचन में मिलता है—"एते कनखला राजन् ऋषीणां दयिता नगाः।" इसके समीप ही कपिल तीर्थ था, जिसको आजकल भी कपिल स्थान कहते हैं।

बिल्वक—पाणिनि सू ६।४।१५३ से यह एक जनपद प्रतीत होता है। यह कोई छोटा जनपद रहा होगा; क्योंकि साहित्य में कहीं इसका नाम नहीं मिलता। हरिद्वार से थोड़ी दूर पर लगभग एक मील पश्चिमोत्तर पहाड़ी के नीचे एक तीर्थ आजकल प्रसिद्ध है। यहाँ नीम के वृक्ष के नीचे बिल्वकेश्वर नामक शिवलिङ्ग है। स्थानीय जनों का कहना है कि उस प्रदेश में पहिले बिल्व का वन था। सम्भव है उसके पार्श्ववर्ती प्रदेश का नाम बिल्वक रहा हो।

किरात—हरिद्वार के आगे पूर्वी गढ़वाल में सुबाहु का राज्य था। उस राज्य में किरात, तङ्गण तथा पुलिन्द जाति के जन रहते थे। महाभारत में किरातों की पर्याप्त चर्चा मिलती है। सभापर्व में लिखा है कि भीमसेन ने विदेह राज्य में स्थित होकर सात किरात राजाओं को परास्त किया था। प्राचीन विदेह जनपद में दरभङ्गा जिला तथा पूर्वी नेपाल का कुछ भाग सम्मिलित था—सभापर्व ३०।१५। महाभारत में ही अन्यत्र उल्लेख है कि किरात बड़े भयङ्कर धनुर्धर होते थे, वे चमड़ा पहिनते तथा फल मूल और मांस पर जीवन-निर्वाह करते थे सभापर्व ५२।२। अमरकोश में चिरायता का एक पर्याय 'किराततिक्त' २।४।११३ (किरात जनपद का कड़ुआ पौधा) लिखा है यह पौधा शिमला से लेकर पूर्वी नेपाल के मोरंग जिले तक प्रचुरता से पाया जाता है यू० सी० दत्त मेटेरिया मेडिका पृ० २००। राज निघण्टु में चिरायते का एक पर्याय नैपाल (नेपाल में उत्पन्न होने वाला) लिखा है।

उपरिलिखित उद्धरणों से ज्ञात होता है कि किरात जन हिमालय की ढालों पर गढवाल से लेकर समुद्रतटवर्ती 'वारिश'-की सीमा तक के विस्तृत प्रदेश में रहते थे। वारिश आधुनिक वङ्गाल (पूर्वी) में बाकरगंज जिले का बारी साल सब डिविजन हो सकता है। यह पूर्वी वङ्गाल में दक्षिण-पूर्वी कोण में स्थित है। इस प्रदेश में अनेक नदियाँ हैं। किरातों का एक पर्याय लौहित्य भी मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि ये लोग ब्रह्मपुत्र के तट पर भी रहते थे। अतः यह कहा जा सकता है कि किरात जन हिमालय पर रहने वाली पर्वतीय जाति के जन थे। सम्भवतः आजकल के भोटिया किरातों के ही वंशज कहे जा सकते हैं। भोटिया केवल भूटान में ही नहीं रहते, प्रत्युत नेपाल तथा कुमायूँ के कुछ भागों में भी पाये जाते हैं। भोटिया को प्राचीन किरात के वंशज मानने में महाभारत का भी प्रामाण्य मिल रहा है। महाभारत में लिखा है कि किरात गौरवर्ण के होते थे। राजसूय यज्ञ में किरातों ने युधिष्ठिर को जो उपहार दिये थे उनमें गौरवर्ण की किराताङ्गनायें भी थी। सभापर्व ५२।११।

पुलिन्द—यह शब्द पुल् धातु (महत्व प्राप्त करना) से उणादि सूत्र ४।८५ से सिद्ध किया जाता है। उज्ज्वलदत्त ने पुलिन्दों को शबर माना है। परन्तु यह समुचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि शबर जाति अति प्राचीन काल से उड़ीसा में रहने वाली मानी जाती है। पुलिन्दों से उनका कोई सम्बन्ध नहीं जान पड़ता। जेनरल कनिंघम ने लिखा है कि शबर जन ग्वालियर तथा नरवर के दक्षिण तथा दक्षिणी राजपूताने में अधिकतर पाये जाते हैं। कथासरित्सागर में विन्ध्य के समीप एक शबर सामन्त का वर्णन मिलता है—"पृष्टवान् प्रियावृत्तिमत्यार्त्तः श्रीदत्तः शबराधिपम् १०-१३४। सातवें शतक के बाणभट्ट ने भी हर्ष चरित में लिखा है कि हर्षवर्धन ने विन्ध्य वन में शबर की सहायता से अपनी बहिन राज्यश्री को प्राप्त किया था। पुलिन्द शब्द का प्रयोग भिल्लों के लिये भी किया जाता था। इनको लावधक (लालची) भी कहते थे—"आनाययच्च सविभुभिल्लराजं पुलिन्दकम्। मित्रं बलैर्व्याप्तदिशं प्रावृट्कालमिवाम्बुदैः॥" कथासरित्सागर १९-५९। 'तत्र वत्सेशमित्रस्य विन्ध्यप्राग्भारवासिनः। गृहं पुलिन्दकाख्यस्य पुलिन्दाधिपतेरमात्॥" कथा स० सागर १३।४५। उक्त विवरण से ज्ञात होता है कि पुलिन्द जन विन्ध्यवन के रहने वाले कोल भिल्ल ही हैं।

तङ्गण—तङ्गणों के दो स्थानों का पता चलता है। महाभारत में उल्लेख है कि ये मध्य हिमालय में सुबाहु के राज्य में किरातों के साथ रहते थे, वहीं यह भी लिखा है कि इनके साथ जागुड, रामठ, स्त्री राज्य तथा मुण्ड जन भी रहते थे। टालेमी ने इनको गंगा के ऊपरी भाग में

पूर्वी तट पर स्थित माना है। इनका प्रदेश सम्भवतः रामगंगा नदी से ऊपरी सरयू नदी तक विस्तृत था। तङ्गण जन मध्य एशिया के काशगर में भी रहते थे। ये जन तब लोगों को ज्ञात हुए जब इनके विद्रोह को चीन सरकार ने दबाया। मालूम पड़ता है येही प्राचीन तङ्गणों के वंशज हैं। पर तङ्गण भी इनके सम्बन्धी थे तथा पास-पास रहते थे।

पोदन्य—महाभारत में लिखा है कि राजा अश्मक ने पोदन्य बसाया था। "अश्मको नाम राजर्षिः पोदन्यं यो न्यवेशयत्॥" आदि पर्व १७५–४७। काम्पिल्य तथा अहिच्छत्र के ठीक मध्य में स्थित वर्तमान बदायूँ प्राचीन काल का पोदन्य जान पड़ता है। इसको अयोध्या के राजा अश्मक ने बसाया था। बदायूँ के पूर्वोत्तर माँदापुर नाम का एक गाँव है जो कि महाभारत का मोदापुर हो सकता है—"मोदापुरं वामदेवं सुदामानं सुसंकुलम्।" सभापर्व २७।११।

गोपालकच्छ—महाभारत में भीम के पूर्वी देशों के विजय के प्रसङ्ग में मल्लभूमि के साथ ही गोपाल कच्छ के जीतने की चर्चा की गयी है—"ततो गोपालकच्छञ्च सोत्तरानपि कोसलान्। मल्लानामधिपञ्चैव पार्थिवाञ्चाजयत्प्रभुः॥" २।३०।३। गोपालकच्छ सम्भवतः मल्ल भूमि तथा उत्तर कोसल का मध्यवर्ती प्रदेश था अर्थात् रुहेलखण्ड के पूर्वोत्तर-प्रदेश का नाम गोपालकच्छ था। कनिंघम ने इसी प्रदेश में 'किन्पिश्वाङ्ना' की स्थिति बतलायी है जो कि गोपाल कच्छ ही हो सकता है; क्योंकि किन्पिश्वाङ्ना का अर्थ भी गोपालों का स्थान ही होता है।

उत्तर कोसल—यह सोलह महाजनपदों में से एक जनपद का नाम है। उत्तर में सदानीरा (राप्ती) नदी से लेकर दक्षिण में स्यन्दिका (सई) नदी तक का प्रदेश जिसके बीच से सरयू नदी लम्बे बल बहती है कोसल जनपद के नाम से प्रसिद्ध था। यदि हम पूर्व में गोरखपुर जिले के बरहज बाजार से (जहाँ सरयू-राप्ती संगम है) चलें और आजमगढ़ जिले के मऊनाथभंजन होते वाराणसी के निकट गंगा गोमती संगम तक चले आयें, वहाँ से दाहिने मुड़कर गोमती के साथ-साथ पश्चिमाभिमुख चलते-चलते गोमती सई संगम तक पहुँचे और तब सई के साथ साथ पश्चिमोत्तर चलकर हरदोई के आगे उसके (सई) निकास तक चले जायें तब हिमालय की तराई-तराई गोलागोकर्णनाथ, चन्दन चौकी, नेपालगंज आदि देते दक्षिण पूर्वाभिमुख बढ़ते राप्ती को पकड़ कर उसके साथ-साथ फिर बरहज बाजार तक पहुँच जायें तो कोसल जनपद की पूरी परिक्रमा हो जायगी।

नैमिषारण्य—अयोध्या के पश्चिम गोमती नदी है। इसका एक नाम वासिष्ठी भी था—'वासिष्ठी गोमती तुल्ये" हेमचन्द्र ४ १५१। प्रसिद्ध नैमिषारण्य तीर्थ इसी के तट पर था। नैमिषारण्य में ही प्रख्यात पौराणिक सूत रहते थे। यह शूद्र होने पर भी ब्राह्मणों के भी सम्मानास्पद प्रवक्ता थे। पुराणों में कथा है कि श्रीकृष्ण के भाई बलभद्र ने इनका वध कर दिया था, क्योंकि सूत ने ब्राह्मणों के समान बलभद्र का सत्कार नहीं किया था।

मत्स्य पुराण में लिखा है कि नैमिषारण्य गोमती तथा गङ्गा के संगम पर था—"तीर्थं तु नैमिषं नाम सर्वतीर्थफलप्रदम्।. गंगोद्भेदस्तु गोमत्यां यत्रोद्भूतः सनातनः। तथा यज्ञवराहस्तु देवदेवस्य शूलभृत्। यत्र तत् काञ्चनद्वारमष्टादशभुजोः हरः॥ नेमिस्तु हरिचक्रस्य शीर्णा यत्रा भवत्पुरा। तदेतन्नैमिषारण्यं सर्वतीर्थनिषेवितम्। देवदेवस्य तत्रापि श्रीवराहस्यदर्शनम्॥" मत्स्य २२–१२–५ महाभारत ३।८७–६।७॥ परन्तु यह वर्णन समुचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि गोमती वाराणसी जिले में गंगा से मिलती है न कि नैमिषारण्य में। सम्भव है वहाँ गोमती में कोई दूसरी नदी मिली हो। सीतापुर जिले का नीमसार प्राचीन नैमिषारण्य माना जाता है।

कनिंघम ने लिखा है कि सुल्तानपुर के दक्षिण-पूर्व लगभग अठारह मील पर धवपापपुर नाम का एक तीर्थ है। यह भी गोमती नदी के तट पर स्थित है। प्राचीनकाल में इसी को कुसुम्भवनपुर भी कहते थे। महाभारत का रामतीर्थ सम्भवतः यही है—"रामतीर्थे नरः स्नात्वा गोमत्यां कुरुनन्दन। अश्वमेधमवाप्नोति पुनाति च कुलं नरः॥" ३–८४। अयोध्या से प्रयाग जाने वाले मार्ग पर यह तीर्थ पड़ता है।

कुशावती—श्री रामचन्द्र के जीवन काल में ही लव तथा कुश दो भिन्न भिन्न प्रदेशों में राज्य करने लगे थे। दक्षिण कोसल कुश के अधिकार में था। उसकी राजधानी विन्ध्य के दर्रे में स्थित कुशावती थी। उत्तर कोसल के शासक लव थे, उन्होंने श्रावस्ती को अपनी राजधानी बनायी।

"कोसलेषु कुशं वीरमुत्तरेषु तथा लवम् । अभिषिच्य महात्मानावुभौरामः कुशीलवौ ॥ कुशस्य नगरी रम्या विन्ध्यपर्वतरोधसि । कुशावतीतिनाम्ना सा कृतारामेण धीमता ॥ श्रावस्तीति पुरी रम्या श्राविता च लवस्य ह॥" बा०रा० १०७-१७ तथा १०८-४।५। परन्तु कालिदास ने रघुवंश १५-९७ में लव की राजधानी का नाम श्रावस्ती के स्थान पर शरावती लिखा है। सम्भव है उसका एक नाम यह भी रहा हो।

मत्स्यपुराण में लिखा है कि श्रावस्ती गण्डदेश में थी— "निर्मिता येन श्रावस्ती गण्डदेशे द्विजोत्तमाः।" सम्भवतः आजकल गोंडा जिस प्रदेश में है उसका प्राचीन नाम गण्डदेश रहा हो, तथा उसके अन्तर्गत श्रावस्ती भी रही हो। महाभारत में भी भीम के विजय के वर्णन में पाञ्चाल के पश्चात् गण्डदेश के विजय का उल्लेख मिलता है— "पाञ्चालान् विविधोपायैः सान्त्वयामास पाण्डवः। ततः स गण्डकान् वीरो विदेहान् भरतर्षभः॥" ११-२९-४ इसमें विदेह पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है; क्योंकि विदेह विजय की चर्चा अन्यत्र की गयी है। उक्त उद्धरणों से यह तो निश्चय है कि अयोध्या के उत्तर का प्रदेश जिसमें गोंडा तथा बहराइच जिले हैं उत्तर कोसल में सम्मिलित था।

अयोध्या के उत्तर गोरखपुर जिले में स्थित आधुनिक सहेत महेत को प्राचीन श्रावस्ती माना जाता है। जेनरल कनिंघम ने लिखा है कि उनको सहेत महेत में बुद्ध की एक विशाल मूर्ति मिली थी, जिस पर श्रावस्ती खुदा हुआ था। पुराणों में लिखा है कि राजा श्रावस्त (रामचन्द्र के पूर्व पुरुष) ने उसे बसाया था। "तस्य श्रावस्तः। यः श्रावस्ती पुरीं निवेशयामास॥" ४।२।१२। इसका दूसरा नाम धर्मपुरी या धर्मपत्तन भी था—"श्रावस्ती धर्मपत्तनम्" त्रिकाण्डशेष, भूमि वर्ग।

इस प्रदेश में होकर इरावती नदी बहती है आजकल इसको राप्ती कहते हैं। इस नदी के अनेक प्राचीन नाम पाये जाते हैं। इसका एक नाम सदानीरा भी था। जेनरल कनिंघम ने बुद्ध की जन्मभूमि कपिलवस्तु को इसी नदी के पश्चिम मानता है। कपिलवास्तु का आधुनिक नाम भुइला है। कारलायल ने लिखा है कि यह स्थान बस्ती जिले में है। बौद्ध साहित्य में लिखा है कि इस स्थान पर प्राचीनकाल में कपिल नाम के एक ऋषि रहते थे उन्हीं के नाम पर इसका नाम कपिलवास्तु पड़ गया। कपिलवास्तु के समीप ही लुंबिनी वन में बुद्ध का जन्म हुआ था। उनकी मृत्यु कुशी नगर में हुई थी। कुशी नगर गोरखपुर से पैंतीस मील पर स्थित कसया नाम के ग्राम का प्राचीन नाम माना जाता है।

नेपाल—नेपाल नाम बहुत प्राचीन नहीं जान पड़ता। महाभारत की केवल एक प्रति में एक ही बार इसका नाम आया है—"नेपालविषये येन राजानस्तानदाययत्" वनपर्व २५४-७। भारतीय परम्परोक्त आधार पर प्रतीत होता है कि प्राचीनकाल में यह एक विस्तृत घाटी थी। क्रमशः लोग उसमें बसने लगे। उसके आकार को देखकर थार्टन की यह धारणा थी। महाभारत के एक श्लोक से भी यही ज्ञात होता है कि पहिले इस प्रदेश में जल ही जल था। इस प्रदेश के भिन्न भिन्न भागों के भिन्न भिन्न नाम पाये जाते हैं। अमरसिंह के समय यह नाम पूर्णतया प्रचलित हो गया था; क्योंकि उन्होंने लाल हरताल (मनः शिला—मैनसिर) का एक पर्याय नैपाली लिखा—"मनः शिला मनोगुप्ता....नैपाली कुनटी गोला" २-९-१०८ वर्तमान काल की अपेक्षा प्राचीन काल में इसकी सीमा संकुचित थी। इस समय काठमाँडू के समीप का ललितपत्तन नाम का नगर प्राचीन नेपाल की राजधानी था।

वाराणसी—प्राचीन काल में वाराणसी काशी जनपद की राजधानी थी। वरणा तथा असी नाम की नदियों के मध्य में स्थित होने के कारण नगरी का नाम वाराणसी पड़ गया। किसी समय इस जनपद का नाम वराणस भी था; क्योंकि वर्धमान ने गणरत्नमहोदधि में लिखा है कि "वराणसो नाम देशस्तत्र भवा नगरी वाराणसी," अर्थात् वराणस जनपद की राजधानी। उसी का विकृत रूप बनारस हो गया। बनारस नामकरण का एक दूसरा कारण यह कहा जाता है कि इस जनपद के एक राजा का नाम बन्नार था, उसी नाम के आधार पर इसका नाम बनारस पड़ गया। वाराणसी संस्कृत वाङ्मय, विशेषतया व्याकरण तथा आयुर्वेद का पीठ समझी जाती है। यहाँ बड़े-बड़े आचार्य हो चुके हैं। महाभाष्यकार पतञ्जलि यहाँ रहते थे। यहाँ के राजा दिवोदास धन्वन्तरि के अवतार माने

जाते हैं—हरिवंश १५४४। चरक ने इन्हीं से आयुर्वेद शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की थी।

इस जनपद का विस्तार समय-समय पर बदलता रहा है। यहाँ के राजाओं की चर्चा संस्कृत वाङ्मय में प्रचुरता से मिलती है। कहा जाता है कि वाराणसी दो बार नष्ट भ्रष्ट कर दी गयी थी। एक बार दिवोदास के समय राक्षसों ने इसको नष्ट कर दिया। वे राक्षस सम्भवतः किसी प्राचीन जाति के जन रहे होंगे। दूसरी बार पौण्ड्रक वासुदेव के मित्र होने के कारण यहाँ के राजा को परास्त कर श्री कृष्ण ने उसकी राजधानी वाराणसी को ध्वस्त कर दिया था। हरिवंश २९। विष्णु पुराण १।३४। यह नगरी आर्यों का पवित्र तीर्थ मानी जाती है। शास्त्रों में लिखा है कि प्रलय होने पर भी वाराणसी नष्ट नहीं होती। यहीं से अन्य तीर्थों की दूरी का निर्णय करके उनका पुनर्निमाण किया जाता है।

वत्स—यह जनपद प्रयाग के पश्चिम स्थित था। प्राचीन काल में राजा दिवोदास का पौत्र यहाँ का राजा बनाया गया। वह छोटा सा बच्चा ही था, अतः उसकी अवस्था के कारण इस जनपद का नाम वत्स पड़ गया। श्युआन् चुआँग के अनुसार इस जनपद का क्षेत्रफल ६००० मील अर्थात् लगभग १००० वर्गमील था। इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। आजकल वह कोसम नाम से प्रसिद्ध है। कोसम प्रयाग से लगभग तीस मील पश्चिम यमुना तट पर स्थित है। वा० रामायण में भी कौशाम्बी की चर्चा है। महाभारत में लिखा है कि जब हस्तिनापुर को गङ्गा ने बहा दिया तब पाण्डवों के वंशज (शतानीक) इस जनपद में आकर रहने लगे तथा कौशाम्बी को ही अपनी राजधानी बनाकर उसका नाम नव कौशाम्बी रख दिया। उदयन यहीं का राजा था। जिसकी कथा कथासरित्सागर में विस्तार पूर्वक वर्णित है। तथा भास ने उसी के आधार दो नाटकों को (प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्त) लिखा है।

मगध—यह सोलह महाजनपदों में एक प्रधान जनपद था। समय-समय पर यहाँ के राजाओं का आधिपत्य समस्त भारत में रह चुका है। आधुनिक गङ्गा के दक्षिण भाग का बिहार प्राचीनकाल में मगध कहलाता था तथा गङ्गा के उत्तर का बिहार विदेह। इसी जनपद के प्राचीन नाम कीकट तथा प्रमगन्द भी थे। इस जनपद में आदिवासी जन रहते थे। इस समय भी छोटा नागपुर तथा झारखण्ड जिलों में संथाल नाम के आदिवासी पाये जाते हैं। मगध एकराज जनपद था। इस पर बृहद्रथवंश, शिशुनागवंश तथा नन्दवंश के राजाओं ने शासन किया था। बाद में मौर्यों ने शासन किया। इन राजाओं ने समय-समय पर कम्बोज तथा कपिशा से लेकर वङ्ग, कलिङ्ग पर्यन्त प्रदेशों को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत कर लिया था। इसी जनपद में बौद्ध धर्म का पूर्ण विकास हुआ था।

गिरिव्रज—इस जनपद की राजधानी गिरिव्रज (पर्वत-समूह) थी। आजकल उसको राजगृह कहते हैं। रामायण बालकाण्ड तथा महाभारत में इसका उल्लेख मिलता है। महाभारत में लिखा है कि श्रीकृष्ण, अर्जुन तथा भीम गङ्गा तथा सोन नदियों को पार कर पूर्व की ओर चलकर गोरथ नामक पर्वत पर पहुँचे। वहाँ से उनको विपुल, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि तथा चैत्यक नाम की पाँच पहाड़ियाँ दिखाई पड़ीं। गिरिव्रज उन पहाड़ियों से घिरा हुआ था। उन पहाड़ियों को लाँघ कर वे लोग जरासन्ध के निवास स्थान गिरिव्रज पहुँच गये। वह पहाड़ियों के मध्य में स्थित था। सोन पटना के पास गङ्गा से मिली है, अतः यह स्पष्ट है कि उन लोगों को पश्चिम से राजगृह जाने में गङ्गा तथा सोन दोनों को पार करना ही पड़ा होगा।

जेनरल कनिंघम ने अपनी भारत की प्राचीन भूगोल नाम की पुस्तक में एक मानचित्र दिया है। जिसमें उन्होंने विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि, सोनगिरि तथा वैभार-गिरि को दिखलाया है। विपुलगिरि उत्तर की ओर है। उसके पूर्वोत्तर रत्नगिरि है। उसके आगे सैलगिरि, रत्नगिरि पालि-साहित्य का पाण्डवगिरि माना जाता है। मालूम पड़ता है कि इससे पाण्डवों का सम्बन्ध रहा होगा। सैल-गिरि सम्भवतः गोरथगिरि है। महाभारत का चैत्यकगिरि रत्नगिरि हो सकता है। ऋषिगिरि पालि-साहित्य का इसिगिलि है। दक्षिणपूर्व की ओर उदयगिरि है। वराह का रूपान्तर व्याहारगिरि मालूम पड़ता है। सम्भवतः यही वैभार गिरि है। इस प्रदेश में पञ्चन नाम की नदी बहती है, इसका दूसरा नाम मागधी नदी है।

कुसुमपुर—मगध जनपद की दूसरी राजधानी का नाम कुसुमपुर, पाटलिपुत्र (पटना) था। जिसको अजात-

शत्रु के पुत्र उदयाश्व ने बसाया था। यूनानी लेखकों तथा संस्कृत साहित्य से ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल में यह पूर्वी भारत का सबसे समृद्ध नगर तथा विद्याकेन्द्र था। राजशेखर ने लिखा है कि यहाँ भारतविख्यात पाणिनि, कालिदास आदि विद्वानों की परीक्षा हुई थी—"श्रूयते च पाटलिपुत्रे शास्त्रकारपरीक्षा।" अत्रोपवर्षवर्षाविह पाणिनि-पिङ्गलाविह व्याडिः। वररुचिपतञ्जली इह परीक्षिता ख्यातिमाजग्मुः।" काव्यमीमांसा अध्याय ११।

**पुरगावण**—पा० सू० ८।४।४-५ में पुरगावण का नाम आया है। वर्धमान ने गणरत्नमहोदधि में लिखा है कि पाटलिपुत्र में पुरगा नाम की एक यक्षी रहती थी। सम्भव है उसी के नाम पर पाटलिपुत्र के पार्श्ववर्ती वन का नाम पुरगावण पड़ गया हो।

**गया**—मगध जनपद के एक बड़े नगर का नाम गया था, इसकी चर्चा भारतीय साहित्य के अनेक ग्रन्थों में मिलती है। यह फल्गुनदी के पश्चिम तट पर बसा हुआ है। फल्गु का एक नाम महानदी भी है। यह बड़ी पवित्र नदी मानी जाती है। यह नीलगाम (निरंजनी) तथा मोहिनी नाम की दो बड़ी नदियों से मिल कर बनी है। इस नगर के समीप बोध गया नाम का उपनगर है। यहीं एक पीपल के वृक्ष के नीचे कठिन तप के पश्चात् बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।

**नालन्दा**—मगध में बिहार नाम का एक कस्बा है। उसके समीप एक सूनसान पहाड़ी है उस पर कुछ अवशेष पड़े हुये हैं। कनिंघम की धारणा है कि यह अवलोकितेश्वर के अवशेष हैं। इस पहाड़ी के समीप ही भारतविख्यात नालन्दा विश्वविद्यालय था। श्युआन च्युआँगने यहाँ कई वर्षों तक संस्कृत का अध्ययन किया था। पुरातत्त्ववेत्ता लोग वर्तमान बड़ागाँव को प्राचीन नालन्दा मानते हैं। यह राजगृह से सात मील उत्तर की ओर है।

वररुचि के प्राकृत प्रकाश के बारहवें अध्याय में लिखा है कि मगध के नाम पर मागधी भाषा का प्रादुर्भाव हुआ था। विश्वनाथ के अनुसार मागधी मगध के राजकीय अन्तः-पुर के परिचारकों की भाषा थी। राजशेखर ने विश्वनाथ के मत की पुष्टि की है—"श्रूयते हि मगधेषु शिशुनागो नाम राजा तेन दुरुच्चारानष्टौ वर्णानपास्य स्वान्तःपुर एकः प्रवर्तितो नियमः टकारादयश्चत्वारो मूर्द्धन्यास्तृतीयवर्ज-मूष्माणस्त्रयः क्षकारश्चेति"—का० मी० कविचर्या। अर्थात् शिशुनाग ने अपने अन्तःपुर में ट, ठ, ड, ढ, श, ष, ह तथा क्ष वर्णों का उच्चारण करना रोक दिया था। इससे यह भी प्रतीत होता है कि भाटों के लिये मागध शब्द का प्रयोग भी इसी जनपद के आधार पर प्रचलित हुआ है।

मागधी नाम का एक पौधा भी होता है। इसको पीपर कहते हैं—"मागधी पिप्पली मता।" अमर २।९६। जूही का पर्याय भी मागधी है—'मागधी गणिका" यूथिका-अमर २।७१। यह जनपद प्राचीनकाल में व्यापार का भी बड़ा केन्द्र था। यहाँ के व्यापारियों की चर्चा संस्कृत साहित्य में प्रचुरता से मिलती है। प्राचीनकाल में मागध परिमाण समस्त भारत में सर्वश्रेष्ठ समझा जाता था—"कालिङ्गा-न्मागधं श्रेष्ठम्॥ सम्भव है पीपर यहाँ को मुख्य व्यापारिक वस्तु रही हो, तथा जूही यहाँ का प्रिय पुष्प रहा हो, अतः मगध के नाम के आधार पर उनका भी नाम मागधी पड़ गया हो।

**कारूष**—इसका दूसरा रूप कारूश भी मिलता है। गोमती के सङ्गम से लेकर सोन के सङ्गम तक के गङ्गा के दक्षिण तट पर स्थित प्रदेश में प्राचीनकाल में मलद अथवा मलज तथा कारूष जन रहते थे। कारूष जन बृहद्-गुह भी कहे जाते थे—"कारूषास्तु बृहद्गुहाः" हेमचन्द्र ४.२५ रामायण के अनुसार कर्मनाशा तथा सोन का मध्यवर्ती प्रदेश कारूष कहलाता था। ब्रह्माण्डपुराण के अनुसार वेदगर्भपुरी (बक्सर) कारूष देश में स्थित थी। मिथिला जाने के समय श्री रामचन्द्र सरयूसंगम पर गङ्गा को पार कर कारूष देश में गये थे। मथुरा पर आक्रमण के समय कारूषों के राजा ने जरासन्ध का साहाय्य किया था। रामायण से यह भी ज्ञात होता है कि वामन भगवान् का आश्रम कारूष देश में था। विश्वामित्र का आश्रम यहीं था। पार्जिटर के अनुसार कैमूर श्रृंखला कारूष देश में है। बाद में चल कर कारूष जनपद मगध जनपद में विलीन हुआ जान पड़ता है।

इसके अतिरिक्त एक दूसरे जनपद का नाम भी कारूष था। महाभारत के अनुसार दन्तवक्त्र का राज्य, जिसको अधिराज भी कहते थे—मत्स्य तथा भोज जनपदों के मध्य

में था। पुराणों में इस जनपद को विन्ध्य शृंखला के पीछे बतलाया गया है। पार्जिटर का कहना है कि कारूष जनपद काशी तथा वत्स जनपदों के दक्षिण था। कारूष के पश्चिम चेदि तथा पूर्व में मगध था। उपर्युक्त उद्धरणों से ज्ञात होता है कि किसी समय कारूष जनपद गंगा के दक्षिण आधुनिक रीवाँ राज्य तक विस्तृत था। आजकल भी दक्षिणी विहार तथा रीवाँ पास ही पास हैं।

शिखावल—पा० सू० ४।२।८९ से यह नगर का नाम ज्ञात होता है, परन्तु दूसरे साहित्य में यह नाम अप्रचिलित सा है। सम्भव है यह रीवाँ राज्य में सोन के बायें तट पर स्थित आधुनिक सोहावल का प्राचीन नाम रहा हो। सोहावल रीवाँ राज्य में छोटी सी रियासत थी, वहाँ का राजा रीवाँ का करद राजा होता था। छोटी रियासत होने पर भी यह प्राचीन स्थान प्रतीत होता है।

वैशाली—मगध के उत्तर वैशाली नाम का गणतन्त्र राज्य था। बुद्ध के समय इसकी राजधानी का नाम वैशाली था। इसको विशाल नाम के एक राजा ने बसाया था—रामायण १–४८–१४। यहाँ प्राप्त अवशेषों को राजा विशाल के महल का अवशेष कहते हैं। रामायण में वर्णन है कि मिथिला में जनकपुर पहुंचने के पूर्व श्रीराम गङ्गा पार कर इस नगर में एक रात रहे थे। कनिंघम तथा श्युआन् चुआँग के आधार पर आधुनिक बसाढ़ का ही प्राचीन नाम वैशाली प्रतीत होता है।

वृजि—वैशाली के आस-पास का प्रदेश सम्भवतः वृजि कहलाता था। पा० सू० ४।२।१३१ की व्याख्या में वामन ने वृजि शब्द से वहाँ के रहनेवाले जन के लिये वृजिक (वृजिषु जातः) शब्द को सिद्ध किया है। बील ने बुद्ध चरित में लिखा है कि वजोर देश में वैशाली नाम का एक समृद्ध नगर है। वजोर वृजि का विकृत रूप प्रतीत होता है क्योंकि वजोर नाम के देश का उल्लेख अन्यत्र नहीं उपलब्ध है। सभापर्व में लिखा है कि भीम ने विदेह जनपद जाने के पूर्व शर्मकों तथा वर्मकों को जीता था। ये जन वृजि देशों में रहते थे। शर्मन् तथा वर्मन् के लिये शर्मकों तथा वर्मकों का प्रयोग प्रतीत होता है। वर्तमानकाल में वर्मन् जन बंगाल के कुछ भागों में पाये जाते हैं। शर्मन का निर्णय अभी तक नहीं हो सका है। सम्भवतः इससे यह सूचित होता है। कि वहाँ मिले-जुले ब्राह्मण क्षत्रियों का बसाव था।

वृजि जनपद पूर्व में बागमती या भोगमती नदी से लेकर पश्चिम में गण्डकी नदी तक विस्तृत था। दूसरे शब्दों में इस प्रदेश में मुजफ्फरपुर तथा छपरा का कुछ भाग सम्मिलित था। इसकी राजधानी वैशाली ही थी। किसी समय यहाँ विदेह लिच्छवियों का राज्य था। वर्तमानकाल में कुछ तिरहुत निवासी तथा कुछ नेपाली जन वज्जी तथा वजिया कहे जाते हैं। बहुत सम्भव है इनके पूर्वज प्राचीनकाल के वृजि जन हों।

मल्ल—वृजि जनपद के ठीक पश्चिम तथा कोसल जनपद के पूर्व मल्ल नाम का जनपद था। सम्भवतः आधुनिक गोरखपुर का प्रदेश प्राचीनकाल में मल्ल जनपद रहा हो। पावा तथा कुसीनगर (कसया) इस जनपद के प्रसिद्ध नगर थे। आजकल भी इस जनपद में मल्ल जाति के जन पाये जाते हैं।

विदेह—वैसाली के पूर्वोत्तर विदेह जनपद था। इसकी राजधानी मिथिला (जनकपुर) थी। किसी-किसी कोश में विदेह तथा मिथिला को पर्याय के रूप में भी लिखा है। परन्तु यह समुचित नहीं जान पड़ता। "जनो विदेहेषु मिथिलामभिप्रविश्यैव"—दशकुमार ३। राज्य का नाम विदेह जान पड़ता है। राजा जनक के समय भी विदेह जनपद की राजधानी मिथिला ही थी। जानकी का जन्म सीतामढ़ी में हुआ था—रामायण ३–४। मोतिहारी से बारह मील पूर्व सीता कुण्ड है। विवाह के समय सीता ने इसी कुण्ड में स्नान किया था। प्राचीनकाल में इस जनपद में कुछ भाग नेपाल का तथा कुछ वृजि का भी सम्मिलित था। वर्तमान काल में इस जनपद को स्थानीय जन मिथिला ही कहते हैं। प्राचीनकाल में यहाँ के व्यापारी समस्त भारत में प्रसिद्ध थे। अमरकोश में व्यापारी का एक पर्याय वैदेहक भी लिखा है—"वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वणिजो वणिक्" अमर २।९।७८।

तीरभुक्ति—इसका शब्दार्थ तट के समीप की अधिकृत भूमि होता है। इस प्रदेश में गण्डक का तटवर्त्ती प्रदेश सम्मिलित था। किसी समय यहाँ कोई बड़ा प्रतापी राजा हो चुका है जिसके नाम पर इस प्रदेश में एक संवत्

प्रचलित है इसी से उसका महत्त्व प्रकट होता है। त्रिकाण्ड-शेष के अनुसार तीरभुक्ति विदेह का पर्याय प्रतीत होता है—"तीरभुक्तिस्तु लिच्छविः" त्रिकाण्डशेष भूमिवर्ग ८। परन्तु अन्यत्र कहीं भी यह विदेह के पर्याय के रूप में नहीं प्रयुक्त हुआ है। आजकल मैथिल जन अपने देश को मिथिला तथा तिरहुत दोनों नाम से पुकारते हैं, तिरहुत तीरभुक्ति का ही विकृत रूप है। कुछ विद्वानों की धारणा है कि तिरहुत का दक्षिणी भाग विदेह में सम्मिलित नहीं था। बहुत सम्भव है यह प्रदेश किसी समय विदेह राजाओं के अधिकार में रहा हो इसी कारण पुरुषोत्तम ने दोनों को एक ही राज्य माना हो। जेनरल कनिंघम ने लिखा है कि तिब्बत तथा लद्दाख (ललाटाक्ष) के राजा अपनी उत्पत्ति लिच्छविवंश से मानते हैं। नेपाल के नेवर जन भी अपना उद्गम निच्छवि (लिच्छवि) वंश से ही कहते हैं।

अङ्ग—सोलह महाजनपदों में अङ्ग नाम का एक जनपद था। दरभङ्गा के पूर्व भागलपुर के उत्तर से तथा पूर्णियाँ के पश्चिम कौशिकी (कोसी) नदी बहती है तथा पूर्णियाँ जिले में ही मानहारि के दक्षिण-पूर्व गंगा में मिली है। प्राचीनकाल में यह पूर्नियाँ नगर के बिलकुल समीप बहती थी। परन्तु आजकल पश्चिम की ओर हटती जा रही है। चार नदियों की सम्मिलित धारा का नाम कौशिकी है। प्रायः सभी नदियों का उद्गम तिब्बत ही है। महाभारत में इसके तट पर कौशिकी कच्छ (कौशिकी के तट का प्रदेश) का होना लिखा है। कौशिकी कच्छ पर राजा विराट का अधिकार था। परन्तु यह विराट महाभारत काल का विराट नहीं प्रतीत होता। सम्भव है इस नाम का कोई दूसरा राजा हुआ हो। कौशिकी के तट पर ही ऋष्यश्रृंग का आश्रम था। कहा जाता है कि चम्पा के राजा लोमपाद प्राकृतिक उपद्रवों की शान्ति के लिये ऋष्यश्रृंग को अपने राज्य में ले गया था। इनका आश्रम आज भी यहाँ विद्यमान है, परन्तु कौशिकी से पर्याप्त दूरी पर है। सम्भव है नदी वहाँ से क्रमशः हटती गयी है।

उपर्युक्त कौशिकी कच्छ के दक्षिण गङ्गा के बायें तट पर अङ्ग जनपद स्थित था। इसकी राजधानी का नाम चम्पा था। इसके अनेक नाम मिलते हैं—अंगपुरी, लोमदापुरी, कर्णपुरी, मालिनी आदि—"चम्पा तु मालिनी, लोमपाद कर्णयोः पूः"—हेमचन्द्र ४।४२। आजकल चम्पा के स्थान पर भागलपुर स्थित है। श्युआन् चुआँग ने लिखा है कि चम्पा गङ्गा तट पर चट्टान वाले द्वीप से चौबीस मील पश्चिम स्थित थी। जेनरल कनिंघम ने सिद्ध किया है कि पाथर घारा के सामने वाली पहाड़ी ही चट्टान वाला द्वीप है। यह भागलपुर से लगभग चौबीस मील की दूरी पर स्थित है। यहाँ चम्पापुर तथा चम्पानगर नाम का गाँव अब भी विद्यमान है। संस्कृत साहित्य के अनुसार चम्पापुरी मिथिला के पूर्व गङ्गा के तट पर स्थित थी। सम्भव है चम्पा नाम के फूल की अधिकता के कारण इसका नाम चम्पा पड़ा हो।

महाभारत में कौशिकी नदी के समीप एक चम्पक वन की चर्चा मिलती है—"कौशिकीं तत्र गच्छेत महापापप्रणाशिनीम्। ततो गच्छेत राजेन्द्र चम्पकारण्यमुत्तमम्—महाभारत ३।८४।१३२।१३३। रघुवंश में अंग जनपद में हाथियों की चर्चा मिलती है। परन्तु आजकल वहाँ हाथी बिलकुल नहीं पाये जाते। सम्भव है प्राचीनकाल में पाये जाते रहे हों।

मोदागिरि—भागलपुर तथा पटना के मध्य में मुँगेर नाम का एक नगर है। इसी जिले में सीताकुण्ड तथा ऋषिकुण्ड नाम के दो तप्त झरने हैं। सीताकुण्ड मुँगेर से पाँच मील तथा ऋषिकुण्ड मुँगेर से ग्यारह मील पूर्व है। इस प्रदेश की चर्चा संस्कृत साहित्य में नहीं मिलती। सम्भव है यह प्रदेश अङ्ग तथा मगध के अधिकार में रहा हो। इस कारण इसका पृथक् उल्लेख नहीं हुआ। ईसवीय सन् १७८० में मुँगेर में एक ताम्रपत्र मिला था। प्रिंसप तथा अन्य विद्वानों ने उसे पढ़ा था। उससे ज्ञात होता है कि मुँगेर किसी समय पाटलिपुत्र के राजा देवपाल के अधिकार में था। वहीं एक दूसरा भी ताम्रपत्र मिला था, उसमें मुद्गगिरि लिखा था। डा० बचनन हैमिल्टन ने उसे पढ़ा था। उसका शुद्ध रूप मोदागिरि समझा गया। केवल महाभारत के सभापर्व में मोदागिरि की चर्चा है। उसमें उसकी स्थिति पूर्व भारत के उपर्युक्त दोनों जिलों के मध्य में बतलायी गयी है। जिस समय श्युआन् चुआँग ने उसको देखा था उस समय वहाँ की पहाड़ी से ज्वालामुखी का

धूम्राँ प्रचुर मात्रा में निकल रहा था। उसने लिखा है कि उस धूएँ से सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रकाश मन्द पड़ गया था।

पुण्ड्र—कौशिकी कच्छ के पूर्व पुण्ड्र देश था। उसको गौड तथा वरेन्द्र भी कहते थे। "पुण्ड्राः स्युर्वरेन्द्रो गौडनीवृति त्रीणि गौडदेशस्य"—त्रिकाण्डशेष। गौड तथा पुण्ड्र देश के सम्बन्ध में राजतरङ्गिणी में लिखा है कि पुण्ड्रवर्द्धन नगर पुण्ड्र देश अथवा वहाँ के राजा की राजधानी था। पुण्ड्र अथवा पौण्ड्र एक प्रकार का मोटा गन्ना होता है जिसको उत्तर प्रदेश की बोलचाल की भाषा में पौंढा कहते हैं—"इक्षुस्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तारादयः"—अमर २।४।१६३। पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः। इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि।" भावप्रकाश। उक्त प्रदेश में इस प्रकार के गन्ने की खेती प्रचुरता से की जाती है। अतः सम्भव है कि पौंढे की अधिक उपज के कारण इस देश का नाम पुण्ड्र पड़ गया हो। गौड शब्द का भी यही अर्थ होता है—जहाँ गुड़ की अधिकता हो। अतः गौड तथा पुण्ड्र दोनों ही नाम एक देश के मालूम पड़ते हैं। इसी कारण भारत के प्राचीन जनपदों की नामावली में गौड का उल्लेख नहीं मिलता—"अङ्गो वङ्गः कलिङ्गश्च पुण्ड्ः सुह्मश्च ते सुताः। तेषां देशाः समाख्याताः स्वनाम प्रथिता भुवि"॥ महाभारत १–१०२-५३।

संस्कृत साहित्य में गौड देश के लिए वरेन्द्र शब्द का प्रयोग नहीं मिलता, परन्तु उत्तरी बङ्गाल में आज भी वरेन्द्र अथवा वारेन्द्र ब्राह्मण पाये जाते हैं तथा वहाँ वरेन्द्र नाम की पहाड़ी के कुछ चिन्ह भी उपलब्ध होते हैं। यहाँ वरेन्द्र जाति के शूद्र भी मिलते हैं। ये अधिकतर मालदह जिले में रहते हैं। इससे ज्ञात होता है कि किसी समय इस प्रदेश को वरेन्द्र अवश्य कहते थे तथा वहाँ के निवासी वरेन्द्र कहे जाते थे।

पुण्ड्रवर्धन की राजधानी चिरकाल तक गौडपुरी थी जिसको लक्ष्मणावती भी कहते थे। उसके कुछ अवशेष भागीरथी के तट पर स्थित गौड नाम के स्थान पर उपलब्ध हुये हैं। गौड नाम का स्थान मालदह के समीप ही है। पाणिनि का गौडपुर भी यही है। किसी समय इसकी राजधानी का नाम पुण्ड्रवर्धन था। कथासरित्सागर १९–१६–२१ में इसकी चर्चा मिलती है। हरिवंश पुराण, विष्णुपुराण तथा श्रीमद्भागवत से ज्ञात होता है कि यहाँ के राजा का नाम पुण्ड्रक था उसी को वासुदेव भी कहते थे। श्रीकृष्ण बनने की लालसा से उसने उनसे युद्ध किया और मारा गया। इस नगर के समीप किसी नदी की चर्चा न होने से अनुमान किया जाता है कि यह देश के मध्य में कहीं रहा होगा। आधुनिक पण्डुआ मालदह जिले के मध्य में स्थित है। "इसका नाम भी पुण्ड्रवर्धन से मिलता जुलता है। सम्भव है प्राचीन पुण्ड्रवर्धन यही रहा हो। किसी समय बङ्गाल के बोगरे जिले का महास्थान गढ़ भी पुण्ड्रवर्धन की राजधानी था। वहाँ अशोक के पूर्व का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है। उसमें वहाँ के शासक ने पुण्ड्रवर्धन के महामात्य को कुछ आज्ञा दी है। पाणिनि के ६।२।८९ सूत्र का उदाहरणं महानगर सम्भवतः यही महास्थान गढ़ की ओर संकेत करता है।

सुह्म—प्राचीन काल में राढदेश सुह्म भी कहा जाता था—"राढास्तु सुह्माः" वैजयन्ती भूमि काण्ड १३०। वर्तमान हुगली, मिदनापुर तथा बर्दवान (बर्धमान) आदि जिले सुह्म जनपद में सम्मिलित थे। उस जनपद के जन सुह्म कहे जाते थे। इस समय इस प्रदेश में कुछ ऐसे जन रहते हैं जो अपने को सोम कहते हैं। सम्भवतः प्राचीन काल के सुह्म ये ही हैं। इस जनपद की राजधानी का नाम ताम्रलिप्ति (तमलुक) था। यह गंगासागर के समीप स्थित है। रघुवंश में उल्लेख है कि सुह्म जनपद के निवासियों ने रघु के सामने बेत की वृत्ति धारण करके, अर्थात् नम्र होकर बिना युद्ध किये ही उनकी अधीनता स्वीकार कर अपनी रक्षा की थी। रघुवंश ४।३५

प्राग्ज्योतिष—पुण्ड्र जनपद के पूर्वोत्तर प्राग्ज्योतिष अथवा कामरूप नाम का जनपद था। इसकी गणना महाभारत में भारत के प्राच्य प्रदेश में की गयी है। यह जनपद ब्रह्मपुत्र के दोनों ओर विस्तृत है। लौहित्य नाम की ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी पूर्व से आकर उसमें मिली है। उसके संगम पर महाभारत के तीर्थ-यात्रा-प्रकरण के वनपर्व में उल्लिखित संवेद्या (सदिया) नाम का नगर स्थित है। ब्रह्मपुत्र के बायें तट पर श्रीहट्ट (सिलहट) नाम का नगर है। यहीं कामाक्षा देवी का भारतविख्यात पीठ विद्यमान है। ब्रह्मपुत्र के दाहिने तट की ओर सूरमा नदी की दून (द्रोणी) है।

सूरमस—पाणिनि ने ४।१।१७० में इसका नाम सूरमस लिखा है। भारत के इतिहास में कामरूप के मध्य देश के साथ सम्बन्ध की चर्चा अनेक स्थलों पर मिलती है। कामरूप का राजा भगदत्त महाभारत का एक विशिष्ट व्यक्ति था। सभापर्व में लिखा है कि उसने किरात, चीन तथा समुद्रतटवासियों को साथ लेकर आठ दिन तक अर्जुन से युद्ध किया था। सभापर्व २६।७, उद्योग पर्व १८।१५, १६। उक्त उद्धरण से ज्ञात होता है कि उसका राज्य उत्तर की ओर हिमालय तक तथा पूर्व की ओर चीन की सीमा तक विस्तृत था। यह तथ्य राजसूय यज्ञ में युधिष्ठिर को दिये गये उसके उपहारों के वर्णन से भी पुष्ट होता है। उसमें उसने उत्तम घोड़े, रत्नजटित आभूषण, हाथी दाँत की मूठ की तलवारें आदि वस्तुएँ दी थीं, सभापर्व ५१–१३, १६। आसाम में उत्तम घोड़े नहीं होते, प्रत्युत भूटान में उत्तम जाति के टट्टू पाये जाये हैं। आसाम के निचले भाग में हाथी भी नहीं पाये जाते, बल्कि डूअर (आसाम के ऊपरी जंगलों) में पाये जाते हैं। कालिदास ने भी हाथियों की चर्चा की है—"तमीशः कामरूपाणामत्याखण्डलविक्रमम्। भेजे भिन्नकटैर्नागैरन्यानुपरुरोध यैः॥" रघु० ४।८३।

कालिदास ने इस जनपद में कालागुरु की भी चर्चा की है—"चकम्पे तीर्णलौहित्ये तस्मिन् प्राग्ज्योतिषेश्वरः। तद्गजालानतांप्राप्तैः सहकालागुरुद्रुमैः" रघुवंश ४।८१ डा० राक्सवर्ग ने लिखा है कि आसाम के पूर्वी भाग में कालागुरु के वृक्ष प्रचुरता से पाये जाते हैं। सातवें शतक के बाणभट्ट ने हर्षचरित में हर्षवर्धन के मित्र कुमार भास्कर वर्मा का उल्लेख विस्तारपूर्वक किया है। वह उस समय वहाँ का शासक था। कामरूप के एक नगर का नाम मणिपुर था। आज भी वह उसी नाम से प्रसिद्ध है। महाभारत में वहाँ की राजकुमारी उलूपी के साथ अर्जुन के विवाह की कथा उल्लिखित है। इस समय भी वहाँ के क्षत्रिय अपना सम्बन्ध अर्जुन पुत्र बभ्रुवाहन से कहते हैं।

किसी समय कामरूप की राजधानी लौहित्य के तट पर स्थित प्राग्ज्योतिष थी। वर्तमान गौहाटी का प्राचीन नाम प्राग् ज्योतिष कहा जाता है। नदी के दूसरे तट पर अश्वकान्त नाम की एक पहाड़ी है। श्री कृष्ण ने यहीं नरकासुर का वध किया था। इस जनपद का दूसरा प्रसिद्ध नगर रङ्गपुर था। कहा जाता है कि यह राजा भगदत्त का ग्राम्य निवास स्थान था। यहाँ कुछ अवशेष अब भी विद्यमान है, परन्तु किसी ने उनका अध्ययन नहीं किया।

त्रिपुर—मणिपुर के दक्षिण-पश्चिम त्रिपुर (तिपरा) है। इस जनपद में किसी समय चट्टग्राम (चटगाँव) सम्मिलित था। कुछ लोग इस तिपरा को शिव से जलाये गये असुरों के त्रिपुर को समझते हैं। परन्तु अधिकतर विद्वानों का मत है कि असुरों का त्रिपुर मध्यभारत में है, उसकी चर्चा आगे की जायगी।

ब्रह्मदेश—कामरूप के पूर्व ब्रह्मदेश है, जिसका दूसरा नाम सुवर्णभूमि अथवा सुवर्णद्वीप था। इस जनपद में इरावती नदी बहती है। इसको इरावदी भी कहते हैं। आजकल इस जनपद का प्रचलित नाम बर्मा है। यहाँ बौद्धधर्म का बड़ा प्रभाव था। भिन्न-भिन्न काल में इस जनपद की तीन राजधानियाँ रह चुकी हैं। उत्तरी बर्मा की राजधानी पगान का प्राचीन नाम अरिमर्दनपुर, मध्यवर्ती बर्मा की राजधानी प्रोम का नाम श्रीक्षेत्र तथा दक्षिणी बर्मा की राजधानी पीगू का नाम हंसवती था। बर्मा तथा कलिङ्ग के मध्य में स्थित भारत महासागर के भाग का नाम आजकल बंगाल की खाड़ी है। प्राचीन काल में उसको महोदधि कहते थे—"प्राप तालीवनश्याममुपकण्ठं महोदधेः" रघुवंश ४।३४।

बङ्ग—त्रिपुर के पश्चिम बङ्ग अथवा पूर्वी बङ्गाल है। कुछ लोग बङ्ग को गौड का पर्याय समझते थे, परन्तु एक प्राचीन ग्रन्थ माधवचम्पू में दोनों जनपदों का स्पष्टतया पृथक्-पृथक् उल्लेख है। उसमें लिखा है कि बङ्ग देश में पद्मा तथा ब्रह्मपुत्र नदियाँ बहती हैं—"अस्ति तावद् बङ्गनामा देशः, यस्मिन् पारावारसदृश्यः पद्मावतीप्रभृतयः तरङ्गिण्यः समुल्लसन्ति। यत्र च पावनो ब्रह्मपुत्रनामा महानदो मज्जज्जन्तून्पावयति। तस्यायमीश्वरः प्रभूतसेनात्मजो वीरसेनाह्वयः। बङ्गालक्षोणिपालस्त्रिभुवनजनतागीतकीर्तिप्ररोहः—"माधवचम्पू २६।" "अथ गौडराजमुपस्थितां कलावतीं प्रतिवाग् भारती सादरं कथयतिस्म" ३। ब्रह्मपुत्र का प्रधान स्रोत पहिले मैमनसिंह से होकर बहता था। बङ्गाल शब्द का प्रचार सर्व प्रथम उक्त चम्पू के आधार पर ही हुआ था। बङ्ग के सम्बन्ध में कालिदास गङ्गामुख की चर्चा

करते हैं—"वङ्गानुत्खाय तरसा नेतासौ साधनोद्यतान्। निचखान जयस्तम्भान् गङ्गास्रोतोन्तरेषु सः ॥" रघुवंश ४।३६। इस जनपद में समुद्र तट भी सम्मिलित था। भीष्मपर्व में लिखा है कि वङ्ग का राजा हाथियों को लेकर महाभारत युद्ध में गया था। भीष्म पर्व अ० ९०। हाथी मैदान में नहीं पाये जाते, प्रत्युत तिपरा तथा गैरो की पहाड़ियों में पाये जाते हैं। इससे ज्ञात होता है कि किसी समय वङ्ग जनपद वहाँ तक विस्तृत था।

वङ्ग राँगे का एक पर्याय भी है—"रङ्गवङ्गे" अमर ९-१०६। यह बङ्गाल में कहीं नहीं पाया जाता। प्रत्युत मलाया, पेगू तथा ईस्ट इण्डीज में प्रचुरता से पाया जाता है। अतः यह अनुमान किया जाता है कि राँगे का परिचय भारतीयों को वङ्ग अथवा पूर्वी बङ्गाल के जनों द्वारा सर्व प्रथम हुआ था। प्राचीन काल में यह जनपद समुद्री व्यापार का मुख्य केन्द्र भी रहा होगा; क्योंकि सुश्रुत जैसे प्राचीन लेखकों ने राँगे के अर्थ में वङ्ग शब्द का प्रयोग किया है।

प्राचीन काल में वङ्ग का पर्याय समतट (मैदान) भी मिलता है। वाराही संहिता १४।६ में ओड्र (उड़ीसा) तथा प्राग्ज्योतिष (कामरूप) के साथ ही वङ्ग जनपद की चर्चा की गयी है; परन्तु उसकी स्थिति की ओर सङ्केत नहीं किया गया है। श्युआन् चुआँग ने कामरूप के दक्षिण समतट का उल्लेख किया है। जिस प्रकार गङ्गा दोआब के (कुरुपांचाल) का एक नाम समस्थली भी था उसी प्रकार सम्भव है कि वङ्ग का भी दूसरा नाम समतट रहा हो। नवनगर पा० सू० ६।२।८९ का उदाहरण नवनगर किसी समय वङ्ग की राजधानी था। इसका एक नाम नवद्वीप भी था। आजकल इसको नदिया कहते हैं।

**भौरिकिविध**—इस जनपद का नाम प्राचीन साहित्य में नहीं मिलता परन्तु, पाणिनिसूत्र ४।२।५४ की व्याख्या में भौरिकि जन के देश का नाम भौरिकिविध या भौरिकिभक्त लिखा है। वैजयन्ती कोश पृष्ठ ३७ के आधार पर बंगाल का समतट प्रदेश ( दक्षिणी बंगाल ) प्राचीनकाल में उक्त नामों से पुकारा जाता था। समुद्रगुप्त के प्रयाग के स्तम्भलेख में भी समतट का उल्लेख है।

**रूपनारायण**— ताम्रलिप्ति ( तमलुक ) वर्तमान कोशी-नदी ( कौशिकी ) के तट पर स्थित है। वहाँ के निवासी उक्त नदी को रूपनारायण भी कहते हैं। कालिदास के आधार पर इसी का नाम कपिशा भी ज्ञात होता है—'स तीर्त्वा कपिशां सैन्यैर्बद्धद्विरदसेतुभिः। उत्कलादर्शितपथः कलिङ्गाभिमुखं ययौ ॥ रघु ४।३८।" इस नदी के तट पर काली का एक प्राचीन तथा प्रसिद्ध मन्दिर है। जिसकी चर्चा दण्डी ने की है—"अमुष्मिन्नायतेन विस्मृतविन्ध्यवासरागं वसन्त्या विन्ध्यवासिन्या" दशकुमार ४। रूपनारायण नदी हवड़ा तथा मिदनापुर जिलों की प्राकृतिक सीमा बनाती है। यह मानभूम के पहाड़ से निकल कर बाँकुड़ा, हुगली तथा मिदनापुर जिलों में होती हुई तमलुक के समीप हुगली से मिली है। अति प्राचीनकाल में तमलुक समुद्र के अति निकट था। समुद्री व्यापार में उसका महत्त्वपूर्ण स्थान था। यहाँ के व्यापारी ताम्रलिप्तक कहे जाते थे।

**ओड्र**—ताम्रलिप्ति के दक्षिण के जनपद का प्राचीन नाम ओड्र था। आजकल उसको उत्कल अथवा उड़ीसा कहते हैं।"ओड्रा उत्कलनामानः" त्रिकाण्डशेष भूमिवर्ग। यह जनपद कालिदास के समय उत्तर की ओर कपिशा ( कोसी ) तक विस्तृत था। महाभारत में विदेह तथा ताम्रलिप्ति के साथ ओड्र का भी उल्लेख है। मालूम पड़ता है कि किसी समय यह कलिङ्ग जनपद के अन्तर्गत था। उत्कल कलिङ्ग के उत्तर की ओर है इस जनपद में विरजाक्षेत्र, पुरुषोत्तम-क्षेत्र तथा एकाम्रक्षेत्र हैं। उत्तरकलिङ्ग अथवा उत्कलिङ्ग शब्दों का ही संक्षिप्त रूप उत्कल मालूम पड़ता है। कालिदास के समय उत्कल कलिङ्ग से पृथक् हो गया था, क्योंकि उन्होंने दोनों जनपदों का पृथक् उल्लेख किया है। महाभारत में भी सहदेव के दिग्विजय की सूची में दोनों जनपदों के पृथक्-पृथक् नाम आये हैं। किराता बर्बराः सिद्धा विदेहास्ताम्रलिप्तकाः। "ओड्रा म्लेच्छाः ससैरिन्ध्राः पार्वतीयाश्च मारिषा॥" भीष्मपर्व ९।५७। "पाण्ड्यांश्च द्रविडांश्चैव सहितांश्चोड्रकेरलैः। आन्ध्रांस्तालवनांश्चैव कलिङ्गानुष्ट्रकर्णिकान् ॥" सभापर्व ३१-७१।

वर्तमान समय में इस जनपद का प्रधान नगर कटक दशवीं शताब्दी में नृपकेसरी द्वारा बसाया गया था—हण्टर का बङ्गाल खण्ड १७ पृ० १८४। प्राचीनकाल में इसका नाम पद्मावती था। माधवचम्पू के आधार पर यह मुकुन्दसेनदेव की राजधानी थी—"अस्ति तावदुत्कलाधिराजो

मुकुन्दसेननामा नृपतिकुलमुकुटमणिस्तस्य तनुजा त्रिभुवन-कमनीयमूर्तिः कलावतीति विख्याता सम्प्रति पुनः पद्मावतीं प्राप्तवती।" माधवचम्पू २। प्राचीनकाल में बालसर (बालेश्वर) जिले की सीमा पर स्थित जाजपुर (यज्ञपुर) तथा भुवनेश्वर के विख्यात मन्दिर का नगर जो कि पुरी जिले में हैं, इसकी राजधानी थे। कथासरित्सागर में पूर्वी सागर के तट पर स्थित कर्कोटक नाम के एक नगर का उल्लेख मिलता है—"अस्ति पूर्वाम्बुधेः पारेपुरं कर्कोटकाभिधम्" कथा स० सा० १८-२३३ २३४। परन्तु उक्त नगर की पहिचान अभी तक न हो सकी।

इस जनपद का दूसरा प्रधान नगर पुरी है। यह कटक के दक्षिण है। यहाँ जगन्नाथ का प्रख्यात मन्दिर है। यह मन्दिर बहुत प्राचीन नहीं जान पड़ता, क्योंकि महाभारत तथा पुराणों में इसकी चर्चा नहीं मिलती, केवल स्कन्द पुराण में इसका वर्णन मिलता है।

ओड्र अथवा जपा अड़हुल के फूल को कहते हैं—"ओड्र-पुष्पम् जपापुष्पम्" अमर २-४-२६। यह कई प्रकार का होता है। डा० राक्स वर्ग ने लिखा है कि यह पुष्प अधिकतर मध्य भारत में पाया जाता है। सम्भव है प्राचीनकाल में यह पुष्प ओड्र जनपद में अधिक उत्पन्न होता रहा हो, उसी के नाम पर जनपद का नाम ओड्र पड़ गया हो।

कलिङ्ग—ओड्र के दक्षिण कलिङ्ग जनपद है। इस जनपद में महानदी, वैतरणी, ब्राह्मणी तथा ऋषिकुल्या नाम की नदियाँ बहती हैं। वैतरणी के दक्षिण तथा गोदावरी के उत्तर का प्रदेश इस जनपद में सम्मिलित था—"एते कलिङ्गा कौन्तेय यत्र वैतरणी नदी" ३-११४-४। कलिङ्ग की उत्तरी सीमा वैतरणी तथा दक्षिणी सीमा गोदावरी थी। किसी समय गोदावरी का नदी-मुख आन्ध्रनरेश के अधिकार में था—एक बार कलिङ्ग राज अपने अन्तःपुर के साथ सागर तट पर भ्रमणार्थ गया था। वहाँ उसके पड़ोसी आन्ध्रनरेश ने उसको पकड़ लिया था—"कलिङ्गनगरस्य ..................कलिङ्गराजः सहाङ्गनाजनेन.................. सागरतीरकानने तत्र रन्ध्रे आन्ध्रनाथेन जयसिंहेन........... द्रागागत्य.....................अगृह्य तसकलत्रः—दशकुमार ७। कलिङ्ग जनपद की राजधानी ऋषिकुल्या नदी के मोहाने पर स्थित कलिङ्ग नगर थी। वहाँ से ताम्रलिप्ति (तामलुक), सिंहल (लंका), ब्रह्मद्वीप, सुवर्णद्वीप (सुमात्रा) तथा यवद्वीप (जावा) आदि स्थानों को समुद्री मार्ग जाते थे। कलिङ्ग जन बड़े शूरवीर होते थे उन्होंने अनेक द्वीपों में जाकर अपना राज्य स्थापित किया था। अब भी उस जनपद के रहने वाले जन अपने को क्लिग (कलिङ्ग का विकृतरूप) कहते हैं।

भारतीय जनपदों में कलिङ्ग का स्थान महत्त्वपूर्ण था। प्राचीन काल में भारत में मागध तथा कालिङ्ग दो परिमाण प्रचलित थे। कलिङ्ग जनपद के दक्षिणी भाग में महेन्द्र पर्वत (पूर्वीघाट, महेन्द्रमलै) था इसी कारण इस जनपद का राजा महेन्द्रनाथ कहा जाता था।

आन्ध्र महेन्द्र पर्वत के दक्षिण आन्ध्र जनपद था। यह गोदावरी तथा कृष्णा नदियों के नदी-मुख के मध्य में स्थित अतीव उपजाऊ प्रदेश था। यहाँ के निवासी बड़े साहसी होते थे। इनकी जीविका का प्रधान साधन व्यापार था। किसी समय आन्ध्र के राजा सातवाहनो का राज्य सह्याद्रि (पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग) से लेकर महेन्द्र पर्वत तक विस्तृत रहा। पश्चिम में नासिक से लेकर पूर्व में अमरावती, नागार्जुनी तथा कोण्डा तक का प्रदेश उनके राज्य में सम्मिलित था। उक्त जनपद की भाषा तेलुगू थी।

श्रीशैल—इस जनपद में श्रीशैल नाम का एक पर्वत है। महाभारत से ज्ञात होता है कि यह पर्वत महेन्द्र तथा देव-ह्रद के मध्य में स्थित हैं—"ततो महेन्द्रमासाद्य जामदग्न्य-निषेवितम्। रामतीर्थे नरः स्नात्वा वाजपेयफलं लभेत्। श्रीपर्वतमासाद्य नदीतीरमुपस्पृशेत्........................तत्र देव ह्रदेस्नात्वा शुचिः प्रयतमानसः॥" वनपर्व ८५-१६-२०। मद्रास प्रदेश के कृष्णा जिले की कृष्णा नदी के तट पर यह पर्वत है। इस पर्वत पर शिव के द्वादशज्योतिर्लिङ्गों में से मल्लिकार्जुन नाम का एक शिवलिङ्ग है। कथासरित्सागर १९-२३,२४ से ज्ञात होता है कि कृष्णा तथा पलार के मध्य में समुद्र तटवर्ती वनों तथा पर्वतों पर असभ्य जन रहते थे। महाभारत के दक्षिणी यवन इसी जाति के जन मालूम पड़ते हैं।

द्रविड—उपरिलिखित वन्य प्रदेश के दक्षिण का देश द्रविड जनपद कहलाता था। इस जनपद की प्रधान नदियाँ पिनाकिनी, कावेरी तथा ताम्रपर्णी हैं। पिनाकिनी नदी के उत्तर इतिहास प्रसिद्ध पल्लव जन रहते थे। इस जनपद

की राजधानी काञ्ची थी—"द्रविडमण्डलमौलिमाणिक्यस्तवकमिदञ्च काञ्चीपुरनामधेयं सायतनं मीनकेतनस्य" अनर्घराघव ७। "अस्ति द्रविणेषु काञ्चीनाम नगरी" दशकुमार ६। मद्रासके दक्षिण-पश्चिम वेगमती नदी के तट पर स्थित आधुनिक काञ्जीवरम् का प्राचीन नाम काञ्ची अथवा काञ्चीपुरी था। यह अपने सुन्दर मन्दिरों के लिये विख्यात है। वसन्ततिलक के भाण के कथानक का स्थान यही नगर है। इस भाण का एक श्लोक इस नगर को भारत के नगरों में प्रथम स्थान देता है—"नारीषु रम्भा नगरेषु काञ्ची काव्येषु माघः कविकालिदासः।" इस जनपद में किसी समय गोदावरी के दक्षिण का कारोमण्डल सम्मिलित था। महाभारत ३-११८-३४ में लिखा है कि पाण्डव लोग गोदावरी को पारकर इस जनपद में प्रविष्ट हुए थे। इस जनपद की भाषा तामिल है।

चोल—चोल जनपद कावेरी तथा पिनाकिनी के मध्य में स्थित था। महाभारत के भीष्मपर्व तथा अन्य पुराणों में उल्लेख है कि—"तेषां परे जनपदा दक्षिणापथवासिनः। पाण्ड्याश्च केरलाश्चैव चोला कुल्यास्तथैव च॥" मत्स्य पु० ११३।४६। सभापर्व में लिखा है कि चोल तथा पाण्ड्य के राजा युधिष्ठिर के लिये उपहार में मलय तथा दर्दुर पहाड़ों से चन्दन, अगर, बहुमूल्य रत्न तथा मलमल ले गये थे—"मलया दर्दुराश्चैव चन्दनागुरुसंचयान्। मणिरत्नानि भास्वन्ति काञ्चनं सूक्ष्मवस्त्रकम्। चोलपाण्ड्यावपि द्वारौ न लेभाते ह्युपस्थितौ॥"—सभापर्व ५३-३४, ३५। मलय पर्वत की ही एक छोटी शृंखला का नाम दर्दुर है। पर्जिटर की धारणा है कि नील गिरि अथवा पलनी पर्वत का नाम दर्दुर था। कावेरी के बीच पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग, जिसको आजकल ट्रावन्कोर पर्वत कहते हैं, मलय पर्वत का पश्चिमी भाग है। कथासरित्सागर १९-९५ में कावेरी नदी के तट पर चोल जनपद की स्थिति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है—"उल्लंघ्यमाना कावेरी तेन संमदकारिणा। चोलकेश्वरकीर्तिश्च कालुष्यं ययतुः समम्।" बाद में चलकर इस जनपद का नाम कर्नाटक पड़ गया। यहाँ कन्नड़ी भाषा बोली जाती है।

चोल जनपद के लिये कर्नाटक का प्रयोग बाल रामायण में मिलता है। उसमें लिखा है कि कावेरी का जल कार्नाटकी स्त्रियों के स्नान करने से अपनी दिशा को छोड़ देता है—"कावेरी कवरीव भामिनिभुवो देव्याः पुरो दृश्यताम्, पूगैर्नागलताश्रितैरुपदिशत्याश्लेषविद्यामिव। कार्नाटीजनमज्जनेषु जघनैर्यस्याः पयः प्लावितम्, पीत्वा नाभिगुहाभिरात्मरुचिभिः प्राचीं दिशं नीयते॥ वा० रा० १०-७२। प्राचीनकाल में इसकी राजधानी कौन थी—ज्ञात नहीं, परन्तु मध्यकाल में श्रीरङ्गपत्तन थी। पन्द्रहवें शतक में श्री चैतन्यदेव इस स्थान पर गये थे।

पाण्ड्य—चोल जनपद के दक्षिण-पश्चिम अर्थात् भारत के बिलकुल दक्षिण पाण्ड्य देश था। वा० रा० के आधार पर मालूम होता है कि इस जनपद में मलय पर्वत तथा ताम्रपर्णी नदी थी—"अये! कथमसौ पाण्ड्यः—यत्कीर्तिमलयाद्रिचन्दनलताकुञ्जे भुजङ्गाङ्गनाः श्रुत्वा तच्छबरीजनात् फणिपतेर्गायन्ति संगीतिषु। पाण्ड्यः सोऽयमुदन्वदन्वयवृषा किञ्चान्यदस्य स्वयं दातुं मौक्तिककामधेनुरसमा सा ताम्रपर्णी सरित्"॥ वा० रा० ३-३१। ये शबर नीलगिरि की घाटियों में रहने वाले तूद जान पड़ते हैं। कालिदास के समय यह जनपद कावेरी से लेकर भारत महासागर तक विस्तृत था। उन्होंने इसकी राजधानी का नाम उरगपुर लिखा है—"अथोरगाख्यस्य पुरस्य नाथम्" रघु—० ६-५९।

आधुनिक नेगपत्तम (नाग पत्तन) का प्राचीन नाम उरगपुर था। यह मद्रास के दक्षिण १६० मील पर स्थित है। इस जनपद का दूसरा नगर मदुरा (मधुरा) है। इसको राजा कुलशेखर ने बसाया था। भारत का प्रसिद्ध रामेश्वर तीर्थ इसी जनपद में है। प्राचीन साहित्य का गोकर्ण भी यही मालूम पड़ता है—"अपरोधसि दक्षिणोदधेः श्रितगोकर्णनिकेतमीश्वरम्" रघु ८।३३। दोनों स्थान दक्षिणी सागर के तट पर हैं। तथा दोनों स्थानों पर शिवलिङ्ग भी हैं। लङ्का जाने वाले जन यहीं से जहाज द्वारा अपनी यात्रा प्रारम्भ करते हैं।

रामायण से ज्ञात होता है कि श्रीरामचन्द्र ने यहीं सेतु बनवाकर समुद्र पार जाकर लङ्का पर आक्रमण किया था। आजकल यहाँ समुद्र के भीतर दिखाई देनेवाली चट्टानों को लोग श्रीराम द्वारा बनवाया गया सेतु कहते हैं। उसी को आदम का पुल भी कहते हैं। रामायण में इसका नाम

नलसेतु लिखा है—"यावत् स्थास्यन्ति गिरयो यावत् स्थास्यति सागरः। नलसेतुरिति ख्यातस्तावच्च स्थास्यति ध्रुवम्।" रामायण ६–१०८–१६। आजकल इसका प्रचलित नाम 'सेतुवन्ध' ही है। सेतुवन्ध के आगे सिंहल द्वीप है साधारणतया लोग इसी को रामायण की लंका मानते हैं। यहाँ रोहण पर्वत अथवा आदम की चोटी है—"पश्यस्यग्रे जलधिपरिखं मण्डलं सिंहलानां चित्रोत्तसं मणिमयभुवः रोहणेना चलेन। दूर्वाकाण्डच्छविपु चतुरं मण्डनं यद्वधूनां गात्रेष्वम्भो भवति गमितं रत्नतां शुक्तिगर्भैः। वा० रा० १०–४८।

**केरल**—मलय पर्वत के पश्चिम भाग में केरल देश था जिस भाग में आजकल मलावार, कोचीन तथा ट्रावन्कोर हैं, उसी प्रदेश को केरल कहते थे। इस जनपद के दक्षिण कन्याकुमारी अन्तरीप है। यहाँ समुद्र के तट पर पार्वती का परम मनोहर मन्दिर है। महाभारत में कन्याकुमारी की स्थिति पाण्डय जनपद में उल्लिखित है—"कुमार्यः कथिताः पुण्याः पाण्डयेष्वेव नरर्षभ" ३–८८–१४। महाभारत में ऋषभ पर्वत की स्थिति भी पाण्डय जनपद में ही लिखी है—"ऋषभं पर्वतं गत्वा पाण्डयेषु सुरपूजितम्। वाजपेयमवाप्नोति नाकपृष्ठे च मोदते॥ ३–८५–२१। सम्भव है प्राचीन काल में मलय की किसी शृंखला का नाम ऋषभ रहा हो।

**अश्मक**—पाण्डय जनपद के पश्चिम ट्रावन्कोर है। स्थानीय जन इसको चेरों का देश कहते हैं। परन्तु प्राचीन साहित्य ग्रन्थों में इसका उल्लेख नहीं मिलता। डा० कर्न ने बाराही संहिता के चेर्भ को चेर माना है। दशकुमार चरित में लिखा है कि अश्मक के राजा ने विदर्भ (वरार) के राजा के विरुद्ध सार्वजनिक विद्रोह कराने के लिये कुन्तल, कोङ्कण, वनवासी, मुरल, ऋचिक तथा नासिक के राजाओं को उत्तेजित किया था—"अथ वसन्तभानुर्भानुवर्माणं वनवास्यां व्यग्राह्यत अश्मकेन्द्रस्तु कुन्तलपतिमेकान्ते समभ्यधत्त प्रमत्त एष राजा कियत्यवज्ञा सोढव्या—तदावां सम्भूय मुरलेशं वीरसेनमृचीकेशमेकवीरं, कोङ्कणपतिं कुमारगुप्तं नासिक्यनागपालमुपजपावः" दशकुमार १४–१५। मुरल केरल देश का ही पर्याय है। अश्मक को छोड़कर इनकी स्थिति का निर्णय हो चुका है। अतः कुछ विद्वान् ट्रावन्कोर का ही प्राचीन नाम अश्मक मानते हैं। ब्रह्माण्ड पुराण में अश्मक की स्थिति दक्षिण भारत में लिखी है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध टीकाकार भट्टस्वामी ने महाराष्ट्र प्रान्त को अश्मक माना है।

पाणिनि सूत्र ४।१।१७३ में अश्मक का उल्लेख है। अश्मक जनपद गोदावरी के दक्षिण सह्याद्रि (पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग) पर्वतशृंखला तक विस्तृत था। अनेक प्रमाणों से ज्ञात होता है कि गोदावरी तट पर स्थित प्रतिष्ठान (पैठण) अश्मक जनपद की राजधानी था। महाभारत का अश्वक तथा बौद्ध साहित्य का अस्सक यही है।

**तमसा-मुरला**—भवभूति ने उत्तररामचरित में तमसा, मुरला नाम की दो नदियों का उल्लेख किया है। तमसा की चर्चा की जा चुकी है। मुरला केरल जनपद की प्रधान नदी है—"भयोत्सृष्टविभूषाणां तेन केरलयोषिताम्। अलकेषु चमूरेणुश्चूर्णप्रतिनिधीकृतः। मुरलामारुतोद्धूतमगमत् कैतकं रजः। तद्योधवरवाणानामयत्नपटवासताम्॥ रघु० ४।५५। मुरला नदी के समीप रहने के कारण वहाँ के जन मुरल कहे जाते थे। कथा सरित्सागर १९–९६ में चोलों के बाद ही मुरलों की चर्चा की गयी है। रघुवंश तथा कथासारित्सागर के उद्धरणों से ज्ञात होता है कि पश्चिमीघाट तथा कावेरी के उत्तर के सागरमध्यवर्ती भूमिखण्ड को केरल कहते थे। इसकी उत्तरी सीमा कोङ्कण का दक्षिणी भाग है। इस प्रदेश की मुख्य नदियाँ नेत्रवती, शरावती तथा काली हैं। नेत्रवती के तट पर मङ्गलोर, शरावती के तट पर हूनवर तथा काली नदी के तट पर सदाशिवगढ़ स्थित हैं। सम्भवतः काली नदी का ही प्राचीन नाम मुरला हो सकता है। भवभूति तथा कालिदास ने इसी का उल्लेख किया है।

कालिदास ने केरल देश में पुन्नाग वृक्षों की प्रचुरता का उल्लेख किया है। पुन्नाग को ही नागकेशर कहते हैं—"कटेषु करिणाम् पेतुः पुन्नागेभ्यः शिलीमुखाः" रघु० ४.५७। डा० राक्सवर्ग ने लिखा है कि पुन्नाग कारोमण्डल तट का प्रधान वृक्ष है। केरल जनपद को उग्र भी कहते थे। "उग्राः केरल पर्यायाः" हेम० ४।२७।

**कोङ्कण**—गोवा के उत्तर कुछ मील की दूरी पर स्थित दामन समुद्रतट का नाम आजकल भी कोङ्कण है। इस जनपद में तन्ना तथा रत्नागिरि के जिले सम्मिलित हैं।

हरिवंश पुराण ६५ अध्याय में इस जनपद के निवासियों का नाम मद्गुरु लिखा है परन्तु इस नाम करण का आधार नहीं मालूम पड़ता।

नासिक्य—उत्तरी कोङ्कण के पूर्व नासिक्य राज्य है। आजकल इसको नासिक कहते हैं। वाराही संहिता के १४ वें अध्याय में कर्नाटक तथा चोलों के साथ इस जनपद का भी नाम उल्लिखित है। यहाँ के जनों की चर्चा अन्य पुराणों में भी मिलती है। सम्भवतः इस जनपद में दौलतावाद (देवगिरि) सम्मिलित है। दौलतावाद राजा महादेव के महामात्य हेमाद्रि के कारण अधिक प्रसिद्ध हो गया है—"अस्ति शब्दगुणस्तोभः सोमवंशविभूषणम्। महादेव इति ख्यातो राजराजेव भूतले·······तस्यास्ति नाम हेमाद्रिः सर्वस्वीकरणी प्रभुः॥" हेमाद्रि। किसी समय इस जनपद को ऋक्ष भी कहते थे, क्योंकि ऋक्ष शृंखला का कुछ भाग इसमें भी है। हरिवंश पुराण में इस देश के राजा को आर्क्ष कहा गया है। आर्क्ष का अर्थ ऋक्षों का राजा होता है। अतः ज्ञात होता है कि नासिक्य का एक नाम ऋक्ष भी रहा होगा।

शूर्पारक—नासिक्य के दक्षिण-पूर्व महाभारत का प्रसिद्ध शूर्पारक है आजकल इसको सोपारा कहते हैं। महाभारत में शूर्पारक के वर्णन से इसकी पुष्टि होती है—"स तानि तीर्थानि च सागरस्य पुण्यानि चान्यानि बहूनि राजन्! क्रमेण गच्छन् परिपूर्णकामः शूर्पारकं पुण्यतमं ददर्श॥ तत्रोदधेः किञ्चिदतीत्य देशं ख्यातं पृथिव्यां वनमाससाद। तप्तं सुरैरत्र तपः पुरस्तादिष्टं तथा पुण्यपरैर्नरेन्द्रैः॥"—वनपर्व ११८-८-१०। "ततः शूर्पारकश्चैव ताली कटमथापि च"। सभापर्व ३१–६५। यह परशुराम से बसाया गया कहा जाता है–हरिवंश ५३००। परशुराम ऋचीक के वंशज थे। अभीतक इस जनपद का सम्बन्ध ऋचीक नाम से विद्यमान है। इस जनपद में पूना तथा सतारा जिले सम्मिलित थे।

पद्मावत—शूर्पारक के दक्षिण पद्मावत था। इस जनपद की राजधानी करवीर थी। हरिवंश इसकी स्थिति वेण्या के तट पर बतलाता है—"पद्मवर्णोऽपि राजर्षिः सह्यपृष्ठे पुरोत्तमम्। चकार नद्या वेण्यायास्तीरे तरुलताकुले। विषयस्याल्पतां ज्ञात्वा सम्पूर्णं राष्ट्रमेव च। निवेशयामास नृपः सवप्रप्रायमुत्तमम्॥ पद्मावतं जनपदं करवीरञ्च तत्पुरम्"॥ हरिवंश ५२२८–३। कोल्हापुर का एक नाम करवर भी कहा जाता है। सम्भवतः प्राचीन करवीर यही हो सकता है। परन्तु कोल्हापुर वेण्या के तट पर नहीं है, उसकी एक सहायक नदी के तट पर स्थित है। सम्भव है प्राचीन काल में वेण्या की प्रधान धारा वहाँ से होकर बहती रही हो। देवीभागवत में कोल्हापुर की चर्चा मिलती है, अतः यह नगर प्राचीन अवश्य है—"कोल्हापुरं महास्थानं यत्र लक्ष्मीः सदा स्थिता" देवीभागवत ७–३८–५।

वनवासी—पद्मावत के दक्षिण वनवासी जनपद था। यह तुङ्गा तथा भद्रा नाम की दो छोटी नदियों के मध्य में स्थित था। इसकी राजधानी का नाम वैजयन्ती था। आजकल भी लोग इसको वनवासी कहते हैं। कर्नल मैकेन्जी को वनवासी नगर के अवशेष सूँडा जिले में प्राप्त हुए थे। सूँडा भी प्राचीन स्थान मालूम पड़ता है। यहाँ के निवासियों का कहना है कि इसका एक प्राचीन नाम सौधपुर भी था। महाभारत के वनपर्व अध्याय ८–१४–२३ में इसका विस्तृत उल्लेख मिलता है।

कुन्तल—वनवासी के पूर्व तथा चोल के उत्तर कुन्तल जनपद था। गोदावरी के दक्षिण कृष्णा नदी सह्याद्रि से निकल कर पूर्व की ओर बहती है उसके तटवर्ती प्रदेश का ही प्राचीन नाम कुन्तल था। इसकी राजधानी का नाम कल्याण था। कृष्णा दक्षिण भारत की प्रधान नदी है। यह पूर्वी घाट को तोड़कर बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है। यह मद्रास, हैदराबाद तथा बम्बई के प्रदेश में होकर बहती है। आलमपुर के पूर्वोत्तर से जगय्यपेट के नीचे कुछ दूरी तक यह हैदराबाद की प्राकृतिक सीमा का काम करती थी। इसी कुन्तल जनपद में तालीकट का प्रसिद्ध युद्ध हुआ था। कुन्तल का एक नाम उपहालक भी था—कुन्तला उपहालकाः" हेमचन्द्र ४।२७।

विदर्भ—कुन्तल के उत्तर विदर्भ जनपद था। प्राचीनकाल में यह जनपद कृष्णा नदी से लेकर नर्मदा के समीप तक विस्तृत था। अपने महदाकार के कारण ही प्राचीनकाल काल में यह महाराष्ट्र भी कहलाता था। बालरामायण से इसके दोनों नामों का पता चलता है—"रामः—यत् क्षेत्रं त्रिदिवस्य वर्त्म निगमस्याङ्कुरञ्च यत् सप्तमम्। स्वादिष्टं च यदैक्षवादपि रसाच्चक्षुश्च यद्वाङ्मयम्। तदयस्मिन् मधुरं

प्रसादि रसवत् कान्तञ्च काव्यामृतं सोऽयं सुभ्रु पुरो विदर्भविषयः सारस्वतीजन्मभूः" वा० रा० १०–७४ । अनर्घराघव से भी इसकी पुष्टि होती है—"इदमग्रे महाराष्ट्रैकमण्डलं कुण्डनं नाम नगरम् । इह हि विदर्भीणां भूरि प्रियतमपरिरम्भरभसप्रसङ्गादङ्गानि द्विगुणपुलकस्त्रञ्जि तनुते ।" अनर्घराघव ७–९६ । यह जनपद नर्मदा के दक्षिण तक ही सीमित था क्योंकि अज को वहाँ जाने में नर्मदा को पार करके जाना पड़ा था—"तथेत्युपस्पृश्य पयः पवित्रं सोमोद्भवायाः सरितः नृसोमः । ययौ विदर्भान्....." रघु० ५-५९, ६० । इस जनपद के क्रथ तथा कैशिक नाम के दो प्रसिद्ध राजा हो चुके हैं उन्हीं के नाम पर यहाँ के निवासी क्रथकैशिक भी कहे जाते थे । "प्रत्युज्जगाम क्रथकैशिकेन्द्रः" रघु० ५–६१ । विष्णुपुराण ४–१२, १४, १५ से भी ज्ञात होता है कि क्रथ तथा कैशिक यहाँ के राजा थे ।

इस जनपद की प्राचीन राजधानी का नाम कुण्डिनपुर था । लोग इसको विदर्भपुरी भी कहते थे–"स्यात् विदर्भा तु कुण्डिनम्" हेम० ४।४५ गोदावरी के उत्तर तथा पूर्व भाग में स्थित आधुनिक बरार का प्राचीन नाम विदर्भ था । किसी समय यहाँ दमयन्ती के पिता भीम तथा रुक्मिणी के पिता भीष्मक का राज्य था । भीष्मक के पुत्र रुक्म ने अपनी प्राचीन राजधानी को छोड़कर भोजकट को अपनी राजधानी बनाया । भोजकट को कुण्डिनपुर के और उत्तर कहीं होना चाहिये, क्योंकि रुक्म ने श्री कृष्ण से अपनी बहिन रुक्मिणी के अपहरण का बदला लेने के लिये नर्मदा के तट तक उनका पीछा किया था, जब उनको न पा सका तो लौट कर लज्जा के कारण कुण्डिनपुर न जाकर भोजकट में ही ठहर गया और उसको अपनी राजधानी बना लिया । हरिवंश ११८ । विष्णुपुराण ५–२८ । मालविकाग्निमित्र में लिखा है कि अग्निमित्र ने विदर्भ को वरदा नदी के उत्तर दक्षिण दो भागों में विभक्त कर दिया था । वरदा नदी अपनी पैंनी गङ्गा नाम की सहायक नदी से बरार जनपद को निजाम के राज्य से पृथक् करती है । मालूम पड़ता है कि उत्तरी बरार की राजधानी अमरावती तथा दक्षिण बरार की राजधानी किसी समय प्रतिष्ठान ( पैठण ) थी—"तौ पृथक् वरदाकूले शिष्टामुत्तरदक्षिणे । नक्तं दिनं विभज्योभौ शीतोष्णकिरणाविव" मालविकाग्निमित्र ५।१३ । "अस्ति नाम्ना प्रतिष्ठानं नगरं दक्षिणापथे । प्रतिष्ठानाभिधानोऽस्ति देशो गोदावरीतटे।।" कथासरित्सागर ५१–११७ ।७५–२१ ।

विदर्भ जनपद में वैदर्भी नाम की एक मनोरम रीति का प्रादुर्भाव हुआ था । वामन जैसे प्राचीन साहित्याचार्यों ने इसकी चर्चा की है । विदर्भ जनपद में भोजों का भी राज्य था । भोज राजा द्रुह्यु के वंशज थे—"द्रुह्योः सुतास्तु वै भोजा अनोस्तु म्लेच्छजातयः" महाभारत १–८३–८४। भोज जन भारत के अनेक भागों में रहते थे, क्योंकि भारत के अनेक भागों में अनेक भोजपुर आज भी वर्तमान हैं । भोजों के अनेक वंशज हुये, जैसे कुन्तिभोज, इन्हीं कुन्तिभोज ने कुन्ती को गोद लिया था; मार्तिकावत अथवा मृत्तिकावत भोज "तस्यान्वये भोजा मार्तिकावता बभूवुः" विष्णु पु० ४।१३।५३। "भोजैः सहाक्रूरो द्वारकामपहायाक्रान्तः 'विष्णु पु० ४।१३।५२। मार्तिकावत के राजा ने कुरुक्षेत्र में दुर्योधन के पक्ष से युद्ध किया था । परम प्रसिद्ध राजा भोज भी (धारा नगरी का राजा) इसी वंश का था ।

तिलिङ्ग—प्राचीन निजाम राज्य का पूर्वी भाग तिलिङ्ग कहलाता था । "तिलिङ्गाः कुञ्जरदरीकच्छवासाश्च ये जनाः ।" मार्कण्डेय पु० ५८।२८। यहाँ की भाषा तेलुगू है । बारहवीं शताब्दी में इसकी राजधानी बारङ्गल (बरन कुल) से ६ मील उत्तर हम्मन कोन्द्र ( हर्म्य कुण्ड ) थी । किसी समय यह जनपद आन्ध्र जनपद के अधीन था ।

महाभारत में वर्णित दक्षिण भारत का भूगोल भ्रामक तथा अस्पष्ट मालूम पड़ता है । बुन्देलखण्ड की सीमा से लेकर कृष्णा नदी के तट तक का समस्त प्रदेश विशाल बन था । वह दण्डक के नाम से प्रसिद्ध था । श्रीराम चित्रकूट से चल कर इसी वन में गये थे । यहाँ उनको एक वेगवती नदी को पार करना पड़ा था । वह नदी एक ऊँचे पर्वत के समीप थी । सम्भवतः वह नर्मदा नदी थी । इसी वन में उनको एक पञ्चाप्सर नाम का सरोवर मिला था । यह सरोवर सम्भवतः मध्य प्रदेश में था । उन्होंने इसी वन में प्रस्रवण ( गोदावरी के तट पर स्थित औरङ्गाबाद की पहाड़ी, जिसका दूसरा नाम माल्यवान था ) तथा गोदावरी के समीप पञ्चवटी में कुछ समय व्यतीत किया था । दण्डक

वन का यह भाग जनस्थान नाम से प्रसिद्ध था। उस प्रदेश के रहने वाले जन भी दण्डक कहलाते थे।

किष्किन्धा—वानरराज सुग्रीव की राजधानी किष्किन्धा थी। बीजापुर के समीप निम्बपुर नाम के एक छोटे से गाँव के समीप पूर्व की ओर ज्वालामुखी के विस्फोट से बने हुये चूने के पत्थर की एक अण्डाकार राशि पड़ी हुई है। स्थानीय जनों में यह अनुश्रुति है कि यह श्री रामचन्द्र से मारे गये वालि की हड्डियों की भस्म-राशि हैं। प्राचीन यात्रियों के यात्रा-विवरण से ज्ञात होता है कि प्राचीन किष्किन्धा आजकल भी किष्किन्धा तथा अङ्गदी नाम से पुकारी जाती है। अङ्गदी नाम का गाँव वेल्लरी के समीप विजय नगर से तीन मील की दूरी पर तुङ्गभद्रा नदी के तट पर स्थित है। किष्किन्धा से दक्षिण-पश्चिम लगभग दो मील पर स्थित पेन्नेर को लोग पम्पा कहते हैं। पम्पा के उत्तर-पश्चिम अञ्जना नाम की पहाड़ी है। यहाँ हनुमान् का जन्म हुआ था। किष्किन्धा से साठ मील पश्चिम शबरी का आश्रम है। पेन्नेर को पम्पा मानने में एक आपत्ति यह उठती है कि रामायण में पम्पा एक सरोवर माना गया है—"तौ पुष्करिण्याः पम्पायाः" रामा० ३–७७–६ और पेन्नेर एक नदी है, परन्तु उत्तरी तथा दक्षिणी दोनों पेन्नेर सरोवरों अथवा झीलों से निकली हैं। उत्तरी पेन्नेर चन्द्रदुर्ग के मध्य में स्थित एक झील से निकलती है यदि यही झील पम्पा है तो निःसन्देह चन्द्रदुर्ग ऋष्यमूक पर्वत का नाम है, क्योंकि ऋष्यमूक पर्वत को पम्पा के समीप होना चाहिये। रामायण ३–७६–२६। महाभारत वनपर्व २७९–४४। सम्भव है झील के नाम पर नदी का नाम पम्पा पड़ गया हो।

रुमण्वत्—पा० सू० ८।२।१२ में रुमण्वत् शब्द का उल्लेख है। काशिकाकार ने लवण शब्द के स्थान में रुमण का आदेश करके रुमण्वत् शब्द की सिद्धि की है। सम्भवतः यह अजमेर जिले की साँभर झील के समीपवर्ती प्रदेश का नाम रहा हो, क्योंकि उस झील से लूनी नाम की एक नदी निकलती है सम्भव हैं प्राचीन काल में उसका नाम रुमा रहा हो तथा उसी के आधार पर जनपद का नाम रुमण्वत् पड़ गया हो।

माहिष्मती—नर्मदा का ऊपरी प्रदेश हैहयराज कृतवीर्य तथा उसके पुत्र कार्तवीर्य (सहस्रबाहु) के अधिकार में था। हरिवंश ५२१८–२५ के अनुसार उसकी राजधानी का नाम माहिष्मती था। माहिष्मती को मुचकुन्द ने बसाया था—"मुचकुन्दश्च राजर्षिविन्ध्यमध्ये व्यरोचत। स्वस्थानं नर्मदातीरे दारुणोपलसंकटे...................नाम चास्या शुभं चक्रे..........माहिष्मती नाम पुरी उभयोर्विन्ध्यर्क्षयोः पादे नगयोस्तां महापुरीम्।"

माहिष्मती के पार्श्ववर्ती प्रदेश का नाम चेदि जनपद था; क्योंकि राजशेखर ने लिखा है—"यन्मेखला भवति मेकल-शैलकन्या वीतेन्धनो वसति यत्र च चित्रभानुः। तामेव पाति कृतवीर्ययशोवतंसां माहिष्मतीं कुलचुरेः कुलराजधानीम्" बाल० रामा० उपर्युक्त उद्धरण से यह भी ज्ञात होता है कि किसी समय इस जनपद पर चेदियों की शाखा कलचुरियों ने भी शासन किया था। कुछ लोग विशेषतः मांडला निवासी माँडला को प्राचीन माहिष्मती मानते हैं, परन्तु यह उनका पक्षपात ही है; क्योंकि अपनी इस स्थापना के लिये वे कुछ पुष्ट प्रमाण नहीं उपस्थित करते। अधिकांश विद्वान् जबलपुर के नीचे भेड़ाघाट को प्राचीन माहिष्मती निश्चित करते हैं। वहाँ कुछ प्राचीन अवशेष भी इसकी पुष्टि करते हैं। भेड़ाघाट के समीप नर्मदा का स्रोत श्वेत संगमर्मर की परम मनोहर ऊँची शृंखलाओं के मध्य से बहता है। ऐतिहासिकों ने आधुनिक महेश्वर को प्राचीन माहिष्मती मान लिया है।

अनूप—कालिदास के समय इस जनपद का नाम अनूप था तथा उसकी राजधानी भी माहिष्मती ही थी, परन्तु कालिदास ने माहिष्मती की स्थिति की चर्चा नहीं की है—"माहिष्मतीं वप्रनितम्बकाञ्चीम्। प्रसादजालैर्जलवेणिरम्यां रेवां यदि प्रेक्षितुमस्ति कामः" रघु० ६-४३। पाणिनि ने अनूप शब्द की सिद्धि के लिये एक सूत्र ६–३–९८ लिखा है, काशिकाकार ने उसका उदाहरण 'अनूपो देशः' दिया है। भावमिश्र ने लिखा है कि जिस देश में नदियाँ, सरोवर तथा पर्वत अधिक हों, जङ्गल हो, पशुपक्षियों का बाहुल्य हो उस प्रदेश को अनूप समझना चाहिए—भावप्रकाश ४–२३,४। इससे ज्ञात होता है कि मध्य भारत के दक्षिण में स्थित निमाड़ जिले का नाम प्राचीनकाल में अनूप था। नर्मदा घाटी की खुदाई में प्राग्वैदिककाल के अवशेष मिलने के कारण यह प्रदेश महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उस काल में इस प्रदेश के प्रधान नगर का नाम माहिष्मती (महेश्वर) था।

लाट—नर्मदा के दक्षिण उसी के बराबर तापी (ताप्ती) अथवा पयोष्णी नाम की नदी है। वह शुक्तिमान् पर्वत से निकली है। दोनों नदियों के मुख पर का तथा उसके उत्तर तथा दक्षिण का भाग लाट जनपद के नाम से प्रसिद्ध था। लङ्का से अयोध्या जाते समय रामचन्द्र के किसी साथी ने नर्मदा की बायीं ओर लाट जनपद को दिखलाया था—"वामतो दर्शयन्—अयमसौ विश्वम्भरशिरःशेखर इव लाटदेशः" बा० रा० १०–७७। कथासरित्सागर १६–१०३ तथा दशकुमारचरित के सोमदत्तचरित से ज्ञात होता है कि लाट जनपद अवन्ति के समीप ही कहीं था।

भृगुकच्छ—लाट जनपद में भृगुकच्छ नाम का नगर था। आजकल समुद्र तट पर स्थित भड़ोच नाम का स्थान प्राचीन भृगुकच्छ है। यह प्राचीनकाल में पश्चिम जाने वाले जहाजों का प्रसिद्ध बन्दरगाह था। आजकाल का जो प्रदेश गुजरात नाम से प्रसिद्ध है प्राचीनकाल में उसको लाट जनपद कहते थे। उसके सागर-समीपवर्ती भाग का नाम किसी समय पिप्पली कच्छ था।

महाभारत में लाट जनपद का नाम नहीं आया है। मध्यकालीन भारत में लाट नाम की एक विशिष्ट जाति के जनों की चर्चा अवश्य मिलती है, उन्हीं के द्वारा लाटी नाम की काव्य की एक रीति का प्रादुर्भाव हुआ था। अलङ्कार ग्रन्थों में इस रीति का पूर्ण विवेचन किया गया है। "लाटी तु रीतिर्वैदर्भीपाञ्चाल्योरन्तरा स्थिता" सा० द० ९। वराहमिहिर ने एक लाटाचार्य का उल्लेख किया है। बालरामायण से ज्ञात होता है कि वह आचार्य चालुक्य ब्राह्मण थे—"देवान् कुशेशयभुवो भुवनैकबन्धो सन्ध्याविधौ कलयतश्चुलुकं जलस्य। यो जातवान् प्रतिभया समुनिश्चुलुक्यस्तस्यान्वयैकतिलको नृप एष लाटः॥" बा० रा० ३–५७॥

आनर्त्त अथवा सुराष्ट्र—कठियावाड़ का प्रायद्वीप प्राचीनकाल में आनर्त्त अथवा सुराष्ट्र जनपद के नाम से प्रसिद्ध था—"हर्यश्वश्च महातेजा दिव्ये गिरिवरोत्तमे निवेशयामास पुरं वासार्थममरोपमः॥ आनर्त्तं नाम तद्राष्ट्रं सुराष्ट्रं गोधनायुतम्" हरिवंश ५१८८–९। काठियावाड़ के गाय तथा बैल समस्त भारत में प्रसिद्ध हैं। महाभारत में द्वारका का एक नाम आनर्त्त नगरी अर्थात् आनर्त्त जनपद की राजधानी मिलता है। वृष्णियों के रहने के कारण द्वारका को वृष्णिपुरी भी कहते थे। पुरुषोत्तम ने इसके पर्याय द्वारवती, वनमालिनी तथा अब्धिनगरी लिखा है—"द्वारका वनमालिनी द्वारवत्यब्धिनगरी।" आधुनिक द्वारका प्राचीन द्वारका नहीं हैं, क्योंकि पुराणों में लिखा है कि द्वारका समुद्र में डूब गयी—"प्लावयामास तां शून्यां द्वारकाञ्च महोदधिः" वि० पु० ५–३८–९। स्थानीय अनुश्रुति से ज्ञात होता है कि प्राचीन द्वारका वर्तमान द्वारका से ६५ मील दक्षिण-पूर्व मधुपुर के समीप थी।

संस्कृत् साहित्य से ज्ञात होता है कि द्वारका रैवतक पर्वत के समीप थी। रैवतक का दूसरा नाम ऊर्ज्जयन्त भी था—"ऊर्ज्जयन्तो रैवतकः" हेमचन्द्र ४।९७। अभिलेखों तथा स्थानीय परम्परा से ज्ञात होता है कि जूनागढ़ के समीप के गिरनार पर्वत का प्राचीन नाम रैवतक था। मधुपुर गिरनार के समीप ही है, अतः मालूम पड़ता है कि प्राचीन द्वारका वर्तमान द्वारका से दूर अवश्य रही होगी। हरिवंश पुराण में मधुपुर की चर्चा मिलती है किसी समय मधुपुर आनर्त्त की राजधानी भी था। सम्भवतः मधुजन के रहने के कारण उसका नाम मधुपुर पड़ा था। मधुजन काठियावाड़ प्रायद्वीप में रहने वाली एक प्राचीन जाति के जन थे—"मधुभोजदशार्हार्हकुक्कुरान्धकवृष्णिभिः। आत्मतुल्यबलैर्गुप्तां नागैर्भोगवतीमिव।" भागवत १–२–२३। श्रीकृष्ण के समय वहाँ सात्वत तथा श्रीजय नाम की जाति के जन रहते थे।

पाणिनि ने ६–२–३७ में "कुन्तिसुराष्ट्राः" "चिन्तिसुराष्ट्राः" इन दो समस्त पदों का प्रयोग दिखलाया है। इससे ज्ञात होता है कि ये दोनों जनपद पड़ोसी थे।

वलभी—किसी समय सुराष्ट्र की राजधानी वलभी भी थी—"अस्ति सौराष्ट्रे वलभी नाम नगरी" दशकुमार ६। मालूम पड़ता है कि श्रीकृष्ण के भाई बलभद्र के नाम पर इसका नामकरण किया गया था, क्योंकि वाराहीसंहिता में इसका एक नाम बलदेवपत्तन भी आया है। कर्नल टाड ने भावनगर के पश्चिमोत्तर लगभग दस मील पर बलवी नाम के स्थान पर इसके अवशेषों का अन्वेषण किया था। कुछ अभिलेखों में बलभी के नरेशों की उपाधि लाटेश्वर भी मिली थी। इससे अनुमान किया जाता है कि लाट देश किसी समय सुराष्ट्र के अन्तर्गत था।

प्रभास—इसी प्रसंग में प्रभास की भी चर्चा कर लेनी चाहिए। यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है। महाभारत से ज्ञात होता है कि यह समुद्र तट पर स्थित था—"सुराष्ट्रेष्वपि वक्ष्यामि पुण्यान्यायतनानि च। प्रभासञ्चोदधौ तीर्थं त्रिदशानां युधिष्ठिर॥" वनपर्व ८८–१९, २०। गदापर्व में इसके नामकरण का इतिहास मिलता है। चन्द्रमा प्रभास तीर्थ में स्नान करके क्षय रोग से मुक्ति पाकर देदीप्यमान हुये थे, अतः इसका नाम प्रभास हुआ। "पुण्यं प्रभासं समुपाजगाम यत्रेन्दुराड्यक्ष्मणा क्लिश्यमानः। विमुक्तशापः पुनराप्ततेजः सर्वं जगद् भासयते नरेन्द्र॥ एवं तु तीर्थप्रवरं पृथिव्यां प्रभासनात्तस्य ततः प्रभासः॥" गदापर्व ३५, ४१, ४२। इसका एक नाम सोमपत्तन भी था। आजकल इसको सोमनाथ कहते हैं। यह समुद्रतटवर्ती एक प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ शिव के द्वादशज्योतिर्लिङ्गों में एक लिङ्ग स्थित है। यहीं यादव पानोत्सव में परस्पर नष्ट हुए थे—मुसलपर्व अध्याय ३।

वृष्णि—प्राचीन परम्परा के अनुसार ये जन काठियावाड़ अथवा द्वारका प्रदेश के निवासी थे। परन्तु महाभारत में इनका नाम हारहूर तथा हैमवत के साथ आया है। कनिंघम ने औदुम्वरों के सिक्कों के साथ राजवृष्णि का भी एक सिक्का प्रकाशित किया है; परन्तु उसकी व्याख्या नहीं की है। केवल एक सिक्के के आधार पर उनके स्थान का निर्णय कर लेना समुचित नहीं जान पड़ता। यह प्रायः निश्चित सा है कि कुक्कुर, वृष्ण्यन्धकगण के सदस्य थे और यदि जिला होशियारपुर के दसूय तहसील का खोखर इन प्राचीन कुक्कुरों का निवास स्थान है तो उनके साथी वृष्ण्यन्धक भी होशियारपुर जिले में ही कहीं रहते रहे होंगे।

इस प्रसङ्ग में यह विचारणीय है कि वैश्यों की एक उपजाति बारहसेनी नाम से प्रसिद्ध है, जिसका अर्थ है बारह सेना वाली। ये जन उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में अधिकतर पाये जाते हैं। इनका कहना है कि इनके पूर्व पुरुष अग्रोहा के निवासी थे। पंजाब के गुड़गाँव जिले में भी ये पाये जाते हैं। बहुत सम्भव है ये ही प्राचीन वृष्णि के वंशज हों और अपना प्राचीन व्यवसाय आयुध जीवन छोड़ दिया हो। डा० जायसवाल ने लिखा है कि प्राचीन भारतीय गणतन्त्र की यह विशेषता पायी जाती है कि जब उनकी राजनीतिक शक्ति का ह्रास हो जाता था तब वे अपना पूर्व का व्यवसाय भी त्याग देते थे। उदाहरणार्थ पंजाब के खत्री तथा अरोड़ा प्राचीनकाल में आयुधजीवी थे, परन्तु राजनैतिक शक्ति के क्षीण हो जाने पर वे व्यापारी हो गये। उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि द्वारका के समुद्र में डूब जाने पर वृष्णिजन वहाँ से चलकर भारत के पश्चिमोत्तर भाग में जा बसे।

कुन्ति अथवा कुन्तिभोज—इसकी गणना एक राजजनपद में थी। महाभारत वनपर्व ३०८।७ तथा बृहत् संहिता १०–१५ के अनुसार इसके पड़ोस में अवन्ति जनपद था। इस जनपद में अश्वा अथवा अश्वरथा नाम की नदी थी। अश्वा नदी को चम्बल की एक सहायक नदी कुमारी निर्णय किया गया है। इस जनपद का एक नाम भोज भी था। इसी जनपद के कुन्तिभोज नगर में पाण्डवों की माता पृथा का लालन पालन उसके गोद लेने वाले पिता राजा कुन्तिभोज के द्वारा हुआ था। यहाँ आने के बाद पृथा का दूसरा नाम कुन्ती पड़ा। सहदेव ने दक्षिण दिग्विजय में कुन्ति जनपद को भी जीता था। यमुना तथा चम्बल के काँठे में प्राचीन कुन्ति जनपद था। आजकल उसको कोंतवार कहते हैं। पाणिनिसूत्र ४।१।१७१ के उदाहरण में कुन्ति तथा अवन्ति का उल्लेख साथ-साथ किया गया है।

अवन्ति—नर्मदा के उत्तर प्रसिद्ध अवन्ति जनपद था। इसकी राजधानी उज्जयिनी उत्तरा-पथ तथा दक्षिणा-पथ के मार्ग में स्थित बहुत बड़ी नगरी थी। इसको अवन्तिपुरी भी कहते थे—"उज्जयिनी स्याद्विशालावन्ती पुष्करण्डिनी" हेमचन्द्र ४।४२ आजकल अवन्ति जनपद को मालव कहते हैं। गुप्तकाल से अवन्ति का नाम मालव पड़ा हुआ मालूम पड़ता है—"मालवाः स्युरवन्तयः" हेमचन्द्र ४।२२।

मालव—मालव वंश के क्षत्रिय किसी समय पंजाब के दक्षिण तथा पश्चिम के प्रदेश में इरावती ( रावी ) और चन्द्रभागा चेनाव के संगम के समीप रहते थे। उक्त प्रदेश में उनके सिक्के प्राप्त हुए हैं। मालव जन वहाँ से चलकर उत्तरी राजपूताने में जयपुर की ओर जाबसे। वहाँ से कोटा की ओर जाकर वर्तमान मालव प्रदेश में बस गये। उनके बसने के कारण इसका नाम मालव पड़ गया।

दशार्ण—अवन्ति जनपद के पूर्व वेत्रवती (वेतवा) के पश्चिम के प्रदेश का नाम दशार्ण जनपद था। कालिदास से ज्ञात होता है कि इस जनपद की राजधानी का नाम विदिशा था, जो कि वेत्रवती के तट पर स्थित आधुनिक भेलसा के नाम से प्रसिद्ध है—'तेषां दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीम्" पूर्व मेघ २४। वाणभट्ट ने भी विदिशा की चर्चा की है—"वेत्रवत्या परिगता विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्"—कादम्बरी। इस जनपद में दशार्णा नाम की नदी वहती है, आज कल इसको 'धसान' कहते हैं। व्याकरण साहित्य में "प्रवत्सतरकम्बलवसनार्ण दशानामृणे" के उदाहरण में 'दशार्णो देशः, दशार्णा नदी' मिलता है। मालूम पड़ता है कि दशार्णा नदी के कारण ही उसके समीपवर्ती प्रदेश का नाम दशार्ण पड़ गया। कालिदास ने भी दशार्ण का प्रयोग जनपद के अर्थ में किया है—"सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः"—पूर्वमेघ। भिलसा से चार मील की दूरी एक नीची पहाड़ी है। उस पर पुरातत्व की सामग्री प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुई है। सम्भवतः यह पहाड़ी कालिदास की नीची नाम की पहाड़ी है—"नीचैराख्यं गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतोः"—पूर्व मेघ २६। रामायण से ज्ञात होता है कि यह प्रदेश शत्रुघ्न के अधिकार में था—"सुवाहुर्मधुरां (मदुरा) लेभे शत्रुघाती च वैदिशम्।" रामायण उत्तरकाण्ड १७१-१०।

दशपुर—महाभारत काल में अवन्ति जनपद दक्षिण में नर्मदा तथा पश्चिम में माही नदी तक विस्तृत था—"ततस्तेनैव सहितो नर्मदामभितो ययौ विन्दानुविन्दावावन्त्यौ सैन्येन महता वृतौ॥ जिगाय समरे वीरावाश्विनेयः प्रतापवान्। ततो रत्नानुपादाय पुरं भोजकटं ययौ॥"—महाभारत २-३१-१०, ११। माही नदी का नाम महाभारत में भी आया है—"चर्मण्वती मही चैव मेध्या मेधातिथिस्तथा। वन पर्व २२२-२२३॥ अवन्ति के उत्तर चर्मण्वती के तट पर एक दूसरा राज्य भी था, जिसकी राजधानी दशपुर थी—"ततश्चर्मण्वतीतीरे जम्भकस्यात्मजं नृपम्। ददर्श वासुदेवेन शेषितं पूर्व वैरिणा महाभारत २-३१-७।॥" पात्रीकुर्वन् दशपुर वधूनेत्रकौतूहलानाम् पूर्व" मेघदूत ४८। कुछ लोग वर्तमान धौलपुर का प्राचीन नाम दशपुर समझते हैं परन्तु अधिकांश विद्वान् आधुनिक मन्दसोर को प्राचीन दशपुर मानते हैं। राजा रन्तिदेव की राजधानी भी दशपुर थी। महाभारत में रन्तिदेव की चर्चा अनेक वार हुई है—"राज्ञो महानसे पूर्वं रन्तिदेवस्य वै द्विज। द्वे सहस्रे तु वध्येते पशूनामन्वहँ तदा॥ अहन्यहनि वध्येते द्वे सहस्रे गवां तथा॥" वनपर्व २०८-२०९।

कालञ्जर—दशार्ण के पूर्व कालञ्जर नाम का एक पर्वत है। आजकल भी यह इसी नाम से पुकारा जाता है। यह जवलपुर से दमोह जाने वाले मार्ग पर स्थित है। इस पर्वत पर हिरण्यविन्दु नाम का एक शिवलिङ्ग है—"हिरण्यविन्दुः कथितो गिरौ कालञ्जरे महान्।" महाभारत ३-८७-२१।

पन्नागार—पा० सू० २-४-६० में पन्नागार शब्द गोत्रवाचक प्रयुक्त किया है। इस गोत्र के जनों के निवास स्थान को भी पन्नागार कहते थे। जबलपुर के दक्षिण-पूर्व की ओर पन्ना नाम का एक राज्य स्थित है। कुछ विद्वान् इसी को पन्नागार मानते हैं, परन्तु यह समुचित नहीं जान पड़ता; क्योंकि यह राज्य वहुत प्राचीन नहीं है। जवलपुर जिले में ही पनागर नाम का एक अति प्राचीन कसवा है वहाँ प्राचीन अवशेष भी पाये जाते हैं। सम्भवतः यहीं पान्नागारि जनं रहते थे। पन्नागार का ही विकृत रूप पनागर जान पड़ता है।

कुशावती—जवलपुर के पूर्व दक्षिण कोसल का प्रसिद्ध राज्य था। श्री रामचन्द्र की माता यहीं के राजा की पुत्री थी। इस राज्य की राजधानी का नाम कुशावती अथवा कुशस्थली थी। यह विन्ध्य पर्वत के समीप ही स्थित थी। श्री रामचन्द्र के पुत्र कुश के नाम पर इसका नाम कुशावती पड़ा था। कुछ लोगों की धारणा है कि कुश घास की अधिकता के कारण लोग इसको कुशावती कहते थे।

कुश ने थोड़े समय तक दक्षिण-कोसल में राज्य किया फिर विश्वामित्र के पुत्र सुश्रुत को वह राज्य देकर अयोध्या चले गये। सुश्रुत एक प्रसिद्ध वैद्य थे। इस कथा की चर्चा पद्मपुराण के पाताल खण्ड तथा रघुवंश के सोलहवें सर्ग में मिलती है। उसमें लिखा है कि अयोध्या जाते समय कुश को विन्ध्य पर्वत लाँघना पड़ा था। इससे ज्ञात होता है कि कुशस्थली नर्मदा के उत्तर तथा विन्ध्य के दक्षिण कहीं स्थित थी। उसको जवलपुर के पूर्व तथा बुन्देलखण्ड के रामनगर के समीप कहीं होनी चाहिये। अभी तक कुशस्थली

की ठीक-ठीक पहिचान न हो सकी। सुश्रुत ने काशी में वहाँ के तत्कालीन राजा दिवोदास से आयुर्वेद का अध्ययन किया था। राजा दिवोदास धन्वन्तरि के अवतार कहे जाते हैं। सम्भव है कुश ने सुश्रुत की आयुर्वेदिक योग्यता से प्रसन्न होकर अपना राज्य उनको उपहार में दे दिया हो।

रघुवंश से ज्ञात होता है कि दक्षिण-कोसल में पुलिन्द जन रहते थे। सम्भव है मध्यकालीन बुन्देले ही प्राचीन पुलिन्द हों। इस राज्य में शोण ( सोन ) तथा ज्योतिरथी ( जोहिला ) नदियों का संगम एक प्रसिद्ध तीर्थ था—"शोणस्य ज्योतिरथ्याश्च सङ्गमे निवसन् शुचिः। तर्पयित्वा पितृन् देवान् अग्निष्टोमफलं लभेत् ॥" वन पर्व ८५—८८।

महोत्सवपुर—बुन्देल खण्ड में बाँदा से छत्तीस मील दक्षिण पूर्व महोत्सवपुर नाम का एक प्रसिद्ध नगर था। मध्यकालीन भारत में इसकी पर्याप्त ख्याति थी। आजकल इसको महोवा कहते हैं।

साल्व—प्राचीन काल में साल्व नाम का एक प्रसिद्ध जनपद था। वह सत्यवान् के पितामह राजा द्युमत्सेन के अधीन था। पाणिनि ने ४।२।१३५, ४।१।१६९ ४—१—१७३ तथा सूत्रों में साल्वेय साल्व, साल्वावयव नाम के तीन जनपदों का उल्लेख किया है। मालूम पड़ता है कि साल्व नाम की किसी प्राचीन तम जाति के जनों ने अपने मूल निवासस्थान में एक जनपद की स्थापना की। महाभारत से ज्ञात होता है इस जनपद के राजा का नाम साल्व था। उसकी राजधानी का नाम सौभ नगरी था। कुछ विद्वानों की धारणा है कि सौभ नगरी हरिद्वार का ही प्राचीन नाम है। सिन्ध तथा बलूचिस्तान की सीमा पर स्थित वर्तमान हाला पर्वत का प्राचीन नाम शाल्वकागिरि था। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल का मत है कि शाल्व जनों का अभिजन ईरान था। वे लोग प्राचीन काल में ईरान से बलूचिस्तान तथा सिन्ध होते हुये इस देश में आकर बस गये। उन्हीं के नाम पर हाला पर्वत का नाम शाल्वकागिरि पड़ा। वहाँ से वे लोग सिन्ध नदी के किनारे किनारे बढ़कर राजस्थान में सरस्वती के किनारे से होते हुये उत्तरी बीकानेर में बस गये। फिर वहाँ से उन्होंने यमुना तक तथा पश्चिम में पंजाब के पठानकोट तथा काँगड़ा तक के प्रदेशों पर आक्रमण करके उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

साल्वेय—उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि साल्व मूल राज्य का नाम था तथा साल्वेय उनकी कोई शाखा थी।

साल्वावयव—साल्वजनों के द्वारा इधर-उधर जाकर छोटे-मोटे राज्य बसाये थे। काशिकाकार ने लिखा है—"उदुम्बरास्तिलखला मद्रकारा युगन्धराः। भूलिङ्गाः शरदण्डा च साल्वावयवसंसकाः ॥" गोपथ ब्राह्मण में साल्व तथा मत्स्य जनपदों का नाम साथ-साथ आया है। महाभारत भीष्म पर्व १०।३ में साल्व, मा`य तथा जांगल जनपदों का साथ साथ उल्लेख मिलता है, इससे यह ज्ञात होता है कि साल्व जनपद उत्तरी राजस्थान तथा दक्षिणी पंजाब में था। मत्स्य जनपद का निश्चय हो ही चुका है। मत्स्य जनपद की राजधानी विराट (जयपुर राज्य में स्थिति आधुनिक वैराठ) थी। जांगल से कुरुजांगल ही अभिप्रेत हो सकता है। कुरुजांगल में दक्षिण-पूर्वी पंजाब ( हाँसी, हिसार तथा सिरसा ) सम्मिलित था। मत्स्य तथा जांगल जनपदों की भूमि छोड़कर जो शेष बचता है वही साल्व जनपद का प्रदेश हो सकता है। उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि साल्व-जनपद वर्तमान अलवर से उत्तरी बीकानेर तक के प्रदेश में सीमित था। साल्वेय अथवा साल्वपुत्र जनपद को अलवर के समीप होना चाहिए। साल्वेय अलवर का तत्सम रूप जान पड़ता है। महाभारत के विराट पर्व २९।२ में उल्लेख हैं कि साल्वेयक तथा मत्स्य जनपद की सम्मिलित सेना ने त्रिगर्त्त के राजा सुशर्मा से युद्ध किया था।

उदुम्बर—ऊपर कहा जा चुका है कि साल्वजनों ने पृथक्-पृथक् अन्य छोटे-छोटे जनपदों को स्थापित कर लिया था। उन्हीं को साल्वावयव कहते थे। साल्वावयव उदुम्बरों की मुद्रायें त्रिगर्त्त जनपद ( व्यास तथा रावी नदियों का मध्यवर्त्ती प्रदेश ) में पायी गयी हैं। काँगड़ा के पठानकोट नगर में भी इनकी कुछ मुद्रायें प्राप्त हुई हैं। इस पुरातत्त्व के प्रमाण से निश्चित हो जाता है कि व्यास के उत्तर तथा रावी के दक्षिण की संकुचित घाटी में होकर त्रिगर्त्त में ( गुरुदासपुर ) उदुम्बरों का राज्य था। पा० सू० ४।२।७१ के भाष्य में उदुम्बरावती नाम की एक नदी का उल्लेख है। सम्भवतः यह कोई छोटी नदी रही होगी। उसके तट पर उदुम्बरों की राजधानी स्थित थी, उसको भी उदुम्बरावती ही कहते थे।

**तिलखल**—महाभारत (भीष्मपर्व १०।५६) में तिलभार नाम के एक राज्य का उल्लेख है। सम्भवतः उसी का नाम तिलखल भी रहा होगा। तिलखल का शब्दार्थ तिल के खलिहानों का प्रदेश होता है, अतः जहाँ तिल की खेती प्रचुरता से होती रही हो उसी प्रदेश का नाम तिलखल होना चाहिए। वर्त्तमान काल में पंजाब के जिला होशियारपुर में तिल की खेती का प्राचुर्य है, अतः बहुत सम्भव है कि उसी प्रदेश का नाम तिलखल अथवा तिलभार रहा हो।

**मद्रकार**—प्राध्यापक शिलुस्की की धारणा है कि 'मद्रकार' शब्द में कार शब्द ईरानी भाषा का है। उक्त भाषा में 'कार' शब्द सेना का वाचक है, अतः मद्रकार शब्द का अर्थ मद्रों की सेना द्वारा प्रतिष्ठापित राज्य हुआ। मद्रों तथा शाल्वों का सम्बन्ध मद्रराजकुमारी सावित्री तथा शाल्वराजकुमार सत्यवान् के विवाह के कारण सुदृढ़ हो गया था। इस सम्बन्ध के कारण तीन छोटे-छोटे राज्यों की स्थापना हुई। (१) सावित्रीपुत्रक, (२) मद्रकार, (३) साल्वसेनय। सावित्रीपुत्रकों का उल्लेख महाभारत वनपर्व २८३।१२ तथा पाणिनि-गणपाठ ५।३।१६ में विद्यमान है। सावित्री तथा सत्यवान् की सन्तान में गोवंश प्रवर्तित हुआ। उसका नाम सावित्रीपुत्रक हुआ। यहाँ पुत्र शब्द का प्रयोग वंश अथवा कुटुम्ब के अर्थ में हुआ है। आजकल भी पंजाब के कुछ खत्रियों में केहरपोत्रे, चन्दनपोत्रे आदि वंश नाम प्रचलित हैं।

मद्रकार जनपद मद्रसेना द्वारा स्थापित छोटे राज्य का नाम रहा होगा। इसी प्रकार शाल्वसेन भी शाल्वसेना द्वारा स्थापित राज्य का नाम रहा होगा। विवाह के समय सत्यवान् अपने राज्य से निर्वासित थे। सावित्री के साथ विवाह हो जाने पर मद्र तथा शाल्व दोनों राज्यों की सेनाओं ने उनकी सहायता की थी तथा उनको पुनः अपने राज्य में प्रतिष्ठित हो जाने पर उन सेनाओं ने पृथक् पृथक् राज्यों की स्थापना कर ली जो कि उनके नाम पर मद्रकार तथा साल्वसेनय के नाम से प्रसिद्ध हुये। अष्टाध्यायी के सूत्र २।३।७३ तथा ५।४।६७ में मद्र तथा भद्र दो प्रकार के नाम मिलते हैं। सम्भव है बीकानेर के उत्तर-पूर्व के कोने में घग्घर के तट पर स्थित वर्तमान मद्र मद्रकार की राजधानी रहा हो।

**युगन्धर**—एक प्राचीन गाथा प्रचलित है—"यौगन्धरिरेवनो राजा इति साल्वीरवादिषुः। विवृत्तचक्रा आसीनास्तीरेण यमुने तव॥" यमुना तट पर बैठ कर चर्खा चलाती हुई साल्व जनपद की स्त्रियाँ कहती थीं कि हमारा राजा यौगन्धरि ही है। इससे प्रतीत होता है कि युगन्धर यमुना का कोई तटवर्ती राज्य था। सम्भवतः वह अम्बाला जिले में यमुना तथा सरस्वती के मध्य में स्थित रहा होगा। वर्तमान जगाधारी जिला युगन्धर से बहुत ही मिलता जुलता है। सम्भव है यही प्राचीनकाल में युगन्धर जनपद की राजधानी रहा हो।

**भूलिंग**—एक यूनानी प्राचीन भूगोल लेखक टालेमी ने लिखा है कि अड़ावला के उत्तर-पश्चिम बोलिंगई नाम की एक प्राचीन जाति के जन रहते थे। सम्भवतः उन्हीं का नाम भूलिंग होगा।

**शरदण्ड**—इस राज्य की चर्चा पहिले की जा चुकी है। यह राज्य दृषद्वती (चितांग) नदी के तट पर कहीं स्थित रहा होगा। दृषद्वती का ही एक नाम शरदण्डा अथवा शरावती भी था। इसी के समीप शरदण्ड राज्य था।

**मत्स्य**—वर्तमान धौलपुर के पश्चिम मत्स्य देश था। पांडवों ने इस जनपद में एक वर्ष तक अज्ञातवास किया था। महाभारत में लिखा है कि वे लोग दशार्ण के उत्तर तथा पाञ्चाल के दक्षिण यकृल्लोम तथा शूरशेन जनपद के मध्य में होकर यमुना के किनारे-किनारे कालपी, उरई और कौंच होते हुये वहाँ पहुँचे थे। "ते वीरा बद्धनिस्त्रिंशास्तथा बद्धकलापिनः। बद्धगोधाङ्गुलित्राणाः कालिन्दीमभितो ययुः॥ उत्तरेण दशार्णांस्ते पञ्चालान् दक्षिणेन तु। अन्तरेण यकृल्लोमान् शूरसेनाञ्च पाण्डवाः॥ लुब्धा ब्रुवाणा मत्स्यस्य विषयं प्राविशन् वनात्॥" वनपर्व ५।१।४। यकृल्लोम का शब्दार्थ होता है यकृत् के रंग के बालवाले जनों का देश। भीष्मपर्व में यकृल्लोम की चर्चा है। इन जनों का मूल निवास रोहतक जिले का वन्य प्रदेश है। मालूम पड़ता है कि ये रुहेले वहाँ से चलकर कालपी, उरई तथा जालौन के आस-पास बस गये थे। इस जनपद (मत्स्य) की राजधानी का नाम विराट था। जयपुर से इकतालीस मील उत्तर की ओर स्थित आधुनिक वैराट प्राचीन विराट माना जाता है। मत्स्य जनपद में जयपुर, जोधपुर, भरतपुर तथा

अलवर का कुछ भाग सम्मिलित था। वैराट से उत्तर लगभग एक मील की दूरी पर एक छोटी पहाड़ी है उस पर की कुछ गुफायें पाण्डवों के नाम से पुकारी जाती हैं।

**शाकम्भरी**—किसी समय मत्स्य जनपद की राजधानी शाकम्भरी ( साँभर ) भी थी। वर्तमान काल में साँभर में भगवती शाकम्भरी का एक प्रसिद्ध मन्दिर है। मध्यकालीन अभिलेखों में इसकी चर्चा मिलती है—"आविन्ध्यादाहिमाद्रेर्विरचितविजयस्तीर्थयात्राप्रसङ्गादुद्ग्रीवेषु प्रहर्त्ता नृपतिषु विनमत्कन्धरेषु प्रसन्नः। आर्यावर्त्तं यथार्थं पुनरपि कृतवान् म्लेच्छविच्छेदनाभिर्देवः शाकम्भरीन्द्रो जगति विजयते बीसलःक्षोणिपालः॥" कोलब्रुक के निबन्ध भाग २ पृ० २०३। एक दूसरे अँग्रेज ने लिखा है कि शाकम्भरी झील अधिक वर्षा हो जाने पर लगभग बीस मील लम्बी तथा दो मील चौड़ी हो जाती है। आजकल इस झील के जल से साँभर नमक प्रस्तुत किया जाता है।

**अजमीढ**—अजमेर का प्राचीन नाम अजमीढ था। सम्भवतः यह युधिष्ठिर का बसाया हुआ नगर है, क्योंकि इसका दूसरा नाम आजमीढ भी मिलता है। पा० सू० ६-२-१२५ की व्याख्या में वामन ने दोनों नामों का उल्लेख किया है।

**अर्बुद**—इस प्रदेश में अर्बुद नाम का एक पर्वत है। आजकल इसको आबू कहते हैं। अड़ावला शृंखला का ही एक भाग अर्बुद नाम से प्रसिद्ध था। कुछ लोग अड़ावला को बौना हिमालय भी कहते हैं। इसी पर वसिष्ठ ऋषि का आश्रम था।

**पुष्कर**—अजमेर जिले में पुष्कर नाम का एक तीर्थ है। यहाँ एक सरोवर है, परन्तु उसका निर्माण प्राचीन नहीं मालूम पड़ता। सम्भव है अर्वाचीन काल में इसका जीर्णोद्धार किया गया हो। आजकल इसको पोकुर कहते हैं। यह पुष्कर का ही विकृत रूप मालूम पड़ता है उत्तर प्रदेश में सरोवर को बोलचाल की भाषा में पोखरा कहते हैं यह भी पुष्कर का ही रूप मालूम पड़ता है। यहाँ ब्रह्मा का एक विशिष्ट मन्दिर है। पुष्कर अजमेर से पाँच मील पश्चिमोत्तर में स्थित है। पुष्कर सरोवर में जब अधिक जल होता है तब वह बहकर सरस्वती तथा लूनी नदियों में चला जाता है।

**मरुधन्व**—पाणिनि ने धन्व का प्रयोग मरुभूमि अथवा रेगिस्तान के अर्थ में किया है—"धन्वशब्दो मरुदेशवचनः" काशिका ४।२।२१। पतञ्जलि ने पाणिनिसूत्र ४।२।१२१ की व्याख्या में पारेधन्व तथा अष्टकधन्व नाम के दो रेगिस्तानों का उल्लेख किया है। काशिकाकार ने ऐरावतधन्व का भी उल्लेख किया है। पारेधन्व का अर्थ है मरुभूमि के उस पार का देश। राजस्थान को मरुभूमि का अथवा आधुनिक मारवाड़ का प्राचीन नाम मरुधन्व ज्ञात होता है। इस मरुधन्व के पार पश्चिम में आज भी सिन्ध प्रान्त का पूर्वी भाग पारकर कहलाता है। सम्भवतः इस प्रदेश का एक नाम पारेधन्व भी रहा हो। मरुस्थल के उस पार प्राचीन सौवीर जनपद ( आधुनिक सिन्ध ) से आनेवाली वस्तुओं को पारेधन्वक कहते रहे होंगे। अष्टकधन्व उत्तर पश्चिमी पंजाब के अटक जिले का प्राचीन नाम जान पड़ता है क्योंकि वर्तमान काल में उसको धन्नी भी कहते हैं।

काशिका का ऐरावतधन्व भारतवर्ष की सीमा के बाहर मध्य एशिया का गोबी रेगिस्तान जान पड़ता है, क्योंकि महाभारत महाप्रास्थानिक पर्व २।१,२ में लिखा है कि पाण्डवों ने हिमालय को पार कर वालुकार्णव—( बालू का समुद्र) का दर्शन किया तथा उसके समीप ही मेरु नाम के महापर्वत को देखा। मेरुपर्वत पामीर का पठार है वहाँ से पूर्व में सीता ( यारकन्द ) तथा पश्चिम में वंक्षु ( आक्सस, आमूदरया ) निकलती थी।

**उत्तरकुरु**—वंक्षु नदी पश्चिमवाहिनी है। इस नदी के उत्तर तट पर उत्तरकुरु था—"मेरोः पार्श्वे तथोत्तरे। उत्तराः कुरवो राजन् पुण्याः सिद्धनिषेविताः।" भीष्मपर्व ७।२। भीष्मपर्व ६।७ के अनुसार यहीं ऐरावत वर्ष था। अतः ऐरावत वर्ष तथा ऐरावतधन्व दोनों की स्थिति मध्य एशिया के बड़े रेगिस्तान गोबी में ही थी। इसी प्रदेश का प्राचीन नाम शाकद्वीप था। महाभारत सभापर्व में लिखा है कि यहाँ अर्जुन को दिग्विजय-यात्रा के समय कुमुद पर्वत पर रहने वाले शक तथा ऋषिकों के साथ घोर युद्ध करना पड़ा था। यूनानी इतिहास लेखकों ने कुमुद पर्वतवासी शब्दों का नाम हेरोडोटस लिखा है उन लोगों ने कुमुद पर्वत को कोमेदाइ पर्वत लिखा है।

# सिद्धान्तकौमुदी में प्रयुक्त

## १. मुद्राओं का परिचय

१ निष्क—३२० रत्ती की स्वर्ण मुद्रा।

२ सुवर्ण— ८० रत्ती की स्वर्ण मुद्रा। इसी को हाटक कार्पापण भी कहते थे।

३ माष – रौप्य कार्षापण।

४ शतमान—१०० रत्ती अथवा १७७'३ ग्रेन की चाँदी की मुद्रा।

५ शाण—१२½ रत्ती अथवा २५ ग्रेन की चाँदी की मुद्रा।

६ कार्षापण, धरण या पुराण—३२ रत्ती की चाँदी मुद्रा। इसी को प्रति भी कहते थे। स्वर्ण तथा ताँबे के कार्षापण की तौल ८० रत्ती थी।

७ अर्ध कार्षापण—१६ रत्ती की चाँदी की मुद्रा।

८ पाद कार्षापण—८ रत्ती की चाँदी की मुद्रा।

९ माष—२ रत्ती चाँदी की एक मुद्रा।

१० माष—५ रत्ती ताँबे की एक मुद्रा।

११ विंशतिक—४० रत्ती चाँदी की एक मुद्रा।

१२ त्रिंशत्क—६० रत्ती चाँदी को एक मुद्रा।

१३ अर्धशतमान—५० रत्ती चाँदी की एक मुद्रा।

१४ पादशतमान—२५ रत्ती चाँदी की एक मुद्रा।

१५ अध्यर्धशाण—१८'७५ रत्ती चाँदी की एक मुद्रा।

१६ अध्यर्धविंशतिक—६० रत्ती चाँदी की एक मुद्रा।

## २. परिमाणवाचक शब्दों का परिचय

१ कम्बल्य—पाँच सेर।

२ आचित—१० भार या पचीस मन।

३ द्रोण—अर्थशास्त्र के अनुसार १० सेर। चरक के अनुसार १२४⁄₅ सेर।

४ खारी—कोटिल्य के अनुसार ४ऽ मन। चरक के अनुसार २ मन २२ सेर ३२ तोला।

५ भार—२½ मन।

६ पल—१ तोला।

७ कुञ्चिज—५० तोला।

८ शूर्प—चरक के अनुसार १ मन ११ सेर १६ तोला।

९ गोणी—२½ मन। २ मन २२ सेर ३२ तोला।

१० प्रस्थ—१० छटाँक = ५० तोला।

११ आढक—२½ सेर।

१२ कुडव—२½ छटाँक।

१३ कंस—अर्थशास्त्र के अनुसार ५ सेर। चरक के अनुसार ६½।

१४ बिस्त—८० रत्ती।

१५ पात्र—२½ सेर।

१६ पाय्य पाँच, सात तथा दस सेर के परिमाण को पाय्य कहते थे।

१७ निष्पाव—३ रत्ती।

१८ अञ्जलि—२½ छटाँक या १२½ तोला।

१९ मन्थ—१० सेर।

२० कुम्भ—५ मन।

२१ वह—५० मन।

## ३. आयामवाचक शब्दों का परिचय

१ वितस्ति—$१\frac{१}{२}$ फुट
२ शम—१४ अंगुल
३ दिष्टि—$१\frac{१}{२}$ फुट
४ पुरुष—लगभग ६ फुट
५ हस्ति—लगभग १३॥ फुट
६ अंगुलि—$\frac{३}{४}$ इञ्च
७ अरत्नि—$१\frac{१}{२}$ फुट
८ काण्ड—१६ हाथ या २७ फुट
९ दण्ड—१६ हाथ या २७ फुट
१० किष्कु—२ फुट
११ गव्यूति—दो कोस या ४ मील
१२ योजन—४ कोस या ८ मील

—:※:—

# अर्थ प्रकाशिका

# अर्थप्रकाशिका

## अथ संज्ञाप्रकरणम्

आ ये–ऋ० १०-१३-१—जो दिव्य स्थानों में रहते हैं।

अर्वाङ्–ऋ० ६-६३-१—जो समीप जाता है।

क्व १ वोऽश्वाः–ऋ० ५-६१-२—तुम्हारे घोड़े कहाँ हैं?

रथानां न येऽराः–ऋ० १०-७८-४—हमारे रथांके जो आर हैं।

शतचक्रं योऽह्यः—वृत्रासुर का जो शतचक्र है।

अग्निमीळे—अग्निदेव की स्तुति करता हूँ।

## अच्सन्धि प्रकरणम्

सुद्ध्युपास्यः—ज्ञानियों द्वारा जिसकी आराधना की जाय।

मध्वरिः—मधु नामक दैत्य का शत्रु, विष्णु।

धात्रंशः—ब्रह्मा का अंश।

लाकृतिः—'लृ' के समान आकार। देव माता को भी 'लृ' कहते हैं उसके समान आकार।

पुत्रादिनी त्वमसि पापे—हे पापिनि! तू पुत्रों को खाने वाली है।

पुत्रादिनी सर्पिणी—पुत्रों को खाने वाली सर्पिणी।

पुत्रपुत्रादिनी—पौत्रों को खाने वाली।

पुत्रहती—पुत्र मारने वाली।

पुत्रजग्धी—पुत्र खाने वाली।

इन्द्रः—देवों के राजा इन्द्र।

राष्ट्रम्—राज्य, देश।

अर्कः—सूर्य, मदार का पौधा, इन्दु, ताम्रा, स्फटिक, विष्णु।

ब्रह्मा—सृष्टि करने वाले ब्रह्मा।

दात्रम्—दराँत, हँसिया।

पात्रम्—वर्तन, अधिकारी, अभिनेता, सुवा, राजमन्त्री।

हर्य्यनुभवः—हरि का अनुभव।

नह्यस्ति—नहीं है।

आदित्यं हविः—जिस हवि के देवता आदित्य हों।

माहात्म्यम्—प्रभाव, महत्ता।

तादात्म्यम्—तत्स्वरूपता।

हरये—हरि के लिए, हरि को।

विष्णवे—विष्णु के लिए, विष्णु को।

नायकः—नेता, मुखिया, अगुवा, सेनापति।

पावकः—अग्नि, भिलावा, वायविडंग, सदाचार, शुद्ध करने वाला व्यक्ति।

गव्यम्—गाय का दूध, दही, घी आदि।

नाव्यम्—नाव से पार करने योग्य जल।

गव्यूतिः—दो कोस।

लव्यम्—काटने योग्य।

अवश्यलाव्यम्—अवश्य काटने योग्य।

ओयते—बुना जाता है।

औयत—बुना गया।

क्षय्यम्—नष्ट होने या करने योग्य।

जय्यम्—जीत सकने योग्य।

क्षेयम्—नष्ट होने या करने योग्य।

जेयम्—जीत सकने योग्य।

क्रय्यम्—ग्राहकों को खरीदने के लिए दूकान में रखी हुई वस्तु।

क्रेयम्—खरीदने योग्य वस्तु।

हरएहि, हरयेहि—हे हरि, यहाँ आओ।

विष्णइह, विष्णविह—हे विष्णु, यहाँ।

श्रियाउद्यतः, श्रियायुद्यतः—श्री के लिए तैयार। श्री=लक्ष्मी, लौंग, शोभा, वाणी, सरल वृक्ष, बुद्धि, विभूति, कीर्ति।

गुराउत्कः, गुरावुत्कः—गुरु के लिए उत्कण्ठित।

उपेन्द्रः—विष्णु, वामन।

रमेशः—विष्णु।

गङ्गोदकम्—गङ्गाजल।

कृष्णर्द्धिः—कृष्ण का ऐश्वर्य ।

तवल्कारः—तुम्हारा लृकार ।

कृष्णैकत्वम्—कृष्ण की एकता ।

गङ्गौघः—गङ्गा का प्रवाह ।

देवैश्वर्यम्—राजा का ऐश्वर्य ।

कृष्णौत्कण्ठ्यम्—कृष्ण की उत्कण्ठा ।

उपैति—समीप आता है, प्राप्त होता है ।

उपैधते—समीप बढ़ता है ।

प्रष्ठौहः—हल या गाड़ी में जोतने के लिए जिस बैल के कन्धे पर पहले पहल लकड़ी रखी जाती है ।

उपेतः—युक्त, दो व्यक्ति पास जाते हैं ।

मा भवान् प्रेदिधत्—आप मत बढ़वाइये ।

अक्षौहिणी—सेना विशेष—२१८७० हाथी ।

२१८७० रथ ।

६५६१० घोड़े ।

१०९३५० पदाति सैनिक ।

स्वैरी—स्वेच्छाचारी ।

स्वैरिणी—स्वेच्छाचारिणी स्त्री ।

प्रौहः—उत्कृष्ट तर्क ।

प्रौढः—अधेड़, दृढ ।

प्रोढवान्—उठाया हुआ ।

प्रौढिः—महत्त्व ।

प्रैषः—आज्ञा ।

प्रैष्यः—सेवक, नौकर ।

ईषः—आश्विन मास ।

ईष्यः—बटोरने, मारने या भेजने योग्य ।

प्रेषः—भेजने का आदेश ।

प्रेष्यः—दास ।

सुखार्तः—सुख के लिए पीड़ा सहने वाला ।

परमर्तः—बहुत दुःखी ।

प्रार्णम्—बहुत अधिक कर्ज ।

वत्सतरार्णम्—बछड़े के लिए ऋण ।

ऋणार्णम्—ऋण चुकाने के लिए लिया गया ऋण ।

दशार्णः—अवन्ति जनपद के पूर्व वेत्रवती के पश्चिम के प्रदेश का नाम ।

दशार्णा—दशार्ण देश की नदी ( आधुनिक धसान )

प्रार्च्छति—अच्छी तरह चलता है, उगता है ।

उपार्च्छति—समीप आता है ।

प्रार्षभीयति, प्रर्षभीयति—उत्तम बैल चाहता है ।

उपाल्कारीयति, उपल्कारीयति—लृकार के पास वाले को चाहता है ।

उपऋकारीयति, उपर्कारीयति—ऋकार के पास वाले को चाहता है ।

प्रेजते—प्रदीप्त होता है ।

उपोषति—जलता है ।

उपेडकीयति, उपैडकीयति—भेड़ के पास की वस्तु चाहता है ।

प्रोक्षीयति, प्रौक्षीयति—बड़ा वेग चाहता है ।

क्वेव मोक्ष्यसे—कहाँ भोजन करोगे ।

तवैव—तुम्हारा ही ।

शकन्धुः—शकों का कूप ।

कर्कन्धुः—कर्कों का कूप, बेर ।

कुलटा—भिक्षा अथवा व्यभिचार के लिए घर-घर घूमने वाली स्त्री ।

सीमन्तः—माँग = सीम्नः + अन्तः ।

सीमान्तः—सीमा, सरहद = सीमायाः + अन्तः ।

मनीषा—बुद्धि ।

हलीषा—हल का दण्ड, हरिस ।

लाङ्गलीषा—हल का दण्ड, हरिस ।

पतञ्जलिः—व्याकरण महाभाष्यकार मुनि ।

सारङ्गः—चातक, मृग, हाथी ।

साराङ्गः—दृढ शरीरवाला, बलवान् ।

मार्तण्डः—सूर्य, सूअर ।

स्थूलोतुः, स्थूलौतुः—मोटा बिलाव ।

बिम्बोष्ठः, बिम्बौष्ठः—पके कुंदरू के समान लाल ओठ वाला ।

तवौष्ठः—तुम्हारा ओठ ।

शिवायों नमः—शिवजी को ओंकारपूर्वक नमस्कार ।

शिव एहि, शिवेहि—शिवजी, आइये ।

पटिति—पट् पट् ऐसा शब्द ।

भ्रदिति—भ्रत् भ्रत् ऐसी ध्वनि ।

पटत्पटदिति—पटत् पटत् ऐसी ध्वनि ।

पटत्पटेति— ,, ,,

दैत्यारिः—दैत्यों के शत्रु, विष्णु ।

श्रीशः—लक्ष्मी के पति, विष्णु ।
विष्णूदयः—विष्णु का उदय, अवतार, उन्नति ।
कुमारी शेते—कुमारी सोती है ।
होतृकारः, होतॄकारः—होता का ऋकार ।
होतॢकारः, होतॣकारः—होता का ॡकार ।
हरेऽव—हे हरि ! रक्षा करो ।
विष्णोऽव—हे विष्णु ! रक्षा करो ।
गवाग्रम्, गोऽग्रम्, गोअग्रम्—गौ का अग्रभाग ।
गवि—गौ में ।
गवाक्षः—खिड़की, झरोखा, रोशनदान, ताखा ।
गवेन्द्रः—गौओं का मालिक अथवा गौओं में श्रेष्ठ ।
एहि कृष्ण अत्र गौश्चरति—कृष्ण आओ, यहाँ गौ चरती है ।
हरी एतौ—ये दोनों हरि है ।
चक्रि अत्र, चक्रयत्र—विष्णु या कुम्हार यहाँ है ।
वाप्यश्वः—बावली में घोड़ा ( जल पीता है ) ।
पार्श्वम्—हसियों का समूह, पसली, पास, बगल ।
ब्रह्मऋषिः, ब्रह्मर्षिः—जो ब्राह्मण ऋषि पद प्राप्त कर चुका हो ।
आर्च्छत्—चला गया ।
सप्तऋषीणाम्, सप्तर्षीणाम्—सात ऋषियों का ।
अभिवादये देवदत्तोऽहं भोः—भगवन्, मैं देवदत्त नमस्कार करता हूँ ।
आयुष्मान् भव देवदत्त—देवदत्त ! तुम आयुष्मान् होओ ।
अभिवादये गार्ग्यहं भोः—भगवन् ! मैं गार्गी नमस्कार करती हूँ ।
आयुष्मती भव गार्गि—गार्गि ! तुम आयुष्मती होओ ।
आयुष्मान् एधि—आयुष्मान्, बढ़ो ।
आयुष्मान् एधि भोः—आयुष्मान्, तुम बढ़ो ।
आयुष्मानेधीन्द्रवर्मन्—इन्द्रवर्मन् ! तुम्हारी आयु बढ़े ।
आयुष्मानेधीन्द्रपालित—इन्द्रपालित ! „ „
सक्तून् पिब देवदत्त—देवदत्त ! तुम सत्तू पीओ ।
हे राम—हे राम !
राम हे—हे राम !
देवदत्त—हे देवदत्त !
कृष्ण—हे कृष्ण !
सुश्लोक इति, सुश्लोकेति—हे पुण्यात्मन्, यशस्विन् ।
अग्नी इति—अग्नि ऐसा ।
चिनुहि इति, चिनुहीति—चुनो ऐसा ।
चिनुहि इदम्, चिनुहीदम्—इसे चुनो ।
हरी एतौ—ये दोनों हरि है ।
विष्णू इमौ—ये दोनों विष्णु हैं ।
गंगे अमू—ये दोनों गङ्गा ( नदियाँ ) हैं ।
पचेते इमौ—ये दोनों पकाते हैं ।
मणीवोष्ट्रस्य लम्बेते प्रियौ वत्सतरौ मम—मेरे दोनों प्यारे बछड़े ऊँटके गले में मणि के समान लटकते हैं ।
अमी ईशा—ये सब मालिक हैं ।
रामकृष्णावमू आसाते—ये दोनों बलराम और कृष्ण हैं ।
अमुकेऽत्र—यहाँ अमुक हैं ।
अस्मे इन्द्राबृहस्पती—हमको इन्द्र और बृहस्पति ··· ।
इ इन्द्रः—अरे, यह इन्द्र हैं ।
उ उमेशः—क्या यह गौरीपति शिव हैं ।
आ एवं नु मन्यसे—क्या अब तुम ऐसा मानते हो ?
आ एवं किल तत्—अच्छा, यह ऐसी बात है ।
ओष्णम्—कुछ गर्म ।
अहो ईशाः—अहो ये राजा हैं या मालिक हैं ।
विष्णो इति, विष्ण इति, विष्णविति—विष्णु यह ।
ब्रह्मबन्धवित्यब्रवीत्—( ऐ० ब्रा० पं० ७।२७ ) उसने हे 'ब्रह्मबन्धो' यह कहा ।
'इ' इति, विति—इ, यह ।
ॐ इति, विति—'ॐ' यह ।
किमु उक्तम्, किम्वुक्तम्—क्या कहा ?
सोमो गौरी अधिश्रितः—चन्द्रमा गौरी में आश्रित हैं ।
मामकी तनू इति—मेरे शरीर में । मेरा शरीर ।
वाप्यश्वः—बावली में घोड़ा ।
दधिँ, दधि—दही ।
अग्नी—आग ।

इत्यच्सन्धि प्रकरणम् ।

# अथ हल्सन्धिप्रकरणम्

हरिश्शेते—हरि सोते हैं।
रामश्चिनोति—राम चुनता है।
सच्चित्—नित्य और ज्ञान।
शार्ङ्गिञ्जय:—हे विष्णु तुम्हारी जय हो।
विश्नः—जाना, फिसलना।
प्रश्नः—प्रश्न।
रामष्षष्ठः—राम छठा है।
रामष्टीकते—राम चलता है।
पेष्टा—पीसनेवाला।
तट्टीका—उसकी टीका, अथवा वह टीका।
चक्रिण्ढौकसे—हे विष्णु, तुम जाते हो।
षट्सन्तः—छः सत्पुरुष।
षट्ते—वे छः हैं।
ईट्टे—वह स्तुति करता है।
सर्पिष्टमम्—उत्तम घी।
षण्णाम्—छः व्यक्तियों का।
षण्णवतिः—छानवे = ९६।
षण्णगर्यः—छः शहर।
सन्षष्ठः—छठा उत्तम है।
वागीशः—बृहस्पति।
चिद्रूपम्—चैतन्यस्वरूप।
एतन्मुरारिः, एतद्मुरारिः—यह श्रीकृष्ण हैं।
चतुर्मुखः—चार मुखवाला, ब्रह्मा।
तन्मात्रम्—उतना ही।
चिन्मयम्—चैतन्यस्वरूप।
तल्लयः—उसका लय, नाश, अभाव।
मदोद्ग्राः ककुद्मन्तः—मदोन्मत्त बैल।
विद्वाँल्लिखति—विद्वान् लिखता है।
उत्थानम्—उठना, उन्नति।
उत्तम्भनम्—सहारा देना, रोकना, पकड़ना।
वाग्घरिः वाग्हरिः—बोलने में शेर।
तच्छिवः, तच्शिवः—वह शिव।
तच्छ्लोकेन, तच्श्लोकेन—उस श्लोक से।
वाक्श्च्योतति—वाणी निकलती है।

हरिं वन्दे—हरि को नमस्कार करता हूँ।
गम्यते—जाया जाता है।
यशांसि—कीर्ति।
आक्रंस्यते—आक्रमण किया जायगा।
मन्यते—समझा या माना जाता है।
अङ्कितः—८–४–५८—लिखा गया चिह्न, किया गया।
अञ्चितः—८—४—५८—पूजित अथा सिकोड़ा गया।
कुण्ठितः ,, कुन्द, रुका हुआ।
गुम्फितः ,, गुथा हुआ।
शान्तः ,, शान्त।
त्वङ्करोषि, त्वंकरोषि ८–४–५९—तुम करते या बनाते हो।
सँय्यन्ता, संयन्ता ,, उत्तम सारथि।
सँव्वत्सरः, संवत्सरः—वर्ष।
यँल्लोकम्, यंलोकम्—जिस लोक को।
सम्राट् ८–३–२५—चक्रवर्ती राजा।
किम्ह्मलयति, किंह्मलयति—८–३–२६—क्या चलाता है?
किँय्ह्यः, किंह्यः—१–३–१०—क्या कल?
किँव्ह्वलयति, किंह्वलयति ,, क्या हिलाता या चलाता है?
किँल्ह्लादयति, किंह्लादयति ,, क्यों प्रसन्न करता है?
किन्ह्नुते, किंह्नुते ८–३–२७—क्यों या क्या छिपाता है?
प्राङ्ख्षष्ठः, प्राङ्क्षष्ठः, प्राङ्षष्ठः ८-३-२८—पहिला छठा।
सुगणठ्षष्ठः, सुगणट्षष्ठः, सुगण्षष्ठः ,, छठा उत्तम गिननेवाला।
षट्त्सन्त, षट्सन्तः ८-३-२९—छः सज्जन।
सन्त्सः, सन्सः ८–३–३०—वह सज्जन।
सञ्छम्भुः, सञ्च्छम्भुः, सञ्च्शम्भुः, सञ्शम्भुः ८-३-३१—वर्तमान शिव।
प्रत्यङ्ङात्मा ८–३–३२—अन्तरात्मा।
सुगण्णीशः ,, गणितज्ञों में श्रेष्ठ।
सन्नच्युतः ,, सत्स्वरूप विष्णु।
संस्कर्त्ता, संस्कर्ता ८-३-३४—संस्कार करनेवाला।
पुंस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः ८-३-६—नर कोयल।
पुंस्पुत्रः, पुंस्पुत्रः ,, पुरुष पुत्र (लड़का)
पुंक्षीरम् पुरुष का दूध।

पुंदासः ८–३–७—पुरुष दास ।
पुंख्यानम् ,, पुरुष का कथन ।
पुँस्कामा, पुंस्कामा ,, पुरुष चाहने वाली ।
पुँश्चली, पुंश्चली ,, पुरुष के पीछे दौड़ने वाली व्यभिचारिणी ।
पुंगवः ,, बैल ।
शार्ङ्गिँस्छिन्धि, शार्ङ्गिंश्छिन्धि ८-३-७—हे शार्ङ्गिन् इसे काटो ।
चक्रिँस्त्रायस्व, चक्रिंस्त्रायस्व ,, हे विष्णु, रक्षा करो ।
सन्त्सरुः ,, (तलवार की) उत्तम मूठ ।
प्रशान्तनोति ,, परम शान्त....फैलाता बढ़ाता है ।
वासः क्षौमम् ८-३-१०—जूट का वस्त्र, रेशमी वस्त्र ।

नॄँ≍पाहि, नॄँ≍पाहि, नॄँः पाहि, नॄन् पाहि८-३-३७—मनुष्यों की रक्षा करो ।
काँस्कान् , कांस्कान् ८-३-१२, ८-३-४८—किनको किनको....
कस्कः ,, कौन-कौन....
कौतस्कुतः ८-३-१२, ८-३-४८—कहाँ-कहाँ से ।
सर्पिष्कुण्डिका ,, घी की कुण्डी ।
धनुष्कपालम् ,, धनुष का टुकड़ा ।
स्वच्छाया ६-१-७४—अपनी छाया ।
शिवच्छाया ,, शिव की छाया या कान्ति, शोभा ।
आच्छादयति ६-१-७४—ढकता है ।
माच्छिदत् ,, नहीं काटा ।
चेच्छिद्यते ६-१-७५—अनेक बार काटा जाता है ।
लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया ६-१-७६—लक्ष्मी की छाया, कान्ति शोभा ।

इति हल्सन्धिप्रकरणम् ।

## अथ विसर्गसन्धिप्रकरणम्

विष्णुस्त्राता ८-३-३४—रक्षा करने वाले विष्णु ।
कः त्सरुः ८-३-३५—कौन सी (तलवार की) मूठ ।
घनाघनः क्षोभणः ,, घबरा देनेवाला मेघ, मत्त हस्ती, इन्द्र ।
हरिः शेते, हरिश्शेते ८-३-३६—हरि सोते हैं ।
रामस्थाता ,, रामचन्द्र स्थित होंगे ।
हरिस्स्फुरति, हरिः स्फुरति ,, सूर्य प्रकाशित होते हैं ।
क≍करोति, कः करोति ,, कौन करता या बनाता है ?
क≍खनति, कः खनति ,, कौन खोदता है ?
क≍ पचति, कः पचति ,, कौन पकाता है ?
क≍फलति, कः फलति ,, कौन फलता या फल देता है ?
पयस्पाशम् ८-३-३८—खराब या विकृत दूध ।
यशस्कल्पम् ,, कुछ यश ।
यशस्कम् ,, अपकीर्ति ।
यशस्काम्यति ,, यश चाहता है ।

प्रातःकल्पम् ८-३ ३८—कुछ कुछ सवेरा ।
गीः काम्यति ,, वाणी चाहता है ।
सर्पिष्पाशम् ८-३-३९—खराब घी ।
सर्पिष्कल्पम् ,, घी के सदृश ।
सर्पिष्कम् ,, खराब घी ।
सर्पिष्काम्यति ,, घी चाहता है ।
नमस्करोति, नमः करोति ८-३-४०—नमस्कार करता है ।
पुरस्करोति ८-३-४०—पुरस्कार देता है ।
पुरः प्रवेष्टव्याः ,, प्रवेश करने योग्य नगर ।
निष्प्रत्यूहम् ८-३-४१—विघ्न रहित ।
आविष्कृतम् ,, प्रकट किया, आविष्कार किया ।
दुष्कृतम् ,, पाप, खराब किया ।
अग्निःकरोति ,, अग्नि करता है ।
वायुः करोति ,, वायु करता है ।
मातुः कृपा ,, माता की कृपा ।
मुहुःकामा ,, बार-बार चाहने वाली ।
तिरस्कर्ता, तिरः कर्ता ८-३-४२—तिरस्कार करने वाला ।

द्विष्करोति, द्विःकरोति ८-३-४३—दोबार या दुबारा करता है।
चतुष्कपालः ,, चार सकोरों में बनाया गया।
सर्पिष्करोति, सर्पिः करोति ८-३-४४—घी बनाता है।
तिष्ठतु सर्पिः, पिव त्वमुदकम् ,, घी रहे, तुम पानी पीओ।
सर्पिष्कुण्डिका ८-३-४५—घी की कुण्डी।
परमसर्पिःकुण्डिका - ,, घी की बड़ी कुण्डी।
अयस्कारः ८-३-४६—लोहार।
अयस्कामः ,, लोहा चाहने वाला।
अयस्कंसः ,, लोहे का तसला कटोरा या प्याला।
अयस्कुम्भः ३-८-४६—लोहे का घड़ा।
अयस्पात्रम् ,, लोहे का बर्तन।
अयस्कुशा ३-८-४६—हल का वह भाग जिसमें फल लगा रहता है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में इसे चौभी कहते हैं।
अयस्कर्णी ,, लोहे के समान काले या कड़े कान वाली।
गीःकारः ,, शब्द करने वाला, बृहस्पति।
स्वःकामः ,, स्वर्ग चाहने वाले।
यशः करोति ३-८-४६—कीर्ति करता है।
परमयशःकारः ,, श्रेष्ठ यश करने वाला।
अधस्पदम्, अधःपदम् ८-३-४७—पैर के नीचे।
शिरस्पदम्, शिरःपदम् ,, सिर का स्थान।
परमशिरःपदम् ,, उत्तम सिर का स्थान।
भास्करः ,, सूर्य, अग्नि, वीर, मन्दार वृक्ष।

इति विसर्गसन्धिप्रकरणम्।

## अथ स्वादिसन्धिप्रकरणम्

शिवोऽर्च्यः ६-१-११३—शिवजी पूजनीय हैं।
देवा अत्र ,, हे देव गण, यहाँ (आइये)।
श्व आगन्ता ,, (वह) कल आने वाला है।
एहि सुस्रोत अत्र स्नाहि ,, अच्छे प्रवाह वाले, यहाँ स्नान करो।
तिष्ठतु पय अग्निदत्त ,, अग्नि दत्त! दूध रखा रहे।
शिवो वन्द्यः ६-१-११४—शिवजी वन्दनीय हैं।
प्रातरत्र ,, सवेरे यहाँ (आना)।
धातर्गच्छ ,, हे धाता जाओ।
देवा इह, देवायिह ८-३-१७—हे देव! यहाँ (आओ)
देवास्सन्ति ,, देवता हैं।
भोअच्युत, भोयच्युत ८-३-२०—हे अच्युत।
तोयम् ,, जल।
स उ एकाग्निः ८-३-२१—क्या वह एकाग्नि है।
तन्त्रयुतम् ,, जुलाहे से बुना गया।
भो देवाः ८-३-२२—हे देवगण।
भो लक्ष्मीः ,, हे लक्ष्मी।
भो विद्वद्वृन्द ,, हे पण्डित गण।
भगो नमस्ते ,, हे भगो आप को नमस्कार है।
देवा नम्याः ८-३-२२—देवता नमस्कार के योग्य हैं।
देवा यान्ति ,, देवता जाते हैं।
देवा यिह ,, यहाँ देवता (आते हैं)
अघोयाहि ,, हे पापी! तुम जाओ।
अहरहः ८-२-६९—प्रतिदिन।
अहर्गणः ,, बहुत दिन।
अहोभ्याम् ८-२-६९—दो दिन से।
गतमहो रात्रिरेषा ,, दिन बीत गया, यह रात है।
अहोरूपम् ,, दिन का रूप।
अहोरथन्तरम् ,, दिन में गाया जाने वाला साम विशेष।
अहर्पतिः, अहःपतिः ,, दिन का स्वामी, सूर्य।
धूर्पतिः, धूप्पतिः ,, नेता, धुरे का स्वामी, बैल।
गीर्पतिः, गीष्पतिः गीᳵपतिः ८-२-६९—बृहस्पति।
पुनारमते ८, ३, १४, १११—फिर प्रसन्न होता या रमण करता है।
हरीरम्यः ,, हरि रमणीय हैं।
शम्भू राजते ,, शिवजी शोभित होते हैं।
तृढः ,, मारा गया।

| | | |
|---|---|---|
| वृढः | ,, | उठाया गया, स्वामी । |
| अजर्घाः | ,, | (तुमने) बार-बार ग्रहण किया । |
| लीढः | ,, | चाटा गया । |
| मनोरथः | ,, | कामना, इच्छा । |

स शम्भुः ६-१-१३२—वह शिजी हैं ।

| | | |
|---|---|---|
| एषको रुद्रः | ,, | यह रुद्र हैं । |
| असश्शिवः | ,, | वह शिव नहीं है । |
| एषोऽत्र | ,, | यह यहाँ (हैं) । |

सेमामविड्ढिप्रभृतिं य ईशिषे ६-१-१३४—हे बृहस्पति, आप समस्त संसार के ईश्वर हैं, इस स्तुति को स्वीकार कीजिये ।

सैष दाशरथी रामः ६-१-१३४—यह वही दशरथ के पुत्र राम है ।

स इत् क्षेति—

| | | |
|---|---|---|
| स एवमुक्त्वा | ,, | वह ऐसा कहकर । |
| सत्येव | ,, | (उसके) रहते ही । |
| सोऽहमा जन्म शुद्धानाम् | ,, | वह मैं आजन्म शुद्ध व्यक्तियों के । |

इति स्वादिसन्धिप्रकरणम् ।

# षड्लिङ्गप्रकरणम्

## अथाजन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणम्

रामः—दाशरथिराम, परशुराम, बलराम, ब्रह्म, रमणीय ।
सर्वः—सब
विश्वः—सब १-१-२७
सुधीः ८-३-५९—अच्छी तरह चलने वाला ।
उभौ—१-१-२७—दोनों
उभयः ,, दो भाग वाला ।
अन्यः ,, दूसरा ।
अन्यतरः ,, दो में से एक ।
अन्यतमः ,, बहुतों में से एक ।
त्वः ,, दूसरा ।
नेमः ,, आधा ।
समः ,, समान, सब ।
सिमः ,, प्रत्येक, समर्थ, समस्त ।
अन्तरायां पुरि—नगर के भीतरी भाग में ।
पूर्वः १-१-३४—पहिला ।
दक्षिणा गाथकाः १-१-३४—निपुण गायक ।
उत्तराः कुरवः ,, सुमेरु पर्वत तक विस्तृत प्रदेश ।
स्वे, स्वाः १-१-३५—आत्मीय, अपने ।
स्वाः ,, अपनी जाति के, धन ।
अन्तरे अन्तरा वा गृहाः १-१-३६—चहारदीवारी के बाहर के घर ।
अन्तरे अन्तरा वा शाटकाः ,, पहिनने की साड़ी ।
त्यद्—वह
तद्—वह ।
यद्—जो ।
एतद्—यह ।
इदम्—यह ।
अदस्—वह ।
एक—एक, प्रधान, अन्य, केवल ।
द्वि—दो ।
युष्मद्—तुम ।
अस्मद्—मैं ।
भवतु—आप ।
किम्—कौन, क्या ?
त्वत्कपितृकः १-१-२९—जिसके तुम पिता हो ।
मत्कपितृकः ,, जिसका मैं पिता हूँ ।
सर्वाय देहि ,, सर्व नामक व्यक्ति को दो ।
अतिसर्वाय देहि ,, जो सब से बढ़कर है उसको दो ।
अति कतरं कुलम् ,, कतर नामक व्यक्ति को उल्लंघन करने वाला कुल ।
अतितत् ,, तत् को उल्लंघन करने वाला कुल ।
मासपूर्वाय १-१-३०—एक मास से पहले के लिए ।
वर्णाश्रमेतरे, इतराः १-१-३१—वर्ण तथा आश्रम से बाहर के लोग ।
प्रथमः १-१-३२—पहला ।
द्वितये, द्वितयाः ,, दो अवयव या भाग वाले ।
नेमे, नेमाः ,, आधे ।
द्वितीयस्मै, द्वितीयाय ,, दूसरे को, के लिए ।
पटुजातीयाय ,, निपुण-सा के लिए ।
निर्जरः ७-२-१०१—वार्द्धक्य रहित, देवता ।
पादः ६-१-६३—पैर ।
दतः ,, दाँतों को ।
मासः ,, महीनों को ।
यूष्णः ,, माँड़, जूस, "रस, मुद्गामलक यूषस्तु भेदी दीपनपाचनः ।"
आसन्यः ६-१-६३—मुख में रहने वाला, श्वास, प्राण, "आसन्यं प्राणमूचुः ।"
द्व्यह्नः—दो दिन में होने वाला ।
व्यह्नः ६-३-११०—बीता हुआ दिन ।
सायाह्नः ,, सायंकाल ।

विश्वपाः—संसार को पालनेवाले, विष्णु ।
शङ्खध्माः—शङ्ख बजाने वाला ।
सोमपाः—सोम पीने वाला ।
कीलालपाः—जल, मधु या शरबत पीने वाला ।
मधुपाः—शराब या शहद पीने वाला ।
हाहाः ६-४-१४०—गन्धर्व विशेष ।
क्त्वः—क्त्वा प्रत्यय का ।
श्नः—श्ना प्रत्यय का ।
हरिः—विष्णु, सूर्य, सिंह, इन्द्र आदि ।
सखा—अभिन्न हृदय मित्र, "समप्राणः सखा मतः ।"
ग्रामणीः—गाँव का मुखिया, नाई, धूर्त ।
पट्वी—निपुण स्त्री ।
सुसखा—उत्तम मित्र ।
परमसखा—अत्यन्त घनिष्ठ मित्र ।
अतिसखा—श्रेष्ठ मित्र ।
पतिः—स्वामी, मालिक ।
भूपतिः—राजा ।
कति—कितने ।
त्रयः—तीन ।
द्वौ—दो ।
भवान्—आप ।
द्विः—'द्वि' नाम का व्यक्ति, दो बार ।
औडुलोमिः—उडुलोमा का पुत्र ।
वातप्रमी—मृग ।
ययीः—मार्ग ।
बहुश्रेयसी—जिसके पास बहुत सी श्रेष्ठ स्त्रियाँ हो ।
पपीः—सूर्य ।
अतिलक्ष्मीः—लक्ष्मी का उल्लंघन करने वाला ।
कुमारी—कुमारी चाहने वाला अथवा कुमारी की तरह इच्छा करने वाला ।
प्रधीः—अच्छा ध्यान करने वाला ।
उन्नीः—ऊपर ले जाने वाला, उन्नति करने वाला ।
नीः—ले जाने वाला ।
सुश्रीः—सुन्दर शोभा वाला, उत्तम धन वाला ।
यवक्रीः—जौ खरीदने वाला ।
शुद्धधीः—शुद्ध बुद्धि वाला ।

परमधीः—श्रेष्ठ बुद्धि वाला ।
सुधीः—सुन्दर बुद्धि वाला, पण्डित ।
सखा—मित्र चाहने वाला ।
सखीः—आकाश के साथ रहने वाले को चाहने वाला ।
सुखीः—सुख चाहने वाला ।
सुतीः—पुत्र चाहने वाला ।
लूनीः—काटने की इच्छा करने वाला ।
क्षामीः—दुर्बल को चाहने वाला ।
प्रस्तीमीः—शोर गुल करने वाला ।
शुष्की—सूखे पदार्थ को चाहने वाला ।
शम्भुः—शिव ।
क्रोष्टा—गीदड़ ।
हूहूः—एक गन्धर्व ।
अतिचमूः—सेना को जीतने वाला, सेना को पार कर लेने वाला ।
खलपूः—खलिहान साफ करने वाला, या दुष्ट को पवित्र करने वाला ।
लूः—काटने वाला ।
उल्लूः—ऊपर से काटने वाला ।
कटप्रूः—चटाई पर कूदने वाला ।
परमलूः—उत्तम काटने वाला ।
स्वभूः—ब्रह्मा, स्वयं उत्पन्न होने वाला ।
वर्षाभूः—मेढ़क ।
दृम्भूः—ग्रन्थ बनाने वाला ।
दृन्भूः—सर्प, बन्दर, एक वृक्ष, वज्र ।
करभः, कारभूः—हाथ से या हाथ में होने वाला, नाखून ।
पुनर्भूः—फिर होने वाला, पुनर्विवाहिता (स्त्री)।
दृग्भूः—नेत्र में होने वाला ।
काराभूः—जेल में होने वाला ।
धाता—ब्रह्मा ।
पिता—पिता ।
ना—पुरुष ।
कीः—कृ धातु ।
नीः—नॄ धातु ।
कॄः—कॄ धातु ।
गमा—गम्लृ धातु ।

शका—शक्लृ धातु ।
सेः—कामदेव के साथ रहने वाला ।
स्मृतेः—कामदेव को स्मरण करने वाला ।
गौः—गाय या बैल ।
सुद्यौः—सुन्दर आकाश वाला दिन ।
स्मृतौः—शिव को स्मरण करने वाला ।
राः—धन ।
ग्लौः—चन्द्रमा ।

इत्यजन्ताः पुंल्लिङ्गाः ।

## अथाजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्

रमा—लक्ष्मी ।
सर्वा—सब ( स्त्री ) ।
उत्तरपूर्वस्यै—उत्तर तथा पूर्व दिशा के मध्य (ईशान कोण) के लिए ।
उत्तरपूर्वायै—जिस पगली स्त्री को उत्तर दिशा पूर्व मालूम पड़े, उसके लिए ।
अन्तरस्यै शालायै—प्राकार के भीतर के मकान के लिए ।
अन्तरायै नगर्यै—प्राकार के भीतर के नगर के लिये ।
द्वितीया—दूसरी अथवा द्वितीया तिथि ।
तृतीया—तीसरी अथवा तृतीया तिथि ।
अम्बा, अक्का, अल्ला—माता ।
अम्बाडे, अम्बाले, अम्बिके—हे माता !
जरा—वृद्धावस्था ।
अतिखट्वः—चारपाई का उल्लंघन करने वाला ।
निष्कौशाम्बिः—कौशाम्बी से बाहर निकला हुआ ।
नासिका, नसः—नाक ।
निशा—रात ।
पृतना—सेना ।
गोपाः—गौओं की रक्षा करने वाला ।
मतिः—बुद्धि ।
तिस्रः—तीन (स्त्रियाँ) ।
प्रियत्रिः—जिस स्त्री को तीन पुरुष या स्त्रियाँ प्रिय हों ।
प्रियतिसा—जिस पुरुष को तीन स्त्रियाँ प्रिय हों ।
प्रियत्रि, प्रियतिसृ—जिस कुल को तीन स्त्रियाँ प्रिय हों ।
द्वे—दो (स्त्री) ।
गौरी—पार्वती, गौर वर्ण वाली, आठ वर्ष की कन्या, हल्दी गोरोचन, प्रियङ्गु ।
वाणी—सरस्वती, बात, मूल्य, मेघ ।
नदी—नदी ।
सखी—सखी, सहेली ।
लक्ष्मीः—धन की अधिष्ठात्री देवी, शोभा ।
स्त्री—स्त्री ।
अतिस्त्रिः—स्त्रियों को अतिक्रमण करने वाला पुरुष ।
तरी—नौका ।
तन्त्री—वीणा, तार वाला बाजा ।
अतिस्त्रि—स्त्रियों को अतिक्रमण करने वाला कुल ।
श्रीः—लक्ष्मी, शोभा, वेष रचना ।
प्रधी—सुन्दर बुद्धि, सुन्दर बुद्धि वाली ।
सुधीः—सुन्दर बुद्धि वाला ।
धेनुः—गाय ।
क्रोष्ट्री—स्यारिन, शृगाली ।
वधूः—बहू, या स्त्री ।
भ्रूः—भौंह ।
खलपूः—खलिहान साफ करने वाली स्त्री ।
पुनर्भूः—पुनर्विवाह करने वाली स्त्री ।
वर्षाभूः—मेंडक ( मादा ), पुनर्नवा, गदहपूर्ना ।
स्वयम्भूः—माया, दुर्गा, प्रकृति ।
स्वसा—बहिन ।
माता—माता ।
द्यौः—आकाश ।
राः—धन ।
नौः—नौका ।
ननान्दा—ननद, पति की बहिन ।
याता—देवरानी, जिठानी ।

इत्यजन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ।

## अथाजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्

ज्ञानम्—जानकारी ।
धनम्—सम्पत्ति ।
वनम्—जङ्गल ।
फलम्—फल ।
कतरत्—दो में से कौन सा एक ।
कतमत्—बहुतों में से कौन-सा एक ।
अन्यत्—और, दूसरा ।
अन्यतरत्—दो में से कोई दूसरा ।
इतरत्—दूसरा, अन्य ।
अन्यतमम्—बहुतों में से एक ।
एकतरम्—अकेला ।
अजरम्—वार्द्धक्य रहित ।
हृन्दि—हृदय ।
उदानि—जल ।
आसानि—मुख ।
मांसि—महीना ।
श्रीपम्—धन की रक्षा करने वाला ।
वारि—जल ।
पीलु—पीलु वृक्ष का फल, वाण ।
दधि—दही ।
अस्थि—हड्डी । सक्थि—जाँघ । अक्षि—आँख । अतिदधि—दही से बढ़कर ।
सुधि—उत्तम ज्ञान वाला ।
प्रधि—तीव्र बुद्धि वाला ।
मधु—शहद, मदिरा ।
सानु—पर्वत की चोटी ।
प्रियक्रोष्टु—जिसे गीदड़ प्रिय हो ।
सुलु—सुन्दर काटने वाला शस्त्र ।
धातृ—पालन पोषण करने वाला, धारण करने वाला ।
ज्ञातृ—जानने वाला ।
कर्तृ—करने वाला ।
प्रद्यु—उत्तम आकाश वाला ।
प्ररि—प्रचुर धन वाला ।
सुनु—सुन्दर नौका वाला ।

इत्यजन्ता नपुंसकलिङ्गाः ।

## अथ हलन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणम्

लिट्—चाटने या स्वाद लेने वाला ।
दामलिट्—रस्सी चाटने वाले बछड़े को चाहने वाला ।
गर्धप्—गधे का वर्णन करने वाला ।
दुग्धम्—दुहा, दुहलिया, दूध ।
दोग्धा—दूहने वाला ।
धुक्—दूहने वाला ।
ध्रुक्, ध्रुट्—द्रोह करने वाला ।
मुट्-मुक्—चोरी करने वाला ।
स्नुट्-स्नुक्—वमन करने वाला ।
स्निट्, स्निक्—स्नेह करने वाला, मित्र ।
विश्ववाट्—संसार का संचालक, ईश्वर ।
विद्वान्—पण्डित, ज्ञानी ।
अनड्वान्—बैल
स्रस्तम्—खिसका या गिरा हुआ ।
ध्वस्तम्—नष्ट ।
तुराषाट्—इन्द्र ।
सुद्यौः—जिस दिन आकाश स्वच्छ हो ।
चत्वारः—चार ।
प्रियचत्वाः—जिसको चार प्रिय हो ।
परमचत्वारः—श्रेष्ठ चार व्यक्ति ।
कमल्—कमल या कमला का वर्णन करने वाला ।
प्रशान्—परम शान्त ।
कः—कौन ।
अयम्—यह ।
सुगण्, सुगाण्—उत्तम गणक ।
राजा—राजा ।

परमे व्योमन्—उत्तम ब्रह्मलोक में ।

चर्मतिलः—जिसके चमड़े पर तिल हो, जिसने चमड़े की थैली में तिल रखा हो ।

ब्रह्मनिष्ठः—ईश्वर भक्त, ज्ञानी ।

प्रतिदिवा—चमकने वाला, फेंकने वाला, जुआ खेलने वाला। सूर्य, प्रतिद्वन्द्वी ।

यज्वा—यज्ञ करने वाला ।

ब्रह्मा—ब्रह्मा ।

वृत्रहा—इन्द्र ।

शार्ङ्गी—सींग के धनुष वाले ( विष्णु ) ।

यशस्वी—कीर्तिमान् ।

अर्यमा—सूर्य, वैदिक काल के एक देवता, जो जीवों को परलोक ले जाते हैं ।

पूषा—सूर्य ।

मघवान्—इन्द्र ।

मघवती—इन्द्राणी ।

माघवनम्—जिसके अधिष्ठाता देवता इन्द्र हों ।

श्वा—कुत्ता ।

युवा—जवान ।

अर्वा—घोड़ा ।

पन्थाः—मार्ग ।

मन्थाः—मन्थनदण्ड ( छोड़ी )

ऋभुक्षाः—इन्द्र ।

सुपथी—उत्तम मार्ग वाली नगरी ।

सुमथी— ,, मन्थन दण्ड वाली ।

अनृभुक्षी ( सेना )—इन्द्ररहित सेना ।

पञ्च—पाँच ।

विप्रुषः—पानी की बूँद ।

पामानः—खुजली ।

शतानि—सैकड़ों ।

सहस्राणि—हजारों ।

प्रियपञ्चा—जिसको पाँच प्रिय हों ।

अष्टौ—आठ ।

प्रियाष्टाः—जिसको आठ प्रिय हों ।

श्रुत्—पण्डित ।

युङ्—योगी ।

सुयुक्—उत्तम योगी ।

खन्—लँगड़ा ।

राट्—राजा ।

विभ्राट्—विशेष शोभायमान ।

देवेट्—देवों की आराधना करने वाला ।

विश्वसृट्—संसार की सृष्टि करने वाला ( ब्रह्मा ) ।

परिमृट्—सफ़ाई करने वाला ।

विभ्राक्—चमकने वाला ।

परिव्राट्—संन्यासी ।

विश्वावसुः—गन्धर्व राज ।

विश्वाराट्—सूर्य, सम्राट् ।

भृट्—भूँजा ।

ऋत्विक्—पुरोहित ।

ऊर्क्—अन्न, प्राणी ।

सः—वह ।

स्यः—वह ।

परमस्यः—श्रेष्ठ वह ।

त्यद्—वह ।

अतित्यद्—उसका उल्लंघन करने वाला ।

यः—जो ।

एषः—यह ।

त्वम्—तुम ।

अहम्—मैं ।

परमत्वम्—श्रेष्ठ तुम ।

परमाहम्—उत्तम मैं ।

अतित्वम्—तुमको अतिक्रमण करने वाला ।

अत्यहम्—मुझको ,, ,, ।

ओदनं पच, तव भविष्यति—भात पकाओ, वह तुम्हारा होगा ।

शालीनान्ते ओदनं दास्यामि—तुमको साठी चावल का भात दूँगा ।

धाता ते भक्तोऽस्ति—ब्रह्मा तुम्हारे भक्त हैं ।

तस्मै ते नमः—उस आप को नमस्कार है ।

हरिस्त्वां माञ्च रक्षतु—हरि तुम्हारी और मेरी रक्षा करें ।

कथं त्वां मां न रक्षेत्—तुम्हारी और मेरी रक्षा कैसे न करें ।

हरो हरिश्चमे स्वामी—शिव और विष्णु मेरे स्वामी हैं।
चेतसा त्वां समीक्षते—मन से तुम्हारा ध्यान करता है।
भक्तस्तव रूपं ध्यायति—भक्त तुम्हारे रूप का ध्यान करता है।
भक्तस्त्वा पश्यति चक्षुषा—भक्त तुमको आँख से देखता है।
भक्तस्त्वमप्यहम्, तेन हरिस्त्वां त्रायते स माम्—तुम भक्त हो और मैं भी भक्त हूँ इसलिए हरि तुम्हारी और मेरी रक्षा करते हैं।
अग्ने तव—हे अग्नि, तुम्हारा।
देवास्मान् पाहि—हे देव, हमारी रक्षा करो।
अग्ने नय—हे अग्नि, ले जाओ।
सर्वदा रक्ष देव नः—हे देव, हमारी सदा रक्षा करो।
हरे दयालो नः पाहि—हे दयालु, हरि हमारी रक्षा करो।
अग्ने तेजस्विन्—हे तेजस्वी अग्नि !
देवाः शरण्याः—देवता शरणागतवत्सल हैं।
यूयं प्रभवः—तुम लोग समर्थ ( मालिक ) हो।
युष्मान् भजे, वो भजे—आप का भजन करता हूँ।
सुपात्—सुन्दर पैर वाला।
अग्निमत्—अग्नि को मथने वाला।
प्राङ्—प्राचीन, प्राप्त होने वाला, जाने वाला।
प्रत्यङ्—पिछला, उलटा चलने वाला।
अमुमुयङ्, अदद्र्यङ्—उसके पास जाने पाला।
उदङ्—ऊपर जाने वाला, उत्तर।
सम्यङ्—अच्छी तरह जाने वाला।
सध्र्यङ्—साथ चलने वाला, मित्र।
तिर्यङ्—टेढ़ा चलने वाला, पशु।
प्राङ्—अच्छी तरह पूजा करने वाला।
क्रुङ्—चक्रवाक, चकवा।
पयोमुक्—मेघ।
सुवृट्—अच्छी तरह काटने वाला।
महान्—बड़ा।
धीमान्—बुद्धिमान्।
गोमान्—गाय वाले को चाहने वाला।
भवान्—आप।

भवन्—होता हुआ।
ददत्—देता हुआ !
जक्षत्—खाता हुआ, हँसता हुआ।
जाग्रत्—जागता हुआ।
दरिद्रत्—दरिद्र होता हुआ।
शासत्—शासन करता हुआ।
चकासत्—प्रदीप्त होता हुआ।
दीध्यत्—चमकता हुआ।
वेव्यत्—जाता हुआ।
गुप्—रक्षा करने वाला।
तादृक्—वैसा।
विट्—वैश्य, मल, प्रजा।
नक्—नष्ट होने वाला।
घृतस्पृक्—घी छूने वाला।
स्पृक्—स्पर्श करने वाला।
दधृक्—प्रगल्भ, ढीठ।
रत्नमुट्—रत्न चुराने वाला।
षट्—छः।
परमषट्—श्रेष्ठ छः।
प्रियषषः—जिसको छह प्रिय हों।
पिपठीः—पढने की इच्छा वाला।
निंस्स्व—चुम्बन करो।
निंस्से—तुम चुम्बन करते हो।
सुहिन्सु—अच्छी तरह मारने वालों में।
चिकीः—करने की इच्छा वाला।
दोः—बाहु।
विविट्—प्रवेश चाहने वाला।
तट्—छीलने वाला, बढ़ई।
गोरट्—गाय की रक्षा करने वाला।
पिपक्—पकाने की इच्छा वाला।
विवक्—बोलने की इच्छा वाला।
दिधक्—जलाने की इच्छा वाला।
सुपीः—अच्छी तरह जाने वाला।
सुतूः—अच्छी तरह काटने वाला।
विद्वान्—ज्ञाता, पण्डित।
सेदिवान्—बैठा हुआ।

सुहित्—अच्छी तरह मारने वाला ।
ध्वत्—ध्वंस होने वाला ।
स्रत्—खिसकने वाला ।
पुमान्—पुरुष ।
उशना—शुक्राचार्य ।
अनेहा—समय, काल ।
वेधाः—ब्रह्मा ।
सुत्रः—अच्छी तरह ढकने वाला ।
पिण्डग्रः,पिण्डग्लः—पिण्ड खाने वाला ।
असौ,असकौ—वह ।

इति हलन्ताः पुल्लिङ्गाः ।

## अथ हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्

उपानत्—जूता ।
उष्णिक्—एक वैदिक छन्द, सूर्य के एक घोड़े का नाम ।
द्यौः—आकाश ।
गीः—वाणी ।
पूः—नगरी ।
चतस्रः—चार स्त्रियाँ ।
का—कौन ( स्त्री ) ।
इयम्—यह ( स्त्री ) ।
स्रक्—माला ।
स्या—वह ( स्त्री )
सा—वह ,,
या—जो ( स्त्री ) ।
एषा—यह ,, ।
वाक्—वाणी ।
आपः—जल ।
दिक्—दिशा ।
दृक्—नेत्र ।
त्विट्—तेज, प्रकाश,कान्ति ।
सजूः—सखी, मित्र ।
आशीः—आसीस ।
असौ—वह ( स्त्री )

इति हलन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ।

## अथ हलन्तनपुसंकलिङ्गप्रकरणम्

स्वनडुत्—अच्छे बैल वाला ( कुल, घर ) ।
विमलद्यु—निर्मल आकाश वाला ( दिन ) ।
वाः—जल ।
चत्वारि—चार ।
किम्—क्या, कौन ।
इदम्—यह ।
एतत्—यह ।
ब्रह्म—परमेश्वर, वेद ।
दीर्घाहा—बड़े दिनों वाली ऋतु ( ग्रीष्म ) ।
दण्डि—दण्ड वाला ।
स्रग्वि—माला वाला ।
वाग्मि—वक्ता ।
अहः—दिन ।
बहुवृत्रहाणि—बहुत इन्द्र वाले ।
बहुपूषाणि— ,, सूर्य वाले ।
बह्वर्यमाणि— ,, ,,
असृक्—रक्त ।
ऊर्क्—अन्न, बल, प्राण ।
बहूर्जि—बहुत अन्न वाले ।
स्यत्—वह ।
तत्—वह ।
यत्—जो ।

एतत्—यह ।
वेभित्—वार-वार काटने वाला ।
चेच्छित्—वार-वार कटने वाला ।
गवाक्, गवाङ्—गौ के पीछे चलने वाला ।
तिर्यक्, तिर्यङ्—टेढ़ा चलने वाला ( पशु ) ।
यकृत्—जिगर, पेट में दाहिनी ओर रहने वाला ।
शकृत्—मल, विष्ठा ।
ददत्—देता हुआ ।
तुदत्—कष्ट देता हुआ ।
भात्—दीप्त होता हुआ ।
पचत्—पकाता हुआ ।
दीव्यत्—चमकता हुआ, जुआ खेलता हुआ ।
स्वप्—सुन्दर जल वाला ।
धनुः—धनुष ।
पिपठीः—पढ़ना चाहने वाला ।
पयः—दूध, जल ।
सुपुम्—सुन्दर पुरुषों वाला ।
अदः—यह ।
चक्षुः—आँख ।
हविः—हवन सामग्री ।

इति हलन्ता नपुंसकलिङ्गाः ।

## अथाव्ययप्रकरणम्

स्वर्—स्वर्ग लोक, परलोक ।
अन्तर्—मध्य में, बीच में ।
प्रातर्—प्रातःकाल, कल ।
पुनर्—फिर ।
सनुतर्—छिपकर ।
उच्चैस्—जोर से, ऊपर, ऊँचा ।
नीचैस्—धीरे से, नीचे, नीचा ।
शनैस्—धीरे से ।
ऋधक्—सचमुच, वास्तव में ।
ऋते—बिना, छोड़कर ।
युगपत्—एक साथ ही, एकाएक ।
आरात्—दूर, समीप ।
पृथक्—भिन्न, अलग ।
ह्यस्—बीता हुआ कल ।
श्वस्—आने वाला कल ।
दिवा—दिन ।
रात्रौ—रात ।
सायम्—सायंकाल ।
चिरम्—देर तक ।
मनाक्—थोड़ा, कुछ, अल्प ।
ईषत्— ,, ,, ,,
जोषम्—सुख से, चुपचाप ।
तूष्णीम्—चुपचाप, मौन ।
बहिस्—बाहर ।
अवस्—बाहर ।
समया—समीप ।
निकषा—समीप ।
स्वयम्—खुद, अपने आप ।
वृथा—व्यर्थ ।
नक्तम्—रात ।
नञ्—नहीं, निषेध ।
हेतौ—निमित्त, कारण ।
इद्धा—स्पष्ट, वास्तव में ।
अद्धा—निश्चय ही, स्पष्टतया ।
सामि—आधा, निन्दित ।
वत्—तरह, समान ।
सना—नित्य ।
सनत्— ,,
सनात्— ,,
उपधा—भेद, विभाग, श्रेणी ।
तिरस्—छिपकर, टेढ़ा, अनादर ।
अन्तरा—मध्य में, बिना ।
अन्तरेण—बिना, विषय में ।
ज्योक्—चिरकाल, शीघ्र, प्रश्न, इस समय ।

कम्—जल, सिर, निन्दा, सुख ।
शम्—सुख, कल्याण ।
सहसा—अकस्मात्, एकाएक, विना विचार किये ।
विना—छोड़कर ।
नाना—अनेक, विना ।
स्वस्ति—कल्याण ।
स्वधा—पितरों को कव्य ( अन्नादि ) देने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।
अलम्—पर्याप्त ।
वषट्—देवों को हवि देने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।
श्रोषट्— " " "
वौषट्— " " "
अन्यत्—पुनः, और, दूसरा ।
अस्ति—वर्तमान ।
उपांशु—धीरे से, गुप्त रूप से, एकान्त में ।
क्षमा—शान्ति, क्षमा करना ।
विहायसा—आकाश में ।
दोषा—रात या सायं काल ।
मृषा—असत्य ।
मिथ्या— "
मुधा—व्यर्थ ।
पुरा—प्राचीन काल, पहिले ।
मिथो—परस्पर, साथ-साथ ।
मिथस्— " "
प्रायस्—बहुधा, अधिकतर ।
मुहुस्—बार-बार ।
प्रवाहुकम्—उसी समय, एक ही समय, ऊपर ।
प्रवाहिका— " " "
आर्यहलम्—बलात्, जबर्दस्ती ।
अभीक्ष्णम्—बार-बार ।
साकम्—साथ ।
सार्धम्—साथ ।
नमस्—नमस्कार ।
हिरुक्—विना, छोड़कर ।
धिक्—धिक्कार ।

अथ—अब, इस प्रकार, इसके पश्चात् ।
अम्—शीघ्रता से, थोड़े में ।
आम्—हाँ, वास्तव में ।
प्रताम्—कष्ट से, श्रम से ।
प्रशाम्—इसी प्रकार ।
प्रतान्—विस्तारपूर्वक ।
मा—मत ।
माङ्—मत ।
च—और ।
वा—अथवा, या ।
ह—प्रसिद्धार्थसूचक ।
अह—निश्चयसूचक ।
एव—ही, केवल ।
एवम्—इस प्रकार ।
नूनम्—वास्तव में, अवश्य ।
शश्वत्—लगातार, निरन्तर ।
युगपत्—एक साथ ।
भूयस्—बार-बार ।
कूपत्—अच्छी तरह ।
सूपत्— "
कुवित्—अधिकता से ।
नेत्—यदि ।
चेत्— "
चण्— "
कच्चित्—क्या ।
किञ्चित्—कुछ थोड़ा ।
यत्र—जहाँ ।
नह—नहीं ।
हन्त—आह ।
माकिः—मत ।
माकिम्— "
नकिः— "
नकिम्—नहीं ।
आकिम्—नहीं ।
माङ्—मत ।
नञ्—नहीं ।

यावत्—जब तक, जितना, ज्यों ही ।
तावत्—तब, तितना, त्योंही ।
त्वै, द्वै, न्वै—संभवतः, शायद ।
रै—अनादरसूचक ।
श्रौषट्, वौषट्, स्वाहा—देवों को हवि देने के लिए प्रयुक्त शब्द ।
ओम्—हाँ, स्वीकारसूचक ।
तुम्—तुम ।
तथाहि—जैसे कि, इस प्रकार ।
खलु—वास्तव में ।
किल—वास्तव में ।
अथो, अथ—अब, प्रारम्भसूचक ।
सुष्ठु—अच्छी तरह ।
स्म—भूतकालसूचक ।
आदह—धिक्कार ।
अवदत्तम्—दे दिया गया ।
अहंयुः—अहंकारी ।
अस्तिक्षीरा—दूध वाली ।
अ—सम्बोधनसूचक ।
आ—साधारणार्थक ।
इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ—सम्बोधनसूचक ।
पशु—अच्छी तरह ।
शुकम्—शीघ्रता से ।
कथाकथा च—किसी प्रकार ।
पाट्—सम्बोधनसूचक ।
प्याट्— ,, ,,
अङ्ग हे, है, भोः, अये—सम्बोधनसूचक ।
च—हिंसार्थक, विरोधार्थक, पादपूरणार्थक ।
विषु—चारों ओर ।
एकपदे—तत्क्षण, अकस्मात् ।
युत्—निन्दासूचक ।
आतः—यहाँ से ।
स्मारं स्मारम्—बार बार स्मरण करके ।
जीवसे—जीने के लिए ।
पिवध्यै—पीने के लिए ।
कृत्वा—करके ।
उदेतोः—उठकर, उदय होकर ।
विसृपः—फैलकर ।
अधिहरि—विष्णु में या विष्णु पर ।
अत्युच्चैसौ—उँचाई का उल्लंघन करके ।
तत्रशालायाम्—उस कमरे या मकान में ।
वगाहः, अवगाहः—स्नान ।
पिधानम्, अपिधानम्—ढक्कन ।

इत्यव्ययप्रकरणम् ।

# अथ स्त्रीप्रत्ययप्रकरणम्

अजा ४-१-४—बकरी ।
खट्वा ,, चारपाई, खाट ।
पञ्चाजी ,, पाँच बकरियों का झुण्ड ।
एडका—भेंड़ ( मादा )
अश्वा—घोड़ी ।
चटका—गौरैया ।
मूषिका—चुहिया ।
बाला—लड़की ।
वत्सा—बच्ची, बछिया ।
होडा—लड़की ।
मन्दा—मूर्ख ( स्त्री )
विलाता—लड़की ।
संफला—अच्छे फलवाली ।
भस्त्रफला—मकोय, रसभरी ।
सत्पुष्पा—अच्छे फूलवाली ।
प्राक्पुष्पा—वनस्पति विशेष ।
प्रत्यक्पुष्पा—अपामार्ग, चिचिड़ी ।
शूद्रा—शूद्र जाति की स्त्री ।

शूद्री—शूद्र स्त्री ।
महाशूद्री—ब्राह्मण से शूद्रा में उत्पन्न स्त्री, अहीर की स्त्री ।
कुब्जा—कुब्ज जाति की स्त्री ।
उष्णिहा—एक वैदिक छन्द का नाम ।
देवविशा—देवों की प्रजा ।
ज्येष्ठा—बड़ी स्त्री, बड़ी, जेठानी, छिपकली ।
कनिष्ठा—छोटी स्त्री, छोटी ।
कोकिला—मादा कोयल ।
अमूला—आकाश बँवर ।
कर्त्री—करने वाली ।
दण्डिनी—दण्ड वाली ।
भवन्ती ४-१-६—होती हुई ।
पचन्ती ४-१-६—पकाती हुई ।
दीव्यन्ती—चमकती हुई ।
उखास्रत्—पतीली से गिरी हुई ।
पर्णध्वत्—पत्तों से गिरी हुई ।
प्राची—पूर्व दिशा ।
प्रतीची—पश्चिम दिशा ।
अतिसुत्वरी ४-१-७—पैदा करने वाले को अतिक्रमण करने वाली ।
अतिधीवरी—धारण करने वाले, ध्यान करने वाले को अतिक्रमण करने वाली ।
शर्वरी—रात ।
अवावा ब्राह्मणी—दूर करने वाली ब्राह्मणी ।
राजयुध्वा—राजा से युद्ध करने वाली स्त्री ।
बहुधीवरी—बहुत मछुवों वाली नगरी ।
बहुधीवा— ,, ,,
द्विपदी—दो पैर वाली ।
द्विपदा—दो पद वाली ऋचा ।
एकपदा—एक पद वाली ऋचा ।
पञ्च—पाँच ।
चतस्रः—चार स्त्रियाँ ।
सीमा—हद ।
दामा—रस्सी ।
बहुयज्वा—बहुत से यज्ञ करने वालों से युक्त नगरी ।
बहुराज्ञी, बहुराजा—जिस नगरी में बहुत राजा हों ।

सर्विका—अज्ञात सब स्त्रियाँ ।
कारिका—करने वाली ।
नौका—नाव ।
शका—समर्थ स्त्री ।
बहुपरिव्राजिका नगरी—जिस नगरी में बहुत संन्यासी हों ।
नन्दना—प्रसन्न करने वाली ।
कटुका—कटु रस वाली ।
राका—पूर्ण चन्द्र वाली रात ।
कारकः—करने वाला ।
नारिका—रात में लोगों का नाम लेकर बुलाने वाली एक राक्षसी ।
दाक्षिणात्यिका—दक्षिण देश में रहने या होने वाली ।
इहत्यिका—यहाँ होने वाली ।
यका—जो स्त्री ।
सका—वह स्त्री ।
उपत्यका—पर्वत के समीप की भूमि ।
अधित्यका—पर्वत के ऊपर की भूमि ।
जीवका—जीने वाली ।
भवका—होने वाली ।
देवदत्तिका—देवदत्ता नाम की स्त्री ।
देवका— ,,
क्षिपका—फेंकने वाली ।
ध्रुवका—स्थिर ।
चटका—गौरैया ।
कन्यका—कन्या ।
तारका—तारा, नक्षत्र, आँख की पुतली ।
तारिका—तारने वाली, दासी ।
वर्णका—वस्त्र ।
वर्णिका—प्रशंसा करने वाली ।
वर्तका, वर्तिका—बटेर, बत्ती ।
अष्टका—एक श्राद्ध ।
अष्टिका—आठ संख्या वाली ।
सूतका, सूतिका—जिसे बच्चा पैदा हुआ हो ।
पुत्रिका—पुत्री ।
आर्यका, आर्यिका—आर्य जाति की अज्ञात स्त्री ।
चटकका, चटकिका—अज्ञात गौरैया ।

साङ्काश्यिका—सांकाश्य में होने या रहने वाली।
अश्विका—अज्ञात घोड़ी।
शुभंयिका—अज्ञात कल्याण प्राप्त करने वाली।
सुनयिका—सुन्दर नीति वाली।
सुपाकिका—सुन्दर पाक वाली।
अनैषका—जो अज्ञात न हो।
परमैषका—श्रेष्ठ यह स्त्री।
अद्वके—अज्ञात दो।
परमद्वके—श्रेष्ठ दो।
स्विका—अपनी।
परमस्विका—श्रेष्ठ अपनी।
निर्भस्त्रिका, निर्भस्त्रका—भाथी से निकली, अज्ञात।
एषका, एषिका—अज्ञात यह।
एतिके, एतिका—अज्ञात ये दो।
अजका, अजिका—अज्ञात बकरी।
ज्ञका, ज्ञिका—अज्ञात पण्डिता।
द्वके, द्विके—अज्ञात दो।
निःस्वका, निस्विके—निर्धन स्त्री।
गङ्गका, गङ्गिके—अज्ञात गङ्गा।
अखट्विका—बिना चारपाई वाली, अज्ञात स्त्री।
गङ्गाका—अज्ञात गङ्गा।
शुभ्रिका—अज्ञात शुभ्र स्त्री।
कुरुचरी—कुरुदेश में घूमने वाली।
नदी—नदी।
बहुकुरुचरा—जिस नगरी में बहुत कुरुचर हो।
सौपर्णेयी—नागों की माता सुपर्णी की पुत्री।
ऐन्द्री—जिसके देवता इन्द्र हों, पूर्व दिशा।
औत्सी—झरने में होने वाली।
उरुद्वयसी—जाँघ तक जलवाली नदी।
उरुदघ्नी— ,,
उरुमात्री— ,,
पञ्चतयी—पाँच भाग वाली।
आक्षिकी—पासों से जुआ खेलने वाली।
लावणिकी—नमक बेचने वाली।
यादृशी—जैसी।
इत्वरी—घुमक्कड़ स्त्री।
चौरी—चोर की स्त्री, चोरी करने वाली।
स्त्रैणी—स्त्री में आसक्त स्त्री।
पौंस्नी—पुरुष में ,,
शाक्तिकी—शक्ति नामक अस्त्र चलाने वाली स्त्री।
आढ्यङ्करणी—धनी बनाने वाली स्त्री।
तरुणी—युवती।
तलुनी—युवती।
गार्गी—गर्ग की पुत्री।
द्वैप्या—द्वीप में होने वाली।
दैव्या—देव की पुत्री।
गार्ग्यायणी—गर्ग गोत्र की स्त्री।
लौहित्यायनी—लोहित की पुत्री।
कात्यायनी—कत गोत्र की पुत्री, पार्वती, विधवा।
कौरव्यायणी—कुरु की पुत्री।
माण्डूकायनी—मण्डूक ऋषि की पुत्री।
आसुरायणी—असुर की पुत्री।
कुमारी—क्वारी कन्या।
वधूटी—स्त्री।
चिरण्टी—युवती।
शिशुः—बच्ची।
कन्या—कन्या।
त्र्यनीका सेना—तीन पंक्ति, समूह अथवा नेता वाली सेना।
पञ्चाश्वा—पाँच घोड़ों से खरीदी गई।
द्विविस्ता—दो तोला सोना से खरीदी गई।
द्व्याचिता—बत्तीस मन से खरीदी गई।
द्विकम्बल्या—दस सेर ऊन से खरीदी गई।
द्व्याढकी—सेर सेर से खरीदी गई।
पञ्चाश्वी—पाँच घोड़ों का झुंड।
द्विकाण्डा—दो लाठी वाली खेत की सीमा।
काण्ड-लाठी = १६ हाथ।
द्विकाण्डी—सोलह हाथ लम्बी रस्सी।
द्विपुरुषी द्विपुरुषा वा परिखा—दो पोरसा (लगभग १२ फुट) गहरी खाई।
कुण्डोघ्नी—कुण्डे की तरह थनवाली गाय।
कुण्डोधो धैनुकम्—कुण्डे की तरह थनवाली गायों का झुंड।
द्व्यूघ्नी—दो थन वाली (छीमी वाली) गाय।

अत्यूघ्नी—बड़े थन वाली।
अत्यूधाः—थन को अतिक्रमण करने वाली।
द्विदाम्नी—दो रस्सी वाली गाय।
द्विहायनी बाला—दो वर्ष की लड़की।
त्रिहायणी—तीन वर्ष ,, ,,
चतुर्हायणी—चार वर्ष ,, ,,
द्विहायना—दो वर्ष का बना हुआ मकान।
त्रिहायना—तीन ,, ,,
चतुर्हायना शाला—चार ,, ,,
सुराज्ञी नाम नगरी—सुराज्ञी (अच्छे राजा वाली) नाम की नगरी।
शतमूर्ध्नी—सौ मस्तक वाली।
अथोत इन्द्रः केवलीर्विशः—ऋ० १०–१७३–६।
मामकी—मेरा।
भागधेयी—सम्पत्ति।
पापी—पापिनी।
अपरी—दूसरी।
समानी—समान।
आर्यकृती—आर्यों से बनायी गयी।
सुमङ्गली—सुन्दर कल्याण वाली, सौभाग्यवती।
भेषजी—औषध।
केवला—अकेली, केवल।
मामिका—मेरी।
अन्तर्वत्नी—गर्भिणी।
पतिवत्नी—जिस स्त्री का पति जीवित हो।
पतिमती पृथिवी—स्वामी वाली पृथिवी।
वसिष्ठस्य पत्नी—वसिष्ठ की भार्या।
गृहपतिः—घर की मालकिन।
गृहपत्नी— ,, ,,
दृढपत्नी, दृढपतिः—जिस स्त्री का पति दृढ (मजबूत) हो।
वृषलपत्नी—जिसका पति शूद्र हो।
वृषलपतिः— ,, ,,
गवां पतिः स्त्री—गायों की मालकिन।
सपत्नी—सौत।
एकपत्नी—सौत।
वीरपत्नी—वीर की भार्या।

पूतक्रतायी—यज्ञ पवित्र करने वाली की स्त्री।
वृषाकपायी—विष्णु अथवा शिव की भार्या, लक्ष्मी, पार्वती।
अग्नायी—अग्नि की स्त्री, स्वाहा की अधिष्ठात्री देवी।
कुसितायी, कुसिदायी—कुसित नामक दैत्य की स्त्री।
मनायी, मनावी, मनुः—मनु की भार्या।
एनी, एता—मादा चीतल।
रोहिणी, रोहिता—लाल रंग की गाय।
श्वेता—सफेद।
शितिः स्त्री—सफेद अथवा काली स्त्री।
पिशङ्गी, पिशङ्गा—पिंगल वर्ण की स्त्री।
असिता—काली।
पलिता—जिसके बाल पके हों, वृद्धा।
असिक्नी—काले रंग वाली स्त्री।
पलिक्नी - सफेद बाल वाली स्त्री, वृद्धा।
अवदाता—सफेद वर्ण वाली स्त्री, शुद्ध स्त्री।
कल्माषी—चितकबरी गाय।
सारङ्गी—चितकबरी मृगी।
कृष्णा—काली।
कपिला—भूरी।
नर्तकी—नाचने वाली।
गौरी—गौर वर्ण वाली।
अनडुही, अनड्वाही—गाय।
मत्सी—मादा मछली।
दंष्ट्रा—दाढ़, जबड़ा, दाँत।
जानपदी—जनपद में होने वाली जीविका।
कुण्डी—पात्रविशेष।
गोणी—गोन, एक प्रकार का बोरा।
स्थली—बिना साफ की हुई भूमि।
भाजी—पकाया हुआ शाक।
कुण्डा—जलाने वाली।
गोणा—व्यक्ति विशेष का नाम।
स्थला—भूमि।
भाजा—कच्चा शाक।
नागी—मजबूत हथिनी।
नागा—नागिन।
काली—काले रंग की स्त्री।

काला– क्रूर स्त्री ।
नीली—नीले रंग की गाय, एक ओषधि ।
नीला—नील रंग की साड़ी ।
नीली—नील ओषधि ।
नीली—नीले रंग की गाय ।
कुशी—लोहे की शलाका, छड़ ।
कुशा—लकड़ी की शलाका, लम्बी लकड़ी ।
कामुकी—मैथुन की इच्छा वाली स्त्री ।
कामुका—धन आदि चाहने वाली स्त्री ।
कबरी—जूड़ा ।
कबरा—चितकबरे रंग की ।
शोणी, शोणा—लाल रंग की ।
मृद्वी, मृदुः—कोमल अंग वाली ।
शुचिः—पवित्र, शुद्ध स्त्री ।
आखुः—चुहिया ।
खरुः—विवाह के लिए उत्सुक कन्या ।
पाण्डुः—सफेद रंग की ।
बह्वी—बहुत ।
बहुः— ,,
रात्रिः, रात्री—रात ।
शकटिः, शकटी—गाड़ी ।
अजननिः—जन्म का अभाव ।
पद्धतिः, पद्धती – मार्ग, पगडंडी ।
गोपी—गोप की स्त्री ।
गोपालिका—गोपालक की स्त्री ।
सूर्या—सूर्यदेव की स्त्री ( देवता ) ।
सूरी—सूर्यदेव की मानुषी स्त्री ( कुंती ) ।
इन्द्राणी—इन्द्र की स्त्री ( शची ) ।
हिमानी—हिमसमूह (glacier) ।
अरण्यानी—महावन, बहुत बड़ा जंगल ।
यवानी—खराब जौ, घोड़जई ।
यवनानी—यवनों की लिपि, फारसी लिपि ।
मातुलानी, मातुली—मामी ।
उपाध्यायानी, उपाध्यायी—उपाध्याय की स्त्री ।
उपाध्यायी, उपाध्याया—पढ़ानेवाली स्त्री ।
आचार्यानी—आचार्य की स्त्री ।
आचार्या—स्वयं आचार्य स्त्री ।
अर्याणी, अर्या—वैश्य की स्त्री ।
क्षत्रियाणी, क्षत्रिया—क्षत्रिय की स्त्री ।
अर्यी—वैश्य की स्त्री ।
क्षत्रियी—क्षत्रिय की स्त्री ।
ब्रह्माणी—ब्रह्मा को जिलाने वाली स्त्री ।
वस्त्रक्रीती—वस्त्र से खरीदी गई ।
धनक्रीती—धन से खरीदी गई ।
अभ्रलिप्ती द्यौः—मेघों से घिरा आकाश ।
चन्दनलिप्ता अङ्गना—जिस स्त्री के शरीर में चन्दन लगा हुआ हो ।
ऊरुभिन्नी—जिस स्त्री की जाँघे टूटी हुई या अलग हों ।
बहुकृता—जिसने बहुत किया हो ।
दन्तजाता – जिसके दाँत निकल आये हों ।
पाणिगृहीती—विधि पूर्वक अग्नि के सामने जिसका हाथ पकड़ा गया हो विवाहिता भार्या ।
पाणिगृहीता—जिसका हाथ पकड़ लिया गया हो, रखेली स्त्री ।
सुरापीती, सुरापीता—जिस स्त्री ने मद्यपान किया हो ।
वस्त्रच्छन्ना—वस्त्र से ढकी हुई ।
अतिकेशी, अतिकेशा—केश से बढ़कर ?
चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा—चन्द्रमा के समान मुखवाली ।
सुगुल्फा—सुन्दर टखनों वाली ।
शिखा—चोटी ।
सुस्वेदा—अच्छे पसीने वाली ।
सुज्ञाना—उत्तम ज्ञान वाली ।
सुमुखा—सुन्दर मुखवाली ।
सुशोफा—अधिक सूजन वाली ।
सुकेशी, सुकेशा—सुन्दर बालों की गद्दी वाला रथ ।
सुस्तनी, सुस्तना—सुन्दर स्तनवाली स्त्री ।
तुङ्गनासिकी, तुङ्गनासिका—ऊँची नाक वाली ।
सहनासिका—नाक वाली ।
अनासिका—बिना नाक की ।
स्वङ्गी, स्वङ्गा—अच्छे अंग वाली ।
सुपुच्छी, सुपुच्छा—अच्छी पूछ वाली ।
कबरपुच्छी—रंग बिरंगी पूछ वाली ।

उलूकपक्षी शाला—उल्लू के पंख की तरह पाख वाला मकान।

उलूकपुच्छी सेना—उल्लू के पूँछ की तरह खड़ी की गई सेना।

कल्याणक्रोडा—सुन्दर छाती वाली घोड़ी।

सुजघना—सुन्दर जाँघ वाली।

सुकेशा—सुन्दर बाल वाली।

अकेशा—विना बाल वाली।

विद्यमाननासिका—जिसकी नाक विद्यमान हो।

शूर्पणखा—सूप की तरह नाखून वाली स्त्री, रावण की बहिन।

गौरमुखा—किसी स्त्री का नाम।

ताम्रमुखी कन्या—लाल मुख वाली कन्या।

प्राङ्मुखी—पूर्व मुख वाली।

दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे—दो वर्ष का बछड़ा और दो वर्ष की बछिया मेरे पास रहें।

सखी—सहेली।

अशिश्वी—विना बच्चे की स्त्री।

आधेनवो धुनयन्तामशिश्वीः—विना बच्चे वाली गाय को हटाओ।

तटी—किनारा।

वृषली—शूद्र की स्त्री।

शुक्ला—सफेद स्त्री।

देवदत्ता—स्त्री विशेष का नाम।

औपगवी—उपगु की सन्तान स्त्री।

कठी—कठशाखा पढ़ने वाली।

कलापी—कलाप पढ़ने वाली।

बह्वृची—बहुत ऋचा पढ़ने वाली।

मुण्डा—सिर मुड़ाये हुए स्त्री।

बलाका—बगुला, सुरखाब, प्रेमिका स्त्री।

क्षत्रिया—क्षत्रिय जाति की स्त्री।

हयी—घोड़ी।

गवयी—नील गाय।

मुकयी—खच्चरी।

मनुषी—मनुष्य जाति की स्त्री।

मत्सी—मादा मछली।

ओदनपाकी—नील पुष्पा, कट सरैया।

शङ्कुकर्णी—श्वेतापराजिता, श्वेतकण्टकारी।

शालपर्णी सरिवन।

शङ्खपुष्पी – शंखपुष्पी।

दासीफली—काक जंघा।

दर्भमूली—ओषधिविशेष।

गोवाली सफेद मकई।

दाक्षी—दक्ष की पुत्री

औदमेयी—उदमेय की पुत्री।

तित्तिरिः—मादा तीतर।

कुरूः – कुरु राजा की पुत्री।

अध्वर्युः – यजुर्वेदज्ञ ऋत्विक्।

अलाब्वा—लौकी द्वारा।

कर्कन्ध्वा—बेर द्वारा।

कृकवाकुः—वनमुर्गी।

रज्जुः—रस्सी।

हनुः—ठोड़ी।

भद्रबाहूः—अच्छे बाहु वाली स्त्री।

वृत्तबाहूः—गोल बाहु वाली।

पङ्गूः—पंगु स्त्री।

श्वश्रूः—सास।

करभोरूः—जिसकी जाँघ हथेली के किनारे की तरह सुन्दर हो।

संहितोरूः—जिसकी जाँघें मिली या सटीं हों।

शफोरूः— ,, ,,

लक्षणोरूः—सुलक्षण जाँघ वाली।

वामोरूः—सुन्दर जाँघ वाली।

सहितोरूः—हितकारी जाँघ वाली।

सहोरूः—सहने योग्य जाँघ वाली।

कद्रूः—नागों की माता।

कमण्डलुः—पात्र विशेष।

कद्रुः—भूरे रंग वाली।

कमण्डलूः – पात्र विशेष।

शार्ङ्गरवी—शार्ङ्गरव की पुत्री।

वैदी—वैद की पुत्री।

नारी—स्त्री ।
अम्बष्ठ्या—अम्बष्ठ की पुत्री ।
कारीषगन्ध्या—कारीषगन्धि की पुत्री ।
शार्कराक्ष्या—शर्कराक्ष की पुत्री ।
पौतिमाष्या—पूतिमाष की पुत्री ।
आवट्या—अवट की पुत्री ।
युवतिः—जवान स्त्री ।
बहुयुवा—जिस नगरी में बहुत से जवान रहते हो ।
युवती—पति को सुख देनेवाली ।

इति स्त्रीप्रत्ययप्रकरणम् ।

## अथ कारकप्रकरणम्

उच्चैः - ऊँचा ।
नीचैः—नीचा ।
कृष्णः—श्रीकृष्ण ।
श्रीः - लक्ष्मी, शोभा ।
ज्ञानम्—ज्ञान ।
तटः, तटो, तटम्—तट, किनारा ।
द्रोणो व्रीहिः—सोलह सेर धान ।
एकः—एक ( पुंल्लिङ्ग ) ।
द्वौ—दो ,,
बहवः—बहुत ,,
हे राम—हे राम ।
माषेष्वश्वं बध्नाति—उड़द के खेत में घोड़े को बाँधता है ।
पयसा ओदनं भुङ्क्ते—दूध से भात खाता है ।
हरिं भजति—हरि को भजता है ।
हरिः सेव्यते—हरि की सेवा की जाती है ।
लक्ष्म्या सेवितः—लक्ष्मी से सेवित ।
शत्यः—सौ रुपये से खरीदा गया ।
प्राप्तानन्दः—जिसको आनन्द प्राप्त हुआ है ।
विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् - स्वयं लगाये हुए विषवृक्ष को भी स्वयं काटना उचित नहीं है ।
ग्रामं गच्छंस्तृणं स्पृशति - गाँव जाता हुआ घास छूता है ।
ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते - भात खाता हुआ विष खा जाता है ।
गां दोग्धि पयः - गाय से दूध दूहता है ।
बलिं याचते वसुधाम् - बलि से पृथ्वी माँगता है ।
अविनीतं विनयं याचते अविनीत से विनीत होने की याचना करता है ।
तण्डुलान् ओदनं पचति - चावलों का भात पकाता है ।
गर्गाञ्छतं दण्डयति—गर्गो को सौ रुपये दण्ड देता है ।
व्रजमवरुणद्धि गाम्—गोशाला में गाय को रोकता है ।
माणवकं पन्थानं पृच्छति—लड़के से मार्ग पूछता है ।
वृक्षमवचिनोति फलानि—पेड़ से फल तोड़ता है ।
माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा—लड़के को धर्म बताता या सिखाता है ।
शतं जयति देवदत्तम्—देवदत्त से सौ रुपये जीतता है ।
सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति—क्षीरसागर से अमृत मथता है ।
देवदत्तं शतं मुष्णाति—देवदत्त के सौ रुपये चुराता है ।
ग्राममजां नयति हरति कर्षति वहति वा—गाँव में बकरी को ले जाता, घसीटता या पहुँचाता है ।
बलिं भिक्षते वसुधाम्—बलि से पृथ्वी माँगता है ।
माणवकं धर्मं भाषते अभिधत्ते वक्ति वा—लड़के को धर्मोपदेश देता या कहता है ।
माणवकस्य पितरं पन्थानं पृच्छति—लड़के के पिता से मार्ग पूछता है ।
कुरून् स्वपिति—कुरु देश में सोता है ।
मासमास्ते—महीने भर रहता है ।
गोदोहमास्ते—गाय दूहने के समय तक रहता है ।
क्रोशमास्ते—कोश भर तक है ।
शत्रूनगमयत्स्वर्गम्—शत्रुओं को स्वर्ग पहुँचाया ।

वेदार्थं स्वानवेदयत्—आत्मीय जनों को वेद का अर्थ समझाया।
आशयच्चामृतं देवान्—देवों को अमृत पिलाया।
वेदमध्यापयद्विधिम्—ब्रह्मा को वेद पढ़ाया।
आसयत्सलिले पृथ्वीम्—पृथ्वी को जल में स्थित किया।
यः स मे श्रीहरिर्गतिः—वह भगवान मेरे लिए शरण हैं।
पाचयत्योदनं देवदत्तेन—देवदत्त से भात पकवाता है।
गमयति देवदत्तेन यज्ञदत्तं विष्णुमित्रः—विष्णुमित्र यज्ञदत्त को भेजने के लिए देवदत्त को प्रेरित करता है।
नाययति वाहयति वा भारं भृत्येन—नौकर से बोझ पहुँचवाता है।
वाहयति रथं वाहान् सूतः—सूत घोड़ों से रथ खिंचवाता है।
आदयति खादयति वान्नं वटुना—वटु से भोचन खिलवाता है।
भक्षयत्यन्नं वटुना—वटु से भोजन खिलवाता है।
भक्षयति बलीवर्दान् सस्यम्—बैलों से धान नष्ट करवाता है।
जल्पयति भाषयति वा धर्मं पुत्रं देवदत्तः—देवदत्त पुत्र को धर्म सिखाता है।
दर्शयति हरिं भक्तान्—भक्तों को भगवान् का दर्शन कराता है।
स्मारयति घ्रापयति देवदत्तेन—देवदत्त को स्मरण कराता या सुँघाता है।
मासमासयति देवदत्तम्—देवदत्त को महीने भर ठहराता है।
देवदत्तेन पाचयति—देवदत्त से पकवाता है।
हारयति कारयति वा भृत्यं भृत्येन वा कटम्—नौकर से चटाई बनवाता या लिवा जाता है।
अभिवादयते दर्शयते देवं भक्तं भक्तेन वा—भक्त को भगवान् को दिखलाता या प्रणाम कराता है।
अधिशेते वैकुण्ठं हरिः—हरि वैकुण्ठ में है या बैठते हैं।
अधितिष्ठति— ,, ,,
अध्यास्ते— ,, ,,

अभिनिविशते सन्मार्गम्—सन्मार्ग में लगता है।
पापेऽभिनिवेशः—पाप में आग्रह।
उपवसति, अनुवसति अधिवसति आवसति वा वैकुण्ठं हरिः—हरि वैकुण्ठ में रहते या वास जरते हैं।
वने उपवसति—जंगल में उपवास करता है।
उभयतः कृष्णं गोपाः—कृष्ण के दोनों ओर गोप हैं।
सर्वतः कृष्णम्—कृष्ण के सब ओर।
धिक् कृष्णाभक्तम्—कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है।
उपर्युपरि लोकं हरिः—लोकों के ऊपर हरि हैं।
अध्यधि लोकम्—लोकों के नीचे।
अधोऽधोलोकम्— ,, ,,
अभितः कृष्णम्—कृष्ण के चारों ओर।
परितः कृष्णम्— ,, ,,
ग्रामम् समया—गाँव के समीप।
निकषा लङ्काम्—लंका के समीप।
हा कृष्णाभक्तम्—कृष्ण का अभक्त सोचनीय हैं।
बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित्—भूखे को कुछ अच्छा नहीं लगता।
अन्तरा त्वां मां हरिः—तुम्हारे मेरे बीच हरि हैं।
अन्तरेण हरिं न सुखम्—हरि के विना सुख नहीं।
पर्जन्यो जपमनुप्रावर्षत्—जप के वाद मेघ वरसा।
नदीमन्ववसिता सेना—नदी के किनारें-किनारे सेना पड़ी है।
अनुहरिं सुराः—देवता हरि से छोटे हैं।
उपहरिं सुराः—देवता हरि से छोटे हैं।
वृक्षं प्रति, अनु, परि वा विद्योतते विद्युत्—विजली वृक्ष की ओर चमकती है।
भक्तो विष्णुं प्रति परि अनु वा—भक्त विष्णु की ओर।
लक्ष्मी हरिं प्रति परिं अनु वा—लक्ष्मी हरि के हिस्से,पड़ी)।
वृक्षं वृक्षं प्रति परि अनु वा सिञ्चति—प्रत्येक वृक्ष को सींचता है।
परिषिञ्चति अग्निम्—अग्नि के चारों ओर सींचता है।
हरिमभि वर्तते—हरि की ओर है।
भक्तो हरिमभि—भक्त हरि की ओर।
देवं देवमभिषिञ्चति—प्रत्येक देवता पर जल चढ़ाता हैं।
यदत्र ममाभिष्यात् तद्दीयताम्—इसमें जो मेरा भाग हो, दो।

कुतोऽध्यागच्छति—कहाँ से आता है।

कुतः पर्यागच्छति— ,, ,,

सुसिक्तम्—खूब खींचा ( प्रशंसा )।

सुस्तुतम्—खूब प्रशंसा की।

सुषिक्तं किं स्यात् तवात्र—तुमने खूब सींचा, परन्तु तुम्हारा क्या लाभ ?

अतिदेवान् कृष्णः—कृष्ण देवों से बड़े हैं।

सर्पिषोऽपि स्यात्—घी का विन्दु भी तो होता।

अपि स्तुयाद् विष्णुम्—विष्णु की स्तुति भी तो करता।

अपि स्तुहि—यदि या हो, स्तुति भी करो।

धिक् देवदत्तम्, अपि स्तुयाद् वृषलम्—देवदत्त को धिक्कार है जो शूद्र की भी स्तुति करे।

अपि सिञ्च, अपि स्तुहि—सींचो और स्तुति करो।

मासं कल्याणी—लगातार महीने भर कल्याणयुक्त।

मासमधीते—महीने भर पढ़ता है।

मासं गुडधानाः—महीने भर गुड़धान ( गुड़ में पागा गया भुना दाना )।

क्रोशं कुटिला नदी—नदी कोस भर तक टेढ़ी है।

क्रोशमधीते—कोस भर तक पढ़ता है।

क्रोशं गिरिः—कोस भर तक पर्वत हैं।

मासस्य द्विरधीते—महीने में दो दिन पढ़ता है।

क्रोशस्यैकदेशे पर्वतः—क्रोस के एक भाग में पर्वत है।

गंङ्गायां घोषः—बिलकुल गङ्गा तट पर अहीरों का गाँव है।

करण ( तृतीया )

रामेण बाणेन हतो बालिः—बालि राम द्वारा बाण से मारा गया।

प्रकृत्या चारुः—सहज सुन्दर है।

प्रायेण याज्ञिकः—प्रायः याज्ञिक हैं।

गोत्रेण गार्ग्यः—गर्ग गोत्र हैं।

समेनैति—सीधा जाता है।

विषमेणैति—टेढ़ा जाता है।

द्विद्रोणेन धान्यं क्रीणाति—दो द्रोण ( १ द्रोण = १६ सेर ) धान खरीदता है।

सुखेन दुःखेन वा याति—सुख अथवा दुःख से जाता है।

अक्षैरक्षान्वा दीव्यति—पासों से जुआ खेलता है।

अह्ना क्रोशेन वानुवोकोऽधीतः—दिन भर में या कोस भर में अनुवाक ( वेद का एक भाग ) पढ़ लिया।

मासमधीतो नायातः—महीने भर पढ़ा, परन्तु आया नहीं।

पुत्रेण सहागतः पिता—पिता पुत्र के साथ आया।

अक्ष्णा काणः—एक आँख का काना।

अक्षि काणमस्य—इसकी आँख कानी हैं।

जटाभिस्तापसः—जटा से तपस्वी मालूम होता है।

पित्रा पितरं वा संजानीते—पिता को जानता हैं।

दण्डेन घटः—दंड से घड़ा (बनता है )।

पुण्येन दृष्टो हरिः—पुण्य से भगवान् का दर्शन हुआ।

अध्ययनेन वसति—पढ़ने के लिए रहता हैं।

अलं श्रमेण—श्रम की आवश्यकता नहीं।

शतेन शतेन वत्सान् पाययति पयः—सौ सौ करके बछड़ों को पानी पिलाता है।

दास्या संयच्छते कामुकः—कामी व्यभिचार के लिए दासी को धन देता है।

भार्यायै संयच्छति—भार्या को धन देता है।

सम्प्रदान ( चतुर्थी )

दानीयो विप्रः—ब्राह्मण दान देने योग्य है।

विप्राय गां ददाति—ब्राह्मण को गाय देता है।

पत्ये शेते—पति के लिए सोती है।

पशुना रुद्रं यजते—पशु से रुद्र का यज्ञ करता है।

हरये रोचते भक्तिः—भगवान् को भक्ति रुचती है।

देवदत्ताय रोचते मोदकः पथि—देवदत्त को मार्ग में लड्डू रुचता है।

गोपी स्मरात् कृष्णाय श्लाघते ह्नुते तिष्ठते शपते वा—गोपी काम से कृष्ण को स्तुति द्वारा, सपत्नियों से छिपाकर, ठहर कर और शपथ खाकर अनुराग दिखाती है।

देवदत्ताय श्लाघते पथि—मार्ग में देवदत्त की प्रशंसा करता है।

भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः—भगवान् भक्त के मोक्ष के ऋणी हैं।

देवदत्ताय शतं धारयति ग्रामे—वह गाँव में देवदत्त का सौ रुपये का ऋणी है।

पुष्पेभ्यः स्पृहयति—वह फूलों को चाहता है।
पुष्पेभ्यो वने स्पृहयति—वह जंगल में फूलों को चाहता है।
पुष्पाणि स्पृहयति—फूलों को चाहता है।
हरये क्रुध्यति—हरि पर क्रोध करता है।
हरये द्रुह्यति—हरि से द्रोह करता है।
हरये ईर्ष्यति—हरि से ईर्ष्या करता है।
हरये असूयति—हरि की निन्दा करता है।
भार्यामीर्ष्यति—पत्नी की ईर्ष्या करता है कि कोई उसे देख न ले।
क्रूरमभिद्रुह्यति—दुष्ट पर क्रुद्ध होता है।
कृष्णाय राध्यति—कृष्ण के शुभाशुभ को देखता है।
विप्राय गां प्रति श्रृणोति आश्रृणोति वा—वह ब्राह्मण को गाय देने की प्रतिज्ञा करता है।
होत्रे अनुगृणाति प्रतिगृणाति वा—अध्वर्यु होता को प्रोत्साहित करता है।
शतेन शताय वा परिक्रीतः—सौ रुपये पर दास खरीदा गया।
मुक्तये हरिं भजति—मुक्ति के लिए हरि को भजता है।
भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते सम्पद्यते जायते वा—भक्ति से ज्ञान होता है।
वाताय कपिला विद्युत्—भूरे रंग की बिजली वायु को सूचित करती है।
ब्राह्मणाय हितम्—ब्राह्मण का कल्याण।
फलेभ्यो याति—फल लाने के लिए जाता है।
नमस्कुर्मो नृसिंहाय—हम प्रसन्न करने के लिए नृसिंह को नमस्कार करते हैं।
स्वयंभुवे नमस्कृत्य—ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए नमस्कार करके।
यागाय याति—यज्ञ करने के लिए जाता है।
हरये नमः—हरि को नमस्कार है।
नमस्करोति देवान्—देवों को नमस्कार करता है।
अग्नये स्वाहा—यह ( हवि ) अग्नि के लिए।
पितृभ्यः स्वधा—यह ( पिण्ड, जल ) पितरों के लिए।
दैत्येभ्यो हरिरलं प्रभुः समर्थः शक्तः—दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त, प्रभु तथा समर्थ हैं।

तस्मै प्रभवति—उसके लिए समर्थ है।
स एषां ग्रामणी—वह इनका मुखिया है।
वषट् इन्द्राय—यह इन्द्र के लिए।
स्वस्ति गोभ्यो भूयात्—गायों का कल्याण हो।
न त्वां तृणं मन्ये तृणाय वा—मैं तुमको तृण भी नहीं समझता।
न त्वां तृणं मन्ये—मैं तुमको तृण भी नहीं समझता।
न त्वां शुनं मन्ये—,, कुत्ता ,,
न त्वां नावं मन्ये—,, नौका ,,
ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति—वह गाँव जाता है।
मनसा हरिं भजति—मन से हरि के पास जाता है।
पन्थानं गच्छति—वह रास्ते में जाता है।
उत्पथेन पथं गच्छति—कुमार्ग से मार्ग पर जाता है।

## ( अपादान ) पञ्चमी

धावतोऽश्वात्पतति—दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।
वृक्षस्य पर्णं पतति—पेड़ का पत्ता गिरता है।
पापाज्जुगुप्सते, विरमति—पाप से घृणा करता या अलग होता है।
धर्मात्प्रमाद्यति—धर्म से चूकता है।
चौराद् बिभेति—चोर से डरता है।
चौरात्त्रायते—चोर से रक्षा करता है।
अरण्ये बिभेति त्रायते वा—जंगल में डरता या रक्षा करता है।
अध्ययनात्पराजयते—अध्ययन से हार मानता है।
शत्रून्पराजयते—शत्रुओं को जीतता है।
यवेभ्यो गां वारयति—जौ से गाय को हटाता है।
यवेभ्यो गां वारयति क्षेत्रे—खेत में जौ से गाय को हटाता है।
मातुर्निलीयते कृष्णः—कृष्ण माता से हिलते हैं।
चौरान्न दिदृक्षते—चोरों को देखना नहीं चाहता।
देवदत्ताद् यज्ञदत्तो निलीयते—यज्ञदत्त देवदत्त से छिपता है।
उपाध्यायादधीते—अध्यापक से पढ़ता है।
नटस्य गाथां शृणोति—नट का गाना सुनता है।
ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते—ब्रह्मा से जीव उत्पन्न होते हैं।
हिमवतो गङ्गा प्रभवति—हिमालय से गंगा निकलती है।
प्रासादात्प्रेक्षते—महल से देखता है।
आसनात्प्रेक्षते—आसन से देखता है।

श्वशुराज्जिहेति—श्वशुर को देखकर लज्जित होता है।
कस्मात्त्वम् ? नद्याः—तुम कहाँ से आ रहे हो ? नदी से।
वनाद् ग्रामो योजनं योजने वा—जंगल से गाँव चार कोस पर है।
कार्तिक्या आग्रहायणी मासे कार्तिक की पूर्णिमा से अगहन की पूर्णिमा एक मास है।
अन्यो भिन्न इतरो वा कृष्णात्—कृष्ण से भिन्न।
आराद्वनात्—जंगल के पास या दूर।
ऋते कृष्णात्—कृष्ण के विना या कृष्ण को छोड़ कर।
पूर्वो ग्रामात्—गाँव के पूर्व।
चैत्रात्पूर्वः फाल्गुनः—चैत के पहिले फागुन होता है।
पूर्वं कायस्य—शरीर का पूर्व या भाग।
प्राक् प्रत्यग्वा ग्रामात्—गाँव के पूर्व या पश्चिम।
दक्षिणा ग्रामात्—गाँव के दक्खिन।
दक्षिणाहि ग्रामात्— ,,
भवात्प्रभृति आरभ्य वा सेव्यो हरिः—जन्म से लेकर हरि की सेवा करनी चाहिये।

ग्रामाद्बहिः—गाँव के बाहर।
अपहरेः परिहरेः संसारः—हरि के छोड़ कर संसार है।
हरिं परि—हरि की ओर।
आमुक्तेः संसारः—मुक्ति तक संसार है।
आसकलाद् ब्रह्म—ब्रह्म सब वस्तुओं में है।
प्रद्युम्नः कृष्णात्प्रति—प्रद्युम्न कृष्ण के प्रतिनिधि है।
तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्—तिल से उड़द बदलता है।
शताद् बद्धः—सौ रुपये के ऋण से बँधा है।
शतने बन्धितः—सौ रुपये के ऋण से वह कारागार में है।
जाड्याज्जाड्येन वा बद्धः—मूर्खता से बँधा है।
धनेन कुलम्—धन से कुल है।
बुद्ध्या मुक्तः—वुद्धि से मुक्त हुआ।
धूमादग्निमान्—धुएँ से आग वाला।
नास्ति घटोऽनुपलब्धेः—न मिलने से घट नहीं है।
पृथग्रामेण रामाद् रामं वा—राम से भिन्न या राम को छोड़ कर।
स्तोकेन स्तोकाद्वा मुक्तः—थोड़े में छूट गया, सरलता से छूट गया।

स्तोकेन विषेण हतः—थोड़े से विष से मारा गया।
ग्रामस्य दूरम् दूराद् दूरेण वा—गाँव से दूर।
,, अन्तिम् अन्तिकात् अन्तिकेन वा—गाँव के समीप।
दूरः पन्थाः—दूर मार्ग।

### सम्बन्ध ( षष्ठी )

राज्ञः पुरुषः २-३-५०—राजा का आदमी।
सतां गतम्—सज्जनों का जाना।
सर्पिषो जानीते—वह घी के विषय में जानता है अर्थात् घी का मूल्य, बनावट तथा गुण आदि सभी विषयों को जानता है।
मातुः स्मरति—माता को याद करता है।
एधोदकस्योपस्कुरुते—ईंधन जल को अच्छा वनाता है अर्थात् उसे शुद्ध या गर्म करता है।
भजे शम्भोश्चरणयोः—शम्भु के चरणों की पूजा करता हूँ।
फलानां तृप्तः—फलों से संतुष्ट।
अन्नस्य हेतोर्वसति २-३-२६—भोजन के लिए रहता है।
केन हेतुना वसति २-३-२७—किस कारण रहता है।
कस्य हेतोः ,, ,,
किं निमित्तं वसति ,, ,,
केन निमित्तेन ,, ,,
कस्मै निमित्ताय ,, ,,
किं कारणम् ,, ,,
को हेतुः ,, ,,
किं प्रयोजनम् ,, ,,
ज्ञानेन निमित्तेन हरिः सेव्यः—ज्ञान के लिए भगवान् की सेवा करनी चाहिए।

ज्ञानाय निमित्ताय ,, ,,
ग्रामस्य दक्षिणतः २-३-३०—गाँव के दक्खिन।
पुरः, पुरस्तात् ,, आगे।
उपरि, उपरिष्टाद् ,, ऊपर।
दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा २-३-३१—गाँव के दक्खिन।
एवमुत्तरेण ,, ,, उत्तर।
दूरं निकटं ग्रामस्य ग्रामाद्वा २-३-३४—गाँव से दूर या गाँव के पास।

सर्पिषो ज्ञानम् २-३-५१—( तेल को ) घी समझना।

सर्पिषोदयनम् , ईशनं वा २-३-५२—घी का देना ।
मातुः स्मरणम् ,, माता की याद ।
एधोदकस्योपस्करणम् २-३-५३—ईंधन का जल में नवीन गुण उत्पन्न करना ।
चौरस्य रोगस्य रुजा२-३-५४—रोग चोर को पीडित करता है ।
रोगस्य चौरज्वरः चौरसन्तापो वा—रोग के कारण चोर को ज्वर या जलन ।
सर्पिषो नाथनम् २-३-५५—घी का आशीस, घी पाने की प्रार्थना ।
माणवकस्य नाथनम्—लड़के से प्रार्थना या विनय ।
चौरस्योज्जासनम् २-३-५६—चोर को मारना, आहत करना ।
चौरस्य निप्रहणनम् प्रणिहननम् निहननम् प्रहणनम् वा—चोर को मारना ।
चौरस्योत्क्राटनम्—चोर को मारना ।
चौरस्य क्राथनम्— ,,
वृषलस्य पेषणम्—शूद्र को पीसना, मारना ।
धानापेषणम्—भुने हुए जौ को पीसना ।
शतस्य व्यवहरणं पणनं वा २-३-५७—सौ रुपयों का व्यवहार करना या बाजी लगाना ।
शलाकाव्यवहारः ,, शलाका ( पासों ) का गिनना ।
ब्राह्मणपणनम् ,, ब्राह्मणों की स्तुति या प्रशंसा ।
शतस्य दीव्यति २-३-५८—वह सौ रुपये का व्यवहार करता या बाजी लगाता है ।
ब्राह्मणं दीव्यति ,, ब्राह्मण की स्तुति करता है ।
शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति २-३-५९—वह सौ रुपयों का व्यवहार करता या बाजी लगाता है ।
अग्नये छागस्य हविषो वपाया मेदसः प्रेष्य अनुब्रूहि वा—२-३-६१—हे मैत्रावरुण ! अग्नि को छाग हवि, चर्वी तथा मेदा दीजिये ।
पञ्चकृत्वोऽह्नो भोजनम् २-३-६४—दिन में पाँच बार भोजन ।
द्विरह्नो भोजनम् ,, दिन में दो बार भोजन ।
द्विरह्नन्यध्ययनम् ,, दिन में दो बार पढ़ना ।

कृष्णस्य कृतिः२-३-६५—कृष्ण का कार्य ।
जगतः कर्ता कृष्णः—कृष्ण संसार के कर्ता हैं ।
नेताऽश्वस्य स्रुघ्नस्य स्रुघ्नं वा—घोड़े को स्रुघ्न ले जाने वाला ( है ) ।
कृतपूर्वी कटम् ,, जिसने पहिले चटाई बनाई हो ।
आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन २-३-६६—गोपेतर से गाय दुहना आश्चर्य है ।
भेदिका बिभित्सा वा रुद्रस्य जगतः ,, रुद्र का जगत् को नष्ट करना अथवा करने की इच्छा ।
विचित्रा जगतः कृतिर्हरेर्हरिणा वा ,, भगवान् द्वारा संसार की रचना आश्चर्यजनक है ।
शब्दानामनुशासनमाचार्येणाचार्यस्य वा—आचार्यद्वारा शब्दों का विवरण ।
राज्ञां मतो बुद्धः पूजितो वा २-३-६७—राजाओं द्वारा पूजित आहृत ।
इदमेषामासितं शयितं गतं भुक्तं वा २-३-६८—यह उनका बैठना, सोना, जाना, खाना ।
हरिं दिदृक्षुः अलङ्करिष्णुः वा २-३-६९—हरि को देखने या सुशोभित करने की इच्छा वाला ।
कुर्वन् कुर्वाणो वा सृष्टिं हरिः ,, हरि सृष्टि को करते हुए ।
दैत्यान् घातुको हरिः ,, दैत्यों को मारने वाले भगवान् ।
लक्ष्म्याः कामुको हरिः ,, लक्ष्मी को चाहने वाले हरि ।
जगत् सृष्ट्वा ,, संसार की रचना करके ।
सुखं कर्तुम् ,, सुख करने के लिए ।
विष्णुना हता दैत्याः ,, विष्णु द्वारा दैत्य मारे गये ।

दैत्यान् हतवान् विष्णुः २–३–६९—विष्णु ने दैत्यों को मारा।

ईषत्करः प्रपञ्चो हरिणा „ हरि के लिए संसार की रचना साधारण बात है।

सोमं पवमानः „ सोम को पवित्र करता हुआ।

आत्मानं मण्डयमानः अपना शृंगार करता हुआ।

वेदमधीयन् „ वेद को पढ़ता हुआ।

कर्ता लोकान् „ संसार का बनाने वाला।

मुरस्य मुरं वा द्विषन् „ मुर दैत्य का शत्रु।

ब्राह्मणस्य कुर्वन् „ ब्राह्मण का (काम) करने वाला।

नरकस्य जिष्णुः „ नरकासुर को जीतने वाला।

सतः पालकोऽवतरति २-३-७०—सज्जनों की रक्षा करने वाला जन्म लेता है।

व्रजं गामी „ वह व्रज जाने वाला है।

शतं दायी „ वह सौ रुपया देने वाला है।

मया मम वा सेव्यो हरिः २-३-७१—हरि मेरे सेव्य है।

गेयो माणवकः साम्नाम् „ लड़का सामगान करने वाला है।

नेतव्या व्रजं गावः कृष्णेन „ „—कृष्ण द्वारा गायें व्रज ले जाने योग्य हैं।

तुल्यः सदृशः समो वा कृष्णस्य कृष्णेन वा २–३–७२—कृष्ण के समान।

तुला उपमा वा कृष्णस्य नास्ति „ कृष्ण की समता नहीं है।

आयुष्यं चिरञ्जीवितं कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयात् २-३-७३—कृष्ण चिरजीवी हो।

मद्रं भद्रं कुशलं निरामयं सुखं शम् अर्थः प्रयोजनं हितं पथ्यं वा भूयात्—कृष्ण का कल्याण, हर्ष, सौभाग्य, हित, सुख तथा उन्नति हो।

अधिकरण ( सप्तमी )

कटे आस्ते २-३-३६—चटाई पर बैठा है।

स्थाल्यां पचति „ पतीली में पकाता है।

मोक्षे इच्छाऽस्ति „ मोक्ष की इच्छा है।

सर्वस्मिन्नात्माऽस्ति „ सब में आत्मा है।

वनस्य दूरे अन्तिके वा „ जंगल के समीप या दूर।

अधीती व्याकरणे „ व्याकरण पढा हुआ।

साधुः कृष्णो मातरि असाधुर्मातुले „ कृष्ण माता के साथ सत् तथा मामा के के साथ असद्व्यवहार करते हैं।

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति „ चमड़े के लिए व्याघ्र मारता है।

दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् „ दातों के लिए हाथी „

केशेषु चमरीं हन्ति „ बालों के लिए चौरी गाय „

सीम्नि पुष्कलको हतः „ अण्डकोष के लिए कस्तूरी मृग मारता है अथवा सीमा के लिए लठ्ठा गाड़ता है।

वेतनेन धान्यं लुनाति „ वह मजदूरी से धान काटता है।

गोषु दुह्यमानासु गतः २-३-३७—वह गायों के दुहे जाने पर गया।

सत्सु तरत्सु असन्त आसते „ सज्जनों के पार होने पर दुर्जन बैठे रहते हैं।

असत्सु तिष्ठत्सु सन्तस्तरन्ति „ दुर्जनों के बैठ रहने पर सज्जन पार होते हैं।

सत्सु तिष्ठत्सु सन्तस्तरन्ति „ सज्जनों के बैठे रहने पर दुर्जन पार होते हैं।

असत्सु तरत्सु सन्तस्तिष्ठन्ति „ —दुर्जनों के पार होने पर सज्जन बैठे रहते है।

रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत् २-३-३८—उसके रोने पर भी वह सन्यासी हो गया।

गवां गोषु वा स्वामी २-३-३९—गायों का मालिक।

गवां गोषु वा प्रसूतः „ गायों के लिए उनकी सेवा करने के लिए पैदा हुआ।

आयुक्तः कुशलो वा हरिपूजने हरिपूजनस्य वा २-३-४०—भगवान् की पूजा में लीन।

आयुक्तो गौः शकटे २-३-४०—गाड़ी में कुछ जुता हुआ बैल।

नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः २-३-४१—मनुष्यों में ब्राह्मण यथेष्ठ हैं।

गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा ,, गायों में काली गाय अधिक दूध वाली हैं।

गच्छतां गच्छत्सु वा धावन्छीघ्रः ,, चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्रगामी है।

छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः ,, छात्रों में मैत्र कुशल हैं

माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आढ्यतराः २-३-४२—मथुरा निवासी पटना निवासियों से धनी हैं।

मातरि साधुर्निपुणो वा २-३-४३—माता के प्रति सज्जन।

निपुणो राज्ञो भृत्यः ,, राजा का नौकर चतुर है।

साधुर्निपुणो वा मातरं प्रति पर्यनु वा २-३-४३—माता के प्रति सज्जन।

प्रसित उत्सुको हरिणा हरौ वा २-३-४४—हरि में आसन्द।

मूलेनावाहयेद् देवीम् २-३-४५—मूल में सरस्वती का आवाहन करे।

श्रवणेन विसर्जयेत् ,, और श्रवण में विसर्जन करना चाहिए।

पुष्ये शनिः ,, पुष्य में शनि।

अद्य भुक्त्वायं द्व्यहे द्व्यहाद्वा भोक्ता २-३-७—यह आज खाकर दो दिन पर भोजन करता है।

इहस्थोऽयं क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विध्येत् ,, यह यहां बैठ कर कोश भर पर निशाना मार सकता है।

लोके लोकाद्वा अधिको हरिः ,, हरि संसार में सबसे बड़े हैं।

उपपरार्धे हरेर्गुणाः २-३-९—हरि के गुण दस अरब से भी अधिक है।

अधिभुवि रामः ,, राम संसार के स्वामी हैं।

अधिरामे भूः ,, राम संसार के स्वामी हैं।

यदत्र मामधिकरिष्यति १-४-९८—इसमें जो मुझको नियुक्त करेगा।

इति कारकप्रकरणम्।

# समासप्रकरणम्

## अथाव्ययीभावः

पर्यभूषत् २-१-४—अच्छी तरह अलंकृत किया ।

अनुव्यचलत् ,, —पीछे चला ।

भूतपूर्वः २-४-७१—पहिले हुआ या रहा ।

जीमूतस्येव ,, मेघ या इन्द्र के समान ।

अपदिशम् २-१-६—दो दिशाओं के मध्य ।

अधिहरि ,, हरि अथवा विष्णु में ।

अधिगोपम् ,, गोपालक में ।

उपकृष्णम् ,, कृष्ण के समीप ।

सुमद्रम् ,, मद्रों का ऐश्वर्य ।

दुर्यवनम् ,, यवनों की बुरी दशा ।

निर्मक्षिकम् ,, जहाँ मक्खियों का भी पूर्णतया अभाव हो, निर्गुण स्थान ।

अतिहिमम् ,, शीतकाल का अन्त ।

अतिनिद्रम् ,, शयन काल के पश्चात्, जागने का समय ।

इतिहरि ,, हरि शब्द का उच्चारण, हरिकीर्तन ( वैष्णवानां गृहे इतिहरि वा ते ) ।

अनुविष्णु ,, विष्णु के बाद ।

अनुरूपम् ,, समुचित प्रकार से ।

प्रत्यर्थम् ,, अनेक विषय में ।

यथाशक्ति ,, शक्ति के अनुसार ।

सहरि ,, हरि के समान ।

अनुज्येष्ठम् ,, ज्येष्ठता ( बड़ाई ) के अनुसार ।

सचक्रम् ६-३-८१—पहिया के साथ-साथ ।

सहपूर्वाह्णम् ,, पूर्वाह्ण के साथ ।

ससखि ,, मित्र के समान ।

सक्षत्रम् ,, जैसा योद्धा को होना चाहिए उस प्रकार ।

सतृणम् ,, तिनके को भी न छोड़कर ।

साग्नि ,, अग्निप्रकरण तक ।

यावच्छ्लोकम् २-१-८—जितने श्लोक हैं उतनी बार ।

शाकप्रति २-१-९—बहुत थोड़ा शाक

शलाकापरि २-१-१०—शलाका को विपरीत फेंककर पराजय ।

अक्षपरि ,, पासे को ,, ,,

एकपरि ,, पासे को एक बार फेंक कर हारना ।

अपविष्णु २-१-१२—विष्णु से दूर ।

परिविष्णु ,, विष्णु को छोड़कर ।

बहिर्वनम् ,, जंगल के बाहर ।

प्राग्वनम् ,, जंगल के पूर्व ।

आमुक्ति २-१-१३—जब तक मलिन हो तब तक, मुक्ति पर्यन्त ।

आबालम् ,, बालकों तक ।

अभ्यग्नि २-१-१४—अग्नि की ओर ।

प्रत्यग्नि ,, ,,

अनुवनमशनिर्गतः २-१-१५—जंगल के पास बिजली गई ।

अनुगङ्गं वाराणसी २-१-१६—गङ्गा के किनारे-किनारे काशी स्थित है ।

तिष्ठद्गु २-१-१७—जिस समय गाय खड़ी रहें, गाय दुहने का समय ।

आयतीगवम् ,, जिस समय गाय आती हों, सायंकाल ।

पारेगङ्गात् २-१-१८—गङ्गा के पार से ।

गङ्गापारात् ,, ,,

मध्येगङ्गात् ,, गंगा के मध्य में ।

गङ्गामध्यात् ,, ,,

द्विमुनि २-१-१९—जिस वंश के दो मुनि हों ।

त्रिमुनि व्याकरणम् ,, जिस व्याकरण के कर्ता तीन मुनि हों ।

एकविंशतिभारद्वाजम् ,, जिस वंश के इक्कीस भारद्वाज हों ।

सप्तगङ्गम् २-१-२०—सात गङ्गाओं का सङ्गम ।

द्वियमुनम् ,, दो यमुनाओं का सङ्गम ।

उन्मत्तगङ्गम् २-१-२१—जिस देश में गंगा उमड़ कर बहती हों।

लोहितगङ्गम् ,, ,, ,, लाल हों।

उपशरदम् ५-४-१०७—शरद् ऋतु के समीप।

प्रतिविपाशम् ,, व्यास नदी के समीप।

उपजरसम् ,, वृद्धावस्था के समीप।

प्रत्यक्षम् ,, आँखों के सामने।

परोक्षम् ,, आँखों से ओझल।

समक्षम् ,, आँखों के सामने।

अन्वक्षम् ,, आँखों के पीछे।

उपराजम् ५-४-१०८—राजा के समीप।

अध्यात्मम् ,, आत्मा के विषय में।

उपचर्मम् ५-४-१०९—चमड़े के समीप।

उपचर्म ,, ,,

उपनदम् ५-४-११०—नदी के समीप।

उपनदि ,, ,,

उपपौर्णमासम् ,, पूर्णिमा के समीप।

उपपौर्णमासि ,, ,,

उपाग्रहायणम् ,, अगहन की पूर्णिमा के समीप।

उपाग्रहायणि ,, ,, ,,

उपसमिधम् ५-४-१११—समिधि के समीप।

उपसमित् ,, ,,

उपगिरम् ५-४-११२—पर्वत के समीप।

उपगिरि ,, ,,

इत्यव्ययीभावः।

## अथ तत्पुरुषप्रकरणम्

पञ्चराजम् २-१-२२,२३—पाँच राजा।

कृष्णश्रितः २-१-२४—जिसने कृष्ण का सहारा (आश्रय) लिया हो।

दुःखातीतः ,, दुःख को त्यागे हुए।

कूपपतितः ,, कुँए में गिरा हुआ।

ग्रामगतः ,, गाँव गया हुआ।

तुहिनात्यस्तः ,, जिसने वर्फ को पार कर लिया है।

सुखप्राप्तः ,, सुख को प्राप्त करने वाला।

दुःखापन्नः ,, दुःख पाने वाला।

ग्रामगमी ,, गाँव जाने वाला।

ग्रामगमी ,, ,,

अन्नं बुभुक्षुः ,, अन्न खाने वाला।

स्वायंकृतिः २-१-२५—स्वयं कार्य किये हुए का पुत्र।

खट्वारूढो जाल्मः २-१-२६—सदा चारपाई पर पड़ा रहने वाला, मूर्ख, आलसी।

सामिकृतम् २-१-२७—आधा किया हुआ।

मासप्रमितः प्रतिपच्चन्द्रः २-१-२८—मास के प्रारम्भ को सूचित करने वाला, प्रतिपदा का चन्द्र।

मुहूर्तसुखम् २-१-२९—क्षणिक सुख।

शंकुलाखण्डः २-१-३०—सरौते या चाकू से खण्ड किया हुआ।

धान्यार्थः ,, अन्न से अर्जित धन।

अक्ष्णा काणः ,, एक आँख का काना।

मासपूर्वः २-१-३१—एक महीना पहिले।

मातृसदृशः ,, माता के समान।

पितृसमः ,, पिता के समान।

माषोनं कार्षापणम् ,, एक मासा कम कार्षापण (सोलह मासे का सिक्का।)

माषविकलम् ,, एक मासा कम।

वाक्कलहः ,, मौखिक झगड़ा, वाद विवाद।

आचारनिपुणः ,, आचार विचार में कुशल।

गुडमिश्रः ,, गुड़ मिला हुआ।

आचारश्लक्ष्णः ,, आचार में शिष्ट।

गुडसंमिश्राः धानाः ,, गुड़ में पागया हुआ भुना जौ।

मासावरः ,, एक महीने से छोटा।

हरित्रातः २-१-३२—हरि से बचाया गया।

नखभिन्नः २–१–३२—नाखून से काटा या तोड़ा गया।
नखनिर्भिन्नः ,, ,, ,,
काकपेया नदी २–१–३४—भरी हुई नदी, इतनी भरी हुई कि कौआ भी तट पर बैठकर अपनी चोंच जल में डाल कर जल पी सके।
वातच्छेद्यं तृणम् ,, पतला तिनका, इतना पतला कि हवा से भी टूट जाय।
दध्योदनः २–१–३४—दही मिलाकर स्वादिष्ट बनाया गया भात।
गुडधानाः २–१–३५—गुड़ में पागा हुआ भुना जौ।
यूपदारुः २–१–३६—यज्ञ के स्तम्भ के लिए लकड़ी।
द्विजार्थः सूपः ,, द्विज के लिए दाल।
द्विजार्था यवागूः ,, द्विज के लिए लप्सी।
द्विजार्थं पयः ,, द्विजके लिए दूध या जल।
भूतबलिः ,, भूतों के लिए बलि।
गोहितम् ,, गाय के लिए लाभदायक।
गोसुखम् ,, ,, सुखदायक।
गोरक्षितम् ,, ,, बचाया गया।
चोरभयम् २-१-३७—चोर का डर।
वृकभीतः ,, भेड़िये का डर।
वृकभीतिः ,, ,,
वृकभीः ,, ,,
सुखापेतः २-१-३८—सुख से रहित।
कल्पनापोढः ,, कल्पना से ले जाया गया।
चक्रमुक्तः ,, पहिये से छूटा हुआ।
स्वर्गपतितः ,, स्वर्ग से गिरा हुआ।
तरङ्गापत्रस्तः ,, तरङ्गों से डरा हुआ।
प्रासादात्पतितः ,, महल से गिरा हुआ।
स्तोकान्मुक्तः २-१-३९—थोड़ी दूर से छूटा हुआ।
अल्पान्मुक्तः ,, थोड़े से छूटा हुआ।
अन्तिकादागतः ,, समीप से आया हुआ।
अभ्याशादागतः ,, ,,
दूरादागतः ,, दूर से आया हुआ।
विप्रकृष्टादागतः ,, दूर से आया हुआ।
कृच्छ्रादागतः ,, कठिनता से आया हुआ।

राजपुरुषः २-८—राजा का आदमी।
ब्राह्मणयाजकः २-२-९—ब्राह्मण का यज्ञ कराने वाला।
देवपूजकः ,, देवता की पूजा करने वाला।
सर्वश्वेतः ,, सबसे श्वेत।
सर्वमहान् ,, सबसे बड़ा।
इध्मव्रश्चनः ,, ईंधन काटने वाली (कुल्हाड़ी)।
नृणां द्विजः श्रेष्ठः २-२-१०—मनुष्यों में द्विज सर्वश्रेष्ठ।
सर्पिषो ज्ञानम् ,, घी का ज्ञान।
सतां षष्ठः २-२-११—सज्जनों में छठा।
काकस्य कार्ष्ण्यम् ,, कौए की कालिमा।
ब्राह्मणस्य शुक्लः ,, ब्राह्मण का श्वेत।
अर्थगौरवम् ,, अर्थ का गौरव।
बुद्धिमान्द्यम् ,, बुद्धि की मन्दता, जड़ता।
फलानां सुहितः ,, फलों से तृप्त।
द्विजस्य कुर्वन् कुर्वाणो वा ,, ब्राह्मण का नौकर।
ब्राह्मणस्य कृत्वा ,, ब्राह्मण का करके।
ब्राह्मणस्य कर्तव्यम् ,, ब्राह्मण का कर्तव्य।
स्वकर्त्तव्यम् ,, अपना कर्तव्य।
तक्षकस्य सर्पस्य ,, तक्षक नाम के सर्प का।
राज्ञां मतो बुद्धःपूजितो वा २-२-१२—राजा का चाहा हुआ, जाना हुआ अथवा पूजित।
इदमेषामासितं गतं भुक्तं वा २-२-१३—इनका यह बैठना, जाना अथवा खाना।
आश्चर्यं गवां दोहोऽगोपेन २-२-१४—गोपेतर से गायों का दुहा जाना आश्चर्य है।
अपां स्रष्टा २-२-१५—जल की सृष्टि (रचना) करने वाला।
वज्रस्य भर्ता ,, वज्र धारण करने वाला।
ओदनस्य पाचकः ,, भात पकाने वाला।
इक्षुभक्षिका ,, ईख चूसना।
भूभर्ता ,, पृथ्वी का पालन करने वाला।
भवतः शायिका २-२-१७—आप का शयन, विराम या शान्ति।
उद्दालकपुष्पभञ्जिका ,, पूर्वी भारत का एक प्राचीन खेल जिसमें लिसोड़ा के फूल तोड़े जाते थे।

दन्तलेखकः २–२–१७—दाँतों को रंगकर जीविकोपार्जन करने वाला ।
पूर्वकायः २-२-१—शरीर का अगला भाग ।
अपरकायः ,, शरीर का पिछला भाग ।
पूर्वंनाभेः कायस्य ,, नाभि के पहिले शरीर का भाग ।
पूर्वश्छात्राणाम् ,, छात्रों का प्रधान ।
मध्याह्नः ,, दोपहर ।
सायाह्नः ,, सायंकाल ।
मध्यरात्रः ,, आधी रात ।
अर्धपिप्पली २-२-२—पीपर का आधा ।
ग्रामार्धः ,, गाव का आधा ।
द्वितीयभिक्षा २-२-३—भिक्षा का दूसरा भाग ।
द्वितीयं भिक्षाया भिक्षुकस्य ,, भिक्षुक की भीख का दूसरा भाग ।
भिक्षाद्वितीयम् ,, दूसरी बार भीख मांगना ।
प्राप्तजीविकः २-२-४—जिसको जीविका मिल गई हो ।
जीविकाप्राप्तः ,, ,,
आपन्नजीविकः ,, ,,
जीविकापन्नः ,, ,,
प्राप्तजीविका ,, जिस स्त्री को भिक्षा मिल गई हो
आपन्नजीविका ,, ,,
मासजातः २-२-५—जिस व्यक्ति को जन्म लिए एक मास हो गया हो ।
द्व्यहजातः ,, ,, दो दिन ।
द्व्यह्नजातः ,, ,, ,,
अक्षशौण्डः २-१-४०—पासा के खेल में निपुण ।
ईश्वराधीनः ,, ईश्वर के अधीन ।
साङ्काश्यसिद्धः २-१-४१—सांकाश्य (संकसिया) में तैयार हुआ ।
आतपशुष्कः ,, धूप में सूखा हुआ ।
स्थालीपक्वः ,, पतीली में पका हुआ ।
चक्रवन्धः ,, पहिये में बँधा हुआ ।
तीर्थध्वाङ्क्षः २-१-४२—तीर्थ में कौए की तरह । जिस प्रकार कौआ तीर्थ में जाकर चिर काल तक वहाँ नहीं ठहरता इसी प्रकार जो विद्यार्थी गुरुकुल में चिरकाल तक नहीं ठहरता उसको तीर्थध्वांक्ष कहते हैं ।
मासे देयम् ऋणम् २-१-४३—महीने भर में लौटा दिया जाने वाला ऋण ।
पूर्वाह्णे गेयं साम ,, दोपहर के पहिले गाया जाने वाला साम ।
अरण्ये तिलकाः २-१-४४—जंगली तिल । ऐसा व्यक्ति या वस्तु जिससे किसी की आशा की पूर्ति न हो ।
वने कसेरुकाः २–१–४४—जो वस्तु अकस्मात् मिल जाय ।
पूर्वाह्णकृतम् २–१–४५—दोपहर के पहिले किया गया ।
अपररात्रकृतम् ,, रात्रि के अन्तिम भाग में किया गया ।
अह्निदृष्टम् ,, दिन में देखा गया ।
तत्रभुक्तम् २–१–४६ वहाँ खाया गया ।
अवतप्ते नकुलस्थितं त एतत् २–१–४७—जिस प्रकार तप्त प्रदेश में नेवले चिर काल तक नहीं ठहरते उसी प्रकार जो किसी कार्य को प्रारंभ कर उसको बिना पूरा किए इधर उधर दौड़ता है उस अव्यवस्थित अथवा चपल व्यक्ति के लिए यह कहा जाता है ।
पात्रेसंमिताः २–१–४८—भोजन पात्र रक्खे जाने पर सम्मिलित होने वाले, स्वार्थी ।
गेहेशूरः ,, घर में वीर न कि युद्ध में ।
गेहेनर्दी ,, घर में गर्जने वाला न कि युद्ध में ।
परमाः पात्रे समिताः ,, बहुत बड़े स्वार्थी ।
स्नातानुलिप्तः २–१–४९—पहिले स्नान करके बाद में लेप लगाने वाला ।
एकनाथः ,, मुख्य स्वामी ।
सर्वयाज्ञिकाः ,, समस्त यज्ञ करने वाले ।

जरन्नैयायिकाः २–१–४९—वुड्ढे नैयायिक ( न्याय जानने वाले )
पुराणमीमांसकाः ,, पुराने मीमांसक ( मीमांसा जानने वाले )
नवपाठकाः ,, नवीन पढ़ने वाले ।
केवलवैयाकरणाः ,, केवल व्याकरण शास्त्रके ज्ञाता ।
पूर्वेषुकामशमी २–१–५०—पूर्वी भारत का इषुकामशमी गाँव ।
सप्तर्षयः ,, सात ऋषि ।
पौर्वशालः २–१–५१—पूर्व के कमरे में होने या रहने वाला ।
पूर्वशालाप्रियः ,, जिसको पूर्व का कमरा प्रिय हो ।
षाण्मातुरः ,, छः माताओं का पुत्र, कार्तिकेय ।
पञ्चगवधनः ५–४–९२—जिसका धन पाँच गाय है ।
पञ्चगवम् २–१–५२—पाँच गाय ।
वैयाकरणखसूचिः २–१–५३—किसी प्रश्न के पूछे जाने पर आकाश की ओर देखने वाला अज्ञ वैयारण ।
मीमांसकदुर्दुरूढः ,, मीमांसा शास्त्र के मर्म को न जानकर व्यर्थ वाद करने वाला मूर्ख मीमांसक ।
पापनापितः २–१–५४—घृणित नाई ।
अणककुलालः ,, घृणित कुम्हार ।
घनश्यामः २–१–५५—बादल की तरह काले कृष्ण ।
पुरुषव्याघ्रः २–१–५६—व्याघ्र की तरह (बलवान्) मनुष्य ।
नृसोमः ,, चन्द्रमा के समान मनुष्य (दर्शनीय)
नीलोत्पलम् २–१–५७ – नील कमल ।
कृष्णसर्पः ,, काला साँप ।
पूर्ववैयाकरणः २–१–५८—पहिले का (प्राचीन) वैयाकरण ।
अपराध्यापकः ,, नवीन वैयाकरण ।
पश्चार्धः ,, निचला आधा भाग ।
श्रेणिकृताः २–१–५९—जो पहिले क्रमबद्ध नहीं थे उनको क्रमवद्ध कर दिया गया ।
कृताकृतम् २–१–६०—किया और नहीं किया ।
शाकपार्थिवः ,, शाक का प्रेमी राजा ।
देवब्राह्मणः ,, देवपूजक ब्राह्मण ।

सद्वैद्यः २–१–६१—उत्तम, कुशल वैद्य ।
महावैयाकरणः ,, महान् वैयाकरण ।
उत्कृष्टो गौः ,, ( कीचड़ से ) निकाला गया बैल ।
गोवृन्दारकः २–१–६२—उत्तम बैल अथवा गाय ।
कतरकठः २–१–६३—दोनों में से कौन कठशाखा का है ।
कतमकलापः ,, इनमें से कौन कलाप शाखा है ।
किंराजा २–१–६४—निन्दनीय राजा ।
महानवमी १–२–४२—चैत्र या आश्विन मास की नवमी ।
कृष्णचतुर्दशी ६–३–४२—कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी ।
महाप्रिया ,, अत्यन्त प्यारी ।
पाचकस्त्री ,, पाचक की स्त्री ।
दत्तभार्या ,, दी गई भार्या ।
पञ्चमभार्या ,, पाँचवीं भार्या ।
स्रौघ्नभार्या ,, स्रुघ्न ( वर्तमान सुध ) नगर की भार्या ।
सुकेशभार्या ,, सुन्दर बाल वाली भार्या ।
ब्राह्मणभार्या ,, ब्राह्मणपत्नी ।
पाचकजातीया ,, पकाने वाली स्त्री ।
पाचकदेशीया ,, ,,
इभपोटा २–१–६५—युवती हथिनी ।
इभयुवतिः ,, ,, हथिनी ।
अग्निस्तोकः ,, थोड़ी आग ।
उदश्वित्कतिपयम् ,, थोड़ा मठा ।
गोगृष्टिः ,, पहली बार व्याई हुई गाय ।
गोधेनुः ,, हाल की व्याई हुई गाय ।
गोवशा ,, वन्ध्या गाय ।
गोवेहत् ,, गर्भ गिराने वाली गाय ।
गोवष्कयणी ,, जिस गाय का बछड़ा एक वर्ष का हो गया हो ।
कठप्रवक्ता ,, यजुर्वेद की कठशाखा का पारायण करने वाला ।
कठश्रोत्रियः ,, यजुर्वेद की कठशाखा का श्रोत्रिय ।
कठाध्यापकः ,, यजुर्वेद की कठशाखा पढ़ाने वाला ।
कठधूर्तः ,, यजुर्वेद की कठशाखा का विज्ञ ब्राह्मण ।
गोमतल्लिका २–१–६६—उत्तम गाय ।

गोमचर्चिका २–१–६६—उत्तम गाय ।
गोप्रकाण्डम् " "
गवोद्धः " उत्तम बैल ।
गोतल्लजः " "
कुमारीमतल्लिका " श्रेष्ठ कुमारी ।
युवखलतिः २–१–६७—युवक खल्वाट ।
युवखलती " युवती खल्वाट ।
युवजरती " ऐसी युवती जो देखने में वृद्धा मालूम होती हो ।
भोज्योष्णम् २–१–६८—गर्म भोज्य पदार्थ ।
तुल्यश्वेतः " समान सफेद रंग का ।
सदृशश्वेतः " "
भोज्य ओदनः " भोज्य भात ।
कृष्णसारङ्गः २–१–६९—काला चीतल मृग ।
कडारजैमिनिः २–२–३८—कठिन तप के कारण भूरे रंग के जैमिनि ।
जैमिनिकडारः " कठिन तप के कारण भूरे रंग के जैमिनि ।
कुमारश्रमणा २–१–७०—क्वारी संन्यासिनी भिक्षुकी ।
गोगर्भिणी २–१–७०—गर्भिणी गाय ।
मयूरव्यंसकः २–१–७२—चालाक मोर ।
उच्चावचम् " ऊँची नीची, इधर उधर की ।
निश्चितप्रचितम् " निश्चय की हुई ओर बटोरी हुई ।
अकिंचनः " जिसके पास कुछ भी न हो, निर्धन ।
अकुतोभयः " जिसको किसी का भय न हो, निर्भय ।
राजान्तरम् " दूसरा राजा ।
चिन्मात्रम् " केवल चैतन्यरूप, ब्रह्म ।
अश्नीतपिबता " जहाँ निरन्तर "खाओ पिओ" कहा जाय, भोज ।
पचतभृज्जता " जहाँ निरन्तर "पकाओ, भूनो, तलो" कहा जाय, रसोई घर ।
खादतमोदता " जहाँ निरन्तर "खाओ, मौज करो" कहा जाय, रसोईघर ।

एहीडम् २–१–७२—एक यज्ञ जिसमें निरन्तर "आओ स्तुति करो" कहा जाता है ।
एहिपचम् " जहाँ "आओ, पकाओ" निरन्तर कहा जाय ।
उद्धरोत्सृजा " जिस काम में निरन्तर "निकालो और दो" कहा जाय ।
उद्धमविधमा " जिस काम में "अनेक प्रकार से शंख बजाओ" कहा जाय ।
जहिजोडः " जो व्यक्ति "जोड नाम के व्यक्ति को मारो" बार बार कहे ।
जहिस्तम्बः " जो व्यक्ति "स्तम्ब नाम के व्यक्ति को मारो" बार बार कहे ।
ईषत्पिङ्गलः २–२–७—कुछ भूरा ।
ईषद्रक्तम् " कुछ लाल ।
अब्राह्मणः ६–३–७३—ब्राह्मणेतर ।
अनश्वः ६–३–७४—जो पशु घोड़ा न हो, अश्वेतर ।
अनुपलब्धिः " अप्राप्ति, एक प्रमाण (मीमांसा)
अविवादः " विवाद का अभाव ।
अविघ्नम् " विघ्न का अभाव ।
अपचसि त्वं जाल्म " नीच, तू बुरी तरह पकाता है ।
नैकधा " एक बार नहीं ।
नभ्राट् ६–३–७५—जो चमकता न हो, काला (बादल) ।
नपात् " जो रचा न करता हो ।
नवेदाः " जो न जानता हो ।
नासत्याः " अश्विनीकुमार, देवचिकित्सक ।
नमुचिः " जो न छोड़े, एक राक्षस जिसको इन्द्र ने मारा था ।
नकुलम् " नेवला, जिसका कुल न हो । प्राणिशास्त्र का मत है कि नेवला चतुष्पदों की किसी जाति का प्राणी नहीं है ।
नखम् " जिसमें आकाश ( खाली स्थान ) न हो, नाखून ।
नपुंसकम् " जो स्त्री या पुरुष कोई भी न हो ।
नक्षत्रम् " जो अपने स्थान से न चले । अश्विनी आदि २७ नक्षत्र ।

नक्रम् ६–३–७५—जो (जल से) बहुत दूर न जाता हो।
नाकः ,, जिसमें दुःख न हो, स्वर्ग।
नगाः ६–३–७७—जो चलते न हों, पर्वत, वृक्ष।
अगाः ,, ,,
अगो वृषलः शीतेन ,, वह शूद्र जो शीत के कारण न चलता हो।
कुपुरुषः २–२–१८—निन्दनीय, दुष्ट मनुष्य।
उरीकृत्य १–४–६१—स्वीकार करके।
शुक्लीकृत्य ,, सफेद करके।
पटपटाकृत्य ,, पट पट शब्द करके।
कारिकाकृत्य ,, काम करके।
खाट्कृत्य १–४–६२—खट् शब्द करके।
खाडिति कृत्वा निरष्ठीवत् ,, उसने खट् शब्द करके थूक दिया।
सत्कृत्य १–४–६३—सत्कार करके।
असत्कृत्य ,, अनादर करके।
अलंकृत्य १–४–६४—सजा करके।
अलंकृत्वौदनं गतः ,, वह पर्याप्त भात खाकर गया।
अन्तर्हत्य १–४–६५—मध्य में मार कर।
अन्तर्हत्वा गतः ,, मारे हुए को लेकर चला गया।
कणेहत्य पयः पिबति १-४-६६—वह पेट भर दूध पीता है।
मनोहत्य ,, पेट भर।
पुरस्कृत्य १–४–६७—आगे करके।
अस्तंगत्य १–४–६८—उस तरफ जाकर।
अच्छगत्य १–४–६९—सामने जाकर।
अच्छोद्य ,, सामने कहकर।
जलमच्छं गच्छति ,, निर्मल जल बहता है।
अदःकृत्य १–४–७०—यह करके।
अदःकृतम् ,, यह किया।
अदः कृत्वा ,, यह करके।
तिरोभूय १–४–७१—छिपकर।
तिरःकृत्य १–४–७२—अनादर करके।
तिरस्कृत्य ,, ,,
तिरः कृत्वा ,, ,,

उपाजेकृत्य १–४–७३—सहारा अथवा सहायता देकर।
उपाजे कृत्वा ,, ,, ,,
अन्वाजेकृत्य ,, ,, ,,
अन्वाजे कृत्वा ,, ,, ,,
साक्षात्कृत्य १–४–७४—प्रत्यक्ष करके।
साक्षात्कृत्वा ,, ,,
लवणंकृत्य ,, नमकीन करके।
लवणं कृत्वा ,, ,,
उरसिकृत्य १–४–७५—हृदय में अनुभव करके, छाती पर रख कर।
उरसि कृत्वा ,, हृदय में अनुभव करके, छाती पर रखकर।
मनसिकृत्य ,, मन में निश्चय करके।
मनसि कृत्वा ,, ,, ,,
मध्येकृत्य १–४–७६—मध्य में करके।
मध्ये कृत्वा ,, ,,
पदेकृत्य ,, पैर पर करके–हस्तिनः पदे कृत्वा शिरः शेते।
पदे कृत्वा ,, पैर पर करके।
निवचनेकृत्य ,, मौन करके या मौन धारण करके।
निवचने कृत्वा ,, ,, ,,
हस्तेकृत्य १–४–७७—विवाह करके।
पाणौकृत्य ,, ,,
प्राध्वंकृत्य १–४–७८—गाड़ी में अच्छी तरह रस्सी बाँध कर।
प्राध्वं कृत्वा ,, प्रार्थना आदि से अनुकूल करके।
जीविकाकृत्य १–४–७९—जीविका की तरह करके।
उपनिषत्कृत्य ,, उपनिषद् की तरह करके।
जीविकां कृत्वा ,, जीविका करके।
प्राचार्यः ,, प्रतिष्ठित अथवा पहिले के आचार्य।
अतिमालः ,, सौन्दर्य अथवा सुगन्ध में माला को अतिक्रमण करनेवाला।
अवकोकिलः ,, कोकिला द्वारा घोषित (वसन्त)।
पर्यध्ययनः ,, अध्ययन से परिश्रान्त।

निष्कौशाम्बिः १-४-७९—कौशाम्बी ( कोसम ) से बाहर गया हुआ।
वृक्षं प्रति ,, वृक्ष की ओर।
कुम्भकारः २-२-१९—कुम्हार।
व्याघ्री ,, बाघिन।
अश्वक्रीती ,, घोड़े से खरीदी गयी।
कच्छपी ,, मादा कछुआ।
स्वादुङ्कारम् २-२-२०—स्वादिष्ठ बनाकर।
कालः समयो वेला वा भोक्तुम् २-२-२०—भोजन करने का समय।
अग्रेभोजम् २-२-२१—पहिले भोजन कर लेने पर।
अग्रे भुक्त्वा ,, ,, ,,
मूलकोपदंशम् २-२-२१—मूली काट-काटकर ( भोजन करता है।
उच्चैःकारम् २-२-२२—जोर से, ऊँचे स्वर से।
उच्चैःकृत्य ,, ऊँचा करके।
उच्चैः कृत्वा ,, ,,
अलं कृत्वा ,, बन्द करके।
खलु कृत्वा ,, निश्चय करके।
द्व्यङ्गुलं दारु ५-४-८६—दो अङ्गुल प्रमाण की लकड़ी।
निरंगुलम् ,, अङ्गुल से बड़ी।
अहोरात्रः ५-४-८७—रात और दिन।
सर्वरात्रः ,, समस्त रात।
पूर्वरात्रः ,, रात का पहिला भाग।
संख्यातरात्रः ,, गिनी हुई रात।
पुण्यरात्रः ,, शुभ या पवित्र रात।
द्विरात्रम् ,, दो रात।
अतिरात्रः ,, जिसने रात बिता दी हो।
परमराजः ५-४-९१—उत्तम राजा।
अतिराजी ,, राजा से बढ़कर या श्रेष्ठ रानी।
कृष्णसखः ,, कृष्ण का मित्र।
द्व्यहीनः क्रतुः ६-४-१४५—दो दिन में सम्पन्न होने वाला यज्ञ।
मद्रराज्ञी ,, मद्रों की अथवा मद्रदेश की रानी।
सर्वाह्णः ८-४-७—पूरा दिन।
पूर्वाह्णः ,, दिन का पहिला भाग।
संख्याताह्नः ८-४-७—गिना हुआ दिन।
द्व्यह्नः ,, दो दिन में होने वाला कार्य।
द्व्यह्ना ,, ,, होने वाली क्रिया।
द्व्यह्नप्रियः ,, जिसे दो दिन में होने वाला कार्य प्रिय हो।
अत्यह्नः ,, एक दिन से अधिक।
दीर्घाह्नी प्रावृट् ८-४-३९—बड़े दिन वाली वर्षा ऋतु
पराह्णः ,, दिन का अन्तिम भाग।
द्व्यहः ५-४-८९—दो दिन।
त्र्यहः ,, तीन दिन।
पुण्याहम् ५-४-९०—पवित्र दिन, शुभ दिन।
सुदिनाहम् ,, अच्छा दिन।
एकाहः ,, एक दिन।
संख्याताहः ,, गिना हुआ दिन।
अश्वोरसम् ५-४-९३—उत्तम जाति का घोड़ा।
उपानसम् ५-४-९४—गाड़ी में का स्थान।
अमृताश्मः ,, चन्द्रकान्त मणि की तरह का एक पत्थर।
कालायसम् ,, लोहा।
मण्डूकसरसम् ,, मेढकों से भरा हुआ तालाब।
महानसम् ५-४-९४—रसोई घर, पाकशाला।
पिण्डाश्मः ,, लोहे का पत्थर।
लोहितायसम् ,, ताँबा।
ग्रामतक्षः ५-४-९५—गाँव का बढ़ई, जो किसानों के घर जा कर काम करता है।
कौटतक्षः ,, अपनी दूकान पर काम करने वाला बढ़ई, स्वतन्त्र बढ़ई।
अतिश्वो वराहः ५-४-९६—कुत्ते से तेज भागने वाला सूअर।
अतिश्वी सेना ,, कुत्ते से तेज चलने वाली सेना।
आकर्षश्वः ५-४-९७—कुत्ते की तरह का पासा, कुत्ते की तरह पासे का बुरा दाव।
वानरश्वा ,, कुत्ते की तरह वन्दर।
उत्तरसक्थम् ५-४-९८—टाँग का ऊपरी भाग।
मृगसक्थम् ,, हिरन की टाँग।
पूर्वसक्थम् ,, टाँग का निचला भाग।
फलकसक्थम् ,, पटरी के समान टाँग।

द्विनावरूप्यः ५–४–९९—दो नौकाओं से आया हुआ मनुष्य।
पञ्चनावप्रियः „ जिसको पाँच नाव प्यारी हों।
द्विनावम् „ दो नौकायें।
त्रिनावम् „ तीन नौकाएँ।
पञ्चनौः „ पाँच नौकाओं से खरीदा गया।
अर्धनावम् „ आधी नौका।
द्विखारम् ५–४–१०१—दो खारी = ३२ द्रोण।
द्विखारि „ „
अर्द्धखारम् आधी खारी = ८ द्रोण।
अर्धखारी „ „
द्व्यञ्जलम् ५–४–१०२—दो अँजलि।
द्व्यञ्जलिः „ „
सुराष्ट्रब्रह्मः ५–४–१०४—सुराष्ट्र का ब्राह्मण।
कुब्रह्मः ५–४–१०५—बुरा ब्राह्मण, निन्दनीय ब्राह्मण।
कुब्रह्मा „ „
महाब्रह्मः ६–३–४६—प्रेतक्रिया करने वाला ब्राह्मण।
महाब्रह्मा „ „
महादेवः „ श्रेष्ठ देव, शंकर।
महाजातीयः „ बड़ों के समान पुरुष।
महत्सेवा „ बड़ों की सेवा।
एकादश „ ग्यारह।
महाजातीया „ बड़ों के समान स्त्री।
महाघासः „ बड़े आदमी की घास।
महाकरः „ बड़े आदमी का कर=हाथ।
महाविशिष्टः „ बहुत बड़ा।
अष्टाकपालः ६–३–४६—आठ सेकोरों में तैयार किया गया पुरोडाश, हवि।
अष्टागवम् शकटम् „ आठ बैल वाली गाड़ी।
अष्टगवम् „ आठ गायें।
द्वादश ६–३–४७—बारह।
द्वाविंशतिः „ बाईस।
अष्टादश „ अट्ठारह।
अष्टाविंशति „ अट्ठाईस।
द्वित्राः „ दो या तीन।
द्व्यशीतिः „ बयासी।
त्रिशतम् „ एक सौ तीन।

त्रिसहस्रम् ६–३–४७—एक हजार तीन।
द्विशतम् ६–३–४७—एक सौ दो।
द्विसहस्रम् „ एक हजार दो।
त्रयोदश ६–३–४८—तेरह।
त्रयोविंशति „ तेईस।
त्रिदशाः „ जिसके तीस हैं।
त्र्यशीतिः „ „ तिरासी।
द्विचत्वारिंशत् ६–३–४९—बयालीस।
द्वाचत्वारिंशत् „ „
अष्टचत्वारिंशत् „ अड़तालीस।
अष्टाचत्वारिंशत् „ „
त्रिचत्वारिंशत् „ तैंतालीस।
त्रयश्चत्वारिंशत् „ „
एकान्नविंशति ६–३–७६—उन्नीस।
एकादूनविंशतिः „ „
एकोनविंशतिः „ „
षोडन् „ जिसके छः दाँत हो।
षोडश „ सोलह।
षोढा „ छः प्रकार का या छः प्रकार से।
षड्धा „ „
कुक्कुटमयूर्याविमे २–४–२६—ये मोरनी और मुर्गा हैं।
मयूरीकुक्कुटाविमौ „ ये भोली और मोरन हैं।
अर्धपिप्पली „ आधी पीपर।
पञ्चकपालः पुरोडाशः „ पाँच सकोरों में पकाया गया पुरोडाश ( हवि )।
अलंकुमारिः „ कुमारी के लिए उपयुक्त वर।
अश्ववडवौ २–७–२७—घोड़ा और घोड़ी।
अश्ववडवान् „ घोड़ा और घोड़ियों को।
अश्ववडवैः २–४–२७—घोड़ा और घोड़ियों से
अहोरात्रः २–४–२९—दिन और रात।
पूर्वरात्रः „ रात का पहिला भाग।
पूर्वाह्णः „ दिन का पहिला भाग।
द्व्यहः „ दो दिन।
द्विरात्रम् „ दो रातें।
त्रिरात्रम् „ तीन रातें।
गणरात्रम् „ बहुत सी रातें।

अपथम् २-४-३०—बुरा मार्ग ।
अपथो देशः　,,　बिना सड़क का देश ।
अपन्थाः　,,　बिना मार्ग का ।
अर्धर्चः २ ४-३१—मन्त्र का आधा ।
अर्धर्चम्　,,　,,
ध्वजः　,,　झंडा ।
ध्वजम्　,,　,, ।
ब्राह्मणाः पूज्याः १-२-५८ – ब्राह्मण पूजनीय हैं ।
ब्राह्मणः पूज्यः　,,　,,　है ।
वयं ब्रूमः १-२-५९ – हम कहते हैं ।
अहं ब्रवीमि　,,　मैं कहता हूँ ।
आवां ब्रूवः　,,　हम दोनों कहते हैं ।
पटुरहं ब्रवीमि　,,　मैं पटु कहता हूँ ।
पूर्वेफल्गुन्यौ १-२-६०–पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी ।
पूर्वाः फल्गुन्यः　,,　,,
पूर्वे प्रोष्ठपदे　,,　पूर्वभाद्रपद और उत्तरभाद्रपद ।
पूर्वाप्रोष्ठपदाः　,,　,,
फल्गुन्यौ माणविके ,,　पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न वालिकाएँ ।
तिष्यपुनर्वसू १-२-६३ - पुष्य और पुनर्वसु ।
विशाखानुराधाः　,,　विशाखा और अनुराधा ।
तिष्यपुनर्वसवो माणवकाः ,, पुष्य तथा पुनर्वसु नाम के वालक ।

पञ्चगवम् २-४-१७—पाँच गायें ।
दन्तोष्ठम्　,,　दाँत और ओठ ।
पञ्चमूली　,,　पाँच जड़ें ।
पञ्चखट्वी　,,　पाँच पलँग ।
पञ्चखट्वम्　,,　,,
पञ्चतक्षी　,,　पाँच बढ़ई ।
पञ्चतक्षम्　,,　,,
पञ्चपात्रम्　,,　पाँच वर्तन ।
त्रिभुवनम् २-४-१७ – तीनों लोक ।
चतुर्युगम्　,,　चारों युग ।
पुण्याहम्　,,　शुभ दिन ।
सुदिनाहम्　,,　सुन्दर दिन ।

त्रिपथम्　,,　तीन मार्ग ।
विपथम्　,,　बुरा मार्ग ।
सुपन्थाः　,,　सुन्दर मार्ग ।
अतिपन्थाः　,,　,,
मृदु पचति　,,　कोमल पकाता है ।
प्रातःकमनीयम् ,,　प्रातःकाल के समान सुन्दर है ।
सौशमिकन्थम् २-४-२०—सुशम नामक व्यक्ति के पुत्र की कथरी ।
वीरणकन्था　,,　गाड़र घास की कथरी ।
दाक्षिकन्था　,,　दक्ष के वंशज की कथरी ।
पाणिन्युपज्ञम् ग्रन्थः १-४-२१–पाणिनि से बनाया गया या पहले प्रचलित किया ग्रन्थ ।
नन्दोपक्रमं द्रोणः ,,　सर्व प्रथम नन्द के शासन काल में प्रचलित द्रोण ।
इक्षुच्छायम् २-४-२२—ईख की छाया ।
इनसभम् २-४-२३—राजा की सभा ।
ईश्वरसभम्　,,　राजा की सभा ।
राजसभा　,,　राजा की सभा ।
चन्द्रगुप्तसभा　,,　चन्द्रगुप्त की सभा ।
रक्षःसभम्　,,　राक्षसों की सभा ।
पिशाचसभम्　,,　पिशाचों की सभा ।
स्त्रीसभम् २-४-२४—स्त्रियों की सभा ।
धर्मसभा　,,　धर्मशाला ।
ब्राह्मणसेनम् २-४-२५—ब्राह्मणों की सेना ।
ब्राह्मणसेना　,,　,,
यवसुरम्　,,　जौ की शराब ।
यवसुरा　,,　,,
कुड्यच्छायम्　,,　दीवाल की छाया ।
कुड्यच्छाया　,,　,,
गोशालम्　,,　गोशाला ।
गोशाला　,,　,,
श्वनिशम्　,,　कल की रात (आने वाली) ।
श्वनिशा　,,　,,
दृढसेनो राजा　,,　वलवती सेना वाला राजा ।
असेना　,,　जो सेना न हो ।
परमसेना　,,　उत्तम सेना ।

इति तत्पुरुषः

# अथ बहुव्रीहिः

प्राप्तोदको ग्रामः २-२-२४—जिस गाँव में जल पहुँच गया हो।

ऊढरथोऽनड्वान् ,, जिस बैल ने रथ खींचा हो।

उपहृतपशू रुद्रः ,, जिस रुद्र को पशु दिया गया हो।

उद्धृतौदना स्थाली ,, जिस पतीली से भात निकाल गया हो।

पीताम्बरो हरिः ,, जिसका वस्त्र पीला हो।

वीरपुरुषको ग्रामः ,, जिस गाँव में वीर मनुष्य हो।

वृष्टे देवे गतः ,, वर्षा हो जाने पर गया।

पञ्चभिर्भुक्तमस्य ,, पाँच के साथ इसका भोजन हुआ।

प्रपर्णः ,, जिस वृक्ष के पत्ते गिर गये हो।

अपुत्रः ,, जिसके पुत्र न हों।

अस्तिक्षीरा गौः ,, दूध देने वाली गाय।

चित्रगुः ६-३-३४—चितकबरी गाय वाला मनुष्य।

रूपवद्भार्यः ,, जिसकी भार्या रूपवती हो।

चित्राजरतीगुः ,, चितकबरी और बुड्ढी गाय वाला।

जरतीचित्रागुः ,, ,,

दीर्घातन्वीजङ्घः ,, लम्बी और पतली जाँघ वाला।

तन्वीदीर्घाजङ्घः ,, ,,

चित्राजरद्गुः ,, चितकबरी बुड्ढी गाय वाला।

जरच्चित्रगुः ,, ,,

चित्राजरद्गवीकः ,, ,,

ग्रामणिदृष्टिः ,,

गङ्गाभार्यः ,, जिसकी भार्या गङ्गा हो।

वामोरूभार्यः ,, जिसकी भार्या की जाँघें सुन्दर हों।

कल्याणीमाता ,, कल्याणी की माता।

कल्याणीप्रधानः ,, जिसकी गुणवती स्त्री मुख्य हो।

कल्याणीपञ्चमा रात्रयः ५-४-११६—जिन रातों की पाँचवीं रात शुभ हो।

स्त्रीप्रमाणः ,, जिसका प्रमाण स्त्री हो।

कल्याणपञ्चमीकः पक्षः ७-४-१४—जिस पक्ष की पञ्चमी शुभ हो।

बहुकर्तृकः ,, जिसके बहुत से कर्ता (बनाने, करनेवाले) हो।

कल्याणीप्रियः ,, जिसको गुणवती प्यारी हो।

दृढभक्तिः ,, जिसकी भक्ति दृढ़ या स्थिर हो।

बहुत्र ६-३-३५—बहुतों में।

बहुतः ,, बहुतों से।

दर्शनीयतरा ,, दो में अधिक सुन्दर।

दर्शनीयतमा ,, बहुतों में सबसे अधिक सुन्दर।

पट्वितरा ,, दो में अधिक कुशल।

पट्वितमा ,, सबसे अधिक कुशल।

पटुचरी ,, जो पहिले कुशल रही हो।

पटुजातीया ,, निपुण के समान।

दर्शनीयकल्पा ,, प्रायः दर्शनीय।

दर्शनीयदेशीया ,, ,,

दर्शनीयरूपा ,, अत्यन्त दर्शनीय।

दर्शनीयपाशा ,, निन्दनीय सुन्दर।

बहुथा ,, अनेक प्रकार की।

वृकतिः ,, प्रशंसनीय भेड़िया (मादा)।

अजथ्या ,, बकरियों के लिए लाभदायक।

बहुशो देहि ,, बहुत सी स्त्रियों को दो।

अल्पशः ,, थोड़ी सी स्त्रियों को दो।

शुक्लत्वम् ,, श्वेत स्त्री की श्वेतता।

शुक्लता ,, ,,

कर्त्रीत्वम् ,, कर्त्री का भाव।

हास्तिकम् ,, हथिनियों का झुंड।

रौहिणेयः ,, रोहिणी का पुत्र बुध, शनैश्चर।

आग्नेयः ,, जिस स्थाली-पाक की अधिष्ठात्री देवता अग्नि की स्त्री हों।

सापत्नः ,, शत्रु स्त्री का पुत्र, सौत का पुत्र।

सापत्यः ७–४–१४—समान स्वामी वाली स्त्री का पुत्र।
भावत्काः ,, आप ( स्त्री ) के छात्र।
भवदीयाः ,, ,,
सर्वमयः ,, सबसे आया हुआ, अथवा सब कुछ।
सर्वकाम्यति ,, सब स्त्रियों को चाहता है।
सर्वकभार्यः ,, जिसकी पत्नी सर्विका नाम वाली हो।
सर्वकप्रियः ,, जिसे सर्विका प्रिय हो।
सर्विकाः ,, सभी स्त्रियाँ।
सर्वाः ,, ,,
कुक्कुटाण्डम् ,, मुर्गी का अण्डा।
मृगपदम् ,, हरिणी का पैर।
मृगक्षीरम् ,, हरिणी का दूध।
काकशावः ,, मादा कौये का बच्चा।
एतायते ६–३–३६—जो मादा चीतल की तरह व्यवहार करता है।
श्येतायते ,, जो मादा बाज की तरह व्यवहार करता है।
दर्शनीयमानिनी ,, जो स्त्री दूसरी स्त्री को सुंदर समझती है।
दर्शनीयमानी चैत्रः ६–३–३६—चैत्र सभी की दर्शनीय समझता है।
पाचिकाभार्यः ६–३–२७–जिसकी भार्या रसोइयादारिन है।
रसिकाभार्यः ,, जिसकी भार्या रसिका है।
मद्रिकामानिनी ,, जो स्त्री अपने को मद्रिका समझती हो।
पाकभार्यः ,, जिसकी भार्या युवती हो।
दत्ताभार्यः ६–३–३८—जिसकी भार्या का नाम दत्ता हो।
दत्तामानिनी ,, जो स्त्री अपने को दत्ता समझती हो।
पञ्चमीभार्यः ,, जिसकी पत्नी पाँचवीं हो।
पञ्चमीपाशा ,, निन्दनीय पाँचवीं।

स्त्रौघ्नीभार्यः ६–३–३९–जिसकी भार्या स्रुघ्न नगर की हो।
माथुरीयते ,, जो स्त्री मथुरावासिनी स्त्री की तरह आचरण करती है।
माथुरीमानिनी ,, जो स्त्री अपने को मथुरावासिनी समझती है।
मध्यमभार्यः ,, जिसकी भार्या मझली है।
काण्डलावभार्यः ,, जिसकी भार्या डण्टल काटने वाली है।
तावद्भार्यः ,, जिसकी भार्या उतनी है।
काषायकन्थः ,, जिसकी कथरी गेरुआ रंग की है।
हैममुद्रिका ,, जिसकी अँगूठी सुवर्ण की है।
वैयाकरणभार्यः ,, जिसकी भार्या व्याकरण जानने वाली है।
सौवश्वभार्यः ,, जिसकी भार्या सुन्दर घोड़े वाले पुरुष की सन्तान है।
सुकेशीभार्यः ६–३–४०—जिसकी भार्या सुन्दर बालों वाली मानती है।
पटुभार्यः ,, जिसकी भार्या निपुण है।
अकेशभार्यः ,, जिसकी भार्या विना बालों वाली है।
सुकेशमानिनी ,, जो स्त्री अपने को अच्छे बालों वाली है।
शूद्राभार्यः ६–३–४१—जिसकी भार्या शूद्रा है।
ब्राह्मणीभार्यः ,, जिसकी भार्या ब्राह्मणी है।
उपदशाः २–२–२५—दस के लगभग, नौ या ग्यारह।
आसन्नविंशाः ६–४–१४२—बीस के लगभग उन्नीस या इक्कीस।
अदूरत्रिंशाः ,, तीस के लगभग उन्तीस या इकतीस।
अधिकचत्वारिंशाः ,, एकतालीस।
द्वित्राः ,, दो या तीन।
द्विदशाः ,, बीस।
दक्षिणपूर्वा २–२–२६—दक्षिण और पूर्व।
केशाकेशी ६–३–१३७—जिस युद्ध में एक दूसरे के बालों को पकड़ कर लड़ें।

दण्डादण्डि ६–३–१३७—जिस युद्ध में. लाठी का प्रहार करके लड़ें।

मुष्टीमुष्टि ,, जिस युद्ध में घूसों का प्रहार करके लड़ें।

बाहूबाहवि ६–४–१४६—जिस युद्ध में भुजाओं का प्रहार करके लड़ें।

हलेन मुसलेन ,, हल तथा मूसल से।

सपुत्रः सहपुत्रो वा आगतः २–२–२८–पुत्र के साथ आया।

सकर्मकः ,, कर्म के साथ।

सलोमकः २–२–२८—रोएँ के साथ।

सहपुत्राय सहामात्याय राज्ञे स्वस्ति ६–३–८३—पुत्र तथा मंत्री के साथ राज का कल्याण हो।

सगवे ६–३–८२—गाय के साथ।

सवत्साय ,, बछड़े के साथ।

सहलाय ,, हल के साथ।

उपदशाः ५–४–७३—दस के लगभग, नौ या ग्यारह।

उपबहवः ,, लगभग बहुत।

उपगणाः ,, ,,

निस्त्रिंशानि वर्षाणि चैत्रस्य ,, चैत्र नामक व्यक्ति के तीस वर्ष से अधिक दिन हो गये।

निस्त्रिंशः खड्गः ,, तीस अङ्गुल से बड़ी (तलवार)।

दीर्घसक्थः ५–४–११३—जिसकी जाँघें लम्बी हों।

जलजाक्षी ,, जिस स्त्री की आँखें कमल के समान हो।

दीर्घसक्थि शकटम् ,, जिस गाड़ी के फड़ लम्बे हों।

स्थूलाक्षा वेणुयष्टिः ,, बड़ी आँखों वाली बाँस की छड़ी।

पञ्चांगुलं दारु ५–४–११४—पाँच अँगुलियों वाली लकड़ी, पाँचा।

द्व्यंगुला यष्टिः ,, दो अंगुल की छड़ी।

पञ्चांगुलिर्हस्तः ,, पाँच अँगुलियों वाला हाथ।

द्विमूर्धः ५–४–११५—जिसके दो सिर हों।

त्रिमूर्धः ,, जिसके तीन सिर हों।

मृगनेत्राः रात्रयः ,, जिन रातों का नेता (अर्थात् व्यवस्थापक, जिसकी स्थिति से रात्रि के समय का ज्ञान होता है, मृगशीर्ष-नामक नक्षत्र हो।

पुष्यनेत्राः ,, जिन रातों का नेता पुष्य नक्षत्र हो।

अन्तर्लोमः ५–४–११७—जिस वस्त्र के रोयें भीतर हों।

बहिर्लोमः ,, जिस वस्त्र के रोयें बाहर हों।

द्रुणसः ५–४–११८—जिनकी नाक वृक्ष के समान हो, किसी व्यक्ति का नाम।

ऋगयनम् ,, मंत्रों का घर।

स्थूलनासिकः ,, जिसकी नाक मोटी हो (नाम)।

खुरणाः ,, जिसकी नाक खुर के समान चिपटी हो (नाम)

खरणाः ,, जिसकी नाक नुकीली हो (नाम)।

खुरणसः ,, जिसकी नाक चिपटी हो (नाम)।

खरणसः ,, जिसकी नाक नुकीली हो (नाम)।

उन्नसः ५–४–११९—जिसकी नाक ऊँची हो।

प्रणसः ८–४–२८—जिसकी नाक उत्तम हो।

विग्रः ,, जिसकी नाक कट गयी हो।

विख्यः ,, ,,

सुप्रातः ५–४–१२०—वह दिन या व्यक्ति जिसका प्रातः-काल शुभ हो।

सुश्वः ,, ,, आने वाला कल ,,।

सुदिवः ,, वह व्यक्ति जिसका दिन शुभ हो।

शारिकुक्षः ,, जिसका पेट शारि नाम के पक्षी अथवा पासे के समान गोल हो।

चतुरश्रः ,, जिसके चार कोण हों, चतुष्कोण, चौकोर।

एणीपदः ,, जिसके पैर मृगी के समान हो।

अजपदः ५–४–१२०—जिसके पैर बकरी की तरह हों।

प्रोष्ठपदः ,, जिसके पैर गाय की तरह हो।

अहलः ५–४–१२१—जिसके पास हल न हो।

अहलिः ,, ,,

असक्थः ,, जिसकी टाँगें न हों।

असक्थिः ,, ,,

अप्रजाः ५–४–१२२—जिसकी कोई सन्तान न हो।
दुष्प्रजाः ,, जिसकी सन्तान बुरी हों।
सुप्रजाः ,, जिसकी सन्तान अच्छी हों।
अमेधाः ,, जो बुद्धिहीन हो।
दुर्मेधाः ,, जिसकी बुद्धि बुरी हो।
सुमेधाः ,, जिसकी बुद्धि अच्छी हो।

कल्याणधर्मा ५–२–१२४—जिसका धर्म कल्याणकारी हो।
परमस्वधर्मा ,, जिसको अपना धर्म श्रेष्ठ हो।
निवृत्तिधर्मा ,, संसार से अलग रहना जिसका धर्म हो।
अनुच्छित्तिधर्मा ,, जो नाश होने वाला न हो, अविनाशी।

सुजम्भा ५–४–१२५—जिसके दाँत सुन्दर हों, अथवा जिसका भोजन उत्तम हों।
हरितजम्भा ,, जिसका भोजन घास हो।
तृणजम्भा ,, ,, तृण हो।
सोमजम्भा ,, ,, सोम हो।
पतितजम्भः ,, जिसके दाँत गिर गये हो।
दक्षिणेर्मा मृगः ५–४–१२६—जिस मृग की दाहिनी ओर घाव हो।

केशाकेशि ५–४–१२७—जिस युद्ध में एक दूसरे के बालों को पकड़कर लड़ा जाय।
मुसलामुसलि ,, जिस युद्ध में एक दूसरे पर मूसलों के प्रहार से लड़ा जाय।

द्विदण्डि प्रहरणम् ५–४–१२८—जिस युद्ध में दो लाठियों से प्रहार किया जाय।
द्विमुसलि ,, ,, दो मूसलों ,, ।
उभाहस्ति ,, ,, दोनों हाथों ,, ।
उभयाहस्ति ,, ,, ,, ,,
प्रज्ञुः ५–४–१२९—जिसके घुटने फैले हुए हों।
संज्ञुः ,, ,, सटे हुए हों।
ऊर्ध्वज्ञुः ५–४–१३०— ,, ऊपर की ओर या ऊँचे हों।
ऊर्ध्वजानुः ,, ,,
शार्ङ्गधन्वा ५–४–१३२—जिनका धनुष सींग का हो, विष्णु।

शतधन्वा ५–४–१३३—जिसके पास सौ धनुष हों, एक राजा का नाम।
शतधनुः ,, ,,
युवजानिः ५–४–१३४—जिसकी पत्नी युवती हो।
उद्गन्धिः ५–३–१३५—जिसकी गन्ध उत्कट हो।
पूतिगन्धिः ,, जिसकी गन्ध बुरी हो।
सुरभिगन्धिः ,, जिसकी गन्ध उत्तम हो।
सुगन्ध आपणिकः ,, जिस दूकानदार के पास उत्तम गन्ध हो।

सूपगन्धि भोजनम् ५–४–१३६—वह भोजन जिसमें दाल की गन्ध हो, थोड़ी दाल वाला भोजन।
घृतगन्धि ,, थोड़ा घी वाला भोजन।
पद्मगन्धि ५–४–१३७—जिसमें कमल की सी गन्ध हो।
व्याघ्रपात् ५–४–१३८—जिसके पैर शेर के पैर की तरह हों।
हस्तिपादः ,, जिसके पैर हाथी के पैर की तरह हों।
कुसूलपादः ,, जिसके पैर कोठिली (अन्न रखने के लिए मिट्टी का बड़ा गोल पात्र) की तरह हों।
कुम्भपदी ५–४–१३९—जिस स्त्री के पैर घड़े की तरह हों।
कुम्भपादः ,, जिस पुरुष ,, ।
द्विपात् ५–४–१४०—जिसके दो पैर हों, मनुष्य।
सुपात् ,, जिसके सुन्दर पैर हों।
द्विदन् ५–४–१४१—जिस बच्चे को केवल दो दाँत निकले हों।
चतुर्दन् ,, ,,
षोडन् ,, ,, चार ,, ।
सुदन् ,, जिसके सब दाँत सुन्दर हों।
द्विदन्तः करी, सुदन्तः ,, जिसके दो दाँत हों, हाथी, सुन्दर दाँत वाला नर।

अयोदती ५–४–१४३—जिसके दाँत लोहे की तरह हों, किसी स्त्री का नाम।
फालदती ,, ,, फाल ,, ।
समदन्ती ,, जिसके दाँत समान हों।

श्यावदन् ५-४-१४४—जिसके दाँत काले हों।
श्यावदन्तः ,, ,,
अरोकदन् ,, जिसके दाँत चमकीले नहीं, काले हों।
अरोकदन्तः ,, ,, ,,
कुड्मलाग्रदन् ५-४-१४५—जिसके दाँत कली के अग्रभाग की तरह नुकीले हों।
कुड्मलाग्रदन्तः ,, ,,
अजातककुत् ५-४-१४६—जिसका डिल न निकला हो, बछड़ा।
पूर्णककुत् ,, ,, पूरा निकल गया हो, पूर्ण युवा बैल।
त्रिककुत् ५-४ १४७—जिस पर्वत की तीन चोटियाँ हो।
त्रिककुदः ,, जिसकी तीन चोटियाँ हो।
उत्काकुत् ५-४ १४८—जिसकी तालु ऊँची हो।
विकाकुत् ,, जिसकी तालु न हो।
पूर्णकाकुत् ५-४-१४९—जिसकी तालु पूरी हो।
पूर्णकाकुदः ,, ,,
सुहृन्मित्रम् ५-४-१५०—अच्छे हृदय वाला अर्थात् मित्र।
दुर्हृदमित्रः ,, बुरे हृदय वाला दुर्जन।
सुहृदयः ,, अच्छे हृदय वाला, सज्जन।
दुर्हृदयः ,, बुरे हृदय वाला, शत्रु।
व्यूढोरस्कः ५-४-१५१—जिसका वक्षःस्थल चोड़ा हो।
प्रियसर्पिष्कः ,, जिसे घी प्रिय हो।
द्विपुमान् ,, जिसके पास दो पुरुष हो।
द्विपुंस्कः ,,
अनर्थकम् ,, जिसका कुछ अर्थ (प्रयोजन न निरर्थक हो)।
अपार्थम् ५-४-१५१-अर्थ रहित, जिसका कुछ अर्थ न हो।
अपार्थकम् ,, ,, ,,
बहुदण्डिका नगरी ५-४-१५२—जिस नगरी में बहुत से दण्डी (संन्यासी) हों।
बहुवाग्मिका ,, जिस (सभा में) बहुत से वक्ता हों।
बहुदण्डी ,, जिस (नगर) में बहुत से दण्डी हों।

बहुदण्डिको ग्रामः ५-४-१५२—जिस (गाँवमें बहुत से दण्डी हों।
महायशस्कः ५-४-१५४—जिसका यश बहुत हो।
महायशाः ,, ,, ,,
व्याघ्रपात् ,, जिसके पैर शेर के पैर की तरह हों।
सुगन्धिः ,, जिसकी गन्ध उत्तम हो।
प्रियपथः ,, जिसको मार्ग प्रिय हो।
उपबहवः ,, लगभग बहुत।
उत्तरपूर्वा ,, उत्तर तथा पूर्व दिशा का मध्य।
सपुत्रः ,, पुत्र के साथ।
बहुमालाकः ,, जिसके पास बहुत से मालाएँ हों।
बहुमालकः ,, ,, ,,
बहुमालः ,, ,, ,,
विश्वदेवः ५-४-१५३—जिसके देवता विश्वदेव हों।
बहुश्रेयान् ५-४-१५६—जिसके पास बहुत से उत्तम गुण हों।
बहुश्रेयसिः ,, जिसके पास बहुत सी उत्तम स्त्रियाँ हों।
अतिश्रेयसिः ,, गुणवती स्त्री से बढ़कर।
प्रशस्तभ्राता ५-४-१५७—जिसका भाई प्रशंसनीय हो।
मूर्खभ्रातृकः ,, जिसका भाई मूर्ख हो।
बहुनाडिः कायः ५-४-१५९—बहुत सी नाडियों वाला शरीर।
बहुतन्त्रीर्ग्रीवा ,, बहुत सी नसों वाली गर्दन।
बहुनाडीकः स्तम्भः ,, बहुत सी नालियों वाला खम्भा।
बहुतन्त्रीका वीणा ,, बहुत से तारों वाली वीणा।
निष्प्रवाणिः पटः ५-४-१६०—जो वस्त्र करघे से निकाल लिया गया हो, नवीन वस्त्र।
कण्ठेकालः २-२-३५—जिसका गला काला हो।
चित्रगुः ,, जिसकी गाय चितकबरी हो।
सर्वश्वेतः ,, जिसका सब सफेद हो, बिलकुल सफ़ेद।
द्विशुक्लः ,, जिसके दो सफेद हों।

द्व्यन्यः २-२-३५—जिसके दो अन्य (दूसरे) हों।
द्वित्राः ,, दो या तीन।
द्वादश ,, बारह।
गुडप्रियः ,, जिसे गुड़ प्रिय हो।
प्रियगुडः ,, ,, ,,
गड्डुकण्ठः ,, जिसके गले में घेघा (कण्ठमाल)हो।
वहेगड्डुः ,, जिसके कन्धे पर मांसपिण्ड हो।
कृतकृत्यः २-२-३६—जिसने कर्त्तव्य पूरा कर लिया हो, सफल।
सारङ्गजग्धी ,, जिस स्त्री ने मृग खाया हो।
मासजाता २-२-३६—जिसको पैदा हुए एक महीना हुआ हो।

सुखजाता २-२-३६—जिसका जन्म सुख से हुआ हो।
कृतकटः ,, जिसने चटाई बना ली हो।
पीतोदकः ,, जिसने जल पी लिया हो।
आहिताग्निः २-२-३७—जिसने हवन की अग्नि स्थापित कर ली हो।
अग्न्याहितः ,, ,, ,,
अस्युद्यतः ,, जिसने तलवार उठा ली हो।
दण्डपाणिः ,, जिसके हाथ में लाठी हो।
विवृतासिः ,, जिसने म्यान से तलवार निकाल ली हो।

इति बहुव्रीहिसमासप्रकरणम्।

## अथ द्वन्द्वः

धवखदिरौ २-२-२९—धव और खैर।
संज्ञापरिभाषम् ,, संज्ञा और परिभाषा।
होतृपोतृनेष्टोद्गातारः ,, होता, पोता, नेष्टा और उदगाता।
होतापोतानेष्टोद्गातारः ,, ,,
राजदन्तः २-२-३१—दाँतों में सर्वश्रेष्ठ।
अर्थधर्मौ ,, धर्म और अर्थ।
धर्मार्थौ ,, ,,
दम्पती ,, पति पत्नी।
जम्पती ,, ,,
जायापती ,, ,,
हरिहरौ २-२-३२—विष्णु और महादेव।
हरिगुरुहराः ,, विष्णु शिव तथा गुरु।
हरिहरगुरवः ,, ,,
ईशकृष्णौ २-२-३३ ,,
अश्वरथेन्द्राः ,, घोड़ा, रथ तथा इन्द्र।
इन्द्राश्वरथाः ,, ,, ,,
इन्द्राग्नी ,, इन्द्र तथा अग्नि।
शिवकेशवौ २-२-३४—शिव तथा विष्णु।

हेमन्तशिशिरवसन्ताः २-२-३४—हेमन्त, शिशिर तथा वसन्त।
कृत्तिकारोहिण्यौ ,, कृत्तिका तथा रोहिणी।
ग्रीष्मवसन्तौ ,, गर्मी तथा वसन्त।
कुशकाशम् ,, कुश तथा काश।
तापसपर्वतौ ,, तपस्वी तथा पर्वत।
ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः ,, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र।
युधिष्ठिरार्जुनौ ,, युधिष्ठिर तथा अर्जुन।
पाणिपादम् २-४-२—हाथ और पैर।
मार्दङ्गिकपाणविकम् ,, मृदङ्ग तथा नगाड़ा बजाने वाले।
रथिकाश्वारोहम् ,, रथसैनिक तथा अश्वसैनिक।
उदगात्कठकालापम् २-२-३—
प्रत्यष्ठात्कठकौथुमम् ,, कठ तथा कौथुम चरण(शाखा) को पुनः प्रतिष्ठित किया।
अर्काश्वमेधम् २-४-४—अर्क तथा अश्वमेध नाम के यज्ञ।

इषुवज्रौ सामवेदे विहितौ २-२-४—सामवेद में प्रोक्त इषु तथा वज्र नाम के यज्ञ।
राजसूयवाजपेये ,, राजसूय तथा वाजपेय नाम के यज्ञ।
पदकक्रमकम् २-४-५—वेदमन्त्रों के पढ़ने की विधि, पद तथा क्रम के पढ़ने वाले।
धानाशष्कुलि २-४-६—भूने हुए जौ तथा पूरी।
विट्शूद्राः ,, वैश्य तथा शूद्र।
रूपरसौ ,, रूप तथा रस।
गमनाकुञ्चने ,, जाना तथा सिकुड़ना।
बदरामलकानि ,, बेर तथा आँवला।
उद्धयेरावति १-४-७—उद्धय नद (उद्ध) तथा रावी नदी।
गङ्गाशोणम् ,, गङ्गा तथा सोन।
कुरुकुरुक्षेत्रम् ,, कुरुदेश तथा कुरुक्षेत्र।
गङ्गायमुने ,, गङ्गा और यमुना।
मद्रकेकयाः ,, मद्र (स्यालकोट से रावी तक का प्रदेश) तथा केकय।
जाम्बवशालूकिन्यौ ,, जाम्बर नगर तथा शालूकिनी गाँव।
यूकालिक्षम् २-४-८—जूँ तथा लीख।
अहिनकुलम् २-४-९—साँप तथा नेवाला।
गोव्याघ्रम् ,, गाय तथा शेर।
काकोलूकम् ,, कौआ और उल्लू।
तक्षायस्कारम् २-४-१०—बढ़ई तथा लोहार।
चाण्डालमृतपाः ,, चाण्डाल तथा डोम [मृतक (दाहा) कर्म करने वाले]।
गवाश्वम् २-४-११—गाय तथा घोड़े।
दासीदासम् ,, नौकर तथा नौकरानी।
प्लक्षन्यग्रोधम् २-४-१२—पाकड़ तथा बरगद।
प्लक्षन्यग्रोधाः ,, ,,
रुरुपृषतम् ,, काले मृग तथा चीतल।
रुरुपृषताः ,, ,,
कुशकाशम् ,, कुश तथा काश।
कुशकाशाः ,, ,,
व्रीहियवम् ,, धान तथा जौ।
व्रीहियवाः ,, ,,

दधिघृतम् २-४-१२—दही तथा घी।
दधिघृते ,, ,,
गोमहिषम् ,, बैल तथा भैंसे।
गोमहिषाः ,, ,,
शुकबकम् ,, तोता तथा बगुला।
शुकबकाः ,, ,,
अश्ववडवम् ,, घोड़े तथा घोड़ियाँ।
अश्ववडवौ ,, ,,
पूर्वापरम् ,, पहिला और अन्तिम।
पूर्वापरे ,, ,,
अधरोत्तरम् ,, निचला और ऊपरी।
अधरोत्तरे ,, ,,
बदरामलकम् ,, बेर तथा आँवला।
बदरामलके ,, ,,
रथिकाश्वारोहौ ,, रथी तथा घुड़सवार।
प्लक्षन्यग्रोधौ ,, पाकड़ तथा बरगद।
शीतोष्णम् २-४-१३—सर्दी तथा गर्मी।
शीतोष्णे ,, ,,
नन्दकपाञ्चजन्यौ ,, नन्दक (विष्णु की तलवार) और पाञ्चजन्य (विष्णु का शंख)।
दधिपयसी २-४-१४—दही और दूध।
इध्माबर्हिषी ,, हवन की लकड़ी और दूध।
ऋक्सामे ,, ऋग्वेद और सामवेद के मंत्र।
वाङ्मनसे ,, वाणी और मन।
दशदन्तोष्ठाः २-४-१५—दस दाँत और ओठ।
उपदशं दन्तोष्ठम् ,, लगभग दस दाँत और ओठ।
उपदशा दन्तोष्ठाः ,, ,,
होतापोतारौ ६-३-२५—होता और पोता। होता—याज्या तथा अनुवाक मन्त्रों का पाठ करने वाला, पोता—अपने वेद का ऋत्विक्।
मातापितरौ ,, माता और पिता।
पितापुत्रौ ,, पिता और पुत्र।
मित्रावरुणौ ६-३-२६—सूर्य और वरुण।
अग्निवायू, वाय्वग्नि ,, अग्नि तथा वायु।
ब्रह्मप्रजापती ,, ब्रह्मा और प्रजापति।

अग्निष्टुत् ८–३–२७—एक यज्ञ ।
अग्निष्टोमः ,, एक यज्ञ ।
अग्नीषौमौ ,, अग्नि और चन्द्रमा ।
अग्नीवरुणौ ,, अग्नि तथा वरुण ।
आग्निमारुतं कर्म ६–३–२८—जिस कर्म के अधिष्ठातृदेवता
 ,, अग्नि तथा मरुत् हों ।
आग्निवारुणम् ,, ,, अग्नि तथा वरुण हों ।
आग्नेन्द्रः ,, जिसके देवता अग्नि तथा इन्द्र हों ।
आग्नावैष्णवम् ,, जिसके देवता अग्नि तथा विष्णु हों ।
द्यावाभूमि ६–३–२९—आकाश तथा पृथिवी ।
द्यावाक्षामा ,, ,,
दिवस्पृथिव्यौ ६–३–३०— ,,
द्यावापृथिव्यौ ६–३–३०—आकाश तथा पृथिवी ।
द्यावाचिदस्मै पृथिवी ,,
दिवस्पृथिव्योरातिम् ,,
उषासासूर्यम् ६–३–३१—उषा ( प्रातःकाल की अधिष्ठात्री देवी) तथा सूर्य ।
मातरपितरौ ,, माता तथा पिता ।
मातापितरौ ,, ,,
वाक्त्वचम् ५–४–१०६—वाणी तथा त्वचा ।
त्वक्स्रजम् ,, त्वचा और माला ।
शमीदृषदम् ,, शमीपत्र और सिल ।
वाक्त्विषम् ,, वाणी तथा कान्ति ।
छत्रोपानहम् ,, छाता तथा जूता ।
प्रावृट्शरदौ ,, वर्षा और शरद ।

इति द्वन्द्वसमासप्रकरणम्

## अथैकशेषः

रामौ १–२–६४—दो राम ।
रामाः ,, अनेक राम ।
वक्रदण्डौ ,, दो टेढ़ी लाठी वाले ।
कुटिलदण्डौ ,, ,,
गार्ग्यौ १–२–६५—गर्ग का पोता और पर पोता ।
गर्गगार्ग्यायणौ ,, गर्ग और उसका प्रपौत्र ।
गर्गगार्ग्यौ ,, गर्ग और उसका पौत्र ।
भागवित्तिभागवित्तिकौ ,, भागवित्त का पौत्र और उसका निन्दित प्रपौत्र ।
गार्ग्यवात्स्यायनौ ,, गर्ग का पौत्र और वत्स का युवा प्रपौत्र ।
गर्गाः १–२–६६—गर्ग की कन्या और उसका युवा प्रपौत्र ।
दाक्षी ,, दक्षकी कन्या और उसका युवा प्रपौत्र ।
हंसौ १–२–६७—हंसी और हंस ।
भ्रातरौ १–२–६८—भाई और बहन ।
पुत्रौ ,, पुत्र और पुत्री ।
पितरौ १–२–७०—माता तथा पिता ।
मातापितरौ ,, ,,
श्वशुरौ १–२–७१—सास और ससुर ।
श्वश्रूश्वशुरौ ,, ,,
तौ १–२–७२—वह और देवदत्त ।
यौ ,, वह और जो कोई ।
तौ ,, ,,
तौ ,, वह स्त्री और देवदत्त ।
तानि ,, वह पुस्तक देवदत्त और यज्ञदत्त।
ते ,, वह पुस्तक और देवदत्त ।
कुक्कुटमयूर्याविमे १-२-७२—ये मुर्गा और मोरनी ।
मयूरीकुक्कुटाविमौ ,, ये दो मरनी और मुर्गा ।
गाव इमाः १–२–७३—ये बैल तथा गाय ।

रुरव इमे १-२-७३—ये काले मृग ।
ब्राह्मणाः ,, ये ब्राह्मणी और ब्राह्मण ।
एतौ गावौ ,, ये दो गाय और बैल ।
वत्सा इमे १-२-७३—ये बछिया और बछड़े ।
अश्वा इमे ,, ये घोड़ी और घोड़े ।

इत्येकशेषप्रकरणम्

## अथ सर्वसमासशेषः

सूपप्रति—थोड़ी सी दाल ।
उन्मत्तगङ्गम्—जिस स्थान पर गङ्गा उमड़कर बहती हों ।
अतिमालः—(सौन्दर्य अथवा सुगन्ध में) माला से बढ़कर ।
द्वित्राः—दो या तीन ।
दन्तोष्ठम्—दाँत और ओठ ।
राजपुरुषः—राजा का नौकर ।
पर्यभूषत्—भूषित किया ।
कुम्भकारः—कुम्हार ।
कटप्रः—चटाई बनाने वाला ।
अजस्रम्—निरन्तर ।
पिवतखादता—जिस काम में निरन्तर 'खाओ, पीओ' कहा जाय ।
कृन्तविचक्षणा—'विचक्षण, काटो' ,, ।

इति सर्वसमासशेषप्रकरणम्

## अथ समासान्तप्रकरणम्

अर्धर्चः ५-४-७४—मंत्र का आधा ।
अनृचः ,, जिसने ऋग्वेद न पढ़ा हो ।
बह्वृचः ,, जिसने ऋग्वेद का पूर्ण अध्ययन कर लिया हो ।
अनृक् साम ,, सामवेद जो ऋचाओं में विभक्त नहीं हैं ।
बह्वृक् सूक्तम् ,, वह सूक्त जिसमें बहुत सी ऋचाएँ हों ।
विष्णुपुरम् ,, विष्णु का नगर ।
विमलापं सरः ,, निर्मल जल वाला तालाव ।
द्वीपम् ३ ३-९७—टापू ।
अन्तरीपम् ,, वह देश जिसके तीन ओर जल हो ।
प्रतीपम् ,, जल प्रवाह के विरुद्ध, प्रतिकूल ।
समीपम् ,, नजदीक ।
समापो देवयजनम् (माध्ये समापम्) ५-७-७४—ऐसी यज्ञ भूमि जिसमें समान (बराबर) जल हो ।
स्वप् ,, जिसके पास उत्तम जल हो (पुरुष) ।
स्वपी ,, ,, (स्त्री) ।
प्रेपम् ,, गड़ही ।
परेपम् ,, जल निकलने का मार्ग ।
प्रापम् ,, गड़ही ।
परापम् ६-३-९७—जल निकलने का मार्ग ।
अनूपो देशः ६-३-९८—जिस देश में जल न हो (आधुनिक मध्य प्रदेश का निमाड़ जिला )
राजधुरा ,, राजा का शासन भार ।
अक्षधूः ,, गाड़ी के अग्रभाग में लगा हुआ जुआ ।
दृढधूः, अक्षः ,, जिस गाड़ी में दृढ हरसाया फड़ लगा हो ।

सखिपथः ३–६–९८—मित्र की सड़क ।
रम्यपथो देशः ,, जिस देश की सड़क सुन्दर हो ।
प्रतिसामम् ५–४–७५—रुखाई से ।
अनुसामम् ,, सौहार्द से ।
अवसामम् ,, असज्जनता से ।
प्रतिलोमम् ,, उलटी तरह से, प्राकृतिक नियम के विरुद्ध ।
अनुलोमम् ,, नियमानुकूल ।
अवलोमम् ,, नियमानुकूल ।
कृष्णभूमः ,, जिस महल की भूमि (फर्श) काली हो ।
उदग्भूमः ,, जिस महल की भूमि उत्तर की ओर भुकी हो ।
पाण्डुभूमः ,, जिस महल की भूमि सफेद हो ।
द्विभूमः प्रासादः ,, जिस महल में दो फर्श हो, दो मंजिल का महल ।
पञ्चनदम् ,, जिस देश में पाँच नदियाँ हों, पंजाब ।
सप्तगोदावरम् ,, जिस देश में सात गोदारी हों ।
पद्मनाभः ,, जिसकी नाभि में कमल हो, विष्णु ।
गवाक्षः ५-४-७६– मकान में प्रकाश के लिए छिद्र, झरोखा, खिड़की ।
अचतुरः ५–४–७७—जिसके पास चार न हों ।
विचतुरः ,, जिसके चार नष्ट हो गये या चले गये हों ।
सुचतुरः ,, जिसके चार सुन्दर हो ।
त्रिचतुराः ,, जिनके पास तीन या चार हों ।
उपचतुराः ,, चार के लगभग, तीन या पाँच ।
स्त्रीपुंसौ ,, स्त्री और पुरुष ।
धेन्वनुडुहौ ,, गाय और बैल ।
ऋक्सामे ,, ऋग्वेद और सामवेद ।
वाङ्मनसे ,, वाणी और मन ।
अक्षिभ्रुवम् ,, आँख और भौंह ।
दारगवम् ५-४-७७—भार्या और गायें ।
उर्वष्ठीवम् ,, जाँघे तथा घुटने ।
नक्तन्दिवम् ,, रात दिन ।
रात्रिन्दिवम् ,, ,,
अहर्दिवम् ,, ,,
सरजसम् ,, धूल को भी न छोड़ कर ।
निःश्रेयसम् ,, परम कल्याण ।
निःश्रेयान् पुरुषः ,, परम कल्याण वाला पुरुष ।
पुरुषायुषम् ,, पुरुष की आयु तक ।
त्र्यायुषम् ,, तीन पुरुषों की आयु तक ।
द्वयायुषम् ,, दो पुरुषों की आयु तक ।
ऋग्यजुषम् ,, ऋग्वेद और यजुर्वेद ।
जातोक्षः ,, जवान बैल ।
महोक्षः ,, बड़ा बैल ।
वृद्धोक्षः ,, बुड्ढा बैल ।
उपशुनम् ,, कुत्ते के पास ।
गोष्ठश्वः ,, गोशाला में बैठा हुआ कुत्ता, जो अकारण दूसरों को भौंकता है । जो व्यक्ति अकर्मण्य रहकर दूसरों की निन्दा किया करता है उसके लिए प्रयुक्त ।
ब्रह्मवर्चसम् ५ ४–७८—तप से उत्पन्न ब्राह्मण का तेज ।
हस्तिवर्चसम् ,, हाथी का बल ।
पल्यवर्चसम् ,, मांसाहारी का बल ।
राजवर्चसम् ,, राजा की शक्ति ।
अवतमसम् ५–४–७९—साधारण अन्धकार ।
संतमसम् ,, अधिक अन्धकार ।
अन्धतमसम् ,, अन्धा बना देने वाला घोर अंधकार ।
श्वोवसीयम् ५–४–८०—भावी कल्याण ।
श्वःश्रेयसं ते भूयात् ,, कल तुम्हारा परम कल्याण हो ।
अनुरहसम् ५–४–८१—एकान्त, निर्जन स्थान ।
अवरहसम् ,, कुछ अधिक एकान्त, निर्जन स्थान ।
तप्तरहसम् ,, बिलकुल एकान्त निर्जन स्थान ।
प्रत्युरसम् ५–४–८२—वक्षःस्थल के विरुद्ध ।
अनुगवम् , यानम् ५–४–८३—वह सवारी जो लम्बाई में बैलों के बराबर हो ।

द्विस्तावा ५-४-८४—साधारण वेदी से दुगुनी बड़ी।
त्रिस्तावा ,, साधारण वेदी से तिगुनी बड़ी।
द्विस्तावती रज्जुः ,, दुगुनी बड़ी रस्सी।
त्रिस्तावती रज्जुः ,, तिगुनी बड़ी रस्सी।
प्राद्यो रथः ५-४-८५—जिस रथ में रस्सी आदि बँध चुकी हो और वह सवारी के लिए सड़क पर पहुँच गया हो।
सुराजा ५-४ ६९—उत्तम राजा।
अतिराजा ,, सर्वश्रेष्ठ राजा।
परमराजः ,, श्रेष्ठ राजा।
अतिगवः ,, जो बैल से भी बढ़कर हो, महामूर्ख।
सुसक्थः ,, सुन्दर जाँघ वाला व्यक्ति।
स्वक्षः ,, सुन्दर आँख वाला।
किंराजा ५-४ ७०—बुरा राजा, कैसा राजा?
किंसखा ,, बुरा मित्र, कैसा मित्र?
किंगौः ,, बुरा बैल, कैसा बैल?
किंराजः ,, किसका राजा।
किंसखः ,, किसका मित्र।
किंगवः ५-४-७०—किसका बैल।
अराजा ५-४-७१—जो राजा न हो।
असखा ,, जो मित्र न हो।
अधुरं शकटम् ,, बिना जुए की गाड़ी।
अपथम् ५-४-७१—मार्ग का अभाव।
अपन्थाः ,, मार्ग का अभाव।
अपथो देशः ,, जिस देश में मार्ग न हो।
अपथं वर्तते ,, मार्ग का अभाव है।

इति समासान्तप्रकरणम्।

## अथालुक्समासः

स्तोकान्मुक्तः ६ ३-२—थोड़े से छूटा हुआ।
निस्तोकः ,, थोड़े से निकला हुआ।
ब्राह्मणच्छंसी ऋत्विग्विशेषः-ब्राह्मणप्रोक्त शास्त्र का पारायण करने वाला ऋत्विग्विशेष।
तमसाकृतम् ६-३-३—शक्ति से किया गया।
सहसाकृतम् ,, एकाएक किया गया।
अम्भसाकृतम् ,, शक्ति से किया गया।
ओजसाकृतम् ,, शक्ति से किया गया।
अञ्जसाकृतम् ,, ठीक प्रकार से किया गया।
पुंसानुजः ,, जिसका बड़ा भाई हो वह व्यक्ति।
जनुषान्धः ,, जन्म से अन्धा।
जात्यन्धः ,, जन्म से अन्धा।
मनसागुप्तः ६-३-४—किसी व्यक्ति का नाम।
मनसाज्ञायी ६-३-५—मन से जानने वाला।
आत्मनापञ्चमः ६-३-६—अपने को लेकर पाँचवाँ।
जनार्दनस्त्वात्मचतुर्थ एव ,, जनार्दन तो अपने को लेकर चौथे ही हैं।
आत्मकृतम् ,, अपने से किया गया।
आत्मनेपदम् ६ ३-७—व्याकरण का पारिभाषिक शब्द रूप का बोधक। क्रिया के एक रूप का बोधक।
आत्मनेभाषा ,, ,, ,,
परस्मैपदम् ,, ,, ,,
परस्मैभाषा ,, ,, ,,
त्वचिसारः ६-३-९—जिसकी त्वचा दृढ हो, बाँस।
गविष्ठिरः ८-३-९५—आकाश में स्थिर रहने वाला, अत्रि-कुल के एक ऋषि का नाम।
युधिष्ठिरः ,, युद्ध में स्थिर रहने वाला, पाण्डवों में सबसे बड़े भाई धर्मराज का नाम।
अरण्येतिलकाः ,, जंगली तिल, जिनमें तेल नहीं निकलता। कोई निराशाजनक वस्तु।
हृदिस्पृक् ,, हृदय स्पर्श करने वाला, प्रभावोत्पादक।
दिविस्पृक् ,, आकाश छूने वाला, गगनचुम्बी।
मुकुटेकार्षापणम् ६-३-१०—प्राच्य भारत में प्रति व्यक्ति लगने वाला एक कर।

दृषदिमाषकः ६–३–१०—प्राच्य भारत में प्रति चक्की पर लगने वाला एक कर।

अभ्यर्हितपशुः „ प्राच्य भारत में दक्षिणा में आचार्य को दिया जाने वाला पशु।

यूथपशुः „ प्राच्य भारत के बारह पशु समूह पर लगने वाला कर।

अविकटोरणः „ प्राच्य भारत में भेड़ों के झुण्ड पर लगने वाला कर।

नदीदोहः „ प्राच्य भारत में नदी पार करने के समय उस समय का दुहाव कर।

मध्येगुरुः ६–३–११—मध्ये में गुरु।

अन्तेगुरुः „ अन्त में गुरु।

कण्ठेकालः ६-३-१२—जिसके गले में काला वर्ण हो।

उरसिलोमा „ जिसकी छाती पर बल हो।

मूर्धशिखः „ जिसके सिर पर चोटी हो।

मस्तकशिखः „ जिसके मस्तक पर चोटी हो।

मुखकामः „ जिसके मुख में काम हो।

हस्तेबन्धः, हस्तबन्धः „ जिसके हाथ में बन्धन हो ( हथकड़ी ) हो।

गुप्तिबन्धः „ जो कारागार में पड़ा हो।

स्तम्बेरमः, स्तम्बरमः ६–३–१४—जो घास की ढेर में सुख माने, हाथी।

कर्णेजपः, कर्णजपः „ कान में बात करने वाला, पिशुन, चुगलखोर।

कुरुचरः „ कुरु ( हिमालय के दक्षिण का प्रदेश ) देश में भ्रमण करने वाला।

प्रावृषिजः ६–३–१५—वर्षा में उत्पन्न होने वाला, तूफान।

शरदिजः „ शरद ऋतु में उत्पन्न होने वाला।

कालेजः „ उपयुक्त समय में उत्पन्न होने वाला।

दिविजः „ आकाश या स्वर्ग में उत्पन्न होने वाला।

वर्षेजः ६–३–१६—वर्ष में उत्पन्न होने वाला।

क्षरेजः, क्षरजः „ अर्क खीचने से उत्पन्न, मेघ से उत्पन्न होने वाला।

शरेजः, शरजः ६–३–१६—सरकण्डे में उत्पन्न होने वाला, कार्तिकेय।

वरेजः, वरजः „ वरदान से उत्पन्न होने वाला।

पूर्वाह्णेतरे, पूर्वाह्णतरे ६–३-१७—अधिक पूर्वाह्ण में।

पूर्वाह्णेतमे, पूर्वाह्णतमे „ बिलकुल पूर्वाह्ण में

पूर्वाह्णेकाले, पूर्वाह्णकाले „ पूर्वाह्ण के समय।

पूर्वाह्णेतने, पूर्वाह्णतने „ „ „

खेशयः, खशयः ६–३–१८—आकाश में सोने वाला।

ग्रामेवासः, ग्रामवासः „ गाँव में रहना।

ग्रामेवासी, ग्रामवासी „ गाँव में रहने वाला।

भूमिशयः „ भूमि पर सोना।

अप्सुयोनिः „ जिसकी उत्पत्ति जल में हो।

अप्सव्यः „ जल में होने वाला।

स्थण्डिलशायी ६–३–१९—नंगी भूमि या यज्ञ भूमि पर सोने वाला तपस्वी।

साङ्काश्यसिद्धः „ सांकाश्य ( संकसिया ) में तैयार हुआ।

चक्रबद्धः „ पहियें में बधा हुआ।

समस्थः ६–३–२०—समतल भूमि पर स्थिर रहने वाला।

कृष्णोऽस्याखरेष्ठः „

चौरस्य कुलम् ६–३–२१—चोर का कुल ( निन्दा )

ब्राह्मणकुलम् „ ब्राह्मण का कुल।

वाचोयुक्तिः „ वाणी की युक्ति।

दिशोदण्डः „ आकाश में तारों की दण्डाकार स्थिति।

पश्यतोहरः „ डाकू, जो स्वामी के सामने सम्पत्ति चुराले, जैसे स्वर्णकार।

आमुष्यायणः „ अमुक का पुत्र।

आमुष्यपुत्रिका „ अमुक के पुत्र का भाव।

आमुष्यकुलिका „ अमुक के कुल का भाव।

देवानांप्रियः „ अज्ञानी देवों को प्रिय होता है, मूर्ख। आत्मज्ञानी देवों को प्रिय नहीं होता, क्योंकि वह यज्ञादि नहीं करता,

देवप्रियः „ जो देवों को प्रिय हो।

शुनःशेपः ६–३–२१—एक ऋषि का नाम।
शुनःपुच्छः „ „
शुनोलाङ्गूलः „ „
दिवोदासः „ काशी के एक प्राचीन राजा का नाम।
दास्याःपुत्रः ६-३-२२—दासी का लड़का, गाली, जो दासी का पुत्र न हो।
दासीपुत्रः „ दासी का पुत्र।
ब्राह्मणीपुत्रः „ ब्राह्मणी का पुत्र।
होतुरन्तेवासी ६–३–२३—होता का छात्र।
होतुःपुत्रः „ होता का पुत्र।
पितुरन्तेवासी „ पिता का छात्र।
पितुःपुत्रः „ पिता का पुत्र।
होतृधनम् „ होता का धन।
मातुःस्वसा ६–३–२४—माता की बहिन, मौसी।
मातुःष्वसा ८–३–८५ „ „
पितुःस्वसा, पितुःष्वसा „ पिता की बहन, बूआ।
मातृष्वसा ८–३–८४—माता की बहन, मौसी।
पितृष्वसा „ पिता की बहन, बूआ।

इत्यलुक्समासप्रकरणम।

# अथ समासाश्रयविधयः

ब्राह्मणितरा ६-३-४३—श्रेष्ठ ब्राह्मणी।
ब्राह्मणितमा „ सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मणी।
ब्राह्मणिरूपा „ प्रशंसनीय ब्राह्मणी।
ब्राह्मणिकल्पा „ ब्राह्मणी के सदृश।
ब्राह्मणिचेली „ निन्दिता ब्राह्मणी।
ब्राह्मणिब्रुवा „ निन्दिता ब्राह्मणी।
ब्राह्मणिगोत्रा „ निन्दिता ब्राह्मणी।
दत्तातरा „ अधिक दी हुई।
आमलकीतरा „ उत्तम आँवले का वृक्ष।
कुवलीतरा „ उत्तम उन्नाव का वृक्ष।
ब्रह्मवन्धूतरा ६–३–४४—केवल नाम मात्र की ब्रह्मणी।
ब्रह्मबन्धुतरा „ „
स्त्रितरा „ श्रेष्ठ स्त्री।
स्त्रीतरा „ „
लक्ष्मीतरा „ श्रेष्ठ लक्ष्मी।
विदुषितरा ६ ३–४—अधिक विदुषी स्त्री।
विद्वत्तरा „ „
हृल्लेखः ६ ३ ५०—हृदय की पीड़ा, अशान्ति।
हृद्यम् „ प्रिय, मनोहर।
हार्दम् „ हृदय का, हृदय सम्बन्धी।
हृल्लासः „ हृदय की धड़कन।
हृदयलेखः „ हृदय की पीड़ा, अशान्ति।
हृच्छोकः ६–३–५१—हृदय का शोक।
हृदयशोकः „ „
सौहार्दम् „ सज्जनता।
सौहृदय्यम् „ „
हृद्रोगः „ हृदय का रोग।
हृदयरोगः „ „
पदाजिः ६ ३–५१—पैदल चलने वाला।
पदातिः „ „
पदगः „ „
पदोपहतः „ पैरों से मारा गया।
पद्याः ६–३ ५३—पैरों में चुभने वाली।
पाद्यम् „ पैरों के लिए जल।
पदिकः „ पैदल चलने वाला।
पद्धिमम् ६ ३ ५४ पैर की सर्दी।
पत्काषी „ पैर घसीटने वाला, कष्ट से चलने वाला।
पद्धतिः „ पैरों से घिसा या बनाया हुआ मार्ग।
गायत्रीं पच्छः शंसति ६–३–५५–एक एक पाद गायत्री पढ़ता है।
पादशः कार्षापणं ददाति „ चौथाई चौथाई कार्षापण देता है।

पद्घोषः ६-३-५६—पैरों का शब्द ।
पादघोषः ,, ,,
पन्मिश्रः ,, पैरों से मिलाया गया ।
पादमिश्रः ,, ,,
पच्छब्दः ,, पैरों का शब्द ।
पादशब्दः ,, ,,
पलिप्कः ,, स्वर्णमुद्रा (अशर्फी) का चतुर्थांश ।
पादनिष्कः ,, ,,
उदमेघः ६-३-५७—जल से भरा हुआ (विशेष प्रकार का) मेघ, व्यक्ति विशेष का नाम ।
क्षीरोदः ,, क्षीर सागर ।
उदपेषं पिनष्टि ६-३-५८—जल डाल कर पीसता है ।
उदवासः ,, जल में रहना ।
उदवाहनः ,, जल ढोने वाला ।
उदधिर्घटः ,, जिसमें जल रक्खा जाय, घड़ा ।
उदकुम्भः ६-३-५९ जल का घड़ा ।
उदककुम्भः ,, ,,
उदकस्थाली ,, जल की पतीली ।
उदकपर्वः ,, हिमालय की एक चोटी का नाम ।
उदमन्थः ६-३-६०—जल मिला हुआ सत्तू ।
उदकमन्थः ,, ,,
उदौदनः ,, जल में पकाया गया भात ।
उदकौदनः ,, ,,
ग्रामणिपुत्रः ६-३-६१ – गाँव के मुखिया का पुत्र ।
ग्रामणीपुत्रः ,, ,,
रमापतिः ,, लक्ष्मीपति, विष्णु ।
गौरीपतिः ,, पार्वती के पति शिव ।
श्रीमदः ,, लक्ष्मी का गर्व ।
भ्रूभङ्गः ,, भौंहों का सिकुड़ना ।
शुक्लीभावः ,, जो सफेद न हो उसका सफेद होना ।
भ्रुकुंसः ,, भौंहों से बात करने वाला अथवा भौंहों से जिसकी शोभा हो, नट ।
भ्रुकुटिः ,, भौंहों का टेढ़ापन ।
भ्रूकुंसः ,, नट ।
भ्रूकुटिः ,, भौंहों का टेढ़ापन ।

भ्रकुंसः ६-३-६१—नट ।
भ्रकुटिः ,, भौंहों का टेढ़ापन ।
एकरूप्यम् ६-३-६२—एक स्त्री से आया या मिला हुआ ।
एकक्षीरम् ,, एक स्त्री का दूध ।
रेवतिपुत्रः ६-३-६३—रेवती का पुत्र, बलराम ।
अजक्षीरम् ,, बकरी का दूध ।
अजत्वम् ७-३-७४—बकरी का स्वभाव ।
अजात्वम् ६-३-६४—बकरी का स्वभाव ।
रोहिणित्वम् ,, रोहिणी का स्वभाव ।
रोहिणीत्वम् ,, ,,
कौमुदगन्धीपुत्रः ६-१-१३—कौमुदगन्ध्या नाम की स्त्री का पुत्र ।
कौमुदगन्धीपतिः ,, ,, पति ।
परमकारीषगन्धीपुत्रः ,, परमकारीषगन्ध्या नाम की स्त्री ,, का पुत्र ।
अतिकारीषगन्ध्यापुत्रः ,, अति ,, पुत्र ।
कारीषगन्धीबन्धुः ६ १-१४—जिसका बन्धु कारीषगन्ध्या हो ।
कारीषगन्ध्याबन्धुः ,, कारीषगन्ध्या का बन्धु ।
कारीषगन्धीमातः ,, जिसकी माता कारीषगन्ध्या हो ।
कारीषगन्ध्यामातः ,, ,,
कारीषगन्धीमातृकः ,, ,,
कारीषगन्ध्यामातृकः ,, ,,
कारीषगन्धीमाता ,, ,,
कारीषगन्ध्यामाता ,, कारीष गन्ध्या की माता ।
इष्टकचितम् ६-३-६५ ईंटों से चुना गया ।
पक्वेष्टकचितम् ,, पकी ईंटों से चुना गया ।
इषीकतूलम् ,, सींकों का गुच्छा ।
मुञ्जेषीकतूलम् ,, मूँज की सींकों का गुच्छा ।
मालभारी ,, माला पहिने या लिये हुए ।
उत्पलमालभारी ,, कमल के फूलों की माला पहिने या लिए हुए ।
सत्यङ्कारः ६-३-७०—शपथ ग्रहण करना ।
अगदङ्कारः ,, नीरोग करने वाला वैद्य ।
अस्तुङ्कारः ,, समर्थ ।

धेनुम्भव्या ६–३–७०—जो गाय बच्चा देने वाली हो।
लोकंपृणः ,, संसार में व्याप्त होने वाला, फैलने वाला। 'लोकम्पृणैः परिमलैः परिपूरितास्या'।
अनभ्याशमित्यः ,, जिसके पास न जाया जा सके, दूर से त्यागने योग्य।
भ्राष्ट्रमिन्धः ,, भाड़ में भूनने वाला।
अग्निमिन्धः ,, आग जलाने वाला।
तिमिङ्गिलः ,, तिमिनाम की मछली को निगलने वाली बहुत बड़ी मछली।
गिलगिलः ,, एक मछली।
तिमिङ्गिलगिलः ,, तिमिङ्गिल को भी निगल जाने वाली मछली।
उष्णङ्करणम् ,, गर्म करना।
भद्रङ्करणम् ,, कल्याण करना।
रात्रिञ्चरः ६–३–७२—रात में घूमने वाला, राक्षस, निशाचर।
रात्रिचरः ,, ,,
रात्रिमटः ,, ,,
रात्र्यटः ,, ,,
रात्रिम्मन्यः ,, अपने को रात समझाने वाला।
सपलाशम् ६–३–७८—पत्ते के साथ, पत्ते को भी न छोड़ कर।
सहयुध्वा ,, साथ युद्ध करने वाला।
समुहूर्त्तं ज्योतिषमधीते ६-३-७९–वह मुहूर्त्त पर्यन्त ज्योतिप पढ़ता है।
सद्रोणा खारी ,, द्रोणसहित खारी परिमाण।
सराक्षसीका निशा ६–३–८०—राक्षसियों वाली रात।
सगर्भ्यः ६–३–८४—एक गर्भ में उत्पन्न होने वाला।
सयूथ्यः ,, एक झुंड में रहने या होने वाला।
सनुत्यः ,, शत्रु, डाकू।
समानमूर्धा ,, जिसका मस्तक समान हो।
समानप्रभृतयः ,, जिनका आदि अवयव समान, एक सा हो।
समानोदकीः ,, समान परिणाम वाले।

सपक्षः ६–३–८४—समान (एक) पत्तक।
साधर्म्यम् ,, समान धर्म, कार्य का होना।
सजातीयम् ,, समान जाति का होना।
ससखि ,, मित्र के सदृश।
सज्योतिः ६–३–८५ – अशौच का वह काल जो सूर्यास्त तक अथवा नक्षत्रों के निकलने तक हो।
सजनपदः ,, एक जनपद का।
सब्रह्मचारी ,, वेद की एक ही शाखा का पढ़ने ,, वाला छात्र।
सतीर्थ्यः ६–३–८७ एक ही गुरु का, अध्यापक का छात्र।
सोदर्यः ६ २ ८८ – एक ही गर्भ से उत्पन्न, सगा भाई।
समानोदर्यः ,, ,,
सदृक् ६·३ ८९—समान।
सदृक्षः ,, ,,
सदृशः ,, ,,
ईदृक् ,, ऐसा।
ईदृशः ,, ,,
ईदृक्षः ,, ,,
कीदृक् ,, कैसा।
कीदृशः ,, ,,
कीदृक्षः ,, ,,
तादृक् ,, वैसा।
तादृशः ,, ,,
तादृक्षः ,, ,,
तावान् ,, उतना।
अमूदृक् ,, ऐसा, इस तरह का।
अमूदृशः ,, ,,
अमूदृक्षः ,, ,,
अङ्गुलिषङ्गः ८–३–८० – अंगुली में लगा हुआ।
अङ्गुलिषङ्गा यवागूः (काशिका) ,, लगी हुई काँजी।
भीरुष्ठानम् ८–१-८१—डरपोक का स्थान।
ज्योतिष्टोमः ८·३–८३—सोलह ऋत्विगों से किया जाने वाला एक यज्ञ।
आयुष्टोमः ,, दीर्घायु के निमित्त किया जाने वाला एक यज्ञ।

सुषामा ८-३-९८--सामवेद का सुन्दर गान करने वाला।
सुषन्धिः ,, सुन्दर सन्धि (मेल) करने वाला।
हरिषेणः ८ ३-९९--बन्दर जिसकी सेना हो।
हरिसक्थम् ,, बन्दर की जाँघ।
पृथुसेनः ,, जिसकी सेना बड़ी हो, राजा रुचिर के एक पुत्र का नाम।
विष्वक्सेनः ,, जिसकी सेना सर्वत्र जाती हो, विष्णु अथवा कृष्ण।
सर्वसेनः ,, सम्पूर्ण सेना का स्वामी, ब्रह्मदत्त के एक पुत्र का नाम (हरिवंश)
रोहिणीषेणः ८ ३ १००- व्यक्ति विशेष का नाम।
रोहिणीसेनः ,, ,,
शतभिषक्सेनः ,, ,,
अन्यदाशीः ६ ३ ९९—दूसरा आशीर्वाद।
अन्यदाशाः ,, दूसरी आशा।
अन्यदूतिः ,, दूसरी सहायता, दया अथवा बुनावट।
अन्यदास्था ,, दूसरे में आसक्ति या भक्ति।
अन्यदास्थितः ,, सम्मति या सहायता के लिए दूसरे के पास गया हुआ।
अन्यदुत्सुकः ,, दूसरे के लिए उत्सुक।
अन्यदूतिः ,, दूसरी सहायता दया अथवा बुनावट।
अन्यद्रागः ,, दूसरा राग, रंग।
अन्यदीयः ,, दूसरे का।
अन्याशीः ,, दूसरे का आशीर्वाद।
अन्यत्कारकः ,, दूसरे का करने वाला।
अन्यदर्थः ६ ३ १००—दूसरा अर्थ।
अन्यार्थः ,, ,,
कदश्वः ६ ३-१०१—खराब घोड़ा।
कदन्नम् ,, खराब अन्न, मोटा अन्न।
कूष्ट्री राजा ,, खराब ऊँटों का राजा।
कत्त्रयः ,, खराब तीन व्यक्ति।
कद्वदः ६ ३-१०२—बुरा बोलने वाला।
कद्रथः ,, बुरा रथ।

कत्तृणम् ६-३-१०३—एक प्रकार की सुगन्धित घास (हरिद्वारी कुश)
कापथम् ६-३-१०४ बुरा मार्ग।
काक्षः ,, खराब पासा, बुरी आँख वाला।
काजलम् ६-३-१०५—थोड़ा जल।
काम्लः ,, कुछ कुछ खट्टा।
कापुरुषः ६-३-१०६—कुत्सित पुरुष, कायर।
कुपुरुषः ,, ,,
कापुरुषः ,, कुछ कुछ पुरुष।
कवोष्णम् ६ ३-१०७—कुछ कुछ गर्म।
कदुष्णम् ,, ,,
कोष्णम् ,, ,,
पृषोदरम् ६ ६ १०९—चितकवरे मृग का उदर, हवा।
बलाहकः ,, मेघ।
हंसः ,, पक्षि विशेष।
सिंहः ,, पशुविशेष।
गूढोत्मा ,, छिपी हुई आत्मा।
दक्षिणतारम् ,, दक्षिणी तट।
दक्षिणतीरम् ,, ,,
उत्तरतारम् ,, उत्तरी तट।
उत्तरतीरम् ,, ,,
दूडाशः ,, जिसको कठिनता से दिया जासके या कष्ट पहुँचाया जा सके।
दूणाशः ,, जिसको कठिनता से नष्ट किया जा सके।
दूडभः ,, जिसको कठिनता से दबाया जा सके या कष्ट पहुँचाया जा सके।
दूढ्यः ,, जो कठिनता से ध्यान करे।
वृसीः ,, व्यासासन, ऋषि का आसन, गद्दी।
द्विगुणाकर्णः ६-३ ११४, ११५—जिस पशु के कान पर दुगुनी रेखाएँ हों।
शोभनकर्णः ,, ,, कान सुन्दर हों।
विष्टकर्णः ,, ,, ,,
अष्टकर्णः ,, जिस पशु के कान पर आठ अंक अंकित हो।

पञ्चकर्णः ६-३-११५—जिस पशु के कान पर पाँच अंक अंकित हो।
मणिकर्णः ,, ,, ,, मणि का चिह्न हो।
भिन्नकर्णः ,, ,, ,, फटे हों।
छिन्नकर्णः ,, ,, ,, कटे हों।
स्रुवकर्णः ,, ,, ,, स्रुवा का चिन्ह।
स्वस्तिककर्णः ,, ,, ,, स्वस्तिक का चिन्ह हो।
उपानत् ६-३-११६--जूता।
नीवृत् ,, जो देश बसा हुआ (आवाद) हो, एक राज्य।
प्रावृट् ,, वर्षा ऋतु।
मर्माविद् ,, मर्म स्थल में छेद करने वाला।
नीरुक् ,, ऋ० वें० ८, -२० चमक या प्रकाश से भागना।
अभीरुक् ,, प्रसन्न करने वाला।
ऋतीषट् ,, आक्रामक को दवा देने वाला।
परीतत् ,, चारों ओर फैलाने वाला।
परिनहनम् ,, ,,
पटुरुक् ,, तीव्र या कठिन रोग वाला।
तिग्मरुक् ,, ,, ,,
पुरगावणम् ६-३-११७—नरक विशेष का नाम, पटना के पास एक वन का नाम।
मिश्रकावणम् ८-४-४—मिसरिख का जंगल।
सिध्रकावणम् ,, स्वर्ग के एक जंगल का नाम (m. w.)
शारिकावणम् ,, एक जंगल का नाम।
कोटरावणम् ,, एक जंगल का नाम।
असिपत्रवनम् ,, नरक विशेष का नाम।
अग्रेवणम् ,, आगरा के समीप वर्ती एक जंगल का नाम।
किंशुलुकागिरिः ,, मकरानश्रृंखला, हिंगुलानदी का उद्गम, इसी पर हिंगुला देवी का मन्दिर है।
कृषीवलः ६-३-११८—जिसके पास खेती हो, किसान।

अमरावती ६-३-११९—इन्द्रपुरी।
अजिरवती ,, राप्ती नदी।
व्रीहिमती ,, जिस स्त्री के पास धान हो।
वलयवती ,, जिस स्त्री के पास कड़े हों।
शरावती ६-३ ११९—दृषद्वती का एक नाम, घग्घर, अम्वाला जिले में बहती है।
ऋषीवहम् ६-३-१२१—वाहीक देश का ग्रामविशेष।
कपीवहम् ,, ,,
पिण्डवहम् ,, ,,
पीलुवहम् ,, ,,
दारुवहम् ,, ,,
परिपाकः ६-३-१२२—अच्छी तरह से पकना या पचना, परिणाम।
परीपाकः ,, ,, ,, ,,
निषादः ,, एक जंगली जाति का मनुष्य।
वीकाशः ६-३-१२३ प्रकाश, तेज, चमक।
नीकाशः ,, आकृति, ढंग, शोभा।
प्रकाशः ,, उजेला।
अष्टापदम्,दः ६-३-१२५—सुवर्ण, मकड़ा।
अष्टपुत्रः ,, जिसके आठ पुत्र हों।
एकचितीकः ६-३-१२७—जिसके पास अग्नि नामक एक वेदी हो।
द्विचितीकः ,, जिसके पास अग्नि नामक दो वेदी हो।
विश्वानरः ६-३-१२९—सूर्य, अग्नि के पिता का नाम।
विश्वामित्रः ६-३-१३०—एक ऋषि (गाधितनय) का नाम।
विश्वमित्रो माणवकः ,, एक छात्र का नाम।
श्वादन्तः ,, कुत्ते का दाँत।
प्रवणम् ८ ४-५ उत्तम जंगल।
कार्ष्यवणम् ,, साल (shouea Robusta) का जंगल।
दूर्वावणम् ८-४-६—दूब का जंगल।
दूर्वावनम् ,, ,,
शिरीषवणम् ,, सिरस का जंगल।
शिरीषवनम् ,, ,,

देवदारुवनम् ८-४-६—देवदार का जंगल।
इरिकावनम् „ इरिका ( एक प्रकार की घास या पेड़ ) का वन।
मिरिकावनम् „ मिरिका ( एक प्रकार का पौधा ) का जंगल।
इक्षुवाहणम् ८-४-८—ईख ढोने की गाड़ी।
इन्द्रवाहनम् „ इन्द्र की सवारी।
क्षीरपाणा उशीनराः ८-४-९—दूध पीने वाले उसीनर।
सुरापाणाः प्राच्याः „ शराब पीने वाले, पूर्वी।
क्षीरपाणम् ८-४-१०—दूध का पीना।
क्षीरपानम् „ „
गिरिणदी, गिरिनदी „ पहाड़ी नदी।
चक्रणितम्बा ८-४-१०-जिस स्त्री का नितम्ब चक्र के समान हो।
चक्रनितम्बा „ „ „
माषवापिणौ ८-४-११—उड़द बोने वाले दो व्यक्ति।
व्रीहिवापाणि „ धान बोने वाले किसानों के कुल।
माषवापेण „ उड़द बोने से।
गर्गभगिनी „ गर्ग गोत्र वाले की बहिन।
प्रेन्वनम् „ भेजना।
रम्ययूना „ सुन्दर युवक द्वारा।
परिपक्वानि „ अच्छी तरह पके हुए।
वृत्रहणौ „ वृत्रासुर को मारने वाले।
हरिमाणी „ विष्णु को पूजने वाला।
क्षीरपाणि „ दूध पीने वाला।
क्षीरपेण „ दूध पीने वाले के द्वारा।
रम्यविणा „ सुन्दर पक्षी द्वारा।
हरिकामिणौ ८-४-१३—विष्णु को चाहने वाले दो व्यक्ति।
हरिकामाणि „ „ „ कुल।
हरिकामेण „ विष्णु की कामना वाले व्यक्ति द्वारा।
माषकुम्भवापेन ८-४-३८—एक घड़े उड़द के बोने योग्य खेत द्वारा।
चतुरङ्गयोगेन „ चतुरङ्गिनी सेना के सम्बन्ध से।
शुष्कगोमयेण „ सूखे गोबर से।

कुतुम्बुरूणि ६-१-१४३—तेन्दू के खराब फल।
कुस्तुम्बुरुः „ धनियाँ।
अपरस्पराः सार्था गच्छन्ति ६-१-१४४—व्यापारी ( बैलों पर सामान लाद कर चलने वाले ) साथ साथ जाते हैं।
अपरपरा गच्छन्ति „ भिन्न-भिन्न लोग साथ जाते हैं।
गोष्पदः ६-१-१४५—जिस प्रदेश में गाय अधिक हों।
अगोष्पदान्यरण्यानि „ जिन जंगलों में गाय न हों।
गोष्पदमात्रं क्षेत्रम् „ गाय के खुर के बरावर (थोड़ा सा) खेत।
गोपदम् „ गाय का पैर।
आस्पदम् ६-१-१४६—प्रतिष्ठित स्थान।
आपदम् „ आपत्ति।
आश्चर्यं यदि स भुञ्जीत ६-१-१४७—आश्चर्य है यदि वह भोजन करे।
आश्चर्यं कर्म शोभनम् „ सुन्दर (उत्तम) काम करना चाहिए।
अवस्करः ६-१-१४८—मल, विष्ठा, यज्ञावशिष्ट रखने का स्थान।
अवकरः „ धूल या बटोरन।
अपस्करः ६-१-१४९—पहिया।
अपकरः „ मियाँवली जिले में सिन्धु तट पर स्थित आधुनिक भक्खर।
विष्किरः ६-१-१५०—पक्षी।
विकिरः „ „
प्रतिष्कशः ६-१-१५२—सहायक या अग्रगामी।
प्रतिकशोऽश्वः „ कोड़ा खाने वाला (खराब) घोड़ा।
प्रष्कण्वः ६-१-१५३—एक ऋषि का नाम।
प्रकण्वः „ एक देश का नाम ( आधुनिक फरधाना।
हरिश्चन्द्रः „ एक ऋषि का नाम।
हरिचन्द्रो माणवकः „ एक छात्र का नाम।
मस्करः ६-१-१५४—बाँस।
मस्करी „ परिव्राजक, संन्यासी।
मकरः „ मगर, ग्राह।

मकरी ६-१-१५४—मगरों वाला समुद्र ।
कास्तीरं नाम नगरम् ६-१-१५५—लाहौर जिले का कसूर नामक नगर, सतलज के दाहिने तट पर ४,५ मील हट कर स्थित है ।
कातीरम् ,, खराव तट ।
अजस्तुन्दम् नाम नगरम् ,, वाहीक देश का एक ग्राम ।
अजतुन्दम् ,, बकरे की तोंद ।
कारस्करः ६-१-१५६—कुचिला ।
कारकरः ,, कार्यकर्त्ता, स्थानापन्न ।
पारस्करः ६-१-५७—एक मुनि का नाम, आधुनिक थरपार कर ।
किष्किन्धा ,, वालि की राजधानी, हैदराबाद के दक्षिण मैसूर राज्य का एक स्थान ।
तस्करः ,, चोर ।
बृहस्पतिः ,, देवों के गुरु का नाम ।
प्रायश्चित्तिः ,, पापों के विशोधन का कर्म ।
प्रायश्चित्तम् ,, ,,
वनस्पतिः ,, केवल फल लगने वाला वृक्ष, साधारण वृक्ष ।
परःशतानि ,, सैकड़ों ।

इति समासाश्रयविधयः ।

# तद्धिताधिकारप्रकरणम्

## अथ अपत्यादि-विकारान्तार्थसाधारणप्रत्ययाः

आश्वपतम् ४-१-८४—अश्वपति की सन्तान अथवा अश्वपति सम्बन्धी ।

गाणपतम् ,, गणपति की सन्तान अथवा गणपति सम्बन्धी ।

दैत्यः ४-१-८५—दिति की सन्तान अथवा दिति सम्बन्धी ।

आदित्यः ,, अदिति अथवा आदित्य की सन्तान अथवा तत्सम्बन्धी ।

प्राजापत्यः ,, प्रजापति की सन्तान अथवा प्रजापति सम्बन्धी ।

याम्यः ,, यम की सन्तान अथवा यम सम्बन्धी ।

पार्थिवा ,, पृथिवी की सन्तान अथवा पृथिवी सम्बन्धी ।

पार्थिवी ,, ,, ,,

दैव्यम् ,, देव की सन्तान देव अथवा देव सम्बन्धी ।

दैवम् ,, ,,

बाह्यः ,, बाहर होने वाला, बाहरी ।

बाहीकः ४-१-८५—बाहर होने वाला, बाहरी ।

अश्वत्थामः ,, अश्वत्थामा की सन्तान अथवा तत्सम्बन्धी ।

अश्वत्थामा ,, ,,

उडुलोमाः ,, उडुलोमा की सन्तानें अथवा तत्सम्बन्धी ।

उडुलोमान् ,, उडुलोमा की सन्तानों को ।

औडुलोमिः ,, उडुलोमा की सन्तान ।

गव्यम् ,, गाय में होने वाला, जिसके देवता गाय हो, गायसम्बन्धी ।

गोरूप्यम् ,, गाय के लिए अथवा गाय से प्राप्त ।

गोमयम् ,, गोबर ।

औत्सः ४-१-८६—उत्स की सन्तान अथवा उत्स सम्बन्धी ।

आग्नेयम् ,, अग्नि की सन्तान अथवा अग्नि सम्बन्धी ।

कालेयम् ,, कलि की सन्तान ,, कलि सम्बन्धी ।

इत्यपत्यादिविकारान्तार्थसाधारणाः प्रत्ययाः ।

## अथापत्याधिकारप्रकरणम्

स्त्रैणः ४-१-८७—स्त्रियों में होने वाला, स्त्रीसम्वन्धी, स्त्रियों के उपयुक्त ।

पौंस्नः ,, पुरुषों में होनेवाला पुरुष सम्वन्धी पुरुषों के उपयुक्त ।

स्त्रीवत् ,, स्त्रियों की तरह ।

पुंवत् ,, पुरुषों की तरह ।

पञ्चकपालः ४-१-८८—पाँच सकोरों में प्रस्तुत की गयी यज्ञीय चावल की टिकिया ।

पाञ्चकपालम् ४-१-८८—पाँच सकोरों का एक टुकड़ा ।

पञ्चगर्गरूप्यम् ,, पाँच गर्गों से आया हुआ या प्राप्त ।

द्वैमित्रिः ,, दो मित्रों की सन्तान ।

गार्गीयाः ४-१-८९—६-४-१५१—गर्गों के छात्र ।

गर्गीयम् ,, गर्गो के लिए लाभदायक ।

गर्गरूप्यम् ,, गर्गों से आया हुआ या प्राप्त ।

ग्लुचुकायनिः ४-१-९०—ग्लुचुक के गोत्र में उत्पन्न सन्तान ।

ग्लौचुकायनः ४-१-९०—ग्लुचुकायनि की युवा सन्तान।
ग्लौचुकायनः ,, ग्लुचुकायनि का छात्र।
पैलः २-४-५९—पीला के गोत्र में उत्पन्न सन्तान, वृद्ध अथवा युवा।
आङ्गः ,, अङ्गदेश के राजा के गोत्र में उत्पन्न वृद्ध अथवा युवा।
पान्नागारिः २-४-६० प्राच्य देश के पन्नागारकी सन्तान वृद्ध अथवा युवा।
दाक्षिः ,, दक्ष की सन्तान, वृद्ध।
दाक्षायणः ,, दक्ष की सन्तान, युवा।
तौल्वलिः २-४-६१—तुल्वल की सन्तान, वृद्ध।
तौल्वलायनः ,, तुल्वल की सन्तान, युवा।
कातीयाः ४-१-९१—कात्यायन के छात्र।
कात्यायनीयाः ,, ,,
यास्कः ,, यस्क की सन्तान।
यास्कायनिः ,, यास्क की युवा सन्तान।
यास्कीयाः ,, यास्कायनि के छात्र।
यास्कायनीयाः ,, ,,
औपगवः ४-१-९२—उपगु की सन्तान।
भानवः ,, भानु की सन्तान।
सौत्थितिः ,, सूत्थित की सन्तान।
औपगवी ,, उपगु की सन्तान (स्त्री)।
आश्वपतः ,, अश्वपति की सन्तान।
दैत्यः ,, दिति की सन्तान।
औत्सः ,, उत्स की सन्तान।
स्त्रैणः ,, स्त्री की सन्तान।
पौंस्नः ,, पुरुष की सन्तान।
गार्ग्यायणः ४-१-१६२-१६५—गर्गकुल का युवा सदस्य।
गार्ग्यः ,, गर्गकुल का वृद्ध सदस्य।
गार्ग्यायणः ,, गर्गकुल का आदरणीय युवा सदस्य।
गार्ग्यः ,, गर्ग कुल का आदरणीय वृद्ध सदस्य।
गार्ग्यो जाल्मः ,, गर्ग कुल की नीच सन्तान।
गार्ग्यायणः ,, गर्ग कुल की सन्तान।

औपगवः ४-१-९३—उपगु का पौत्रादि।
गार्ग्यः ,, गर्ग का पौत्र।
नाडायनः ,, नड का पौत्र।
गार्ग्यायणः ४-१-९४—गर्ग कुल की युवा सन्तान।
दाक्षिः ४-१-९५—दक्ष की सन्तान।
बाहविः ४-१-९६—बाहु नामक ऋषि की सन्तान।
औडुलोमिः ,, उडुलोमा की संतान।
सौधातकिः ४ १ ९७—सुधातु की सन्तान।
वैयासकिः ७-३-३ व्यास की संतान।
वारुडकिः ,, वरुड की संतान।
कौञ्जायन्यः ४-१-९८-५-३-११३—कुञ्ज की सन्तान।
ब्राध्नायन्यः ,, ब्रध्न की सन्तान।
कौञ्जायनी ,, कुञ्ज की सन्तान (स्त्री)।
कौञ्जिः ,, कुञ्ज का पुत्र।
नाडायनः ४-१-९९—नड के पौत्र आदि वंशज।
चारायणः ,, चर के पौत्र आदि वंसज।
नाडिः ,, नड का पुत्र।
हारितायनः ४-१-१००—हरित कुल की युवा सन्तान।
गार्ग्यायणः ४-१-१०१—गर्ग कुल के पौत्र आदि वंशज।
दाक्षायणः ,, दक्ष कुल के पौत्र आदि वंशज।
शारद्वतायनः ४-१-१०२—शरद्वत के पौत्र आदि वंशज जो भार्गव हों।
शारद्वतः ,, शरद्वत के पौत्र आदि वंशज जो भार्गव न हों।
शौनकायनः ,, शुनक के पौत्र आदि वंशज जो वात्स्य हों।
शौनकः ,, शुनक के पौत्र आदि वंशज जो वात्स्य न हों।
दार्भायणः ,, दर्भ के पौत्र आदि वंशज जो आग्रायण हों।
दार्भिः ,, दर्भ के पौत्र आदि वंशज जो आग्रायण न हों।
द्रौणायनः ४-१-१०३—द्रोण के पौत्र आदि वंशज, महाभारत से भिन्न द्रोण।
द्रौणिः ,, द्रोण के पौत्र आदि वंशज, महाभारत से भिन्न द्रोण।

पार्वतायनः ४–१–१०३—पर्वत के पौत्र आदि वंशज ।
पार्वतिः ,, ,, ,,
जैवन्तायनः ,, जीवन्त के पौत्र आदि वंशज ।
जैवन्तिः ,, ,, ,,
वैदः ४–१–१०४—बिद के पौत्र आदि वंशज ।
बैदिः ,, बिद का पुत्र ।
पौत्रः ,, पुत्र का पुत्र ।
दौहित्रः ,, लड़की का पुत्र ।
गार्ग्यः ४–१–१०५—गर्ग का पौत्र आदि वंशज ।
वात्स्यः ,, वत्स का पौत्र आदि वंशज ।
गर्गाः २–४–६४—गर्ग के पौत्र आदि वंशज ।
वत्साः ,, वत्स ,, ,,
बिदाः ,, बिद ,, ,,
उर्वाः ,, उर्व ,, ,,
प्रियगार्ग्याः ,, जिनको गर्ग गोत्रज प्रिय हों ।
गार्ग्यः ,, गर्ग के पौत्री आदि वंशज (स्त्री) ।
द्वैप्याः ,, द्वीप में रहने वाले ।
औत्साः २–४–६४—उत्स की सन्तान ।
पौत्राः ,, पुत्र के पुत्र, पोते ।
दौहित्राः ,, लड़की के पुत्र, नाती ।
माधव्यः ४–१–१०६—मधु नामक ब्राह्मण का वंशज ।
माधवः ,, मधु नामक ब्राह्मणेतर व्यक्ति का वंशज ।
बाभ्रव्यः ,, बभ्रु का वंशज, कौशिक ऋषि ।
बाभ्रवः ,, बभ्रु का वंशज अन्य व्यक्ति ।
बाभ्रव्यायणी ,, ,,
काप्यः ४–१–१०७—कपि का वंजश, आङ्गिरस ।
बौध्यः ,, बोध का पौत्र आदि वंशज आङ्गिरस ।
कापेयः ,, कपि का वंशज ।
बौधिः ,, बोध का वंशज ।
वातण्ड्यः ४–२–१०९—वतण्ड का पौत्र आदि वंशज आङ्गिरस ।
वातण्ड्यः ,, आङ्गिरस भिन्न वतण्ड का वंशज ।
वातण्डः ,, ,,

वातण्डी ४–१–१०९—आङ्गिरस वतण्ड का वंशज (स्त्री) ।
वातण्ड्यायनी ,, आङ्गिरस भिन्न वतण्ड की वंशज स्त्री ।
वातण्डी ,, ,,
आश्वायनः ४–१–११०—अश्व का पौत्र आदि वंशज ।
जातायनः ,, जात का पौत्र आदि वंशज ।
जातेयः ,, जाता नाम की स्त्री की सन्तान ।
मार्गायणः ४–१–११३—त्रिगर्त्त देशीय भर्ग का पौत्र आदि वंशज ।
मार्गिः ,, अन्य देश के भर्ग का पौत्र आदि वंशज ।
शैवः ४–१–१२२—शिव की सन्तान ।
गाङ्गः ,, गङ्गा की सन्तान ।
गाङ्गायनिः ,, ,,
गाङ्गेयः ,, ,,
यामुनः ४–१–११३—यमुना की सन्तान ।
नार्मदः ,, नर्मदा की सन्तान ।
चैन्तितः ,, चिन्तिता की सन्तान ।
वासवदत्तेयः ,, वासवदत्ता की सन्तान ।
वैनतेयः ,, विनता की सन्तान ।
शौभनेयः ,, शोभना की सन्तान ।
वासिष्ठः ४–१–११४—वसिष्ठ की सन्तान ।
वैश्वामित्रः ,, विश्वामित्र की सन्तान ।
श्वाफल्कः ,, श्वफल्क की सन्तान ।
वासुदेवः ,, वसुदेव की सन्तान ।
आनिरुद्धः ,, अनिरुद्ध की सन्तान ।
शौरिः ,, शूर नामक यादव का पुत्र ।
नाकुलः ,, नकुल का पुत्र ।
साहदेवः ,, सहदेव का पुत्र ।
आत्रेयः ,, अत्रि का पुत्र ।
द्वैमातुरः ४–१–११५—दो माताओं का पुत्र, गणेश ।
षाण्मातुरः ,, छह माताओं का पुत्र, स्कन्द ।
साम्मातुरः ,, उत्तम माता का पुत्र ।
भाद्रमातुरः ,, श्रेष्ठ माता का पुत्र ।
सौमात्रः ,, सुमाता का पुत्र ।
वैमात्रेयः ,, सौतेली माता का पुत्र ।

कानीनः ४–१–११६—अविवाहिता कन्या का पुत्र, वेद-
व्यास, कर्ण।

वैकर्णो वात्स्यः ४–१–११७—विकर्ण का पुत्र, वत्सगोत्रीय।
वैकर्णिः „ „ जो वत्सगोत्रीय न हो।
शौङ्गः „ शुङ्ग का पुत्र जो भारद्वाज न हो।
शौङ्गिः „ „ जो भारद्वाज न हो।
छागलः „ अत्रिगोत्र वाले छगल का पुत्र।
छागलिः „ छगल का पुत्र जो अत्रिगोत्र का
न हो।

पैलः ४–१ ११८—पीला का पुत्र।
पैलेयः „ „
माण्डूकेयः ४–१–११९—मण्डूक ऋषि का पुत्र।
माण्डूकः „ „
माण्डूकिः „ „
वैनतेयः ४–१–१२०—विनता का पुत्र।
सौमित्रिः „ सुमित्रा का पुत्र।
सापत्नः „ सपत्नी का पुत्र।
दात्तेयः ४–१–१२१—दत्ता का पुत्र।
पार्थः „ पृथा (कुन्ती) का पुत्र।
दौलेयः४–१–१२२—दुलि का पुत्र।
नैधेयः „ निधि का पुत्र।
शौभ्रेयः ४–१–१२३—शुभ्र का पुत्र।
वैकर्णेयः ४–१–१२४—कश्यपगोत्रीय विकर्ण का पुत्र।
कौषीतकेयः „ कश्यपगोत्रीय कुषीतक का पुत्र।
वैकर्णिः „ विकर्ण का पुत्र जो कश्यपगोत्रीय न हो।
कौषीतकिः „ कुषीतक का पुत्र।
भ्रौवेयः ४–१–१२५—भ्रू का पुत्र।
प्रावाहणेयः ७–३–२८—प्रवाहण का पुत्र।
प्रवाहणेयः „ „
प्र-प्रावाहणेयिः ७-३–२९— „
काल्याणिनेयः ४–१–१२६—कल्याणी का पुत्र।
बान्धकिनेयः „ बन्धकी का पुत्र।
कौलटिनेयः ४–१–१२७—साध्वी भिक्षुकी का पुत्र।
कौलटेयः „ „
कौलटेरः „ व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र।

सौहार्दः ७–३–१९—मित्र अथवा सत्पुरुष का पुत्र।
सौभागिनेयः „ सौभाग्यवती स्त्री का पुत्र।
साक्तुसैन्धवः „ सक्तुसिन्धु प्रदेश में होने वाला।
चाटकैरः ४–१–१२८—गौरैया का बच्चा।
गौधेरः ४–१–१२९—गोह का बच्चा।
गौधेयः ४–१–१२९—गोह का बच्चा।
गोधारः ४– –१३०— „
जाडारः „ जड का पुत्र।
पाण्डारः „ पण्ड का पुत्र।
काणेरः ४–१–१३१—काती स्त्री का पुत्र।
काणेयः „ „
दासेरः „ दासी का पुत्र।
दासेयः „ „
पैतृष्वस्रीयः ४–१–१३२—बुआ का पुत्र, फुफेरा भाई।
पैतृष्वसेयः ४–१–१३३— „ „
मातृष्वस्रीयः ४–१–१३४—मौसी का पुत्र, मौसेरा भाई।
मातृष्वसेयः „ „ „
कामण्डलेयः ४–१–१३५–, ६–४–१४७—चार पैर वाले
पशु विशेष का बच्चा।
गार्ष्टेयः ४–१– ३६—पहिली बार बच्चा देने वाले पशु का
बच्चा।

मैत्रेयः ७–३–२, ६–४–१७४—मित्रयु का पुत्र।
मैत्रेयौ „ „
मित्रयवः २–४–६३ मित्रयु का पौत्र आदि वंशज।
अत्रयः २–४–६५—अत्रि के पौत्र आदि वंशज।
भृगवः „ भृगु „
कुत्साः „ कुत्स „
वसिष्ठाः „ वसिष्ठ „
गोतमाः „ गोतम „
अङ्गिरसः „ अङ्गिरस „
पन्नागाराः २–४–६६—प्राग्देशीय पन्नागार के पौत्र आदि
वंशज।
युधिष्ठिराः „ भारत कुल के युधिष्ठिर के पौत्र
आदि वंशज।
गौपवनाः २–४–६७—गोपवन ऋषि के पौत्र आदि वंशज।
शैग्रवाः „ शिग्रु ऋषि के पौत्र आदि के वंशज।

तिककितवाः २–४–६८—तिककितव के पौत्र आदि वंशज ।
उपकलमकाः २–४–६९—उपक लमक के पौत्र आदि वंशज ।
औपकायनलामकायनाः ,, ,, ,, ,,
भ्राष्ट्रककपिष्ठलाः ,, भ्राष्ट्रक कपिष्ठल के पौत्र आदि वंशज ।
भ्राष्ट्रकिकापिष्ठलयः ,, ,, ,, ,,
उपकाः ,, उपक के पौत्र आदि वंशज ।
औपकायनाः ,, ,, ,,
लमकाः ,, लमक के पौत्र आदि वंशज ।
लामकायनाः ,, ,, ,,
अगस्त्यः २–४–७०—अगस्त्य के पौत्र आदि वंशज ।
कुण्डिनाः ,, कौण्डिन्य के पौत्र आदि वंशज ।
राजन्यः ४–१–१३७—राजा का क्षत्रिया में उत्पन्न पुत्र ।
राज्यम् ,, राजा का कर्म या भाव ।
श्वसुर्यः ,, श्वसुर का पुत्र ।
राजनः ,, राजा का क्षत्रिया से भिन्न स्त्री से उत्पन्न पुत्र ।
चाक्रिणः ६–४–१६६—चक्रधारी का पुत्र ।
माद्रसामः ६–४–१७०—भद्रसाम का पुत्र ।
सौत्वनः ,, सुत्वन का पुत्र ।
चार्मणः ६–:–१७०—चमड़े से ढका हुआ ( रथ ) ।
चाक्रवर्मणः ,, चक्रवर्मा का पुत्र ।
हैतनामः ,, हितनाम का पुत्र ।
हैतनामनः ,, ,,
ब्राह्मम् ५–४–१७१—जिस ( हवि ) के देवता ब्रह्मा हों ।
ब्राह्मणः ,, ब्रह्मा की संतान ।
ब्राह्मी ,, जिस ओषधिके देवता ब्रह्मा हों ।
औक्षम् पदम् ६–४–१७३—बैल का पदचिह्न ।
औक्ष्णः ६–४–१२५—बैल का बछड़ा ।
ताक्ष्णः ,, बढ़ई का पुत्र ।
भ्रौणघ्नः ,, भ्रूणहत्या करने वाले का पुत्र ।
धार्तराज्ञः ,, धृतराज का पुत्र ।
सामनः ,, साम का पुत्र ।

ताक्षण्यः ४–१–१३८—बढ़ई का पुत्र ।
क्षत्रियः ,, क्षत्र (रक्षा करने वाले ) का पुत्र ।
क्षात्रिः ,, क्षत्र का शूद्रा में उत्पन्न पुत्र ।
कुलीनः ४–१–१३९—उत्तम कुल में उत्पन्न पुत्र ।
आढ्यकुलीनः ,, धनी कुल में उत्पन्न ।
कुल्यः ४–१–१४०—उत्तम कुल में उत्पन्न ।
कौलेयकः ,, ,, ,,
कुलीनः ,, ,, ,,
बहुकुल्यः ,, अनेक कुलों में उत्पन्न ।
बाहुकुलेयकः ,, ,, ,,
बहुकुलीनः ,, ,, ,,
माहाकुलः ४–१–१४१—उच्चकुल में उत्पन्न ।
माहाकुलीनः ,, ,,
महाकुलीनः ,, ,,
दौष्कुलेयः ४–१–१४२—खराब कुल में उत्पन्न ।
दुष्कुलीनः ,, ,,
स्वस्रीयः ४–१–१४३—बहिन का पुत्र, भान्जा ।
भ्रातृव्यः ४–१–१४४—भाई का पुत्र, भतीजा ।
भ्रात्रीयः ,, ,,
भ्रातृव्यः ४–१–१४५—भाई का दुष्ट पुत्र, शत्रु भतीजा ।
रैवतिकः ४–१–१४६—रेवती का पुत्र ।
गार्गिकः ४–१–१४७—गार्गी का नीच पुत्र ।
गार्गः ,, ,,
भागवित्तिकः ४–१–१४८—व्यास के साम शिष्य परम्परा के एक शिष्य का नाम भागवित्ति था। भागवित्ति का पौत्र आदि वंशज ।
भागवित्तायनः ,, ,,
यामुन्दायनिः ४–१–१४९—यमुन्द की सन्तान ।
यामुन्दायनीयः ,, यमुन्द का पौत्र आदि वंशज ।
यामुन्दायनिकः ,, ,,
यामुन्दायनिः ,, यमुन्द का निन्दनीय पुत्र ।
तैकायनिः ,, तिक का पुत्र, यह सौवीर देशीय नहीं था ।
फाण्टाहृतः ४–१–१५०—फाण्टाहृति का पुत्र ।

फाण्टाहृतायनिः ४–१–१५०—फाण्टाहृति का पौत्र आदि वंशज।
मैमतः ,, मिमत का पुत्र।
मैमतायनिः ,, मिमत का पौत्र आदि वंशज।
कौरव्याः ४–१–१५१—कुरु नामक ब्राह्मण के पुत्र।
वावदूक्याः ,, वावदूका के पुत्र।
साम्राज्यः ,, क्षत्रिय सम्राट् का पुत्र।
साम्राजः ,, क्षत्रियेतर सम्राट का पुत्र।
हारिषेण्यः ४–१–१५२—हरिसेन का पुत्र।
लाक्षण्यः ,, लक्षण का पुत्र।
तान्तुवाय्यः ,, जुलाहे का पुत्र।
कौम्भकार्यः ,, कुम्हार का पुत्र।
नापित्यः ,, नाई का पुत्र।
हारिषेणिः ४–१–१५३—हरिसेन का पुत्र।
लाक्षणिः ,, लक्षण का पुत्र।
तान्तुवायिः ,, जुलाहे का पुत्र।
कौम्भकारिः ,, कुम्हार का पुत्र।
नापितायनिः ,, नाई का पुत्र।
ताक्ष्णः ,, बढ़ई का पुत्र।
ताक्षण्यः ,, ,,
तैकायनिः ४–१–१५४—तिक का वंशज।
कौशल्यायनिः ४–१–१५५—कुशल का वंशज।
कार्मार्यायणिः ,, कर्मार का वंशज।
छाग्यायनिः ,, छाग का वंशज।
वार्ष्यायणिः ,, वृष का वंशज।
कार्त्रेयणिः ४–१–१५६—कार्त्र का पुत्र।
दाक्षायणः ,, दक्ष का वंशज।
औपगविः ,, औपगव का पुत्र।
त्यादायनिः ,, उसका पुत्र।
त्यादः ,, ,,
आम्रगुप्तायनिः ४–१–१५७—आम्रगुप्त का पुत्र।
आम्रगुप्तिः ,, ,,
दाक्षिः ,, दक्ष का पुत्र।
औपगविः ,, औपगव का पुत्र।
वाकिनकायनिः ४–१–१५८—वाकिन का पुत्र।
वाकिनिः ,, ,,

गार्गीपुत्रकायणिः ४–१–१५९—गार्गीपुत्र का पुत्र।
गार्गीपुत्रिः ,, ,,
ग्लुचुकायनिः ४–१–१६०—ग्लुचुक का पुत्र।
मानुषः ४–१–१६१—मनु का पुत्र ( मानुष जाति )।
मानुष्यः ,, ,,
ऐक्ष्वाकः ४–१–१६८—इक्ष्वाकु का पुत्र।
ऐक्ष्वाकौ ,, इक्ष्वाकु के दो पुत्र।
पाञ्चालः ,, पाञ्चाल क्षत्रियों का अथवा पाञ्चाल जनपद का राजा।
पौरवः ,, पूरु क्षत्रियों का राजा।
पाण्ड्यः ,, पाण्डुदेश अथवा पाण्डुक्षत्रियों का राजा।
साल्वेयः ४–१–१६९—साल्वेय का पुत्र या राजा।
गान्धारः ,, गान्धार का पुत्र या राजा।
आङ्गः ४–१–१७०—अङ्गदेश का राजा अथवा अङ्गदेश के क्षत्रिय का पुत्र।
वाङ्गः ,, वङ्ग ,, वङ्ग ,,
सौह्मः ,, सुह्म ,, सुह्म ,,
मागधः ,, मगध ,, मगध ,,
कालिङ्गः ,, कलिङ्ग ,, कलिङ्ग ,,
सौरमसः ,, सूरमस ,, सूरमस ,,
आम्बष्ठ्यः ४–१–१७१—अम्बष्ठ ,, अम्बष्ठ ,,
सौवीर्यः ,, सौवीर ,, सौवीर ,,
आवन्त्यः ,, अवन्ति ,, अवन्ति ,,
कौन्त्यः ,, कुन्ती ,, कुन्ती ,,
कौसल्यः ,, कोसल ,, कोसल ,,
आजाद्यः ,, आजाद ,, आजाद ,,
कौरव्यः ४–१–१७२—कुरु का पुत्र।
नैषध्यः ,, निषध का पुत्र।
औदुम्बरिः ४–१–१७३—उदुम्बर देश का राजा अथवा उदुम्बर देशीय क्षत्रिय का पुत्र।
प्रात्यग्रथिः ,, प्रत्यग्रथ ,, प्रत्यग्रथ ,,
कालकूटिः ,, कलकूट ,, कलकूट ,,
आश्मकिः ,, अश्मक ,, अश्मक ,,

इक्ष्वाकवः ४–१–१७४, २–४–६२—इक्ष्वाकुओं के राजा।
पञ्चालाः ,, पाञ्चालों के राजा।
कम्बोजः ४–१–१७५—कम्बोज जनपद का राजा।
कम्बोजौ ,, कम्बोज के दो राजा।
चोलः ,, चोल जनपद का राजा।
शकः ,, शकों का राजा।
केरलः ,, केरल जनपद का राजा।
यवनः ,, यवन देश का राजा।
अवन्ती ४–१–१७६—अवन्ति जनपद की राजकुमारी।
कुन्ती ,, कुन्ती जनपद की ,,
कुरूः ,, कुरु जनपद की ,,
शूरसेनी ४–१–१७७—शूरसेन देश की ,,
मद्री ,, मद्र देश की ,,
पाञ्चाली ४–१–१७८—पञ्चाल जनपद की राजकुमारी।
वैदर्भी ,, विदर्भ ,,
आङ्गी ,, अङ्ग ,,
वाङ्गी ,, बङ्ग ,,
मागधी ,, मगध ,,
भार्गी ,, भर्ग ,,
कारूशी ,, कारूश ,,
कैकेयी ,, केकय ,,
यौधेयी ,, यौधेय ,,
शौक्रेयी ,, शौक्रेय ,,

कौमुदगन्ध्या४–१–७८—कुमुदगन्धि की पौत्री आदि वंशज।
वाराह्या ,, वराह ,,
वासिष्ठी ,, वसिष्ठ ऋषि ,,
वैश्वामित्री ,, विश्वामित्र ऋषि ,,
औपगवी ,, औपगव की पुत्री ,,
आहिच्छत्री ,, अहिच्छत्र में उत्पन्न स्त्री।
पौणिक्या ४–१–७९—पुणिक कुल के वंश में उत्पन्न स्त्री।
भौणिक्या ,, भुणिक कुल के वंश में उत्पन्न स्त्री।
धौड्या ४–१–८०—धौडि की स्त्री सन्तान।
व्याड्या ,, व्याडि की स्त्री सन्तान।
सूत्या ,, सूत की युवती कन्या।
भोज्या ,, भोज क्षत्रियों की कन्या।
दैवयज्ञ्या ४–१–८१—दैवयज्ञि की पौत्री आदि सन्तान।
दैवयज्ञी ,, ,,
शौचिवृक्ष्या ,, शौचवृक्षि ,,
शौचिवृक्षी ,, ,,
सात्यमुग्र्या ,, सात्यमुग्रि ,,
सात्यमुग्री ,, ,,
काण्डेविद्ध्या ,, काण्डेविद्धि ,,
काण्डेविद्धी ,, ,, ,,

इत्यपत्याधिकारप्रकरणम्।

# अथ रक्ताद्यर्थकप्रकरणम्

काषायं वस्त्रम् ४–२–१—हल्के लाल रंग से रँगा हुआ वस्त्र।

माञ्जिष्ठम् ,, मजीठ(तेज लाल) रंग से रँगा हुआ।

लाक्षिकः ४–२–२—लाख से रँगा हुआ।

रौचनिकः ,, रोली से रँग हुआ।

शाकलिकः ,, काले रंग से रँगा हुआ।

कार्दमिकः ,, कीचड़ से रँगा हुआ।

शाकलः ,, काले रंग से रँगा हुआ।

कार्दमः ,, कीचड़ से रँगा हुआ।

नीलम् ,, नील से रँगा हुआ।

पीतकम् ,, पीले रंग से रँगा हुआ।

हारिद्रम् ,, हल्दी से रँगा हुआ।

माहारजनम् ,, कुसुम रंग से रँगा हुआ।

पौषमहः ४–२–३—पुष्य नक्षत्र से युक्त दिन, जिस दिन चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र का हो।

पौषी रात्रिः ,, ,, रात, ,, रात

अद्य पुष्यः ४–२–४—आज पुष्य नक्षत्र है। आज दिनरात चन्द्रमा पुष्यनक्षत्र से युक्त है।

श्रावणी ,, श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा।

श्रवणा रात्रिः ४–२–५—श्रवण नक्षत्रयुक्त चन्द्रमा वाली रात।

अश्वत्थो मुहूर्त्तः ,, श्रवण नक्षत्रवाला एक विशेष मुहूर्त्त।

श्रावणी ,, श्रवण नक्षत्रयुक्त चन्द्रमा वाली रात।

आश्वत्थी ,, ,,

तिष्यपुनर्वसवीयमहः ४–२–६—पुष्य तथा पुनर्वसु नक्षत्र वाला दिन।

राधानुराधीया रात्रिः ,, विशाखा तथा अनुराधा नक्षत्र वाली रात।

वसिष्ठं साम ४–२–७—सामवेद का वह भाग जिसको वसिष्ठ ऋषि ने देखा था।

औशनसम् ,, ,, शुक्राचार्य ,,

औशनम् ,, ,, ,, ,,

कालेयम् ४–२–८— ,, कलि ऋषि ,,

वामदेव्यम् ४–२–९— ,, वामदेव ,,

वास्त्रो रथः ४–२–१०—कपड़े से ढका हुआ रथ।

पाण्डुकम्बली ४–२–११—गन्धार देश में बनने वाला चटकीले लाल रंग का बहुमूल्य कम्बल 'पाण्डुकम्बल' कहालाता था, उससे ढका हुआ रथ।

द्वैपो रथः ४–२–१२—व्याघ्र के चमड़े से ढका हुआ रथ।

वैयाघ्रः ,, ,, ,,

कौमारः पतिः ४–२–१३—कुमारी (अविवाहिता) कन्या का पति।

कौमारी भार्या ,, कुमारी (अविवाहिता) कन्या भार्या।

शाराव ओदनः ४–२–१४—मिट्टी की तश्तरी में निकाल कर रक्खा हुआ भात।

स्थाण्डिलो भिक्षुः ४–२–१५—रिक्तभूमि पर शयन करने वाला भिक्षु।

भ्राष्ट्रा यवाः ४–२–१६—भाड़ में भुने हुए जौ।

अष्टकपालः पुरोडाशः ,, आठ सकोरों में पकाया गया चावल की टिकिया।

शूल्यं मांसम् ४–२–१७—लोहे के सीकचों पर पकाया हुआ मांस, कबाब।

उख्यम् ,, उखा (पात्रविशेष) में पकाया हुआ।

दाधिकम् ४–२–१८—दही में बनाया गया।

औदश्वित्कः ४-२-१९, ७-३-५१—मट्ठे में बनाया गया।
औदश्वितः „ „
आशिषिकः „ जो व्यक्ति दूसरों को आशीष देने के लिए घूमता हो।
औषिकः „ जो बहुत तड़के घूमता हो।
दौष्कः „ जो पैर खराब हो जाने के कारण हाथों से चलता हो।
क्षैरेयी ४-२-२०—दूध में बनाई गयी।
पौषो मासः ४-२-२१—पुष्य नक्षत्र युक्त पूर्ण चन्द्रमा वाली रात जिस मास में हो।
आग्रहायणिको मासः ४-२-२२—अग्रहायण (मृगशीर्ष ?) नक्षत्र युक्त पूर्ण चन्द्रमा वाली रात जिस मास में हों। मार्गशीर्ष, अगहन।
आश्वत्थिकः „ श्रवण नक्षत्र युक्त पूर्ण चन्द्रमा वाली रात जिस मास में हो। श्रावण।
फाल्गुनिकः ४-२-२३—फाल्गुनी नक्षत्र युक्त पूर्ण चन्द्रमा वाली रात जिस मास में हो।
फाल्गुनो मासः „ „ „
श्रावणिकः „ श्रवण नक्षत्र युक्त पूर्ण चन्द्रमा वाली रात जिस मास में हो।
श्रावणः „ „
कार्त्तिकिकः, कार्तिकः „ कृत्तिका „
चैत्रिकः, चैत्रः „ चित्रा „
ऐन्द्रं हविः ४-२-२४—जिस हवि के देवता इन्द्र हों।
पाशुपतम् „ जिस हवि के देवता पशुपति हों।
बार्हस्पत्यम् „ जिस हवि के देवता बृहस्पति हों।
ऐन्द्रो मन्त्रः „ जिस मन्त्र से इन्द्र की स्तुति की जाय।
कायं हविः ४-२-२५—जिस हवि के देवता ब्रह्मा हों।
श्रायम् „ „ लक्ष्मी हों।
शुक्रियम् ४-२-२६— „ शुक्र हों।
अपोनप्त्रियम् ४-२-२७-जिस हवि के देवता अपोनप्तृ हों-अपोनप्तृ = अग्नि-जल।
अपान्नप्त्रियम् „ „ अपान्नप्तृ „

अपोनपात् „ अग्नि, अथवा जल के अधिष्ठाता देवता—
अपांनपात् „ „
अपान्नपातेऽनुब्रूहीतिप्रैषः „ अग्नि, अथवा जल के अधिष्ठाता देवता को आवाहन करने वाले मन्त्र को बोलो।
अपोनप्त्रियम् ४-२-२८-जिस हवि के देवता अपोनप्तृ हों।
अपान्नप्त्रीयम् „ „ अपान्नप्तृ हों।
पैङ्गाक्षिपुत्रीयम् „ जिसके देवता पिङ्गाक्षिपुत्र हों।
शतरुद्रियम्, शतरुद्रीयम् „ जिस हवि के शतरुद्र देवता हों।
महेन्द्रियम् हविः ४ २-२९— „ इन्द्र „
माहेन्द्रम् „ „ „
महेन्द्रीयम् „ „ „
सौम्यम् ४-२-३०—जिस हवि के सोम (चन्द्रमा) देवता हों।
सौमी ऋक् „ जिस मन्त्र से चन्द्रमा की स्तुति की जाय।
वायव्यम् ४-२-३१—जिस हवि के देवता वायु हों।
ऋतव्यम् „ „ ऋतु „
पित्र्यम् ७-२-२७— „ पितर „
उषस्यम् „ „ उषःकाल हो।
द्यावापृथिवीयम्, द्यावापृथिव्यम् ४-२-३:—जिस हवि के द्यावा तथा पृथिवी (आकाश-पृथ्वी) देवता हों।
शुनासीरीयम्, शुनासीर्यम् ४-२-३२—जिसके देवता शुन = वायु, सीर = सूर्य अथवा इन्द्र हों।
आग्नेयम् ४-२-३३—जिसके देवता अग्नि हों।
मासिकम् ४-२-३४— „ मास हो।
प्रावृषेण्यम् „ „ वर्षा ऋतु हो।
माहाराजिकम् ४-२-३५—जिसके देवता महाराज = वैश्रवण=कुबेर हों।
प्रौष्ठपदिकम् „ जिसके देवता प्रोष्ठपद हों।
आग्निमारुतम् ७-३-२१— „ अग्निमरुत हों।

सौमेन्द्रः ७-३-२२—जिसके देवता चन्द्रमा और इन्द्र हों।
ऐन्द्राग्नः ,, ,, इन्द्र और अग्नि हों।
ऐन्द्रावरुणम् ७-३-२३— ,, इन्द्र और वरुण हों।
अग्निवारुणीम् अनड्वाहीमालभेत ,, जिस गाय के देवता अग्नि वरुण हों उसका वध करना चाहिए।
नावयज्ञिकः कालः ,, नवीन अन्न से यज्ञ करने का समय (गोभिलगृह्य०)।
पाकयज्ञिकः ,, जिस समय अग्निहोत्र की अग्नि से पकाये हुए अन्न से यज्ञ किया जाय।
पौर्णमासी तिथिः ,, मास की जिस तिथि को चन्द्रमा पूर्ण हो।
पितृव्यः ४-३-२६—पिता का भाई, चाचा।
मातुलः ,, माता का भाई, मामा।
मातामहः ,, माता का पिता, नाना।
पितामहः ,, पिता का पिता, दादा।
मातामही ,, माता की माता, नानी।
पितामही ,, पिता की माता' दादी।
अविसोढम् ,, भेड़ का दूध।
अविदूसम् ,, ,,
अविमरीसम् ,, ,,
तिलपिञ्जः ,, जिस तिल में तेल न हो।
तिलपेजः ,, ,,
तिल्पिञ्जः ,, ,,
काकम् ४-२-३७—कौओं का झुण्ड।
बाकम् ,, बगुलों का झुण्ड।
भैक्षम् ४-२-३८—भिक्षा का समूह।
गार्भिणम् ,, गर्भवती स्त्रियों का समूह।
यौवनम्, यौवतम् ६-४-१६४—युवती स्त्रियों का समूह
ग्लौचुकायनकम् ४-२-३९, ७-१-१—ग्लुचुकायनियों का समूह।
औक्षकम् ,, बैलों का झुण्ड।
राजन्यकम् ,, राजकुमारों का झुण्ड।
मानुष्यकम् ,, मनुष्यों का झुण्ड।
वार्द्धकम् ,, बूढ़े व्यक्तियों का झुण्ड।

कैदार्यम्, कैदारकम् ४-२-३९, ७-१-१—खेतों का समूह।
गाणिक्यम् ,, वेश्याओं का झुण्ड।
कावचिकम् ४ २-४१—कवचधारीयों का झुण्ड।
कैदारिकम् ,, खेतों का समूह।
ब्राह्मण्यम् ,, ब्राह्मणों का झुण्ड।
माणव्यम् ,, लड़कों का झुण्ड।
बाडव्यम् ,, बछेड़ों का झुण्ड। ब्राह्मणों का झुण्ड। (M.W.) सामवेद के रथन्तर, बृहद्, वैरूप, वैराज, शाक्कर तथा रैवत नाम के।
पृष्ठ्यम् ,, स्तोत्र विशेष का झुण्ड।
ग्रामता ४-२-४३—गावों का समूह।
जनता ,, जनों का समूह।
बन्धुता ,, बन्धुओं का समूह।
गजता ,, हाथियों का झुण्ड।
सहायता ,, सहायकों का झुण्ड।
अहीनः ,, दिन की अवधि के अनुसार पूर्ण किया जाने वाला सुत्याक (सोमयज्ञ)।
आह्नः ,, दिनों का समूह, बहुत दिन।
पार्श्वम् १-४-१६—कुल्हाड़ियों का समूह, पसली की हड्डियों का समूह।
कापोतम् ४-२-३४—कबूतरों का झुण्ड।
मायूरम् ,, मयूरों का झुण्ड।
खाण्डिकम् ४-२-४५—कृष्णयजुर्वेद के खण्डिक नामक चरण के पढ़ने वालों का समूह।
काठकम् ४-२-४६—कृ०यजु० के कठनामक चरण के पढ़ने वालों का समूह या धर्म।
छान्दोग्यम् ,, सामवेद के मन्त्रों का गान करने वालों का समूह या धर्म।
साक्तुकम् ४ २-४७—सत्तू का ढेर।
हास्तिकम् ,, हाथियों का झुण्ड।
धैनुकम् ,, गायों का झुण्ड।
कैश्यम्, कैशिकम् ४ २-४८—बालों की राशि।
अश्वीयम्, आश्वम् ,, घोड़ों का झुण्ड।
पाश्या ४-२-४९—जालों का समूह।
तृण्या ,, घास का ढेर।

धूम्या ४-२-४९—धूम राशि।
वन्या ,, जंगलों का समूह।
वात्या ,, आँधी, बवंडर।
खल्या ,, खलिहानों का समूह।
गव्या ,, गायों का झुण्ड।
रथ्या ,, रथों का झुण्ड।
खलिनी ४ २-५१—खलिहानों का समूह।
गोत्रा ,, गायों का झुण्ड।
रथकट्या ,, रथों का समूह।
डाकिनी ,, काली की अनुचरी डाक नाम की राक्षसियों का झुण्ड।
कुटुम्बिनी ,, कुटुम्ब का समूह।
शैवः ४-२-५२—शिवियों का देश।
राजन्यकः४-२-५३—राजकुमारों का देश।
भौरिकिविधम् ४-२-५४—भौरिकि लोगों का देश, बंगाल का समतल, दक्षिणी बंगाल।
भौलिकिविधम् ,, ,,
ऐषुकारिभक्तम् ,, इषुकारि लोगों का प्रदेश, सम्भवतः हिसार।
सारसायनभक्तम् ,, सारसायन लोगों का प्रदेश।
पाङ्क्तः प्रगाथः ,, जिस प्रगाथ का प्रारम्भ पंक्ति छन्द से हो।
त्रैष्टुभम् ,, त्रिष्टुभ छन्द।
सौभद्रम् ४-२-५६—सुभद्रा के निमित्त किया गया युद्ध।
भारतः ,, जिस युद्ध में भरत कुल के लड़ने वाले योद्धा हों।
दाण्डा ४-२-५७—लाठी के खेल।
मौष्टा ,, मुक्के वाजी का खेल।
श्यैनम्पाता मृगया ४-२-५८ ,, ६-३-७१—जिस मृगया में शिकार पर आक्रमण करने या उसको लाने के लिए बाज पक्षी छोड़ा जाता है।

तैलम्पाता स्वधा ६-३-७१—जिस श्राद्ध में तिल गिराया जाय।
दण्डपाता तिथिः ,, जिस तिथि में दण्ड की हानि हो।
वैयाकरणः ४-२-५९—व्याकरण पढ़ने या जानने वाला।
आग्निष्टोमिकः ४-२-६०—अग्निष्टोमयज्ञ जानने वाला या उसकी विधि की पुस्तक पढ़ने वाला।
वाजपेयिकः ,, वाजपेययज्ञ जानने वाला या ,,
औक्थिकः ,, सामवेद के प्रातिशाख्य को जानने या पढ़ने वाला।
नैयायिकः ,, न्याय जानने या पढ़ने वाला।
वार्त्तिकः ,, वृत्ति (ग्रन्थों की टीका) जानने या पढ़ने वाला।
लोकायतिकः ,, भूतवाद तथा उच्छेदवाद के मानने वाले बौद्धों के दर्शन का लोक में अधिक प्रचार होने से लोकायत अर्थात् बौद्ध दर्शन जानने या पढ़ने वाला।
सांग्रहसूत्रिकः ,, संग्रह सूत्र जानने या पढ़ने वाला।
काल्पसूत्रः ,, कल्प सूत्र पढ़ने या जानने वाला।
वायसविद्यकः ,, वायसविद्या या पक्षिविद्या का जानने या पढ़ने वाला।
गौलक्षणिकः ,, गाय के लक्षण ग्रन्थों का जानने या अध्ययन करने वाला।
आश्वलक्षणिकः ,, घोड़े के ,,
पाराशरकल्पिकः ,, पराशर कल्प का जानने या अध्ययन करने वाला।
आङ्गविद्यः ,, अङ्गविद्या का जानने या अध्ययन करने वाला।
धार्मविद्यः ,, धर्म विद्या का ,,
त्रैविद्यः ,, त्रिविद्या (तीन वेद) का जानने या पढ़ने वाला।

यावक्रीतिकः ४–२–६०—यवक्रीत का आख्यान जानने या पढ़ने वाला।
वासवदत्तिकः ,, वासवदत्ता की कहानी ,,
ऐतिहासिकः ,, इतिहास ,,
पौराणिकः ,, पुराण ,,
सर्ववेदः ,, सर्ववेद ,,
सर्वतन्त्रः ,, सब शास्त्रों ,,
सवार्त्तिकः ,, वृत्तिसहित ग्रन्थों का ,,
द्वितन्त्रः ,, दो शास्त्रों का ,,
पूर्वपदिकः ,, पूर्व पद ,,
उत्तरपदिकः ,, उत्तर पद ,,
शतपथिकः ,, शतपथ ,,
शतपथिकी ,, ,, ,,
षष्ठिपथिकः ,, षष्ठिपथ ,,
षष्ठिपथिकी ,, ,, ,,
क्रमकः ४–२–६१—क्रम पाठ ,,
पदकः ,, पद पाठ ,,
शिक्षकः ,, शिक्षा ,,
मीमांसकः ,, मीमांसा ,,
अनुब्राह्मणी ४–२–६२—ब्राह्मण सदृश ग्रन्थ का
वासन्तिकः ४–२–६३—वसन्तऋतु सम्बन्धी ,,
आथर्वणिकः ,, अथर्व वेद ,,
पाणिनः ४–२–६४—पाणिन का पुत्र।

पाणिनिः ६–४–१६५—पाणिन का पौत्र आदि वंशज (युवा)।
कौरव्यः पिता २–४–५८—कुरु का पुत्र।
कौरव्यः पुत्रः ,, कुरु का वंशज पौत्र आदि।
श्वाफल्कः पिता ,, श्वफल्क का पुत्र।
श्वाफल्कः पुत्रः ,, श्वफल्क का वंशज पौत्र आदि।
वासिष्ठः पिता ,, वसिष्ठ का पुत्र।
वासिष्ठः पुत्रः ,, वसिष्ठ का वंशज पौत्र आदि।
तैकायनिः पिता ,, तिक का पुत्र।
तैकायनिः पुत्रः ,, तिक का वंशज पौत्र आदि।
कौहडः ,, कौहड का पुत्र।
कौहडिः ,, कौहड का वंशज पौत्र आदि।
वामरथ्याः ,, वामरथ के शिष्य।
पाणिनीयम् ,, पाणिनि से बनाया गया।
पाणिनीयः ,, पाणिनीय शास्त्र पढ़ने वाला।
पाणिनीया ,, ,, वाली।
अष्टकः ४–२–६५—पाणिनि की अष्टाध्यायी का पढ़ने या जानने वाला।
कालापकाः ,, कालाप के कहे गये वेद को पढ़ने या जानने वाले।
कठाः ४–२–६६—कठ से कहे गये वेद के पढ़ने या जानने वाले।

इति रक्ताद्यर्थकप्रकरणम्।

# अथ चातुरर्थिकप्रकरणम्

औदुम्बरः ४२–६७—जहाँ गूलर बहुत हों वह जनपद।
कौशाम्बी नगरी ४–२–६८—कुशाम्ब (कुशपुत्र) से बनाई गई नगरी, आधु० कोसम।
शैबः ४–२–६९—शिबियों के रहने का जनपद।
वैदिशम् ४ २-७०—विदिशा (भेलसा) के समीप का नगर।
काक्षतवम् ४–२–७१—जिस देश में कक्षतु (एकफल) बहुत हों।

इक्षुमती ४–२ ७१—जिस नदी के समीप ईख बहुत होती हो। फर्रुखाबाद जिले की ईखन नदी।
सैध्रकावतम् ४-२-७२—कत्थे की तरह के एक वृक्ष (सिध्रका) का जंगल।
आहिमतम् ,, जिस देश में सर्प अधिक हो।
दैर्घवरत्रः कूपः ४–२–७३—दीर्घवरत्र का बनवाया हुआ कुँआ।
दात्तः ४ २-७४—दत्त का बनवाया हुआ कुँआ।

साङ्कलम् ४-२-७५—संकल का बसाया हुआ नगर।
पौष्कलम् ,, पुष्कल ,,
दात्तामित्री नगरी ४-२-७६—दत्तामित्र की बसायी हुई नगरी।
वैधूमाग्नी ,, विधूम ,,
माकन्दी ,, माकन्द ,,
सौवास्तवम् ४-२-७७—सुवास्तु (स्वात) नदी की घाटी का नगर।
वार्णवम् ,, वर्णु (वै० क्रमु, कुर्रम) नद के समीप स्थित नगर (आधु० वन्नू)।
सौवास्तवी ,, सुवास्तु (स्वात) नदी की घाटी की नगरी।
रौण: ४-२-७८—रोणी का बनवाया हुआ कुँआ।
आजकरौण: ,, अजकरोणी का बनवाया हुआ कुँआ।
कार्णच्छिद्रक: कूप: ४-२ ७९—कर्णच्छिद्रक का बनवाया हुआ कुँआ।
कार्कवाकम् ,, कृकवाकु ,,
त्रैशङ्कवम् ,, त्रिशङ्कु ,,
आरीहणकम् ४-२-८०—अरीहणक का बनवाया हुआ।
कार्शाश्वीयम् ,, कृशाश्व का बनवाया हुआ।
ऋष्यकम् ,, ऋश्यक का बनाया हुआ।
कुमुदिकम् ,, कुमुद का बनवाया हुआ।
काशिल: ,, काश का बना हुआ।
तृणसम् ,, तृण का बना हुआ।
प्रेक्षी ,, प्रेक्ष का बनवाया हुआ।
अश्मर: ,, पत्थर का बना हुआ।
साखेयम् ,, सखा का बसाया हुआ।
साङ्काश्यम् ,, सङ्काश का बसाया हुआ। फरुखाबाद जिले का संकास।
बल्यम् ४-२-८०—बल का बनाया या बसाया हुआ।
पाक्षायण: ,, पक्ष ,, ,,
पान्थायन: ,, पथिक ,, ,,
कार्णायनि: ,, कर्ण ,, ,,
सौतङ्गमि: ,, सुतङ्गम ऋषि ,,
प्रागद्य: ,, प्रगद ,, ,,
वाराहक: ,, वराह ,, ,,
कौमुदिक: ,, कुमुद

पञ्चाला: ४-२-८१—पाञ्चाल क्षत्रियों के रहने का जनपद।
कुरव: ,, कुरु ,, ,,
अङ्गा: ,, आङ्गों ,, ,,
वङ्गा: ,, वाङ्गों ,, ,,
कलिङ्गा: ,, कालिङ्गों ,, ,,
पञ्चाला रमणीया: १-२-५२—पाञ्चालों के रहने का जनपद सुन्दर है।
गोदौ रमणीयौ ,, गोद सुन्दर हैं।
पञ्चाला जपपद: ,, पाञ्चाल जनपद।
गोदो ग्राम: ,, गोद गाँव।
हरीतक्य: ,, हर्रे के फल, हड़।
खलतिकं वनानि ,, खलतिक पर्वत के समीप के जंगल।
चञ्चा अभिरूप: ,, घास फूस की बनी हुई मनुष्य की मूर्ति।
वरणा ४-२-८२—वरणा नदी के समीप का नगर (ऊण-आरलस्टाइन)।
शर्करा ४-२-८३, ८४—शर्कराओं का निवास स्थान, सिन्धु नदी के तट का सक्खर।
शार्करम् ,, ,, ,,
शार्करिकम् ,, ,, ,,
शार्करीयम् ,, ,, ,,
शार्करकम् ,, ,, ,,
इक्षुमती ४-२-८५—जिस नदी के समीप ईख अधिक हो, फरुखाबाद की ईखन नदी।
मधुमान् ४-२-८६—जहाँ मधु हो।
कुमुद्वान् ४ २-८७—जहाँ कुवलय हो।
नड्वान् ,, जहाँ नरकुल हो।
वेतस्वान् ,, जहाँ बेत हो।
महिष्मान्नाम देश: ,, जहाँ भैंसें हों।
नड्वल: ४-२-८८—जहाँ नरकुल हो।
शाद्वल: ,, जहाँ हरी भरी घास हो (Lawn)।
शिखावलम् ४-२-८९—शिखा वाला नगर, सोन तट पर स्थित रीवाँ का सिहवल।
शार्करीम् ४-२-९०—शर्कर का बनाया या बसाया।

नडकीयम् ४–२–९१—नड का बनाया या बसाया ।
कुब्जकीयः ,, कुब्ज का ,,
तक्षकीयः ,, तक्ष ,,
बिल्वकीयाः ६–४–१५३—जहाँ बेल हों ।
बैल्वकाः ६–४–१५३—बिल्वकीय में होने या रहने वाले ।
वैत्रकीयाः ,, जहाँ बेत बहुत हों ।
वैत्रकाः ,, वैत्रकीय में होने या रहने वाले ।

इति चातुरर्थिकप्रकरणम् ।

## अथ शैपिकप्रकरणम्

चाक्षुषं रूपम् ४–२–९२—जो आँख से ग्रहण किया जाय, दृश्य विषय ।
श्रावणः शब्दः ,, जो कान से ग्रहण किया जाय, शब्द ।
औपनिषदः पुरुषः ,, जिसका वर्णन उपनिषद् में किया गया है, आत्मा ।
दार्षदाः सक्तवः ,, जो चक्की में पिसा गया हो, सत्तू ।
औलूखलो यावकः ,, जो ओखली में कूटा गया हो, बिना भूसी का जौ ।
आश्वो रथः ,, जो घोड़ों से खींचा जाय, रथ ।
चातुरं शकटम् ,, जिस पर चार आदमी चढ़ते हों, छकड़ा ।
चातुर्दशं रक्षः ,, जो चतुर्दशी को दिखायी पड़े, राक्षस ।
राष्ट्रियः ४–२–९३—राष्ट्र ( देश ) में उत्पन्न ।
अवारपारीणः ,, जो दोनों किनारों तक फैला या गया हो ।
अवारीणः ,, नदी के इस किनारे का ।
पारीणः ,, नदी के उस किनारे का ।
पारावारीणः ,, नदी के दोनों किनारे का ।
ग्राम्यः ४–२–९४—देहाती, गवाँर, गाँव में होने वाला ।
ग्रामीणः ,, ,, ,,
कात्त्रेयकः ४–२–९५—तीन निन्दित स्थानों में उत्पन्न ।
नागरेयकः ,, शहर में उत्पन्न ।
ग्रामेयकः ,, गाँव में उत्पन्न ।
कौलेयकः श्वा ४–२–९६—कुल में उत्पन्न कुत्ता ( Pedigree dog ) ।
कौलोऽन्यः ,, कुल में उत्पन्न अन्य व्यक्ति ।
कौक्षेयकोऽसिः ,, म्यान में रहने वाली तलवार ।
कौक्षोऽन्यः ,, दूसरी वस्तु जो खोल में रहे ।
ग्रैवेयकोऽलङ्कारः ,, गर्दन में पहिनने का आभूषण,
ग्रैवोऽन्यः ,, गर्दन में होने वाला कोई रोग आदि ।
नादेयम् ४–२–९७—नदी में होने वाला ।
माहेयम् ,, पृथ्वी ,,
वाराणसेयम् ,, वाराणसी ,,
दाक्षिणात्यः ४–२–९८—दक्षिण देश में होने वाला ।
पाश्चात्यः ,, पश्चिम दिशा में होने या रहने-वाला ।
पौरस्त्यः ,, पूर्व दिशा में होने या रहने वाला ।
कापिशायनं मधु ४–२–९९—कपिशा ( काबुल से उत्तर-पूर्व हिन्दू कुश के दक्षिण आधुनिक बेग्राम है जो घोरबंद और पंजशीर नदियों के संगम पर स्थित है ) की शराब ।
कापिशायनी द्राक्षा ,, कपिशा का अंगूर ।
राङ्कवो गौः ४–२–१००—रंकु जनपद ( अलकनंदा और पिंडर के पूर्व का प्रदेश-ग्रियर्सन, डा० मोतीचन्द्र ) का बैल ।
राङ्कवायणः ,, ,, ,,
राङ्कवको मनुष्यः ,, रंकु जनपद का मनुष्य ।

दिव्यम् ४–२–१०१—स्वर्गीय ।

प्राच्यम् ,, पूर्वीय देश में होनेवाला ।

प्रतीच्यम् ,, पश्चिम प्रदेश में होने वाला ।

अवाच्यम् ,, दक्षिण ,, ,,

उदीच्यम् ,, उत्तर ,, ,,

कान्थकः ४–२–१०२—गाँव में होने वाला ।

कान्थकम् ४–२–१०३—वर्णु ( वन्नू ) नदी के समीपवर्ती प्रदेश के गाँव में होने वाला ।

अमात्यः ४–२–१०४—साथ रहने वाला, मन्त्री ।

इहत्यः ,, यहाँ रहने वाला ।

क्वत्यः ,, कहाँ रहने वाला ।

ततस्त्यः ,, उससे होने वाला ।

तत्रत्यः ,, वहाँ होने या रहने वाला ।

औपरिष्टः ,, ऊपर होने या रहने वाला ।

आरातीयः ,, दूर या समीप होने या रहने वाला ।

नित्यः ,, सदा होने या रहने वाला ।

शाश्वतीयः ,, ,, ,,

निष्ठ्यः ८–३१०१—वर्णाश्रम से निकला हुआ चाण्डाल आदि ।

आरण्याः सुमनसः ,, जंगल में होने वाले फूल ।

दूरेत्यः ,, दूर जाने वाला, पथिक ।

औत्तराहः ,, उत्तर होने वाला ।

ऐषमस्त्यम् ४–२–१०५—इस वर्ष होने वाला ।

ऐषमस्तनम् ,, ,,

ह्यस्त्यनम् ,, बीते हुए कल होने वाला ।

ह्यस्तनम् ,, ,,

श्वस्तनम् ,, आने वाले कल होने वाला ।

श्वस्त्यम् ,, ,,

शौवस्तिकम् ,, ,,

काकतीरम् ४–२–१०६—काकतीर नामक बाहीक ग्राम, ( पतञ्जलि के अनुसार ) में होने वाला ।

पाल्वलतीरम् ,, पल्वलतीर (नामक वाहीक ग्राम में होने वाला ।

शैवरूप्यम् ,, शिव रूप्य नामक वाहीक ग्राम में होने वाला ।

बाहुरूप्यम् ,, बाहुरूप्य नामक ग्राम में होनेवाला

पौर्वशालः ४–२–१०७—पूर्व के कमरे में होने या रहने-वाला ।

पूर्वैषुकामशमः ,, पूर्वीय इषुकामशमी नामक ग्राम में होने वाला या रहने वाला ।

पौर्वमद्रः ४–२–१०८—पूर्वीय मद्र जनपद ( वाहीक का उत्तरी भाग, जिसकी राजधानी स्याल कोट ( शाकलथी ) में होने या रहने वाला ।

अपरमद्रः ,, पश्चिमी मद्र में होने या रहने वाला ।

शैवपुरम् ४–२–१०९—शिवपुर में होने या रहने वाला ।

माहिकिप्रस्थः ४–२–११०—माहिकिप्रस्थ में होने या रहने वाला ।

पालदः ,, पलदि ( वाहीक ग्राम ) ग्राम में होने या रहने वाला ।

नैलीनकः ,, निलीनक ( वाहीक ग्राम ) में होने या रहने वाला ।

काण्वाः ४–२–१११—काण्व्य के छात्र ।

दाक्षाः ४–२–११२—दाक्षि के छात्र ।

सौतङ्गमीयम् ,, सौतङ्गमि सम्बन्धी या सौतङ्गमि का ।

पाणिनीयम् ,, पाणिनि सम्वन्धी या पाणिनि का ।

प्राष्ठीयः ४–२–११३—प्राष्ठ सम्वन्धी या प्राष्ठ का ।

काशीया ,, काशी सम्वन्धी या काशी का ।

शालीयः ४–२–११४—कमरे में होने या रहने वाला या कमरे का ।

मालीयः ,, माला में होने वाला या माला का ।

तदीयः ,, उसका ।

एणीपचनीयः १–१–७५—एणीपचन नामक ग्राम में होने या रहने रहने वाला ।

गोनर्दीयः ,, गोनर्द (आधु० गोंडा ) में ,,

भोजकटीयः ,, भोजकट नामक ग्राम ,,

ऐणीपचनः ,, एणीपचन ,,

गौनर्दः ,, गोनर्द ,,

भौजकटः ,, भोजकट ,,

आहिच्छत्रः ,, अहिच्छत्र (आधु० रामनगर, बरेली के पास) में होने या रहने वाला

काम्यकुब्ज: ४-२-११४—कान्यकुब्ज (कन्नौज में) ,,
दैवदत्तः ,, देवदत्त ( वाहीक ग्राम ) नामक ग्राम में होने या रहने वाला।
देवदत्तीयः ,, ,, ,,
मावत्कः ४-२-११५—आप का।
भवदीयः ,, ,,
भावतः ,, ,,
काशिकी ४-२-११६—काशी में होने या रहने वाली।
काशिका ,, ,, ,,
वैदिकी ,, वेदों में ,,
वैदिका ,, ,, ,,
आपत्कालिकी ,, आपत्ति के समय ,,
आपत्कालिका ,, ,, ,,
कास्तीरिकी ४-२-११७—कास्तीर ( वाहीक ग्राम आधु० कसूर ) में होने या रहने वाली।
कास्तीरिका ,, ,, ,,
सौदर्शनिकी ४-२-११८—सुदर्शन नामक उशीनर देश के वाहीक ग्राम में ,,
सौदर्शनिका ,, ,, ,,
सौदर्शनीया ,, ,, ,,
निषादकर्षूः ४-२-११९—निषादकर्षु नामक देश में ,,
नैषादकर्षुकः ,, ,, ,,
पाटवाः ,, पटुनामक आचार्य के छात्र ,,
दाक्षिकर्षुकः ,, दाक्षिकर्पु ,, ,,
आढकजम्बुकः ४-२-१२०—आढयजम्बु (प्राच्यदेश) ,,
शाकजाम्बुकः ,, शाकजम्बु ,, ,,
माल्लवास्तवः ,, मल्ल वास्तु ,, ,,
ऐरावतकः ४-२-१२१—ऐरावत नामक मरुस्थल ,,
साङ्काश्यकः ,, साङ्काश्य ,, प्रदेश ,,
काम्पिल्यकः ,, काम्पिल्य ,, ,, ,,
मालाप्रस्थकः ४-२-१२२—माला प्रस्थ ( कुरुजनपद का एक नगर आधु० मालयत।
नान्दीपुरकः ,, नान्दी पुर ,, ,,
पैलुवहकः ,, पीलुवह ,, ,,
पाटलिपुत्रकः ४-२-१२३—पाटलिपुत्र ( पटना ) ,,
काकन्दकः ,, काकन्दी ,,

आदर्शकः ४-२-१२४—आदर्श (सरस्वती के बालू में लुप्त होने का स्थान में ) ,,
त्रैगर्तकः ४-२-१२४—त्रिगर्त्त ( वाहीक का एक मुख्य भाग, आधु० काँगड़ा ) में होने या रहने वाला।
आङ्गकः ४-२-१२५—अङ्ग जनपद ( वर्तमान भागलपुर का प्रदेश ) में होने या रहने वाला।
आजमीढकः ,, अजमीढ आधुनिक अजमेर) में होने या रहने वाला।
दार्वकः ,, दार्व में होने या वाला।
कालञ्जरकः ,, कालञ्जर में होने या रहने वाला।
वार्तनः ,, वर्तनी में होने या रहने वाला।
दारुकच्छकः ४-२-१२६—दारुकच्छ ( काठियावाड़ के समुद्रतट का प्रदेश ) में होने या रहने वाला।
काण्डाग्नकः ,, काण्डाग्नि (कंडाला बन्दरगाह के उत्तर पूर्व में तपता हुआ रेगिस्तान ) में होने या रहने वाला।
सैन्धुवक्त्रकः ,, सिन्धुवक्त्र ( जहाँ सिन्धु नदी समुद्र में मिलती है वह प्रदेश, में होने या रहने वाला।
बाहुवर्तकः ,, बहुवर्त में होने या रहने वाला।
धौमकः ४-२-१२७—धूमनामदेश में होने या रहने वाला।
तैर्थकः ,, तीर्थ नाम के देश में ,,
नागरकः चौरः शिल्पी वा४-२-१२८—नगर होने या रहने वाला, चोर या चतुर मनुष्य।
नागराः ,, नगर में होने या रहने वाला ब्राह्मण।
आरण्यकः४-२-१२९—जंगल में होने या रहने वाला, मार्ग, उपनिषद, नियम, खेल, मनुष्य या हाथी।
आरण्यकाः ,, जंगली कंडा जंगल में होने या रहने वाला।
आरण्या गोमयाः ,, ,,

कौरवकः ४–२–१३०—कुरुजनपद में होने वाला।

कौरवः „ „

यौगन्धरकः, यौगन्धरः „ युगन्धर (अम्बला जिले में सरस्वती से यमुना तक फैला प्रदेश) होने या रहने वाला।

मद्रकः ५–२–१३१—मद्र जनपद में उत्पन्न।

वृजिकः „ वृजि „

माहिषिकः ४–२–१३२—माहिषिक देश में उत्पन्न।

काच्छः ४–२–१३३—कच्छ जनपद (सिन्ध के ठीक दक्षिण) में उत्पन्न।

सैन्धवः „ सिन्धु जनपद (सिन्धु नदी के पूर्व सिन्ध सागर दोआब) में उत्पन्न।

काच्छकः मनुष्यः ४–२–१३४—कच्छ जनपद में उत्पन्न मनुष्य।

काच्छकं हसितम् „ कच्छ के जनों का हँसना।

काच्छो गौः „ कच्छ जनपद का बैल।

साल्वको ब्राह्मणः ४–२–१३५—साल्व जनपद (अलवर से लेकर उत्तरी बीकानेर प्रदेश) में उत्पन्न ब्राह्मण।

साल्वः पदातिर्व्रजति „ साल्व जनपद में उत्पन्न पैदल सैनिक जाता है।

साल्वको गौः ४–२–१३६—साल्व जनपद में उत्पन्न बैल।

साल्विका यवागूः „ साल्व जनपद की लप्सी।

साल्वमन्यत् „ साल्व जनपद की अन्य वस्तु।

वृकगर्तीयम् ४–२–१३७—वृकगर्त (बिहार प्रदेश के आरा जिले में स्थित गुप्तेश्वर महादेव के पास का प्रदेश में उत्पन्न।

गहीयः ४–२–१३८—गह (गुफा) में उत्पन्न।

मुखतीयम् „ मुख से उत्पन्न।

पार्श्वतीयम् „ पार्श्व (बगल) से उत्पन्न।

जनकीयम् „ जन का।

परकीयम् „ दूसरों का।

देवकीयम् „ देवता का।

स्वकीयम् „ अपना, निजी।

वैणुकीयम् „ बाँस से उत्पन्न।

वैत्रकीयम् „ बेंत से उत्पन्न।

औत्तरपदकीयम् २–४–१३८—उत्तर पद सम्बन्धी।

कटनगरीयम् ४–२–१३९—कटनगर में उत्पन्न।

कटघोषीयम् „ कटघोष में उत्पन्न।

कटपल्वलीयम् „ कटपल्वल में उत्पन्न।

राजकीयम् ४–२–१४०—राजा का, राजा में होने या रहने वाला।

ब्राह्मणकीयः ४–२–१४१—ब्राह्मणक जनपद (सिन्ध प्रान्त के मध्य में मीरपुरखास से २५ मील उत्तर) में होने या रहने वाला।

शाल्मलिकीयः „ शाल्मलिक जनपद में होने या रहने वाला।

अयोमुखीयः „ अयोमुख „ „

दाक्षिकन्थीयम् ४–२–१४२—दाक्षिकन्था में „

दाक्षिपलदीयम् „ दाक्षिपलद में „

दाक्षिनगरीयम् „ दाक्षि नगर में „

दाक्षिग्रामीयम् „ दाक्षि ग्राम „ „

दाक्षिह्रदीयम् „ दाक्षिह्रद „ „

पर्वतीयः ४–२–१४३— पर्वत „ „

पर्वतीयानि फलानि ४–२–१४४—पर्वत में होने या रहने वाले फल।

पार्वताग्नि „ „ „

पर्वतीयो मनुष्यः „ पर्वत में उत्पन्न मनुष्य।

कृकणीयम् ४–२–१४५—भारद्वाज देशीय कृकण (पार्जिटर के अनुसार गढ़वाल) में उत्पन्न।

पर्णीयम् „ „ पर्ण में उत्पन्न।

कार्कणम् „ कृकण (जो भारद्वाज देशीय न हो) में उत्पन्न।

पार्णम् „ पर्ण ( „ ) में उत्पन्न।

युष्मदीयः ४–३–१—तुम्हारा।

अस्मदीयः „ हमारा।

यौष्माकीणः ४–३–२—तुम्हारा।

आस्माकीनः „ हमारा।

यौष्माकः „ तुम्हारा।

आस्माकः „ हमारा।

तावकीनः, तावकः ४–३–३—तुम्हारा।
मामकीनः, मामकः ,, मेरा।
त्वदीयः ७–२–९८—तुम्हारा।
मदीयः ,, मेरा।
त्वत्पुत्रः ,, तुम्हारा पुत्र।
मत्पुत्रः ,, मेरा पुत्र।
अर्ध्यः ४-३-४—आधे भाग का।
परार्ध्यम् ४–३–५—आखिरी आधे भाग का।
अवरार्ध्यम् ,, सबसे कम आधे भाग का।
अधमार्ध्यम् ,, निम्न आधे भाग का।
उत्तमार्ध्यम् ,, उत्तम आधे भाग का।
पौर्वार्धिकम् ४–३–६—पूर्वी आधे भाग का।
पूर्वार्ध्यम् ,, ,,
पौर्वार्धाः ४–३ ७—ग्राम या नगर के पूर्वी आधे भाग के।
पौर्वार्धिका ,, ,,
मध्यमः ४–३–८—बीच का।
मध्यो वैयाकरणः ४–३–९—साधारण कोटि का वैयाकरण, न तीव्र न मन्द।

मध्यं दारु ,, मझोली लकड़ी, न बहुत लम्बी न बहुत छोटी।

द्वैप्यम् ४–३–१०—द्वीप में होने या रहने वाला।
द्वैप्या ,, ,, वाली।
मासिकम् ४–३–११—महीने में होने वाला।
सांवत्सरिकम् ,, वर्ष ,,
सायम्प्रातिकः ,, सुबह शाम ,,
पौनःपुनिकः ,, बार बार होने वाला
शारदिकं श्राद्धम् ४–३–१२—शरद ऋतु में होने वाला श्राद्ध।

शारदिकः शारदो वा रोग आतपो वा ४-३-१३–शरद ऋतु में होने वाला रोग या धूप।

शारदं दधि ,, शरद ऋतु में उत्पन्न दही।
नैशिकम् ४–३–१४—रात में होने वाला।
नैशम् ,, ,,
प्रादोषिकं, प्रादोषम् ,, प्रदोष काल में होने वाला।

शौवस्तिकम् ४–३–१५—आने वाले कल होने वाला या तत्सम्बन्धी।

सान्धिवेलम् ४–३–१६—दिन तथा रात के संयोग के समय होने वाला।

ग्रैष्मम् ,, गर्मी में होने वाला।
तैषम् ,, पुष्य नक्षत्र में होने वाला।
सांवत्सरं फलं पर्व वा ,, वर्ष में होने वाला फल या पर्व।
सांवत्सरिकमन्यत् ,, ,, अन्य
प्रावृषेण्यः ४–३–१७—वर्षा में होने वाला।
वार्षिकं वासः ४–३–१८—वर्षा ऋतु में उपयोगी वस्त्र।
हैमनम्, हैमन्तम् ४–३–२२—हेमन्त में होने वाला या उत्पन्न।

सायन्तनम् ४–३–२३—सायंकाल का।
चिरन्तनम् ,, प्राचीन काल का।
प्राह्णेतनम् ,, दोपहर के पहिले का।
प्रगेतनम् ,, प्रातः काल का।
दोषातनम् ,, रात का या रात में होने वाला।
दिवातनम् ,, दिन का ,, दिन ,,
चिरत्नम् ,, प्राचीन काल का।
परुत्नम् ,, गतवर्ष का।
परारित्नम् ,, गतवर्ष के पहिले वर्ष का।
अग्रिमम् ,, आगे का।
आदिमम् ,, प्रारम्भ का।
पश्चिमम् ,, पीछे का।
अन्तिमम् ,, अन्त का।
पूर्वाह्णेतनम् ४–३-२४—दोपहर के पहिले का।
अपराह्णेतनम् ,, दोपहर के बाद का।
पूर्वाह्णतनम् ,, दोपहर के पहिले का।
अपराह्णतनम् ,, दोपहर के बाद का।
पौर्वाह्णिकम् ,, दोपहर के पहिले का।
आपराह्णिकम् ,, दोपहर के बाद का।
स्रौघ्नः ४–३–२५—स्रुघ्न नगर (पूर्वी पंजाब में थानेश्वर से दक्षिण-पश्चिम लगभग पचास मील पर स्थित वर्तमान सुघ) में उत्पन्न।

औत्सः ४–३–२५—उत्स ( झरना ) में उत्पन्न ।
राष्ट्रियः ,, राज्य या देश में उत्पन्न ।
अवारपारीणः ,, दोनों तटों पर उत्पन्न ।
प्रावृषिकः ४–३–२६—वर्षा ऋतु में उत्पन्न ।
शारदका दर्भविशेषाः ४–३–२७—शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाली एक घास ।

,, मुद्गविशेषाश्च ,, मूँग ।

पूर्ववार्षिकः ७–३–११—वर्षा के पहले उत्पन्न ।
अपरहैमनः ,, हेमन्त के बाद में उत्पन्न ।
पौर्ववार्षिकः ,, वर्षा के पूर्व भाग में उत्पन्न ।
सुपाञ्चालकः ७–३–१२—सुन्दर पञ्चाल जनपद में उत्पन्न ।
सर्वपाञ्चालकः ,, समस्त ,,
अर्धपाञ्चालकः ,, आधे ,,
पूर्वपाञ्चालकः ७–३–१३—पूर्वी पञ्चाल ,,
पौर्वपाञ्चालः ,, ,, ,,
पौर्वमद्रः ,, पूर्वी मद्र ,,
पूर्वैषुकामशमः ७–३–१४—पूर्वी इषुकामशमी ,,
पूर्वपाटलिपुत्रकः ,, पूर्वी पटना ,,
पूर्वाह्णकः ४–३–२८—दोपहर के पहिले उत्पन्न ।
अपराह्णकः ,, दोपहर के बाद ,,
आर्द्रकः ,, आर्द्रा नक्षत्र में ,,
मूलकः ,, मूल ,, ,,
प्रदोषकः ,, प्रदोष काल ,,
अवस्करकः ,, मल में उत्पन्न ।
पन्थकः ४–३–२९—मार्ग में उत्पन्न ।
अमावास्यकः ४–३–३०—अमावास्या को उत्पन्न ।
आमावास्यः ,, ,,
अमावास्यः ४–३–३१— ,,
सिन्धुकः ४–३–३२—सिन्धु जनपद में उत्पन्न ।
अपकरकः ,, अपकर प्रदेश ( मियाँवाली जिले का भक्खर ) में उत्पन्न ।
सैन्धवः ४–३–३३—सिन्धु जनपद में उत्पन्न ।
आपकरः ,, अपकर प्रदेश में उत्पन्न ।
श्रविष्ठः ४–३–३४—श्रविष्ठा ( श्रवण ) नक्षत्र में उत्पन्न ।

फल्गुनः २–२–४९—फल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न ।
चित्रा ,, चित्रा में उत्पन्न ।
रेवती, रोहिणी ,, रेवती में रोहिणी में उत्पन्न ।
फल्गुनी ,, फल्गुनी में उत्पन्न ।
अषाढा ,, अषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न ।
श्राविष्ठीयः ,, श्रवण में उत्पन्न ।
आषाढीयः ,, अषाढा में उत्पन्न ।
प्रोष्ठपादो माणवकः ७–३–१८—पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न बालक ।
प्रौष्ठपदः ,, ,,
भाद्रपदः ,, भाद्रपद ,,
गोस्थानः ४–३–३५—गायों के स्थान में उत्पन्न ।
गोशालः ,, गोशाला में उत्पन्न ।
खरशालः ,, गधों के रहने के स्थान में उत्पन्न ।
वत्सशालः ४–३–३६—बछड़ों के रहने के स्थान में उत्पन्न ।
वात्सशालः ,, ,,
शातभिषजः ,, शतभिष नक्षत्र में उत्पन्न ।
शातभिषः ,, ,,
शतभिषक् ,, ,,
रोहिणः, रौहिणः ४–३–३७—रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न ।
स्रौघ्नः ४–३–३८—स्रुघ्न ( सुघ ) में किया गया, पाया गया, खरीदा गया या निपुण ।
स्रौघ्नः ४–३–३९—स्रुघ्न में प्रचुरता से होने वाला ।
औपजानुकः ४–३–४०—प्रायः घुटनों के समीप होने वाला ।
औपकर्णिकः ,, ,, कानों ,,
औपनीविकः ,, ,, नीवी ,,
स्रौघ्नः ४–३–४१—जो स्रुघ्न में संभव हो ।
कौशेयम् वस्त्रम् ४–३–४२—रेशमी वस्त्र ।
हैमन्तः प्राकारः ४–३–४३—जो हेमन्त ऋतु में सुखदायक हो, चादर ।
वासन्त्यः कुन्दलताः ,, जो वसन्त ऋतु में फूले, कुन्दलता ।
शारदाः शालयः ,, जो शरद ऋतु में पके, जड़हन धान ।

हैमन्ताः यवाः ४–३–४४—हेमन्त ऋतु में जो बोया जाय, जौ।

आश्वयुजकामाषाः ४–३–४५—जो आश्विन में बोये जायँ उड़द।

ग्रैष्मकम्, ग्रैष्मम् ४–३–४६—जो गर्मी में बोया जाय।

वासन्तकम्, वासन्तम् ,, जो वसन्त में बोया जाय।

मासिकम् ४–३–४७—जो ऋण महीने भर में दे दिया जाय।

कलापकम् ४–३–४८—जो ऋण मयूरों के बोलने के समय दे दिया जाय।

अश्वत्थकम् ,, जो ऋण पीपल में फल लगने के समय दे दिया जाय।

यवबुसकम् ,, जिस समय जौ तथा भूसा तैयार होता है उस समय दिया जाने वाला ऋण।

ग्रैष्मकम् ४–३–४९—गर्मी में दे दिया जाने वाला ऋण।

आवरसमकम् ,, आने वाले वर्ष में दे दिया जाने वाला ऋण।

सांवत्सरिकम्, सांवत्सरकम् ४–३–५०—वर्ष भर में दे दिया जाने वाला ऋण।

आग्रहायणिकम्, आग्रहायणकम् ,, अगहन में भुगतान कर दिया जाने वाला ऋण।

नैशो मृगः, नैशिकः ४-३-५१—रात में बोलने वाला पशु।

नैशिकः, नैशः ४–३–५२—जिस छात्र का अभ्यास रात में पढ़ने का हो।

स्रौघ्नः ४–३–५३—स्रुघ्न में होने वाला।

राष्ट्रियः ,, राज्य या देश मे होने वाला।

दिश्यम् ४–३–५४—दिशा में उत्पन्न।

वर्ग्यम् ,, पक्ष या झुंड में उत्पन्न।

दन्त्यम् ४–३–५५—जिसका उच्चारण दाँतों से किया जाय।

कर्ण्यम् ,, कानों में उत्पन्न।

सौह्मनागरः ७–३–२१—सुह्मनगर (आधु० राढ़) में उत्पन्न (वैजयन्ती प्रा० न०)।

पौर्वनागरः ३–७–२४—पूर्वनगर में उत्पन्न (प्राच्य-नगर)।

माद्रनगरः ,, मद्र नगर में उत्पन्न (उदीच्य नगर)।

कौरुजङ्गलम्, कौरुजाङ्गलम् ७–३–२५—कुरुजङ्गल (रोहतक, हाँसी, हिसार प्रदेश) में उत्पन्न।

वैश्वधेनवम्, वैश्वधैनवम् ,, विश्वधेनु में उत्पन्न।

सौवर्णवलजम्, सौवर्णवालजम् ,, सुवर्णवलज में उत्पन्न।

दार्तेयम् ४–३–५६—मशक मे होने वाला, उत्पन्न।

कौक्षेयम् ,, पेट में होने वाला, म्यान में रहने वाली तलवार।

कालशेयम् ४–३–५६—घड़े में उत्पन्न या रहने वाला।

वास्तेयम् ,, पेड़ू में होने वाला, उत्पन्न।

आस्तेयम् ,, धन में होने या रहने वाला।

आहेयम् ,, सर्प में रहने वाला विष।

ग्रैवेयम्, ग्रैवम् ४–३–५७—रक्तवाहिनी नाड़ियों में रहने वाला।

गाम्भीर्यम् ४–३–५८—गहराई में होने वाला, गहराई।

पाञ्चजन्यम् ,, पञ्चजन नामक दैत्य के पास रहने वाला।

परिमुख्यम् ४–३–५९—सामीप्य, उपस्थिति।

औपकूलः ,, तट के समीप होने वाला।

आन्तर्वेश्मिकम् ४–३–६०—मकान के भीतर होने वाला।

आन्तर्गणिकम् ,, गण या झुंड के भीतर होने वाला।

आध्यात्मिकम् ,, आत्मा में होने वाला या उत्पन्न।

आधिदैविकम् ७–३–२०—ईश्वर से होने वाला।

आधिभौतिकम् ,, प्राणियों या पदार्थों में होने वाला।

ऐहलौकिकम् ,, इस लोक में होने वाला।

पारलौकिकम् ,, दूसरे लोक में होने वाला।

दाविकम् ७–३–१—देविका नदी में उत्पन्न। ( आधुनिक देग नदी जो जम्मू की पहाड़ियों से निकल कर स्यालकोट शेखूपुरा जिलों में होती रावी में मिली है )

दाविकाकूलाः शालयः ,, देग के तट पर होने वाले धान।

शांशपध्रमसः ,, शीशम की लकड़ी की बनी हुई चौकोर कठौती।

दात्यौहम् ,, दो वर्ष के बछड़े में होने वाला।

दीर्घसत्रम् ,, दीर्घकालीन यज्ञ में होने वाला।

श्रायसम् ,, कल्याण में होने वाला।

पारिग्रामिकः ४–३–६१—गाँव के समीप होने वाला।

आनुग्रामिकः ,, गाँव के पीछे होने वाला।

जिह्वामूलीयम् ४–३–६२—जिह्वा की जड़ में उत्पन्न, वर्ण।

अङ्गुलीयम् ,, अङ्गुली में रहने वाला, अँगुठो।

कवर्गीयम् ४–३–६३—कवर्ग में रहने वाला।

मद्वर्ग्यः,मद्वर्गीणः, मद्वर्गीयः ४ ३ ६४—मेरे पक्ष में रहने वाला।

कवर्गीयो वर्णः ,, कवर्ग का अक्षर।

कर्णिका ४–३–६५—कानों में रहने वाला, वाली।

ललाटिका ,, माथे पर ,, एक अलंकार।

सौपो ग्रन्थः ४–३–६६—जिस ग्रन्थ में सुप्विभक्तियों की व्याख्या हो।

तैङः ,, जिस ग्रन्थ में तिङ् प्रत्ययों की व्याख्या हो।

कार्तः ,, जिस ग्रन्थ में कृत् प्रत्ययों की व्याख्या हो।

सौपम् ,, सुप्विभक्तियों में होने वाला।

षात्वणत्विकः ४–३–६७—जिस शास्त्र में षत्व और णत्व विधायक नियमों की व्याख्या हो।

आग्निष्टोमिकः ४–३–६८—जिस ग्रन्थ में अग्निष्टोमयज्ञ की व्याख्या हो।

वाजपेयिकः ,, ,, वाजपेय ,,

राजसूयिकः ,, ,, राजसूय ,,

पाकयज्ञिकः ,, ,, पाकयज्ञ ,,

नावयज्ञिकः ,, ,, नवयज्ञ ,,

वसिष्ठः ४–३–६९—वसिष्ठ ऋषि से देखा गया मन्त्र।

वासिष्ठिकोऽध्यायः ,, जिस अध्याय में वसिष्ठ मन्त्रों की व्याख्या हो।

वासिष्ठी ऋक् ४–३–६९—वसिष्ठ से उपलब्ध मन्त्रों की व्याख्या करने वाली ऋचा।

पौरोडाशिकः ४–३–७०—पुरोडाश की विधि बताने वाले मन्त्र तथा जिसमें उसकी व्याख्या हो।

छन्दस्यः, छान्दसः ४–३–७१—छन्दा शास्त्र परक ग्रन्थ।

ऐष्टिकः ४–३–७२—इष्टि की व्याख्या करने वाला ग्रन्थ।

पाशुकः ,, पशुबन्ध यज्ञ की व्याख्या करने वाला ग्रन्थ।

चातुर्होतृकः ,, चतुर्होताओं द्वारा किये जानेवाले यज्ञ का व्याख्यान ग्रन्थ।

ब्राह्मणिकः ,, ब्राह्मण ग्रन्थों की व्याख्या करने वाला ग्रन्थ।

आर्चिकः ,, ऋचाओं की व्याख्या करने वाला ग्रन्थ।

आर्गयनः ४–३–७३—ऋग्वेद के पारायण की व्याख्या करने वाला ग्रन्थ।

औपनिषदः ,, उपनिषदों की व्याख्या करने वाला ग्रन्थ।

वैयाकरणः ,, व्याकरण की व्याख्या करने वाला ग्रन्थ।

स्रौघ्नः ४–३–७४—स्रुघ्न से आया हुआ ( सुघ )।

शौल्कशालिकः ४–३–७५—चुंगी घर से आया हुआ (प्राप्त) कर, धन, आय।

शौण्डिकः ४–३–७६—मद्य विभाग से प्राप्त धन, आय।

कार्कणः ,, कृकण ( एक प्रकार का शिकारी पक्षी ) से प्राप्त आय।

तैर्थः ,, तीर्थ से प्राप्त धन, आय।

औदपानः ,, जलाशय से प्राप्त धन, आय।

औपाध्यायकः ४–३–७७—उपाध्याय ( आचार्य ) से प्राप्त ज्ञान।

पैतामहकः ,, दादा से प्राप्त धन, सम्पत्ति।

हौतृकम् ४-३-७८—होता से प्राप्त।
भ्रातृकम् ,, भाई से प्राप्त।
पित्र्यम्, पैतृकम् ४-३-७९—पिता से प्राप्त।
वदम् ४-३-८०—वैदों से प्राप्त।
गार्गम् ,, गार्गों से प्राप्त।
दाक्षम् ,, दाक्षों से प्राप्त।
औपगवकम् ,, औपगवों से प्राप्त।
आशौचम्, अशौचम् ७-३-३०—अपवित्रता।
आनैश्वर्यम्, अनैश्वर्यम् ,, प्रभुत्व का अभाव।
आक्षैत्रज्ञम्, अक्षैत्रज्ञम् ,, मूर्खता।
आकौशलम्, अकौशलम् ,, ,,
आनैपुणम्, अनैपुणम् ,, ,,
समरूप्यम् ४-३-८१—समान कारण से प्राप्त।
विषमरूप्यम् ,, असमान कारण से प्राप्त।
समीयम् ,, समान कारण से प्राप्त।
विषमीयम् ,, असमान कारण से प्राप्त।
देवदत्तरूप्यम्,
देवदत्तम्, देवदत्तीयम् ,, देवदत्त से प्राप्त।
ससमयम् ४-३-८२—समान कारण से प्राप्त।
विषममयम् ,, असमान ,,
देवदत्तमयम् ,, देवदत्त से प्राप्त।
हैमवती गङ्गा ४-३-८३—हिमालय से निकलने वाली गङ्गा।
वैदूर्यो मणिः ४-३-८४—विदूर (वाल्वाय) नामक पर्वत से निकलने वाली मणि।
स्रौघ्नः पन्था दूतो वा ४-३-८५—स्रुघ्न (सुघ) जाने वाला मार्ग या दूत।
स्रौघ्नं कान्यकुब्जद्वारम् ४-३-८६—स्रुघ्न की ओर जाने वाला कान्यकुब्ज का फाटक।
शारीरकीयः ४-३-८७—जीवात्मा के सम्बन्ध में लिखा गया ग्रन्थ, शारीरकसूत्रों का भाष्य।
शिशुक्रन्दीयः ४-३-८८—बच्चों के रोने के सम्बन्ध में लिखा गया ग्रन्थ।
यमसभीयः ४-३-८८—यम की सभा के सम्बन्ध में लिखा गया ग्रन्थ।
किरातार्जुनीयम् ,, किरात तथा अर्जुन के सम्बन्ध में लिखा गया ग्रन्थ।
इन्द्रजननीयम् ,, इन्द्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखा गया ग्रन्थ।
विरुद्धभोजनीयम् ,, विरुद्ध भोजन के सम्बन्ध में लिखा गया ग्रन्थ।
स्रौघ्नः ४-३-८९—जिनका निवास स्रुघ्न में हो।
स्रौघ्नः ४-३-९०—जिनके पूर्वज स्रुघ्न में रहे हों।
हृद्गोलीयाः ४-३-९१—जिन आयुधजीवियों के पूर्वजों का निवास हृद्गोल पर्वत रहा हो।
आर्क्षोदा द्विजाः ,, जिन ब्राह्मणों के पूर्वज ऋक्षोद पर्वत पर रहे हों।
शाण्डिक्यः ४-३-९२—जिनके पूर्वज शण्डिक में रहे हों।
सैन्धवः ४-३-९३—जिनके पूर्वज सिन्धु में रहे हों।
ताक्षशिलः ,, जिनके पूर्वज तक्षशिला में रहे हों।
तौदेयः ,, जिनके पूर्वज तूदी में रहे हों।
सालातुरीयः ,, ,, सलातुर (लहुर) में रहे हों।
वार्मतेयः ,, ,, वर्मती में रहे हों। सम्भवतः बामियाँ।
कौचवार्यः ,, जिनके पूर्वज कूचवार (कम्बोज के पूर्वतारि नदी के समीप कूचप्रदेश) में रहे हों।
स्रौघ्नः ४-३-९५—जिनके पूर्वज स्रुघ्न में रहे हों।
आपूपिकः ४-३-९६—मालपूआ के प्रति जिसकी अभिरुचि हो।
पायसिकः ,, खीर ,, ,,
दैवदत्तः ,, देवदत्त के प्रति ,,
स्रौघ्नः ,, स्रुघ्न ,, ,,
ग्रैष्मः ,, ग्रीष्म ऋतु ,, ,,
माहाराजिकः ४-३-९७—जो महाराज का भक्त हो।
वासुदेवकः ४-३-९८—जो वासुदेव ,,
अर्जुनकः ,, जो अर्जुन ,,

ग्लौचुकायनकः ४–३–९९—जो ग्लुचुकायनि का भक्त हो।
नाकुलकः ,, जो नकुल ,,
पाणिनीयः ,, जो पाणिनि का ,,
आङ्गकः ४–३–१००—जो अङ्ग जनपद का भक्त हो।
आङ्गकः ,, जो अङ्ग क्षत्रियों ,,
पाञ्चालाः ,, जो पञ्चाल ब्राह्मणों का भक्त हो।
पौरवीयः ,, जो पौरव राजा का भक्त हो।
पाणिनीयम् ४–३–१०१—जो पाणिनि से विशेष रूप से कहा गया हो। व्याकरण।
तैत्तिरीयाः ४–३–१०२—तित्तिरि से कहे गये शास्त्र के पढ़ने वाले।
काश्यपिनः ४–३–१०३—काश्यप से कहे गये ,,
हारिद्रविणः ४–३–१०४—हरिद्रु ,,
आलम्बिनः ,, वैशम्पायन के शिष्य आलम्ब से कहे गये शास्त्र के पढ़ने वाले।
माल्लाविनः ४–३–१०५—भल्लु से कहे गये शास्त्र के पढ़ने वाले।
शाट्यायनिनः ,, शाट्य से ,, ,,
पैङ्गी ,, पिङ्ग से ,, की पढ़ने वाली।
याज्ञवल्कानि ब्राह्मणानि ,, याज्ञवल्क्य से कहे गये ब्राह्मण ग्रन्थ।
आश्मरथः कल्पः ,, अश्मरथ ,, कल्प ग्रन्थ।
शौनकिनः ४–३–१०६—शौनक से कहे गये शास्त्र के पढ़ने वाले।
कठाः ४–३–१०७—कठ ,, ,,
चरकाः ४–३–१०८—चरक ,, ,,
कालापाः ४–३–१०८—कलाप ,, ,,
छागलेयिनः ४–३–१०९—छगलि ,, ,,
पाराशरिणः, भिक्षवः ४–३–११०—पाराशर्य ,, भिक्षुसूत्रों ,,
शैलालिनो नटाः ,, शिलालि ,, नटसूत्रों ,,
कर्मन्दिनो भिक्षवः ४–३–१११—कर्मन्द ,, भिक्षुसूत्रों ,,
कृशाश्विनो नटाः ,, कृशाश्व ,, नटसूत्रों ,,
सौदामनी विद्युत् ४–३–११२—बिजली जो सुदामा पर्वत की दिशा में हो।
पीलुमूलतः ४–३–११३—जो पीलुमूल की दिशा में हो।
उरस्यः, उरस्तः ४–३–११४—जो उरःस्थल की ओर हो।

पाणिनीयम् ४–३–११५—पाणिनि द्वारा बिना उपदेश के ज्ञात, व्याकरण।
वाररुचो ग्रन्थः ४–३–११६—वररुचि से बनाया गया।
माक्षिकं मधु ४–३–११७—मधु मक्खियों से बनाया गया, शहद।
कौलालकम् ४–३–११८—कुम्हार से बनाया गया बर्तन।
वारुडकम् ,, वरुड से बनाया गया।
क्षौद्रम् ४–३–११९—मधुमक्खियों से बनाया गया मधु।
भ्रामरम् ,, भौरों से बनाया गया।
वाटरम् ,, वटरों से बनाया गया।
पादपम् ,, पादप से बनाया गया।
औपगवम् ४–३–१२०—उपगु सम्बन्धी या उपगु का।
सांवहित्रम् ,, संवोढ़ा की सम्पत्ति।
अग्नीत् ,, जो यज्ञ की आग को जलाये, ऋत्विग्विशेष।
आग्नीध्रम् ,, उस ऋत्विग्विशेष का स्थान।
आग्नीध्रः ,, उस स्थान में रहने वाली आग।
सामिधेन्यः, मन्त्रः ,, आग में समिधा डालने के समय पढ़ा जाने वाला, मन्त्र।
सामिधेनी ऋक् ,, ,, के समय पढ़ी जाने ऋचा।
रथ्यम् चक्रम् ४–३–१२१—रथ सम्बन्धी या रथ का, पहिया।
पत्त्रं वाहनम् ४–३–१२२—जिससे कोई जाता हो, सवारी।
आश्वरथम् ४–३–१२३—घोड़ा गाड़ी सम्बन्धी या घोड़ा गाड़ी का, पहिया।
आश्वम् ,, घोड़ा के ढोने योग्य बोझा।
आध्वर्यवम् ,, अध्वर्यु सम्बन्धी या अध्वर्यु का।
पारिषदम् ,, परिषद ,, परिषद् का।
हालिकम् ४–३–१२४—हल सम्बन्धी या हल का।
सैरिकम् ,, ,, ,,
काकोलूकिका ४–३–१२५—कौआ और उल्लू का वैर।
कुत्सकुशिकिका ,, कुत्स और कुशिक का विवाह।
दैवासुरम् ,, देव और असुर का वैर।
औपगवकम् ४–३–१२६—उपगु सम्बन्धी या उपगु का।
काठकम् ,, कठों का धर्म या परम्परा।

वैद:, सङ्घोऽङ्को घोषो वा ४–३–१२७—विदों का समूह, चिह्न अथवा गोशाला ।

वैदम्, लक्षणम् „ विदों का गुण ।

गार्ग:, गार्गम् „ गर्गो का समूह चिह्न अथवा गोशाला ।

दाक्ष:, दाक्षम् „ दक्ष के वंशजों का समूह „

शाकल:, शाकलक: ४–३–१२८—शाकलसे कहे गये शास्त्रों के पढ़ने वालों का समूह, चिह्न अथवा गोशाला ।

छान्दोग्यम् ४–३–१२९—छन्दोगों का धर्म या परम्परा ।

औक्थिकम् „ औक्थिकों „

याज्ञिक्यम् „ याज्ञिकों „

बाह्वृच्यम् „ बह्वृचों „

नाट्यम् „ नटों „

दाण्डा:, दण्डमाणवा: शिष्या वा ४-३-१३०—दाक्षि के कम अवस्था के सीखने वाले ब्रह्मचारी अथवा शिष्य ।

रैवतिकीय: ४–३–१३१—रैवतिक सम्बन्धी या रैवतिक का शिष्य ।

वैजवापीय: „ बैजवापि „ बैजवापि „

कौपिञ्जल: „ कौपिञ्जल सम्बन्धी या कौपिञ्जल का शिष्य ।

हास्तिपद: „ हास्तिपद „ हास्तिपद „

हास्तिपद: „ हास्तिपद की सन्तान ।

आथर्वण: धर्म आम्नायो वा „ आथर्वणिक का धर्म या परम्परा ।

इति शैषिकं प्रकरणम् ।

# अथ प्राग्दीव्यतीयप्रकरणम्

आश्म: ४-३–१३४—पत्थर का बना हुआ ।

भास्मन: „ भस्म „

मार्त्तिक: „ मिट्टी „

मायूर: ४–३–१३५—मोर का बना हुआ अथवा मोर का अंग ।

मौर्वं काण्डं भस्म वा „ गोकर्णी ओषधि का अंग अथवा बना हुआ, डंठल या राख ।

पैप्पलम् „ पीपल का अंग या बना हुआ ।

बैल्वम् ४–३–१३६—बेल का अंग या बना हुआ ।

तार्कवम् ४,३-१३७—तर्कु (टेकुआ) का अंग या बना हुआ ।

तैत्तिडीकम् „ इमली का अंग या बना हुआ ।

त्रापुषम् ४–३–१३८—टिन ( जस्ते ) का बना हुआ ।

जातुषम् „ लाख का बना हुआ ।

दैवदारवम् ४–३–१३९—देवदारु का अंग या उससे बना हुआ ।

भाद्रदारवम् „ देवदारु विशेष का अंग या उससे बना हुआ ।

दाधित्थम् ४–३–१४०—केथे का अंग या उससे बना हुआ ।

कापित्थम् „ „

पालाशम् ४–३–१४१—पलाश का अंग या उससे बना हुआ ।

खादिरम् „ कत्थे का अंग या उससे बना हुआ ।

कारीरम् „ करील का अंग या उससे बना हुआ ।

शामीलं भस्म ४–३–१४२—शमी का राख ।

शामीली स्रुक् „ शमी की स्रुवा ।

अश्ममयम्, आश्मनम् ४–३–१४२—पत्थर का अंग या उससे बना हुआ ।

मौद्ग:, सूप: ४–३–१४३—मूँग की बनी हुई दाल ।

कार्पासमाच्छादनम् „ कपास का बना हुआ ( सूती) वस्त्र ।

आम्रमयम् ४–३–१४४—आम का अंग या उससे बना हुआ ।

शरमयम् ४-१-४४—नरकुल का अंग या उससे बना हुआ।
त्वङ्मयम् ,, त्वचा ( छाल ) का बना हुआ या उसका अंग।
वाङ्मयम् ,, वाणी से बना हुआ साहित्य।
आप्यम्, अम्मयम् ,, पानी से बना हुआ।
गोमयम् ४-३-१४५—गोबर।
पिष्टमयम्, भस्म ४-३-१४६—आटे का बना हुआ भस्म।
पैष्टी, सुरा ,, आटे की बनी शराब।
पिष्टकः ४-३-१४७—आटे का बना हुआ पूआ।
व्रीहिमयः पुरोडाशः ४-३-१४८—धान का बना हुआ पुरोडाश।
व्रैहम्, अन्यत् ,, धान की बनी हुई दूसरी वस्तु।
तिलमयम् ४-३-१४९—तिल का बना हुआ या उसका अंग।
यवमयम् ,, जौ का बना हुआ।
तैलम् ,, तेल।
चावकः ,, बिना भूसी के जौ को उबाल कर दूध चीनी डालकर तैयार किया गया पदार्थ।
तालं धनुः ४-३-१५२—ताड़ का बना हुआ धनुष।
तालमयम् ,, ताड़ की बनी हुई अन्य वस्तु।
ऐन्द्रायुधम् ,, वज्र का बना हुआ।
हाटकः, तापनीयः, सौवर्णो वा निष्कः ४-३-१५३—सोने का बना हुआ निष्क ( वैदिक काल की १६ माशे की स्वर्णमुद्रा )
हाटकमयी, यष्टिः ,, सोने की बनी हुई छड़ी।
शौकम् ४-३-१५४—तोते का अंग या उससे बना हुआ।
बाकम् ,, बगुले का अंग या उससे बना हुआ।
राजतम् ,, चाँदी का बना हुआ।

शामीलम् ४-३-१५५ शमी का अंग या उससे बना हुआ।
दाधित्थम् ,, कैथे का अंग या उससे बना हुआ।
कापित्थम् ,, ,,
बैल्वमयम् ,, बेल का अंग उससे बना हुआ।
नैष्किकम् ४-३-१५६—निष्क ( अशर्फी ) से खरीदा गया।
नैष्किकः ,, अशर्फी का बना हुआ।
शत्यः, शतिकः ,, सौ कार्षापण से खरीदा गया।
औष्ट्रकः ४-३-१५७—ऊँट का अंग या उससे बना हुआ।
औमम्, औमकम् ४-३-१५८—अलसी का बना हुआ, रेशमी वस्त्र।
और्णम्, और्णकम् ,, ऊन का बना हुआ, ऊनी वस्त्र।
ऐणेयम् ४-३-१५९—काली मृगी का अंग, मांस।
ऐणम् ,, काले मृग का अंग।
गव्यम् ४-३-१६०—दूध, दही, घी।
पयस्यम् ,, दही, घी।
द्रव्यम् ४-३-१६१—वृक्ष का अंग, लाख आदि।
द्रुवयम् ४-३-१६२—लकड़ी का एक माप।
आमलकम् ४-३-१६३—आँवला ( फल )।
प्लाक्षम् ४-३-१६४—पाकड़ का फल।
नैयग्रोधम् ७-२-५—बरगद का फल।
जाम्बवम्, जम्बु ४-३-१६५—जामुन का फल।
जम्बूः ,, जामुन का फल।
व्रीहयः ,, धान।
मुद्गाः ,, मूँग।
मल्लिका ,, मोगरे का फूल।
जाती ,, चमेली का फूल।
विदारी ,, विदारी कन्द।
पाटलानि, पुष्पाणि ,, गुलाब के फूल।
साल्वानि, मूलानि ,, साल्व नामक वृक्ष की जड़।
अशोकम् ,, अशोक का फूल।
करवीरम् ,, कनैल का फूल।
हरीतक्यः ४-३-१६७—हर्रे के फल।

कंसीयम् ४–३–१६८—जिससे प्याला वनाया जाय, काँसा।

कांस्यम् ,, काँसे का वना हुआ।

परशव्यम् ४–३–१६८—जिससे कुल्हाड़ी बनायी जाय, लोहा।

पारशवः ,, लोहे का वना हुआ।

इति प्राग्दिव्यतीयप्रकरणम्।

## अथ ठगधिकारप्रकरणम्

माशब्दिकः ४–४–१—"शब्द (शोरगुल) मत करो" कहने वाला।

स्वागतिक ७–३–७—"स्वागत" कहने वाला।

स्वाध्वरिकः ,, "उत्तम यज्ञ" कहने वाला।

स्वाङ्गिः ,, स्वङ्ग का पुत्र।

व्याङ्गिः ,, व्यङ्ग का पुत्र।

व्याडिः ,, व्यड का पुत्र।

व्यावहारिकः ,, व्यवहार (प्रथा) जानने वाला।

स्वापतेयम् ,, धन।

प्राभूतिकः ,, "वहुत" कहने वाला।

पार्याप्तिकः ,, "काफी" कहने वाला।

सौस्नातिकः ,, "तुमने अच्छी तरह स्नान कर लिया" यह पूछने वाला।

सौखशायनिकः ,, "तुमने अच्छी तरह सो लिया" यह पूछने वाला।

पारदारिकः ,, पर स्त्री से सम्वन्ध रखने वाला।

गौरुतल्पिकः ,, गुरु पत्नी से सम्बन्ध करने वाला।

आक्षिकः ४–४–२—पासे से जुआ खेलने वाला, ज्वारी।

आभ्रिकः ,, फरुही (लकड़ी की कुदाली) से खोदने वाला।

आक्षिकः ,, पासों से जीतने वाला।

आक्षिकम् ,, पासों से जीता गया।

दाधिकम् ,, दही से स्वादिष्ट वनाया गया।

मारीचिकम् ,, मिर्च से स्वादिष्ट वनाया गया।

कौलुत्थम् ,, कुलथी से स्वादिष्ट वनार्या गया।

तैन्तिडिकम् ,, इमली सें स्वादिष्ट बनाया गया।

औडुपिकः ४–४–५—डोंगी (छोटी नाव) से पार करने वाला।

गौपुच्छिकः ४–४–६—गाय की पूँछ पकड़कर पार करने वाला।

नाविकः ४–४–७—नौका से पार करने वाला।

घटिकः ,, घड़े से पार करने वाला।

बाहुका ,, हाथों से तैर कर पार जाने वाली।

हास्तिकः ४–१–८—हाथी से यात्रा करने वाला।

शाकटिकः ,, बैलगाड़ी से यात्रा करने वाला।

दाधिकः ,, दही से भोजन करने वाला।

आकर्षिकः ४–४–९—कसौटी को साथ लेकर चलने वाला।

आकर्षिकी ,, ,, ,, वाली।

पर्पिकः ४–४–१०—जिस लकड़ी को हाथ में लेकर पंगु चलते हैं उससे चलने वाला।

पर्पिकी ,, ,, ,, वाली।

अश्विकः ,, घोड़े से चलने वाला।

रथिकः ,, रथ से चलने वाला।

श्वाभास्त्रिः ४–४–११, ७–३–८—श्वभस्त्र का पुत्र।

श्वादंष्ट्रिः ,, श्वदंष्ट्र का पुत्र।

श्वागणिकः, श्वगणिकः ,, कुत्तों को लेकर चलने वाला, कुत्तों से निर्वाह करने वाला।

श्वागणिकी, श्वगणिकी ,, ,, ,, वाली।

श्वापदम्, शौवापदम् ७–३–९—हिंसक पशु सम्वन्धी।

वैतनिकः ४–४–१२—वेतन लेकर निर्वाह करने वाला।

धानुष्कः ,, धनुष से निर्वाह करने वाला।

वास्निकः ४–४–१३—पूँजी लगाकर निर्वाह करने वाला।

क्रयविक्रयिकः ,, खरीद फरोख्त से निर्वाह करने वाला।

क्रयिकः ,, खरीद कर निर्वाह करने वाला।

विक्रयिकः ,, बेचकर निर्वाह करने वाला।

आयुधीयः, आयुधिकः ४–४–१४—शस्त्र से निर्वाह करने वाला, सिपाही।

औत्सङ्गिकः ४–४–१५—गोद में लेकर चलने वाला।

भास्त्रिकः ४–४–१६—चमड़े की थैली ( भाथी के आकार की ) से ले जाने वाला।

भास्त्रिकी ,, ,, ,, ,, वाली।

विवधिकः, वैवधिकः ४–४–१७—बहँगी से ढोने वाला।

वीवधिकः ,, ,,

वीवधिकी ,, ,, वाली।

कौटिलिकः, व्याधः, कर्मारश्च ४–४–१८—गति विशेष से चलकर शिकार करने वाला व्याध अथवा अँगीठी में आग लेकर चलने वाला लोहार।

आक्षद्यूतिकं, वैरम् ४–४–१९—जो बढ़ती हुई शत्रुता जुए से शान्त हो गयी हो।

कृत्रिमम् ४–४–२०—बनावटी, बना हुआ।

पक्त्रिमम्, पाकिमम् ,, पका हुआ।

त्यागिमम् ,, त्यागा हुआ।

आपमित्यकम् ४–४–२१—जो ऋण जिस रूप में लिया जाय उसी रूप में चुका दिया जाय।

याचितकम् ,, मँगनी की वस्तु, जो लौटायी न जाय।

दाधिकम् ४–४–२२—दही मिला हुआ।

चूर्णिनोऽपूपाः ४–४–२३—चूर्ण ( आटा ) मिले हुए पूए।

लवणः, सूपः ४–४–२४—नमक मिली हुई दाल।

लवणम्, शाकम् ,, नमक मिला हुआ शाक।

मौद्गः, ओदनः ४-४-२५—मूँग मिला हुआ भात, खिचड़ी।

औजसिकः, शूरः ४–४–२७—शक्ति से रहने वाला, वीर।

साहसिकः, चौरः ,, हिम्मत से रहने वाला, चोर।

आम्भसिकः, मत्स्यः ,, जल में रहने वाली मछली।

प्रातीपिकः ४–४–२८—प्रतिकूल रहने वाला।

आन्वीपिकः ,, अनुकूल रहने वाला।

प्रातिलोमिकः ,, प्रतिकूल रहने वाला।

आनुलोमिकः ४–४–२८—अनुकूल रहने वाला।

प्रातिकूलिकः ,, प्रतिकूल रहने वाला।

आनुकूलिकः ,, अनुकूल रहने वाला।

पारिमुखिकः ४–४–२९—स्वामी के मुख के सामने (समीप) रहने वाला सेवक।

पारिपार्श्विकः ,, स्वामी के समीप रहने वाला सेवक।

द्वैगुणिकः ४–४–३०—शत प्रतिशत सूद लेने वाला।

त्रैगुणिकः ,, तिगुना सूद लेने वाला।

वार्धुषिकः ,, धन वृद्धि के लिए ऋण देने वाला सूदखोर।

कुसीदिकः ४–४–३१—कड़ी दर पर सूद लेने वाला सूदखोर।

कुसीदिकी ,, ,, वाली।

दशैकादशिकः ,, दस रुपये देकर महीने भर बाद ग्यारह रुपया लेने वाला।

दशैकादशिकी ,, ,, ,, वाली।

बादरिकः ४–४–३२—बेर बिनने वाला।

सामाजिकः ४–४–३३—अपनी उपस्थिति से समाज (सभा) की सहायता करने वाला।

शाब्दिकः ४–४–३४—जो शब्द की सिद्धि करता है, वैयाकरण।

दार्दुरिकः ,, जो मिट्टी के घड़े को बजाता है।

पाक्षिकः ४–४–३५—चिड़ीमार जो पक्षियों को मारता है।

शाकुनिकः ,, ,, ,,

मायूरिकः ,, ,, मयूरों ,,

मात्स्यिकः ,, मछुआहा जो मछलियों ,,

मैनिकः ,, ,, ,,

शाकुलिकः ,, ,, ,,

मार्गिकः ,, जो मृगों को मारता है।

हारिणिकः ,, जो मृगों को मारता है।

सारङ्गिकः ,, ,, ,,

पारिपन्थिकश्चौरः ४–४–३६—जो मार्ग को छोड़कर या घेर कर बैठता है, चोर।

पारिपन्थिकः ,, जो मार्ग में लोगों को मारता है, डाकू।

दाण्डमाथिकः ४–४–३७—लम्वी सड़क पर यात्रा करने या दौड़ने वाला।

पाद्विकः ,, मार्ग पर चलने वाला, पथिक।

आनुपदिकः ,, पीछे-पीछे दौड़ने वाला।

आक्रन्दिकः ४–४– ३८—दुःखियों के रोने के स्थान पर दौड़कर जाने वाला।

पौर्वपदिकः ४–४–३९—पूर्वपद पर लिखा हुआ ग्रन्थ या उसका पढ़ने वाला।

औत्तरपदिकः ,, उत्तरपद पर लिखा हुआ ग्रन्थ या उसका पढ़ने वाला।

प्रातिकण्ठिकः ४–४–४०—जिस वैयाकरण ने निपात ने सिद्ध प्रयोगों का संग्रह या व्याख्या किया हो।

आर्थिकः ,, अर्थ विचार का प्रतिपादक ग्रन्थ।

लालामिकः ,, चिह्न या सौन्दर्य ग्रहण करने वाला।

धार्मिकः ४–४–४१—धर्माचरण करने वाला।

अधार्मिकः ,, अधर्म ( पाप ) करने वाला।

प्रतिपथिकः, प्रातिपथिकः ४-४-४२—मार्ग से चलने वाला।

सामवायिकः ४–४–४३—सभा में सम्मिलित होने वाला।

सामूहिकः ,, समूह में ,,

पारिषद्यः ४–४–४४—जो सभा में सम्मिलित होता है।

सैन्याः, सैनिकाः ४–४–४५—सेना के सदस्य।

लालाटिकः ४–४–४६—ललाट ( मुख ) देखने वाला, नौकर।

कौक्कुटिको भिक्षुः ,, मुर्गी की उड़ान की दूरी तक देखने वाला, भिक्षु।

आपणिकम् ४–४–४६—वाजार का कर ( झरी )।

माहिषम् ४–४–४८—रानी का कर्त्तव्य।

याजमानम् ,, यजमान का कर्त्तव्य।

यात्रम् ४–४–४९—यात्री का कर्तव्य।

नारी ,, स्त्री।

नैशस्त्रम् ,, शासन, नियम।

नैभाजित्रम् ,, बँटवारा।

आपणिकः ४–४–५०—वाजार का कर ( झरी )

आपूपिकः ४–४–५१—पूआ बेचने वाला हलवाई।

लावणिकः ४–४–५२—नमक बेचने वाला।

किसरिकः ४–४–५३—सुगन्धित द्रव्य बेचने वाला।

किसरिकी ,, ,, वाली।

शलालुकः, शालालुकः ४–४–५४— ,, वाला।

शलालुकी, शालालुकी ,, ,, वाली।

मार्दङ्गिकः ४–४–५५—मृदङ्ग वजाने वाला।

माड्डुकः, माड्डुकिकः ४ ४–५६—मड्डु वजाने वाला।

झार्झरः, झार्झरिकः ,, झाँझ वजाने वाला।

आसिकः ४–४–५७—तलवार चलाने वाला।

धानुष्कः ,, धनुष चलाने वाला।

पारश्वधिकः ४–४–५८—परशु चलाने वाला।

शाक्तीकः ४–४–५९—शक्ति चलाने वाला।

याष्टीकः ,, लाठी चलाने वाला।

आस्तिकः ४–४–६०—ईश्वर की सत्ता मानने वाला।

नास्तिकः ,, ,, न मानने वाला।

दैष्टिकः ,, भाग्य को मानने वाला।

आपूपिकः ४–४–६१—पूआ खाने वाला।

छात्रः ४–४–६२—गुरु के दोषों को छिपाने वाला।

कार्मः ४–४–६३—काम करने वाला, मजदूर, नौकर।

कार्मणः ,, काम का।

ऐकान्यिकः ४–४–६४—पढ़ने में एक गलती करते वाला छात्र।

द्वादशान्यिकः ,, ,, बारह ,, ,,

आपूपिकः ४–४–६५—जिसको पूए का खाना हितकारक हो।

आग्रभोजनिकः ४–४–६६—जिस ब्राह्मण को प्रतिदिन नियम से अग्र भोजन दिया जाता हो।

श्राणिकः ४–४–६७— ,, व्यक्ति ,, शाक ,,

श्राणिकी ,, ,, ,, ,, ,, ,,

मांसौदनिकः ,, ,, ,, ,, मांस चावल

मांसिकः ,, ,, ,, ,, मांस ,,

औदनिकः ,, ,, ,, ,, भात ,,

भाक्तः, भाक्तिकः ४–४–६८— ,, ,, भात ,,

आकरिकः ४–४–६९—खानों का निरीक्षक।

देवागारिकः ४–४–७०—देवमन्दिर का निरीक्षक।

श्माशानिकः ४-४-७१—श्मशान में अध्ययन करने वाला।
चातुर्दशिकः ,, चतुर्दशी को अध्ययन करने वाला।
वांशकठिनिकः ४-४-७२—बाँस के वन में व्यवसाय करने वाला।
प्रास्तारिकः ,, समूह के साथ खनिज धातुओं का व्यापार करने वाला, यज्ञ में व्यवहार करने वाला।

सांस्थानिकः ४-४-७३—व्यापारियों के समूह के साथ व्यवहार करने वाला।
नैकटिकः, भिक्षुः ४-४-७३—गाँव के भीतर नहीं, बल्कि गाँव के समीप रहने वाला भिक्षु।
आवसथिकः ४-४-७४—गृह में रहने वाला, गृहस्थ।
आवसथिकी ,, ,, वाली, गृहस्था।

इति ठगधिकारप्रकरणम्।

## अथ प्राग्घितीयप्रकरणम्

रथ्यः ४-४-७५, ७६—रथ खींचने वाला, बैल या घोड़ा।
युग्यः ,, जुआ ढोने वाला, बैल।
प्रासङ्ग्यः ,, बछड़ों को निकालने के लिए धनुषाकार लकड़ी को कन्धे पर ढोने वाला।
धुर्यः, धौरेयः ४-४-७७—बोझ ढोने वाला, लद्दू बैल।
सर्वधुरीणः ४-४-७८—सब प्रकार के बोझ को ढोने वाला।
एकधुरीणः, एकधुरः ४-४-७९—एक ही प्रकार के बोझ को ढोने वाला।
शाकटो गौः ४-४-८०—गाड़ी खींचने वाला बैल।
हालिकः ४-४-८१—हल ढोने वाला, किसान, हलवाहा।
सैरिकः ,, हल खींचने वाला, बैल।
जन्या ४-४-८२—वहू को ले जाने वाली सखी।
पद्याः शर्कराः ४-४-८३—पैरों में चुभने वाली, कंकड़ी।
धन्यः ४-४-८४—धन पाने वाला।
गण्यः ,, चरण या शब्द समूह वाला, समूह या झुंड प्राप्त करने वाला।
आन्नः ४-४-८५—जिसको भोजन मिल गया हो।
वश्यः ४-४-८६—वश में रहने वाला, आश्रित, नौकर।
पद्यः, कर्दमः ४-४-८७—जिसमें पैर दिखाई पड़े, कीचड़, जो अत्यन्त सूखा न हो।

मूल्याः, मुद्गाः ४-४-८८—जड़ से उखाड़ी जाने वाली मूँग।
धेनुष्या ४-४-८९—बन्धक (गिरवीं) रक्खी गई गाय।
गार्हपत्योऽग्निः ४-४-९०—अग्नि होत्र के लिए गृहपति अग्नि।
नाव्यम् ४-४-९१—नौका से पार करने योग्य जल।
वयस्यः ,, समान वय वाला, मित्र।
धर्म्यम् ,, धर्म से प्राप्त करने योग्य।
विष्यः ,, जो विष देकर मारने योग्य हो।
मूल्यम् ,, जो मूलधन प्राप्त किया जा सके, कीमत।
मूल्यः ,, मूलधन से प्राप्त करने योग्य, वस्त्र आदि।
सीत्यं क्षेत्रम् ,, जो कूँड़ से नापा जा सके, खेत।
तुल्यम् ,, जो तराजू से नापा या तौला जा सके, समान, सदृश।
धर्म्यम् ४-४-९२—धर्मयुक्त।
पथ्यम् ,, लाभदायक भोजन।
अर्थ्यम् ,, उपयुक्त।
न्याय्यम् ,, समुचित।
छन्दस्यम् ४-४-९३—इच्छानुसार बनाया गया।
औरसः, उरस्यः ४-४-९४—सगा पुत्र।

हृद्यो देशः ४-४-९५—हृदय को प्रिय, मनोहर देश।
हृद्यो वशीकरणमन्त्रः ४-४-९६—दूसरों के हृदय को वश में करने वाला मंत्र।
मत्यम् ४-४-९७—ज्ञान प्राप्त करने का साधन।
जन्यः, ,, लोगों का कहना, किंवदन्ती।
हल्यः ,, जुता हुआ।
अग्र्यः ४-४-९८—आगे रहने या चलने में कुशल, अगुआ।
सामन्यः ,, सामवेद में निपुण, कुशल।
कर्मण्यः ,, काम करने में दक्ष।
शरण्यः ,, शरण देने में कुशल।
प्रातिजनीनः ४-४-९९—जो शत्रु का मुकावला करने में कुशल हो या प्रति व्यक्ति के लिए सज्जन हो।
सांयुगीनः ,, जो युद्ध में कुशल हो।
सार्वजनीनः ,, जो सब के लिए भला हो।
वैश्वजनीनः ,, जो संसार के लिए उत्तम हो।
भाक्ताः शालयः ४-४-१००—भात बनाने के लिए उपयुक्त, धान।
पारिषद्यः, पारिषदः ४-४-१०१—जो व्यवस्थापिका सभा के कार्यों में कुशल हो, मन्त्री।
काथिकः ४-४-१०२—कहानी कहने में निपुण।
गौडिक इक्षुः ४-४-१०३—गुड़ बनाने के लिए उपयुक्त, ईख।
साक्तुका यवाः ,, सत्तू बनाने के लिए उत्तम, यव।
पाथेयम् ४-४-१०४—यात्रा में लाभदायक, कलेवा, जलपान।
आतिथेयम् ,, अतिथि सत्कार।
वासतेयी ,, निवास के लिए उपयुक्त, रात्रि।
स्वापतेयं धनम् ,, स्वामी को लाभदायक, धन।
सभ्यः ४-४-१०५—सभा या समाज के लिए उपयुक्त, शिष्ट व्यक्ति।
सतीर्थ्यः ४-४-१०७—एक आचार्य के पास रहने वाला, सह छात्र।
समानोदर्यो भ्राता ४-४-१०८—एक ही उदर ( गर्भ ) में रहने वाला, सगा भाई।
सोदर्यः ४-४-१०९— ,, ,,

इति प्राग्घितीयप्रकरणम्।

# अथ छयतोरधिकारः

नभ्योऽक्षः ५-१-१, २—पहिये के मध्य के छिद्र के लिए उपयुक्त धुरी।
नभ्यमञ्जनम् ,, ,, ,, तेल या वेसलिन।
शून्यम्, शुन्यम् ,, कुत्ते के लिए उपयुक्त।
ऊधन्यः ,, कुआँ।
कम्बल्यम् ५-१-३—कम्बल बनाने के लिए उपयोगी, पाँच सेर ऊन।
कम्बलीया ऊर्णा ,, कम्बल बनाने के लिए उपयोगी ऊन।
आमिक्ष्यम्, आमिक्षीयं दधि ५-१-४—दही बनाने के लिए उपयोगी, जोरन।
पुरोडाश्यास्तण्डुलाः पुरोडाशीया वा ,, पुरोडाश बनाने के लिए उपयोगी चावल।
अपूप्यम्, अपूपीयम् ,, पुआ बनाने के लिए उपयुक्त।
वत्सीयो गोधुक् ५-१-५—बछड़े के लिए हितकारक दूध दुहने वाला।
शङ्कव्यं दारु ,, खूँटी बनाने के लिए उपयुक्त लकड़ी।

गव्यम् ५-१-५—गाय के लिए हितकारी।
हविष्यम् ,, हविष के लिए उपयुक्त।
दन्त्यम् ५-१-६—दाँतों के लिए हितकर।
कण्ठ्यम् ,, गले के लिए हितकर।
नस्यम् ,, नाक के लिए हितकर।
नाभ्यम् ,, नाभि के लिए हितकर।
शीर्षण्यः ६-१-६१—शिर के लिए हितकर।
शिरस्यति ,, सिर चाहता है।
शीर्षण्याः शिरस्या वा केशाः ,, सिर के लिए हितकर, बाल।
स्थौलशीर्षम् ,, स्थूल सिर वाले का, स्थूल सिर सम्बन्धी।
खल्यम् ५-१-७—खलिहान के लिए उपयुक्त।
यव्यम् ,, जौ के लिए उपयुक्त।
माष्यम् ,, उड़द के लिए उपयुक्त।
तिल्यम् ,, तिल के लिए उपयुक्त।
वृष्यम् ,, शक्ति बढ़ाने के लिए उपयुक्त, वीर्य-वर्द्धक।
ब्रह्मण्यम् ,, ब्राह्मण के लिए हितकर।
रथ्या ,, रथ के लिए उपयुक्त, सड़क।
अजथ्या यूथिः ५-१-८—बकरों के लिए हितकर, जूही।
अविथ्या ,, भेड़ों के लिए हितकर।
आत्मनीनम् ५-१-९, ६-४-१६९—अपने लिए हितकर।
विश्वजनीनम् ,, सब मनुष्यों के लिए उपयुक्त।
विश्वजनीयम् ,, मानव जाति के लिए हितकर।
पञ्चजनीनम् ,, पञ्चजन के लिए हितकर। पाँच प्रजाओं के लिए।
सार्वजनिकः ,, सब मनुष्यों के लिए हितकर।
सार्वजनीनः ,, ,, ,,
माहाजनिकः ,, महापुरुषों के लिए उपयुक्त।
मातृभोगीणः ,, माता के शरीर के लिये हितकारी
पितृभोगीणः ,, पिता ,,
राजभोगीनः ,, राजा ,,
आचार्यभोगीनः ,, आचार्य ,,

सार्वम्, सर्वीयम् ५-१-१०—सबके लिए लाभदायक।
पौरुषेयः ,, पुरुष का वध।
पौरुषेयः ,, पुरुषार्थ।
पौरुषेयः ,, पुरुषों का समूह।
पौरुषेयः ,, पुरुष का बनाया हुआ ग्रन्थ।
माणवीनम् ५-१-११—छोटे ( नवसिखुए ) छात्र के लिए हितकर।
चारकीणम् ,, चरक के लिए हितकर।
अङ्गारीयाणि काष्ठानि ५-१-१२—कोयला बनाने लिए उपयुक्त, लकड़ी।
प्राकारीया इष्टकाः ,, चहारदीवारी बनाने के उपयुक्त, ईंटें।
शङ्कव्यं दारु ,, खूँटी बनाने के लिए उपयुक्त लकड़ी।
छादिषेयाणि तृणानि ५-१-१३—छप्पर बनाने के लिए उपयोगी घास फूस।
बालेयास्तण्डुलाः ,, बलि के लिए उपयुक्त चावल।
औपधेयम् ,, पहिया अथवा आर के लिए उपयुक्त।
आर्षभ्यो वत्सः ५-१-१४—साँड़ बनाने के लिए उपयुक्त बछड़ा।
औपानह्यो मुञ्जः ,, जूता बनाने के लिए उपयुक्त मूँज।
औपानह्यं चर्म ,, ,, ,, चमड़ा।
वाध्र्यं चर्म ५-१-१५—ताँत बनाने के लिए ,, ,,
वारत्रं चर्म ,, ,, ,, ,,
प्राकारीया, इष्टकाः ५-१ १६—चहारदीवारी बनाने लिए पर्याप्त ईंटें।
प्रासादीयं दारु ५-१-१६—महल बनाने के लिए पर्याप्त लकड़ी।
प्राकारीयो देशः ,, चहारदीवारी ,, भूमि
पारिखेयी, भूमिः ५-१-१७—खाई बनाने के लिए ,,

इति छयतोरधिकारप्रकरणम्।

# अथ आर्हीयप्रकरणम्

नैष्किकम् ५–१–१८,१९,२० —निष्क ( स्वर्ण मुद्रा ) से खरीदा गया।

परमनैष्किकः ७–३–१७—उत्तम निष्क से खरीदा गया।

सुगव्यम् ,, सुन्दर गाय के लिए हितकारक।

यवापूप्यम् ,, जौ के पूओं के लिए उपयुक्त।

पारायणिकः ,, पारायण ( पाठ ) करने वाला।

द्वैपारायणिकः ,, दो पारायण करने वाला।

द्विशूर्पम् ,, दो शूर्प ( २॥ऽ ) से खरीदा गया।

द्विशौर्पिकम् ,, ,,

अर्धद्रौणिकम् ७–३–२६—आधे द्रोण ( ५ या साढ़े बारह सेर ) से खरीदा गया।

आर्धद्रौणिकम् ,, ,,

अर्धप्रास्थिकम् ७–३–२७—आधेप्रस्थ ( १० छटाक ) से खरीदा गया।

आर्धप्रास्थिकम् ,, ,,

अर्धकौडविकम् ,, आधे कुडव (सवा छटांक) से ,,

अर्धखारी ,, आधी खारी से प्राप्त या उत्पन्न ( १ खारी = ४ऽ चार मन )।

अर्धखारीभार्यः ,, जिसकी पत्नी दो मन देकर प्राप्त हुई हो।

शत्यम्, शतकम् ५–१–२१—सौ सुवर्ण मुद्राओं से खरीदा गया।

द्विशतकम् ,, दो सौ ,,

पञ्चकः ५–१–२२—पाँच सुवर्ण मुद्राओं से ,,

बहुकः ,, बहुतसी ,, ,,

साप्ततिकः ,, सत्तर ,, ,,

चात्वारिंशत्कः ,, चालीस ,, ,,

तावतिकः, तावत्कः ५–१–२३—उतनी ,,

विंशकः, विंशतिकः ५–१–२४—बीस मुद्राओं से खरीदा गया।

त्रिंशकः, त्रिंशतिकः ,, तीस ,,

कंसिकः ५–१–२५—कंस ( ५या ६½सेर से ,, खरीदी गयी।

कंसिकी ,, ,,

अर्धिकः ,, आधे कंस से खरीदा गया।

अर्धिकी ,, ,, खरीदी गयी।

कार्षापणिकः ,, कार्षाण से खरीदा गया।

कार्षापणिकी ,, ,, खरीदी गयी।

प्रतिकः ,, प्रति ( कार्षापण ) से खरीदा गया।

प्रतिकी ,, ,, खरीदी गयी।

सौर्पम् ५–१–२६—शूर्प ( ५० सेर ) से खरीदा गया।

शौर्पिकम् ,, ,,

शातमानम् ५–१–२७—शतमान ( १०० रत्ती की राजत या सौवर्ण मुद्रा ) से खरीदा गया।

वैंशतिकम् ,, बीस मासे के कार्षापण से खरीदा गया।

साहस्रम् ,, सहस्र कार्षापण से खरीदा गया।

वासनम् ,, वस्त्र से खरीदा गया।

अध्यर्धकंसम् ५–१–२८—चौथाई कंस ( ऽ१। सवा सेर ) से खरीदा गया।

द्विकंसम् ,, दो कंस ( १० सेर ) से खरीदा गया।

पांचकलापिकम् ,, पाँच कलाप ( अज्ञात ) से खरीदा गया।

अध्यर्धकार्षापणम् ५–१–२९—कार्षापण के चतुर्थ भाग से खरीदा गया।

द्विकार्षापणम् ,, दो कार्षापण से खरीदा गया।

द्विकार्षापणिकम् ,, ,, ,,

अध्यर्धप्रतिकम् ,, कार्षापण के चतुर्थ भाग से खरीदा गया।

द्विप्रतिकम् ५–१–२९—दो कार्षापण से खरीदा गया।
अध्यर्धसहस्रम् ,, हजार के चतुर्थ भाग से खरीदा गया।
अध्यर्धसाहस्रम् ,, ,, ,,
द्विसहस्रम्, द्विसाहस्रम् ,, दो हजार से खरीदा गया।
द्विनिष्कम्, द्विनैष्किकम् ५–१–३० – दो निष्क से खरीदा गया।
त्रिनिष्कम्, त्रिनैष्किकम् ,, तीन निष्क से खरीदा गया।
बहुनिष्कम्, बहुनैष्किकम् ,, बहुत निष्कों से खरीदा गया।
द्विविस्तम्, द्विवैस्तिकम् ५–१–३१—दो विस्त (१विस्त =८० रत्ती) से खरीदा गया।
अध्यर्धविंशतिकीनम् ५–१–३२—पाँच मासे के कार्षापण से खरीदा गया।
द्विविंशतिकीनम् ,, दो विंशतिक (२०मासे के दो कार्षपण) से खरीदा गया।
अध्यर्धखारीकम् ५–१–३३—खारी (४ऽ मन) के चतुर्थ भाग से खरीदा गया।
द्विखारीकम् ,, दो खारी (८ऽ मन) से खरीदा गया।
खारीकम् ,, खारी (४ऽ मन) से खरीदा गया।
अध्यर्धपाण्यम् ५–१–३४—पण (गड्डी) के चतुर्थ भाग। से खरीदा गया।
द्विपण्यम् ,, दो पण (गड्डी) से खरीदा गया।
अध्यर्धपाद्यम् ,, पाद (रजतकार्षापण) के चतुर्थ भाग से खरीदा गया।
द्विपाद्यम् ,, दो पाद से खरीदा गया।
अध्यर्धशाण्यम् ५–१–३५—शाण (१२॥ रत्ती की रजतमुद्रा) के चतुर्थभाग से खरीदा गया।
अध्यर्धशाणम् ,, ,,

द्वैशाणम्, द्विशाण्यम्, द्विशाणम् ५–१–३५—दो शाण से खरीदा गया।
गौपुच्छिकम् ५–१–३७—गाय से खरीदा गया।
साप्ततिकम् ,, ७० कार्षापण से खरीदा गया।
प्रास्थिकम् ,, प्रस्थ (१० छटाँक) से खरीदा गया।
नैष्किकम् ,, निष्क से खरीदा गया।
पञ्चगोणिः ५–१–५०—पाँच गोणी (१ गोणी = २॥ऽ मन) से खरीदा गया।

शत्यः शतिको वा-
धनपतिसंयोगः ५–१–३८—धनिक का संयोग सौ की प्राप्ति का कारण है।
शत्यंशतिकं वा दक्षिणाक्षिस्पन्दनम् ,, दाहिनी आँख का फड़कना सौ की प्राप्ति का कारण है।
वातिकम् ,, वात को शमन करना या दूषित करना।
पैत्तिकम् ,, पित्त को ,, ,,
श्लैष्मिकम् ,, कफ को ,, ,,
सान्निपातिकम् ,, सन्निपात ,, ,,
गव्यः ५–१–३९—गाय के निमित्त संयोग या शकुन।
धन्यः ,, धन के ,,
यशस्यः ,, यश के ,,
स्वर्ग्यः ,, स्वर्ग के ,,
वैजयिकः ,, विजय के ,,
पञ्चकम् ,, पाँच के ,,
सप्तकम् ,, सात के ,,
प्रास्थिकम् ,, प्रस्थ के ,,
खारीकम् ,, खारी के ,,
आश्विकम् ,, घोड़े के ,,
आश्मिकम् ,, पत्थर के ,,
ब्रह्मवर्चस्यम् ,, ब्रह्मतेज के ,,
पुत्रीयः, पुत्र्यः ५–१ ४०– पुत्र के ,,
सार्वभौमः ५–१–४१—समस्त भूमि का स्वामी ,,
पार्थिवः ,, पृथिवी का स्वामी ,,

सार्वभौमः ५-१-४२, ४३—समस्त पृथ्वी में ज्ञात ।
पार्थिवः ,, पृथ्वी में ज्ञात ।

लौकिकः ५-१-४४—संसार में प्रसिद्ध ।
सार्वलौकिकः ,, समस्त संसार में प्रसिद्ध ।
प्रास्थिकम् ५-१-४५—प्रस्थ ( दस छँटाक ) भर बीज बोने योग्य खेत ।
द्रौणिकम् ,, द्रोण ( १० सेर ) भर बीज बोने योग्य खेत ।
खारीकम् ,, खारी ( ४ मन ) भर ,,
पात्रिकम् ५-१-४६—पात्र ( ऽ२॥ सेर ) भर ,,
पात्रिकी ,, पात्र भर बीज ,, खेत का भाग ।

पञ्चकः ५-१-४७—पाँच कार्षापण प्रतिमास पाने वाला मजदूर, पाँच कार्षापण प्र० मा० सूद पाने वाला, आय या लाभ वाला । ,,

शतिकः, शत्यः ,, एक सौ कार्षापण ,, ,,
साहस्रः ,, एक हजार ,, ,,
पञ्चको देवदत्तः ,, देवदत्त जिसको पाँच प्रतिशत सूद आय अथवा लाभ होता हो ।

द्वितीयिकः ५-१-४८—जिस सौदे में दुबारा सूद, किराया, कर या घूस दिया जाय ।

तृतीयिकः ,, ,, तीसरी बार ,, ,,
अर्धिकः ,, ,, अठन्नी ,, ,,
भाग्यंभागिकम् शतम् ५-१-४९—जिस सौ कार्षापण ,,
भाग्याभागिका विंशतिः ,, जिस बीस कार्षापण में ,,

वांशभारिकः ५-१-५०—बाँस चुराने, ले जाने, ढोने या लाने वाला ।

ऐक्षुभारिकः ,, ईख ,, ,,
वांशिकः ५-१-५०—बाँस चुराता, ले जाता, ढोता या लाता है ।

ऐक्षुकः ,, ईख ,, ,,
वस्निकः ५-१-५१—पूँजी ,, ,,
द्रव्यकः ,, द्रव्य ,, ,,

प्रास्थिकः, कटाहः ५-१-५२—प्रस्थ ( १० छटाँक ) भर अँटने या पकने वाली कड़ाही ।

प्रास्थिकी ब्राह्मणी ,, प्रस्थ भर पकाने वाली ब्राह्मणी ।

द्रौणी, द्रौणिकी ,, द्रोण भर पकाने वाली ।
आढकीना, आढकिकी ५-१-५३—आढ़क (ऽ२॥ ढाई सेर ) भर पकाने या ले जाने वाली ।

आचितीना, आचितिकी ,, आचित ( २५ मन ) भर पकाने वाली ।

पात्रीणा, पात्रिकी ,, पात्र ( ऽ२॥सेर ) भर पकाने वाली ।

द्व्याढकिकी, द्व्याढकीना ५-१-५४—दो आढक पकाने वाली ।

द्व्याढकी ,, ,, ,,
द्व्याचितिकी, द्व्याचितीना ,, दो आचित पकाने वाली ।
द्व्याचिता ,, ,, ,,
द्विपात्रिकी, द्विपात्रीणा, ,, दो पात्र पकाने वाली ।
त्रिपात्री ,, तीन पात्र ,,
द्विकुलिजी, द्विकुलिजीना ५-१-५५—दो कुलिज ( ढाई पाव) पकाने वाली ।

द्विकुलिजिकी, द्वैकुलिजिकी ,, ,, ,,
पञ्चकः ५-१-५६—जिसका भाग, मूल्य या मजदूरी पाँच कार्षापण है ।

प्रास्थिको राशिः ५-१-५७—प्रस्थ भर का ढेर ।
पञ्चकाः शकुनयः ५-१ ५८—पाँच पक्षी ।
पञ्चकः ,, पाँच का समूह ।
अष्टकं पाणिनीयम् ,, पाणिनि को ८ अध्यायों वाली पुस्तक ।

पञ्चकमध्ययनम् ,, पाँच प्रकार से या पाँच बार पढ़ना ।
पञ्चदशस्तोमः ,, सोमयाग में पढ़े जाने वाले स्तुति के पन्द्रह मन्त्र ।

सप्तदशः ,, ,, सत्रह ,,
एकविंशः ,, ,, इक्कीस ,,

पंक्ति ५–१–५९, ६०—पाँच चरणों का एक छन्द, रेखा, परम्परा।
विंशतिः ,, बीस।
त्रिंशत् ,, तीस।
चत्वारिंशत् ,, चालीस।
पञ्चाशत् ,, पचास।
षष्टिः ,, साठ।
सप्ततिः ,, सत्तर।
अशीतिः ,, असी।
नवतिः ,, नव्वे।
शतम् ,, सौ।
पञ्चद्वर्गः ,, पाँच व्यक्तियों या वस्तुओं का समूह।
दशत् ,, दस ,, ,,
पञ्चकः ,, पाँच ,, ,,
त्रैंशानि ५–१–६२—तीस अध्यायों वाला ब्राह्मणग्रन्थ।
चात्वारिंशानि ,, चालीस ,, ,,
श्वैतच्छत्रिकः ५–१–६३—जो सफेद छाते का अधिकारी है।
छैदिको वेतसः ५–१–६४—सदा काटने योग्य वेत, क्यों कि काटने से वह बढ़ता है।
वैरागिकः ,, सदा वैराग्य का अधिकारी।
वैरङ्गिकः ,, ,, ,,

शीर्षच्छेद्यः, शैर्षच्छेदिकः ५–१–६५—सदा सिर काटने योग्य।
दण्ड्यः ५–१–६६—दण्ड पाने का अधिकारी।
अर्घ्यः ,, अर्घ पाने का अधिकारी।
वध्यः ,, वध किये जाने के योग्य।
पात्रियः, पात्र्यः ५–१–६८—पात्र पाने का अधिकारी।
कडङ्करीयः, कडङ्कर्यः ५–१–६९—डंठल (भूसा) पाने का अधिकारी, पशु।
दक्षिणीयः, दक्षिण्यः ,, दक्षिणा पाने का अधिकारी।
स्थालीविलीयाः,
स्थालीविल्यास्तण्डुलाः ५–१–७०—पात्र (पतली) के योग्य, पकाने योग्य चावल।
यज्ञियः५–१–७१—यज्ञका अधिकारी (यज्ञ में आदर पाने योग्य) ब्राह्मण।
आर्त्विजीनो यजमानः ,, यज्ञ में पुरोहित पाने का अधिकारी, यजमान।
यज्ञियो देशः ,, यज्ञ करने योग्य स्थान।
आर्त्विजीन ऋत्विक् ,, यज्ञ में पुरोहित पद का अधिकारी, ऋत्विक्।

इत्यार्हीयप्रकरणम्।

## अथ ठञधिकारे कालाधिकारः

पारायणिकश्छात्रः ५–१–७२—अध्यापक के निरीक्षण में वेदपाठ करने वाला छात्र।
तौरायणिको यजमानः ,, तुरायण नामक यज्ञ करने वाला यजमान।
चान्द्रायणिकः ,, चान्द्रायण व्रत करने वाला।
सांशयिकः ५–१–७३—संदेहास्पद।
यौजनिकः ५–१–७४—चार कोस जाने वाला।
क्रौशशतिकः ,, सौ कोस जाने वाला भिक्षु।
यौजनशतिकः ,, चार सौ कोस जाने वाला।

क्रौशशतिको भिक्षुः ,, सौ कोस से आने वाला भिक्षु।
यौजनशतिक आचार्यः ,, चार सौ कोश से आने वाला आचार्य।
पथिकः ५–१–७५—रास्ता चलने वाला।
पथिकी ,, रास्ता चलने वाली।
पान्थः ५–१–७६—सदा रास्ता चलने वाला।
पान्था ,, सदा रास्ता चलने वाली।
औत्तरपथिकम् ५–१–७७—उत्तर पथ से लाया गया।
औत्तरपथिकः ,, उत्तर पथ से जाने वाला।

वारिपथिकम् ४–१–७७—जल मार्ग ( प्रवाह ) से लाया गया।

आह्निकम् ५–१–७८,७९—एक दिन में समाप्त किया जाने वाला।

मासिकोऽध्यापकः ५–१–८०—महीने भर के लिए अवैतनिक नियुक्ति किया गया अध्यापक।

मासिकः, कर्मकरः ,, महीने भर के लिए मजदूरी पर नियुक्त किया गया मजदूर।

मासिको, व्याधिः ,, महीने भर से उत्पन्न रोग।

मासिकः, उत्सवः ,, महीने भर होने वाला उत्सव।

मास्यः, मासीनः ५–१–८१—महीने भर का।

द्विमास्यः ५–१–८२—दो महीने का।

षण्मास्यः, षाण्मास्यः, षाण्मासिकः ५–१–८३—छः महीने का।

षाण्मासिको व्याधिः, षाण्मास्यः ५–१–८४—छः महीने का रोग।

समीनः ५–१–८५—वर्ष भर के लिए सादर नियुक्त, मजदूरी पर नियुक्त, रहने वाला।

द्विसमीनः, द्वैसमिकः ५–१–८६—दो वर्ष के लिए ,,

द्विरात्रीणः, द्वैरात्रिकः ५–१–८७—दो रात के लिए ,,

द्व्यहीनः, द्वैयह्निकः ,, दो दिन के लिए ,,

द्विसंवत्सरीणः ,, दो वर्ष के लिए ,,

द्विसांवत्सरिकः ७–१–१५—दो वर्ष के लिए ,,

द्विषाष्ठिकः ,, एक सौ बीस वर्ष या मास के लिए ,,

द्विवर्षीणः, द्विवार्षिकः, द्विवर्षः ५–१–८८—दो वर्ष से रहने वाला रोग

द्विवार्षिको मनुष्यः ७–३–१६—दो वर्ष के लिए ,,

द्वैवर्षिकः ,, ,, ,,

द्विवार्षिको मनुष्यः ,, ,, ,,

द्विकौडविकः ८–३–१७—दो कुडव ( पाँच छटाँक ) चाहने वाला।

द्विसौवर्णिकम् ८–३–१७—दो सुवर्ण ( १६० गुंजा ) से खरीदा गया।

द्विनैष्किकम् ,, दो निष्क से खरीदा गया।

पाञ्चकपालिकम् ,, पाँच सकोरों में रखा गया।

पाञ्चकपालिकम् ,, ,,

द्वैशाणम् ,, दो शाण से खरीदा गया।

द्वैकुलिजिकः ,, दो कुलिज चाहने वाला।

द्विवर्षो दारकः ५–१–८९—दो वर्ष का बालक।

षष्ठिको धान्यविशेषः ५–१–९०—साठ रात में पकने वाला, साठी धान।

मासिको व्याधिः ५–१–९३—महीने भर में अच्छा होने वाला रोग।

मासिकम् ,, महीने भर में प्राप्त करने, करने या आसानी से करने योग्य।

मासिको ब्रह्मचारी ५–१–९४—महीने भर ब्रह्मचर्य रखने वाला ब्रह्मचारी।

अर्धमासिकः ,, आधा मास ,,

मासिकं ब्रह्मचर्यम् ,, महीने भर रहने वाला ब्रह्मचर्य।

माहानाम्निकः ,, महानाम्नी पर्यन्त सामवेद की ऋचाओं के पढ़ने का व्रती।

चातुर्मास्यानि यज्ञकर्माणि ,, चार महीने होने वाले यज्ञ के कर्म।

चातुर्मासी आषाढी ,, चार महीने के बाद होने वाली आषाढ की पूर्णिमा।

द्वादशाहिकी ५–१–९५—बारह दिन में किये जाने वाले द्वादशाह यज्ञ की दक्षिणा।

आग्निष्टोमिकी ५–१–९५—अग्निष्टोम यज्ञ की दक्षिणा।

वाजपेयिकी ,, वाजपेय यज्ञ की दक्षिणा।

प्रावृषेण्यम् ४–१–९६—वर्षाऋतु में दिया या किया जाने वाला।

शारदम् ,, शरद् ऋतु में ,,

इति कालाधिकारः।

## अथठञधिकारप्रकरणम्

वैयुष्टम् ५-१-९७—व्युष्ट ( श्रावण का पहिला दिन या प्रातःकाल में ) दिया या किया जाने वाला।

याथाकथाचम् ५-१-९८—अनादर से दिया या किया जाने वाला।

हस्त्यम् „ हाथ से „ „

कार्णवेष्टकिकं मुखम् ५-१-९९—कर्णभूषण के योग्य मुख।

कर्मण्यम् शौर्यम् ५-.-१००—कर्म से की जाने वाली शूरता।

वेष्यो नटः „ वेष बनाने से अच्छा लगने वाला, नट।

सान्तापिकः ५-१-१०१—संताप देने में समर्थ।

सांग्रामिकः „ युद्ध करने समर्थ।

योग्यः ५-१-१०२—योग के लिये समर्थ।

यौगिकः „ „

कार्मुकम् ५-१-१०३—काम करने के लिए समर्थ, धनुष।

सामयिकम् ५-१-१०४—जिसका समय आगया हो।

आर्तवम् ५-१-१०५—जिसका मौसम आ गया हो।

काल्यं शीतम् ५-१-१०७—जिसका समय आ गया हो।

कालिकं वैरम् ५-१-१०८—चिरकालीन शत्रुता।

ऐन्द्रमहिकम् ५-१-१०९—जिसका प्रयोजन इन्द्रोत्सव हो।

वैशाखो मन्थः ५-१-११०—मथनी, छोड़ी।

आषाढो दण्डः „ पलाश दण्ड।

चौडम् „ मुंडन।

श्राद्धम् „ श्रद्धा के कारण किया जाने वाला पितृकार्य।

अनुप्रवचनीयम् ५-१-१११—वेदाध्ययन समाप्ति के पश्चात् किया जाने वाला होम।

व्याकरणसमापनीयम् ५-१-११२—जिसका प्रयोजन व्याकरण के अध्ययन की समाप्ति हो।

ऐकागारिकश्चौरः ५-१-११३—जिसका लक्ष्य सूना मकान पाना हो, चोर।

आकालिकः ५-१-११४—क्षण भर रहने वाला, मेघ।

आकालिका विद्युत् „ क्षण भर रहने वाली बिजली, एक ही समय उत्पन्न तथा नष्ट होने वाली।

इति ठञधिकारप्रकरणम्।

## अथ भावकर्मार्थाः

ब्राह्मणवदधीते ५-१-११५—ब्राह्मण की तरह पढ़ता है।

पुत्रेण तुल्यः स्थूलः „ पुत्र के समान मोटा है।

मथुरावस्त्रुघ्ने प्राकारः ५-१-११६—मथुरा के समान स्रुघ्न में चहारदीवारी है।

चैत्रवन्मैत्रस्य गावः „ चैत्र की तरह मैत्र की गायें हैं।

विधिवत्पूज्यते ५-१-११७—विधिवत् ( देवता की तरह ) पूजा जाता है।

राजानमर्हति छत्रम् „ छाता राजा के योग्य हैं।

गोत्वम्, गोता ५-१-११९—गाय का स्वभाव।

स्त्रैणम्, स्त्रीत्वम् स्त्रीता ५-१-१२०—स्त्रियों का स्वभाव।

पौंस्नम्, पुंस्त्वम्, पुंस्ता „ पुरुषों का स्वभाव।

अपतित्वम् ५-१-१२१—जो स्वामी न हो उसका स्वभाव।

अपटुत्वम् „ जो पटु न हो उसका स्वभाव।

बार्हस्पत्यम् „ बृहस्पति का स्वभाव।

आपटवम् „ जिसके पास पटु न हो उसका स्वभाव।

आचतुर्यम् ५-१-१२१—जो चतुर न हो उसका स्वभाव।
आसङ्गत्यम् „ जो सङ्गत न हो उसका स्वभाव।
आलवण्यम् „ जो नमकीन न हो उसका स्वभाव।
आवट्यम् „ जो वट न हो उसका स्वभाव।
आयुध्यम् „ न लड़ने वाले का स्वभाव।
आकत्यम् „ जो कत (एक वृक्ष) न हो उसका स्वभाव।
आरस्यम् „ आलसी का स्वभाव।
आलस्यम् „ „
प्रथिमा, पार्थवम् ५-१-१२२, ६-४-१६१—भारीपन, मोटापन।
म्रदिमा, मार्दवम् „ कोमलता।
शौक्ल्यम्, शुक्लिमा ५-१-१२३—सफेदी।
दार्ढ्यम्, द्रढिमा „ मजबूती।
औचिती „ उपयुक्तता।
याथाकामी „ इच्छानुसार कार्य करना।
जाड्यम् ५-१-२४—जड़ता।
मौढ्यम् „ मूर्खता।
ब्राह्मण्यम् „ ब्राह्मण का स्वभाव या कर्म।
आर्हन्त्यम् „ पूजनीय का स्वभाव या कर्म।
आर्हन्ती „ „ „
आयथातथ्यम् ७-३-३१—ठीक ठीक न होना या रहना।
अयाथातथ्यम् „ „ „
आयथापुर्यम् „ पहिले की तरह न होना या रहना।
अयाथापुर्यम् „ „ „
चातुर्वर्ण्यम् „ चारों वर्ण।
चातुराश्रम्यम् „ चारों आश्रम।
त्रैस्वर्यम् „ तीनों स्वर (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित) ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।
षाड्गुण्यम् „ छहों गुण।
सैन्यम् „ सेना।

सान्निध्यम् ७-३-३१—समीप।
सामीप्यम् „ समीप।
औपम्यम् „ उपमा।
त्रैलोक्यम् „ तीनों लोक।
सर्ववेदः „ सभी वेदों का पढ़ने वाला।
सार्ववेद्यः „ „ „
चतुर्वेदः, चातुर्वैद्यः „ चारों वेदों का पढ़ने वाला।
स्तैन्यम्, स्तेयम् ५-१-१२५—चोरी, चोर का कर्म या स्वभाव।
सख्यम् ५-१-१२६—मित्र का स्वभाव या कर्म, मित्रता।
दूत्यम् „ दूत का स्वभाव या कर्म।
वाणिज्यम् „ बनिया का स्वभाव या कर्म व्यापारा, व्यपार।
कापेयम् ५-१-१२७—कपि (वानरों) का स्वभाव या कर्म।
ज्ञातेयम् „ जाति वालों का स्वभाव या कर्म।
सैनापत्यम् ५-१-१२८—सेनापति का स्वभाव या कर्म।
पौरोहित्यम् „ पुरोहित „
राज्यम् „ राजा „
आधिराज्यम् „ राज्य, गवर्नमेण्ट।
आश्वम् ५-१-१२९—घोड़े का स्वभाव या कर्म।
औष्ट्रम् „ ऊँट „
कौमारम् „ कुमार „
कैशोरम् „ किशोर „
औद्गात्रम् „ सामवेद के गाने वाले का स्वभाव या कर्म।
औन्नेत्रम् „ सोमरस उड़ेलने वाले „
सौष्ठवम् „ सुन्दरता, सज्जनता।
दौष्ठवम् „ अभद्रता, दुर्जनता।
द्वैहायनम् ५-१-१३०—दो वर्ष वाले का स्वभाव या कर्म।
त्रैहायनम् „ तीन वर्ष वाले „
यौवनम् „ युवा पुरुष का स्वभाव या कर्म, युवावस्था।
स्थाविरम् „ वृद्ध „ , बुढ़ापा।
श्रौत्रम् „ श्रोत्रिय का स्वभाव या कर्म।
कौशल्यम्, कौशलम् „ निपुणता।

शौचम् ५-१-१३१—पवित्रता ।

मौनम् ,, मुनि का स्वभाव या कर्म ।

काव्यम् ,, कवि का ,, , कविता ।

रामणीयकम् ५-१-.३२—सुन्दर व्यक्ति का स्वभाव या या कर्म ।

आभिधानीयकम् ,, संज्ञा, कोश या नाम का स्वभाव कर्म ।

साहाय्यम्, साहायकम् ,, सहायता ।

शैष्योपाध्यायिका ५-१-१३३—शिष्य तथा आचार्य का स्वभाव या कर्म ।

मानोज्ञकम् ,, सुन्दर व्यक्ति का स्वभाव या कर्म ।

गार्गिकया श्लाघते, अत्याकुरुते ५-१- ३४—गर्ग गोत्र का होने के कारण अपना बड़प्पन दिखाता है या दूसरों को तुच्छ समझता है ।

गार्गिकामवेत: ५-१-१३४—गर्ग गोत्र के स्वभाव या कर्म को प्राप्त अथवा उसको समझने वाला ।

अच्छावाकीयम् ५-१ १३५—अच्छावाक (ऋत्विग्विशेष ) का स्वभाव या कर्म ।

मैत्रावरुणीयम् ,, मित्रावरुण का स्वभाव या कर्म ।

ब्रह्मत्वम् ५-:-१३६—ब्रह्मा (ऋत्विग्विशेष) का स्वभाव या कर्म ।

ब्रह्मत्वम्, ब्रह्मता ,, — ब्राह्मण का स्वभाव या कर्म ।

इति भावकर्माधिकारः ।

## अथपाञ्चमिकाः

मौद्‌गीनम् ५-२-१—मूँग उत्पन्न होने वाला खेत ।

व्रैहेयम् ५-२-२—वकी धान ,,

शालेयम् ,, रोपधान ,,

यव्यम् ५-२-३—जौ ,,

यवक्यम् ,, यवक (एक प्रकार का धान) का खेत ।

षष्टिक्यम् ,, साठी धान उत्पन्न करने वाला खेत ।

तिल्यम् तैलीनम् ५-२-४—तिल ,,

माष्यम्, माषीणम् ,, उड़द ,,

उम्यम्, औमीनम् ,, अलसी ,,

भङ्ग्यम्, भाङ्गीनम् ,, पटुआ ,,

अणव्यम्, आणवीनम् ,, चीना ,,

सर्वचर्मीणः सार्वचर्मीणः ५-२-५—बिलकुल चमड़े से बना हुआ ।

यथामुखीनः ५-२-६—जिसमें मुख का प्रतिविम्ब दिखाई पड़े, दर्पण ।

संमुखीनः ,, जिसमें समस्त मुख दिखाई पड़े ।

सर्वपथीनः ५-२-७—जो समस्त मार्ग में व्याप्त हो या फैल जाय, रथ ।

सर्वाङ्गीणः ,, जो समस्त अङ्ग में व्याप्त हो या फैल गया हो, रोग आदि ।

सर्वकर्मीणः ,, जो समस्त कर्मो को करे ।

सर्वपात्रीणः ,, जो समस्त पात्रों में व्याप्त हो ।

सर्वपत्रीणः ,, जो समस्त सवारियों में व्याप्त हो, सारथी ।

आप्रपदीनः पटः ५-२-८—पैर के अग्रभागतक पहुँचने वाला वस्त्र ।

अनुपदीना उपानत् ५-२-९—समूचे पैर में अँटने वाला जूता ।

सर्वान्नीनो भिक्षुः ,, सब प्रकार के अन्न खाने वाला भिक्षु ।

आयानयीनःशारः ५–२–९—दाहिनी ओर से बाँई ओर गोटी की चाल को अय तथा बाँई ओर से दाहिनी ओर की चाल को अनय कहते हैं। अयानय उस खाने या घर को कहते हैं, जिसमें दोनों ओर से आई हुई गोटियाँ किसी से मारी न जा सकें। उस घर में ले जायी जाने वाली गोटी को अयानयीन कहते हैं।

परोवरीणः ५–२–१०—ऊँच नीच का अनुभव करने वाला।

परम्परीणः ,, ,, ,,

पुत्रपौत्रीणः ,, पुत्र तथा पौत्र का अनुभव करने वाला।

पारम्पर्यम् ,, परम्परा का अनुभव करने वाला।

अवारपारीणः ५–२–११—आर पार जाने वाला।

अवारीणः ,, इस पार ,,

पारीणः ,, उस पार ,,

पारावारीणः ,, आर पार ,,

अत्यन्तीनः ,, बहुत चलने वाला।

अनुकामीनः ,, इच्छानुसार ,,

समांसमीना गौः ५–२–१२—प्रति वर्ष बच्चा देने वाली गाय।

समां समां विजायते ,, प्रतिवर्ष बच्चा देने वाली।

समायां समायां वा ,, ,, ,,

अद्यश्वीना वडवा ५–२–१३—आजकल में बच्चा देने वाली घोड़ी।

अद्यश्वीनम्मरणम् ५–२–१३—आजकल में होने वाली मृत्यु, निकटवर्ती मृत्यु।

आगवीनः ५–२–१४—गायों के चरागाह से लौटने तक काम करने वाला मजदूर, दिन भर का मजदूर।

अनुगवीनः गोपालः ५–२–१५—गायों के पीछे चलने वाला, ग्वाला, चरवाहा।

अध्वन्यः अध्वनीनः ५–२–१६—यात्रा करने वाला।

अभ्यमित्रीयः, अभ्यमित्र्यः,

अभ्यमित्रीणः ५–२–१७—वीरता से शत्रु का सामना करने वाला योद्धा।

गौष्ठीनो देशः ५–२–१८—जो स्थान पहिले गोशाला रहा हो।

आश्वीनः अध्वा ५–२–१९—एक दिन में घोड़े के जाने योग्य मार्ग।

शालीनः अधृष्टः ५–२–२०—जो घर में घुस जाय, लज्जाशील।

कौपीनम् पापम् ,, कुएँ में गिरने योग्य, पाप।

व्रातीनः ५–२–२१—जो शारीरिक श्रम से जीवित रहे, बुद्धि की शक्ति से नहीं।

साप्तपदीनम् ५–२–२२—जो एक साथ सात पग चलने से या सात शब्द बोलने से सम्पन्न हो, मित्रता।

हैयङ्गवीनम् नवनीतम् ५–२–२३—जो बीते हुए कल के दूध से बना हो, नयनू।

पीलुकुणः ५–२–२४—पीलू नामक फलों का पकना।

कर्णजाहम् ,, कान की जड़।

पक्षतिः ५–२–२५—पंख की जड़।

विद्याचुञ्चुः ५–२–२६—विद्या से प्रसिद्ध, विख्यात।

विद्याचणः ,, ,, ,,

विना ५–२–२७—बगैर।

नाना ,, अनेक।

विस्तृतम् ५–२–२८—फैला हुआ।

विशालम् ,, बृहत्, बड़ा।

विशङ्कटम् ,, ,,

सङ्कटम् ५–२–२९—दुःख।

प्रकटम् ,, विदित, प्रत्यक्ष।

उत्कटम् ,, बढ़ा हुआ।

विकटम् ,, भयंकर।

अलाबूकटम् ,, लौके की धूल।

गोगोष्ठम् ,, गोशाला।

अविकटः ,, भेड़ों का झुंड।

अविपटः ५-२-२९—भेड़ों का विस्तार।
उष्ट्रोयुगम् ,, दो ऊँट।
वृषगोयुगम् ,, बैलों की जोड़ी।
अश्वषड्गवम् ,, छः घोड़े।
तिलतैलम् ,, तिल का तेल।
सर्षपतैलम् ,, सरसों का तेल।
इक्षुशाकटम् ,, ईख उत्पन्न होने वाला खेत।
इक्षुशाकिनम् ,, ,, ,,
अवकुटारः ५-२-३०—नीचे की ओर झुका हुआ, बहुत गहरा।
अवकटः ,, ,, ,,
अवटीटम् ५-२-३१—नाक का झुकना।
अवनाटम् ,, ,,
अवभ्रटम् ,, ,,
अवटीटा ,, झुकी नाक।
अवटीटः ,, झुकी नाक वाला।
निबिडम् ५-३-३२—नाक का झुकना।
निबिरीसम् ,, ,,
चिकिनम् ५-२-३३— ,,
चिपिटम् ,, ,,
चिक्कम् ,, ,,
चिल्लः ,, जिसकी आँख सदा गीली रहती हो।
पिल्लः ,, ,,
चुल्लः ,, ,,
उपत्यका ५-२-३४—पर्वत के पास की भूमि।
अधित्यका ,, पर्वत के ऊपर की भूमि।
कर्मठः पुरुषः ५-२-३५—काम करने में चतुर, निपुण
तारकितं नभः ५-२-३६—तारोंवाला (आकाश)
ऊरुद्वयसम् ,, जाँघभर (जल)
ऊरुदघ्नम् ,, ,,

शमः ५-२-३६—१४ अंगुल या एक हाथ।
दिष्टिः ,, १॥ फुट।
वितस्तिः ,, १२ अंगुल, एक बालिश्त।
द्विशमम् ,, दो हाथ या २८ अंगुल।
शममात्रम् ,, एक हाथ या १४ अंगुल भर।
प्रस्थमात्रम् ,, प्रस्थ भर।
पञ्चमात्रम् ,, पाँच भर।
तावद्द्वयसम् ,, उतना ही।
तावन्मात्रम् ,, उतनाही।
पौरुषम्, पुरुषद्वयसम् ८-२-३८—पोरसा (पोरसा नाप तीन प्रकार का होता है = ८४ अंगुल
९६ ,,
१०८ ,,

१६ अंगुल = १ फुट

हस्तिनम्, हस्तिद्वयसम् ,, १३॥ फुट लम्बा।
यावान् ५-२-३९—जितना।
तावान् ,, तितना।
एतावान् ,, इतना।
कियान् ५-२-४०—कितना।
इयान् ,, इतना।
कति, कियन्तः ५ २-४१—कितने।
का संख्या एषां दशानाम् ,, इन दसों की क्या संख्या है? (आक्षेप में)
पञ्चतयं दारु ५-२-४२—पाँच भाग वाली लकड़ी।
द्वयम्, द्वितयम् ५-२-४३—जोड़ा, दो।
त्रयम्, त्रितयम् ,, तीन।
उभयम् ५-२-४४—दोनों।

इति पाञ्चमिकाः।

## अथ मत्वर्थीयप्रकरणम्

एकादशम् ५–२–४५—ग्यारह अधिक सौ अथवा हजार। एक सौ या एक हजार ग्यारह।

एकादश अधिकाः

अस्यां विंशतौ ,, इस बीस में ग्यारह अधिक है।

एकादश माषा अधिका अस्मिन्सुवर्णशते ,, इस सौसुवर्ण में ग्यारह माशे अधिक है।

त्रिंशंशतम् ५–२–४६—तीस अधिक सौ, एक सौ तीस।

विंशम् ,, बीस अधिक सौ, एक सौ बीस।

द्विमयमुदश्विद्यवानाम् ५–२–४७—एक भाग मठे का मूल्य उसका दो भाग जौ।

द्वौव्रीहियवौ निमानमस्योदश्वितः ,, मठे का दूना जौ और धान उसका मूल्य।

द्वौ गुणौ क्षीरस्य एकस्तैलस्य,
द्विगुणं क्षीरं पच्यते तैलेन ,, तेल द्वारा उसका दुगुना दूध जलाया या पकाया जाता है।

एकादशः ५–२–४८—ग्यारहवाँ।

पञ्चमः ५–२–४९—पाँचवाँ।

विंशः ,, बीसवाँ।

एकादशः ,, ग्यारहवाँ।

षष्ठः ५–२–५०—छठा।

कतिथः ,, कौन सा।

कतिपयथः ,, बहुतों में से कौथा।

चतुर्थः ,, चौथा।

तुरीयः, तुर्यः ,, चौथा।

बहुतिथः ५–२–५२—बहुत बार।

यावतिथः ५–२–५३—जितनी बार।

द्वितीयः ५–२–५४—दूसरा।

तृतीयः –२–५५—तीसरा।

विंशतितमः विंशः ५–२–५६—बीसवाँ।

एकविंशतितमः ,एकविंशः ,,—इक्कीसवाँ।

शततमः ५–२–५७—सौवाँ।

एकशततमः ,, एक सौ एकवाँ।

मासतमः ,, महीने का अन्तिम दिन।

अर्धमासतमः ,, आधे महीने का अन्तिमदिन।

संवत्सरतमः ,, वर्ष का अन्तिम दिन।

षष्टितमः ५–२–५८—साठवाँ।

एकषष्टः, एकषष्टितमः ,, एकसठवाँ।

अच्छावाकीयसूक्तम् ५–२–५९—अच्छावाक् शब्द वाली ऋचा।

वारवन्तीयं साम ,, 'वरवन्तु' शब्द वाला साम।

गर्दभाण्डःगर्दभाण्डीयः ५–२–६०—गर्दभाण्डशब्द वाला अध्याय या अनुवाक।

वैमुक्तः ५–२–६१—विमुक्त शब्द वाला अध्याय या अनुवाक।

दैवासुरः ,, दैवासुर शब्द वाला अध्याय या ,,

गोषदकः ५–२–६२—गोषदशब्द ,, ,,

इषेत्वकः ,, इषेत्वाशब्द ,, ,,

पथकः ५–२–६३—यात्रा में कुशल।

आकर्षकः ५–२–६४—खींचने में उत्तम, तलवार की मूठ।

आकषः ,, कसने ( परखने ) में कुशल।

धनको देवदत्तस्य ५–२–६५—देवदत्त की धन इच्छा।

हिरण्यकः ,, सुवर्ण की इच्छा।

केशकः ५–२–६६—बालों को सँवारने में लीन।

औदरिकः ५–२–६७—भूख के कारण पेट सहलाने वाला।

उदरकः ,, पेट अधिक भर जाने से उसको सहलाने वाला।

सस्यकः साधुः ५–२–६८—गुणों से परिपूर्ण, सज्जन।

अंशको दायादः ५–२–६७—भाग लेने का अधिकारी, दायाद।

तन्त्रकःपटः ५–२–७०—करघे से तत्क्षण उतरा हुआ ( नवीन ) वस्त्र।

ब्राह्मणकः ५-२-७१—जिस देश में आयुधजीवी ब्राह्मण हों।
उष्णिका यवागूः ,, कम अन्नवाली लप्सी।
शीतको अलसः ५-२-७२—सुस्ती से काम करने वाला, आलसी।
उष्णकः शीघ्रकारी ,, शीघ्रता से काम करने वाला, फुर्तीबाज।
अनुकः ५-२-७३,७४—इच्छुक।
अभिकः अभीकः ,, प्रेमी, कामुक।
पार्श्वकः ५-२-७५—मायावी, जादूगर।
आयःशूलिकः ५-२-७६—साहस करने वाला।
दाण्डाजिनिकः ,, दूसरों को धोखा देने के लिए दण्ड तथा मृग चर्म धारण करने वाला।
द्वितीयकं द्विकं वा ग्रहणं देवदत्तस्य ५-२-७७—देवदत्त की दूसरी बार सफलतापूर्वक ज्ञान की प्राप्ति।
षट्को देवदत्तः ,, देवदत्त का छठी बार ज्ञान अथवा पुस्तक के ज्ञान की प्राप्ति।
पञ्चकः ,, पाँचवी ,,
देवदत्तकः ५-२-७८—जिनका नेता देवदत्त हो।
त्वत्कः ,, जिनके नेता तुम हो।
मत्कः ,, जिनका नेता मैं हूँ।
शृङ्खलकः करभः ५-२-७९—सिकड़ी से बाँधा जानेवाला हाथी का बच्चा।
उत्कः उत्कण्ठितः ५-२-८०—उत्सुक।
द्वितीयको ज्वरः ५-२-८१—दूसरे दिन आने वाला ज्वर।
विषपुष्पकः ,, विष पुष्प से होने वाला ज्वर।
उष्णकः ,, गर्मी पैदा करने वाला ज्वर।
द्वितीयो दिवसोऽस्य ,, इसका दूसरा दिन।
गुडापूपिका पौर्णमासी ५-२-८२—गुड़ के पूएवाली पूर्णिमा अर्थात् जिसपूर्णिमा का मुख्य भोजन गुड़ के पूए हों।
वटकिनी ,, जिस दिन का मुख्य भोजन, बड़ा हो।
कौल्माषी ५-२-८३—जिस दिन का मुख्य भोजन घुंघरी हो।
श्रोत्रियः ५-२-८४—वेद पढ़ने वाला।
छान्दसः ,, ,, ,,
श्राद्धी, श्राद्धिकः ५-२-८५ - श्राद्धान्न खाने वाला।
पूर्वी ५-२-८६--जिसने पहिले कुछ किया हो।
कृतपूर्वी कटम् ५-२-८७—जिसने पहले चटाई बनायी थी।
इष्टी ५-२-८८—जिसने यज्ञ किया।
अधीती ,, जिसने अध्ययन किया।
परिपन्थी ५-२-८९—विरोधी, शत्रु।
परिपरी ,, विरोधी शत्रु।
अनुपदी ५-२-९०—पीछे चलने वाला या ढूँढने वाला।
साक्षी ५-२-९१—प्रत्यक्ष देखने वाला।
क्षेत्रियो व्याधिः ५-२-९२—दूसरे शरीर में चिकित्सा के (शरीरान्तरे चिकित्स्यः) योग्य, जन्मान्तर में अच्छा होने वाला, रोग।
इन्द्रियम् ५-२-९३—इन्द्र (आत्मा) के बाह्यचिह्न इन्द्र से दृष्ट (अनुभूत)। इन्द्र से रचित (बनायी गयी), इन्द्र से जुष्ट (सेवित) इन्द्रने इन्द्रियों को अपने विषयों का भोग प्रदान किया।
गोमान् ५-२-९४—जिसके पास गाय या बैल हो।
रसवान् ५-२ ९५ —रसवाला, स्वादिष्ट।
रूपवान् ,, रूपवाला, सुन्दर।
स्ववान् ,, धनवाला, धनी।
विदुष्मान् १-४-१९—विद्वान् वाला।
शुक्लः पटः ,, सफेद कपड़ा।
कृष्णः ,, काला।
किंवान् ८-२-९—कुछ रखने वाला, क्या रखने वाला।
ज्ञानवान् ,, ज्ञान वाला।
विद्यावान् ,, विद्यावाला।
लक्ष्मीवान् ,, धनवाला।
यशस्वान् ,, कीर्तिवाला।
भास्वान् ,, तेज वाला।
यवमान् ,, जौ वाला।

भूमिमान् ८–२–९—भूमिवाला।
विद्युत्वान् ८–२–१०—बिजली वाला।
अहीवती ८–२–११—साँपोंवाली ( नदी विशेष )।
मुनीवती ,, मुनियों वाली ,,

आसन्दीवान् ग्रामः ८–२–१२—अहिस्थल नामक ग्राम।
आसनवान् ,, आसन वाला।
अष्ठीवान् ,, हड्डियों वाला ( ऋषि विशेष का नाम )।

अस्थिमान् ,, हड्डियों वाला कोई व्यक्ति।
चक्रीवान् नाम राजा ,, चक्र वाला ( नृप विशेष का नाम )।

चक्रवान् ,, चक्र वाला कोई व्यक्ति।
कक्षीवान् नाम ऋषिः ,, कमरों वाला (ऋषिविशेष का नाम )।

कक्ष्यावान् ,, कमरों वाला मकान।
रुमण्वान् नाम पर्वतः ,, नमक वाला ( रुमालूणी ) नदी के समीप का कोई पर्वत )।

लवणवान् ,, नमक वाला कोई व्यक्ति।
चर्मण्वती नाम नदी ,, चम्बल नदी।
चर्मवती ,, चमड़े वाली।

उदन्वान् समुद्रः ऋषिश्च ८–२–१३ —जलवाला समुद्र तथा एक ऋषि का नाम।

राजन्वती भूः ८–२–१४—उत्तम राजा वाली पृथ्वी।
राजवान् ,, राजा वाला देश।
चूडालः चूडावान् ५–२–९६—शिखा ( चोटी ) वाला।
शिखावान् दीपः ,, शिखा (लौ) वाला दीपक।
हस्तवान् ,, हाथ वाला।
मेधावान् ,, बुद्धिवाला।
सिध्मलः, सिध्मवान् ५–२–९७—कुष्ट रोग वाला।
वातूलः ,, वात रोग वाला।
वत्सलः ५–२–९८—प्रेम करने वाला, प्रिय।
अंसल ,, हृष्ट पुष्ट।
फेनिलः, फेनलः, फेनवान् ५–२–९९—फेन वाला।

लोमशः लोमवान् ५–२–१००—रोयें वाला।
रोमशः रोमवान् ,, ,,
पामनः ,, खुजली रोग वाला।
अङ्गना ,, सुन्दर अङ्गवाली, स्त्री।
लक्ष्मणः ,, लक्ष्मी (सौन्दर्य) वाला।
विषुणः ,, अनेक प्रकार से चलने वाला, पीछे मुख कर चलने वाला।

पिच्छिलः पिच्छवान् ,, चिकना, फिसलने वाला।
उरसिलः उरस्वान् ,, चौड़े वक्षःस्थल वाला।
प्राज्ञो व्याकरणे ५-२-१०१–बुद्धिमान्, व्याकरण शास्त्र में।
प्राज्ञा ,, बुद्धिमती।
श्राद्धः ,, श्रद्धा वाला।
आर्चः ,, पूजा वाला।
वार्त्तः ,, जीविका या व्यापार वाला।
तपस्वी ५–२–१०२—तप वाला।
सहस्री ,, हजार कार्षापण वाला।
तापसः ५–२–१०३—तप वाला।
साहस्रः ,, हजार कार्षापण वाला।
ज्यौत्स्नः ,, चाँदनी ( चन्द्रमा का प्रकाश ) वाला पक्ष।

तामिस्रः ,, अन्धकार वाला पक्ष।

सैकतः घटः ५–२–१०४—बालू वाला घड़ा।
शार्करः ,, कंकड़ियों वाला।

सिकताः, सिकतिलः, सैकतः,
रसिकतावान् ५–२–१०५—बालू वाला।
दन्तुरः ५–२–१०६—निकले दाँत वाला।
ऊषरः ५–२–१०७—खारी मिट्टी वाला।
सुषिरः ,, सूराख वाला।
मुष्करः ,, अंडकोष वाला।
मधुरः ,, मिठास वाला।
खरः ,, चौड़े गले वाला, गधा।
मुखरः ,, अधिक बोलने वाला।
कुञ्जरः ,, निकले हुए दाँत वाला हाथी।
नगरम् ,, पेड़ोंवाला, नगर।

पांसुरः ५–२–१०६—मिट्टी या धूल वाला ।
पाण्डुरः ,, सफेद वर्ण वाला ।
कच्छुरः ५–२–१०७—खौरहा, खाजरोग वाला ।
द्युमः ५–२–१०८—प्रकाश ।
द्रुमः ,, वृक्ष, शाखावाला ।
केशवः, केशी, केशवान् ५–२–१०९—बाल वाला ।
मणिवः नाग विशेषः ,, मणिवाला, सर्प विशेष ।
हिरण्यवो निधि विशेषः ,, सुवर्णवाला रत्न विशेष ।
अर्णवः ,, लहरोंवाला, समुद्र ।
गाण्डीवम् ५–२-११०—गाँठवाला, अर्जुन का धनुष ।
अजगवं पिनाकः ,, शंकर का धनुष ।
काण्डीरः ५–२–१११—बाण वाला ।
आण्डीरः ,, अंडोंवाला ।
रजस्वला ५–२–११२—रजोधर्मवाली ।
कृषीवलः ,, खेतीवाला, किसान ।
आसुतीवलः शौण्डिकः ,, शराब बनाने या बेचने वाला ।
परिषद्वलः ,, सभावाला ।
पर्षद्वलम् ,, ,, ,,
भ्रातृवलः ,, भाईवाला ।
पुत्रवलः ,, पुत्रवाला ।
शत्रुवलः ,, शत्रुवाला ।
दन्तावलो हस्ती ५–२–११३—दाँतवाला हाथी ।
शिखावलः केकी ,, चोटीवाला मोर ।
ज्योत्स्ना ५–२–११४—प्रकाशवाली, चाँदनी ।
तमिस्रा ,, अंधकार वाली, रात ।
तमिस्रम् ,, अंधकार वाला ।
श्रृङ्गिणः ,, सींगवाला ।
ऊर्जस्वी ,, शक्तिशाली ।
ऊर्जस्वलः ,, ,,
ऊर्जस्वती: ,, शक्तिशालिनी ।
गोमी ,, बैल या गायवाला ।
मलिनः ,, मैलवाला ।
मलीमसः ,, मैलवाला ।
दण्डी दण्डिकः ५–२–११५—दण्डवाला ।

व्रीही, व्रीहिकः ५-२–११६—धानवाला ।
तुन्दिलः तुन्दी तुन्दिकः तुन्दवान् ५–२– ११७—तोंदवाला ।
कर्णिलः कर्णी कर्णिकः कर्णवान् ,, बड़े कान वाला ।

ऐकशतिकः ५–२११८—एक सौ कार्षापण वाला ।
ऐकसहस्रिकः ,, एक हजार कार्षापण वाला ।
गौशतिकः ,, सौ गाय वाला ।
गौसहस्रिकः ,, हजार गाय वाला ।
नैष्कशतिकः ५–२–११९—एक सौ निष्क वाला ।
नैष्क सहस्रिकः ,, एक हजार निष्क वाला ।
रूप्यः कार्षापणः ५–२–१२०—जिस कार्षापण पर किसी राजा का आकार हो ।
रूप्यो गौः ,, सुन्दर रूपवाला बैल ।
रूपवान् ,, रूप वाला ।
हिम्याः पर्वताः ,, बर्फ वाले पहाड़ ।
गुण्याः ब्राह्मणाः ,, गुण वाले ब्राह्मण ।
यशस्वी यशस्वान् ५–२–१२१—कीर्ति वाला ।
मायावी मायी मायिकः ,, माया वाला, जादूगर ।
स्रग्वी ,, माला वाला ।
आमयावी ,, रोग वाला ।
श्रृङ्गारकः ,, सींग वाला ।
वृन्दारकः ,, झुंडवाला, देवता ।
फलिनः ,, फलवाला ।
बर्हिणः ,, पूँछवाला, मोर ।
हृदयालुः, हृदयी ,, प्रशस्त हृदय वाला ।
हृदयिकः हृदयवान् ,,
शीतालु ,, शीत न सहने वाला ।
उष्णालुः ,, गर्मी न सहने वाला ।
तृप्रालुः ,, पुरोडाश या कष्ट, पीड़ा न सहने वाला ।
हिमेलुः ,, हिम न सहने वाला ।
बलूलः ,, बल न सहने वाला ।
वातूलः ,, वात न सहने वाला या वात समूह, बवंडर ।
पर्वतः, मरुतः ,, पहाड़, हवा ।
ऊर्णायुः ५–२–१२३— ऊन वाला ।

वाग्मी ५-२-१२४—उपयुक्त और अधिक बोलने वाला।
वाचालः ५-२-१२५—व्यर्थ बहुत बोलने वाला, बकवादी।
वाचाटः ,, ,,
वाग्मी ,, वावदूक, खूब बोलने वाला।
स्वामी ५-२-१२६—ऐश्वर्य वाला।
अर्शसः ५-२-१२७—बवासीर वाला।
कटकवलयिनी ५-२-११८—कंकण तथा बिगायठ वाली।
शङ्खनूपुरिणी ,, शंख और नूपुर वाली।
कुष्ठी ,, गलित कुष्ठ वाला।
किलासी ,, श्वेत कुष्ठ वाला।
ककुदावर्ती ,, कंधे पर चक्र ( भौंरी ) वाला।
काकतालुकी ,, कौए की तरह तालु वाला।
पुष्पफलवान् घटः ,, फूलफल वाला घड़ा।
पाणिपादवती ,, हाथ पैर वाली।
चित्रकललाटिकावती ,, तिलक तथा ललाट के आभूषण वाली।
वातकी ५-२-१२९—वातरोग वाला।
अतीसारकी ,, अतीसार रोग वाला।
वातवती गुहा ,, हवा वाली गुफा।
पिशाचकी ,, पिशाचों वाले ( कुबेर )।
पञ्चमी उष्ट्रः ,, पाँच महीने या पाँच वर्ष का ऊँट।
पञ्चमवान् ग्रामः ,, पञ्चम स्वर वाला ग्राम राग।
सुखी ५-२-१३—सुखवाला।
दुःखी ,, दुःखवाला।
माली ,, माला धारण का अधिकारी न होते हुए माला वाला।
ब्राह्मणधर्मी ५-२-१३२—ब्राह्मणों के धर्म वाला।
ब्राह्मणशीली ,, ब्राह्मण स्वभाव या चरित्र वाला।
ब्राह्मणवर्णी ५-२-१३५—ब्राह्मण वर्ण वाला।
हस्ती ५-२-१३३—हाथ ( सूंड ) वाला हाथी।
हस्तवान् पुरुषः ,, हाथ वाला पुरुष।
वर्णी ५-२-१३४—ब्रह्मचारी।
पुष्करिणी ५-२-१३५—तालाब, बावली।
पद्मिनी ,, ,,
पुष्करवान् करी ,, सूँड वाला हाथी।
बाहुबली ,, बाहुबल वाला।
ऊरुबली ,, जाँघ के बलवाला।
सर्वधनी ,, सब प्रकार के धन वाला।
सर्वबीजी ,, सब प्रकार के बीज वाला।
अर्थी ,, धन चाहने वाला, जिसके पास धन न हो।
अर्थवान् ,, धन वाला।
धान्यार्थी ,, अन्न चाहने वाला।
हिरण्यार्थी ,, सुवर्ण चाहने वाला।
बलवान्, बली ५-२-१३६—बलवाला।
उत्साहवान्, उत्साही ,, उत्साह वाला।
प्रथिमिनी ५-२-१३७—स्थूलता वाली।
दामिनी ,, बिजली।
होमिनी ,, हवन करने वाली।
सोमिनी ,, सोमरस वाली।
सोमवान् ,, सोमरस वाला।
कँव्व, कंभः, कँय्युः, कंतिः,
कंतुः, कंतः, कँय्यः ५-२-१३८—जलवाला या सुख वाला।
शँव्वः, शंभः, शँयुः,
शंतिः, शंतुः, शंतः, शँय्यः ,, सुख वाला।
तुन्दिभः ५-२-१३९—तोंद वाला।
वलिभः, वटिभः, वलिनः ,, त्रिवली वाला।
अहंयुः ५-२-१४०—घमंडी, अभिमानी।
शुभंयुः ,, कल्याण वाला।

इति मत्वर्थीयप्रकरणम्।

# अथ प्राग्दिशीयप्रकरणम्

कुतः,कस्मात् ५-३-१, २, ३, ४, ५,
६, ७, ७-२-१०४—किससे, कहाँ से किस कारण से।
यतः ,, क्योंकि, जिससे, जिस कारण से।
ततः ,, इसलिए, इससे, इस ,,
अतः ,, ,, ,,
इतः ,, यहाँ से, इधर से।
अमुतः ,, यहाँ से।
बहुतः ,, बहुतों से, अनेक स्थानों से।
परितः ५-३-८,९—चारों ओर से।
अभितः ,, दोनों ओर।
कुत्र ५-३-१०—कहाँ।
यत्र ,, जहाँ।
तत्र ,, वहाँ।
बहुत्र ,, बहुत स्थानों में।
इह ५-३-११—यहाँ।
क्व, कुत्र ५-३-१२; ७-२-१०५—कहाँ।
कुह ५-३-१३—कहाँ ( वैदिक प्रयोग )।
एतस्मिन् ग्रामे सुखं वसामः २-४-३३—हम इस ग्राम में सुख से रहते हैं।
अतोऽत्राधीमहे ,, इसलिए हमें यहाँ पढ़ने दो।
अतो न गन्तारः स्मः ,, हम लोग यहाँ से न जायँगे।
स भवान् ५-३-१४—परम माननीय आप।
ततो भवान् ,, ,,
तत्र भवान् ,, ,,
तं भवन्तम् ,, ,, आपको।
ततो भवन्तम् ,, ,,
तत्र भवन्तम् ,, ,,
स दीर्घायुः ,, वह बड़ी आयु वाले।

देवानां प्रियः ,, देवताओं का प्रिय।
आयुष्मान् ,, लम्बी आयु वाला।
सदा, सर्वदा ५-३-१५—हमेशा।
एकदा ,, एक बार।
अन्यदा ,, दूसरी बार।
यदा ,, जब।
कदा ,, कब।
तदा ,, तब।
सर्वत्र देशे ,, सारे देश में।
एतर्हि ५-३-१६—इस समय।
इह देशे ,, इस देश में।
अधुना ५-३-१७—अब।
इदानीम् ५-३-१८—इस समय।
तदा, तदानीम् ५-३-१९—तब, उस समय।
कर्हि, कदा ५-३-२१—कब।
यर्हि, यदा ,, जब।
तर्हि, तदा ,, तब।
एतर्हि ,, इस समय।
सद्यः ५-३-२२—उसी दिन, तत्क्षण।
परुत् ,, गत वर्ष।
परारि ,, गतवर्ष के पहले वर्ष।
ऐषमः ,, इस वर्ष।
परेद्यवि ,, दूसरे दिन।
अद्य ,, आज।
पूर्वेद्युः ,, पहले दिन।
अन्येद्युः ,, दूसरे दिन।
उभयेद्युः, उभयद्युः ,, दोनों दिन।
तथा ५-३-२३—उस प्रकार से।
यथा ,, जिस प्रकार से।
इत्थम् ५-३-२४—इस प्रकार से।
कथम् ५-३-२५—किस प्रकार से, क्यों, कैसे।

इति प्राग्दिशीयप्रकरणम्।

# अथ प्रागिवीयप्रकरणम्

पुरः, पुरस्तात् ५–३–२७,३९,४०—पूर्व की ओर, पूर्व से पहले, पूर्वकाल में, सामने ।

अधः, अधस्तात् „ नीचे की ओर, नीचे से, नीचे ।

अवः, अवस्तात् „ वाहर की ओर, वाहर से, वाहर ।

अवस्तात्, अवरस्तात् ५–३–४१— „

ऐन्द्र्यां वसति „ वह पूर्व दिशा में रहता हैं ।

पूर्वं ग्रामं गतः „ पूर्व के गाँव में गया ।

पूर्वस्मिन् गुरौ वसति „ पहले के गुरु के यहाँ रहता है ।

दक्षिणतः ५-३-२८—दक्षिण की ओर, दक्षिण से, दक्षिण

उत्तरतः „ उत्तर „ उत्तर से, उत्तर ।

परतः ५–३–२९—आगे „ आगे से, आगे ।

अवरतः „ वाहर „ वाहर से, वाहर ।

परस्तात् „ आगे „ आगे से, आगे ।

अवरस्तात् „ बाहर „ वाहर से, वाहर ।

प्राक् ५–३–३०—पूर्वकी ओर पूर्व से, पूर्व ।

उदक् „ उत्तर की ओर, उत्तर से, उत्तर ।

उपरि उपरिष्टाद्वा वसति, आगतः,रमणीयंवा ५–३–३१—ऊपर को ओर रहता है, ऊपर से आया हैं, ऊपर मनोहर है ।

उत्तरात् ५–३–३४—उत्तर की ओर, उत्तर से, उत्तर ।

अधरात् „ नीचे की ओर, नीचे से, नीचे ।

दक्षिणात् „ दक्षिण की ओर दक्षिण से दक्षिण ।

उत्तरेण ५–३–३५—पासही उत्तर की ओर ।

अधरेण „ पासही नीचे की ओर ।

दक्षिणेन „ पासही दक्षिण की ओर

पूर्वेण ग्रामम् ५–३–३५—गाँव के समीप ही पूर्व की ओर ।

अधरेण ग्रामम् „ गाँव के समीप ही नीचे की ओर ।

दक्षिणा वसति ५–३–३६—दक्षिण दिशा में रहता है ।

दक्षिणादागतः „ दक्षिण दिशा से आया है ।

दक्षिणाहि-दक्षिणा ५–३–३७—दूर दक्षिण में या दूर दक्षिण दिशा ।

उत्तराहि, उत्तरा ५–३–३८—दूर उत्तर दिशा में या दूर उत्तर दिशा ।

चतुर्धा ५–३–४२—चार प्रकार से ।

पञ्चधा „ पाँच प्रकार से ।

एकं राशिं पञ्चधा कुरु ५–३–४३—एक ढेर को पाँच में बाँटो ।

ऐकध्यम्, एकधा ५–३–४४—एक प्रकार से ।

द्वैधम्, द्विधा ५–३–४५—दो प्रकार से ।

त्रैधम्, त्रिधा „ तीन प्रकार से ।

पथि द्वैधानि „ मार्ग में दो प्रकार ।

द्वेधा ५–३–४६—दो प्रकार से ।

त्रेधा „ तीन प्रकार से ।

भिषक्पाशः ५–३–४७—तुच्छ या बुरा वैद्य ।

द्वितीयः ५–३–४८—दूसरा ।

तृतीयः „ तीसरा ।

द्वैतीयीकः, द्वितीयः „ दूसरा ।

तार्तीयीकः, तृतीयः „ तीसरा ।

द्वितीया „ दूसरी ( विद्या ) ।

तृतीया „ तीसरी ( विद्या )

चतुर्थः ५-३-४९—चौथा ।

पञ्चमः „ पाँचवां ।

षाष्ठः, षष्ठः ५–३–५०—छठा ।

आष्टमः, अष्टमः „ आठवाँ ।

षष्ठः, षाष्ठः षष्ठकः ५–३–५१—एक ग्रेन ( मान) का छठा भाग ।

अष्टमः आष्टमः „

अष्टमः „ पशु के अंग का आठवाँ भाग ।

एकः, एकाकी, एकक:५-३-५२—अकेला ।
आढ्यचरः ५-३-५३—पूर्वकाल का धनी ।
कृष्णरूप्यः, कृष्णचरः ५-३-५४—पूर्वकाल में (पहले का) कृष्ण का।
शुभ्रारूप्यः ,, पूर्वकाल में शुभ्रानाम की स्त्री का ।
आढ्यतमः ५-३-५५—सबलोगों में अधिक सम्पन्न, धनी ।
लघिष्ठः, लघुतमः ,, सबसे छोटा ।
किन्तमाम् ५-३-५६, ५-४-११, १-१-२२—कितना अधिक ।
प्राह्णेतमाम् ,, बिलकुल पूर्वाह्न में ।
पचतितमाम् ,, वह अत्युत्तम पकाता है ।
उच्चैस्तमाम् ,, बहुत ऊँचे से या बहुत जोर से ।
उच्चैस्तमस्तरुः ,, सबसे ऊँचा वृक्ष ।
लघुतरः, लघीयान् ५-३-५७—दोनों में छोटा ।
पटुतराः, पटीयांसः–
उदीच्याः प्राच्येभ्यः ,, उत्तरीय जन पूर्वीय जनों की अपेक्षा निपुण होते हैं।
प्रथिष्ठः, प्रथीयान् ,, सबसे बड़ा ।
पाचकतरः ५-३-५८—दोनों में अच्छा पकाने वाला ।
पाचकतमः ,, सब में अच्छा पकाने वाला ।
करिष्ठः ६-४-१५४—सबसे बढ़कर काम करने वाला ।
दोहीयसी धेनुः ,, अधिक दूध देने वाली गाय ।
श्रेष्ठः, श्रेयान् ५-३-६० ६-४-१६३—सबसे बड़ा ।
ज्येष्ठः, ज्यायान् ५-३-६१, ६२—सबसे बड़ा ।
ज्येष्ठः ज्यायान् ६-४-१६०—सबसे वृद्ध ।
नेदिष्ठः नेदीयान् ५-३-६३—सबसे समीप ।
साधिष्ठः साधीयान् ,, सबसे शक्ति शाली ।
स्थविष्ठः ६-४-१५६—सबसे मोटा ।
दविष्ठः ,, बहुत दूर ।
यविष्ठः ,, सबसे छोटा ।
ह्रसिष्ठः ,, सबसे छोटा ।
क्षेपिष्ठः ,, सबसे शीघ्र ।
क्षोदिष्ठः ,, सबसे छोटा ।
ह्रसिमा ,, छोटाई ।
क्षेपिमा ,, शीघ्रता ।
क्षोदिमा ६-४-१५६—छोटाई ।
प्रेष्ठः ,, सबसे प्रिय ।
स्थेष्ठः ,, सबसे स्थिर ।
स्फेष्ठः ,, सबसे अधिक ।
वरिष्ठः ,, सबसे श्रेष्ठ, सर्वोत्तम ।
बंहिष्ठः ,, सबसे अधिक ।
गरिष्ठः ,, सबसे बड़ा ।
वर्षिष्ठः ,, सबसे वृद्ध ।
त्रपिष्ठः ,, सबसे शीघ्र ।
द्राघिष्ठः ,, सबसे शीघ्र ।
वृन्दिष्ठः ,, सबसे बड़ा झुंड ।
प्रेयान्, प्रेमा ,, सबसे प्रिय ।
भूमा, भूयान् ६-४-१५८—सबसे अधिक ।
भूयिष्ठः ६-४-१५९—सबसे अधिक ।
कनिष्ठः, कनीयान् ५-३-६४—सबसे छोटा ।
यविष्ठः ,, सबसे छोटा ।
अल्पिष्ठः ,, सबसे कम ।
स्रजिष्ठः, स्रजीयान् ५-३-६५—सबसे अधिक माला वाला ।
त्वचिष्ठः, त्वचीयान् ५-३-६५—सबसे अधिक त्वचा वाला ।
पटुरूपः ५-३-६६—प्रसिद्ध या विख्यात कलाकार या निपुण ।
पचतिरूपम् ,, पकाने में प्रसिद्ध ।
यशःकल्पम् ५-३-६७—साधारण कीर्ति ।
यजुष्कल्पम् ,, अधूरा यजुर्वेद ।
विद्वद्देश्यः, विद्वद्देशीयः, विद्वत्कल्पः ,, साधारण विद्वान् ।
पचतिकल्पम् ,, साधारण पकाने वाला ।
बहुपटुः, पटुकल्पः ५-३-६८—साधारण निपुण ।
यजतिकल्पम् ,, साधारण यज्ञ करने वाला ।
पटुजातीयः ५-३-६९—निपुण व्यक्ति समझा जाने वाला ।
अश्वकः ५-३-७०, ७१, ७२, ७३—किसका घोड़ा ?
उच्चकैः ,, क्या ऊँचा है ?
नीचकैः ,, क्या नीचा है ?
सर्वके ,, क्या यह सबको स्वीकार है ?

विश्वके ५-३-७४—क्या यह संसार को स्वीकार है ?
युवकयोः ,, क्या तुम दोनों का ?
आवकयोः ,, क्या हम दोनों का ?
युष्मकासु ,, क्या तुम लोगों में ?
अस्मकासु ,, क्या हम लोगों में ?
युष्मकाभिः ,, क्या तुम लोगों से ?
अस्मकाभिः ,, क्या हम लोगों से ?
त्वयका ,, क्या तुम से ?
मयका ,, क्या मुझसे ?
तूष्णीकामास्ते ,, वह चुपचाप बैठा है ?
तूष्णीकः ,, मौन, अल्पभाषी।
पचतकि ,, क्या वह पकाता है ?
जल्पतकि ,, क्या वह बोलता है ?
धकित् ,, धिक्कार।
हिरकुत् ,, दूर, अलग, परोक्ष।
अश्वकः ५-३-७४—खराब सुस्त घोड़ा।
शूद्रकः ५-३-७५—खराब शूद्र।
राधकः ,, निन्दित सूत।
पुत्रकः ५-३-७६—दयनीय पुत्र, छोटा पुत्र।
हन्त ते धानकाः ५-३-७७—बेटा, तुम्हारे लिये भुने जौ हैं।
गुडकाः ,, ,, गुड़ हैं।
एहकि ,, बेटा आओ।
अद्धकि ,, ,, भोजन करो।
देविकः, देवियः, देविलः,
देवदत्तकः ५-३-७८, ७९, ८३—प्रिय देवदत्त, अतिपरिचय के कारण देवदत्त के नाम।
वायुकः, वायुदत्तकः ,, प्रेम तथा परिचय के कारण वायुदत्त के नाम।
वायुकः ,, ,, ,,
पितृकः ,, अतिप्रिय पिता।
बृहस्पतिकः ५-३-७९—प्रिय बृहस्पति दत्त।
देवदत्तकः, देवकः ,, प्रिय देवदत्त।
दत्तिकः, दत्तियः, दत्तिलः, दत्तकः ,, प्रिय तथा अति परिचित देवदत्त।

देवदत्तः, दत्तः, देवः ५-३-७९—प्रिय तथा अति परिचित देवदत्त।
सत्यभामा, भामा, सत्या ,, ,, सत्यभामा।
भानुदत्तः, भानुलः ,, ,, भानुदत्त।
सवित्रियः, सवितृलः ,, ,, सविता।
उपडः, उपकः, उपियः, उपिलः, उपिकः
उपेन्द्रदत्तकः ५-३-८०—प्रिय तथा अति परिचित उपेन्द्रदत्त।
सिंहकः ५-३-८१—प्रिय तथा परिचित किसी मनुष्य का नाम।
शरभकः ,, ,, ,,
रासभकः ,, ,, ,,
कहोडः ,, ,, ,,
कहिकः ,, ,, ,,
वागाशीर्दत्तः ,, ,, ,,
वाचिकः ,, ,, ,,
षडङ्गुलिदत्तः, षडिकः ,, ,, ,,
शेवलिकः, शेवलियः, शेवलिलः ५-३-८४—,,
सुपरिकः ,, ,,
विशालिकः ,, ,,
वरुणिकः ,, ,,
अर्यमिकः ,, ,,
व्याघ्रकः ५-३-८२—व्याघ्राजिन का नाम।
सिंहकः ,, सिंहा जिनका नाम।
तैलकम् ५-३-८५—थोड़ा तेल।
वृक्षकः ५-३-८६—छोटा पेड़।
वंशकः ५-३-८७—छोटा बाँस (बाँसिन)।
वेणुकः ,, ,, ,,
कुटीरः ५-३-८८—छोटी झोपड़ी।
शमीरः ,, छोटा शमी वृक्ष।
शुण्डारः ,, शुण्डा (वृक्ष विशेष) छोटा शुण्डा।
कुतुपः ५-३-८९— छोटी कुप्पी (तेल रखने के लिए चर्मपात्र)।
कासूतरी ५-३-९०—छोटा भाला।
गोणीतरी ,, छोटी बोरी।

वत्सतरः ५–३–९१—दुबला पतला छोटा बछड़ा।
उक्षतरः „ दुबला बैल।
अश्वतरः „ दुबला घोड़ा।
ऋषभतरः „ दुर्बल बैल जो बोझ न ढो सके।
कतरो वैष्णवः, कः ५–३–९२—दोनों में कौन वैष्णव।
यतरः, यः „ दोनों में से जो।
ततरः, सः „ दोनों में से वह।
कतमो भवतां कठः ५–३–९३—आप लोगों में कठशाखा का कौन है।
यतमः „ „ „ जो „
ततमः ५–३–९३—आप लोगों में कठशाखा का वह है।
यकः, यः „ „ „ जो „
सकः, सः „ „ „ वह „
कतरः „ आपदोनों में कठ शाखा का कौन है।
अनयोरेकतरो मैत्रः ५–३–९४—इन दोनों में एक मैत्र है।
एषामेकतमः „ इन सबमें एक।
व्याकरणकः ५–३–९५—केवल व्याकरण पढ़कर गर्व करने वाला।

इति प्रागिवीयप्रकरणम्।

## अथ स्वार्थिकप्रकरणम्

अश्वकः ५–३–९६—लकड़ी या मिट्टी की घोड़े की प्रतिमा।
गवयः „ गाय के आकार की नील गाय।
अश्वकः ५–३–९७—घोड़े के आकार का कोई पशु या वस्तु।
उष्ट्रकः „ ऊँट „ „ „
चञ्चा ५–३–९८—घासफूस का बना हुआ मनुष्य का आकार।
वध्रिका „ चमड़े का „ „ „
वासुदेवः ५–३–९९—जीविकोपार्जन के लिए ( विक्रय के लिए नहीं ) कृष्ण की मूर्ति।
शिवः „ „ „ शिव „
स्कन्दः „ „ „ स्कन्द „
हस्तिकान् विक्रीणीते „ हाथी की मूर्तिको वेचता है।
देवपथः ५–३–१००—देवों के मार्ग की आकृति।
हंसपथः „ हंसों „ „
वास्तेयम् ५–३–१०१—उदर की तरह।
वास्तेयी „ „
शिलेयम् ५–३–१०२—पत्थर की तरह ( दही आदि )।
शैलेयम् „ „
शाख्यः ५–३–१०३—शाखा की तरह।
मुख्यः „ मुख की तरह, प्रधान।
जघन्यः „ जंघा की तरह, घृणित, नीच।
शरण्यः „ शरण की तरह, शरण देने वाला।
अग्र्यः „ आगे की तरह, प्रधान।
द्रव्यम् अयं ब्राह्मणः ५–३–१०४—यह ब्राह्मण कैसा अच्छा, उत्तम है।
कुशाग्रीया बुद्धिः ५–३–१०५—कुश के अग्रभाग की तरह तेज बुद्धि।
काकातालीयो देवदत्तस्य वधः ५–३,१०६—जिस प्रकार कौआ अकस्मात् ताड़के फल के गिरने से मर जाता है उसी प्रकार चोर के मिलने से देवदत्त का बध।
अजाकृपाणीयः „ अकस्मात् तलवार के गिरने से बकरी की मृत्यु के समान चोर द्वारा किसीका बध।
शार्करम् ५–३–१०७—कंकड़ी की तरह।
अङ्गुलिकः ५–३–१०८—उँगली कीं तरह।
भारुजिकः „ गीदड़ की तरह या भुने हुए जौ की तरह।

एकशालिकः, ऐकशालिकः ५-३-१०९—एक कमरे या मकान की तरह ।

कार्कीकः ५-३-११०—सफेद घोड़े की तरह ।

लौहितीकः स्फटिकः ,, स्फटिक जो अन्य वस्तु के सम्पर्क से लाल प्रतीत होता हो ।

लौहितध्वज्यः ५-३-११२—लाल ध्वजा वाला संघ ।

कपोतपाक्यः ५-३-११३—कबूतरों से जीवन निर्वाह करने वाली एक जंगली जाति ।

कौञ्जायन्यः ,, कुञ्ज के वंशजों का समूह ।

ब्राध्नायन्यः ,, ब्रध्न के वंशजों का समूह ।

क्षौद्रक्यः ५-३-११४—वाहीक जनपद के शस्त्रजीवी क्षुद्रकों का समूह ।

मालव्यः ,, ,, ,, मालवों ,,

क्षौद्रकी ,, वाहीक जनपद के शस्त्रजीवी स्त्री समूह ।

मल्लाः ,, वाहीक जनपद का मल्ल जाति का समूह ।

सम्राट् ,, वाहीक जनपद का शस्त्रजीवी राजा ।

शबराः ,, एक जंगली जाति समूह, यह वाहीक जनपद का नहीं है ।

गोपालकाः ब्राह्मणाः ,, गाय पालने वाले ब्राह्मण ।

शालङ्कायनाः ,, शालङ्कायन नामक क्षत्रियों का समूह ।

वार्केण्यः ५-३-११५—वृक नामक शस्त्र जीवियों का समूह

दामनीयः ५-३-११६—दामनि नामक शस्त्र जीवियों का समूह ।

दामनीयौ ,, ,,

दामनयः ,, ,,

औलपीयः ,, औलपी नामक ,,

कौण्डोपरथीयः ,, कौण्डोपरथ ,, ,,

दाण्डकीयः ,, दाण्डकि ,, ,,

पार्शवः ५-३-११७— पर्शु ,, ,,

पार्शवौ ,, ,,

पर्शवः ,, ,,

यौधेयः ,, यौधेय ,,

यौधेयौ ५-३-११७—यौधेय नामक शस्त्र जीवियों का समूह ।

यौधेयाः ,, ,,

आभिजित्यः ५-३-११८—अभिजित् के वंशज

वैदभृत्यः ,, विदभृत् के वंशज

शालावत्यः ,, शालावत् के वंशज

शैखावत्यः ,, शिखावत् के वंशज

शामीवत्यः ,, शमीवत् ,, ,,

और्णावत्यः ,, ऊर्णावत् ,, ,,

श्रौमत्यः ,, श्रुमत् के वंशज

लोहितध्वजाः ५-३-११९—लाल ध्वजा वाले सङ्घ ।

कपोतपाकाः कबूतरों से निर्वाह करने वाली जाति का संघ ।

कौञ्जायनाः ५-३-११९—कुञ्ज के वंशज ।

ब्राध्नायनाः ,, ब्रध्न के वंशज ।

द्विपदिकाम् ५-४-१—दो दो चतुर्थांश ।

द्विशतिकाम् ,, दो दो सौ ।

द्विमोदकिकाम् ,, दो दो लड्डू ।

द्विपदिकां दण्डितः द्विशतिकां-व्यवसृजति ५-४-२—दो चतुर्थांश दण्डित होने पर दो सौ देता है ।

स्थूलकः ५-४-३- मोटा सा ।

अणुकः ,, छोटा सा ।

चञ्चत्कः ,, चलता हुआ सा ।

बृहत्कः ,, बड़ा सा ।

सुरकः ,, शराव की तरह ( लाल सर्प ) ।

छिन्नकम् ५-४-४—कटा हुआ सा ।

भिन्नकम् ,, टूटा हुआ सा ।

अभिन्नकम् ,, न टूटा हुआ सा ।

सामिकृतम् ५-४-५—आधा किया हुआ ।

अर्धकृतम् ,, ,,

बहुतरकम् ,, अधिकतर ।

बृहतिका ५-४-६—चादर ।

बृहतीछन्दः ,, वृहती नामक वैदिक छन्द ।

अषडक्षीणो मन्त्रः ५-४-७—वह सलाह जो छः आँखों, (तीन मनुष्यों) से न देखी गयी हो ।

आशितङ्गवीनमरण्यम् ५-३-७—वह जंगल जहाँ पहले पशु चरते रहे हों।

अलङ्कर्मीणः ,, किसी काम को करने में समर्थ, निपुण, कुशल।

अलम्पुरुषीणा ,, किसी मनुष्य के लिए योग्य, बराबर।

ईश्वराधीनः ,, ईश्वर के वश में।

प्राचीनम् ५-४-८—पुराना।

प्रतीचीनम् ,, नया।

अर्वाचीनम् ,, नया।

प्राची दिक् ,, पूर्व दिशा।

उदीची दिक् ,, उत्तर दिशा।

प्राचीना ब्राह्मणी ,, पुरानी ब्राह्मणी।

प्राचीनं ग्रामादाम्राः ,, आम के पेड़ गाँव से पूर्व हैं।

ब्राह्मणजातीयः ५-४-९—ब्राह्मण के लिए उचित, संगत।

ब्राह्मणजातिः शोभना ,, ब्राह्मण जाति सुन्दर जाति है।

पितृस्थानीय, पितृस्थानः ५-४-१०—पिता के समान स्थान का अधिकारी।

गोःस्थानम् ,, गोशाला।

अनुगादिकः ५-४-१३—दुहराने वाला या प्रतिध्वनि करने वाला।

वैसारिणः ५-४-१६—मछली, धीरे-धीरे खिसकने वाली।

विसारी देवदत्तः ,, धीरे-धीरे खिसकने वाला देवदत्त।

पञ्चकृत्वो भुङ्क्ते ५-४-१७—पाँच बार भोजन करता है।

भूरिवारात् भुङ्क्ते ,, अनेक बार भोजन करता है।

द्विर्भुङ्क्ते ४-३-१८—दो बार भोजन करता है।

त्रिर्भुङ्क्ते ,, तीन बार ,,

चतुर्भुङ्क्ते ,, चार बार ,,

सकृद्भुङ्क्ते ५-४-१९—एक बार ,,

बहुधाकृत्वो वा दिवसस्य भुङ्क्ते ५-४-२०—दिन में अनेक बार भोजन करता है।

बहुकृत्वो मासस्य भुङ्क्ते ,, महीने में अनेक बार भोजन करता है, प्रतिदिन नहीं।

अन्नमयम् ५-४-२१—भोजन का प्राचुर्य, आधिक्य।

अपूपमयम् ,, पुओं का प्राचुर्य ,,

यवागूमयी ,, लप्सी का ,, ,,

अन्नमयो यज्ञः ,, भोज, जिसमें भोजन का प्राचुर्य हो।

अपूपमयं पर्व ,, वह त्योहार जिसमें पुओं का प्राचुर्य हो।

मौदकिकम्, मोदकमयम् ५-४-२२—जिसमें लड्डू प्रचुरता से प्रस्तुत किये गये हों।

शाष्कुलिकम्, शष्कुलीमयम् ,, जिसमें पूरियाँ प्रचुरता से प्रस्तुत की गई हों।

मौदकिको यज्ञः, मोदकमयः ,, वह यज्ञ जिसमें लड्डू प्रचुरता से प्रस्तुत किये गये हों।

आनन्त्यम् ५-४-२३—जिसका अन्त न हो।

आवसथ्यम् ,, आहवनीय अग्नि का स्थान।

ऐतिह्यम् ,, परम्परागत वर्णन, इतिहास।

भैषज्यम् ,, औषध।

अग्निदेवत्यम् ५-४-२४—अग्निदेव के लिए।

पितृदेवत्यम् ,, पितृदेव के लिए।

पाद्यम् ५-४-२५—पैर धोने के लिए जल।

अर्घ्यम् ,, पूजन के लिए जल।

नूत्नम्, नूतनम्,
नवीनम् ,, नया।

प्रणम्, प्रत्नम्,
प्रतनम्, प्रीणम् ,, पुराना।

भागधेयम् ,, भाग्य।

रूपधेयम् ,, रूप।

नामधेयम् ,, नाम।

अग्नीध्रम् ,, यज्ञ में अग्नि स्थापन का स्थान।

साधारणम् ,, सामान्य।

अग्नीध्री ,, यज्ञ में अग्नि स्थापन की शाला।

साधारणी ,, सामान्य।

आतिथ्यम् ,, अतिथि सत्कार।

देवता ५-४-२७—देव ।
अविकः ५-४-२८—भेंड़ ।
यावकः ५-४-२९—कूटा हुआ, उवाला हुआ तथा दूध शक्कर मिला जौ ।
मणिकः „ मणि ।
लोहितकः मणिः ५-४-३०—लाल मणि ।
लोहितकः कोपेन ५-४-३१—क्रोध से लाल ।
लोहितिका, लोहिनिका कोपेन „ क्रोध से लाल ।
लोहितिका, लोहिनिका शाटी ५-४-३२—लाल रंग की साड़ी ।
कालकं मुखं वैलक्ष्येण ५-४-३३—लज्जा या व्याकुलता से काला मुख ।
कालकः पटः „ काला वस्त्र ।
कालिका शाटी „ काली साड़ी ।
वैनयिकः ५-४-३४—नम्रता, प्रार्थना ।
सामयिकः „ समय ।
औपयिकः „ उपाय ।
वाचिकम् ५-४-३५—सन्देश ।
कार्मणम् ५-४-३६—सन्देश सुनकर तदनुसार किया जाने वाला कर्म ।
औषधं पिवति ५-४-३७—दवा पीता है ।
ओषधयःक्षेत्रे रूढाः „ औषधियाँ खेत में उगी हुई ।
प्राज्ञः ५-४-३८—बुद्धिमान् ।
प्राज्ञी स्त्री „ बुद्धिमती स्त्री ।
दैवतः „ देवता ।
बान्धवः „ भाई बन्धु ।
मृत्तिका ५-४-३९—मिट्टी ।
मृत्सा, मृत्स्ना ५-४-४९—उत्तम मिट्टी ।
बहुशः ५-४-४२—बहुत सा, बहुतों को ।
अल्पशः „ थोड़ा सा, थोड़े आदमियों को ।
बहूनि ददात्यनिष्टेषु „ अनिष्ट के समय बहुत देता है ।
अल्पं ददात्याभ्युदयिकेषु „ उन्नति के समय कम देता है ।
द्विशः ५-४-४३—दो दो ।
माषशः „ एक एक माशा ।
प्रस्थशः „ एक एक प्रस्थ ।
घटं घटं ददाति „ घड़े घड़े भर देता है ।

द्वौ ददाति ५-४-४३—दो देता है ।
द्वयोर्द्वयोः स्वामी „ दो दो का मालिक ।
प्रद्युम्नः कृष्णतः प्रति ५-४-४४—प्रद्युम्न कृष्ण के प्रतिनिधि ।
आदितः „ आदि से लेकर ।
मध्यतः „ मध्य से लेकर ।
अन्ततः „ अन्त से लेकर ।
पृष्ठतः „ पीछे से लेकर या तक ।
पार्श्वतः „ बगल से लेकर ।
स्वरतः „ स्वर से ।
वर्णतः „ अक्षर से ।
ग्रामतः ५-४-४५—गाँव से ।
स्वर्गाद्धीयते ५-४-४५—स्वर्ग से अलग होता है ।
पर्वतादवरोहति „ पहाड़ से उतरता है ।
चारित्रेण-चारित्रतोऽतिगृह्यते ५-४-४६—अपने सदाचार से दूसरों से बढ़ता है ।
वृत्तेन-वृत्ततो न व्यथते „ अपने सद्व्यवहार से दुःखी नहीं होता ।
देवदत्तेन क्षिप्तः „ देवदत्त से बुरा भला कहा गया ।
वृत्तेन-वृत्ततो हीयते पापः ५-४-४७—पापी अपने दुर्व्यवहार से नष्ट होता है ।
देवदत्तेन हीयते „ देवदत्त से अलग किया जाता है ।
देवा अर्जुनतोऽभवन् ५-४-४८—देवता अर्जुन के पक्ष में हुए ।
आदित्याः कर्णतोऽभवन् „ आदित्यगण कर्ण के पक्ष में हुए ।
वृक्षस्य शाखा „ पेड़ की शाखा ।
प्रवाहिकातः कुरु ५-४-४९—हैजे की चिकित्सा करो ।
प्रवाहिकायाः प्रकोपनं करोति „ हैजे को बढ़ा रहा है या कुपित कर रहा है ।
कृष्णीकरोति ५-४-५०, ७-४-४२—काला करता है ।
ब्रह्मीभवति „ ब्रह्म हो रहा है ।
गङ्गीस्यात् „ गङ्गा हो जाय ।
दोषाभूतमहः „ दिन रात हो गया ।
दिवाभूता रात्रिः „ रात दिन हो गयी ।

गार्गीभवति ६-४-१४५—गर्ग का वंशज हो रहा है।
शुचीभवति ७-४-२४—पवित्र होता है।
पटूस्यात् „ निपुण हो जाय।
स्वस्तीस्यात् „ कल्याण हो।
मात्रीकरोति „ माता बनाता है।

अरूकरोति ५-४-५१—घाव करता है।
उन्मनीस्यात् „ अन्यमनस्क हो जाय, उदास हो जाय।
उच्चक्षूकरोति „ आँख ऊपर करता है।
उच्चेतीकरोति „ उदास करता है, विक्षिप्त करता है।
विरहीकरोति „ अलग करता है, वियोग कराता है।
विरजीकरोति „ धूल अथवा रजोगुण से रहित करता है।

दधिसिञ्चति ५-४-५२, ८-३-१११—दही छिड़कता है।
अग्निसाद्भवति „ आग होता है, जल जाता है।
अग्नीभवति „ „
एकदेशेन शुक्लीभवति पटः „ वस्त्र एक भाग में सफेद होता है,
अग्निसात्सम्पद्यते अग्निसाद्भवतिशस्त्रम् ५-४-५३—शस्त्र आग होता है।
अग्नी भवति „ „ „
जलसात्सम्पद्यते जलीभवति लवणम् „ नमक जल हो जाता है।
राजसात्करोति राजसात्सम्पद्यते ५-४-५४—राजा के अधीन करता है या होता है।
विप्रत्राकरोति-विप्रत्र सम्पद्यते ५-४-५५—दातव्य वस्तु ब्राह्मण को देता है।
विप्रसात्करोति „ ब्राह्मण को देता है।
राजसाद्भवति राष्ट्रम् ५-४-५४—राष्ट्र राजा के अधीन होता है।

देवत्रा वन्दे रमे वा ५-४-५६—देवता को नमस्कार बहुत करता हूँ या उनमें रमता हूँ।

बहुत्रा जीवतो मनः ५-४-५६—जीवित प्राणी का मन बहुत जगह रमता है।

पटपटाकरोति ५-४-७५—पटत् पटत् शब्द करता है।
दृषत्करोति „ वह पत्थर बना देता है।
श्रत्करोति „ वह 'श्रत्' शब्द करता है।
घरटघरटाकरोति „ घरट घरट शब्द करता है।
पटिति करोति „ वह'पट' शब्द करता है।
त्रपटत्रपटाकरोति „ वह त्रपट त्रपट शब्द करता है।
द्वितीयाकरोति ५-४-५८—वह दुवहीं (दुबारा जोतना) करता है।
तृतीयाकरोति „ „ तिवहीं (तिबारा जोतना) करता है।
शम्बाकरोति „ वह कोन करता है। एक तरफ से जुते हुए खेत को दूसरी तरफ से जोतता है।
बीजाकरोति „ टाँड़ चलाता है। बीज के साथ जोतता है।

द्विगुणाकरोति क्षेत्रम् ५-४-५९—खेत को दुबारा जोतता है।
समयाकरोति ५-४-६०—समय बिताता है।
समयंकरोति „ समय बनाता है।
सपत्राकरोति मृगम् ५-४-६१—मृग को ऐसा बाण मारता है कि बाण का पंखा वाला भाग भी घुस जाता है।
निष्पत्रा करोति „ मृग को ऐसा बाण मारता है कि बाण का पंख वाला भाग भी बाहर निकल जाता है।
सपत्रं निष्पत्रं वा करोति भूतलम् „ वह जमीन में बाण मारता है।
निष्कुलाकरोति दाडिमम् ५-४-६२—वह अनार के दानों को निकालता है।

सुखाकरोति प्रियाकरोति गुरुम् ५–४–६३—वह गुरु को प्रसन्न करता है।

दुःखाकरोति स्वामिनम् ५–४–६४—मालिक को दुःखी करता है।

शूलाकरोति मांसम् ५–४–६५—वह लोहे के छड़ पर मांस भूनता है।

सत्याकरोति भाण्डंवणिक् ५–४–६६—बनिया वर्तनों के लिए साई देता है।

सत्यं करोति विप्रः ,, ब्राह्मण कसम खाता है।

मद्रा करोति ५–४–६७—मुण्डन करता है।

मद्रा करोति ,, मुण्डन करता है।

मद्रं करोति ,, प्रसन्न करता है।

भद्रं करोति ,, कल्याण या भलाई करता है।

इति तद्धितप्रकरणम्।

## अथ द्विरुक्तप्रकरणम्

पचति पचति ८–१–१, ४—वह सदा पकाता है।

भुक्त्वा भुक्त्वा ,, खा खाकर।

वृक्षं वृक्षं सिञ्चति ,, प्रत्येक वृक्ष को सींचता है।

ग्रामोग्रामो रमणीयः ,, प्रत्येक गाँव सुन्दर है।

परिपरि वङ्गेभ्यो वृष्टो देवः ८–१–५—वङ्गाल को छोड़कर चारों ओर वर्षा हुई।

परिवङ्गेभ्यः ८–१–५—वंगाल को छोड़कर।

उपर्युपरि ग्रामम् ८–१–७—गाँव के समीप का प्रदेश।

अध्यधि सुखम् ,, सुख के वाद दुःख।

अधोधो लोकम् ,, लोकों के विलकुल नीचे का प्रदेश।

सुन्दर सुन्दर वृथा ते सौन्दर्यम् ८–१–८—हे सुन्दर, हे सुन्दर, तुम्हारा सौन्दर्य व्यर्थ है।

देव देव वन्द्योऽसि ,, हे देव, हे देव, तुम वन्दनीय हो।

दुर्विनीत दुर्विनीत इदानीं ज्ञास्यसि ,, अरे दुष्ट,, अरे दुष्ट अव तू जानेगा।

धानुष्क धानुष्क वृथा ते धनुः ,, धनुर्धर, धनुर्धर तुम्हारा धनुष व्यर्थ है।

चोर चोर घातयिष्यामि त्वाम् ,, ऐ चोर, ऐ चोर, तुझे मार डालूँगा।

एकैकमक्षरम् ८–१–९—प्रत्येक अक्षर, एक एक अक्षर।

एकैकस्मै देहि ,, एक एक को (प्रत्येकको) दो।

गतगतः ८–१–१०—कष्ट है, वह चला ही गया।

गतगता ,, ,, ,, चली ही गयी।

पटुपट्वी ८–१–११, १२—कुछ कुछ चतुर स्त्री।

पटुपटुः ,, कुछ कुछ चतुर।

शुक्लशुक्लं रूपम् ,, ,, सफेद आकार।

शुक्लशुक्लः पटः ,, ,, सफेद वस्त्र।

मूले मूले स्थूलः ,, प्रत्येक जड़ मोटी होती गयी है।

सर्पसर्प बुध्यस्व बुध्यस्व ,, सर्प, सर्प, सावधान, सावधान हो जाओ।

सर्प सर्प सर्प बुध्यस्व बुध्यस्व बुध्यस्व ,, ,, ,, ,,

लुनीहि लुनीहीत्येवायंलुनाति ८–१–१२—वह काटो काटो कहकर काटता है।

अन्योन्यं विप्राःनमन्ति ,, ये ब्राह्मण एक दूसरे को प्रणाम करते हैं।

अन्योन्यौ ,, ,, ,, ,,

अन्योन्यान् ,, ,, ,, ,,

अन्योन्येन कृतम् ,, एक दूसरे से किया गया।

अन्योन्यस्मै दत्तम् ,, एक दूसरे को दिया गया।

अन्योन्येषां पुष्करैरामृशन्तः ,, सूँड़ों से एक दूसरे को सहलाते हुए।

परस्परम् ,, आपस में।

इतरेतरम् ,, ,,

इतरेतरेण ८-१-१२— एक दूसरे से।
अन्योन्याम् ,, ,, को
अन्योन्यम् ,, ,,
परस्पराम् ,, ,,
परस्परम् ,, ,,
इतरेतराम् ,, ,,
इतरेतरम् ,, ,,

इमे ब्राह्मण्यौ कुले वा
भोजयतः ८-१-१२—ये दोनों ब्राह्मणियाँ अथवा कुल भोजन कराते हैं।

प्रियप्रियेण प्रियेण वा ददाति ८-१-१३-हर्ष के साथ देता है।

सुखसुखेन सुखेन वा ददाति ,, सुख से देता है।

यथायथंज्ञाता यथात्मीयं वा ८-१-१४—स्वभाव के अनुसार देता है।

द्वन्द्वं मन्त्रयते ८-१-१५—सलाह ( मन्त्रणा ) करता है।

आचतुरं हीमे पशवो
द्वन्द्वं मिथुनीयन्ति ,, ये पशु चार पीढी तक जोड़ खाते हैं अर्थात् मैथुन करते हैं।

माता पुत्रेण मिथुनं गच्छति ,, माता पुत्र के साथ पौत्र के साथ तथा प्रपौत्र के साथ मैथुन करती है।

द्वन्द्वंव्युत्क्रान्ताः ,, दो दो पृथक् पृथक् हो गये।

द्वन्द्वं यज्ञपात्राणि प्रयुनक्ति ,, यज्ञ पात्रों को दो दो कर रखता है।

द्वन्द्वं सङ्कर्षणवासुदेवौ ,, बलराम तथा कृष्ण का जोड़ा।

इति द्विरुक्तप्रकरणम्।

# अथ तिङन्ते भ्वादिप्रकरणम्

भू—होना, रहना, उत्पन्न होना ।

एध्—बढ़ना, उन्नत होना ।

स्पर्ध—चाहना, होड़ लगाना, ललकारना ।

गाधृ—खड़ा होना, ठहरना, रहना, ढूँढ़ना, खोज करना, गोता लगाना, लालच करना, संग्रह करना, बुनना ।

नाथृ—माँगना, प्रार्थना करना, बीमार होना, कष्ट देना, शक्तिशाली होना, आशीस देना ।

नाधृ— ,, ,, ,,

बाधृ—कष्ट देना, दबाना, विघ्न डालना, विरोध करना, बाधा डालना, लुढ़काना, लुभाना ।

दध्—धारण करना, देना, उपहार देना ।

स्कुदि—कूदना, उठाना ।

श्विदि—सफेद होना ।

वदि—प्रणाम करना, प्रशंसा करना, पूजना ।

भदि—भाग्यशाली होना, शुभसमाचार कहना, प्रसन्न होना, प्रतिष्ठा करना, चमकना ।

मदि—प्रशंसा करना, प्रसन्न होना, नशे में होना, घमण्ड करना, सोना, सुस्त होना, चमकना, धीरे-धीरे हिलना, विजयी होना, शिथिल होना ।

स्पदि—फड़कना, काँपना, हिलना ।

क्लिदि—दुःखी होना, विलाप करना ।

मुद्—प्रसन्न होना ।

दद्—देना, उपहार देना ।

ष्वद्=स्वर्द्—स्वाद लेना, चखना, रुचना, स्वादिष्ट होना ।

उर्द्—नापना, खेलना ।

कुर्द्, खुर्द्, गुर्द्, गुद्—खेलना ।

षूद्—बहना, उँड़ेलना, बहाना, टपकाना, अर्क खींचना ।

ह्राद्—शब्द करना चिल्लाना ।

ह्लादी—शब्द करना, प्रसन्न होना ।

स्वाद—स्वाद लेना, चखना, रुचना ।

पर्द्—अपान वायु छोड़ना ।

यती—प्रयत्न करना ।

युतृ-जुतृ—चमकना ।

विथृ, वेथृ—याचना करना, माँगना ।

श्रथि—ढीला होना, शक्तिहीन होना ।

ग्रथि टेढ़ा होना, दुष्ट होना, झुकाना ।

कत्थ्—डींग मारना, प्रशंसा करना, अकड़ कर चलना ।

अत्—निरन्तर चलना, घूमना ।

चिती—ध्यान से देखना, निरीक्षण करना, जानना, समझना, स्मरण करना ।

च्युतिर्—सींचना, आर्द्र करना ।

श्च्युतिर्—टपकना, बहना, सूखना, उँड़ेलना, फैलाना ।

मन्थ्—मथना, क्षुब्ध करना, हिलाना, कुचलना, दबाना, दुःखी करना, नष्ट करना, मार डालना ।

कुथि, पुथि, लुथि, मथि—क्षति पहुँचाना, कष्ट पाना, आहत करना, प्रहार करना, मार डालना, कुचलना, पीसना, दबाना ।

षिधु—जाना, चौकसी करना, हाँकना ।

षिधू—आज्ञा देना, आदेश देना, निदेश देना, शुभ होना ।

खाद्द—भोजन करना, खाना ।

खद्—दृढ़ होना, स्थिर होना, कष्ट पहुँचाना, मार डालना ।

गद्—स्पष्ट बोलना ।

बद्—दृढ़ या स्थिर होना ।

रद्—तोड़ना, फाड़ना, खुरचना, खोदना ।

णद्—अस्पष्ट ध्वनि या शब्द करना ।

अर्द्—जाना, याचना करना, प्रार्थना करना ।

नर्द्, गर्द्—गर्जना, शब्द करना ।

तर्द्—पीड़ा देना, हानि पहुँचाना ।

कर्द्—पेट गुड़गुड़ाना ।

खर्द्—काटना, डंक मारना ।

अति, अदि—बाँधना ।

इदि—शक्ति सम्पन्न होना, शक्तिशाली होना ।

बिदि—अलग करना या होना, पृथक् करना ।

भिदि— ,, ,, ,,

गडि—गाल फुलाना या टेढ़ामेढ़ा करना ।
णिदि—दोषारोपण करना, निन्दा करना, गाली देना, अपराधी ठहराना ।
टुनदि—प्रसन्न होना, संतुष्ट होना ।
चदि—प्रसन्न होना, भाग्यशाली होना ।
त्रदि—चेष्टा करना, व्यस्त रहना ।
क्रदि, कदि, क्लदि—चिल्लाना, रोना, आँसू बहाना, घोषणा करना ।
क्लिदि—विलाप करना ।
शुन्ध्—शुद्ध होना या करना, साफ करना, पवित्र करना ।
शीकृ—सींचना, आर्द्र करना ।
लोकृ—देखना, ध्यान से देखना ।
श्लोकृ—संग्रह करना (कविता या निबन्ध), कविता करना ।
द्रेकृ, ध्रेकृ—शब्द करना, बढ़ना, हर्ष प्रकट करना, प्रसन्न होना ।
रेकृ—सन्देह करना, शंका करना ।
सेकृ, स्रेकृ, स्रकि, श्रकि, श्लकि—जाना, हिलना ।
शकि—शंका करना, हिचकिचाना, विश्वास न करना, डरना ।
अकि—चिह्न बनाना या लगाना, मुहर लगाना ।
वकि—टेढ़ा मेढ़ा चलना ।
मकि—सुसज्जित करना, सजाना ।
कक्—चंचल होना या रहना, गर्व करना ।
कुक्, वृक्—लेना, स्वीकार करना, पकड़ना ।
चक्—संतुष्ट होना, विरोध करना, टालना ।
ककि, वकि, श्वकि, त्रकि, ढौकृ, त्रौकृ, ष्वष्क्, वस्क्, मस्क्, टिकृ, टीकृ, तिकृ, तीकृ, रघि, लघि—जाना ।
अघि, वघि, मघि—जाना, दोषारोपण करना, प्रारम्भ करना ।
मघि—धोखा देना, जाना, दोषारोपण करना ।
राघृ, लाघृ, द्राघृ—योग्य या समर्थ होना, पर्याप्त होना ।
द्राघृ—विस्तृत होना ।
श्लाघृ—प्रशंसा करना ।
फक्क्—धीरे धीरे जाना, खिसकना, दुर्व्यवहार करना ।
तक्—हँसना, सहना, उपहास करना, ।

तकि—कष्ट से जीवित रहना ।
शुक्—जाना ।
बुक्क्—कुत्ते का भूकना ।
कख्—हँसना ।
ओखृ, राखृ, लाखृ, द्राखृ, ध्राखृ—सूखना, पर्याप्त होना, अस्वीकार करना, समर्थ होना, सजाना ।
शाखृ, श्लाखृ—फैलना, व्याप्त होना ।
उख्, उखि, वख्, वखि, मख्, मखि, पख्, पखि, रख्, रखि, लख्, लखि, इख्, इखि, ईखि, वल्ग्, रगि, लगि, अगि, वगि, मगि, तगि, त्वगि, श्रगि, श्लगि, इगि, रिगि, लिगि—जाना ।
त्वगि—काँपना ।
युगि, बुगि, जुगि—त्याग देना ।
घघ्—हँसना ।
दघि—रक्षा करना, पालन करना ।
लघि—सुखाना ।
मघि—सजाना, ।
शिघि—सूँघना ।
वर्च्—चमकना ।
षच्—सींचना, छिड़कना, सेवा करना ।
लोचृ—देखना ।
शच्—स्पष्ट बोलना ।
कच्—बाँधना ।
कचि—बाँधना, चमक ।
मच्, मुचि—धोखा देना, गर्व करना, ।
मचि— पहिनना, उन्नत होना, पूजा करना, चमकना ।
पचि—स्पष्ट करना, व्याख्या करना ।
ष्टुच—प्रसन्न होना ।
ऋज्—जाना, खड़ा होना या स्थिर होना, प्राप्त करना या पैदा करना ।
ऋजि, भृजी—भूनना ।
एजृ, भ्रेजृ, भ्राजृ, रेजृ—चमकना ।
ईज्—जाना, निन्दा करना, दोषारोपण करना ।
वीज्—जाना ।
शुच्—शोक करना, दुःखी होना ।

कुच्—चीखना, चीत्कार करना।
कुञ्च, क्रुञ्च,—टेढ़ा करना, छोटा करना।
लुञ्च्—हटाना, ।
अञ्चु—जाना, पूजा करना।
वञ्चु, चञ्चु, तञ्चु, त्वञ्चु, म्रुञ्चु, म्लुञ्चु, म्रुचु, म्लुचु—जाना।
ग्रुचु, ग्लुचु, कुजु, खुजु—चुराना।
ग्लुञ्चु, षस्ज—जाना।
गुजि—अस्पष्ट शब्द करना, गूँजना।
अर्च्—पूजा करना, आदर सत्कार करना।
म्लेच्छ—अस्पष्ट बोलना, अशुद्ध उच्चारण करना।
लछ, लाछि—चिह्न करना या बनाना।
वाछि—चाहना।
आछि—लम्बा होना, विस्तृत होना।
हीच्छ्—लज्जित होना।
हुर्छा—धोखा देना, हट जाना।
मुर्छा—बेहोश या अचेत होना, बढ़ना।
स्फुर्छा—भूलना या विस्तृत होना, फैलना।
युछ्—असावधान होना या रहना, ध्यान न देना।
उछि—दाने बीनना।
उच्छी—निर्वासित करना, समाप्त करना।
ध्रज्, ध्रजि, ध्रज्, ध्रजि, ध्रृज्, ध्रृजि, ध्वज, ध्वजि—जाना।
कूज्, कुजि—अस्पष्ट शब्द बोलना, कोयल का बोलना।
अर्ज्, षर्ज—पैदा करना।
गर्ज—गर्जना।
तर्ज्—डाटना, फट कारना।
कर्ज्—तंग करना, कष्ट देना।
खर्ज्—पूजा करना, कष्ट देना।
अज्—जाना, फेकना।
तेज्—रक्षा करना।
खज्—मथना, क्षुब्ध करना।
कज्—नशे में होना।
खजि—लँगड़ाना, लँगड़ा कर चलना।
एजृ—काँपना।
टुओस्फूर्जा—बिजली गिरने का शब्द होना, बादलों का गर्जना।

क्षि—नष्ट होना या नष्ट करना।
क्षीज्—अस्पष्ट शब्द करना।
लज्, लजी—भूनना।
लाज्, लाजि—भूनना, डाटना, फटकारना।
जज्, जजि—युद्ध करना, लड़ना।
तुज्—कष्ट पहुँचाना, आहत करना।
तुजि—रक्षा करना।
गज्, गजि, गृज्, गृजि, मुज्, मुजि—शब्द करना, चिल्लाना।
गज्—नशे में होना।
वज्, व्रज्—जाना।
अट्ट—अतिक्रमण करना, पराजित करना, हानि पहुँचाना, नष्ट करना।
वेष्टृ—घेरना, लपेटना, कपड़े बाँधना।
चेष्टृ—प्रयत्न करना।
गोष्टृ, लोष्टृ—इकट्ठा होना, एकत्र करना।
घट्ट—हिलाना।
स्फुट्—विकसित होना, खिलना।
अठि—जाना, हिलना।
वठि—अकेले जाना।
मठि, कठि—उत्सुक होना, पश्चात्ताप करना।
मुठि—रक्षा करना।
हेठ्, एठ्—दुःखी करना।
हिडि—जाना, अनादर करना।
हुडि—एकत्र करना।
कुडि—जलाना।
वडि, मडि—बाँटना, विभक्त करना।
भडि—उपहास करदा, निन्दापूर्वक उपहास करना, चिल्लाना।
पिडि—इकट्ठा करना या होना।
मुडि—पवित्र होना, रगड़ना, डूबना।
तुडि—तोड़ना, फोड़ना, मारना।
हुडि—पसन्द करना, चुनना, पकड़ना।
स्फुडि—खोलना, फैलाना।
चडि—क्रोध करना।
शडि—आहत करना, इकट्ठा करना।
तडि—पीटना।

पडि—जाना, हिलना ।
कडि—नशे में होना ।
खडि—मथना ।
हेडृ, होडृ—अनादर करना ।
वाडृ—डुबकी लगाना, नहाना ।
द्राडृ, ध्राडृ—काटना, फाड़ना ।
शाडृ—प्रशंसाकरना, डींग मारना ।
शौटृ—गर्व करना ।
यौटृ—बाँधना ।
म्लेटृ म्रेडृ, मेटृ—पागल होना, उन्मत्त होना ।
कटे, चटे—वर्षा होना, ढाकना ।
अट्, पट्—भ्रमण करना, घूमना ।
रट्—चिल्लाना, पुकारना ।
लट्—लड़कपन करना, वालकों की तरह वड़ वड़ाना ।
शट्—रुग्ण होना, अलग करना, जाना, दुःखी होना, फटना ।
वट्—घेरना, लपेटना, ढाकना ।
किट्, खिट्—डराना ।
शिट्, षिट्—अनादर करना, उपेक्षा करना ।
जट्, झट्—गूथना, बुनना, थक्का वनजाना ।
भट्—भाड़े पर देना, पोषण करना, मजदूरी लेना ।
तट्—उठना या उठाना, कराहना ।
खट्—चाहना, इच्छा करना ।
नट्—अभिनय करना, नाचना ।
पिट्—शब्द करना, इकट्ठा करना या राशि वनाना ।
हट्—चमकना ।
षट्—भाग या अवयव होना ।
लुट्—लोटना, दुःखी होना ।
चिट्—भेजना ।
विट्—कसमखाना, चिल्लाना, बुराभला कहना ।
विट्—शब्द करना ।
इट्, किट्, कटी—जाना ।
हेठ्—दुष्टता करना, मारना, पवित्र करना, उत्पन्न होना,
मडि—सजाना, सुशोभित करना ।
कुडि—उत्तेजित करना, अंग भंग करना ।
मुड्, मुट्, मुडि, पुड, पुडि—कुचलना, पीसना, मारना ।
चुडि—कम या छोटा होना, काटना, वाँटना ।

मुडि—वाल वनाना, काटना, तोड़ना, कुचलना ।
रुटि, लुटि—लूटना, चुराना ।
रुठि, लुठि— ,,
रुडि, लुडि— ,,
वटि—वाँटना ।
स्फुटिर्—विकसित होना ।
पठ्—पढ़ना ।
वठ्—हृष्ट पुष्ट होना, शक्तिशाली होना, स्थूल होना ।
मठ्—नशे में होना, रहना, जाना ।
कठ्—कष्ठ से जीना ।
रट्, रठ्—वोलना, चिल्लाना ।
हठ—कूदना, दुष्टता करना, खूँटे में बाँधना ।
रुठ्, लुठ्, उठ्—प्रहार करना, मारना ।
पिठ्—आहत करना, दुःख देना ।
शठ्—धोखा देना, आघात पहुँचाना, दुःख देना, धूर्तता करना ।
शुठ—रोका जाना ।
कुठि—आलसी होना, शिथिल होना ।
लुठि—सुस्त या शिथिल होना, मारना ।
शुठि—सूखना ।
रुठि, लुठि—जाना ।
चुड्ड—अभिप्राय सूचित करना ।
अड्ड—सम्मिलित होना, आक्रमण करना, तर्क से सिद्ध करना, अनुरक्त होना ।
कड्ड—रूक्ष या कर्कश होना, कठोर होना ।
क्रीडृ—क्रीड़ा करना, खेलना ।
तुडृ, तूडृ—तोड़ना, ढकेलना, कष्ट देना ।
हुडृ, हूडृ, होडृ—जाना ।
रौडृ—अनादर करना, तुच्छ समझना ।
रोडृ, लोडृ—मूर्ख होना, पागल होना ।
अड्—प्रयत्न करना, श्रम करना ।
लड्—क्रीडा करना, विलास करना ।
लल्—इच्छा करना, चाहना ।
कड्—गर्व करना ।
गडि—गाल फुलाना या टेढ़ा करना ।
तिपृ, तेपृ, ष्टिपृ, ष्टेपृ—छिड़कना, टपकाना ।

तेपृ—काँपना ।
ग्लेपृ—दीन होना, दरिद्र होना ।
टुवेपृ—काँपना ।
केपृ, गेपृ, ग्लेपृ—काँपना, जाना ।
मेपृ, रेपृ, लेपृ, धेपृ—जाना ।
त्रपूष्—लज्जित होना ।
कपि—हिलना, चलायमान होना ।
रबि, लबि, अबि—शब्द करना ।
लबि—शब्द करना, लटकना ।
कबृ—रँगना ।
क्लीबृ—नपुंसक या कायर होना, डरना ।
क्षीबृ—मदोन्मत्त होना, नशे में होना ।
शीभृ, चीभृ—डींग मारना ।
रेभृ, अभि, रभि—गाय की तरह शब्द करना, कौए की तरह शब्द करना ।
ष्टभि, स्कभि—ठहरना, रुक जाना, रोकना, ठहराना ।
जभी, जृभि—मैथुन करना, जम्भाई लेना ।
शल्भ्—आत्म प्रशंसा करना, डींग मारना ।
वल्भ्—भोजन करना ।
गल्भ्—ढिठाई करना, आत्मविश्वास करना ।
श्रम्भु—असावधानी करना, गल्ती करना ।
ष्टुभु—रुकना या रोकना ।
गुपू—रक्षा करना ।
धूप्—तपना या तपाना ।
जप—जप करना ।
जप्, जल्प्—स्पष्ट बोलना ।
चप्—सान्त्वना देना ।
षप्—सम्बन्ध करना, पूर्ण जानकारी प्राप्त करना ।
रप्, लप्—स्पष्ट बोलना ।
चुप्—चुपके से जाना, धीरे-धीरे जाना ।
तुप्, तुम्प्, त्रुप्, त्रुम्प्, तुफ्, तुम्फ्, त्रुफ्, त्रुम्फ—पीड़ा देना, हानि पहुँचाना ।
पर्प्, रफ्, रफि, अर्ब्, पर्ब्, लर्ब्, बर्ब्, मर्ब्, कर्ब्, खर्ब्, गर्ब्, शर्ब्, षर्ब्, चर्ब्—जाना ।
कुबि—ढाकना, छिपाना, कपड़ा पहिनना, पर्दा डालना ।
लुबि, तुबि—पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना ।
चुबि—चूमना, चुम्बन करना ।
षृभु, षृम्भु—दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना ।
शुभ्, शुम्भ्—बोलना, चमकना, सजाना, मारना ।
घिणि, घुणि, घृणि—प्राप्त करना, ग्रहण करना ।
पण्-पन्—सौदा करना, खरीदना, प्रशंसा करना ।
भाम्—क्रोध करना ।
क्षमूष्—सहन करना ।
कमु—चाहना, कामना करना ।
अण्, रण्, भण्, वण्, मण्, कण्, क्वण्, व्रण्, भ्रण्, ध्वण्, धण्—शब्द करना, बोलना ।
ओणृ—दूर करना, दूर ले जाना, हटाना ।
शोणृ—जाना, लाल होना ।
श्रोणृ, श्लोणृ—एकत्र करना या होना ।
पैणृ—जाना, भेजना, आलिंगन करना, चिपकना ।
ध्रण—शब्द करना ।
कनी—चमकना, प्रेमकरना, चाहना, जाना ।
ष्टन्, वन्—शब्द करना, गर्जना ।
वन्, षण्—आदर करना, सम्मान करना ।
अम्—जाना शब्द करना, आदर करना ।
द्रम्, हम्म्, मीमृ—जाना, दौड़ना ।
चमु, छमु, जमु, जिमु, झमु—भोजन करना ।
क्रमु—चलना, टहलना, पग धरना ।
अय, वय्, पय्, मय्, चय्, तय्, णय्—जाना ।
दय्—देना, जाना, रक्षा करना, हानि पहुँचाना, दया करना, स्वीकार करना ।
रय्—जाना ।
ऊयी—बुनना, सीना ।
पूयी—फटना, दुर्गन्ध निकलना ।
क्नूयी—चरचर शब्द करना, आर्द्र होना, गीला होना ।
क्ष्मायी—हिलाना, हिलना, काँपना ।
स्फायी, ओप्यायी—बड़ा या मोटा होना, फूलना ।
तायृ—फैलना, फैलाना, रक्षाकरना, सुरक्षित रखना ।
शल्—हिलाना, हिलना, ढाकना, जाना ।
वल् वल्ल्—ढाकना, बन्द करना, जाना ।
मल्, मल्ल्—पकड़ना, अधिकार करना ।
भल्, भल्ल्—वर्णन करना, हानि पहुँचाना, देना ।

कल्—शब्द करना या गिनना।

कल्ल्—अस्पष्ट शब्द करना, मौन रहना।

तेवृ, देवृ—खेलना, क्रीड़ा करना।

षेवृ, गेवृ, ग्लेवृ, पेवृ, मेवृ, म्लेवृ—सेवा करना।

शेवृ, खेवृ, क्लेवृ, केवृ—सेवा करना।

मव्य्—बाँधनां।

सूर्क्ष्य्, ईर्क्ष्य्, ईर्ष्य्—अनादर करना, उपेक्षा करना डाह करना।

हय्—जाना।

शुच्यी—निचोड़ना, टपकाना।

हर्य्—जाना चमकना पूजा करना, भ्रान्त होना।

अल्—सजाना, योग्य होना, समर्थ होना, रोकना।

ञिफला—फलना, दो टुकड़े हो जाना।

मील्, श्मील्, स्मील्, क्ष्मील्—पलक बन्द करना, आँख मूँदना।

पील्—रोकना।

नील—नीला रंगमें रंगना।

शील्—समाधि लगाना, घ्यान करना।

कील्—बाँधना।

कूल्—ढाकना।

शूल्—रुग्ण होना, जोर का शब्द करना।

तूल्—खींचना।

पूल्—इकट्ठा करना एकत्र करना।

मूल्—स्थिर या दृढ़ होना, जड़ जमाना।

फल्—सफल होना।

चुल्ल्—अभिप्राय सूचित करना।

फुल्ल्—खिलना, विकसित होना।

चिल्ल—ढीला या शिथिल होना, अभिप्राय प्रकट करना।

तिल्—जाना हिलना।

वेलृ, चेलृ, केलृ, खेलृ, क्ष्वेलृ, वेल्ल्—चलना, हिलना, खेलना, क्रीड़ा करना।

पेलृ, फेलृ, शेलृ—जाना, हिलना हिलाना।

स्खल्—लड़खड़ाना।

खल्—इकट्ठा करना, संग्रह करना।

गल्—निगलना।

षल्—जाना।

दल्—विदीर्ण होना फटना।

श्वल्, श्वल्ल्—दौड़ना, तेजी से जाना।

खोलृ, खोर्ऋ—लँगड़ा कर चलना, लँगड़ा होना।

धोर्ऋ—तेजी से चलना, चतुरता करना।

त्सर्—चुपके से या धीरे से जाना, रेंगना, टेढ़ा मेढ़ा चलना।

क्मर्—क्रूरता करना, बेईमानी करना, धोखा देना।

अभ्र्, बभ्र, मभ्र, चर—जाना।

चर्—भोजन करना।

ष्ठिवु—थूकना।

जि—जीतना।

जीव्—जीना, श्वासलेना।

पीव्, मीव्, तीव्, णीव्—स्थूल होना।

क्षीव्, क्षेव्—थूकना।

उर्वी, तुर्वी, थुर्वी, दुर्वी, धुर्वी—हानि पहुँचाना।

गुर्वी—प्रयत्न करना।

मुर्वी—बाँधना।

पुर्व्, पर्व् मर्व—पूरा करना, भरना।

चर्व्—चबाना।

भर्व्—हानि पहुँचाना।

कर्व्, खर्व्, गर्व्—गर्व करना, डींग मारना।

अर्व्, शर्व्, षर्व्—मारना।

इवि—व्याप्त होना, फैलाना, घेरना।

पिवि, मिवि, णिवि—आर्द्र करना, गीला करना।

हिवि, दिवि, धिवि, जिवि—प्रसन्न होना, खुश होना।

रिवि, रवि, धवि—जाना, हिलना।

कृवि—हानि पहुँचाना, काम करना।

मव्—बाँधना।

अव्—रक्षा करना, जाना, सुन्दर होना, चाहना, प्रसन्न करना, संतुष्ट होना, समझना, प्रवेश करना, सुनना, शासन करना या स्वामी होना, माँगना, प्रार्थना करना, काम करना, चाहना, चमकना, प्राप्त करना, आलिंगन करना, मारना या हानि पहुँचाना, स्वीकार करना, विभक्त करना, उन्नति करना।

धावु—दौड़ना, धोना।

धुक्ष्, धिक्ष्—जलाना, भ्रान्त होना, जीना, जीवित रहना।

वृक्ष्—स्वीकार करना, चुनना, ढाकना।

शिक्ष्—विद्या पढ़ना, पढ़ाना।

भिक्ष्—माँगना, विना प्राप्त होने पर माँगना, पाना।

क्लेश्—अस्पष्ट बोलना, आगा पीछा करना।

दक्ष्—बढ़ना, करना, तेजी से जाना।

दीक्ष्—मुण्डन कराना, यज्ञोपवीत धारण करना, यज्ञ करना, तप करना, व्रत करना।

ईक्ष्—देखना, ध्यान से देखना।

ईष्—भागजाना, बचकर निकलजाना, आक्रमण करना, मारना।

भाष्—स्पष्ट बोलना।

वर्ष्—तेल लगाना।

गेषृ, ग्लेषृ—ढूँढ़ना, खोज करना।

पेषृ—प्रयत्न करना।

जेषृ, णेषृ, एषृ, प्रेषृ—जाना, हिलना।

रेषृ—भेड़िये का शब्द करना।

हेषृ, ह्रेषृ—हिन हिनाना।

कासृ—खाँसना, कराहना।

भासृ—चमकना।

णासृ, रासृ—शब्द करना।

णस्—झुकना या टेढ़ा होना।

भ्यस्—डरना।

आङःशसि—इच्छा करना, चाहना।

ग्रसु, ग्लसु—निगलना, खाना, नष्ट करना, व्यय करना।

ईह्—चेष्टा करना, प्रयत्न करना।

बहि, महि—बढ़ना।

अहि—जाना, पहुँचना।

गर्ह्, गल्ह्—निन्दा करना, दोषारोपण करना।

बर्ह्, बल्ह्—प्रधान होना, सर्वश्रेष्ठ होना।

वर्ह्, वल्ह्—बातचीत करना, कष्ट देना, हानि पहुँचाना, ढाकना।

प्लिह्—जाना हिलना।

जेहृ- बेहृ, बाहृ—प्रयत्न करना।

द्राहृ—जागना, फेंकना।

काशृ—चमकना।

ऊह्—तर्क करना, अनुमान करना, विचार करना।

गाहू—हिलाना, मथना, क्षुब्ध करना।

गृहू, ग्लहू—लेना, पकड़ना।

घुषि—सुन्दर होना या चमकना।

घुषिर्—शब्द करना।

अक्षू—व्याप्त होना।

तक्षू, त्वक्षू—पतला करना, छीलना।

उक्ष्—सींचना।

रक्ष्—रक्षा करना, पालन करना।

णिक्ष्—चुम्बन करना।

तृक्ष्, स्तृक्ष्, णक्ष्—जाना।

वक्ष्—क्रुद्ध होना, इकट्ठा करना।

मृक्ष्, म्रक्ष्—इकट्ठा करना, राशि बनाना।

तक्ष्—ढाकना, अथवा खाल उतारना।

पक्ष्—स्वीकार करना।

सूर्क्ष्—आदर करना।

काक्षि, वाक्षि, माक्षि—चाहना, इच्छा करना।

द्राक्षि, ध्राक्षि, ध्वाक्षि—चाहना, इच्छा करना, काँव काँव करना।

चूष्—पीना, चूसना।

तूष्—संतुष्ट होना या संतुष्ट करना।

पूष्—पुष्ट करना, बढ़ाना।

मूष्—चुराना, लूटना।

लूष्, रूष्—सजाना, सुशोभित करना।

शूष्—उत्पन्न करना, अनुमति देना।

यूष्, जूष्—हानि पहुँचाना।

भूष्, तसि—सजाना।

ऊष्—बीमार होना, रुग्ण होना।

ईष्—अन्न बुनना।

कष्, खष्, शिष्, जष्, झष्, शष्, वष्, मष्, रुष्, रिष्—पीड़ा देना, हानि पहुँचाना।

भष्—कुत्ते का भूकना।

उष्—जलाना।

जिषु, विषु, मिषु, णिषु—सींचना, छिड़कना।

पुष्—पोषण करना, पुष्ट करना।
श्रिषु, श्लिषु, प्रुषु, प्लुषु—जलाना।
पृषु, वृषु, मृषु—सींचना।
मृषु—सहन करना।
घृषु—घिसना, रगड़ना।
हृषु—झूठ बोलना, रोंगटे खड़े होना, प्रसन्न होना।
तुस्, ह्रस्, ह्लस्, रस्—शब्द करना।
लस्—आलिंगन करना, क्रीड़ा करना।
घस्लृ—खाना।
जर्ज्, चर्च्, झर्झ्—कहना, हानि पहुँचाना, कष्ट देना, डाटना, धमकाना।
पिसृ, पेसृ, विसृ, वेसृ, पिशृ, पेशृ—जाना।
हसे—हसना।
णिक्ष्—ध्यान करना, समाधि लगाना।
मिश, मश्—शब्द करना, कोलाहल करना, क्रुद्धहोना।
शव्—जाना, पहुँचना।
शश्—कूदना, उछलना, छलाँग मारना।
शसु—हानि पहुचाना, मारडालना।
शंसु—प्रशंसा करना, दुर्गति करना।
चह्—धोखा देना, ठगना।
मह्—सम्मान करना, आदर करना, पूजा करना।
रह्—छोड़ना, त्याग देना।
रह्, रहि, वृह्, वृहि—बढ़ना या बढ़ाना।
तुहिर, दुहिर्, उहिर्—कष्ट देना, पीड़ा पहुँचाना।
अर्ह—समादर करना, पूजा करना।
द्युत्—चमकना।
श्विता—सफेद होना।
ञिमिदा—चिकना करना या होना, तेल डालना।
ञिष्विदा—स्नेह ( तैल ) युक्त करना या होना, विचलित होना।
रुच्—चमकना, चाहना, प्रसन्न होना।
घुट्—बदलना, माल हेर फेर करना।
रुट्, लुट्, लुठ्—मारने वाले को मारना, रोकना, मुकाबिला करना।
शुभ्—चमकना।
क्षुभ्—हिलना, काँपना, क्षुब्धहोना।
णभ्, तुभ्,—हानि पहुँचाना।
णभ्—अभाव रहना या होना।
स्रंसु, ध्वंसु, भ्रंसु—गिरना, टपकना, खिसकना।
स्रम्भु—विश्वास करना।
वृतु—होना, स्थित रहना, ठहरना, कायम रहना।
वृधु—बढ़ना।
शृधु—अपान वायु छोड़ना।
स्यन्दू—टपकना, बूँद बूँद गिरना।
कृपू—समर्थ होना, योग्य होना।
घट्—चेष्टा करना।
व्यथ्—डरना, काँपना, दुःखी होना।
प्रथ्—प्रसिद्ध होना।
प्रस्—विस्तृत होना, फैलना।
म्रद्—कुलचना, पीसना।
स्खद्—काटना, फाड़ना, टुकड़े करना।
क्षजि—जाना, देना।
दक्ष्—जाना कष्ट देना।
कृप्—दया करना, जाना।
कदि, क्रदि, क्लदि—व्याकुल होना, घबराना।
ञित्वरा—शीघ्रता करना, जल्दी मचाना।
ज्वर्—ज्वर आना, रोगी होना।
गड्—टपकाना, पानी टपका कर साफ करना, खींचना।
हेड्—घेरना।
वट्, भट्—वार्तालाप करना, बोलना।
नट्—नाचना।
ष्टक्—बाधा डालना, रोकना,।
चक्—संतुष्ट होना,।
कखे—हसना।
रगे—संदेह करना।
लगे—चिपकना।
ह्गे, ह्लगे, षगे, ष्टगे—छिपाना, ढाकना।
कगे—करना, अनेकार्थक धातु।
अक्, अग्—टेढ़ा चलना, साँप की तरह चलना।
कण्, रण्—जाना।
चण्, श्रण्, शण्—जाना, देना।

श्रथ्, श्नथ्, क्नथ्, क्रथ्, श्लथ्, क्लथ्—हानि पहुँचाना, पीड़ा देना, कष्ट देना।

वन्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना।

वनु—अनेकार्थक धातु।

ज्वल्—चमकना।

ह्वल्, ह्मल्—टहलना, चलना, जाना।

स्मृ—स्मरण करना, याद करना।

दृ—डरना।

नृ—लेजाना, नेतृत्व करना।

श्रा—पकाना।

ज्ञा—मार डालना, संतुष्ट करना, देखना।

चलि—काँपना।

छदिर्—दृढ़ करना, जीवित रखना।

लडि—जीभ लपलपाना या ऐंठना।

मदी—प्रसन्न होना, दीन होना, दरिद्र होना।

ध्वन्—शब्द करना, बजाना।

दल्—फटना।

वल्—ढाकना।

स्खल्—लड़खड़ाना।

त्रपि, क्षपि, त्रपुष्—लज्जित होना।

स्वन्—सजाना, सुशोभित करना।

जनी—उत्पन्न करना।

जृष्—वृद्ध होना।

क्नसु—शरीर टेढ़ा होना।

रञ्ज्—रँगना।

ज्वल्—जलाना।

ह्वल्—चलना।

ह्मल्—चलना।

नम्—नमस्कार करना।

शम्—देखना।

यम्—न परसना।

स्खदिर्—भगाना, काटना, नष्ट करना।

फण्—जाना।

राज् चमकना।

भ्राज्, भाश्, भ्लाश्—चमकना।

स्यमु, स्वन्, ध्वन्, स्तन्, ध्वन्—शब्द करना।

षम्, ष्टम्,—शान्त रहना, व्याकुल न होना।

ज्वल्—चमकना, जलाना।

चल्—हिलना, काँपना।

जल्– तेज होना, तीक्ष्ण होना।

टल्, ट्वल्– व्याकुल होना, क्षुब्ध होना।

स्थल्, छल् दृढ़ रहना, दृढ़ता से खड़ा रहना।

हल्—हल चलाना।

णल्—सूँघना, बाँधना।

पल्—जाना।

बल्—साँस लेना, जीना, अन्न इकट्ठा करना।

पुल्—बड़ा होना, ऊँचा होना।

कुल्—इकट्ठा करना, सम्बन्धी के समान व्यवहार करना, सम्बन्धी होना।

शल्, हुल्, पत्लृ– जाना।

हुल्—मारना ढाकना।

क्थे—उबालना, पचाना, काढ़ा बनाना।

पथे—जाना।

मथे—मथना।

टुवम्—उगलना।

भ्रम्—टहलना, घूमना।

क्षर्—बहना, नष्ट होना, चूजाना।

षह्—सहन करना।

रम्—क्रीड़ा करना।

षद्लृ—फट जाना, जाना, दुःखी होना।

शद्लृ—गिरना, नष्टहोना, मुरझाना।

क्रुश्—बुलाना, रोना।

कुच—जोड़ना, टेढ़ा करना, रोकना, बन्द करदेना, चित्र बनाना।

बुध्—जानना, समझना।

रुह्—उगना, अंकुरित होना।

कस्—जाना।

हिक्क—हिचकी आना।

अञ्चु—जाना, प्रार्थना करना, माँगना।

टुयाचृ—माँगना, प्रार्थना करना।

रेटृ—बात करना।

चते, चदे—माँगना, प्रार्थना करना।
प्रोथृ—समान होना, उपयुक्त होना।
मिदृ, मेदृ—बुद्धिमान् होना, हानि पहुँचाना।
मेधृ—स्थूल होना, हानि पहुँचाना, मिलना।
णिदृ, णेदृ—निन्दा करना, समीप जाना।
शृधु, मृधु—गीला ( आर्द्र ) होना या करना।
बुधिर्—जानना, समझना।
उबुन्दिर्—देखना, जानना।
वेण—जाना, समझना, जानना, देखना, बाजा बजाना।
खनु—खोदना।
चीवृ—लेना, प्राप्त करना, ढाकना।
चायृ—पूजा करना, देखना।
व्यय्—जाना।
दाशृ—देना।
भेष्—डरना।
भ्रेषृ, भ्लेषृ—जाना।
अस्—जाना, चमकना, लेना, स्वीकार करना, पकड़ना।
अय्—जाना।
स्पश्—बाधा पहुँचाना, रुकावट डालना, छूना, एकसाथ बाँधना।
लष्—चाहना, इच्छा करना।
चष्—खाना।
छष्—हानि पहुँचाना।
झष्—लेना, पहिनना।
भ्रक्ष्, भ्लक्ष्—भोजन करना।
दासृ—देना।
माहृ—नापना।
गुहू—ढाकना, छिपाना।
श्रिञ्—सेवा करना।
भृञ्—भरना, सहारा देना।
हृञ्—लेलेना, पहुँचाना, लेजाना।
धृञ्—पकड़ना, सहारा देना।
कृञ्—करना।
णीञ्—लेजाना।
धेट्—पीना, चूसना, स्तन पान करना।
ग्लै, म्लै—दुःखी होना, उदास होना।
द्यै—घृणा के साथ व्यवहार करना, अनादर करना, उपेक्षा करना।
द्रै—सोना।
ध्रै—तृप्त होना, संतुष्ट होना, प्रसन्न होना।
ध्यै—सोचना, ध्यान करना।
रै—शब्द करना, भूकना।
स्त्यै, ष्ट्यै—शब्द करना, प्रतिध्वनि करना।
खै—दृढ़ रहना, मारना, हानि पहुँचाना।
क्षै, जै, षै—नष्ट होना, क्षीण होना, दुर्बल होना।
कै, गै—शब्द करना, कावँ कावँ करना।
शै, श्रै—पकाना।
पै, ओवै—सुखाना।
ष्टै—पहिनना, सजाना।
ष्णै—पहिनना, सजाना।
दैप्—पवित्र करना, साफ करना।
पा—पीना।
घ्रा—सूँघना।
ध्मा—फूँक कर बाजा बजाना, आग फूँकना।
ष्ठा—रुक जाना, स्थित होना।
म्ना—ध्यान से पढ़ना।
दाण्—देना।
ह्वृ—टेढ़ा या कुटिल होना।
स्वृ—शब्द करना, दुःख देना।
स्मृ—स्मरण करना।
ह्वृ—ढाकना।
सृ—जाना।
ऋ—जाना।
गृ,घृ—सींचना; छिड़कना।
ध्वृ—झुकाना, मारना।
स्रु—जाना, बहना।
षु—अनुमति देना, सम्पन्न होना।
श्रु—सुनना।
ध्रु—स्थिर अथवा दृढ़ होना।
दु, द्रु—जाना।
जि, ज्रि—जीतना, विजय प्राप्त करना।
ज्रु—शीघ्रता से जाना।

ष्मिङ्—मुस्कराना ।

गुङ्—गुनगुनाना, अस्पष्ट शब्द करना ।

गाङ्—जाना ।

कुङ्, घुङ्, उङ्, ङुङ्, खुङ्—शब्द करना, अस्पष्ट ध्वनि करना ।

च्युङ्, ज्युङ्, प्रुङ्, प्लुङ्—जाना ।

प्लुङ्—उड़ना, तैरना ।

रुङ्—जाना, हानि पहुँचाना, मारना, कष्ट देना ।

धृङ्—धारण करना, पकड़ना, नष्ट करना ।

मेङ्—माल का अदल बदल करना, बदले में देना ।

देङ्—रक्षा करना, लालन पालन करना, पोषण करना ।

श्यैङ्—जाना ।

प्यैङ्—बढ़ना, फूलना ।

त्रैङ्—रक्षा करना ।

पूङ्—पवित्र करना, साफ करना ।

मूङ्—बाँधना ।

डीङ्—उड़ना, हवा में जाना ।

तॄ—तैरना, पार करना ।

गुप्—छिपाना ।

तिज्—तेज या तीखा करना, सहना, क्षमा करना ।

मान्—पूजा करना, माँगना ।

बध्—बाँधना ।

रभ्—प्रारम्भ करना, चाहना, इच्छा करना, उत्सुक होना, आलिंगन करना ।

डुलभष्—प्राप्त करना, पाना ।

ष्वञ्ज्—आलिंगन करना ।

हद्—मल त्यागना, पाखाना करना ।

ञिष्विदा—अस्पष्ट शब्द करना ।

स्कन्दिर्—जाना, सूखना ।

यभ्—मैथुन करना ।

णम्—नमस्कार करना, झुकना, शब्द करना ।

गम्लृ, सृप्लृ—जाना ।

यम्—रोकना, ।

तप्—कष्ट पाना ।

त्यज्—त्यागना, छोड़ना ।

षञ्ज्—चिपकना, सटना ।

दृशिर्—देखना ।

दंश्—दाँत से काटना ।

कृष्—जोतना, खींचना ।

दह्—जलाना ।

मिह्—गीला करना, आर्द्र करना, छिड़कना ।

कित—रहना, दवा करना, चिकित्सा करना ।

दान्—काटना, अलग करना ।

शान्—तेज करना ।

डुपचष—पकाना, उबालना ।

षच—सम्मिलित होना ।

भज्—सेवा करना ।

रञ्ज्—रँगा जाना ।

शप्—शाप देना ।

त्विष्—चमकना ।

यज्—यज्ञ करना, देव पूजा करना, मेल करना, देना ।

डुवप्—बोना, पैदा करना ।

वह्—ढोना, पहुँचाना ।

वस्—रहना ।

वेञ्—कपड़ा बुनना ।

व्येञ्—ढाकना ।

ह्वेञ्—नाम लेकर बुलाना, होड़ लगाना, स्पर्धा करना ।

वद्—स्पष्ट बोलना ।

टुओश्वि—जाना बढ़ना ।

इति भ्वादि-प्रकरणम् ।

# अथादादि-प्रकरणम्

अद्—भोजन करना, खाना ।

हन्—मारना, जाना ।

द्विष्—शत्रुता करना, घृणा करना ।

दुह्—दूध दुहना, लाभ उठाना ।

दिह्—उन्नत होना ।

लिह्—चाटना, चखना, स्वाद लेना ।

चक्षिङ्—स्पष्ट बोलना ।

ईर्—जाना, काँपना, हिलना ।

ईड्—स्तुति करना, प्रशंसा करना ।

ईश्—शासन करना, समर्थ होना ।

आस्—बैठना ।

आङ्शास्—इच्छा करना, चाहना ।

वस्—पहिनना, धारण करना, ( वस्त्र ) ।

कसि—जाना, नष्ट करना ।

णिसि—चुम्बन करना ।

णिजि—धोना, शुद्ध करना ।

शिजि—अस्पष्ट शब्द करना ।

पिजि—रँगना ।

वृजि—मना करना, छोड़ना ।

पृची—सम्पर्क में आना या जाना ।

षूङ्—बच्चा पैदा करना, शिशु जनना ।

शीङ्—सोना, निद्रित होना, लेटना ।

यु—सम्मिलित होना, मिलाना, ढीला करना ।

रु—शब्द करना, गुर्राना ।

तु—जाना, बढ़ना, हानि पहुँचाना ।

णु—स्तुति करना, प्रशंसा करना ।

टुक्षु—छींकना, खाँसना ।

क्ष्णु—तेज करना, तीखा करना ।

ष्णु—टपकना, गुद गुदाना ।

ऊर्णुञ्—ढाकना ।

द्यु—आगे बढ़कर मिलना, आक्रमण करना, सामना करना ।

षु—राजी होना, स्वीकृति देना, बच्चा पैदा करना, शक्तिशाली होना ।

कु—भनभनाना, भनभन शब्द करना ( मधुमक्खी ) ।

ष्टुञ्—स्तुति करना, प्रशंसा करना ।

ब्रूञ्—स्पष्ट शब्द बोलना ।

इण्—जाना ।

इङ्—अध्ययन करना ।

इक्—याद करना, स्मरण करना ।

वी—जाना, व्याप्त होना, गर्भधारण करना, चमकाना, सुन्दर होना, फेंकना, खाना ।

या—जाना ।

वा—जाना, बहना, महँकना ।

भाति—चमकना, मालूम पड़ना ।

ष्णा—स्नान करना, शुद्ध होना ।

श्रा—पकाना, उबालना ।

द्रा—लज्जित होना, दौड़ना, शीघ्रता करना ।

प्सा—भोजन करना, खाना ।

पा—रक्षा करना ।

रा—देना ।

ला—लेना ।

दाप्—काटना ।

ख्या—कहना ।

प्रा—भरना, पूर्ण करना ।

मा—समाना, अटना ।

वच्—कहना ।

विद्—जानना ।

अस्—होना, रहना ।

मृजू—झाड़ू लगाना, साफ करना, धोना ।

रुदिर्—रोना, आँसू गिराना ।

ञिष्वप्—लेटना, सोना ।

श्वस्, अन्—साँस लेना ।

जक्ष्—भोजन करना, हँसना ।

जागृ—जागना, नींद से उठना ।

दरिद्रा—दरिद्र होना, दरिद्रता करना ।

चकासृ—चमकना ।

शासु—सिखाना, शिक्षा देना ।

दीधीङ्—चमकना, मालूम पड़ना, प्रकट होना ।

वेवीङ्—प्राप्त करना, गर्भधारण करना, व्याप्त होना, फेंकना, खाना, चाहना, चमकना, जाना ।

षस्, सस्ति—सोना, निद्रित होना ।

वश्—चाहना, इच्छा करना ।

ह्नुङ्—हटा देना, लेलेना, लूटना ।

इति तिङन्तादादि-प्रकरणम् ।

## अथ जुहोत्यादि-प्रकरणम्

हु—देना अर्थात् हवन करना, भोजन करना, स्वीकार करना, संतुष्ट करना ।

ञिभी—डरना, भयभीत हो जाना ।

ह्री—लजाना, लज्जित होना ।

पॄ—पालन-पोषण करना, भरना ।

डुभृञ्—धारण करना, सहारा देना, पालन पोषण करना ।

माङ्—नापना, शब्द करना, चिल्लाना ।

ओहाङ्—जाना ।

ओहाक्—छोड़ना, त्यागना ।

डुदाञ्—देना ।

डुधाञ—पकड़ना, निर्वाह करना, पालन पोषण करना देना ।

णिजिर्—धोना, कपड़ा धोना, साफ करना, पोषण करना ।

विजिर्—अलग करना, बाँटना, विभक्त करना ।

विष्लृ—फैलना, विस्तृत होना, व्याप्त होना ।

घृ—बहना, छिड़कना, चमकना ।

हृ—हठ पूर्वक लेना ।

ऋ, सृ—जाना ।

भस्—दोषारोपण करना, अपशब्द कहना, गाली देना, चमकना ।

कि—जानना ।

तुर्—दौड़ना, शीघ्रता करना ।

धिष्—शब्द करना ।

धन्—अन्न पैदा करना ।

जन्—उत्पन्न करना ।

गा—प्रशंसा करना, गाना ।

इति जुहोत्यादि-प्रकरणम् ।

## अथ दिवादि-प्रकरणम्

दिवु—खेलना, क्रीड़ा करना, विजय की इच्छा करना, बेचना, व्यापार करना, चमकना, प्रशंसा करना, प्रसन्न होना, मुदित होना, नशे में होना, मदमत्त होना, निद्रित होना, चाहना, इच्छा करना, जाना ।

षिवु—सीना, रफू करना, कपड़े जोड़ना ।

स्रिवु—जाना, सूखना ।

ष्ठिवु—थूकना, मुँह से थूक बाहर निकालना ।

ष्णुसु—लेना, स्वीकार करना, लुप्त हो जाना, अदृश्य होना ।

ष्णसु—थूकना ।

क्नसु—कुटिल होना, टेढ़ा होना, चमकना ।

व्युष्, प्लुष्—जलना ।

नृती—नाचना, इधर उधर घूमना ।

त्रसी—डरना, काँपना, घबराना ।

कुथ्—दुर्गन्ध निकलना, दुर्गन्धित होना ।

पुथ्—हानि पहुँचाना, पीटना ।

गुध्—लपेटना, ढाकना ।

क्षिप्—भेजना, फेंकना ।

पुष्प्—फूल खिलना, विकसित होना ।

तिम्, ष्टिम्, ष्टीम्—गीला होना, आर्द्र होना ।

व्रीड्—फेंकना, भेजना, लज्जित होना ।

इष्—जाना ।

षह्, षुह्—संतुष्ट होना, प्रसन्न होना ।

जॄष्, झॄष्—वृद्ध होना, पुराना होना, मुर्झाना ।

षूङ्—पैदा करना, बच्चा जनना ।

दूङ्—दुःखी होना, पीड़ित होना, खिन्न होना ।

दीङ्—नष्ट करना या नष्ट होना ।

डीङ्—उड़ना, आकाश से जाना ।

धीङ्—धारण करना, रखना, अनादर करना, उपेक्षा करना ।

मीङ्—हानि पहुँचाना, मारना, मरना, नष्ट होना ।

रीङ्—टपकना, चूना, बहना ।

लीङ्—चिपकना, सटना ।

व्रीङ्—पसन्द करना, चुनना ।

पीङ्—पीना ।

माङ्—नापना ।

ईङ्—जाना ।

प्रीङ्—संतुष्ट होना, प्रसन्न होना ।

शो—पतला करना, क्षीण करना, दुर्बल बनाना ।

छो—काटना, हँसुए से घास काटना ।

षो—पूर्ण करना, अन्त करना, समाप्त करना ।

दो—काटना, अलग करना, हँसुए से घास काटना ।

जनी—पैदा होना, उत्पन्न होना, जन्मलेना ।

दीपी—चमकना ।

पूरी - भरना, पूरा करना, संतुष्ट करना, प्रसन्न करना ।

तूरी—शीघ्रता से जाना, शीघ्रता करना, हानि पहुँचाना, मारना ।

धूरी, गूरी—जाना, हानि पहुँचाना, पुराना होना ।

घूरी, जूरी—मारना, हानि पहुँचाना, पुराना या वृद्ध होना ।

शूरी—मारना, हानिपहुँचाना, दृढ़ रहना ।

चूरी—जलाना ।

तप्—जलना या शक्तिशाली होना ।

वृतु—चुनना, प्रसन्न करना ।

क्लिश्—दुःखी होना, कष्ट पाना ।

काश्—चमकना ।

वाश्—शब्द करना, चहचहाना ( चिड़ियोंका ), गर्जना ।

मृष्—सहन करना ।

शुचिर्—स्नान करना ।

णह्—बाँधना ।

रञ्ज्—रँगा जाना ।

शप्—शाप देना, बुरा भला कहना ।

पद्—जाना ।

खिद्—दुःखी होना, कष्ट पाना ।

विद्—रहना, होना ।

बुध्—जानना, देखना ।

युध्—लड़ना, युद्ध करना ।

अनुरुध—चाहना, इच्छा करना, आज्ञा मानना ।

अण्—जीवित रहना, साँस लेना ।

मन्—सोचना, समझना, विश्वास करना ।

युज्—मन एकाग्र करना ।

सृज्—छूटना ।

लिश्—घटना, छोटा होना, कम होना ।

राध्—समृद्ध या उन्नत होना, बढ़ना ।

व्यध्—बेधना ( वाण, भाला ) ।

पुष्—पोषण करना, पुष्ट करना ।

शुष्—सूखना ।

तुष्—प्रसन्न या संतुष्ट होना ।

दुष्—बुरा या दुष्ट होना ।

श्लिष्—आलिंगन करना ।

शक्—सकना, योग्य होना ।

ष्विदा—पसीना होना, स्वेद निकलना ।

क्रुध्—क्रोध करना ।

क्षुध्—भूख लगना, क्षुधित होना ।

शुध्—पवित्र या शुद्ध होना ।

षिधु—पूरा होना, पूर्ण होना ।

रध्—हानि पहुँचाना, कष्ट देना, पूर्ण होना ।

णश्—नष्ट होना ।
तृप्—प्रसन्न होना, संतुष्ट होना, तृप्त होना ।
दृप्—अत्यन्त प्रसन्न होना, गर्वित होना, मूर्ख होना ।
द्रुह्—घृणा करना, शत्रुता करना, हानि पहुँचाने का अवसर ढूंढ़ना ।
मुह्—मूर्च्छित होना, विवेकशून्य हो जाना ।
ष्णुह्—क्य करना, वमन करना, उगिलना ।
ष्णिह—प्रेम करना ।
शमु—शान्त रहना या होना ।
तमु—चाहना, इच्छा करना, शरीर या मन से दुःखी होना ।
दमु—शान्त करना, पालतू बनाना ।
श्रमु—तप करना, दुःखी होना, थकना, कष्ट उठाना ।
क्षमू—सहन करना ।
क्लमु—थक जाना ।
मदी - प्रसन्न होना ।
असु—फेंकना ।
यसु—प्रयत्न करना, श्रम करना ।
जसु—मुक्त कर देना, छोड़ देना ।
तसु, दसु—क्षीण होना, मुरझाना, थक जाना ।
वसु—स्थिर करना, जोड़ना ।
व्युष्—अलग करना, विभक्त करना ।
प्लुष्—जलना, जलाना ।
बिस्—उत्तेजित करना, उसकाना ।
कुस्—आलिंगन करना, घेरना ।
बुस्—छोड़ना, उड़ेलना, विभक्त करना ।
मुस्—फाड़ना, तोड़ना, अलग करना ।
मसी—तौलना, नापना, आकार बदलना, रूपान्तर करना ।
लुट्—पृथ्वी पर लुढ़काना ।
उच्—उपयुक्त होना, योग्य होना, फिट होना ।
भृशु, भ्रंशु—नीचे गिरना ।
वृश्—चुनना, पसन्द करना ।
कृश्—पतला होना, दुर्बल होना, कम होना ।
ञितृष्—प्यासा होना, प्यास लगना ।
हृष्—हर्षित होना, प्रसन्न होना ।
रुष्, रिष्—क्रुद्ध होना, हानि पहुँचाना, कष्ट देना ।
डिप्—फेंकना ।
कुप्—क्रोध करना ।
गुप्—व्याकुल होना, क्षुब्ध होना ।
युप्, रुप्, लुप्—कष्ट देना, मिटाना, नष्ट करना ।
ष्तूप्—राशि लगाना, इकट्ठा करना, उठाना ।
लुभ्—लालच करना ।
क्षुभ्—व्याकुल होना, क्षुब्ध होना ।
णभ्, तुभ्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
क्लिदू—गीला होना, आर्द्र होना ।
ञिमिदा—स्निग्ध होना, तैलयुक्त होना, चिकना होना, स्नेह ( प्रेम ) करना ।
ञिक्ष्विदा—स्निग्ध होना, तैलयुक्त होना, चिकना होना, प्रेम करना ।
ऋधु—उन्नत होना, बढ़ना ।
गृधु—लालच करना, इच्छा करना, चाहना ।
मृग्—तलाश करना, ढूढ़ना ।

इति दिवादि-प्रकरणम् ।

## अथ स्वादि-प्रकरणम्

षुञ्—नहलाना, स्नान कराना, निचोड़ना, नहाना, शराब टपकाना ।
षिञ्—बाँधना ।
शिञ्—तेज करना ।
डुमिञ्—फेंकना, बिखेरना, छिड़काना ।
चिञ्—चुनना ।
स्तृञ्—ढाकना ।
कृञ्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
वृञ्—चुनना, पसन्द करना ।
धुञ्—काँपना, हिलना हिलाना ।

टुदु—कष्ट देना, जलाना ।
हि—जाना, उन्नत करना ।
पृ—प्रसन्न करना ।
स्पृ—प्रसन्न करना, रक्षा करना, चलना ।
आप्लृ—व्याप्त होना, फैलना ।
शक्लृ—योग्य होना, समर्थ होना, सकना ।
राध्, साध्—सिद्ध करना, पूरा करना ।
अशू—फैलना, व्याप्त होना, इकट्ठा होना या करना ।
ष्टिघ्—आक्रमण करना, चढ़ाई करना ।
तिक्, तिग्—जाना, आक्रमण करना, चढ़ाई करना ।
षघ—हानि पहुँचाना, कष्ट देना, मारना ।
ञिधृषा—गर्व युक्त होना, ढीठ होना, ढिठाई करना ।
दम्भु—धोखा देना, ठगना, हानि पहुँचाना ।
ऋधु—उन्नत होना, बढ़ना ।
तृप्- प्रसन्न होना, संतुष्ट होना ।
अह्—व्याप्त होना, फैलना ।
दघ—मारना, हानि पहुँचाना, कष्ट देना, रक्षा करना ।
चमु—भोजन करना, पालन करना ।
रि, क्षि, चिरि, जिरि, दाश्, दृ—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।

इति स्वादि-प्रकरणम् ।

## अथ तुदादि-प्रकरणम्

तुद्—कष्ट देना, दुःख देना ।
णुद्—भेजना, आगे बढ़ाना, हाँकना ।
दिश—देना, स्वीकृति देना ।
भ्रस्ज्—पकाना, भूनना ।
क्षिप्—भेजना, फेंकना ।
कृष्—हल जोतना ।
ऋषी—जाना ।
जुषी—प्रसन्न होना, सेवा करना ।
ओविजी-भयभीत होना, घबराना, काँपना, व्याकुल होना ।
ओलजी, ओलस्जी—लजाना, लज्जित होना ।
ओव्रश्चू—काटना, फाड़ना ।
व्यच्—धोखा देना ।
उछि—दाना चुनना, एक-एक दाना इकट्ठा करना ।
उछी—छोड़ देना, रोक देना, पूरा करना, समाप्त करना ।
ऋच्छ्—जाना, कड़ा होना, सामर्थ्य रहित होना, शक्ति-रहित होना ।
मिच्छ—रोकना, विघ्न डालना, उद्विग्न करना ।
जर्ज्, चर्च्, झर्झ्—कहना, बात करना, दोषारोपण करना, डाटना ।
त्वच्—ढाकना, खोल चढ़ाना ।
ऋच्—प्रशंसा करना ।
उब्ज—सीधा करना, सरल करना ।
उज्झ—त्यागना, छोड़ना ।
लुभ्—व्याकुल करना, घबराना ।
रिफ्—डींगमारना, कर्कश शब्द करना, युद्ध करना, लड़ना, दोषारोपण करना, कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना, देना ।
तृप, तृम्फ्—संतुष्ट होना ।
तुप्, तुम्प्, तुफ्, तुम्फ्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना ।
दृप्, दृम्फ्—पीड़ा देना, कष्ट देना, पीड़ित करना ।
ऋफ्, ऋम्फ्—कष्ट देना, पीड़ा देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
गुफ्, गुम्फ्—बुनना, गूँथना, बाँधना ।
उभ्, उम्भ्—भरना ।
शुभ शुम्भ्—अच्छा मालूम पड़ना, शोभायमान होना ।
दृभी—बाँधना, गूँथना ।
चृती—कष्ट देना, मारना, बाँधना, जोड़ना ।
विध्—शासन करना, हुकूमत करना ।
जुड्—जाना ।
मृड्, पृड्—हर्षित होना, प्रसन्न होना ।

पृण् वृण्—प्रसन्न करना ।
मृण्—हानि पहुँचाना, मारना ।
तुण्— मोड़ना, टेढ़ा करना, झुकाना ।
पुण्—सत्कर्म करना, अच्छा काम करना ।
मुण्—प्रतिज्ञा करना ।
कुण्—शब्द करना, सहायता करना ।
शुन्—जाना ।
द्रुण्—हानि पहुँचाना, कष्ट देना, जाना, टेढ़ा करना, झुकाना ।
घुण, घूर्ण्—घूमना, लड़खड़ाना ।
षुर्—शासन करना, चमकाना ।
घुर्—शब्द करना ।
खुर्—खुरचना, काटना ।
मुर्—घेरना, लपेटना ।
क्षुर्—पंक्ति बनाना, कूँड़ बनाना ।
घूर्—भयानक होना, करुण क्रन्दन करना, घुरघुराना ।
पुर्—आगे आगे चलना ।
वृह्—बढ़ाना, बढ़ना, विस्तृत होना ।
तृह्,स्तृह्, तृंह्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
इष्—इच्छा करना, चाहना ।
मिष्—स्पर्धा करना, होड़ लगाना ।
किल्—सफेद होना, क्रीड़ा करना ।
तिल्—तैल युक्त होना ।
चिल्—वस्त्र पहिनना, वस्त्र धारण करना ।
चल्—क्रीड़ा करना ।
इल्—सोना,फेंकना ।
विल्—ढाकना, छिपाना ।
बिल्—फाड़ना, अलग करना ।
णिल्—गम्भीर होना, कड़ा होना, छिपना, मरना ।
हिल्—कामी व्यक्ति के समान क्रीड़ा करना ।
शिल्, षिल्—दाना बीनना ।
मिल्—मिलना, भेंट करना ।
लिख्— लिखना ।
कुट्—टेढ़ा होना ।
पुट्—आलिंगन करना, लपेटना ।
कुच्—सिकुड़ना ।
गुज्—शब्द करना, भनभनाना ।
गुड्—सुरक्षा करना, बचाना ।
डिप्—फेंकना, भेजना ।
छुर्—काटना, विभक्त करना ।
स्फुट्—विकसित होना ।
त्रुट्—दोषारोपण करना, झिड़कना, कुचलना ।
त्रुट्—तोड़ना, फाड़ना ।
तुट्—झगड़ा करना ।
चुट्, छुट्—काटना, अलग करना ।
जुट्—बाँधना ।
कड्—विचलित होना, व्याकुल करना ।
लुट्—मिलाना या मिलना ।
कृड्—एकत्र होना ।
कुड्—बच्चों की तरह खेलना या काम करना ।
पुड्—छोड़ देना, त्याग देना ।
घुट्—मारने वाले को मारना ।
तुड्—तोड़ना, अलग करना, फाड़ना ।
थुड्, स्थुड्—ढाकना, पर्दा डालना ।
स्फुर्, स्फुल्—फड़कना, धड़कना, हिलना, काँपना ।
स्फुड्, चुड्, व्रुड्—ढाकना ।
क्रुड्, भृड्—डूबना, डुबकी लगाना ।
हुड्—इकट्ठा करना या होना ।
गुरी—प्रयत्न करना ।
णू—प्रशंसा करना ।
धू—हिलाना, कँपाना ।
गु—मल त्याग करना ।
ध्रु—जाना, स्थिर होना ।
कुङ् शब्द करना ।
पृङ्—व्यस्त होना, काम में लगना ।
मृङ्—मरना ।
रि, पि—जाना ।
धि—धारण करना, रखना, अधिकार करना ।
क्षि—रहना, ठहरना, जाना ।
षू—उत्तेजित करना, प्रेरित करना, उसकाना, लगाना ।
कॄ—बिखेरना, छीटना ।

गॄ—निगलना ।
दृङ—आदर करना, सम्मान करना ।
धृङ्—रहना, होना ।
प्रच्छ्—पूछना, प्रश्न करना ।
सृज्—छोड़ना ।
टुमस्जो—स्नान करना ।
रुजो—टुकड़े करना, नष्ट करना ।
भुजो—टेढ़ा करना, झुकाना ।
छुप्—स्पर्श करना या छूना ।
रुश्, रिश्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
लिश्—जाना ।
स्पृश्—स्पर्श करना, छूना ।
विच्छ—जाना ।
विश्—घुसना, प्रवेश करना ।
मृश्—घिसना, थपथपाना, स्पर्श करना, पकड़ना ।
णुद्—भेजना, प्रेरित करना, उत्तेजित करना ।
षद्लृ—विश्राम करना, सहारा लेना, लेटना, जाना, विपन्न होना, शिथिल होना ।
शद्लृ—गिरना, नष्ट होना, मुरझाना ।
मिल्—मिलना, एकत्र होना, साथ देना ।
मुच्लृ—मुक्त कर देना, छोड़ देना, ढीला करना ।
लुप्लृ—काटना, तोड़ना ।
विद्लृ—पाना, प्राप्त करना ।
लिप्—लेप करना, मालिश करना, ढाकना, बढ़ाना ।
षिच्—छिड़कना, सींचना, आर्द्र करना ।
कृती—काटना ।
खिद्—मारना, प्रहार करना, दवाना, दुःखी करना ।
पिश्—आकार बनाना, सजाना ।

इति तुदादयः ।

## अथ रुधादि-प्रकरणम्

रुधिर्—ढाकना रोकना, घेरना, विरोध करना, दवाना ।
भिदिर्—तोड़ना, फाड़ना ।
छिदिर्—काटना, दो टुकड़े करना ।
रिचिर्—शुद्ध करना, पेट साफ करना, खाली करना ।
विचिर्—अलग करना, अन्तर करना ।
क्षुदिर्—कुचलना, पीसना ।
युजिर्—जोड़ना, मिलाना ।
उच्छृदिर्—चमकना, जुआ खेलना ।
उतृदिर्—मारना, नष्ट करना अनादर करना ।
कृती—घेरना ।
ञिइन्धी—जलाना, दीप्त करना ।
खिद्—कष्ट पाना, दुःखी होना ।
विद्—विचार करना, ध्यान देना ।
शिष्लृ—विशेषता बनाना, आदर करना ।
पिष्लृ—पीसना, चूर्ण करना ।
भञ्जो—तोड़ना, फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना ।
भुज—पालन करना, रक्षा करना, खाना ।
तृह्, हिसि—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
उन्दी—गीला करना, आर्द्र करना, नहलाना ।
अञ्जू—मलना, चमकना, जाना ।
तञ्चु—संकुचित करना, कम करना, सिकोड़ना ।
ओविजी भयभीत होना, हिलना, उद्विग्न होना ।
वृजी—मना करना, रोकना, निषेध करना ।
पृची—संपर्क में लाना, मिलाना, मिलना ।

इति रुधादिप्रकरणम् ।

## अथ तनादिप्रकरणम्

तनु—फैलाना, विस्तृत करना ।
षणु—देना ।
क्षणु, क्षिणु—हानि पहुँचाना, कष्ट देना, मारना ।
ऋणु—जाना ।
तृणु—घास खाना, चरना ।
घृणु—चमकना, जलना ।
वनु—माँगना, प्रार्थना करना ।
मनु—समझना, मानना ।
डुकृञ्—करना ।

इति तनादिप्रकरणम् ।

## अथ क्र्यादिप्रकरणम्

डुक्रीञ्—खरीदना, द्रव्य का अदल-बदल करना ।
प्रीञ्—प्रसन्न करना, प्रसन्न होना, चाहना, इच्छा करना ।
श्रीञ्—पकाना ।
मीञ्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
षिञ्—बाँधना ।
स्कुञ्—ढाकना, फैलाना, छितराना ।
स्तन्भु, स्तुन्भु, स्कन्भु, स्कुन्भु, स्कुञ्—रोकना, विघ्न डालना ।
युञ्—बाँधना ।
क्नूञ्—चरचर शब्द करना ।
द्रूञ्—हानि पहुँचाना, कष्ट देना ।
पूञ्—शुद्ध करना, साफ करना, पवित्र करना ।
लूञ्—काटना, लवाई करना ।
स्तॄञ्—ढाँकना ।
कॄञ्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
वॄञ्—चुनना, पसन्द करना, वरण करना ।
धूञ्—हिलाना, कँपाना, क्षुब्ध करना ।
शॄ—कष्ट पहुँचाना, हानि करना, मारना ।
पॄ—पालन-पोषण करना, भरना ।
वॄ—चुनना, पसन्द करना ।
भॄ—दोषारोपण करना, डाटना, फटकारना, आश्रय देना ।
मॄ—मारना, कष्ट देना, हानि पहुँचाना ।
दॄ—चुभना, फाड़ना ।
जॄ, झॄ, धॄ—पुराना होना, मुरझाना, वृद्ध होना ।
नॄ—ले जाना, नेतृत्व करना, जाना ।
कॄ—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
ॠ—जाना ।
गॄ—शब्द करना, बुलाना, उत्तेजित करना, घोषणा करना ।
ज्या—पुराना होना, नष्ट होना, क्षीण होना ।
री—जाना, गुर्राना, भेड़िये का गुर्राना ।
ली—चिपकना, सटना, पिघलना ।
व्ली, प्ली—जाना, पसन्द करना, सहारा देना ।
व्री—चुनना ।
भ्री—डरना ।
क्षीष—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
ज्ञा—जानना ।
बन्ध्—बाँधना ।
वृङ्—अलग करना, विभक्त करना ।
श्रन्थ—ढीला करना, बन्धन से छुटकारा देना, बार बार प्रसन्न होना ।
मन्थ—मथना, क्षुब्ध करना ।
श्रन्थ्, ग्रन्थ—लिखना, रचना, करना ।
कुन्थ्—चिपकना, मिलना, कष्ट पाना ।
मृद्, मृड्—निचोड़ना, दवाना, घिसना, मलना ।
गुध्—क्रोध करना ।

कुष्—फाड़ना, सत्त निकालना, खींचना ।
क्षुभ्—हिलाना, क्षुब्ध करना ।
णभ्, तुभ्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना ।
क्लिशू—कष्ट देना, पीड़ित करना ।
अश्—भोजन करना ।
उध्रस्—फेंकना, उछालना, लवन के बाद छूटा हुआ अन्न बीनना ।
इष्—शीघ्रता से चलाना, उड़ाना, फेंकना ।
विष्—अलग करना ।
प्रुष, प्लुष्—गीला या आर्द्र होना, उड़ेलना, छिड़कना, भरना ।
पुष्—पालन पोषण करना, आश्रय देना, सहारा देना ।
मुष्—चुराना, चोरी करना ।
खच्, हिठ्—प्रकट होना, पुनर्जन्म होना ।
ग्रह—पकड़ना, लेना ।

इति क्र्यादिप्रकरणम् ।

## अथ चुरादिप्रकरणम्

चुर्—चुराना ।
चिति—सोचना, विचार करना, चिन्ता करना ।
यत्रि—रुकावट डालना, रोकना ।
स्फुडि, स्फुटि—मजाक करना, परिहास करना, उपहास करना ।
लक्ष्—देखना, चिह्न लगाना, सूचित करना ।
कुद्रि—झूठ बोलना ।
लड—प्यार करना, लाड़ दुलार करना ।
मिदि—प्रेम करना, तैल युक्त होना ।
ओलडि, उलडि—उछालना, ऊपर की ओर फेंकना ।
जल्—ढाकना, पर्दा डालना ।
पीड्—दुःख देना, पीड़ित करना ।
नट्—नाचना, गिरना, कष्ट देना, हानि पहुँचाना ।
श्रथ्—प्रयत्न करना, जाना ।
बध्—रोकना, बाधा डालना ।
पॄ—भरना ।
ऊर्ज्—दृढ़ करना, जीना, साँस लेना ।
पक्ष्—लेना, पकड़ना, पक्षपात करना ।
वर्ण्, चूर्ण—प्रेरित करना, भेजना, वर्णन करना ।
प्रथ—फैलाना, घोषणा करना ।
पृथ्—फेंकना ।
षम्ब्, शम्ब्, साम्ब्—इकट्ठा करना, राशि बनाना ।
भक्ष्—भोजन करना ।
कुट्ट्—काटना, अलग करना, दोषारोपण करना, डाटना ।
पुट्ट, चुट्ट—छोटा होना, घटना ।
अट्ट, षुट्ट—घृणा करना, अनादर करना ।
लुण्ट्—चुराना ।
शठ, श्वठ्—अधूरा छोड़ना, जाना ।
तुजि, पिजि—हानि पहुँचाना, मारना, दृढ़ या शक्तिशाली होना, देना, लेना ।
तुज्, पिज्, लजि—जीवित रहना, रहना ।
पिस्—जाना ।
षान्त्व्—शान्त करना, सान्त्वना देना, मनाना, खुश करना ।
श्वल्क्, वल्क्—कहना, वर्णन करना ।
ष्णिह्, स्फिट्—तैल युक्त करना, प्रेम करना ।
स्मिट्, स्मिङ्—अनादर करना ।
श्लिष्—जोड़ना, सम्मिलित करना ।
पथि—यात्रा करना, जाना ।
पिच्छ्—काटना, अलग करना ।
छदि—ढाकना ।
श्रण्—देना ।
तड्—पीटना, मारना ।
खड्, खडि, कडि—काटना, तोड़ना, अलग करना ।
कुडि—रक्षा करना, बचाना ।

गुडि, कुठि—घेरना, ढाकना।

खुडि—टुकड़े करना, अलग करना।

वटि, वडि—बाँटना।

मडि—सजाना, प्रसन्न होना, आनन्द लेना।

भडि—भाग्यशाली बनाना।

छर्द्—कै करना, वमन करना।

पुस्त्, बुस्त—आदर करना, अनादर करना।

चुद्—प्रेरित करना, भेजना, कहना।

नक्क्, धक्क्—सर्वनाश कर देना।

चक्क्, चुक्क्—कष्ट पाना, कष्ट देना।

क्षल्—धोना, साफ करना, पवित्र करना।

तल्—स्थापित करना।

तुल्—तौलना।

दुल्—झूला झुलाना।

पुल्— ऊँचा होना, महान् होना।

चुल्—ऊँचा उठाना, ऊँचा करना।

मूल्—पौधा लगाना, बढ़ाना, उगाना।

कल्, बिल्—पकड़ना, ढोना, सहन करना, ले जाना।

बिल्—तोड़ना, अलग करना।

तिल्—तैलयुक्त होना, मालिश करना।

चल्—जीना, रहना।

पाल्—रक्षा करना।

लूष्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, आघात करना।

शुल्ब्-शूर्प्—नापना, उत्पन्न करना।

चुट्—तोड़ना, काटना।

मुट्, पडि—कुचलना, तोड़ना, चूर्ण करना।

पसि—नष्ट करना।

व्रज्, व्रज्—परिष्कार करना, तैयार करना, जाना।

शुल्क्—लाभ उठाना, मूल्य चुकाना, देना, स्पर्श करना।

चपि—जाना।

क्षपि—सहन करना।

छजि—कष्ट में या विपत्ति में जीवन बिताना।

श्वर्त्, श्वभ्र्—जाना।

ज्ञप्—जानना, जनाना।

यम्—घेरना, लपेटना।

चप्, चह्—धोखा देना, रहित होना।

रह्—छोड़ देना, त्याग देना।

बल्—दृढ़ करना, जीना।

चिञ्—इकट्ठा करना।

घट्ट्—हिलाना।

मुस्त्—इकट्ठा करना, राशि लगाना।

खट्ट्—ढाकना, पर्दा डालना।

षट्ट्, स्फिट्ट्, चुबि—हानि पहुँचाना, कष्ट देना, आघात करना, मारना।

पुल्, ब्युष्, पुल्, पूर्ण्, पुण्—इकट्ठा करना, संग्रह करना।

पुंस्—कुचलना, पीसना, कष्ट देना।

व्यप्, व्यय्—फेंकना।

रधिक—बाँधना।

धूस्—सजाना, सुसज्जित करना।

कीट्—रंगना, बाँधना।

चूर्ण्—संकुचित करना, सिकोड़ना, बन्द करना।

पूज् पूजा करना।

अर्क्—प्रशंसा करना, गर्म करना।

शुठ्—आलस्य करना।

शुठि—सूखना।

जुड्—प्रेरित करना, भेजना।

मर्च्-गज्, मार्ज्—शब्द करना, गरजना।

घृ—सींचना, छिड़कना, गीला करना।

पचि—विस्तृत व्याख्या करना, फैलाना, विस्तार करना।

तिज्—तेज करना, तीखा करना।

कृत्—नाम लेना, उद्धृत करना, बुलाना।

वर्ध्—काटना, अलग करना, भरना।

कुबि—ढाकना।

लुबि, तुबि—लुप्त हो जाना, न दिखाई पड़ना।

ह्लप्—बोलना, शब्द करना।

त्रुटि—काटना, तोड़ना, अलग करना।

मृडि, तुडि, इल्—प्रेरित करना, भेजना।

म्रक्ष—अस्पष्ट बोलना, लगाना, मालिश करना, इकट्ठा करना।

म्लेच्छ—असभ्यता से बोलना, व्याकुलता से बोलना।

ब्रूस्, बर्ह्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना।

गर्ज् , गर्द्—गरजना, शब्द करना ।
गर्ध्—लालची होना, इच्छा करना ।
गुर्द्, पुर्व्, पूर्व्—रहना, निवास करना ।
जसि—रक्षा करना, मुक्त कर देना ।
ईड्—प्रशंसा करना ।
जसु—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
पिडि—इकट्ठा करना, राशि लगाना ।'
रुष् , रुट्—क्रुद्ध होना ।
डिप्—फेंकना ।
ष्टुप्—उठाना, ऊँचा करना, खड़ा करना ।
चित्—समझना, ध्यान देना ।
दशि—काटना ।
दसि—देखना, काटना ।
डप् , डिप्—इकठ्ठा करना, राशि लगाना ।
तन्त्रि—कुटुम्ब का पालन पोषण करना, कुटुम्ब को सहारा देना ।
मन्त्रि—सम्मति लेना, सम्मति देना, मन्त्रणा करना ।
स्पश्—लेना, मिलना ।
तर्ज् , भर्त्स्—धमकाना, डाटना, फटकारना ।
वस्त् , गंध्—कष्ट देना, पीड़ित करना ।
विष्क् , हिष्क—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
निष्क्—तौलना, नापना ।
लल्—प्यार करना, इच्छा करना ।
कूण्—संकुचित करना, कम करना, बन्द करना ।
तूण्—भरना ।
भ्रूण्—आशा करना, डरना ।
शठ्—प्रशंसा करना, डींग मारना ।
यक्ष्—पूजा करना ।
स्यम्—अनुमान करना, समझना ।
गूर्—प्रयत्न करना ।
शम्, लक्ष्—देखना, आलोचना करना, प्रदर्शित करना ।
कुत्स्—निन्दा करना, बुरा भला कहना ।
त्रुट्—काटना, तोड़ना, अलग करना ।
गल्—बहना ।
भल—वर्णन करना, व्याख्या करना ( देखना ) ।
कूट्—न देना, निन्दा करना, जलाना ।
कुट्ट्—जलाना ।
वञ्चु—धोखा देना, ठगना ।
वृष्—शक्तिशाली होना, प्रसिद्ध होना ।
मद्—प्रसन्न होना, संतुष्ट होना ।
दिवु—कष्ट सहना, विलाप करना, कराहना ।
गृ—जनाना, वर्णन करना, सिखाना ।
विद्—अनुभव करना, कहना, निवास करना ।
मान्—गर्व युक्त होना ।
यु—निन्दा करना ।
कुस्म्—बुरी तरह मुस्काना ।
चर्च्—अध्ययन करना ।
बुक्क्—भूकना, बोलना, शब्द करना ।
शब्द्—शब्द करना, पुकारना ।
प्रति शब्दयति—प्रतिज्ञा को प्रकट करता है ।
कण्—आँख मूँदना, बन्द करना ।
जभि—कुचलना, नष्ट करना ।
षूद्—मारना, कष्ट देना, उड़ेलना ।
जसु—मारना, पीटना, कष्ट देना ।
पश—बाँधना ।
अम्—रुग्ण होना ।
चट् , स्फुट्—चुभाना, तोड़ना ।
घट्—हानि पहुँचाना, आघात करना, मारना, एकत्र होना ।
दिवु—कष्ट देना ।
भर्ज्—तैयार करना, उपार्जन करना ।
घुषिर्—शब्द करना, चिल्लाना, घोषणा करना ।
आक्रन्द—लगातार या बार बार शब्द करना ।
लस—किसी कला का अभ्यास करना ।
तसि, भूष्—सजाना, सुसज्जित करना ।
मोक्ष्—फेंकना घुमाकर फेंकना ।
अर्ह्—पूजा करना ।
ज्ञा—आज्ञा देना, निदेश देना ।
मज्—देना, पकाना ।
श्रधु—उपहास करना, अपमान करना ।
यत्—प्रयत्न करना, प्रोत्साहित करना ।
रक् , लग् , रग्—चखना, स्वाद लेना ।

अञ्च—विशेषता प्रकट करना।
लिगि—चित्र बनाना, चित्र रँगना।
मुद्—मिलाना, ।
त्रस्—पकड़ना, ग्रहण करना, मना करना।
उध्रस्—दाना बीनना।
मुच्—छोड़ना, प्रसन्न करना।
वस्—प्रेम करना, काटना, अलग करना, लेलेना।
चर्—सन्देह करना।
च्यु, च्युस्—हसना, कष्ट सहना।
भुव्, कृपि—मिलाना, सोचना।
ग्रस्—खाना, भोजन करना, लेना।
पुष्—पहिनना।
दल्—फाड़ना, तोड़ना।
पट्, पुट्, लुट्, तुजि, मिजि, पिजि, लुजि, भजि, लघि, त्रिसि, पिसि, कुसि, दशि, कुशि, घट्, घटि, बृहि, बर्ह्, बल्ह्, गुप्, धूप, विच्छ्, चीव्, पुथ्, लोकृ, लोचृ, णद्, कुप्, तर्क्, वृतु, वृधु—बोलना, चमकना।
रुट्, लजि, अजि, दसि, भृशि, रुशि, शीक्, रुसि, नट्, पुटि, जुचि, जिवि, जि, चि, रघि, लघि, अहि, रहि, महि,—बोलना, चमकना।
रडि, तड्, नल्—बोलना, चमकना।
पुरी—संतुष्ट करना, पूर्ण करना।
रुज्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना।
ष्वद्—चखना, स्वाद लेना।
युज्, पृच्—मिलना, मिलाना।
अर्च—पूजा करना।
षह्—सहन करना, सहाना।
ईर—फेंकना, जाना।
ली—पिघलना या पिघलाना।
वृजी—मना करना।
वृञ्—ढाकना।
जॄ, ज्रि—पुराना होना, जीर्ण होना।
रिच्—अलग करना, मिलाना।
शिष्—छोड़ देना, शेष रख देना।
तप्—जलाना, गर्म करना।
तृप्—संतुष्ट करना, प्रसन्न करना।
छृदी—जलाना।
दसी—डरना, भयभीत होना।
दृम्—बाँधना गूथना।
श्रथ्—खोलना, मारना, हानि पहुँचाना, आघात करना, कष्ट देना।
मी—जाना।
ग्रन्थ—गाँठ देना, बाँधना।
शीक्, चीक्—धैर्य धारण करना, शान्त रहना।
अर्द्, हिसि—कष्ट देना, आघात करना, मारना।
अर्ह्—पूजा करना।
आ, षद्—पास जाना, पहुँचाना।
शुन्ध्—शुद्ध होना, पवित्र होना, साफ होना।
छद्—ढांकना।
जुष्—तर्क करना, मारना, संतुष्ट होना।
धूञ्—हिलाना, चलायमान करना।
प्रीञ्—प्रसन्न करना, संतुष्ट करना।
श्रन्थ, ग्रन्थ्—बाँधना, रचना करना।
आप्लृ—प्राप्त करना।
तनु, चन्—विश्वास करना, सहायता करना, मारना।
वद् कहलाना, बजवाना ( बाजा )।
वच्—वाचना, पढ़ना, बोलना।
मान्—पूजा करना, आदर करना।
भू—प्राप्त करना, पाना।
गर्ह्—निन्दा करना, दोषी ठहराना।
मार्ग्—ढूँढ़ना।
कठि—शोक करना, दुःखी होना, विलाप करना।
मृजू—धोना, साफ करना, सजाना।
मृष्—सहन करना।
उत्, कठि—उत्कण्ठा करना।
धृष्—आक्रमण करना, कलंकित करना।
कथ्—कहना।
वर्—पसन्द करना, चाहना।
गण्—गिनना।
शठ्, श्वठ्—बुराभला कहना- अच्छी तरह बोलना।
पट्, वट्—बुनना, गूथना।
रह्—छोड़ना, मुक्त कर देना।

स्तन्, गदी—बादलों का गरजना, जोर से चिल्लाना।
पत्, पष्—जाना।
स्वर्—दोष निकालना, दोषी ठहराना, निन्दा करना।
रच्—प्रस्तुत करना, निर्माण करना, बनाना।
कल्—जाना, गिनना।
चह्—गर्व युक्त होना।
मह्—पूजा करना आदर करना।
सार्, कृप्, श्रथ्—दुर्बल होना।
स्पृह्—चाहना, इच्छा करना।
भाम्—क्रुद्ध होना।
सूच्—पता लगाना, सूचना देना, निश्चय करना।
खेट्, खोट्—खाना, भोजन करना।
क्षोट्—फेंकना।
गोम्—गोबर से लीपना।
कुमार्—क्रीड़ा करना।
शील्—अध्ययन करना, बार बार अभ्यास करना।
साम्—सान्त्वना देना, शान्त करना।
वेल्—समय की गणना करना, समय देखना।
पल्यूल्—लवाई करना, साफ करना, ओसाना, साबुन से कपड़ा साफ करना।
वात्—जाना, प्रसन्न करना, सेवा करना।
गवेष्—ढूँढ़ना।
वास्—सुगन्धित करना, मसाला डालना या लगाना।
निवास्—कपड़ा पहिनना या पहिनाना।
भाज्—विभक्त करना, अलग करना।
समाज्—प्रसन्न करना, दिखाना।
ऊन्—छोड़ देना, कम करना, कम होना।
ध्वन्—शब्द करना।
कूट्—दुःखी होना।
सङ्केत्, ग्राम्, कुण्, गुण्—आमन्त्रित करना।
केत्—विद्वान् होना, निमन्त्रित करना, सुनना।
कूण्—आमन्त्रित करना, संकुचित करना, कम होना।
स्तेन्—चुराना।
पद्—जाना।
गृह—लेना, स्वीकार करना।
मृग्—ढूँढ़ना।
कुह्—आश्चर्य में डालना, धोखा देना।
शूर्, वीर्—शूरता या वीरता करना, शक्तिमान् होना।
स्थूल्—बड़ा या स्थूल होना, बलवान् होना।
अर्थ्—प्रार्थना करना, माँगना, चाहना।
सत्र्—यज्ञ करना।
गर्व्—गर्व करना, गर्वयुक्त होना।
सूत्र्—बाँधना।
मूत्र्—पेशाब करना।
रूक्ष्—कठोर या रूखा होना।
पार्, तीर्—कार्य को पूर्ण करना।
पुट्—रचना करना, संग्रह करना।
धेक्—देखना।
कत्र्—शिथिलता करना।
पटयति—पटु शब्द कहता है।
अश्वयति—घोड़े से जाता है।
असयति—तलवार से मारता है।
हस्तयति—हाथी से जाता है।
वष्क्—देखना।
चित्र्—चित्र बनाना, देखना।
अंस—अलग करना, विभक्त करना।
वट्—बाँटना।
रट्—बोलना, रटना।
लज्, वटि—स्पष्ट करना।
मिश्र—मिलाना।
सङ्ग्राम्—युद्धकरना।
स्तोम्—प्रशंसा करना।
छिद्र, कर्ण—कान छेदना।
अन्ध्—अन्धा होना।
दण्ड्—दण्ड देना।
अङ्क्, अङ्ग्—चिह्न लगाना, पग धरना।
सुख्—सुखी करना।
दुःख्—दुःखी करना।
रस्—स्वाद लेना, प्रसन्न करना।
व्यय्—खर्च करना।
रूप् सौन्दर्य प्रदान करना।
छेद्—दो टुकड़े करना।

छद्—मना करना।
लाभ्—प्रेरित करना, भेजना।
व्रण्—घाव करना।
वर्ण्—रँगना, श्रम करना, विस्तृत करना, प्रशंसा करना, व्याख्या करना, पालिश करना, चमकाना।
पर्ण्—हराभरा करना।
विष्क्—देखना।
क्षप्—भेजना, प्रेरित करना।
वस्—रहना।
तुत्थ्—ढाकना।
आन्दोल्—आन्दोलन करना।
विडम्ब्—विडम्बना करना।
हस्तयते—हाथ फेंकता है।
पादयते—पैर फेंकता है।
श्वेतयते—सफेद घोड़े से जाता है या सफेद घोड़ा कहता है।
अश्वयते—खच्चर से जाता है या खच्चर कहता है।
गालोडयते—वाणी की विवेचना करता है।
आह्वरयते—कुटिल बनाता है, कष्ट पहुँचाता है।

इति चुरादिप्रकरणम्।

# अथ णिच्प्रकरणम्

भावयति—वह किसी को समझाता है।
भावयते—वह अपने आप को समझाता है।
अबीभवत्—उसने समझाया।
अपीपवत्—उसने साफ कराया।
अमीभवत्—उसने बँधवाया।
अयीयवत्—उसने मिलवाया या अलग कराया।
अरीरवत्—उसने शब्द कराया।
अलीलवत्—उसने कटवाया।
अजीजवत्—उसने भिजवाया।
असिस्रवत्—उसने बहवाया।
असुस्रवत्— „ „
अशशासत्—उसने शिक्षा दिलवाई।
अडुढौकत्—उसने भिजवाया, चलाया।
अचीचकासत्—उसने खँसवाया।
अचचकासत्— „ „
चोरयति—चुरवाता है।
अशूशवत्—भिजवाया, चलवाया।
अशिश्वयत्— „ „
अवातस्तम्भत्—रोकवाया, धारण कराया।
पर्यसीषिवत्—सिलवाया।
न्यसीषहत्—सहवाया।
आटिटत्—घुमाया।
आशिशत्—इकट्ठा कराया, फैलवाया।
मामवानिदिधत्—आपने नहीं बढ़वाया।
मामवान् प्रेदिधत्— „
औन्दिदत्—गीला कराया।
आड्डिडत्—बहस कराया, मुकदमा चलवाया।
आर्चिचित्—पूजा करायी।
औब्जिजत्—सीधा कराया।
अदिद्रपत्—चलाया, भिजवाया।
अररम्भत्—आरम्भ कराया।
अललम्भत्—प्राप्त कराया।
अगीहयत्—भिजवाया।
असस्मरत्—स्मरण कराया।
अददरत्—विदीर्ण कराया।
अववेष्टत्—लपेटवाया, सजवाया, घिरवाया।
अविवेष्टत्— „ „
अचचेष्टत्—प्रयत्न कराया।
अचिचेष्टत्— „ „
अबिभ्रजत्, अबभ्राजत्—चमकाया, प्रकाशित कराया, सुशोभित कराया।
अचीकणत्, अचकाणत्—आँख बन्द करायी।
असूषुपत्—सुलाया।
शाययति—पतला कराता है, छिलवाता है।

छाययति—कटवाता है ।
ह्वाययति—बुलवाता है ।
व्याययति—ढकवाता है ।
साययति—नष्ट कराता है ।
अजूहवत् , अजुहावत्—बुलवाया ।
अपीप्यत्—पिलाया ।
अर्पयति—प्राप्त कराता है अर्थात् देता है ।
ह्रेपयति—लजवाता है ।
ब्लेपयति—चलाता है ।
रेपयति—नाश कराता है ।
क्नोपयति—शब्द कराता या बुलवाता है ।
क्ष्मापयति—हिलवाता है ।
स्थापयति—रखाता या ठहराता है ।
अजिघ्रिपत् , अजिघ्रपत्—सुँघाया ।
अचीकृतत् , अचिकीर्तत्—कहलाया, वर्णन कराया ।
अवीवृतत् , अववर्तत्—उपस्थित किया ।
अमीमृजत् , अममार्जत्—शुद्ध कराया ।
पालयति—रक्षा कराता है, पालन कराता है ।
वाजयति—कँपाता या हिलाता है ।
वापयति केशान् - बालों को सुगन्धित कराता है ।
विलीनयति, विलाययति, विलालयति,
विलापयति वा घृतम्—घी पिघलाता है ।
लोहं विलापयति—लोहा गलाता है ।
विलाययति— " "
जटाभिर्लापयते—जटा से पूजा कराता है ।
श्येनोवर्तिकामुल्लापयते—बाज बटेर पर झपटता है ।
बालमुल्लापयते—बालक को धोखा देता है ।
मुण्डो भापयते—मुड़िया ( साधु ) डराता है ।
भीषयते—डराता है ।
जटिलो विस्मापयते—जटाधारी आश्चर्य में डालता है ।
कुञ्चिकयैनं भाययति—घुमची अथवा बाँस की टहनी से इसे डराता है ।
विस्माययति—आश्चर्य में डालता है ।

स्फावयति—बढ़ाता या बड़ा करता है ।
शातयति—कटाता या गिराता है ।
गाः शादयति गोविन्दः—गोविन्द गायों को हाँकता या ले जाता है ।
रोपयति, रोहयति—लगाता या उगाता है ।
क्रापयति—खरीदवाता है ।
अध्यापयति—पढ़ाता है ।
जापयति—जितवाता है ।
अन्नं साधयति—अन्न तैयार करता है ।
सेधयति तापसं तपः—तपस्या तपस्वी को तत्त्वज्ञान कराती है ।
वापयति वाययति वा गाः पुरोवातः - सामने की हवा (पूर्वी हवा ? ) गायों को गर्भ धारण कराती है ।
गूहयति—छिपवाता या ढकवाता है ।
दूषयति—दूषित करता है ।
चित्तं दूषयति दोषयति वा कामः—काम चित्त को दूषित करता है ।
घटयति—कराता है ।
जनयति—पैदा करता है, उत्पन्न करता है ।
जरयति, जारयति—जीर्ण करता है ।
रजयति मृगान्—मृगों को शिकार खेलाता है, हिरनों का शिकार खेलता है ।
चपयति, चययति, चापयति, चाययति—चुनवाता है ।
रञ्जयति पक्षिणः—पक्षियों को खुश करता है ।
रञ्जयति मृगांस्तृणदानेन—घास देकर मृगों को प्रसन्न करता है ।
स्फारयति, स्फोरयति—फड़काता है ।
प्राणिणत्—जिलाया ।
गमयति—भेजता है ।
प्रत्याययति—समझाता है, विश्वास दिलाता है ।
अधिगमयति—समझाता है ।
घातयति—मरवाता है ।
ऐर्ष्यायत् , ऐर्षिष्यत्—ईर्ष्या ( डाह ) कराया ।

इति ण्यन्तप्रक्रियाप्रकरणम् ।

# अथ सन्नन्तप्रक्रियाप्रकरणम्

पिपठिषति—पढ़ना चाहता है।
जिघत्सति—खाना चाहता है।
ईर्ष्यियिषति, ईर्ष्यिषिषति—ईर्ष्या करना चाहता है।
रुरुदिषति—रोना चाहता है।
विविदिषति—जानना चाहता है।
मुमुषिषति—चुराना चाहता है।
जिघृक्षति—पकड़ना या ग्रहण करना चाहता है।
सुषुप्सति—सोना चाहता है।
पिपृच्छिषति—पूछना चाहता है।
चिकरिषति—बिखेरना या छीटना चाहता है।
जिगरिषति, जिगलिषति—निगलना चाहता है।
दिधरिषते—आदर करना चाहता है।
दिधरिषते—धारण करना या आश्रय देना चाहता हैं।
बुभूषति—होना चाहता है।
दिदीषते—देना चाहता है।
जुघुक्षति—ढकना या छिपाना चाहता है।
बिभित्सति—तोड़ना चाहता है।
यियक्षते—यज्ञ करना चाहता है।
विवर्धिषते—बढ़ना चाहता है।
तितृक्षति, तितृंहिसति—मारना चाहता है।
जिगीषति—जीतना चाहता है।
चिकीषति—चुनना चाहता है।
चिचीषति— ,, ,,
जिघांसति—मारना चाहता है।
जिगमिषति—जाना चाहता है।
प्रतीषिषति—समझाना चाहता है।
अधिजिगमिषति—समझना चाहता है।
जिगांस्यते—जाना चाहा जाता है।
अधिजिगांस्यति—स्मरण करना चाहा जाता है।
जिगंस्यते—जाना चाहा जाता है।
सञ्जिगंसते—मिलना चाहा जाता है।
अधिजिगांसते—पढ़ना चाहता है।
दिद्युतिषते, दिद्योतिषते—चमकना चाहता है।

रुरुचिषते, रुरोचिषते—चमकना या प्रसन्न होना चाहता है।
लिलिखिषति, लिलेखिषति—लिखना चाहता है।
दिदेविषति—खेलना चाहता है।
विवर्तिषते—रहना चाहता है।
एषिषिषति—इच्छा करना चाहता है।
दुद्यूषति, दिदेविषति—खेलना चाहता है।
सुस्यूषति, सिसेविषति—सीना मिलाना या जोड़ना चाहता है।
ईप्सति—प्राप्त करना चाहता है
ईर्त्सति, अर्दिधिषति—उन्नत होना चाहता है।
बिभ्रज्जिषति, बिभर्जिषति—भूनना चाहता है।
बिभ्रक्षति, बिभर्क्षति— ,, ,,
धिप्सति, धीप्सति, दिदम्भिषति—धोखा देना या नुकसान पहुँचाना चाहता है।
शिश्रीषति, शिश्रयिषति—आश्रय लेना या सम्पर्क में रहना चाहता है।
सुस्वूर्षति, सिस्वरिषति—शब्द करना या दुःखी होना चाहता है।
युयूषति, यियविषति – मिलाना या अलग करना चाहता है।
ऊर्णुनूषति, ऊर्णुनुविषति, ऊर्णुनविषति—ढाकना या छिपाना चाहता है।
बुभूर्षति, बिभरिषति—धारण करना या पालन करना चाहता है।
ज्ञीप्सति, जिज्ञपयिषति—जताना चाहता है।
सिसाषति, सिसनिषति—देना चाहता है।
तितांसति, तितंसति, तितनिषति—फैलाना या विस्तृत करना चाहता है।
श्वा मुमूर्षति—कुत्ता मरना चाहता है।
कूलं पिपतिषति—किनारा ( तट ) गिरना चाहता है।
पित्सति—गिरना चाहता है।
दिदरिद्रिषति, दिदरिद्रासति—दरिद्र होना चाहता है।
मित्सति, मित्सते—फेंकना या नष्ट करना चाहता है।
मित्सति—नापना चाहता है।

मित्सते—नापना या बदलना चाहता है ।
दित्सति—तोड़ना, काटना या देना चाहता है ।
दित्सते—रक्षा करना चाहता है ।
दित्सति, दित्सते—देना चाहता है ।
धित्सति—धारण करना, रखना या सहन करना चाहता है ।
धित्सति, धित्सते—धारण करना, रखना या देना चाहता है ।
रिप्सते—प्रारम्भ करना या आलिंगन करना चाहता है ।
लिप्सते—प्राप्त करना, पाना चाहता हैं ।
शिक्षति—समर्थ होना चाहता है ।
शिक्षति, शिक्षते—सहन करना चाहता है ।
पित्सति—गिरना चाहता हैं ।
रित्सति—मारना चाहता हैं
आरिरात्सति—प्रसन्न करना चाहता है ।
मोक्षते मुमुक्षवे वा वत्सः स्वयमेव—बछड़ा स्वयं मुक्त होना चाहता है ।
मुमुक्षति वत्सं कृष्णः—कृष्ण बछड़े को मुक्त करना चाहता है ।
विवृत्सति विवर्तिषते—रहना चाहता है ।
निनर्तिषति, निनृत्सति—नाचना चाहता है ।
तितरिषति, तितरीषति, तितीर्षति—पार करना या तैरना चाहता है ।
विवरिषति, विवरीषति, वुवूर्षति—पसन्द करना या चुनना चाहता है ।
वुवूर्षते, विवरिषते— ,, ,,
दुध्वूर्षति—कुटिलता करना चाहता है ।
सिस्मयिषते—मुस्कराना चाहता है ।
पिपविषते—साफ करना चाहता है ।
अरिरिषति—जाना चाहता हैं ।
अञ्जिजिषति—स्वच्छ करना, मालिश करना या जाना चाहता है ।
अशिशिषते—भोजन करना चाहता है ।
प्राणिणिषति—जीना चाहता है ।
उचिच्छिषति—छोड़ना चाहता है ।
अधिजिगापयिषति, अध्यापिपयिषति—पढ़ाना चाहता है ।
शिश्वाययिषति, शुशावयिषति—बढ़वाना चाहता है ।
जुहावयिषति—बुलाना चाहता है ।
पुस्फारयिषति—फड़काना या चमकाना चाहता है ।
चुक्षावयिषति—खँसाना चाहता है ।
पिपावयिषति—साफ कराना चाहता है ।
यियावयिषति—मिलवाना या अलग कराना चाहता है ।
विभावयिषति—समझवाना चाहता है ।
रिरावयिषति—शब्द कराना चाहता है ।
लिलावयिषति—कटवाना चाहता है ।
जिजावयिषति–भिजवाना अथवा शीघ्रता करना चाहता है ।
नुनावयिषति—स्तुति कराना या प्रशंसा कराना चाहता हैं ।
बुभूषति—होना चाहता है ।
सिस्रावयिषति, सुस्रावयिषति—गिराना या टपकाना चाहता हैं ।
शुश्रूषते—सेवा करना चाहता है ।
तुष्टूषति—स्तुति करना चाहता हैं ।
सुष्वापयिषति—सुलाना चाहता हैं ।
सिषाधयिषति—तैयार करना चाहता है ।
सिसिक्षति—सींचना चाहता है ।
परिषिषिक्षति—अच्छी तराह सींचना चाहता है ।
सिष्ठासति—ठहरना चाहता है ।
सुषुप्सति—सोना चाहता हैं ।
प्रतीषिषति—मान लेना चाहता है ।
अधीषिषति—अध्ययन करना चाहता है ।
सिस्वेदयिषति, सिस्यादयिषति—गीला कराना या पसीने में तर कराना चाहता हैं ।
सिसाहयिषति—सहाना चाहता है ।
अभिसुषूषति—छिड़कना, उड़ेलना या टपकाना चाहता है ।
आहिच्छत्रः—अहिच्छत्र में होने वाला ।
आहिच्छत्रीयः—आहिच्छत्र में होने वाला ।
दाक्षिडमती शाला—संन्यासियों वाला मकान ।
जुगुप्सिषते—निन्दा करना या घृणा करना चाहता है ।
मीमांसिषते—विचार करना चाहता है ।

इति सन्नतप्रक्रिया ।

# अथ यङ्प्रकरणम्

बोभूयते—वह बार बार अथवा अत्यधिक होता है।
पुनः पुनर्जागर्ति—बारबार जागता है।
भृशमीक्षते—वह बहुत देखता है।
रोरुच्यते—वह बारबार पसन्द करता है।
शोशुभ्यते— ,, शोभित होता है।
सोसूच्यते—बारबार अथवा अत्यधिक कुटिलता या संकेत करता है।
सोसूत्र्यते— ,, ,, लपेटता या मिलाता है।
सोमूत्र्यते— ,, ,, पेशाब करता है।
अटाट्यते— ,, ,, घुमाता है।
अरार्यते— ,, ,, जाता है।
अशाशिता— ,, ,, भोजन करेगा।
ऊर्णोनूयते— ,, ,, ढाकता या छिपाता है।
बेभिद्यते— ,, ,, तोड़ता या फोड़ता है।
वाव्रज्यते— ,, ,, चलता है, टेढ़ा मेढ़ा चलता है।
लोलुप्यते—वह बुरीतरह काटता है।
सासद्यते—वह बुरीतरह बैठता है।
चञ्चूर्यते, चंचूर्यते—वह बुरी तरह टहलता है।
जञ्जप्यते—वह बुरी तरह जप करता है।
पम्फुल्यते, पंफुल्यते— वह बुरी तरह फटता है।
जेगिल्यते—वह बुरी तरह निगलता है।
देदीयते—बारबार अथवा अत्यधिक देता है।
पेपीयते— ,, ,, पीता है।
सेषीयते— ,, ,, बाँधता है।
शोशूयते— ,, ,, जाता या बढ़ता है।
शेश्वीयते— ,, ,, ,,
सास्मर्यते— ,, ,, स्मरण करता है।
चेक्रीयते — ,, ,, मारता या करता है।
सञ्चेस्क्रीयते— ,, ,, संस्कार करता है।

निसेसिच्यते—बारबार अथवा अत्यधिक सींचता है।
कोकूयते, चोकूयते— ,, ,, शब्द करता या कूकता है।
वनीवच्यते— ,, ,, धोखा देता है।
सनीस्रस्यते— ,, ,, गिरता है।
यँय्यम्यते, यंयम्यते— ,, ,, देता है।
बाभाम्यते— ,, ,, क्रोध करता है।
जाजायते, जञ्जन्यते — ,, ,, उत्पन्न होता है।
जेघ्नीयते— ,, ,, मारता है।
जङ्गन्यते— वह बुरी तरह जाता है।
वरीवृत्यते—वह बारबार अथवा अत्यधिक रहता है।
नरीनृत्यते— ,, ,, नाचता है।
जरीगृह्यते— ,, ,, ग्रहण करता है।
चलीक्लृप्यते— ,, ,, समर्थ अथवा योग्य होता है।
परीपृच्छयते— ,, ,, पूछता है।
वरीवृश्च्यते— ,, ,, काटता है।
सोषुप्यते— ,, ,, सोता है।
सेसिम्यते— ,, ,, चिल्लाता है।
वेवीयते— ,, ,, ढाकता है।
वावश्यते— ,, ,, चाहता या चमकता है।
चेकीयते— ,, ,, पूजा करता है।
जेघ्रीयते— ,, ,, सूँघता है।
देध्मीयते— ,, ,, फूँकता है।
शाशय्यते— ,, ,, लेटता या सोता है।
डोढौक्यते— ,, ,, पास जाता या पहुँचता है।
तोत्रौक्यते— ,, ,, ,, ,,

इति यङ्प्रकरणम्।

## अथ यङ्लुक्प्रकरणम्

बोभवीति, बोभोति——वह बारबार अथवा अत्यधिक होता है।
पास्पर्धीति, पास्पर्द्धि——,, ,, होड़ करता है।
जागर्द्धि—— ,, ,, खड़ा होता या चाहता है।
नानत्ति—— ,, ,, माँगता या पीड़ा पहुँचाता हैं।
दादद्धि, दादधीति—— ,, ,, धारण करता या उपस्थित होता है।
चोस्कुन्दीति, चोस्कुन्ति ,, ,, कूदता या उठता है।
मोमुदीति, मोमोत्ति——,, ,, प्रसन्न होता हैं।
चोकूर्त्ति, चोकुर्दीति—— ,, ,, क्रीड़ा करता या खेलता है।
वनीवञ्चीति, वनीवङ्क्ति—— ,, जाता है।
जङ्गमीति, जङ्गन्ति—— ,, ,, जाता है।
जङ्घनीति, जङ्घन्ति——,, ,, मारता है।
आजङ्घते—— ,, ,, मारता है।
चङ्खनीति, चङ्खन्ति—— ,, खोदता है।
चञ्चुरीति, चञ्चूर्ति—— ,, ,, जाता या खाता है।
योयोति, योयवीति——,, ,, मिलाता या अलग करता है।
नोनवीति, नोनोति—— ,, ,, नमस्कार या प्रशंसा करता है।
जाहेति, जाहाति—— ,, ,, जाता या छोड़ता है।
सास्वपीति, सास्वप्ति—— ,, ,, सोता है।
वर्वृतीति, वरिवृतीति, वरीवृतीति,
वर्वर्ति, वरिवर्ति, वरीवर्ति——वह बारबार अथवा अत्यधिक रहता है।
चर्करीति, चर्कर्ति, चरिकर्ति, चरीकर्ति——वह बारबार अथवा अत्यधिक करता है।
चाकर्ति – वह बारबार अथवा अत्यधिक बिखेरता या उड़ेलता है।
तातर्ति—— ,, ,, पार करता है।
अरर्ति, अररीति—— ,, ,, जाता है।
अरियर्ति, अरियरीति—— ,, ,, जाता है।
जर्गृहीति, जर्गर्ढि——,, ,, ग्रहण करता है।
जाग्रहीति, जाग्राढि——वह बारबार अथवा अत्यधिक पकड़ता है।
जर्गृधीति, जर्गर्द्धि—— ,, ,, लालच करता हैं।
पाप्रच्छीति, प्रापष्टि—— ,, ,, पूछता है।
जाहयीति, जाहति—— ,, ,, जाता है।
जाहयींति, जाहर्ति—— ,, ,, जाता या चमकता है
मामोति, मामवीति—— ,, ,, बाँधता है।
तोतूर्वीति, तोतोर्ति—— ,, ,, कष्ट देता या पीड़ा पहुँचाता है।
तोथोर्ति—— ,, ,, ,, ,,
दोधोर्ति—— ,, ,, ,, ,,
दोदोर्ति—— ,, ,, ,, ,,
मोमोर्ति—— ,, ,, ,, ,,
वेवीयते—— ,, ,, जाता, दौड़ता या निन्दा करता है।

इति यङ्लुक्प्रकरणम्।

## अथ नामधातु-प्रकरणम्

पुत्रीयति——वह अपना पुत्र चाहता है।
गव्यति——वह अपनी गाय ,,
नाव्यति——वह ,, नाव ,,
राजीयति——वह अपना राजा ,,
त्वद्यति——वह तुमको चाहता है।
मद्यति—— ,, मुझको ,,
युष्मद्यति——,, तुम लोगों को ,,
अस्मद्यति——,, हम लोगों को ,,

गीर्यति — वह वाणी चाहता है।
पूर्यति— ,, नगर ,,
दिव्यति— ,, स्वर्ग चाहता है।
अदस्यति— ,, इसको ,,
कर्त्रीयति— ,, कर्ता ,,
गार्गीयति— ,, गार्ग्य ,,
कवीयति— ,, कवि ,,
वाच्यति— ,, वाणी ,,
समिध्यति— ,, समिधा ,,
किमिच्छति— ,, क्या ,,
इदमिच्छति— ,, यह ,,
स्वरिच्छति— ,, स्वर्ग ,,
अशनायति— ,, भोजन ,,
उदन्यति— ,, जल ,,
धनायति— ,, धन ,,
अशनीयति— ,, भोजन ,,
उदकीयति— ,, जल ,,
धनीयति— ,, धन ,,
अश्वस्यति वडवा—घोड़ी घोड़ा चाहती है।
वृषस्यति गौः—गाय बैल चाहती है।
क्षीरस्यति बालः—बालक दूध चाहता है।
लवणस्यति उष्ट्रः—ऊँट नमक चाहता है।
दधिस्यति, दध्यस्यति—वह दही चाहता है।
मधुस्यति, मध्वस्यति— ,, मधु ,,
पुत्रकाम्यति—वह अपना पुत्र चाहता है।
यशस्काम्यति— ,, ,, यश ,,
सर्पिष्काम्यति— ,, ,, घी ,,
किङ्काम्यति— ,, क्या ,,
स्वःकाम्यति— ,, स्वर्ग चाहता है।
पुत्रीयति छात्रम्—वह छात्र के साथ पुत्र की तरह व्यवहार करता है।
विष्णूयति द्विजम् — ,, ब्राह्मण के साथ विष्णु की तरह व्यवहार करता है।
प्रासादीयति कुट्यां भिक्षुः—भिक्षुक झोपड़ी में महल की तरह रहता है।

कुटीयति प्रासादे राजा—राजा महल में झोपड़ी की तरह रहता है।
कृष्णायते—काला करता है या कृष्ण की तरह व्यवहार करता है।
ओजायते—वह शक्तिशाली की तरह व्यवहार करता है।
अप्सरायते—वह अप्सरा की तरह व्यवहार करती है।
यशायते, यशस्यते—वह यशस्वी की तरह आचरण करता है।
विद्वायते, विद्वस्यते—वह विद्वान् की तरह आचरण करता है।
त्वद्यते— ,, तुम्हारी ,, ,,
मद्यते— ,, मेरी ,, ,,
युष्मद्यते ,, तुम लोगों ,, ,,
अस्मद्यते— ,, हम लोगों ,, ,,
कुमारायते— ,, कुमारी की तरह आचरण करती है।
हरितायते— ,, हरिणी की ,,
गुरूयते— ,, स्त्री गुरु ,, करता है।
सपत्नायते, सपतीयते, सपत्नीयते—वह सपत्नी की तरह आचरण करती है।
युवायते—वह युवती की तरह आचरण करता है।
पट्वीमृदूयते—वह दक्षा या सुकुमार स्त्री की तरह आचरण करता है।
पाचिकायते—वह रसोइयाँदारिन की तरह आचरण करता है।
अवगल्भते—ढीठ व्यक्ति की तरह आचरण करता है।
क्लीबते— ,, व्यापार ,, ,,
होडते— ,, अनादर करने वाले की तरह ,,
कृष्णति— ,, कृष्ण की तरह आचरण करता है।
अति— ,, अ ( विष्णु ) की तरह ,,
मालाति — ,, माला की तरह ,,
कवयति— ,, कवि की तरह ,,
वयति— ,, पक्षी की तरह ,,
श्रयति— ,, लक्ष्मी की तरह ,,
पितरति— ,, पिता की तरह ,,
भवति— ,, पृथ्वी या प्राणी ,,
द्रवति— ,, वृक्ष की तरह ,,
इदमति ,, इस तरह ,,

राजानति—वह राजा की तरह आचरण करता है।
पथीनति— „ मार्ग की तरह „
मथीनति— „ मन्थन दण्ड की तरह „
ऋभुक्षीणति—वह इन्द्र की तरह „
देवति, द्यवति—„ स्वर्ग „
कति—ब्रह्मा, क ( जल ) की „
स्वति—वह अपनी तरह आचरण करता है।
भृशायते—वह ( थोड़े से ) अधिक होता है।
सुमनायते—वह उदार होता है।
उन्मनायते—वह उदास होता है।
ओढायित्वा—ढोये हुए की तरह आचण करके।
औक्षीयत्—उसने एक गाय चाही।
औंकारीयत्—उसने ओंकार चाहा।
औढीयत्—उसने ढोने वाले को चाहा।
लोहितायति,लोहितायते—वह लाल होता है।
पटपटायति, पटपटायते—वह पट पट शब्द करता है।
श्यामायते—वह काला होता है।
लोहिनीयति, लोहिनीयते—वह लाल होती है।
कष्टायते—वह कष्ट ( पाप ) करने में प्रवृत्त होता है।
सत्रायते—वह पाप करना चाहता है।
कक्षायते— „ „ „
रोमन्थायते—पगुरी, जुगाली करता है।
कीटो रोमन्थं वर्तयति—कीड़ा निकले हुए मल की गोली बनाता है।
तपस्यति—तप करता है।
वाष्पायते—आँसू बहाता है।
ऊष्मायते—भाप निकालता है।
फेनायते—फेन निकालता है।
शब्दायते, शब्दयति—शब्द करता है।
सुदिनायते—अच्छा दिन करता है।
सुखायते—सुखी होता है, सुख का अनुभव करता है।
दुःखायते—दुःखी होता है, दुःख का अनुभव करता है।
परस्य सुखं वेदयते—दूसरे के सुख को जानता है।
नमस्यति देवान्—देवों को नमस्कार करता है।
वरिवस्यति गुरून्—गुरुजनों का आदर या सेवा करता है।
चित्रीयते—चकित करता है।

उत्पुच्छयते—पूँछ उठाता है।
विपुच्छयते—पूँछ इधर उधर करता या हिलाता है।
परिपुच्छयते—पूँछ चारों तरफ करता या हिलाता है।
संभाण्डयते—वह बर्तनों को इकट्ठा करता है।
सञ्चीवरयते—वह चिथड़ा इकट्ठा करता या पहिनता है।
मुण्डयति—वह बाल बनाता है।
पयोव्रतयति—वह दुग्धाहार करता है।
शूद्रान्नं व्रतयति—वह शूद्रान्न का त्याग करता है।
संवस्त्रयति—वह वस्त्र पहिनता है।
हलयति ३-१-२१—वह बड़े हल का प्रयोग करता है।
कलयति—वह पासे का प्रयोग करता है अथवा कलह करता है।
कृतयति—वह उपकार मानता है।
वितूस्तयति—वह बालों को अथवा जटा को कंघी से साफ करता है अथवा पाप से मुक्त होता है।
मुण्डयति माणवकम्—वह लड़के को मूँड़ता है।
मिश्रयत्यन्नम्—वह अन्न (भोजन) को मिलाता है।
श्लक्ष्णयति वस्त्रम्—वह वस्त्रको चिकना करता है।
लवणयति व्यञ्जनम्—वह मसाले में नमक डालता है।
सत्यापयति—वह साई लेता है।
अर्थापयति—धन की तरह व्यवहार करता है, अर्थात् सावधानी से छिपाता है।
वेदापयति—वह वेद पढ़ाता या वेद का ज्ञान कराता है।
विपाशयति—वह पाश से मुक्त करता है या पाश ढीला करता है।
रूपयति—रूप या आकार या कोई वस्तु देखता है।
उपवीणयति—वीणा के साथ गाता है।
अनुतूलयति— ब्रुश ( कुँची ) से साफ करता है।
उपश्लोकयति—श्लोकों से प्रशंसा करता है।
अभिषेणयति—सेना के साथ चढ़ाई करता है।
अनुलोमयति—रोएँ साफ करता है।
त्वचयति—त्वचा निकालता है।
सञ्चर्मयति—चमड़े से बाँधता है या मढ़ता है।
वर्णयति—रंग लेता है।
अवचूर्णयति—आटे या धूल से ढाँकता है।
एतयति—मृगी कहता है।

दारदयति—दरद कहता है ।
प्रथयति—पृथु ( स्थूल ) करता या कहता है ।
म्रदयति—मृदु ( कोमल ) ,, ,,
भ्रशयति—भृश ( अधिक ) ,, ,,
क्रशयति—कृश ( दुर्बल ) ,, ,,
द्रढयति—दृढ़ ( मजबूत ) ,, ,,
परिव्रढयति—दृढ़ ( मजबूत ) या स्वामी की व्याख्या करता या कहता है ।

औजिढत् , औजढत्—विवाहित किया या कहा ।
औडढत्— ,, ,,
स्वापयति—अपना बनाता है ।
त्वापयति—तुम्हारा बनाता है ।
मापयति—मेरा बनाता है ।
त्वादयति—तुम्हारा बनाता है ।
मादयति—मेरा बनाता है ।
युष्मयति—तुम दोनों का बनाता है ।
अस्मयति—हम दोनों का बनाता है ।
शांवयति, शुनयति—कुत्ता कहता या बनाता है ।
विद्वयति, विदयति—विद्वान् कहता या बनाता है ।
उदीचयति—उत्तर की व्याख्या करता या कहता है ।
प्रतीचयति—पश्चिम की व्याख्या करता या कहता है ।
समीचयति—साथ जाने वाले की व्याख्या करता या कहता है ।
तिराययति—पक्तियों की व्याख्या करता या कहता है ।
सध्राययति—मित्र की व्याख्या करता या कहता है ।
अविविष्वद्र्यायत्—सर्वव्यापक की व्याख्या किया या कहा ।
अदिदेवद्र्यायत्—देव भक्तों की व्याख्या किया या कहा ।
आदद्र्यायत्—उस ओर जाने वाले अथवा उसपर आसक्त की व्याख्या किया है ।
आदमुआययति, अमुमुआययति—उस ओर जाने वाले को व्याख्या करता है ।

मावयति—पृथ्वी कहता है या पृथ्वी की व्याख्या करता है ।
भ्रवयति—भौंह कहता है या भौंह की व्याख्या करता है ।
श्राययति—लक्ष्मी कहता या व्याख्या करता है ।
अजूगवत्—गाय की व्याख्या की या गाय कहा ।
अरीरयत्—धन की व्याख्या की या धन कहा ।
अनूनवत्—नाव की व्याख्या की या नाव कहा ।
स्वाश्वयत्—सुन्दर घोड़े वाले की व्याख्या की या कहा ।
स्वयति—स्वर्ग कहता या स्वर्ग की व्याख्या करता है ।

---

भावयति—बहुत्व की व्याख्या करता या कहता है ।
स्रजयति—मालावाले को बुलाता है ।
श्रयति—लक्ष्मी वाले को बुलाता है ।
पयसयति—दूधवाली गाय को बुलाता है ।
स्थवयति—स्थूल कहता है या स्थूल की व्याख्या करता है ।
दवयति—दूर कहता है या दूर की ,,
यवयति—युवक कहता है या युवक की ,,
कनयति—छोटा ,, छोटे की ,,
नेदयति—समीप ,, समीप ,,
साधयति—ठीक ,, ठीक ,,
प्रशस्ययति—प्रशंसनीय,, प्रशंसनीय ,,
ज्यापयति—बड़ा ,, बड़े की ,,
वंहयति—अधिक ,, अधिक ,,
प्रापयति—प्रिय ,, प्रिय ,,
स्थापयति—स्थिर ,, स्थिर ,,
स्फापयति—अधिक ,, अधिक ,,
गरयति—गुरु ,, गुरु ,,
वर्षयति—बड़ा ,, बड़ा ,,
त्रापयति, भ्रापयति—शीघ्र,, शीघ्र ,,
द्राघयति—लम्बा ,, लम्बे ,,
वृन्दयति—देवता ,, देवता ,,

इति नामधातुप्रकरणम् ।

## अथ कण्वादिप्रकरणम्

कण्डूयति, कण्डूयते—खुजलाता है ।
मन्तूयति, मन्तूयते—क्रोध या अपराध करता है ।
वल्गूयति—प्रशंसा या आदर करता है । सुन्दर या सुकुमार होता है ।

अस्यति, असूयति, असूयते—डाह करता है।
लेट्यति, लोट्यति—धोखा देता, प्रथम आता, सोता या चमकता है।
इरस्यति, इरज्यति—डाह करता, अशिष्टता से व्यवहार करता है।
ईर्यति, ईर्यते—यात्रा समाप्त करता है।
मेधायति—शीघ्र समझता है।
कुषुभ्यति—फेंकता है, गाली देता है, घृणा करता है।
सुख्यति—सुख का अनुभव करता है।
दुःख्यति—दुःख का अनुभव करता है।
मगध्—घेरना।
तन्तस्, पम्पस्—दुःखी होना।
सपर्—पूजा करना।
अरर्—आरा चलाना।
भिषज्—दवा करना, चिकित्सा करना।
भिष्णज्—सेवा करना, पूजा करना, आदर करना, अभ्यास करना, अनुसरण करना।
इषुध्—बाण रखना, प्रार्थना करना, माँगना, चाहना।
चरण्, वरण्—जाना।
चुरण्—चुराना।
तुरण्—शीघ्रता करना।
भुरण्—धारण करना, सहारा देना।
गद्गद—जबान लड़खड़ाना।
एला, केला, खेला, इल्—क्रीड़ा करना।
लेखा—लड़खड़ाना।
लिट् छोटा होना, निन्दा करना।
लाट्—जीवित रहना।
हृणीङ्—क्रुद्ध होना, लज्जित होना।
महीङ्—पूजित या आदृत होना।
रेखा—प्रशंसा करना, प्राप्त करना, चापलूसी करना, कष्ट देना।
द्रवस्—कष्ट देना, सेवा करना, प्रतीक्षा करना।
तिरस्—लुप्त होना।
अगद्—रोग मुक्त होना।
उरस्—बलवान् होना।
तरण्—जाना।
पयस्—बहना।
संभूयस्—अधिक होना।
अंबर, संबर—एक साथ लाना, इकट्ठा करना।

इति कण्ड्वादिप्रकरणम्।

## अथ प्रत्ययमालाप्रकरणम्

कण्डूयियिषति—खुजलाना चाहता है।
पुपुत्रीयिषति, पुतित्रीयिषति—पुत्रवान् होना चाहता है।
अशिश्वीयिषति, अश्वीयियिषति—घोड़ा वाला होना चाहता है।
इन्दिद्रीयिषति, इन्द्रीयियिषति–इन्द्रियवान् होना चाहता है।
चिचन्द्रीयिषति, चन्दिद्रीयिषति, चन्द्रीयियिषति–चन्द्रवान् होना चाहता है।
पिप्रापयिषति, प्रापिपयिषति, प्रापयियिषति—प्रिय कहने के लिए प्रेरित करना चाहता है।
विवारयिषति, वारिरयिषति, वारयियिषति—उरु कहने के लिए प्रेरित करना चाहता है।
बोभूयिषयिषति, बोभूययियिषति—बार-बार होने के लिए प्रेरित करना चाहता है।

इति प्रत्ययमालाप्रकरणम्।

# अथ आत्मनेपद-प्रकरणम्

आस्ते १–३–१२—बैठता हैं।
शेते ,, सोता या लेटता है।
बभूवे १–३–१३—हुआ।
अनुबभूवे ,, अनुभव किया गया।
व्यतिलुनीते १–३–१४–दूसरे के काटने योग्य ( लकड़ी ) को स्वयं काटता है।
व्यतिस्ते ,, दूसरे के स्थान पर वह स्वयं बैठा है।
व्यतिराते ,, दूसरे के स्थान पर वह स्वयं देता है।
व्यतिमाते, ,, दूसरे के स्थान पर वह स्वयं नापता है।
व्यतिगच्छन्ति १–३–१५—वे एक दूसरे के विरुद्ध जाते हैं।
व्यतिघ्नन्ति ,, वे एक दूसरे को मारते हैं।
व्यतिहसन्ति ,, वे एक दूसरे को हँसते हैं।
व्यतिजल्पन्ति ,, वे एक दूसरे को बकते हैं।
संप्रहरन्ते राजानः ,, राजा लोग परस्पर प्रहार करते हैं।
इतरेतरस्यान्योन्यस्य परस्परस्य वा
व्यतिलुनन्ति १–३–१६—वे हर एक को, एक दूसरे को या परस्पर काटते हैं।
निविशते १–३–१७--वह भीतर प्रवेश करता है।
परिक्रीणीते १–३–१८—खरीदता हैं।
विक्रीणीते ,, बेचता है।
अवक्रीणीते ,, खरीदता है।
विजयते १–३–१९—जीतता है।
पराजयते ,, जीतता है।
विद्यामादत्ते १–३–२०—वह विद्या ग्रहण करता है।
मुखं व्याददाति ,, वह मुँह खोलता है।
विपादिकां व्याददाति ,, वह बिबाई को खोलता है।
नदी कूलं व्याददाति ,, नदी तट को तोड़ती हैं।

व्याददते पिपीलिकाः पतङ्गस्य मुखम् १–३–२०—चीटियाँ पतङ्ग के मुँह को खोलती हैं।
अनुक्रीडते १–३–२१—वह खेलता है।
संक्रीडते ,, वह एक साथ खेलता है।
परिक्रीडते ,, खेलता है।
आक्रीडते ,, खेलता है।
माणवकमनुक्रीडति ,, बालक के साथ खेलता है।
संक्रीडति चक्रम् ,, पहिया चरचराता है।
आगमयस्व तावत् ,, तबतक प्रतीक्षा करो।
धनुषि शिक्षते ,, धनुर्विद्या में अन्वेषण करता है।
सर्पिषो नाथते ,, घी पाने के लिए आशीष देता है।
पैतृकमश्वा अनुहरन्ते ,, घोड़े अपने बाप के अनुहार होते हैं।
मातृकं गावः ,, बैल अपमी माँ के अनुहार होते हैं।
मातुरनुहरति ,, माता से मिलता जुलता है।
अपस्किरते वृषो हृष्टः ६–१–१४२—बैल हर्ष के कारण पृथ्वी खोदता है।
,, कुक्कुटो भक्षार्थी ,, मुर्गा भोजन के लिए पृथ्वी कुरेदता है।
,, श्वा आश्रयार्थी ,, कुत्ता बैठने के लिए पृथ्वी खुरचता है।
अपकिरति कुसुमम् ,, वह फूल बिखेरता है।
गजोपकिरति ,, हाथी धूल उड़ाता है।
आनुते ,, बोलता है।
आपृच्छते ,, प्रश्न करता है।
कृष्णाय शपते ,, कृष्ण को बुरा भला कहता है।
संतिष्ठते १–३–२२—साथ ठहरता है। समाप्त होता है (बाल० मनो०)।
अवतिष्ठते ,, शान्ति से प्रतीक्षा करता है।
प्रतिष्ठते ,, प्रस्थान करता है।

वितिष्ठते १-३-२२—अलग खड़ा होता है।

शब्दं नित्यमातिष्ठते ,, शब्द को नित्य जानता है।

गोपी कृष्णाय तिष्ठते १-३-२३—गोपी कृष्ण से अपनी इच्छा प्रकट करती है।

संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः ,, जो (दुर्योधन) सन्देह के समय कर्ण आदि को निर्णायक मानता है।

मुक्तावुत्तिष्ठते १-३-२४—मुक्ति के लिए प्रयत्न करता है।

पीठादुत्तिष्ठति ,, आसन से उठता है।

ग्रामाच्छतमुत्तिष्ठति ,, गाँव से सौ रुपया प्राप्त होता है।

आग्नेय्या आग्नीध्रमुपतिष्ठते १-३-२५—आग्नेयी ऋचाओं से आग्नीध्र अग्नि की स्तुति करता है।

भर्तारमुपतिष्ठति यौवनेन ,, युवावस्था के कारण पति के पास जाती है।

आदित्यमुपतिष्ठते ,, आदित्य की उपासना करता है।

गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते ,, गंगा यमुना में मिलती है।

रथिकानुपतिष्ठते ,, रथिकों का संघ बनाता है।

पन्थाः स्रुघ्नमुपतिष्ठते ,, मार्ग स्रुघ्न जाता है।

भिक्षुकः प्रभुमुपतिष्ठते, उपतिष्ठति वा—भिक्षुक कुछ पाने की आशा से धनिक मालिक के घर उपस्थित होता है।

भोजनकाले उपतिष्ठते १-३-२६—भोजन के समय उपस्थित हो जाता है।

उत्तपते, वितपते १-३-२७—चमक जाता है।

उत्तपते, वितपते पाणिम् ,, हाथ को गर्म करता है।

सुवर्णमुत्तपत्ति ,, सोने को तपाता है।

चैत्रो मैत्रस्य पाणिमुत्तपति ,, चैत्र मैत्र के हाथ को गर्म करता है।

आयच्छते १-३-२८—फैलाता या फैलता है।

आहते ,, मारता है।

परस्य शिर आहन्ति ,, दूसरे के सिर पर प्रहार करता है।

आवधिष्ट २-४-४४—मारा।

आहत १-२-१४—मारा।

उदायत १-२-१५—प्रकाशित कर दिया, सूचित कर दिया।

उदायंस्त पादम् ,, पैर को उठाया।

संगच्छते १-३-२९—मिलता है।

समृच्छते १-२-१३—एकत्र करता है।

ग्रामं संगच्छति ,, गाँव जाता है।

संविदे ७-१-७—जानता है।

संविद्रते ,, जानते हैं।

सम्पृच्छते ,, पूछता है।

संस्वरते ,, दोष लगाता है।

मासमृत ,, मत जाओ।

संशृणुते ,, ध्यान से सुनता है।

सम्पश्यते ,, ध्यान से देखता या विचार करता है।

वहतिभारम् ,, बोझा ढोता है।

नदी वहति ,, नदी बहती है।

जोवति ,, जीता है।

नृत्यति ,, नाचता है।

मेघो वर्षति ,, मेघ बरसता है।

हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः ७-१-७—जो हितैषियों की (सलाह) नहीं सुनता, वह बुरा स्वामी है।

बन्धं निरस्यति, निरस्यते ,, बन्धन को फेंकता है।

समूहति, समूहते ,, अच्छी तरह विचार करता है, एकत्र करता है।

ब्रह्म समुह्यात् ७-४-२३—ब्रह्म का अच्छी तरह विचार करना चाहिये।

अग्निं समुह्य ,, अग्नि को अच्छी तरह एकत्र कर, जलाकर।

निह्वयते १-३-३०—ललकारता है।

कृष्णश्चाणूरमाह्वयते १-३-३१—कृष्ण चाणूर को ललकारता है।

पुत्रमाह्वयति—१-३-३१—पुत्रको बुलाता है।

उत्कुरुते १-३-३२—हानि पहुँचाने के लिए सूचना देता है।

श्येनो वर्तिका—

मुदाकुरुते ,, वाज वटेर को वुरा भला कहता है।

हरिमुपकुरुते ,, हरि की सेवा करता है।

परदारान्प्रकुरुते ,, परस्त्री को अपने अधिकार में करता है, दूषित करता है।

एधोदकस्योपस्कुरुते ,, ईंधन जल में नया गुण उत्पन्न करता है, उबालता है।

ईंधन जल के नये गुण को ग्रहण करता है, गीला करता है।

गाथाः प्रकुरुते ,, कहानी, कथा कहता है।

शतं प्रकुरुते ,, सौ रुपये दान देता है।

कटं करोति ,, चटाई बनाता है।

शत्रुमधिकुरुते १-३-३३—शत्रु को क्षमा करता या जीतता है।

स्वरान्विकुरुते १-३-३४—स्वरों का उच्चारण करता है।

चित्तं विकरोति कामः ,, काम चित्त में विकार उत्पन्न करता है।

छात्रा विकुर्वते १-३-३५—विद्यार्थी इच्छानुसार काम करते या इधर उधर घूमते हैं।

शास्त्रे नयते १-३-३६—शास्त्र के सिद्धान्त की शिक्षा देता है।

दण्डमुन्नयते ,, लाठी उठाता है।

माणवकमुपनयते ,, वालक को दीक्षा देता है।

तत्त्वं नयते ,, तत्त्व का वर्णन करता है।

कर्मकरानुपनयते ,, मजदूरों को मजदूरी पर काम में लगाता है।

करं विनयते ,, कर ( टैक्स ) देता है।

शतं विनयते ,, सौ रुपये दान देता है।

क्रोधं विनयते १-३-३७—क्रोध दवाता है।

गडुं विनयति ,, गर्दन मोड़ता है।

ऋचि क्रमते बुद्धिः १-३-३८—उसकी बुद्धि ऋग्वेद में काम करती है।

अध्ययनाय क्रमते ,, अध्ययन के लिए उत्साहित होता है।

क्रमन्ते ऽस्मिन् शास्त्राणि १-३-३८—शास्त्र इसमें बढ़ते हैं, प्रकाशित होते हैं।

उपक्रमते १-३-३९—बढ़ना प्रारम्भ करता है।

पराक्रमते ,, आक्रमण करने के लिए बढ़ता है।

संक्रामति ,, उन्नति करता है।

आक्रमते सूर्यः १-३-४०—सूर्य निकलता है।

आक्रामतिधूमो हर्म्यतलात् ,, छत से धुआँ निकलता है।

साधु विक्रमते वाजी १-३-४१—घोड़ा अच्छी तरह दौड़ता है।

विक्रामति सन्धिः ,, जोड़ खुलता है, अलग होता है।

प्रक्रमते १-३-४२—प्रारम्भ करता है।

उपक्रमते ,, प्रारम्भ करता है।

प्रक्रामति ,, जाता है।

उपक्रामति ,, आता है।

क्रामति, क्रमते १-३-४३—जाता है।

शतमपजानीते १-३-४४—सौ रुपये के ऋण को मुकरता है।

सर्पिषो जानीते १-३-४५—घी से हवन करता है।

शतं सञ्जानीते १-३-४६—सौ रुपयों की आशा करता है।

शतं प्रतिजानीते ,, सौ रुपयों की प्रतिज्ञा करता है।

मातरं मातुर्वा सञ्जानाति ,, दुःख से माता की याद करता है।

शास्त्रे वदते १-३-४७—शास्त्र को व्याख्या करता है।

भृत्यानुपवदते ,, नौकरों को राजी करता है सान्त्वना देता है।

शास्त्रे वदते ,, शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करता है।

क्षेत्रे वदते ,, खेत में परिश्रम करता है।

क्षेत्रे विवदन्ते ,, खेत के विषयमें विवाद करते हैं।

उपवदते ,, चाटुकारी करता है। प्रशंसा करता है।

सम्प्रवदन्ते ब्राह्मणाः १-३-४८—ब्राह्मण एक साथ बोलते हैं।

सम्प्रवदन्ति खगाः ,, चिड़िया चहचहाती हैं ( एक साथ )।

अनुवदते कठः कलापस्य १-३-४९—कठ शाखा का ब्राह्मण कलाप शाखा की नकल करता है।

उक्तमनुवदति—१-३-४९—कहे हुए को दोहराता है।
अनुवदतिवीणा ,, वीणा वजती है।
विप्रवदन्ते,
विप्रवदन्ति वा वैद्याः १-३-५०—वैद्यों की भिन्न भिन्न राय है, ऐकमत्य नहीं है।
अवगिरते १-३-५१—निगलता है।
शब्दं नित्यं संगिरन्ते १-३-५२—शब्द को नित्य मानता है
संगिरति ग्रासम् ,, ग्रास को निगलता है।
धर्ममुच्चरते १-३-५३—धर्म या कर्तव्य से विमुख होता है।
वाष्पमुच्चरति ,, भाप ऊपर उठता है।
रथेन सञ्चरते १-३-५४—रथ से जाता है।
दास्या संयच्छते १-३-५५—दासी को (धन) देता है।
रथेन समुदाचरते ,, रथ पर चलता है।
दास्या संप्रयच्छते ,, दासी को (धन) देता है।
भार्यामुपयच्छते १-३-५६—पत्नी को स्वीकार करता या जानता है, पत्नी से ब्याह करता है।
रामः सीतामुपायत, उपायंस्त वा १-२-१६—रामने सीता को व्याहा।
धर्मं जिज्ञासते १-३-५७—धर्म जानना चाहता है।
शुश्रूषते ,, ,, सेवा करना चाहता है।
सुस्मूर्षते ,, ,, स्मरण करना चाहता है।
दिदृक्षते ,, ,, देखना चाहता है।
पुत्रमनुजिज्ञासति १-३-५८—पुत्र के विषय में जानना चाहता है।
सर्पिषोनुजिज्ञासते ,, घी से हवन करना चाहता है।
प्रतिशुश्रूषति, आशुश्रूषति १-२-५९ प्रतिज्ञा करना चाहता है।
देवदत्तं प्रतिशुश्रूषते ,, देवदत्त से प्रतिज्ञा करना चाहता है।
एदिधिषते १-३-६२—उन्नति करना चाहता है।
शिशयिषते ,, सोना या लेटना चाहता है।
निविविक्षते ,, घुसना चाहता है।
बुभूषति ,, होना चाहता है।
शिशयिषति ,, लेटना चाहता है।

मुमूर्षति ,, मरना चाहता है।
एधाञ्चक्रे १-३-६३—उन्नति किया, बढ़ा।
प्रयुङ्क्ते १-३-६४—प्रयोग करता है।
उपयुङ्क्ते ,, उपयोग में लाता है।
उद्युङ्क्ते ,, उद्योग, प्रयत्न करता है।
नियुङ्क्ते ,, नियुक्त करता है।
द्वन्द्वंन्यञ्चि
पात्राणि प्रयुनक्ति ,, यज्ञ में दो दो बार पात्रों को उलट कर प्रयोग करता है।
संक्ष्णुते शस्त्रम् १-३-६५—शस्त्र को तीखा (तेज) करता है।
ओदनं भुङ्क्ते १-३-६६—भात खाता है।
बुभुजे पृथिवीपालः
पृथिवीमेव केवलाम् ,, राजा ने केवल पृथ्वी का भोग किया।
वृद्धोजनो—
दुःखशतानि भुङ्क्ते ,, बुड्ढे आदमी सैकड़ों प्रकार के दुःखों को भोगते हैं।
महीं भुनक्ति ,, पृथ्वी की रक्षा करता है।
पश्यन्ति भवं भक्ताः १-३-६७—भक्त परब्रह्म को देखते हैं।
दर्शयन्ति भवं भक्ताः ,, भक्त परब्रह्म को दिखाते हैं अर्थात् देखते हैं।
दर्शयते भवः ,, परब्रह्म स्वयं दिखाई देता है।
आरोहयते हस्ती ,, हाथी झुकता है।
आरोहन्ति
हस्तिनं हस्तिपकाः ,, महावत हाथी को झुकाते हैं।
आरोहति हस्ती ,, हाथी झुकता है।
आरोहयन्ति ,, झुकाते हैं
दर्शयति भवः ,, परब्रह्म स्वयं दीखता है।
आरोहयति हस्ती ,, हाथी स्वयं झुकता है।
दर्शयते ,, दीखता है।
आरोहयते ,, झुकता है।

स्मरति वनगुल्मं कोकिलः १-३-६९—कोयल वनवृक्ष को दुःख के साथ स्मरण करती है।

स्मरयति वनगुल्मः ,, बनवृक्ष स्वयं स्मरण किया जाता है।

माणवकं गर्धयते

वञ्चयते वा १-३-६८,६९—बालक को धोखा देता है।

श्वानं गर्धयति ,, कुत्ते को लालची बनाता है।

अहिं वञ्चयति ,, साँप से बचता है।

पदं मिथ्या कारयते १-३-७१—बार बार शब्द का अशुद्ध उच्चारण करता है।

पदं सुष्ठु कारयति ,, शब्द का शुद्ध उच्चारण करता है।

सकृत्पदं मिथ्या कारयति ,, एक बार शब्द का अशुद्ध उच्चारण करता है।

यजते १-३-८२—अपने लिए यज्ञ करता है।

सुनुते ,, अपने लिए सोम निचोड़ता है।

ऋत्विजो यजन्ति ,, ऋत्विज् दूसरे के लिए यज्ञ करते हैं।

सुन्वन्ति ,, दूसरे के लिए सोम निचोड़ते हैं।

न्यायमपवदते १-३-७३—न्याय को त्यागता है।

अपवदति ,, बुराभला कहता है।

कारयते १-३-७४—अपने लिए बनवाता है।

व्रीहीन् संयच्छते १-३-७५—धान इकट्ठा करता है।

भारमुद्यच्छते ,, बोझा उठाता है।

वस्त्रमायच्छते ,, वस्त्र खींचता या निकालता है।

उद्यच्छति वेदम् ,, वेद जानने के लिए प्रयत्न करता है।

व्रीहीन् संयच्छति ,, दूसरों के लिए धान इकट्ठा करता है।

गा जानीते १-३-३६—अपनी गाय पहिचानता है।

स्वर्गलोकं न प्रजानाति ,, स्वर्गलोक को नहीं जानता है।

इत्थं नृपः पूर्वं मवालुलोचे

ततोऽनुजज्ञे गमनं सुतस्य—राजाने पहिले इस प्रकार सोचा फिर पुत्र के जाने की अनुमतिदी।

स्वं यज्ञं यजति, यजतेवा १-३-७७—अपना यज्ञ करता है।

स्वं कटं करोति कुरुते वा ,, अपनी चटाई बनाता है

स्वं पुत्रमपवदति, अपवदते वा ,, अपने को बुरा भला कहता है।

स्वं यज्ञं कारयति, कारयते वा ,, अपना यज्ञ करता है।

स्वं व्रीहिं संयच्छति संयच्छते ,, अपना धान इकट्ठा करता है।

स्वां गां जानाति, जानीते वा ,, अपनी गाय को पहिचानता है।

इत्यात्मनेपदप्रकरणम्

# अथ परस्मैपदप्रकरणम्

अत्ति १-३-७८—खाता है।

अस्ति ,, है।

अनुकरोति १-३-७९—नकल करता है।

पराकरोति ,, अच्छी तरह करता है।

अभिक्षिपति १-३-८०—ऊपर की ओर फेंकता है।

प्रतिक्षिपति ,, उलटता या अस्वीकार करता है।

अतिक्षिपति ,, बाहर फेंकता है।

प्रवहति १-३-८१—बहता है।

परिमृष्यति १-३ ८२—सहता या क्रुद्ध होता है।

विरमति १-३-८३—विश्राम करता है।

उपरमति ,, प्रसन्न होता है।

परिरमति ,, क्रीड़ा करता है।

यज्ञदत्तमुपरमति १-३-८४—यज्ञदत्त को रुकवाता है।

उपरमति, उपरमते वा—१-३-८५—रुकता है, बन्द होता है।

बोधयति पद्मम् १-३-८६—कमल को विकसित करता है।

योधयति काष्ठानि १-३-८६—लकड़ियों को वजाता है।
नाशयति दुःखम् ,, दुःख को नष्ट करता है।
जनयति सुखम् ,, सुख उत्पन्न करता है।
अध्यापयति ,, पढ़ाता है।
प्रावयति ,, प्राप्त कराता है।
द्रावयति ,, पिघलाता है।
स्रावयति ,, टपकाता है।
निगारयति १-३-८७—निगलवाता है।
आशयति ,, खिलाता है।
भोजयति ,, खिलाता है।
चलयति ,, चलाता या हिलाता है।
कम्पयति ,, हिलाता है।
आदयते देवदत्तेन ,, देवदत्त से खाया जाता है।
आदयत्यन्नं वटुना ,, बालक से अन्न खाया जाता है।
गोपी कृष्णं शाययति १-३-८८—गोपी कृष्ण को सुलाती है।
पाययते १-३-८९—पिलाता है।
दमयते ,, पालतू बनाता है।
आयामयते ,, लम्बा करता है।
आयासयते ,, कष्ट देता है।

परिमोहयते १-३-८९—लुभाता या मोहित करता है।
रोचयते ,, रोचक बनाता है।
नर्तयते ,, नचाता है।
वादयते ,, बुलवाता है।
वासयते ,, रहवाता है।
धापयेते शिशुमेकंससीची ,, दो खरगोश एक बच्चे को पिलाती हैं।
वत्सान् पाययति पयः ,, बछड़ों को दूध पिलाता है।
दमयन्ती कमनीयतामदम् ,, रमणियों के सौंदर्य के मद को चूर चूर करती हुई।
भिक्षां वासयति ,, भीख पर रहवाता है।
लोहितायति, लोहितायते १-३ ९०—लाल होता है।
अद्युतत्, अद्योतिष्ट १-३ ९१—चमका।
वर्त्स्यति, वर्तिष्यते १-३-९२—रहेगा।
विवृत्सति, विवर्तिषते ,, रहना चाहता है।
कल्प्ता १-३-९३—योग्य होगा।
कल्प्स्यति ,, योग्य होगा।
कल्पिष्यते, कल्प्स्यते ,, योग्य होगा।
चिक्लृप्सति ,, योग्य होना चाहता है।

इति परस्मैपदप्रकरणम्

# अथ भावकर्मतिङ्प्रकरणम्

त्वया मया अन्यैश्च भूयते ४-१-६७—तुमसे मुझसे और दूसरों से हुआ जाता है।
अनुभूयते आनन्दश्चैत्रेण त्वया मया च २-१-६६—तुमसे मुझसे और चैत्र से आनन्द का अनुभव किया जाता है। अर्थात् तुम, मैं और चैत्र आनन्द का अनुभव करते हैं।
भाव्यते ,, हुआ जाता है।
बुभूष्यते ,, होने की इच्छा की जाती है।
बोभूयते ,, बारबार हुआ जाता है।
स्तूयते विष्णुः ,, विष्णु की स्तुति की जाती है।

अर्यते २-१-६६—जाया जाता है।
स्मर्यते ,, स्मरण किया जाता है।
संस्क्रियते ,, संस्कार किया जाता है।
स्रस्यते ,, गिराया जाता है, खिसकाया जाता है।
शय्यते ,, सोया या लेटा जाता है।
तायते, तन्यते ६-४-४४—बढ़ाया या फैलाया जाता है।
जायते, जन्यते ६-४-४३—पैदा किया जाता है।
अन्वतप्त पापेन ३-१-६५—पापी द्वारा पश्चात्ताप किया गया।
दीयते ,, दिया जाता है।

धीयते ३-१-६५—धारण किया या पकड़ा जाता है।
जग्ले ,, दुःखी हुआ, दुःख किया गया।
हन्यते ,, मारा जाता है।
गृह्यते ,, पकड़ा जाता या ग्रहण किया जाता है।
दृश्यते ,, देखा जाता है।
शम्यते मोहो मुकुन्देन—मुकुन्द द्वारा मोह दबाया जाता या दूर किया जाता है।
शंशम्यते ६-४-९३—बार बार दबाया जाता है।
दम्यते ,, शान्त किया या दमन किया जाता है।
अजागारि ,, जागा गया।
अमाजि, अमञ्जि ,, तोड़ा गया।
अलाभि, अलम्भि—पाया गया।

गौर्दुह्यते पयः—गाय से दूध दुहा जाता है।
अजा ग्रामं नीयते, ह्रियते, कृष्यते, उह्यते वा—बकरी गाँव में ले जाई जाती है।
बोध्यते माणवकं धर्मः
माणवको धर्ममिति वा—बालक को धर्म समझाया जाता है।
भोज्यते माणवकमोदनम्, माणवक ओदनं वा—बालक को भात खिलाया जाता है।
देवदत्तो ग्रामं गम्यते—देवदत्त द्वारा गाँव जाया जाता है।
मासो मासे वा आस्यते देवदत्तेन—देवदत्त द्वारा महीने भर बैठा जाता है।
मासमास्यते माणवकः—बालक महीने भर बैठाया जाता है।

इति भावकर्मतिङ्प्रकरणम्

## अथ कर्मकर्तृतिङ्प्रकरणम्

साध्वसिश्छिनत्ति—तलवार अच्छा काटती है।
काष्ठानि पचन्ति—लकड़ी (ईंधन) पकाती है।
स्थाली पचति—पतीली पकाती है।
पच्यते ओदनेन—चावल द्वारा पका जाता है अर्थात् चावल पकता है।
भिद्यते काष्ठेन—लकड़ी द्वारा टूटा जाता है अर्थात् लकड़ी टूटती है।
पच्यते ओदनः ३-१-८७—भात पकता है।
भिद्यते काष्ठम्—लकड़ी टूटती है।
भेत्तव्यं कुसूलेन—कुसूल (कोठिला को टूटना चाहिए।
गच्छति ग्रामः—गाँव जाता है।
आरोहति हस्ती—हाथी झुकता है।
अधिगच्छति शास्त्रार्थःस्मरति श्रद्दधाति वा
यत्कृपावशतस्तस्मै नमोऽस्तुगुरवेसदा—उस गुरुदेव को सदा नमस्कार है जिसकी कृपा से शास्त्रों का भाव समझा जाता है, स्मरण किया जाता है तथा विश्वास होता है।

करिष्यते घटः—घड़ा बनाया जायगा।
अन्योन्यं स्पृशतः—एक दूसरे को छूता है।
अजा ग्रामं नयति—बकरी गाँव जाती है।
गौः पयो दुग्धे ३-१ ८९—गाय स्वयं दूध छोड़ती है।
अकारि, अकृत ३-१-६२—स्वयं बना।
अदोहि ३-१-६३—स्वयं दूध छोड़ा।
उदुम्बरः फलं पच्यते ,, गूलर का फल पकता है।
सृज्यते स्रजं भक्तः ,, भक्त माला बनाता है।
युज्यते ब्रह्मचारी योगम् ,, ब्रह्मचारी योग साधन करता है।
अलंकुरुते कन्या ,, कन्या अपने को सजाती है।
अवकिरते हस्ती ,, हाथी धूल उड़ाता है।
गिरते ,, निगलता है।
आद्रियते ,, आदर किया जाता है।

चिकीर्षते कटः ३-१-६३—चटाई बनना चाहती है।
अवारुद्ध गौः ३-१ ६४—गाय स्वयं रोकी गई।
अवारोधि गौर्गोपेन ,, गोप द्वारा गाय रोकी गई।
तप्यते तपस्तापसः ३-१-८८—तपस्वी तप करता है।
उत्तपति सुवर्णं सुवर्णकारः ,, सोनार सोना तपाता है।
प्रस्नुते ३ १-८९—टपकता है।
नमते दण्डः ,, लाठी झुकती हैं।
कारयते ,, कराता है।
उच्छ्रयते दण्डः ,, लाठी उठती है।
कारिष्यते ,, किया जायगा।
उच्छ्रायिष्यते ,, उठाया जायगा।
ब्रूते कथा —कथा कही जाती है।
भारद्वाजीयाः पठन्ति—भारद्वाजीय पढ़ते हैं।
उत्पुच्छयते गौः—गाय पूँछ ऊपर उठाती है।
ग्रन्थति ग्रन्थम्—ग्रन्थ बनाता हैं।
श्रन्थति मेखलां देवदत्तः—देवदत्त मेखला ढीली करता है।
विकुर्वते सैन्धवा.—घोड़े हिनहिनाते हैं।
कुष्यति कुष्यते वा पादः—पैर स्वयं खिंचता है।
रज्यति रज्यतेवा वस्त्रम्—वस्त्र स्वयं रँगा जाता है।
कुष्णाति पादं देवदत्तः---देवदत्त पैर खुजलाता है।

इति कर्मकर्तृतिङ्प्रकरणम्

# अथ लकारार्थप्रकरणम्

स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः ३-२-११२—कृष्ण याद है? हम लोग गोकुल में रहे थे।
बुध्यते, चेतयसे ३-२-११२—जानते हो? स्मरण है?
अभिजानासि कृष्ण यद्वने अभुञ्ज्महि ३-२-११३—कृष्ण, स्मरण करते हो हम लोगों ने वन में भोजन किया था।
स्मरसि कृष्ण वने वत्स्यामस्तत्र-गाश्चारयिष्यामः ३-२-११४—कृष्ण याद है जो हम लोग वनमें रहे और वहाँ गायों को चराया।
चकार ३-२-११५—किया।
सुप्तोऽहं किल विललाप ,, वास्तव में मैंने निद्रावस्था में बका झका।
बहु जगद पुरस्तात्तस्य मत्ता किलाहम् ,, मतवाली हुई मैंने उसके सामने बहुत कुछ बका झका।
कलिङ्गेष्ववात्सीः? ,, क्या तुम कलिंग में रहे?
नाहं कलिङ्गान् जगाम ,, मैं कलिंग जनपद गया भी नहीं, रहना तो दूर रहा।
इति हाकरोच्चकार वा ३-२-११६—उसने "ह" (हाय) यह कहा।
शश्वदकरोच्चकार वा ,, उसने उसे बराबर कहा।
अगच्छत् किम्, जगामकिम् ३-२ ११७—क्या अभी गया।
कंसं जघान किम् ,, क्या कृष्ण ने बहुत पहिले कंस को मारा था।
यजतिस्म युधिष्ठिरः ३-२-११८—युधिष्ठिर ने यज्ञ किया।
एवं स्म पिता ब्रवीति ३-२-११९—पिता ने ऐसा कहा।
अकार्षीःकिम् ३-२-१२०—क्या तुमने बनाया?
ननु करोमि भोः ,, हाँ मैंने बनाया।
अकार्षीःकिम् ३-२ १२१—क्या तुमने बनाया?
नकरोमि, नाकार्षम् ,, नहीं मैंने नहीं बनाया।
अहं नु करोमि, अहंन्वकार्षम् ,, हाँ, यदि मैंने बनाया तो क्या हुआ।
वसन्तीह पुरा छात्राः, अवात्सीः, ऊषुर्वा ३-२-१२२—यहाँ पहिले छात्र रहते थे।
यजतिस्म पुरा ,, पहिले यज्ञ किया था।
यावद्भुङ्क्ते ३-३-४—अवश्य खायगा।
पुरा भुङ्क्ते ,, ,,

यावद्दास्यते तावद्भोक्ष्यते—जब तक वह देगा तब तक खायगा।

पुरा यास्यति ,, नगर के साथ जायगा।

कदा कर्हि वा भुङ्क्ते, भोक्ष्यते,

भोक्ता वा ३-३-५—कब खायगा।

कं कतरं कतमं वा भोजयसि, भोजयिष्यसि,

भोजयितासि वा ३-३-६—तुम किसको, उन दोनों में किसको, अथवा उन सब में किसको खिलाओगे ?

कः पाटलिपुत्रं गमिष्यति ३-३-६—कौन पटना जायगा।

योऽन्नं ददाति दास्यति दाता वा ३-३-७—जो अन्नदान करता है।

स स्वर्गं याति, यास्यति, याता वा ,, वह स्वर्ग जाता है।

कृष्णश्चेद्भुङ्क्ते त्वं गाश्चारय ३-३-८—यदि कृष्ण खायेंगे तो तुम गायों को चराओ।

मुहूर्तादुपरि उपाध्यायश्चेदागच्छेत्

आगमिष्यति आगन्ता वा

त्वंछन्दोऽधीष्व ३-३-९—यदि आचार्य दो घड़ी (४८ मिनट) बाद आते हैं तो तुम छन्दःशास्त्र पढ़ो।

कदा आगतोसि ३-३-१३१—कब आये हो ?

अयमागच्छामि, अयमागमम्—अभी आता या आया हूँ।

कदा गमिष्यति—कब जाओगे।

एष गच्छामि, गमिष्यामि वा—अभी जाता हूँ या जाऊँगा।

देवश्चेद्वर्षति, अवर्षीत् वर्षिष्यति वा धान्यमवाप्स्म,

वपामःवप्स्यामो वा ३-३-१३२—यदि वर्षा होती है, हुई या होगी तो हम धान बोयेंगे।

वृष्टिश्चेत्क्षिप्रमाशुत्वरितं

वा यास्यति शीघ्रं वप्स्यामः ३-३-.३३—यदि शीघ्र वर्षा होती है तो हम शीघ्र बोयेंगे।

श्वः शीघ्रं वप्स्यामः—कल हम जल्दी बोयेंगे।

गुरुश्चेदुपेयादाशंसेऽधीयीय३-३-१३४- यदि अध्यापक आयेंगे मैं आशा करता हूँ कि पढूँगा।

आशंसे क्षिप्रमधीयीय ३-३-१३४—आशा करता हूँ शीघ्र पढूँगा।

यावज्जीवमन्नमदादास्यति वा ३-३-१३४—जीवन पर्यन्त अन्न दिया।

येयं पौर्णमास्यतिक्रान्ता

तस्यामग्नीनाधित ,, जो यह पूर्णिमा व्यतीत हुई उसमें अग्निस्थापन किया।

सोमेनायष्ट—सोम याग किया।

योऽयमध्वा गन्तव्यः पाटलिपुत्रात्तस्य यदवरं कौशाम्ब्या-

स्तत्र सक्तून्पास्यामः ३-३-१३६—कौशाम्बी नगर से पटना जाने वाली सड़क के इस तरफ हम लोग सत्तू पीयेंगे।

योऽयं वत्सर आगामी तस्य यदवरमाग्रहायण्यास्तत्र-

युक्ता अध्येष्यामहे ३-३-१३७—आगामी वर्ष की अगहन की पूर्णिमा के इस तरफ हम लोग साथ साथ पढ़ेंगे।

योऽयं संवत्सर आगामी तस्य यत्परमाग्रहाय-

ण्यास्तत्राध्येष्यामहे ३-३-१३८—आगामी वर्ष की अगहन पूर्णिमा के उस तरफ हम पढ़ेंगे।

योऽयं मास आगामी तस्यऽवरः

पञ्चदशरात्रस्तत्राध्येतास्महे ,, आगामी मास के पक्ष के इस तरफ पढ़ेंगे।

सुवृष्टिश्चेदभविष्यत्तदा

सुभिक्षमभविष्यत् ३-३-१३८—यदि वर्षा अच्छी हुई होती तो खूब अन्न हुआ होता।

अपि जायां त्यजसि ३-३-१४२—धिक्कार, तुमने अपनी भार्या को छोड़ा, छोड़ते हो या छोड़ोगे।

जातु गणिकामाधत्से ,, क्या वेश्या रक्खोगे।

कथं धर्मं त्यजेः त्यजसि वा ३-३-१४३—धर्म को कैसे छोड़ते हो ?

कथं नाम तत्रभवान् धर्ममत्यक्ष्यत् ,, श्रीमान् ने धर्म को क्यों छोड़ा।

कः कतरः कतमो वा हरिं
निन्देत् निन्दिष्यति वा ३-३-१४४—कौन हरि की निन्दा करेगा।

न सम्भावयामि न मर्षये वा भवान् हरिं
निन्देत् निन्दिष्यति वा ३-३-१४५—मैं विश्वास नहीं करता या मैं सह नहीं सकता कि आप हरि की निन्दा करेंगे।

नश्रद्दधे न मर्षये वा किं किल त्वं
शूद्रान्नं मोक्ष्यसे ३-३-१४६—मैं विश्वास नहीं करता या सहन नहीं कर सकता कि तुम शूद्रान्न खाओगे।

अस्ति भवति विद्यते
वा शूद्रीं गमिष्यति ,, क्या यह सम्भव है कि आप शूद्रा के पास जायेंगे?

जातु यद्यदा यदि वा त्वादृशो हरिं निन्देन्नाव-
कल्पयामि न मर्षयामि ३-३-१४७—न तो मैं विश्वास करता न सहन कर सकता हूँ कि तुम्हारे समान व्यक्ति हरि की निन्दा करने का साहस करे।

यच्च यत्र वा त्वमेवं कुर्याः न श्रद्दधे-
न मर्षयामि ३-३-१४८—न मैं विश्वास करता हूँ न सहन कर सकता हूँ कि तुम ऐसा करोगे।

यच्च यत्र वा त्वं शूद्रं याजयेः,
अन्याय्यं तत् ३-३-१४९—तुम शूद्र को यज्ञ कराओ यह अन्याय्य है।

,, ,, ,, आश्चर्यमेतत् ३-३-१५०—यह आश्चर्य है।

आश्चर्यमन्धो नाम कृष्णं
द्रक्ष्यति ३-३-१५१—अन्धा कृष्ण को देखता है यह आश्चर्य हैं।

आश्चर्यं यदि मूको नामाधीयीत ,, यह आश्चर्य है यदि गूँगा पढ़ता है।

उत अपि वा हन्यादघं हरिः ३-३-१५२—निःसंदेह भगवान् पाप नष्ट करते हैं।

उत दण्डः पतिष्यति ३-३-१५२—क्या लाठी गिरेगी?

अपिधास्यति द्वारम् ,, दरवाजा वन्द करता है।

कामो मे भुञ्जीत भवान् ३-३-१५३—यह मेरी इच्छा है कि आप भोजन करें।

कच्चिज्जीवति ,, मैं आशा करता हूँ वह जीवित है।

अपिगिरिं शिरसा भिन्द्यात् ३-३-१५४—मैं आशा करता हूँ वह सिर से पहाड़ को भी तोड़ देगा।

अलं कृष्णो हस्तिनं हनिष्यति ,, कृष्ण हाथी को भी मार सकेंगे।

सम्भावयामि भुञ्जीत मोक्ष्यते
वा भवान् ३-३-१५५—मैं आशा करता हूँ आप भोजन करेंगे।

सम्भावयामि यद्भु-
ञ्जीथास्त्वम् ,, ,, तुम भोजन करोगे।

कृष्णं नमेच्चेत्सुखं यायात् ३-३-१५६—यदि कृष्ण को नमस्कार करे तो वह सुख पायेगा।

कृष्णं नंस्यति चेत्सुखं यास्यति ,, ,, करेगा, ,,

हन्तीति पलायते ,, वह मारता है इसलिए वह भागता है।

इच्छामि भुञ्जीत भुङ्क्तां
वा भवान् ३-३-१५७ मैं चाहता हूँ कि आप भोजन करें।

इच्छन् करोति ,, चाहता हुआ वह करता है।

भुञ्जीयेतीच्छति ३-३-१५९—वह चाहता है कि वह भोजन करे।

इच्छति, इच्छेत् ३-३-१६०—वह चाहता है।

कामयेत, कामयते ,, वह चाहता है।

यजेत ,, उसे यज्ञ करना चाहिए (विधि)।

इह भुञ्जीत भवान् ,, आप यहाँ भोजन करें (निमन्त्रण)।

इहासीत ,, यहाँ बैठे (कहना)।

पुत्रमध्यापयेद्भवान् ,, मैं प्रार्थना करता हूँ आप मेरे पुत्र को पढ़ायें।

किं भो वेदमधीयीय उत तर्कम् ३–३–१६०—क्या मैं वेद पढ़ूँ या तर्कशास्त्र।

भो भोजनं लभेय ,, क्या मैं भोजन पा सकता हूँ (प्रार्थना)।

भवता यष्टव्यम् ३–३–१६३—आपको यज्ञ करना चाहिए।

भवान् यजताम् ,, आप यज्ञ करें।

मुहूर्त्तादूर्ध्वं यजेत, यजताम्,

यष्टव्यं वा ३–३–१६४—एक घंटे वाद आप यज्ञ कर सकते हैं, या आपको यज्ञ करना चाहिए।

ऊर्ध्वं मुहूर्तांद्यजतां स्म ,, एक घंटे के वाद आप यज्ञ कर सकते हैं या यज्ञ करना चाहिए।

त्वं स्माध्यापय ३–३–१६६—मैं चाहता हूँ कि तुम पढ़ाओ।

कालः समयो वेला वा यद्-

भुञ्जीत भवान् ३–३–१६८—यह समय हैं कि आप भोजन करें।

त्वंकन्यां वहेः ३–३–१६९—तुम कन्या का विवाह कर सकते हो।

भारं त्वं वहेः ३–३–१७२—तुम बोझा ढो सकते हो।

मा कार्षीः ३–३–१७५—मत करो।

कथं मा भवतु मा भविष्यतीति ,, न हो, न होगा।

वसनूददर्श ३–४–१—रहते हुए देखा।

सोमयाज्यस्य पुत्रो भविता ,, उसे सोम यज्ञ करने वाला पुत्र पैदा होगा।

याहि याहीति याति ३–४–२—जाओ, जाओ, कहकर जाता है अर्थात् निरन्तर जाता है।

यातयातेति यूयं यात ३–४–२—जाओ जाओ कहकर जाते हैं अर्थात् निरन्तर जाते है।

अधीष्वाधीष्वेत्यधीते—वह वहुत पढ़ता है।

अधीध्वमधीध्वमितियूयमधीध्वम्—तुम लोग वहुत पढ़ते हो।

सक्तूनूपिब धानाःखादेत्यभ्यवहरति—वह सत्तू पीता है, लावा खाता है इस प्रकार खाता ही रहता है।

अन्नं भुङ्क्ष्व दाधिकमास्वा-
दयस्वेत्यभ्यवहरति—चावल खाओ दही-बड़ा खाओ इस प्रकार वह खाता ही रहता है।

पिवत खादतेत्यभ्यवहरति—पिओ, खाओ इस प्रकार खाता ही रहता है।

भुङ्ध्वमास्वादयध्वमित्यभ्यवहरध्वम्—खाओ, चखो, इस प्रकार खाते ही रहते हो।

सक्तून् पिवति—सत्तू पीता है।

धानाःखादति—लावा खाता है।

अन्नं भुङ्क्ते—भात खाता है।

दाधिकमास्वादयते—दही बड़े चखता है।

पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः।
विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः॥

उसने नगर को घेर लिया, नन्दन वन के वृचों को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, रत्नों को लूट लिया, देवाङ्गनाओं का अपहरण कर लिया, इन्द्रशत्रु बलवान् उस रावण ने इन्द्र से विरोधकर उपर्युक्त प्रकार से स्वर्ग में दिन रात खलबली मचा दी।

इति लकारार्थप्रकरणम्

## अथ कृदन्तप्रकरणम्

एधितव्यम्, एधनीयं त्वया ३–१ ९६—तुमको बढ़ना चाहिए।

चेतव्यश्चयनीयो वा धर्मस्त्वया ,, तुमको धर्म का संग्रह करना चाहिए।

वास्तव्यः ३–१–९६— रहने वाला, निबासी।

पचेलिमा माषाः, पक्तव्याः ,, पकाने योग्य उड़द।

भिदेलिमाः सरलाः, भेत्तव्याः ,, काटने योग्य या तोड़ने योग्य देवदारु।

प्रयाणीयम् ८–४–२९—जाने अथवा आक्रमण करने योग्य।
प्रमग्नः ,, डूबा हुआ।
निर्विण्णः ,, दुःखी, उदास।
प्रयापणीयम्, प्रयापनीयम् ८–४–३०—भेजे जाने योग्य।
प्रयाप्यमाणम् पश्य ,, भेजे जाते हुए व्यक्ति को देखो।
दुर्यानम् ,, बुरी तरह जाना।
दुर्यापनम् ,, बुरी तरह भेजना।
प्रकोपणीयम्, प्रकोपनीयम् ८–४–३१—क्रोध करने योग्य, क्रोध करना चाहिए
प्रोहणीयम् ,, अनुमान करना चाहिए।
प्रवपणीयम् ,, बोना चाहिए।
प्रेङ्खणीयम् ८–४–३२—हिलाना चाहिए, हिलाने योग्य।
प्रमङ्गनीयम् ,, खिसकना चाहिए, खिसकने योग्य।
प्रेन्वनम् ,, भेजना।
प्रोम्भणम् ,, बांधना।
प्रणिंसितव्यम्, प्रनिंसितव्यम् ८–४–३३—चुम्बन करना चाहिए, चुम्बन करने योग्य।
प्रमानीयम् ८–४–३४—चमकना चाहिए, चमकने योग्य।
प्रभवनीयम् ,, होना चाहिए, होने योग्य।
प्रपवणीयः सोमः ,, सोम को शुद्ध करना चाहिए, शुद्ध करने योग्य।
प्रमापनीयम् ,, चमकाना चाहिए, चमकाने योग्य।
प्रख्यानीयम् ,, प्रसिद्ध करना चाहिए, प्रसिद्ध करने योग्य।
स्नानीयं चूर्णम् ३–३–११३—जिससे स्नान किया जाय वह चूर्ण।
दानीयो विप्रः ,, जिस ब्राह्मण को दान दिया जाय, दान देने योग्य।
चेयम् ३–१–९७—संग्रह करना चाहिए, संग्रह करने योग्य।
देयम् ६–४–६५—देना चाहिए, देने योग्य।
जेयम् ३–१–९७—जीतना चाहिए, जीतने योग्य।
ग्लेयम् ६–४–६५—खिन्न होना चाहिए, खिन्न होने योग्य।
तक्यम् ,, हँसना चाहिए, हँसने योग्य।
शस्यम् ,, मारना चाहिए, मारने योग्य।

चत्यम् ६–४–६५—माँगना चाहिए, माँगने योग्य।
यत्यम् ,, प्रयत्न करना चाहिए, प्रयत्न करने योग्य।
जन्यम् ,, उत्पन्न करना चाहिए, उत्पन्न करने योग्य।
वध्यः, घात्यः ,, मारना चाहिए, मारने योग्य।
शप्यम् ३–१–९८—शाप देना चाहिए, शाप देने योग्य।
लभ्यम् ,, प्राप्त करना चाहिए, प्राप्त करने योग्य।
आलम्भ्यो गौः ७–१–६५—मारने योग्य बैल।
उपलम्भ्यः साधुः ७–१–६६—प्रशंसा के योग्य साधु।
उपलभ्यः ,, प्राप्त करने योग्य।
शक्यम् ३–१–९९- कर सकने योग्य।
सह्यम् ,, सहने योग्य।
गद्यम् ३–१–१००—बोलने योग्य, गद्य।
मद्यम् ,, नशा करने योग्य, शराब।
चर्यम् ,, करने योग्य।
आचर्यो देशः ,, जाने योग्य देश।
आचार्यो गुरुः ,, शुश्रूषा के योग्य गुरु।
प्रयाम्यम् ,, रोकने या शासन में रखने योग्य।
नियम्यम् ,, ,, ,, ।
अवद्यं पापम् ३–१–१०१—न कहने योग्य (पाप)।
अनुद्यं गुरुनाम ,, न उच्चारण करने या न कहने योग्य गुरु का नाम।
पण्या गौः ,, बेचने योग्य गाय।
पाण्यम् ,, प्रशंसा के योग्य, प्रशंसनीय।
शतेन वर्या कन्या ,, सैकड़ों से विवाह करने योग्य कन्या।
वृत्यान्या ,, व्यक्ति विशेष से विवाह करने योग्य कन्या।
वह्यम् ३–१–१०२—सवारी।
वाह्यम् ,, ढोने योग्य अथवा जो ढो सके।
वोढव्यम् ,, ,, ,, ,, ।
अर्यः ३–१–१०३—स्वामी अथवा वैश्य।
आर्यः (ब्राह्मणः) ,, आदरणीय (ब्राह्मण)।
उपसर्या गौः ३–१–१०४—सांड़ के साथ संबन्ध करने योग्य गाय।

उपसार्या काशी ३-१-१०४—जाने या पहुँचने योग्य काशी।
अजर्यम् –३१–२०५ - जो जीर्ण होने योग्य न हो, नष्ट होने योग्य न हो, मित्रता।
अजरिता कम्बलः ,, कभी नष्ट न होने वाला कम्बल।
अजार्यं संगतेन ,, मित्रता से जो नष्ट न हो।
ब्रह्मोद्यम्, ब्रह्मवद्यम् ३-१-१०६—ब्रह्म अथवा वेद संबंधी चर्चा।
अनुवाद्यम् ,, अनुवाद करने योग्य।
अपवाद्यम् ,, निषेध करने योग्य।
ब्रह्मभूयम् ३-१-१०७—ब्रह्मत्व, ब्रह्मरूप।
भव्यम् ,, सुन्दर।
प्रभव्यम् ,, अधिक सुन्दर।
ब्रह्महत्या ३-१-१०८—ब्राह्मण का वध।
इत्यः ३-१-१०९—जाने योग्य।
स्तुत्यः ,, प्रशंसा के योग्य।
शिष्यः ,, शिक्षा देने योग्य।
वृत्यः ,, वरण करने या चुनने योग्य।
वार्या ऋत्विजः ,, संग्रह करने योग्य ऋत्विज।
आदृत्यः ,, आदर करने योग्य।
जुष्यः ,, सेवा करने योग्य।
अवश्यस्तुत्यः ,, अवश्य प्रशंसनीय।
शस्यम्, शंस्यम् ,, प्रशंसनीय।
दुह्यम्, दोह्यम् ,, दुहने योग्य।
गुह्यम्, गोह्यम् ,, छिपाने योग्य।
आज्यम् ,, मलने योग्य।
वृत्यम् ३-१-११०—रहने योग्य।
वृध्यम् ,, बढ़ने योग्य।
कल्प्यम् ,, बनाने योग्य।
चर्त्यम् ३-१-११०—हानि पहुँचाने योग्य, कष्ट देने योग्य।
कीर्त्यम् ,, काटने योग्य।
खेयम् ३-१-१११—खोदने योग्य, खोदना चाहिए।
भृत्याः ३-१-११२—भरणपोषण करने योग्य, नौकर।
संभृत्याः, संभार्याः ,, अच्छी तरह पालन करने योग्य।
भार्याः ,, एक क्षत्रिय जाति।
मृज्यः, मार्ज्यः ३-१-११३—शुद्ध करने योग्य, साफ करने योग्य।

न्यङ्कुः ७-३-५३—काला बारहसिंहा।
राजसूयः, राजसूयम् ३-१-११४—यज्ञ, जिसमें क्षत्रिय द्वारा सोमरस निकाला जाय।
सूर्यः ,, जो आकाश में चले, जो लोगों को काम करने की प्रेरणा दे, सूर्य।
मृषोद्यम् ,, असत्य कथन।
रुच्यः ,, अनुकूल प्रेमी।
कुप्यम् ,, सोना तथा चाँदी से भिन्न निम्न कोटि की धातु।
गोप्यम् ,, छिपाने योग्य।
कृष्णपच्याः ,, जोती हुई भूमि में स्वयं उगने वाले अन्न।
कृष्णपाक्याः ,, जोती हुई भूमि में पैदा किये जाने वाले अन्न।
अव्यथ्यः ,, जो पैरों से नहीं चलता, सर्प।
भिद्यः ३-१-११५—किनारा तोड़नेवाला नद, जम्मू की 'बई' नाम की नदी।
उद्ध्यः ,, किनारे के ऊपर जिसका जल बहने लगे वह नद, जम्मू की 'उम्ब' नदी।
भेत्ता ,, तोड़नेवाला कोई व्यक्ति।
उज्झिता ,, छोड़नेवाला कोई व्यक्ति।
पुष्यः ३-१-११६—जिसमें काम पूरा हो जाय वह नक्षत्र।
सिध्यः ,, जिसमें काम सिद्ध हो जाय वह नक्षत्र।
विपूयो मुञ्जः ३-१-११७—रस्सी बनाने के लिए साफ की गयी मूँज।
विनीयःकल्कः ,, छोड़ने, फेंकने या न करने योग्य, पाप या फोंक।
जित्यो हलिः ,, शक्ति से खींचने योग्य बड़ा हल।
विपव्यम् ,, साफ करने योग्य।
विनेयम् ,, छोड़ने योग्य।
जेयम् ,, जीतने योग्य।
प्रतिगृह्यम् ३-१-११८—लेना चाहिए (वैदिक)।
अपिगृह्यम् ,, ग्रहण करना चाहिए (वैदिक)।

प्रतिग्राह्यम् ३-१-११८—लेना चाहिए।
अपिग्राह्यम् „ ग्रहण करना चाहिए।
अवगृह्यम् ३-१-११९—अलग करने योग्य पद।
प्रगृह्यम् „ प्रगृह्य संज्ञा (सन्ध्यभाव) करने योग्य पद।
गृह्यकाः शुकाः „ पकड़े हुए (पालतू) तोते।
ग्रामगृह्या सेना „ गाँव के बाहर ठहरी हुई सेना।
आर्यगृह्यः „ आर्यों के पक्ष का व्यक्ति।
पक्ष्यः „ पक्ष में हुआ।
कृत्यम् ३-१-१२०—करने योग्य (काम)।
कृष्यम्, वृष्यम् „ शक्ति, स्फूर्ति वर्द्धक।
कार्यम् ३-१-१२४—करने योग्य (काम)।
वर्ष्यम् „ वर्षा में हुआ।
युग्यो गौः ३-१-१२१—गाड़ी में जोता जानेवाला बैल।
अमावास्या, अमावस्या ३-१-१२२—जिस तिथि को सूर्य तथा चन्द्रमा साथ साथ एक नक्षत्र में हों।
पाक्यम् „ पकाने योग्य।
पाणिसर्ग्या रज्जुः „ हाथ से बनाने या बटने योग्य (रस्सी)
समवसर्ग्या „ अच्छी तरह से बनाने योग्य।
गर्ज्यम् ७-३-५९—गर्जने योग्य।
समाजः ७-३-६०—साथ साथ रहने या चलने वाला, एक स्वभाव या संस्कृति के व्यक्तियों का समूह।
परिव्राजः „ सब कुछ त्याग कर भ्रमण करने वाला, संन्यासी।
भुजः ७-३-६१—जिससे भोजन किया जाय, हाथ।
न्युब्जः „ जिससे मनुष्य टेढ़ा हो जाय, कुबड़ा।
भोगः „ जिससे सुख का अनुभव किया जाय।
समुद्गः „ ढक्कनदार बक्स।
पञ्च प्रयाजाः ७-३-६२—दर्श-पौर्णमासेष्टि में दीज ने वाली पाँच आहुतियाँ।
त्रयोऽनुयाजाः „ बाद में दी जाने वाली तीन आहुतियाँ।
प्रयागः „ उत्तम यज्ञ।
अनुयागः „ बाद में किया जाने वाला यज्ञ।

वञ्च्यम् ७-३-६४—जाने योग्य।
वङ्क्यम् „ टेढ़ा किया जाने वाला।
ओकः „ पक्षी, शूद्र।
अवश्यपाच्यम् ७-३-६५—अवश्य पकाने योग्य।
याज्यम् ७-३-६६—यज्ञ करने योग्य।
याच्यम् „ माँगने योग्य।
रोच्यम् „ चमकाने योग्य।
प्रवाच्यम् „ पढ़ने योग्य, एक ग्रन्थ का नाम।
अर्च्यम् „ प्रशंसा करने योग्य।
त्याज्यम् „ छोड़ने योग्य।
वाच्यम् ७-३-६७—कहने योग्य।
वाक्यम् „ बोलने योग्य (शब्द समूह)।
प्रयोज्यः ७ ३-६८—प्रयोग करने योग्य।
नियोज्यः „ जो काम में लगाया जा सके, नौकर।
भोज्यम् ७-३-६९—खाने योग्य।
भोग्यम् „ काम में लाने योग्य।
लाप्यम् „ कहने योग्य।
दाभ्यः „ धोखा देने योग्य, अविश्वसनीय।
लाव्यम् ३-१-१२५—अवश्य काटने योग्य।
पाव्यम् „ अवश्य पवित्र करने योग्य।
आसाव्यम् ३-१-१२६—चुआने या टपकाने (अर्क, शराब) योग्य।
याव्यम् „ मिलने योग्य।
वाप्यम् „ अवश्य बोने योग्य।
राप्यम् „ अवश्य कहने योग्य।
त्राप्यम् „ अवश्य लज्जित किये जाने योग्य।
चाम्यम् „ अवश्य पीने योग्य।
आनाय्यः ३-१-१२७—गार्हपत्य अग्नि से लाई जाने योग्य अग्नि, यह सदा प्रज्वलित नहीं रहती।
आनेयः „ लाने योग्य कोई वस्तु।
प्रणाय्यः ३-१-१२८—जो पसन्द न किया जाय, यथा चोर, विषय वासनानाओं से विरक्त (छात्र)।
प्रणेयः „ वश में करने योग्य।

पाय्यम् ३-१-१२९—जिससे अन्न आदि नापा जाय (प्या) प्राचीन नाप।
सान्नाय्यम् ,, हवन के लिए जिसे अग्नि के पास ले जाया जाय।
निकाय्यः ,, जिसमें धन धान्य रक्खा जाय, घर।
धाय्या ,, जिस मन्त्र से समिधा रक्खी जाय।
कुण्डपाय्यः ३-१-१३०-विशिष्ट सोम ऋतु, जिसमें कुण्ड (लकड़ी की चौकोर तश्तरी) से सोम रस पिया जाय।
संचाय्यः ,, विशिष्ट सोमक्रतु जिसमें सोम संग्रह किया जाय।
परिचाय्यः ३-१-१३१—वृत्ताकार रक्खी हुई यज्ञाग्नि।
उपचाय्य ,, यज्ञ की अग्नि।
परिचेयम् ३-१-१३१—एकत्र करने योग्य।
उपचेयम् ,, संग्रह करने योग्य, बढ़ाने योग्य।

संवाह्यम् ३-१-१३१—ले जाने योग्य।
चित्यः ३-१-१३२—जिसका संग्रह किया जाय, अग्नि।
अग्निचित्या ,, अग्नि का संग्रह।
गन्तव्यम्, गमनीयम्, गम्यम् ,, तुमको अवश्य जाना चाहिए तुम जा सकते हो, यह तुम्हारे जाने का समय है।
स्तुत्यः ३-३-१६९—प्रशंसनीय।
स्तोता ,, प्रशंसा करनेवाला।
भव्यः ३-४-६८—होने या रहनेवाला, सत्ता।
भव्यमनेन वा ,, इसको होना या रहना चाहिए।
गेयः साम्नामयम् ,, यह सामवेद का गानेवाला है।
गेयम्सामानेन वा ,, अथवा इसके द्वारा सामवेद का गान होना चाहिए।
वोढव्यः वहनीयो वाह्यो वा ,, ढोने या ले जाने योग्य।

इति कृत्यप्रक्रिया

# अथ कृत्प्रक्रिया

कारकः, कर्ता ३-१-१३३—करने वाला।
वोढा ,, ढोने वाला।
कारिका, कर्त्री ,, करनेवाली।
कुटिता, कोटकः ,, टेढ़ा करनेवाला, तोड़नेवाला।
विजिता ,, डरानेवाला, हिलानेवाला।
घातकः ,, मारनेवाला।
दायकः ,, देनेवाला।
शमकः ,, शान्त करनेवाला, सन्धि करानेवाला।
दमकः ,, दमन करनेवाला।
नियामकः ,, शासन या नियन्त्रण करनेवाला।
जनकः ,, पैदा करनेवाला, पिता।
वधकः ,, मारनेवाला।
रन्धकः ,, नाश करनेवाला।

जम्भकः ३-१-१३३—निगलनेवाला, मायावी।
रधिता, रद्धा ,, नाश करनेवाला।
भङ्क्ता ,, शुद्ध करनेवाला, साफ करनेवाला।
नंष्टा, नशिता ,, नाश करनेवाला।
रम्भकः रब्धा ,, प्रारम्भ करनेवाला।
लम्भकः लब्धा ,, पानेवाला।
एषिता, एष्टा ,, चाहनेवाला।
सहिता, सोढा ,, सहन करनेवाला।
दरिद्रिता, दरिद्रायकः ,, दरिद्र होनेवाला।
पादहारकः ,, पैरों से चुराने या ले जानेवाला।
प्रक्रन्ता ,, जानेवाला।
प्रक्रमितव्यम् ,, जाना चाहिए।

संक्रमिता ,, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जानेवाला ।
क्रमिता, क्रन्ता ,, जानेवाला ।
संजिगमिषिता ,, मिलने की इच्छा करनेवाला ।
विवृत्सिता ,, रहने की इच्छा करनेवाला ।
पापचकः, पापाचकः ,, बारबार या सदा पकानेवाला ।
नन्दनः ३-१-१३४—प्रसन्न करनेवाला, पुत्र ।
जनार्दनः ,, पापियों को कष्ट देनेवाला, विष्णु ।
मधुसूदनः ,, मधु नामक राक्षस को मारनेवाला, विष्णु ।
विभीषणः ३-१-१३४—अधिक डरानेवाला, रावण का भाई ।
लवणः ,, काटनेवाला ।
ग्राही ,, ग्रहण करनेवाला ।
स्थायी ,, ठहरनेवाला ।
विशयी ,, अधिक सोनेवाला ।
विषयी ,, देशवाला, स्थानवाला ।
परिभावी, परिभवी ,, हरानेवाला, अनादर करनेवाला ।
पचः ,, पकानेवाला ।
नदी ,, नदी
चोरी ,, चोरी करनेवाली ।
देवी ,, देवी ।
जारभरा ,, जार (उपपति) का भरणपोषण करनेवाली, व्यभिचारिणी ।
श्वपचा ,, चाण्डाल की स्त्री ।
श्वपाकः ,, चाण्डाल
चेक्रियः ,, अधिक खरीदनेवाला ।
नेन्यः ,, अधिक ले जानेवाला ।
लोलुवः ,, अधिक काटनेवाला ।
पोपुवः ,, अधिक शुद्ध या साफ करनेवाला ।
मरीमृजः ,, अधिक मलनेवाला ।
चराचरः, चरः ,, चलने या दौड़नेवाला ।
चलाचलः, चलः ,, ,, ,,
पतापतः, पतः ,, गिरनेवाला ।
वदावदः, वदः ,, बोलनेवाला ।
पाटूपटः, पाटः ,, चलने या बोलनेवाला ।

घनाघनः, हनः ,, मारनेवाला ।
रात्रिञ्चरः, रात्रिचरः ,, रात में घूमनेवाला, निशाचर, राक्षस ।
क्षिपः १-३-१३९—फेंकनेवाला ।
लिखः ,, लिखनेवाला ।
बुधः ,, जाननेवाला, पण्डित ।
कृशः ,, पतला होनेवाला ।
ज्ञः ,, जाननेवाला ।
प्रियः ,, प्रसन्न करनेवाला ।
किरः ,, बिखेरनेवाला, सूअर ।
क्षेपकः, क्षेप्ता ,, फेंकनेवाला ।
सुग्लः ३-१-१३६—अत्यन्त थका हुआ, खिन्न ।
प्रज्ञः ,, अधिक जाननेवाला, बुद्धिमान् ।
पिबः ३-१-१३७—पीनेवाला ।
जिघ्रः ,, सूँघनेवाला ।
धमः ,, फूँकनेवाला ।
धयः ,, माँ का दूध पीनेवाला, बच्चा ।
धया ,, माँ का दूध पीनेवाली बच्ची ।
पश्यः ,, देखनेवाला ।
लिम्पः ३-१-१३८—लीपनेवाला, पोतनेवाला ।
विन्दः ,, प्राप्त करनेवाला ।
धारयः ,, धारण करनेवाला, पकड़नेवाला ।
पारयः ,, पार उतारनेवाला
वेदयः ,, जाननेवाला ।
उदेजयः ३-१-१३८—हिलाने या कँपानेवाला ।
चेतयः ,, होश में लानेवाला ।
सातयः ,, सुखी करनेवाला ।
सात् ,, ( परमात्मा ) सुख देनेवाला ।
सात्वन्तः ,, ईश्वर-भक्त ।
साहयः ,, सहनेवाला ।
प्रलिपः ,, लीपनेवाला ।
निलिम्पा देवाः ,, देवता, गाय ।
गोविन्दः ,, गायों की रक्षा करनेवाला, कृष्ण ।
अरविन्दम् ,, कमल, आर की तरह पंखुड़ियों वाला ।

ददः ३-१-१३९—देना, देनेवाला।
दधः ,, धारण करना, धारण करनेवाला।
प्रदः ,, देनेवाला।
प्रधः ,, धारण करनेवाला।
ज्वालः, ज्वलः ३-१-१४०—लौ, लपट, ज्वाला।
चालः, चलः ,, चलनेवाला।
उज्वलः ,, श्वेत, चमकनेवाला।
अवतानः ,, फैलानेवाला।
अवश्यायः ३-१-१४१—तुषार, पाला।
प्रतिश्यायः ,, जुकाम, सर्दी।
दायः ,, पैतृकधन।
धायः ,, धारण करनेवाला।
व्याधः ,, पीड़ा।
आस्रावः ,, घाव।
संस्रावः ,, बहनेवाला, बहाव।
अत्यायः ,, अत्याचार, अनाचार।
अवसायः ,, उपसंहारा, अन्त।
अवहारः ,, चुरानेवाला।
लेहः ,, चाटना।
श्लेषः ,, आलिंगन करना।
श्वासः ,, साँस।
दावः, दवः ३-१-१४२—कष्ट देनेवाला, वन की आग।
नायः ,, ले जानेवाला।
प्रद्रवः ,, जलना।
प्रणयः ,, प्रेम।
ग्राहः ३-१ १४३—पकड़नेवाला, घड़ियाल।
ग्रहः ,, तारा।
भवः ,, सत्ता, संसार, शंकर।
भावः ,, वस्तु, पदार्थ, क्रिया।
गृहम् ३-१-१४४—जो धान्य आदि ग्रहण करे, घर।
गृहाः ,, घर ( बहु० )।
नर्तकः ३-१-१४५—नाचनेवाला।
नर्तकी ,, नाचनेवाली।
खनकः ,, खोदनेवाला।
खनकी ,, खोदनेवाली।
रजकः ,, धोबी।

रजकी, रजिका ,, धोबिन।
गाथकः ३-१-१४६—गानेवाला।
गायनः ३-१-१४७—गानेवाला।
गायनी ,, गानेवाली।
हायनः ३-१-१४८—धान ( जो जल को छोड़ दे ) वर्ष ( जो सभी पदार्थों को छोड़ दे )।
प्रवकः ३-१-१४९—अच्छी तरह चलनेवाला।
सरकः ,, अच्छी तरह सरकनेवाला।
लवकः ३-१-१४९—अच्छी तरह काटनेवाला।
जीवकः ३-१ १५०—जीवित रहे।
नन्दकः ,, प्रसन्न रहे।
कुम्भकारः ३-२-१—कुम्हार, घड़ा बनानेवाला।
मांसशीला ,, जिस स्त्री को माँस की लत (व्यसन) पड़ गयी हो।
मांसकामा ,, माँस चाहनेवाली।
मांसभक्षा ,, माँस खानेवाली।
कल्याणचारा ,, सदाचारिणी, सच्चरित्रा।
सुखप्रतीक्षा ,, सुख की आशा-प्रतीक्षा करनेवाली।
बहुक्षमा ,, अधिक क्षमा करनेवाली।
स्वर्गह्वायः ३-२-२—स्वर्ग कहनेवाली, चाहनेवाली।
तन्तुवायः ,, सूत बुननेवाला, जुलाहा।
धान्यमायः ,, अन्न नापनेवाला।
गोदः ३-२-३—गाय देनेवाला।
पार्ष्णित्रम् ,, पीछे से रक्षा करनेवाला।
गोसन्दायः ,, गोदान (विधि पूर्वक) करनेवाला।
ब्रह्मज्यः ,, ब्राह्मण को कष्ट देनेवाला।
आह्वः ,, बुलानेवाला, नाम।
प्रह्वः ,, नम्र, विनीत।
द्विपः ३-२-४—दो (सूँड तथा मुँह) से पीनेवाला हाथी।
समस्थः ,, सामान्य स्थिति में रहनेवाला, सुखी प्रसन्न।
विषमस्थः ,, असामान्य स्थिति में रहनेवाला, दुःखी, विपन्न।
आखूत्थः ,, चूहों का निकलना, बढ़ना, उत्पन्न होना।
प्रष्ठो गौः ८-३-९२—आगे चलनेवाला बैल, उत्तल बैल।
प्रस्थः ,, दस छटांक का एक तोल, चोटी।
द्विषः ८-३-९७—दो के साथ रहनेवाला।

त्रिष्ठः ,, तीन के साथ रहनेवाला।
तुन्दपरिमृगः ३-२-५—तोंद सहलानेवाला, आलसी।
शोकापनुदः ,, शोक को नष्ट करनेवाला।
तुन्दपरिमार्जः ,, तोंद को साफ करनेवाला।
शोकापनोदः ,, शोक को नष्ट करना।
मूलविभुजः ,, जड़ों को झुकानेवाला, रथ।
महीध्रः ,, पृथ्वी को धारण करनेवाला पर्वत।
कुध्रः ,, ,, ,, ,,
गिलः ,, निगलनेवाला, एक प्रकार की मछली या घड़ियाल।
सर्वंप्रदः ३-२-६—सब कुछ देनेवाला, उदार।
पथिप्रज्ञः ,, मार्ग निपुण।
गोसंप्रदाय ,, गोदान करनेवाला।
गोसंख्यः ३-२-७—गायों को गिननेवाला, चरवाहा।
सामगः ३-२-८—सामवेद का गान करनेवाला।
सामसंगायः ,, सामवेद का सम्यक् गान करनेवाला।
सामगी ,, सामवेद का गान करनेवाली।
सुरापी ,, शराब पीनेवाली
शीधुपी ,, शराब पीनेवाली।
क्षीरपा ,, दूध पीनेवाली।
सुरापा ,, शराब की रक्षा करनेवाली।
अंशहरः ३-२-९—भाग लेनेवाला, हिस्सेदार।
भारहारः ,, बोझा ढोनेवाला।
शक्तिग्रहः ,, भाला लेने या धारण करनेवाला।
लाङ्गलग्रहः ,, हल लेनेवाला, हलवाहा।
सूत्रग्रहः ,, सूत पकड़नेवाला।
सूत्रग्राहः ,, सूत लेनेवाला।
कवचहरः ३-२-१०—कवच धारण करने योग्य कुमार।
पुष्पाहरः ३-२-११—फूल लानेवाला।
भारहारः ,, बोझा लानेवाला।
पूजार्हा ३-२-१२—पूजा की योग्यता रखनेवाली।
स्तम्बेरमः ३-२-१३—हाथी (जो घास के समूहमें क्रीड़ा करे)।
कर्णेजपः ,, चुगलखोर (जो कान में फुस फुस करे)।
शम्भवः ३-२-१४—जैनियों के तीसरे अर्हत् का नाम।

शंवदः ३-२-१४—कल्याण कहनेवाला।
शंकरा ,, कल्याण करनेवाली एक परिव्राजिका।
खशयः ३-२-१५—आकाश में सोनेवाला।
पार्श्वशयः ,, करवट सोनेवाला।
पृष्ठशयः ,, पीठ के बल सोनेवाला।
उदरशयः ,, पेट के बल सोनेवाला।
उत्तानशयः ,, उतान सोनेवाला।
अवमूर्धशयः ,, मुँह को नीचे करके सोनेवाला।
गिरिशः, गिरिशयः ,, पर्वत पर सोनेवाला।
कुरुचरः ३-२-१६—कुरुजनपद में विचरण करनेवाला।
कुरुचरी ,, कुरु जनपद में विचरण करनेवाली।
भिक्षाचरः ३-२-१७—भिक्षा के लिए घूमनेवाला।
सेनाचरः ,, सेना में घूमनेवाला।
आदायचरः ,, लेकर चलनेवाला।
पुरस्सरः ३-२-१८—आगे जानेवाला, हरकारा।
अग्रतस्सरः ,, आगे चलनेवाला, नेता।
अग्रेसरः ,, आगे चलनेवाला, नेता।
पूर्वसरः ३-२-१९—सामने जानेवाला।
पूर्वसारः ,, पूर्व की ओर जानेवाला।
यशस्करी ३-२-२०—कीर्ति बढ़ानेवाली।
श्राद्धकरः ,, श्राद्ध करनेवाला।
वचनकरः ,, बात माननेवाला, आज्ञाकारी।
दिवाकरः ३-२-२१—दिन करनेवाला, सूर्य।
विभाकरः ,, प्रकाश करनेवाला, सूर्य।
भास्करः ,, प्रकाश करनेवाला, सूर्य।
निशाकरः ,, रात करनेवाला चद्रमा।
बहुकरः ,, बहुत करनेवाला, व्यस्त।
एककरः ,, एक ही काम करनेवाला।
द्विकरः ,, दो काम करनेवाला।
अहस्करः ,, दिन करनेवाला, सूर्य।
धनुष्करः ,, धनुष बनानेवाला।
अरुष्करः ,, घाव करनेवाला।
किंकरा ,, नौकरानी।
यत्करा ,, जो कुछ करनेवाली।
तत्करा ,, वह कहनेवाली।
किंकरी ,, नौकरानी।

कर्मंकरः ३–२–२२—मजदूर।
कर्मंकारः ,, काम करनेवाला, शिल्पी।
शब्दकारः ३–२–२३—शब्द करनेवाला।
स्तम्बकरिः ३–२–२४—भूसा पैदा करनेवाला, धान।
शकृत्करिः ,, मल त्याग करनेवाला, बछड़ा।
स्तम्बकारः ,, भूसा बनानेवाला।
शकृत्कारः ,, मल त्यागनेवाला।
दृतिहरिः ३–२–२५—मशक लेकर मागनेवाला, कुत्ता।
नाथहरिः ,, नाथ लेकर जानेवाला पशु।
दृतिहरः ,, मशक ले जानेवाला, भिस्ती।
नाथहरः ,, अपने स्वामी को ले जानेवाला।
फलेग्रहिः ३–२–२६—फल ग्रहण, धारण करनेवाला, वृक्ष।
आत्मम्भरिः ,, अपना ही भरण करनेवाला, स्वार्थी।
कुक्षिम्भरिः ,, अपना पेट भरनेवाला, पेटू, स्वार्थी।
जनमेजयः ३–२–२८, ६–३–६७—लोगों को भय से कँपानेवाला।
वातमजाः ,, ,, हवा के साथ भागने वाले, एक प्रकार के मृग।
शुनिन्धयः ६–३–६६— कुतिया का दूध पीनेवाला, पिल्ला।
तिलन्तुदः ,, तिल पेरनेवाला, तेली।
शर्द्धंजहाः ,, अपान वायु छोड़ने वाले, एक प्रकार के उड़द।
स्तनन्धयः ३–२–२९—स्तन पीनेपाला, बच्चा।
स्तनन्धयी ,, स्तन पीनेवाली, बच्ची।
नासिकन्धमः ,, नाक से फूकनेवाला।
नासिकन्धयः ,, नाक से पीनेवाला।
नाडिन्धमः ३–२–३०—नली से फूकनेवाला।
नाडिन्धयः ,, नली से पीनेवाला।
मुष्ठिन्धमः ,, मुट्ठी से फूकनेवाला।
मुष्टिन्धयः ,, मुट्ठी से पीनेवाला।
घटिन्धमः ,, घड़े से फूकनेवाला।
घटिन्धयः ,, घड़े से पीनेवाला।
कूलमुद्रुजः ३–२–३१—तट को तोड़नेवाला, रथ आदि।
कूलमुद्वहः ,, किनारे को बहानेवाला।
वहंलिहः ३–२–३२—कंधा चाटनेवाला, बैल।
अभ्रंलिहः ,, आकाश छूनेवाला, महल।

प्रस्थम्पचा ३–२–३३-दस छटाँक अन्न पकानेवाली पतीली।
खारिम्पचा ,, खारी (चारमन) पकानेवाली कड़ाही।
मितम्पचा ३–२–३४—थोड़ा पकानेवाली।
नखम्पचा ,, नाखून को जलानेवाली।
विधुन्तुदः ३–२–३५—चन्द्रमा को कष्ट देने-ग्रसनेवाला राहु।
अरुन्तुदः ,, मर्मस्थल पर आघात करनेवाला।
असूर्यंम्पश्याः ३–२-३६—सूर्य को न देखनेवाली, पर्दानशीन।
ललाटन्तपः ,, मस्तक तपानेवाला, बहुत तेज।
उग्रंपश्यः ३–२ ३७ – भयानक दृश्य देखनेवाला।
इरम्मदः ,, पीने से प्रसन्न होनेवाली, अग्नि का एक नाम।
पाणिन्धमः ,, हाथ बजानेवाला, अँधेरा मार्ग।
प्रियम्वदः ३–२–३८—प्रिय बोलनेवाला।
वशंवदः ,, अधीनता स्वीकार करनेवाला, आज्ञाकारी।
मितङ्गमः ,, थोड़ा-परिमित चलनेवाला।
विहङ्गमः ,, आकाश में चलनेवाला, पक्षी।
विहङ्गः ,, आकाश में चलनेवाला, पक्षी।
भुजङ्गमः, भुजङ्गः ,, टेढ़ा चलनेवाला, साँप।
द्विषन्तपः ३–२–३९, ६–४–९४—शत्रु को कष्ट देनेवाला।
परन्तपः ,, ,, शत्रु को कष्ट देनेवाला।
द्विषत्तीतापः ,, ,, स्त्रीशत्रु को कष्ट देनेवाला।
वाचंयमः ३–२–३०, ६–४–६०—व्रत के कारण मौन रहनेवाला।
वाग्यामः ,, ,, शक्ति न रहने के कारण मौन रहनेवाला।
पुरन्दरः ३–२–४१—शत्रु-नगर को नष्ट करनेवाला; इन्द्र।
सर्वंसहः ,, सब कुछ सहनेवाला।
भगन्दरः ,, गुदा का फोड़ा।
सर्वंकषः ३–२–४२—सब कुछ नष्ट करनेवाला, दुष्ट।
कूलंकषा ,, तट को नष्ट करनेवाली, नदी।
अभ्रंकषो वायुः ३–२–४२—बादल को रगड़ने (छूने) वाली हवा।
करीषंकषा वात्या ,, गोबर को रगड़ने (उड़ाने) वाली आँधी।

मेघकरः ३–२–४३—बादल बनानेवाला ।
ऋतिंकरः ,, कष्ट देनेवाला ।
भयंकरः ,, भय देनेवाला ।
अभयंकरः ,, आश्रय देनेवाला ।
क्षेमंकरः, क्षेमकारः ३-२-४४–कल्याण करनेवाला मङ्गलप्रद ।
प्रियंकरः, प्रियकारः ,, भलाई करनेवाला ।
मद्रंकरः, मद्रकारः ,, हर्ष उत्पन्न करनेवाला ।
आशितम्भवः ३ २-४५—जिससे अतिथि का भोजन हो सके (भात) ।
विश्वम्भरः ३–२–४६—संसार का भरण पोषण करनेवाला, परमेश्वर ।
विश्वम्भरा ,, संसार का भरणपोषण करनेवाली, पृथ्वी ।
रथन्तरं साम ,, रथन्तर साम ।
पतिंवरा कन्या ,, पति का वरण करनेवाली कन्या ।
शत्रुञ्जयो हस्ती ,, शत्रु को जीतनेवाला हाथी ।
युगन्धरः पर्वतः ,, युगन्धर नाम का पर्वत अथवा गाड़ी का फड़ जिसमें जुआ बाँधा जाता है ।
शत्रुंसहः ,, शत्रु का सामना करनेवाला ।
शत्रुन्तपः ,, शत्रु को कष्ट देनेवाला ।
अरिन्दमः ,, शत्रु का दमन करनेवाला, शत्रु को जीतनेवाला ।
सुतङ्गमः ३–२–४७—पुत्र के पास जानेवाला, एक ऋषि का नाम ।
अन्तगः ३–२–४८—अन्त तक जानेवाला ।
सर्वत्रगः ,, सब जगह जानेवाला, परमेश्वर ।
पन्नगः ,, सर्प, जो लेटकर चले, अथवा जो पैर से न चले ।
उरगः सर्प, छाती-वक्षः स्थल से चलनेवाला ।
सुगः ,, जहाँ आसानी से जाया जा सके ।
दुर्गः ,, जहाँ कठिनता से जाया जा सके, ( किला ) ।
ग्रामगः ,, गाँव जानेवाला ।
विहगः ,, आकाश में जानेवाला ।

शत्रुहः ३–२–४९—शत्रु को मारे ( आशीस ।
शत्रुघातः ,, शत्रु को मारनेवाला ।
दार्वाघाटः ,, कठफोड़ा पक्षी ।
चार्वाघाटः ,, सुन्दर प्रहार करनेवाला (एक पक्षी) ।
वर्णसङ्घाटः, वर्णसङ्घातः ,, वर्णमाला ।
पदसङ्घाटः, पदसङ्घातः ,, अलग-अलग पदों को एकत्र करनेवाला ।
क्लेशापहः पुत्रः ३–२- ५०—कष्ट को नष्ट करनेवाला पुत्र ।
तमोऽपहः सूर्यः ,, अन्धकार को नष्ट करनेवाला सूर्य ।
कुमारघाती ३–२–५१—बालक को मारनेवाला ।
शीर्षघाती ,, सिर काटनेवाला ।
जायाघ्नो ना ३–२–५२—जिस पुरुष के शरीर में पत्नी को मारनेवाला तिल हो ।
पतिघ्नी स्त्री ,, पति को मारनेवाली स्त्री ।
जायाघ्नः तिलकालकः ३–२–५३—जिसतिल से पत्नी की मृत्यु सूचित होती हो ।
पतिघ्नी पाणिरेखा ,, हाथ की जिस रेखा से पति की मृत्यु सूचित होती हो ।
पित्तघ्नं घृतम् ,, पित्त को नष्ट करनेवाला, घृत ।
आखुघातः शूद्रः ,, चूहों को मारनेवाला शूद्र ।
चोरघातो, नगरघातो हस्ती ३–२–५३–चोर को मारनेवाला या नगर को नष्ट करनेवाला हाथी ।
हस्तिघ्नः ना ३–२–५४—हाथी को मारने वाला पुरुष ।
कपटघ्नःचोरः ,, किवाड़ तोड़ने वाला चोर ।
पाणिघः ३–२–५५—हाथ से मृदङ्ग आदि बजाने वाला।
ताडघः ,, घन से प्रहार करने वाला लोहार ।
पाणिघातः ,, मुक्के से प्रहार करनेवाला ।
ताडघातः ,, घन से प्रहार करनेवाला ।
राजघः ,, राजा को मारनेवाला ।
आढ्यङ्करणम् ३–२–५६—धनी बनाने वाला, सम्पत्ति आदि ।

आढ्यम्मविष्णुः } ३–२–५७—धनी होनेवाला, जो पहिले
आढ्यम्भावुकः } धनी न था।

घृतस्पृक् ३–२–५८—घी छूने वाला।

मन्त्रस्पृक् ,, मन्त्र से छूने वाला।

सदृक्, सदृशः, सदृक्षः ३–२–५९, ६०—समान।

अन्यादृक्, अन्यादृशः, अन्यादृक्षः ,, दूसरी तरह का।

तादृक्षः ,, उस तरह का।

द्युसत् ३–२–६१—आकाश या स्वर्ग में बैठने वाला।

उपनिषत् ,, अध्यापक की उपस्थिति में बैठनेवाला।

अण्डसूः ,, अण्डा देनेवाला।

प्रसूः ,, पैदा करनेवाला।

मित्रद्विट् ,, मित्र से द्वेष करनेवाला।

प्रद्विट् ,, शत्रु, बैरी।

मित्रध्रुक् ,, विश्वासघाती, मित्र द्रोही।

प्रध्रुक् ,, प्रवलद्रोही, शत्रु।

गोधुक् ,, गाय दुहनेवाला।

प्रधुक् ,, उत्तम दुहनेवाला।

अश्वयुक् ,, घोड़े को जोतनेवाला, गाड़ी।

प्रयुक् ,, उत्तम जोतनेवाला।

वेदवित् ,, वेद जाननेवाला।

निवित् ,, प्रार्थना करनेवाला।

अग्रणीः ,, अगुआ।

ग्रामणीः ,, गाँव का मुखिया।

अंशभाक् ३–२–६२—भाग या हिस्सा देने या पानेवाला।

प्रभाक् ,, भाग पानेवाला।

आमात् ३–२–६८—कच्चा अन्न खानेवाला।

सस्यात् ,, अन्न खानेवाला।

अन्नादः ,, अन्न खानेवाला।

क्रव्यात् ३–२–६९—कच्चा मांस खानेवाला।

कामदुघा ३–२–७०—इच्छानुसार दूध देनेवाली, खूब दूध देनेवाली।

सुशर्मा ३–२–७५, ७–२–८—अच्छी तरह (पाप या अज्ञान को) नष्ट करनेवाला।

प्रातरित्वा ,, प्रातःकाल चलनेवाला।

विजावा ६–४–४१—बच्चा पैदा करनेवाला।

अवावा ६–४–४१—दूर करनेवाला।

रोट्, रेट् ,, कष्ट देने या मारनेवाला।

सुगण् ,, उत्तम गिननेवाला।

उखास्रत् ३–२—६—पात्र से गिरनेवाला।

पर्णध्वत् ,, पत्ते से गिरनेवाला।

वाहभ्रट् ,, सवारी से गिरनेवाला।

हे प्राण् ८ ४–२०—हे साँस लेनेवाले या जीवित रहनेवाले।

मित्रशीः ,, मित्रों को उपदेश या शिक्षा देनेवाले।

आशीः ,, आशीर्वाद

गीः ,, वाणी।

पूः ,, नगर।

तनुच्छत् ६–४–९७—शरीर को ढाकनेवाला, वस्त्र।

प्रतान् ,, फैलानेवाला।

प्रशान् ,, शान्ति रखनेवाला।

अक्षद्यूः ,, जुआ खेलनेवाला।

जूः ,, ज्वरवाला, ज्वरित।

तूः ,, शीघ्रता करनेवाला।

स्रूः ,, जाने या सुखानेवाला।

जनौः ,, लोगों की रक्षा करनेवाला।

मूः ,, बाँधनेवाला।

सुमूः ,, अच्छी तरह बाँधनेवाला।

मूः ,, मूर्च्छित होनेवाला।

धूः ,, आघात या प्रहार करनेवाला।

अङ्गगत् ,, अङ्ग जनपद जानेवाला।

परीतत् ,, चारों ओर फैलानेवाला।

संयत् ,, अच्छी तरह रोकनेवाला।

सुनत् ,, अच्छी तरह प्रणाम करनेवाला, निर्धन।

अग्रेगूः ,, आगे जानेवाला।

अग्रेभ्रूः ,, आगे भ्रमण करनेवाला।

शंस्थः ३–२–७७—सुख से रहनेवाला।

शंस्थाः ,, सुख से रहनेवाले।

उष्णभोजी ३–२–७८—गर्म भोजन करनेवाला।

शीतभोजी ,, ठंडा भोजन करनेवाला।

ब्राह्मणानामन्त्रयिता ,, ब्राह्मणों को बुलानेवाला।

साधुदायी ३-२-७८—खूब देनेवाला, उदारता से देनेवाला।
ब्रह्मवादी ,, ब्रह्म अथवा वेद का वर्णन करनेवाला।
उष्ट्रक्रोशी ३-२-७९ - ऊँट की तरह बलबलानेवाला।
ध्वाङ्क्षरावी ,, कौए की तरह काँव-काँव करनेवाला।
अपूपानिव भक्षयति माषान् ,, पूए की तरह उड़द खाता है।
उष्ट्रः क्रोशति ,, ऊँट बल-बलाता है।
स्थण्डिलशायी ३-२-८०—व्रत के कारण नंगी पृथ्वी पर सोनेवाला।
क्षीरपायिण उशीनराः ३-२-८१—उशीनर के जन दूध पीनेवाले होते हैं।
दर्शनीयमानी ३-२-८२—अपने आप को सुन्दर समझनेवाला।
पण्डितम्मन्यः ,, अपने आप को पण्डित समझनेवाला।
कालिम्मन्या ,, अपने आप को काली समझनेवाली।
दिवामन्या ,, अपने आप को दिन समझने वाली।
गाम्मन्यः ६-३-६८—अपने को बैल समझनेवाला।
स्त्रियम्मन्यः स्त्रीम्मन्यः ,, अपने को स्त्री समझनेवाला।
नरम्मन्यः ,, अपने को पुरुष समझनेवाला।
भुवम्मन्यः ,, अपने को पृथ्वी समझनेवाला।
श्रिमन्यं कुलम् ,, अपने को लक्ष्मी समझनेवाला कुल।
सोमयाजी ३-२-८५—जिसने सोमयाग किया हो।
अग्निष्टोमयाजी ,, जिसने अग्निष्टोम याग किया हो।
पितृव्यघाती ३-२-८६—जिसने चाचा को मार डाला हो।
ब्रह्महा ३-२-८७—जिसने ब्राह्मण को मार डाला हो।
भ्रूणहा, ,, जिसने गर्भस्थजीव को मार डाला हो।
वृत्रहा ,, जिसने वृत्र को मार डाला हो, इन्द्र।
सुकृत् ३-२-८९—जिसने अच्छी तरह काम किया हो।
कर्मकृत् ,, जिसने काम किया हो।
पापकृत् ,, जिसने पाप किया हो।

मन्त्रकृत् ३-३-८९—जिसने मन्त्र बनाया हो।
पुण्यकृत् ,, जिसने पुण्य किया हो।
शास्त्रकृत् ,, जिसने शास्त्र की रचना की हो।
भाष्यकृत् ,, जिसने भाष्य की रचना की हो।
सोमसुत् ३-२ ९०—जिसने सोमरस निचोड़ा हो।
अग्निचित् ३-२-९१—जिसने हवन की अग्नि की रचा की हो।
श्येनचित् ३-२-९२—जिसने अग्नि की वेदी को बाज के आकार की बनाया हो।
सोमविक्रयी ३-२-९३—सोमलता बेचनेवाला।
घृतविक्रयी ,, घी बेचने वाला।
पारदृश्वा ३-२-९४—जिसने दूसरा किनारा या अन्त देख लिया हो।
राजयुध्वा ३-२-९५—जिसने राजा से युद्ध कराया हो।
राजकृत्वा ,, जिसने राजा को बनाया हो।
सहयुध्वा ३-२-९६—जिसने साथ युद्ध कराया हो।
सहकृत्वा ,, जिसने किसी के साथ कोई काम किया हो।
सरसिजम् ३-२-९७—कमल (तालाब में उत्पन्न होने वाला)
मन्दुरजः ,, अस्तबल में उत्पन्न होनेवाला, बछड़ा।
संस्कारजः ,, संस्कार (अभ्यास) से उत्पन्न होनेवाला।
अदृष्टजः ,, अदृष्ट (पूर्व जन्म के कर्म) से उत्पन्न होने वाला।
प्रजा ३-२-९९—सन्तान या प्रजा।
पुमनुजा ३-२-१००—लड़के के बाद पैदा होने वाली लड़की।
अजः ३-२-१०१— न पैदा होनेवाला।
द्विजः ,, दो बार जन्म लेनेवाला (जन्म से, संकार से)
ब्राह्मणजः ,, ब्राह्मण से पैदा होनेवाला।
परिखा ,, चारों और खोदी गई, खाईं।
स्नातं मया ३-२-१०२—मैंने स्नान कर लिया।
स्तुतस्त्वया विष्णुः ,, तुमने विष्णु की स्तुति करली।
विष्णुर्विश्वंकृतवान् ,, विष्णु ने विश्व की रचना की।

क्षीणवान् ८-२-४६—दुर्बल ।
क्षितःकामो मया ,, मैंने काम को नष्ट कर दिया ।
श्रितः, श्रितवान् ,, आश्रय लिया ।
भूतः भूतवान् ,, हुआ, हो गया ।
स्रुतः ,, शब्द किया ।
ऊर्णुतः ,, ढक दिया ।
नुतः ,, नमस्कार किया ।
वृतः ,, घिरा हुआ ।
शीर्णः ८-२-४२—फटा हुआ ।
छिन्नः ,, कटा या फटा हुआ ।
भिन्नः ,, टूटा हुआ ।
द्राणः ८-२-४३—टेढ़ा गया हुआ ।
स्त्यानः ,, एकत्र किया हुआ ।
ग्लानः ,, खिन्न दुखी ।
म्लानः ,, उदास, मुरझाया हुआ ।
लूनः ८-२-४४—काटा गया ।
जीनः ,, पुराना या वृद्ध ।
दूनः ८-२-४४—गया हुआ ।
गूनः ,, निगला हुआ ।
पूनः ,, नष्ट किया हुआ ।
पूतम् ,, पवित्र किया हुआ ।
सिनः ,, निगला हुआ ।
सिता पाशेन शूकरी ,, सूअर जाल में फँसी हुई है ।
सितो ग्रासो देवदत्तेन ,, देवदत्त ने ग्रास को निगल लिया है ।
भुग्नः ८-२-४५—टेढ़ा किया गया ।
उच्छूनः ,, फूला या बढ़ा हुआ ।
प्रहीणः ,, छोड़ा या त्यागा हुआ ।
सूनः, सूनवान् ,, पैदा किया गया ।
दूनः, दूनवान् ,, दुःखी किया गया ।
उड्डीनः ,, उड़ा हुआ ।
शीनम् ६-१-२४ ८-२-४७—जमा हुआ, घी ।
शीतम् ,, ठंडा जल ।
संश्यानो वृश्चिकः ,, सिकुड़ा हुआ, सर्दी से सिकुड़ी हुई विच्छू ।
प्रतिशीनः ६-१-२५—जमा हुआ ।

अभिश्यानम् , अभिशीनम् ६-१-२६—जमा हुआ ।
अवश्यानः , अवशीनः ,, जमा हुआ ।
समवश्यानः ,, जमा हुआ ।
समक्नः ८-३-४८।७-२-१५—मिला हुआ, सटा हुआ, संगत ।
उदक्तमुदकं कूपात् ,, कुएँ से निकाला हुआ जल ।
वृक्णः वृक्णवान् ,, काटा हुआ, काटा गया ।
परिस्कन्दः, परिष्कन्दः ८-३-७५—जमा या सूखा ।
द्यूनः ८-२-४९—एक खेल, जिसमें जीतने की इच्छा न हो ।
द्यूतम् ,, जुआ ।
निर्वाणः ८-२-५०—बुझा हुआ ।
निर्वातः ,, बन्द हो गई ।
शुष्कः ८-२-५१—सूखा ।
पक्वः ८-२-५२—पका ।
क्षामः ८-२-५३—सूखा, क्षीण ।
प्रस्तीमः, प्रस्तीतः ६-१-२३ ८-२-५४—इकट्ठा हुआ ।
स्त्यानः ,, इकट्ठा ।
फुल्लः, फुल्लवान् ८-२-५५—विकसित ।
क्षीवः ,, नशे में मतवाला ।
कृशः ,, दुर्बल ।
उल्लाघो नीरोगः, ,, बीमारी से उठा हुआ, नीरोग ।
प्रफुल्लः ७-२-१६,७-४-७९—विकसित ।
प्रक्षीवितः ,, नशे में मतवाला ।
प्रकृशितः ,, अत्यन्त दुर्बल ।
प्रोल्लाघितः ,, अच्छी तरह नीरोग ।
नुन्नः नुत्तः ८-२-५६—हाँका गया ।
विन्नः, वित्तः ,, सोचा गया, विचारा गया ।
विदितः ,, जाना हुआ ।
विन्नः ,, स्थित ।
उन्नः, उत्तः ७-२-१४—आर्द्र, गीला ।
त्राणः, त्रातः ,, बचाया गया, रक्षा किया गया ।
घ्राणः, घ्रातः ७-२-१४—सूँघा हुआ ।
ह्रीणः, ह्रीतः ,, लज्जित ।
ध्यातः ८-२-५७—ध्यान किया गया ।
ख्यातः ,, प्रसिद्ध ।
पूर्तः ,, पूरा किया गया ।

मूर्तः ८-२-५७—मूर्च्छित ।
मत्तः ,, मतवाला ।
वित्तम् ८-२-५८—भोग किया गया, धन सम्पत्ति ।
वित्तः ,, प्रसिद्ध, ज्ञात ।
विन्नः ,, पाया गया ।
भित्तम् ८-२-५९—भाग, टुकड़ा ।
भिन्नम् ,, टूटा हुआ ।
ऋणम् ८-२-६०—कर्ज ।
ऋतम् ,, सत्य, उचित ।
स्फीतः ६-१-५२—विस्तृत, बढ़ा हुआ ।
निष्कुषितः ७-२-४७—फाड़ा या निकाला हुआ ।
उषितः ७-२-५२—वसा या रहा हुआ ।
क्षुधितः ,, भूखा ।
अञ्चितः ७-२-५३—पूजित ।
अक्तः ,, गया हुआ ।
लुभितः ७-२-५४—मोहित ।
लुब्धः ,, लालची ।
क्लिशितः, क्लिष्टः ७-२-५०—दुःखी ।
पवितः, पूतः ७-२-५१—पवित्र किया गया ।
शयितः, शयितवान् १-२-१९—सोया हुआ ।
शेश्यितः, शेश्यितवान् ,, अधिक काल तक सोया हुआ ।
प्रस्वेदितश्चैत्रः ७-२-१७—चैत्र को पसीना हो गया है ।
प्रस्वेदितं तेन ,, उसको पसीना हो गया है ।
स्विदितः ,, पसीना हो गया है ।
मेदितः, मेदितवान् ,, पिघल गया है ।
प्रक्ष्वेदितः प्रक्ष्वेदितवान् ,, स्नेह किया, छोड़ दिया ।
प्रधर्षितः, प्रधर्षितवान् ,, दवाया गया ।
धर्षितं तेन ,, उसने दवाया ।
प्रस्विन्नः ,, पसीना हो गया ।
प्रस्विन्नं तेन ,, उसे पसीना हो गया ।
मर्षितः, मर्षितवान् १-२-२०—सहा गया, सहन कर लिया ।
अपमृषितं वाक्यम् ,, अस्पष्ट वाक्य ।
द्युतितम्, द्योतितम् १-२-२१—चमकाया या जलाया गया ।
मुदितम्, मोदितम् ,, खुश या प्रसन्न किया गया ।
प्रद्युतितः, प्रद्योतितः १-२-२१—अच्छी तरह चमक गया ।
प्रमुदितः प्रमोदितः ,, अच्छी तरह प्रसन्न ।
विदितम् ,, जाना हुआ ।
रुचितं कार्षापणम् ,, चमकता हुआ कार्षापण ।
क्रुष्टम् ,, चिल्लाया, रोया ।
गुधितम् ,, लपेटा हुआ ।
भावितः, भावितवान् ,, होने के लिए प्रेरित ।
शूनः ६-४-५२—बढ़ा या फूला हुआ ।
दीप्तः ,, चमकाया या जलाया गया ।
गूढः ,, छिपा हुआ ।
वृतः ,, सेवा किया गया या शब्द किया गया ।
ततः ,, विस्तृत फैलाया गया ।
पतितः ,, गिरा हुआ ।
दरिद्रितः ,, दरिद्र हुआ ।
क्षुब्धः ७-२-१८—मंथनदण्ड अथवा लप्सी या हलुआ ।
स्वान्तम् ,, अन्तःकरण, मन ।
ध्वान्तम् ,, अंधकार ।
लग्नम् ,, आसक्त, लीन ।
म्लिष्टम् ,, अस्पष्ट, अज्ञेय ।
विरिब्धः ,, स्वर ।
फाण्टम् ,, ताजे दूध से निकाला गया मक्खन, काढ़ा ।
बाढम् ,, अत्यधिक ।
क्षुभितम् ,, विचलित या व्यग्र किया गया ।
स्वनितम् ,, बजा, शब्द किया ।
ध्वनितम् ,, शब्द किया, बजा ।
लगितम् ,, मिल गया ।
म्लेच्छितम् ,, अस्पष्ट शब्द किया ।
विरेभितम् ,, शब्द किया ।
फणितम् ,, बिना प्रयत्न किया गया ।
वाहितम् ,, प्रयत्न किया गया ।
धृष्टः ७-२-११—ढीठ, विनीत, अशिष्ट ।
विशस्तः ,, ढीठ, विनीत, अशिष्ट ।
धर्षितः ,, दवाया गया ।
विशसितः ,, दवाया गया ।
धृष्टम्, धर्षितम् ,, दवाया गया ।

प्रधृष्टः, प्रधर्षितः ७–२–१९—ढीठ ।
दृढः ७–२–२०—मोटा, बलवान् ।
दृंहितः दृहितः ,, बढ़ा हुआ ।
परिवृढः ७–२–२१—स्वामी ।
परिबृहितः, परिबृंहितः ,, बढ़ा हुआ ।
कष्टो मोहः ७–२–२२—भ्रम या अज्ञान दुःख का कारण है ।
कष्टं शास्त्रम् ,, शास्त्र कठिन होता है ।
कषितम् ,, घिसा हुआ ।
घुष्टा ७–२–२३—बनाई गई ।
घुषितम् ,, स्पष्ट ।
समर्णः, न्यर्णः, व्यर्णः ७-२–२४—पीड़ित, आहत ।
अर्दितः ,, दबाया गया ।
अभ्यर्णम् ७–२–२५—आसन्न, समीपवर्ती ।
अभ्यर्दितम् ,, पीड़ित ।
वृत्तं छन्दश्छात्रेण ७–२–२६—छात्र द्वारा छन्द रचा गया ।
वर्तिता रज्जुः ,, बटी गई रस्सी ।
श्रृतम् ६–१–२७—पकी हुई खीर या हवि ।
श्राणं श्रपितंवा ,, पकी हुई कोई वस्तु ।
दान्तः ७–२–२७—इन्द्रियों को दमन किये हुए ।
शान्तः ७–२–२७—मन का शमन किये हुए ।
पूर्णः ,, भरा हुआ ।
दस्तः ,, नष्ट ।
स्पष्टः ,, साफ ।
छन्नः ,, छिपा या ढका हुआ ।
ज्ञप्तः ,, सूचित किया, जनाया ।
दमितः ,, दमन किया ।
शमितः ,, शान्त किया ।
पूरितः ,, भर दिया ।
दासितः ,, नष्ट कर दिया ।
स्पाशितः ,, साफ किया ।
छादितः ,, ढक दिया ।
ज्ञापितः ,, सूचित किया ।
रुषितः, रुष्टः ७–२–२८—अप्रसन्न, क्रुद्ध ।
आन्तः अमितः ,, गया ।
तूर्णः, त्वरितः ,, शीघ्रता किया ।
संघुष्टः, संघुषितः ,, कहा ।

आस्वान्तः, आस्वनितः ७–२–२८—शब्द किया ।
हृष्टम्, हृषितम् ७–२–२९—रोंगटे खड़े हो गये ।
हृष्टः, हृषितो मैत्रः ,, मैत्र विस्मित हुआ या मारा गया ।
अपचितः, अपचायितः ७–२–३७—भयभीत हुआ ।
पीनम् ६-१–२८—मोटा ।
पीनः, प्यानः ,, बढ़ा हुआ या अत्यधिक ।
प्रप्यानः ,, बढ़ा हुआ ।
आपीनोऽन्धुः ,, बड़ा कुआँ ।
आपीनमूधः ,, बड़ा थन, भारीथन ।
प्रह्लन्नः ६–४–९५—प्रसन्न ।
दितः ७–४–४०—कटा हुआ ।
सितः ,, नष्ट, अन्त किया हुआ ।
मितः ,, नपा हुआ ।
स्थितः ,, ठहरा हुआ ।
शितः ७–४–४१—छिला हुआ ।
शातः ,, छिला हुआ ।
छितः, छातः ,, कटा हुआ ।
संशितं व्रतम् ,, पूर्ण किया गया व्रत ।
संशितो ब्राह्मणः ,, जिस ब्राह्मण ने व्रत पूरा कर लिया है ।
अभिहितम् ७–४–४२—कहा ।
निहितम् ,, रक्खा हुआ ।
दत्तः, दातः, प्रत्तः, अवत्तः,
नीत्तम्, सूत्तम् ७–४–४६, ४७—दिया गया ।
धीतम् ६–३–१२४—पिया गया ।
गीतम् ,, गाया गया ।
पीतम् ,, पी लिया ।
जातम् ,, पैदा हुआ ।
सातम् ,, अलग कर दिया ।
खातम् ,, खोदा ।
जग्धः २–४–३६—खाया ।
प्रकृतं कटं सः ,, उसने चटाई को बनाया ।
प्रकृतः कटस्तेन २–४–३६—उससे चटाई बनायी गयी ।
प्रक्षीणः सः ,, वह दुर्बल हो गया ।
क्षीणायुर्क्षितायुर्वाभव ६-४-६:—तुम मर जाओ ।
क्षीणोऽयं तपस्वी क्षितो वा ,, यह तपस्वी दुर्बल हो गया है ।

निष्णातः शास्त्रेषु ८–३–८९—शास्त्रों में निपुण ।
नद्दीष्णः „ नदी स्नान में निपुण ।

प्रतिष्णातम् ८–३–९०—शुद्ध सूत ।
प्रतिस्नातम् „ स्नान कर लिया ।

कपिष्ठलः ८–३–९१—कपिष्ठल नाम का गोत्र ।
कपिस्थलम् „ बन्दरों का स्थान ।

विष्ठलम् ८–३–९६—दूरवर्ती स्थान ।
कुष्ठलम् „ बुरा स्थान ।
शमिष्ठलम् „ काम करने का स्थान, शमी वृक्ष का स्थान ।
परिष्ठलम् „ निकटवर्ती स्थान ।

गङ्गांगतः प्राप्तः ३ ४–७२—गङ्गा गया हुआ या पहुँचा हुआ ।
ग्लानः सः „ वह उदास हो गया ।
लक्ष्मीनाश्लिष्टो हरिः „ विष्णु ने लक्ष्मी का आलिंगन किया ।
शेषमधिशयितः „ शेषनाग पर सोये ।
वैकुण्ठमधिष्ठितः „ वैकुण्ठ में रहे ।
शिवमुपासितः „ शिव की उपासना की ।
हरिदिनमुपोषितः „ एकादशी का व्रत किया ।
राममनुजातः „ राम के पीछे चले ।
गरुडमारूढः „ गरुड़ पर चढ़े ।
विश्वमनुजीर्णः „ संसार को नष्ट किया ।
इदं मुकुन्दस्यासितम् ३–४–७६—यह मुकुन्द का आसन है ।
इदं रमापतेर्यातम् „ यह रमापति का जाना है ।
एतदनन्तस्य भुक्तम् „ यह अनन्त का भोजन है ।
आसितो मुकुन्दः „ मुकुन्द बैठ गये ।
आसितं तेन „ वह बैठा ।
रमापतिरिदं यातः „ यह रमापति गये ।
तेनेदं यातम् „ वह यह गया ।
अनन्तेनेदं भुक्तम् „ अनन्त ने यह भोजन किया ।
क्ष्विण्णः ३–२–१८७—अस्पष्ट शब्द किया ।
इद्धः „ प्रदीप्त ।

राज्ञां मत इष्टः ३–२–१८८—राजा चाहता है, आदर करता हैं ।
बुद्धः „ जाना गया ।
विदितः „ ज्ञात ।
पूजितः, अर्चितः „ पूजा गया ।
शीलितः „ आदर किया गया ।
रक्षितः „ बचाया गया ।
क्षान्तः „ क्षमा किया गया ।
आक्रुष्टः „ निन्दा किया गया ।
जुष्टः „ सेवित ।
जल्पितम् ३-३-११४—कथन, कहना ।
शयितम् „ सोना, शयन करना ।
हसितम् ३–३–११४—हँसना ।
सुत्वा ३–२–१०४—जिसने सोमरस निचोड़ लिया हो ।
यज्वा „ जिसने यज्ञ कर लिया हो ।
जरन्, जीर्णो, जीर्णवान् ३–२–१०५ - जो पुराना या वृद्ध हो गया हो ।
तस्थिवांसम् ३–२–१०७ ठहरे हुए को ।
अधिजग्मुषः „ प्राप्त किये हुए का ।
आदिवान् ७–२–६७—खाये हुए ।
आरिवान् „ गये हुए ।
ददिवान् „ दिए हुए ।
जक्षिवान् „ खाये हुए ।
बभूवान् „ उत्पन्न हुए ।
निषेदुषीम् ३–२–१०८—बैठी हुई को ।
अध्यूषुषः „ ठहरे हुए का ।
शुश्रुवान् „ सुने हुए ।
उपेयिवान् ३–२–१०९—गये हुए ।
उपेयुषी „ गयी हुई ।
ईयिवान्, समेयिवान् „ गये हुए ।
अनूचानः „ जिसने वेद का अध्ययन किया है
जग्मिवान्, जगन्वान् ७–२–६८—जो गया हुआ है ।
जघ्निवान्, जघन्वान् „ जिसने मारा है ।
विविदिवान्, विविद्वान् „ जिसने जाना है ।
विविशिवान्, विविश्वान् „ जिसने प्रवेश किया है ।
विविदान् „ जिसने जाना है ।

दद्दशिवान्, दद्दश्वान् ,, जिसने देखा है।
पचन्तं चैत्रं पश्य, पचमानं वा ३–२–१२४, ७–२–८२—
पकाते हुए चैत्र को देखो।
सन् ब्राह्मणः ,, ब्राह्मण है।
मा जीवन् यः परावज्ञादुःख-
दग्धोऽपि जीवति ,, जो दूसरों के अनादर के दुःख से जल-
कर भी जीता है उसे न जीना चाहिए।
हेपचन्, हेपचमान ३–२–१२६—हे पकानेवाले।
शयाना भुञ्जते यवनाः ३–२–१३६—यवन लोग सोते हुए
भोजन करते हैं।
अर्जयन्वसति ,, पैदा करता हुआ अर्थात् पैदा करने के लिए रहता है।
हरिं पश्यन् मुच्यते ,, भगवान् का दर्शन करके मुक्त होता है।
प्रपीयमाणः सोमः ८–४–२९—पिया जाता हुआ सोम।
आसीनः ७–२–८३—बैठा हुआ।
विदन् विद्वान् ७–१–३६—ज्ञाता-जानकार।
विदुषी ,, जाननेवाली, पण्डिता।
करिष्यन्तं करिष्यमाणं वा पश्य ३–४–१४—करनेवाले को
देखो।
अर्जयिष्यन्वसति ,, पैदा करने की इच्छा से रहता है।
करिष्यन् ,, करने की इच्छा वाला।
पवमानः ३–२–१२८—पवित्र करनेवाली आग या हवा।
यजमानः ,, यज्ञ करनेवाला।
भोगं भुञ्जानः ३–२–१२९—जिसको सुख भोगने का अभ्यास
है।
कवचं बिभ्राणः ,, कवच धारण किया हुआ।
शत्रुं निघ्नानः ,, शत्रु वध करता हुआ।
अधीयन् ३–२–१३०—बिना कष्ट के अध्ययन करता हुआ।
धारयन् ,, अधिकार करता हुआ।
कृच्छ्रेणाधीते ,, कठिनता से या कष्ट से पढ़ता है।
धारयति ,, याद करता है, स्मरण करता है।
द्विषन् ३–२–१३१—शत्रु।

सर्वे सुन्वन्तः सर्वे यजमानाः सत्रिणः ३–२–१३२—
यज्ञ करनेवाले सब यजमान सोमरस निचोड़ते हैं।
अर्हन् ३–२–१३३—पूजनीय, आदरणीय।
कर्ता कटम् ३–२–१३४, १३५—चटाई बनानेवाला।
अलङ्करिष्णुः ३–२–१३६—अलंकृत करने में निपुण।
निराकरिष्णुः ,, अस्वीकार करने में निपुण।
प्रजनिष्णुः ,, उत्पन्न करने में निपुण।
उत्पचिष्णुः ,, पकाने की आदत वाला।
उत्पतिष्णुः ,, उड़ने की आदतवाला।
उन्मदिष्णुः ,, उन्मत्त होनेवाला।
रोचिष्णुः ,, चमकनेवाला।
अपत्रपिष्णुः ,, लज्जाशील।
वर्तिष्णुः ,, रहनेवाला।
वर्धिष्णुः ,, बढ़नेवाला।
सहिष्णुः ,, सहनशील।
चरिष्णुः ,, चलनेवाला।
वीरुधः पारयिष्णवः ३–२–१३७—सफलता देनेवाली लताएँ।
भविष्णुः ३–२–१३८—होनेवाला।
भ्राजिष्णुः ,, सदा चमकनेवाला।
क्षयिष्णुः ,, सदा नष्ट होनेवाला।
ग्लास्नुः ३–२–१३९—उदास रहनेवाला।
जिष्णुः ,, जीतनेवाला।
स्थास्नुः ,, ठहरनेवाला, स्थिर।
भूष्णुः ,, होनेवाला।
दङ्क्ष्णवः पशवः ,, काटनेवाले जानवर।
त्रस्नुः ३–२–१४० – भय से काँपनेवाला।
गृध्नुः ,, लालच करनेवाला।
धृष्णुः ,, साहस करनेवाला, ढीठ।
क्षिप्नुः ,, फेंकनेवाला।
शमिनितरा, शमिनीतरा ३–२–१४१—अधिक शान्तिवाली।
शमी ,, शान्तिवाला।
क्षमी ,, चाहनेवाला।
दमी ,, दमन करनेवाला।
श्रमी ,, श्रम करनेवाला।
भ्रमी ,, भ्रमण करने-घूमने वाला।

क्षमी ३–२–१४१—क्षमा करनेवाला ।
क्लमी „ थकनेवाला ।
प्रमादी „ असावधान रहनेवाला ।
उन्मादी „ उन्मत्त रहनेवाला ।
सम्पर्की ३–२–१४२—मिलावट ।
अनुरोधी „ संकोच करनेवाला ।
आयामी „ विस्तार करनेवाला ।
आयासी „ परिश्रम करनेवाला ।
परिसारी „ चारों ओर बहनेवाला ।
संसर्गी „ सम्बन्ध रखनेवाला ।
परिदेवी „ विलाप करनेवाला ।
संज्वारी „ बहुत गर्म करनेवाला ।
परिक्षेपी „ चारों ओर घूमनेवाला ।
परिराटी „ जोर से चिल्लाने वाला ।
संज्वारी „ अधिक गर्म करने वाला ।
परिक्षेपी „ चारों ओर घूमने वाला ।
परिराटी „ अधिक चिल्लाने वाला ।
परिवादी „ बुरा भला कहने वाला, गाली देने वाला ।
परिदाही „ जलाने वाला ।
परिमोही „ मोहित करने वाला ।
दोषी „ दोष वाला ।
द्वेषी „ द्वेष या शत्रुता करने वाला ।
द्रोही „ द्रोह करने वाला ।
दोही „ दुहने वाला ।
योगी „ योग करने वाला, समाधि लगाने वाला ।
आक्रीडी „ खेलने वाला ।
विवेकी „ विचार करने वाला ।
त्यागी „ त्याग करने वाला ।
रागी „ प्रेम करने वाला ।
भागी „ भाग लेने वाला ।
अतिचारी „ उल्लंघन करने वाला ।
अपचारी „ अप्रसन्न करने वाला, दुःखी करने वाला ।
आमोषी „ चुराने वाला ।

अभ्याघाती ३–२–१४२—आक्रमण करने वाला ।
विकाषी ३–२ १४३—कष्ट देने वाला, प्रहार करने वाला ।
विलासी „ विलास करने वाला, खेलने वाला, चमकने वाला ।
विकत्थी „ डींग मारने वाला ।
विस्रम्भी „ विश्वास करने वाला ।
अपलाषी ३–२–१४४– प्यासा ।
विलाषी „ अधिक चाहने वाला ।
प्रलापी ३–२–१४५—बकवाद करने वाला ।
प्रसारी „ फैलने या बहने वाला ।
प्रद्रावी „ भागने वाला ।
प्रमाथी „ कष्ट देने वाला ।
प्रवादी „ „
प्रवासी „ विदेश में रहने वाला ।
निन्दकः ३–२–१४६—निन्दा करने वाला ।
हिंसकः „ हिंसा करने वाला ।
क्लेशकः „ कष्ट देने वाला ।
खादकः „ खाने वाला ।
विनाशकः „ नाश करने वाला ।
परिक्षेपकः „ चारों ओर बहने वाला ।
परिराटकः „ चिल्लाने वाला ।
परिवादकः „ गाली देने वाला, वादी ।
व्याभाषकः „ निन्दा करने वाला ।
असूयकः „ डाह करने वाला ।
आदेवकः ३–२–१४७—खेलने या विलाप करने वाला ।
आक्रोशकः „ कोलाहल करने वाला ।
देवयिता „ खेलने वाला ।
क्रोष्टा „ चिल्लाने वाला, गीदड़ ।
चलनः ३–२–१४८—चलने वाला ।
चोपनः „ रेंगने वाला ।
कम्पनः „ काँपने वाला ।
शब्दनः „ शब्द करने वाला ।
रवणः „ शब्द करने वाला ।
पठिता विद्याम् „ विद्या पढ़ने वाला ।
वर्तनः ३–२–१४९—होने या रहने वाला ।
वर्धनः „ बढ़ने वाला ।

भविता ३-२-१४८—होने वाला ।
एधिता ,, बढ़ने वाला ।
वसिता वस्त्रम् ३-२-१४९—वस्त्र धारण करने वाला ।
जवनः ३-२-१५०—वेगवान्, तेज ।
चङ्क्रमणः ,, चारों ओर घूमने वाला ।
दन्द्रमणः ,, घूमने वाला ।
सरणः ,, बहने वाला ।
क्रोधनः ३-२-१५१—क्रोध करने वाला ।
रोषणः ,, क्रोध करने वाला ।
मण्डनः ,, सजाने वाला ।
भूषणः ,, सजाने वाला ।
क्नूयिता ३-२-१५२—चरमर शब्द करने वाला ।
क्ष्मायिता ,, काँपने वाला ।
सूदिता ३-२-१५३—मारने वाला ।
दीपिता ,, चमकाने वाला ।
दीक्षिता ,, दीक्षा या उपदेश देने वाला ।
कम्रा-कमना युवतिः ,, काम की इच्छा करने वाली युवती ।
कम्रा-कम्पना शाखाः ३-२-५३ – हिलने वाली डाली ।
लाषुकः ३-२-१५४—चमकने वाला ।
पातुकः ,, गिरने वाला ।
जल्पाकः ३-२-१५५—वातूनी ।
भिक्षाकः ,, भीख माँगने वाला ।
कुट्टाकः ,, काटने वाला ।
लुण्टाकः ,, लूटने या चुराने वाला ।
वराकः ,, बेचारा ।
वराकी ,, बेचारी ।
प्रजवी ३-२-१५६—वेगगामी दूत, हरकारा ।
जयी ३-२-१५७—जीतने वाला ।
दरी ,, आदर करने वाला ।
क्षयी ,, नष्ट करने या होने वाला ।
विश्रयी ,, ,,
अत्ययी ,, बढ़ जाने वाला, या नाश करने वाला ।
वमी ,, वमन करने वाला ।
अव्यथी ,, दुःखी न होने वाला ।
अभ्यमी ,, कष्ट न देने वाला ।
परिभवी ,, अपमानित करने वाला, गर्व तोड़ने वाला ।
प्रसवी ३-२-१५७—पैदा करने वाला ।
स्पृहयालुः ३-२-१५८—चाहने की प्रवृत्ति वाला ।
गृहयालुः ,, पकड़ने या ग्रहण करने की प्रवृत्ति वाला ।
पतयालुः ,, गिरने की प्रवृत्ति वाला ।
दयालुः ,, दया करने की प्रवृत्ति वाला ।
निद्रालुः ,, सोने की प्रवृत्ति वाला ।
तन्द्रालुः ,, आलस्य की प्रवृत्ति वाला ।
शयालुः ,, लेटने की प्रवृत्ति वाला ।
दारुः ३-२-१५९—दान देने वाला, उदार, दानी ।
धारुः ,, स्तनपान करने वाला ।
सेरुः ,, बाँधने वाला ।
शद्रुः ,, गिरने वाला ।
सद्रुः ,, बैठने या विश्राम करने वाला ।
सृमरः ३-२-१६०—जाने वाला, मृगविशेष ।
घस्मरः,अद्मरः ,, भुक्खड़, पेटू, अतिलोभी ।
भङ्गुरः ३-२-१६१—नाश होने वाला, टूटने वाला ।
भासुरः ,, चमकीला ।
मेदुरः ,, चिकना, मोटा, घना, पूर्ण, भरा हुआ ।
विदुरः ३-२-१६२—जानने वाला, ज्ञाता ।
भिदुरम् ,, टूटने वाला ।
छिदुरम् ,, कटने या टूटने वाला ।
इत्वरः ३-२-१६३—घूमने वाला, घुमक्कड़ ।
इत्वरी ,, घूमने वाली ।
नश्वरः ,, नष्ट होने वाला, अनित्य ।
जित्वरः ,, जीतने वाला, विजयी ।
सृत्वरः ,, जाने या बहने वाला ।
गत्वरो ३-२-१६४—चलनशीला ।
जागरूकः ३-२-१६५ – सजग रहने वाला ।
यायजूकः ३-२-१६६—बारबार या अत्यधिक यज्ञ करने वाला ।
जञ्जपूकः ,, नित्य जप करने वाला ।
दन्दशूकः ,, सदा काटने वाला ।
नम्रः ३-२-१६७—कोमल, विनीत ।
कम्प्रः ,, काँपने या हिलने वाला ।
स्मेरः ,, मुस्कराने वाला ।

अजस्रम् ३–२–१६७—लगातार, निरन्तर।
कम्रः　,,　मनोहर, सुन्दर।
हिंस्रः　,,　मारने वाला, हिंसा करने वाला।
दीप्रः　,,　चमकने वाला, चमकीला।
चिकीर्षुः ३–२–१६८—करने की इच्छा वाला।
आशंसुः　,,　चाहने वाला।
भिक्षुः　,,　भिक्षा माँगने वाला।
विन्दुः ३–२–१६९ – जानने वाला, बुद्धिमान्।
इच्छुः　,,　चाहने वाला।
देवाञ्जिगाति सुम्नयुः ३–२–१७०—सुख चाहने वाला देवों की स्तुति करता है ( ऋ०१-३-४ )
पपिःसोमम् ३ –२–१७१—सोमरस पीने वाला।
ददिर्गाः　,,　गाय देने वाला।
बभ्रिर्वज्रम्　,,　वज्र धारण करने वाला।
जग्मिर्युवा　,,　जाने वाला युवक (ऋ०२-२३-११)
जघ्निर्वृत्रममित्रियम्　,,　वृत्र नामक शत्रु को मारने वाला ( ऋ० २-६२-२ )
जज्ञिः　,,　उत्पन्न करने वाला।
दधिः　,,　धारण करने वाला।
चक्रिः　,,　करने वाला।
सस्रिः　,,　चलने या बहने वाला।
जग्मिः　,,　जाने वाला।
नेमिः　,,　झुकने वाला, पहिये का घेरा।
स्वप्नक् ३–२–१७२—सोने वाला।
तृष्णक्　,,　प्यास वाला, लोभी।
धृष्णक्　,,　ढीठ, अविनीत।
शरारुः ३–२–१७३—हानिकारक, अनिष्ट कारक, दुष्ट।
वन्दारुः　,,　प्रशंसा करनेवाला, भाट।
भीरुः, भीलुकः, भीरुकः ३–२–१७४—डरपोक, भालू, ,, बाघ, गीदड़।
स्थावरः ३–२–१७५—अचल, एक स्थान पर रहनेवाला।
ईश्वरः　,,　शासन करनेवाला, भगवान्।
भास्वरः　,,　चमकनेवाला।
पेस्वरः　,,　चलनेवाला, नाशकारक।
कस्वरः　,,　खुलनेवाला, विकसित होनेवाला।

यायावरः ३–२–१७६—घूमनेवाला, परिव्राजक।
विभ्राट् ३–२–१७७—चमकनेवाला।
भाः　,,　चमक, प्रकाश।
धूः　,,　हानि पहुँचानेवाला, भार, जुआ, धुरा
विद्युत्　,,　चमकनेवाली, विजली।
ऊर्क्　,,　ताकत, शक्ति।
पूः　,,　भरनेवाला।
जूः　,,　शीघ्र चलनेवाला।
ग्रावस्तुत्　,,　सोम पीसनेवाली सील की स्तुति करनेवाला ऋत्विग्विशेष।
छित् ३–२–१७८—काटने या चुभानेवाला।
भित्　,,　अलग करने या तोड़नेवाला।
वाक्　,,　बोलनेवाली, वाणी।
प्राट्　,,　पूछनेवाला।
आयतस्तूः　,,　प्रशंसा करनेवाला।
कटप्रूः　,,　चटाई लेकर घूमनेवाला, घूम-घूमकर काम करनेवाला।
श्रीः　,,　विष्णु की सेवा करनेवाली, लक्ष्मी; धन
विद्युत्　,,　चमकनेवाली, विजली।
जगत्　,,　चलनेवाला, परिवर्तन शील, संसार।
जुहूः　,,　हवन करने के लिए अग्नि में घी डालने वाला एक स्रुवा।
दद्रत्　,,　डरनेवाला।
धीः　,,　ध्यान करनेवाली, बुद्धि।
मित्रभूः ३–२–१७९—व्यक्ति विशेष का नाम।
प्रतिभूः　,,　मध्यस्थ, जमानतदार।
विभुः ३–२–१८०—सर्व व्यापक, परमात्मा।
प्रभुः　,,　स्वामी, मालिक, समर्थ।
संभुः　,,　उत्पन्न करनेवाला।
मितद्रुः　,,　परिमित दूरी तक रहने या जानेवाला, समुद्र।
शतद्रुः　,,　सैकड़ों भागों से बहनेवाली नदी।
शम्भुः　,,　कल्याण उत्पन्न करनेवाले, शंकर।
धात्री ३–२–१८१—पोषण करनेवाली, माता, धाय, आँवला पृथ्वी।
दात्रम् ३–२–१८३—हँसुआ, दाँती, काटनेवाला।

नेत्रम् ३–२–१८२—ले जानेवाला, आँख।
शस्त्रम् ७–२–९—आघात करनेवाला, हथियार।
योत्रम्, योक्त्रम् ,, जोता, रस्सी-जिससे बैल गाड़ी या हल में बाँधे जाते हैं।
स्तोत्रम् ,, प्रशंसा करनेवाला।
तोत्रम् ,, अंकुश, घोड़ा।
सेत्रम् ,, हड्डियों को बाँधने का धागा।
सेक्त्रम् ,, जल सींचने या छिड़कनेवाला पात्र, हजारा।
मेढ्रम् ,, मूत्रेन्द्रिय।
पत्रम् ,, सवारी, वाहन।
दंष्ट्रा ,, बड़ा दाँत।
नद्ध्री ,, बाँधनेवाली, नाधा।

पोत्रम् ३–२–१८३—सूअर का थूथन (नथना), हलका फार।
अरित्रम् ३–२–१८४—डाँड़ा।
लवित्रम् ,, हँसुआ।
धुवित्रम् ,, मृग चर्म का बना हुआ यज्ञाग्नि प्रज्वलित करनेवाला पंखा।
सवित्रम् ,, उत्पन्न करनेवाला।
खनित्रम् ,, फावड़ा, रम्भा।
सहित्रम् ,, सहनेवाला, शान्ति, धैर्य।
चरित्रम् ,, रहनसहन।
पवित्रम् ३–२–१८५—अनामिका में पहनीजानेवाली ताँबे या कुश की अँगूठी।
पवित्रम् ,, पवित्र करनेवाला वेदमंत्र, पवित्र करनेवाली आग।

इति पूर्वकृदन्तम्।

# अथ उत्तरकृदन्तप्रकरणम्

दाशः ३–४–७३—जिसको दिया जाय, सेवक, मछुआ।
गोघ्नः ,, जिसके लिए गाय या बैल दिया जाय, अतिथि, पुरोहित, जामाता।
भीमः ३–४–७४—जिससे लोग डरें, भयानक।
भीष्मः ,, ,,
प्रस्कन्दनः ,, कूदने या आक्रमण करने वाला, शिव का एक नाम।
प्ररक्षः ,, रक्षा करने वाला।
मूर्खः ,, बेवकूफ।
खलतिः ,, गंजा, खल्वाट।
तन्तुः ३–४–७५—सूत, ताँत, डोरा।
वर्त्म ,, मार्ग।
चर्म ,, चमड़ा।
कृष्णं द्रष्टुं याति, कृष्णंदर्शको याति ३–३–१०—कृष्ण को देखने के लिए जाता है।
इच्छति भोक्तुं वष्टि-

वाञ्छति वा ३–३–१५८—भोजन करना चाहता है।
शक्नोति भोक्तुम् ३–४–६५—भोजन कर सकता है।
अस्ति भवति विद्यते वा भोक्तुम् ,, वह भोजन करने के लिए है।
अलं भुक्त्वा ३–४–६६—भोजन मत करो।
पर्याप्तं भुङ्क्ते ,, पर्याप्त भोजन करता है।
कालः समयो वेला अनेहा वा भोक्तुम् ३–३–१६७—भोजन करने का समय है।
यागाय याति ३–३–११—वह यज्ञ करने के लिए जाता है।
काण्डलावो व्रजति ३–३–१२—लकड़ी काटने के लिए जाता है।
कम्बलदायो व्रजति ,, वह कम्बल देने के लिए जाता है।
पादः ३–३–१६—पैर, चरण।
रोगः ,, बीमारी।

वेशः ३–३–१६—द्वार, मकान।
स्पर्शः ,, छूना।
सारः ३–३–१७—तत्त्व, बल।
अतिसारः ,, दस्त की बीमारी।
विसारः ,, एक प्रकार की मछली।
पाकः ३–३–१८—पकाना।
स्फारः, स्फालः ६–१–४७—फड़कन, धड़कन।
परीहारः ,, बचाव, छुटकारा।
नीकाशः ६–३–१२३—सादृश्य, प्राकट्य।
अनूकाशः ,, प्रतिबिम्ब।
प्रकाशः ,, रोशनी।
शमः ,, शान्ति।
आचामः ,, आचमन।
कामः ,, इच्छा।
वामः ,, बायाँ, प्रतिकूल, सुन्दर।
रागः ६–४ २७—रंग, प्रेम, रंगाई।
रङ्गः ,, जहाँ अभिनय हो।
प्रासः ,, अस्त्रविशेष।
को भवता लाभो लब्धः ६–४–२७—तुमको क्या लाभ हुआ।
स्यदः ६–४–२८—वेग, तेजी।
स्यन्दः ,, बहाव।
अवोदः ६–४–२९—छिड़काव, भिगाना।
एधः ,, ईंधन।
ओद्मः ,, बहाव, छिड़काव।
प्रश्रथः ,, शिथिलता।
हिमश्रथः ,, बर्फ का शिथिल होना या पिघलना।
निचायः ३–३–२०—राशि।
निष्पावः ,, ओसाई, अन्न को भूसे से अलग करने की क्रिया।
कारः ,, कर, टैक्स।
दाराः ,, पत्नी।
जाराः ,, उपपति।
उपाध्यायः ३–३–२१—अध्यापक।
शारः ,, हवा, हरा रंग।
नीशारः ,, छाया, आवरण, वस्त्र।

संरावः ३–३–२२—शब्द।
रवः ,, शब्द, ध्वनि।
अभिनिष्टानो वर्णः ८–३–८६—विसर्जनीयवर्ण।
अभिनिस्तनति मृदङ्गः ,, मृदङ्ग बजता है।
संयावः ३–३–२३—पूआ, ठोकवा, एक प्रकार की मीठी रोटी।
संद्रावः ,, भागना, पीछे हटना।
संदावः ,, ,, ,,
श्रायः ३–३–२४—शरण का स्थान।
नायः ,, साधन।
भावः ,, स्थिति, दशा, पदार्थ।
प्रश्रयः ,, सम्मान, आदर, विनय।
प्रणयः ,, प्रेम।
प्रभवः ,, उद्गम स्थान।
विस्रावः ३–३–२५—कफ।
विश्रावः ,, बहाव, प्रसिद्ध।
क्षवः ,, कफ।
श्रवः ,, कान।
अवनायः ३–३–२६—नीचे फेंकना।
उन्नायः ,, ऊँचाई।
उन्नय उत्प्रेक्षेति ,, उत्प्रेक्षा, कल्पना करना।
प्रद्रावः ३-३–२७—भागना, पीछे हटना।
प्रस्तावः ,, प्रारम्भ, अवसर।
प्रस्रावः ,, बहना, टपकाना।
द्रवः ,, भागना, टपकाना।
स्तवः ,, स्तुति, प्रशंसा।
स्रवः ,, बहना, टपकाना।
निष्पावः ३-३–२८—ओसाया गया, भूसे से अलग किया अन्न।
अभिलावः ,, लवाई।
पवः ,, पछोरना, साफ करना।
लवः ,, लवाई।
उद्गारः ३–३–२९—चिल्लाना, कहना।
निगारः ,, निगलना।
गरः ,, निगलना।

उत्कारः, निकारः ३-३-३०—अन्न का ओसाना, भूसे से अलग करना ।
भिक्षोत्करः ,, भिक्षा की राशि ।
पुष्पनिकरः ,, फूलों का ढेर ।
संस्तावः ३ ३-३१—यज्ञ का वह स्थान जहाँ छन्दोग बैठ कर मन्त्र पढ़ते हैं ।
संस्तवः ,, परिचय, स्तुति ।
प्रस्तारः ३-३-३२ —फैलाव, समतल भूमि ।
प्रस्तरः ,, बन्डल ।
विस्तारः ३-३-३३—लम्बाई चौड़ाई ।
तृणविस्तरः ,, घास का ढेर ।
ग्रन्थविस्तरः ,, पुस्तक का विशद वर्णन ।
विष्टारपंक्तिश्छन्दः ३-३-३४—विष्टारपंक्ति नाम का एक छन्द ।
उद्ग्राहः ३ ३-३५—उठाना, ऊपर उठाना ।
मल्लस्य संग्राहः ३-३-३६—पहलवान की पकड़ ।
द्रव्यस्य संग्रहः ,, द्रव्य का इकट्ठा करना, धन-संचय ।
परिणायेन शारान् हन्ति ३-३-३७-शतरंज की विशेष चाल से खेलने वाले को मारता ( जीतता ) है ।
एषोऽत्र न्यायः ,, यहाँ यह उचित, फैंसला, निर्णय या तर्क है ।
परिणयः ,, विवाह ।
न्ययः ,, नाश (न्ययङ्गतः पापः)
तव पर्यायः ३-३-३८—तुम्हारी बारी ।
कालस्य पर्ययः ,, समय का अतिक्रमण, बिताना ।
तव विशायः ३-३-३९—तुम्हारी सोने की बारी ।
विशयः ,, सन्देह ।
संशयः ,, ,,
उपशयः ,, पास या बगल में सोना ।
पुष्पप्रचायः ३-३-४०—फूलों का चुनना ।
प्रचयः ,, एकत्र करना, चुनना ।
पुष्पप्रचयश्चौर्येण ,, चोर द्वारा फूलों का एकत्र करना ।
काशी निकायः ३ ३-४१—काशी में निवास ।
आकायमग्निं चिन्वीत ,, वह आकाय नामक अग्नि का चयन-स्थापना करता है ।

कायः ३-३-४१—शरीर ।
गोमयनिकायः ,, गोबर का ढेर ।
चयः ,, राशि, इकट्ठा करना ।
गोमयानां निकेचायः ,, गोबर का अनेक या बार बार ढेर ।
भिक्षुनिकायः ३-३-४२—भिखमंगों का समाज ।
सूकरनिचयः ,, सूअरों का झुंड ।
ज्ञानकर्मसमुच्चयः ,, एक साथ ज्ञान तथा कर्म के मार्ग पर चलना या समुन्नति ।
व्यावक्रोशी ३-३ ४३,७-३-६—आपस में या परस्पर गाली गलौज ।
व्यावहासी ,, ,, परिहास ।
सांराविणं वर्तते ३-३-४४—चारों ओर शब्द हो रहा है ।
अवग्राहस्ते भूयात्,
निग्राहस्ते भूयात् ३-३-४५—तुम्हारी हार हो जाय, तुम्हारा बन्धन हो जाय ।
अवग्रहः पदस्य ,, पैर का पकड़ना ।
निग्रहश्चोरस्य ,, चोर का बन्धन ।
पात्रप्रग्राहेण भिक्षुश्चरति ३-३-४६—हाथ में पात्र ले कर भिक्षु घूमता है ।
उत्तरः परिग्राहः ३-३-४७—यज्ञ की वेदी का उत्तरी घेरा ।
नीवाराः ३-३-४८—जंगली धान, तिन्नी, स्वयं उगने वाला धान ।
निवरा कन्या ,, कुमारी ( क्वारी ) लड़की ।
प्रवरा ,, श्रेष्ठ पतिवाली स्त्री ।
उच्छ्रायः ३-३-४९—ऊँचाई, उन्नति ।
उद्यावः ,, मिलावट ।
उत्पावः ,, पवित्र करने वाला ( घी ) ।
उद्द्रावः ,, भागना, पीछे हटना ।
पतनान्ताः—
समुच्छ्रयाः ,, उन्नति के अन्त में पतन होता है ।
आरावः, आरवः ३ ३-५०—शब्द-शोर गुल ।
आप्लावः, आप्लवः ,, बाढ़, स्नान ।
अवग्रहः अवग्राहः ३-३-५१—अवर्षण, सूखा ।
अवग्रहः पदस्य ,, पैर या चरण का पकड़ना ।

तुलाप्रग्राहेण चरति तुलाप्रग्रहेण वा ३-३-५२—तराजू की रस्सी पकड़कर घूमता है।
प्रग्रहः, प्रग्राहः ३-३-५३—रास, वह रस्सी जिससे घोड़े वगैरह गाड़ी में जोते जाते हैं।
प्रवरः, प्रवारः ३-३-५४—वस्त्र, चादर।
परिभवः ३-३-५५—अपमान, अनादर।
जयः ३-३-५६—जीत, विजय।
चयः ,, राशि, ढेर।
भयम् ,, डर।
वर्षम् ,, वर्षा।
करः ३-३-५७—बिखेरना।
गरः ,, विष।
शरः ,, बाण।
यवः ,, जौ।
लवः ,, लवाई।
स्तवः ,, स्तुति, प्रशंसा।
पवः ,, ओसाना, अन्न को साफ करना।
विष्टरः ८-३-९३—वृक्ष, आसन।
वाक्यस्य विस्तरः ,, वाक्य का विस्तार।
ग्रहः ३-३-५८—सूर्य के चारों ओर घूमने वाले तारे।
वरः ,, वरदान, आशीस।
दरः ,, गड्ढा, गुफा, फटन।
निश्चयः ,, निश्चय।
गमः ,, प्रस्थान, जाना।
वशः ,, अधीन, आज्ञाकारी।
रणः ,, युद्ध।
प्रस्थः ,, समतल भूमि, अन्न का एक प्राचीन तोल।
विघ्नः ,, बाधा, रुकावट।
चक्रम् ,, पहिया, एक अस्त्र।
चिक्लिदम् ,, आर्द्रता, नमी।
चक्नसः ,, बेईमानी, दुष्टता।
प्रघसः ३-३-५९, २-४-३८—पेटू, अधिक खाने वाला।
विघसः ,, ,, आधा चबाया हुआ ग्रास।
घासः ,, ,, घास।

न्यादः, निघसः ३-३-६०—भोजन करना, भोजन।
व्यधः ३-३-६१—घाव, चोट।
जपः ,, मन्त्र का बार बार उच्चारण।
आव्याधः ,, बेधना।
उपजापः ,, रहस्य प्रकट कर देना, चुगलखोरी।
स्वनः, स्वानः ३-३-६२—ध्वनि, शब्द।
हसः, हासः ,, हँसी।
प्रस्वानः ,, ध्वनि।
प्रहासः ,, हँसी।
संयमः, संयामः ३-३-६३—अनुशासन, रुकावट।
उपयमः, उपयामः ,, विवाह।
नियमः, नियामः ,, रोकने वाला विधान, कानून।
वियमः, वियामः ,, रोक, विपत्ति।
यमः, यामः ,, अनुशासन।
निगदः, निगादः ३-३-६४—पढ़ना, पाठ।
निनदः, निनादः ,, ध्वनि, शब्द।
निपठः, निपाठः ,, पढ़ना।
निस्वनः, निस्वानः ३-३-६४—शोर गुल, ध्वनि, कोलाहल।
निक्वणः, निक्वाणः ३-३-६५—वीणा का स्वर।
क्वणः, क्वाणः,
प्रक्वणः, प्रक्वाणः ,, ध्वनि, शब्द।
मूलकपणः ३-३-६६—मूली की अंटिया।
शाकपणः ,, साग की अंटिया।
पाणः ,, व्यापार।
धनमदः ३-३-६७—धन का घमंड।
उन्मादः ,, पागलपन।
संमदः ३-३-६८—असावधानी।
प्रमादः ,, भूल, गलती, असावधानी।
समजः ३-३-६९—पशुओं का झुंड।
उदजः ,, पशुओं का हांकना।
समाजो—
ब्राह्मणानाम् ,, ब्राह्मणों का समूह।

उदाजः क्षत्रियाणाम् ३-३-६९—क्षत्रियों का ले जाना।
अक्षस्य ग्लहः ३-३-७०—पासा फेंकना।
पादस्य ग्रहः ,, पैर का पकड़ना।
गवामुपसरः ३-३-७१—गायों का गर्भाधान।
निहवः ३-३-७२ – स्तुति, प्रार्थना।
अभिहवः ,, स्तुति, प्रार्थना।
उपहवः ,, निमंत्रण।
विहवः ,, बुलाना।
प्रह्वायः ,, बुलाना, सम्मन।
आहवः ३-३-७३—युद्ध।
आह्वायः ,, पुकारना, बुलावा।
आहावः ३-३-७४—कुएँ के पास पशुओं के पानी पीने के लिए नाँद।
हवः ३-३-७५—पुकारना।
वधेन दस्युम् ३-३-७६—डाकुओं का वध से।
घातः ,, प्रहार।
सैन्धवघनम्—सेंधानमक।
अभ्रघनः ३-३-७७—बादलों का समूह।
अन्तर्घनः, अन्तर्घणः ३-३-७८—बाहीक देश का एक नाम।
प्रघणः, प्रघाणः ३-३-७९—मकान के प्रधानद्वार के सामने की दालान, पोर्टिको।
उद्घनः ३-३-८०—ठीहा, वह लकड़ी जिस पर दूसरी लकड़ी रखकर बढ़ई छीलता है।
अपघनः ३-३-८१—शरीर का अंग, हाथ पैर आदि।
अपघातः ,, मारना, काटना, रोकना।
अयोघनः ३-३-८२—घन, हथौडा।
विघनः ,, मुँगरी, लकड़ी का हथौड़ा।
द्रुघनः, द्रुघणः ,, कुल्हाड़ी, वृक्ष काटने वाली।
स्तम्बघ्नः, स्तम्बघनः
स्तम्बघातः ३-३-८३—हँसुआ।
परिघः, पलिघः ३-३-८४, ८-२-२२—ब्योंड़ा, लोहे की गदा।
पल्यङ्कः, पर्यङ्कः ,, पलँग।

पर्वतोपघ्नः ३-३-८५—पहाड़ की ढाल।
सङ्घः ३-३-८६—समूह।
उद्घः ,, अच्छी तरह जानने वाला, सत्पुरुष, आदर्शपुरुष।
निघाः ३-३-८७—वृक्ष।
निमितम् ,, चारों ओर से नापा गया।
पक्त्रिमम् ३-३-८८—पका हुआ।
उप्त्रिमम् ,, बोया गया।
कृत्रिमम् ,, बनावटी।
वेपथुः ३-३-८९—कँपकँपी।
श्वयथुः ,, शोथ, फूलना।
यज्ञः ३-३-९०—यज्ञ।
याच्ञा ,, प्रार्थना, माँगना।
विश्नः ,, चमक, प्रकाश।
प्रश्नः ,, सवाल।
रक्ष्णः ,, रक्षा, बचाव।
स्वप्नः ३-३-९१—स्वप्न, सपना।
प्रधिः ३-३-९२—पहिए की परिधि, घेरा।
अन्तर्धिः ,, गायब होना, लोप होना।
उपाधिः ,, कपट, छल, धोखा, उपद्रव।
जलधिः ३-३-९३—समुद्र।
कृतिः ३-३-९४—कार्य, रचना।
चितिः ,, एकत्र करना।
स्तुतिः ,, प्रशंसा।
स्फातिः ,, शोथ।
श्रुतिः ,, कान।
इष्टिः ,, यज्ञ, इच्छा।
स्तुतिः ,, प्रशंसा।
कीर्णिः ,, बिखेरना।
गीर्णिः ,, प्रशंसा।
लूनिः ,, काटना, लवाई।
धूनिः ,, क्षोभ।
पूनिः ,, नाश।
प्रह्लत्तिः ,, आनन्द, हर्ष।
चूर्तिः ,, जाना।
फुल्तिः ,, विकास, फूलना।

अपचितिः ३-३-९४—हानि, नाश, आदर प्रकट करना।
सम्पत् „ सम्पत्ति, सुख।
विपत् „ विपत्ति, दुःख।
संपत्तिः „ सम्पत्ति, सुख।
विपत्तिः „ विपत्ति, दुःख।
प्रस्थितिः ३-३-९५—प्रस्थान, यात्रा।
उपस्थितिः „ विद्यमान होना।
सङ्गीतिः „ कई व्यक्तियों का एक साथ गाना बजाना।
सम्पीतिः „ एक साथ पीना।
पक्तिः „ पकाना।
अवस्था „ दशा
संस्था „ सभा
ऊतिः ३-३-९७—रक्षण, रक्षा, खेलकूद।
यूतिः „ सम्मिलित होना।
जूतिः „ वेग, तीव्रता।
सातिः „ नाश।
हेतिः „ अस्त्र।
कीर्तिः „ यश।
व्रज्या ३-३-९८—इधर उधर घूमना, भ्रमण करना।
इज्या „ यज्ञ, पूजा।
समज्या ३-३-९९—सभा।
निषद्या „ गद्दी, बैठनें का स्थान, गद्देदार मचिया, कुर्सी।
निपत्या „ फिसलने वाली भूमि।
मन्या „ गर्दन का पिछला भाग।
विद्या „ विद्या।
सुत्या „ सोमरस का निचोड़ना, सोमयाग।
शय्या „ बिछौना, बिस्तर।
भृत्या „ मजदूरी।
इत्या „ पालकी।
कृत्या, क्रिया, कृतिः ३-३-१००—काम, रचना।
इच्छा ३-३-१०१—चाह, अभिलाषा, मनोरथ।
परिचर्या „ सेवा।
परिसर्या „ पर्यटन, परिभ्रमण।

मृगया ३-३-१००—शिकार, आखेट।
अटाट्या „ धार्मिक विचार से इधर उधर भ्रमण करना।
जागरा, जागर्या „ जागरण।
चिकीर्षा ३-३-१०२—करने की इच्छा।
पुत्रकाम्या „ पुत्र की कामना।
ईहा ३-३-१०३—इच्छा।
ऊहा „ अनुमान, तर्क।
भक्तिः „ बड़ों के प्रति प्रेम।
नीतिः „ न्याय।
आप्तिः „ पाना, प्राप्ति।
दीप्तिः „ चमक, प्रकाश।
निगृहीतिः „ पकड़, रुकावट।
निपठितिः „ अध्ययन।
जरा ३-३-१०४—बुढ़ापा।
त्रपा „ लज्जा।
भिदा „ फर्क, भेद।
भित्तिः „ दीवाल।
छिदा „ काटना।
छित्तिः „ सूराख।
गुहा „ गुफा।
गूढिः „ छिपाना।
आरा „ मोची का सूजा।
हारा „ एक प्रकार का अंगूर लाल, भूरा।
कारा „ जेल।
तारा „ नक्षत्र, पुतली।
धारा „ नदी का प्रवाह, वर्षा।
आर्त्तिः „ दुःख, कष्ट।
रेखा „ लकीर।
लेखा „ लिखना, हिसाब।
चूडा „ चोटी।
धृतिः „ धैर्य।
मृजा „ शुद्धि, सफाई।
कृपा „ दया।
चिन्ता ३-३-१०५—विचार, सोच।
पूजा „ आदर, पूजा।

कथा ३-३-१०५—कहानी ।
कुत्सा ,, मोटा पेटी कोट, यज्ञमंडप का घेरा ।
चर्चा ,, पाठ, पढ़ना, उच्चारण, बातचीत ।
प्रदा ३-३-१०६—भेंट, उपहार ।
उपदा ,, भेंट, नजराना ।
श्रद्धा ,, भक्ति ।
अन्तर्धा, अन्तर्धिः ,, छिपना, गायब होना, लोप होना ।
कारणा ३-३-१०७—कराना ।
हारणा ,, लिवा जाना ।
आसना ,, बैठाना ।
श्रन्थना ,, ढीला करना ।
घट्टना ,, हिलाना, घिसना ।
वन्दना ,, प्रार्थना, स्तुति ।
वेदना ,, ज्ञान, अनुभव, पीड़ा ।
अन्वेषणा ,, तलाशी, ढूंढना ।
पर्येषणा, परीष्टिः ,, तहकीकात, छानबीन ।
प्रच्छर्दिका ३-३-१०८—कय, वमन ।
प्रवाहिका ,, दस्त होना ।
विचर्चिका ,, खुजली ।
शिरोर्तिः ,, सिरदर्द ।
आसिका ,, बैठना ।
शायिका ,, लेटना, सोना ।
पचिः, पचतिः ,, पच् धातु ।
अकारः ,, 'अ' वर्ण ।
ककारः ,, 'क्' वर्ण ।
रेफः ,, 'र्' वर्ण ।
मत्वर्थीयः ,, जिस प्रत्यय का अर्थ 'मतुप्' के समान हो ।
आजिः ,, युद्ध ।
आतिः ,, एक पक्षी ।
वापिः ,, बावली ।
वासिः ,, घर, मकान ।
कृषिः ,, खेती ।
गिरिः ,, पर्वत ।

उद्दालपुष्पभञ्जिका ३-३-१०९—पूर्वी भारत का एक खेल, जिसमें लिसोड़े के फूल तोड़े या कुचले जाते थे ।
वरणा ,, एक प्रकार का वृक्ष ।
पूरिका ,, पूरी ।
कां त्वं कारिं कारिकां क्रियां, कृत्यां,
कृतिं वा कार्षीः ३-३-११०—तुमने कौन सा काम किया ।
गणिं गणिकां गणनां वा कार्षीः ,, तुमने क्या गिना ।
पाचिं, पाचिकां पचां पक्तिम् ,, ,, तुमने क्या पकाया ।
आसिका ३-३-१११—बैठना ।
शायिका ,, सोना, लेटना ।
अग्रगामिका ,, आगे जाना ।
भवान् इक्षुभक्षिकामर्हति ,, तुम ईख चूसने के अधिकारी हो ।
भवान् मे इक्षुभक्षिकां-
धारयति ,, आपको मुझे ईख चुसाना बाकी है ।
इक्षुभक्षिका उदपादि ,, आपने ईख चूसने का अवसर दिया ।
अजीवनिस्ते शठ भूयात् ३-३-११२—दुष्ट तुम्हारी मृत्यु हो जाय ।
अप्रयाणिः ,, तुम्हारा न जाना हो ।
राजभोजनाः शालयः ३-३-११३—राजा के भोजन योग्य धान ।
हसितम्, हसनम् ३-३-११४, ११५—हँसना ।
पयःपानं सुखम् ३-३-११६—दूध का पीना सुखद होता है ।
गुरोःस्नापनं सुखम् ,, गुरु को स्नान कराने में सुख होता है ।
प्रवयणम् २-४-५७—आगे बढ़ाने या ले जानेवाला, अंकुश, कोड़ा, छड़ी ।
प्राजनम् ,,
इध्मप्रव्रश्चनः ३-३-११७—कुल्हाड़ी ।
गोदोहनी ,, दुधहँण, दूध दुहने का पात्र ।

अन्तर्हणनम् ८-४-२४—बीच में, मध्य में मारना।
अन्तर्हननः ,, वाहीक देश का एक नाम।
अन्तर्घ्नन्ति ,, मध्य में मारता है।
अन्तरघानि ,, मध्य में मारा।
अन्तरयणम् ८-४-२५—अयनों के समीप सूर्य की स्थिति का समय।
अन्तरयनः ,, अयनांशों के बीच का देश।
दन्तच्छदः ३-३-११८, ६-४ ९६—ओठ।
प्रच्छदः ,, चादर।
समुपच्छादः ,, अच्छी तरह ढकनेवाली चादर।
आकरः ,, कान ( खान )।
गोचरः ३-४ ११९—चरागाह।
संचरः ,, रास्ता मार्ग।
वहः ,, कन्धा।
व्रजः ,, गोशाला।
व्यजः ,, ताड़ का पंखा।
आपणः ,, बाजार।
निगमः ,, वेद, बाजार।
निकषः ,, कसौटी।
अवतारः ३-३-१२०—घाट, बावली या तालाब में उतरने का मार्ग, ईश्वर का शरीर धारण करना।
अवस्तारः ,, पर्दा।
रामः ३-३-१२१—परमेश्वर।
अपामार्गः ,, चिचिढी।
विमार्गः ,, झाड़ू।
अध्यायः ३-३-१२२—किसी पुस्तक का भाग।
न्यायः ,, फैसला, निर्णय।
उद्यावः ,, मिलावट।
संहारः ,, नाश।
अवहारः ,, युद्धबन्दी, सन्धि।
आधारः ,, आश्रय, सहारा।
आवायः ,, कपड़ा बुनने का स्थान।
घृतोदङ्कस् ३-३-१२३—चमड़े का कुप्पा, जिसमें घी रखा जाता है।

उदकोदञ्चनः ३-३-१२२—पानी खींचने की बाल्टी।
आनायः ३-३-१२४—जाल, जिसमें मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।
आनयः ,, लाना।
आखनः ३-३-१२५—फावड़ा।
आखानः-आखः-आखरः
आखनिकः-आखनिकबकः ३-३-१२५—फावड़ा।
दुष्करः कटो भवता ३-३-१२६—आपने कठिनता से चटाई बनाई।
ईषत्करः ,, आपने सरलता से चटाई बनाई।
सुकरः ,, आपने सुख से चटाई बनाई।
ईषन्निमयः ,, थोड़े में बदला जाने वाला।
दुष्प्रमयः ,, कठिनता से बदला जाने वाला।
सुविलयः ,, आसानी से पिघलने वाला।
निमयः ,, लेन देन।
मयः ,, घोड़ा, ऊँट।
लयः ,, नाश।
ईषत्प्रलम्भः ७-१-६७—थोड़े में पाया गया।
दुष्प्रलम्भः ,, कठिनता से पाया गया।
सुप्रलम्भः ,, आसानी से पाया गया।
उपालम्भः ,, उलाहना।
ईषल्लभः ,, थोड़ा लाभ।
लाभः ,, फायदा, प्राप्ति।
सुलभम् ७-१-६८—सरलता से पाना।
दुर्लभम् ,, कठिनता पाना।
सुप्रलम्भः ,, सरलता से पाना।
अतिदुर्लम्भः ,, बड़ी कठिनता से पाना।
दुराढ्यम्भवम् ३-३-१२७—कठिनता से धनी होना।
स्वाढ्यम्भवम् ,, सरलता से धनी होना।
ईषदाढ्यङ्करः ,, थोड़े में धनी बना देना।
दुराढ्यङ्करः ,, कठिनता से धनी बना देना।

स्वाढ्यङ्करः ३-३-१२७—सरलता से धनी बनादेना।
आढ्येन सुभूयते ,, सरलता से धनी होता है।
ईषत्पानः सोमो भवता ३-३-१२८—आप सोम रस थोड़ा सा पी सकते हैं।
दुष्पानः ,, कठिनता से पी सकते हैं।
सुपानः ,, सरलता से पी सकते हैं।
दुःशासनः ,, जिसपर कठिनता से शासन किया जा सके, एक कौरव।
दुर्योधनः ,, जिससे कठिनता से युद्ध किया जा सके, कौरवों का राजा।

निष्पानम् ८-४-३५—पूर्णतया पी जाना।
सर्पिष्पानम् ,, घी का पीना।
निर्णयः ,, फैसला, व्यवस्था।
पुष्णाति ,, पुष्ट करता है, पालन करता है।
सुसर्पिष्केण ,, उत्तम घी वाले के द्वारा।
अवश्यङ्कारी ३-३-१७०—अवश्य किया जाने वाला।
शतन्दायी ,, सौ रुपये दिया जाने वाला।
अवश्यं हरिःसेव्यः ३-३-१७१—हरि की सेवा अवश्य करनी चाहिए।
शतं देयम् ,, सौ रुपय देने हैं।
भवतात् भूतिः ३-३-१७४—ऐश्वर्य हो।
यन्तिः ६-४-३९—रुकावट, बाधा, शासन।
वन्तिः ,, याचना, प्रार्थना।
रन्तिः ,, हर्ष।
तन्तिः ,, रस्सी, विस्तार।
सातिः, सतिः, सन्तिः ६-४-४५—अन्त, नाश, तीव्र वेदना।
देवा एनं देयासुर्देवदत्तः ,,
अलंदत्वा ३-४-१८—मत दो।
पीत्वा खलु ,, मत पीओ।
माकार्षीत् ,, मत करो, मत बनाओ।
अलङ्कारः ,, आभूषण।

अपमित्य अपमाय याचते ३-४-१९, ६-४-७०—
याचित्वा अपमयते ,, वह बदले में कोई वस्तु देकर माँगता है।
अप्राप्य नदीं पर्वतः ३-४-२०—नदी पहुँचने के पहिले पहाड़ हैं।
अतिक्रम्य पर्वतं स्थिता नदी ,, पहाड़ लाँघकर नदी स्थित है।
भुक्त्वा व्रजति ३-४-२१—खाकर जाता है।
स्नात्वा भुक्त्वा पीत्वा व्रजति ,, नहाकर खाकर पीकर जाता है।
विष्णुं नत्वा स्तौति ,, विष्णुको नमस्कार कर स्तुति करता है।
स्तूत्वा ,, दुःखी होकर, प्रशंसाकर।
सूत्वा ,, उत्पन्न करके।
धूत्वा ,, हिलाकर, कँपाकर।
स्कन्त्वा ६-४-३१—जाकर सूखकर।
स्यन्त्वा, स्यन्दित्वा ,,—टपकर, बहकर, कूदकर।
शयित्वा १-२-१८—सोकर।
कृत्वा ,, करके, बनाकर।
मृडित्वा १-२-७—प्रसन्न होकर, अनुकूल होकर।
क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा } ,, दुःखी होकर।
उदित्वा ,, कहकर।
उशित्वा ,, चाहकर, चमक कर।
रुदित्वा ,, रोकर।
विदित्वा ,, जानकर।
मुषित्वा ,, चुराकर।
गृहीत्वा ,, लेकर, ग्रहण कर।
श्रथित्वा, श्रन्थित्वा १-२-२३—ढीलाकर।
गुफित्वा, गुम्फित्वा ,, चारों ओर बाँधकर।
कोथित्वा ,, दुर्गन्धित होकर, कष्ट देकर।
रेफित्वा ,, गाली देकर, निन्दा कर।
वचित्वा, वञ्चित्वा १-२-२४—धोखा देकर, ठगकर, वचकर।
लुचित्वा, लुञ्चित्वा ,, नोचकर।
[illegible] ,, [illegible]कर।

तृषित्वा, तर्षित्वा १–२–२५—प्यासा होकर, तृषार्त्त होकर।
मृषित्वा, मर्षित्वा ,, छिड़ककर, सहकर।
कृशित्वा, कर्शित्वा ,, पतला कोकर, कृश होकर।
लिखित्वा, लेखित्वा ,, लिखकर।
सेवित्वा ,, सेवाकर।
वर्तित्वा ,, रह कर।
एषित्वा ,, चाहकर, इच्छाकर।
भुक्त्वा ,, खाकर।
उषित्वा ,, रहकर।
क्षुधित्वा, क्षोधित्वा ,, भूखा होकर, क्षुधित होकर।
अञ्चित्वा ,, पूजाकर।
अक्त्वा ,, जाकर।
लुभित्वा, लोभित्वा ,, लोभित होकर, लालच कर।
लुब्ध्वा ,, लालच कर।
जरित्वा, जरीत्वा ७–२–५५—वृद्ध होकर, पुराना होकर
व्रश्चित्वा ,, काट कर।
शमित्वा, शान्त्वा ७–२–५६—शान्तकर, अन्तकर, समाप्त कर।
द्यूत्वा, देवित्वा ,, जुआ खेलकर।
क्रान्त्वा, क्रन्त्वा, क्रमित्वा ६–४–१८—जाकर, चलकर।
पवित्वा, पूत्वा ,, शुद्धकर।
भक्त्वा, भङ्क्त्वा ६–४–३२—तोड़कर।
रक्त्वा, रङ्क्त्वा ,, रँगकर, प्रसन्न होकर।
नष्ट्वा, नंष्ट्वा, नशित्वा ,, नष्ट होकर।
अञ्जित्वा, अक्त्वा,
अङ्क्त्वा ,, पूजाकर, जाकर।
खात्वा, खनित्वा ,, खोदकर।
दित्वा ,, तोड़कर।
सित्वा ,, नष्टकर, समाप्त कर।
मित्वा ,, नापकर।
स्थित्वा ,, ठहर कर।
हित्वा ६–४–३२—धारणकर।

हित्वा ७–४–४३—छोड़कर, त्यागकर।
हात्वा ,, जाकर।
जग्ध्वा ,, खाकर।
प्रकृत्य ७–१–३७—अच्छी तरह करके।
अकृत्वा ,, न करके।
परमकृत्वा ,, अच्छी तरह करके।
कोऽसिचत् ६–१ ८६—किसने सींचा।
अधीत्य ,, पढ़कर।
प्रेत्य ,, सदा के लिए जाकर, मरकर।
आगत्य, आगम्य ६–४–३८—आकर।
प्रणत्य, प्रणम्य ,, प्रणामकर।
प्रहत्य ,, मारकर।
प्रमत्य ,, मानकर, समझ कर।
वितत्य ,, फैलाकर।
विधाय ,, करके।
प्रदाय ,, देकर।
प्रखन्य ,, खोदकर।
प्रस्थाय ,, प्रस्थानकर।
प्रक्रम्य ,, चलकर।
आपृच्छ्य ,, पूछकर।
प्रदीव्य ,, जुआ खेलकर।
प्रधाय ६–४–६९—पीकर।
प्रगाय ,, गाकर।
प्रपाय ,, पीकर।
प्रहाय ,, छोड़कर।
प्रसाय ,, समाप्तकर, अन्तकर।
प्रमाय ,, नापकर।
निमाय ,, बदलकर।
उपदाय ,, भेंट देकर।
विलाय, विलीय ,, छिपकर।
उत्तार्य ,, उतारकर।
विचार्य ,, विचारकर।
विगणय्य ६–४–५६—गिनकर।
प्रणमय्य ,, प्रणामकर।
प्रबेभिदय्य ,, बार बार तोड़कर।
संप्रधार्य ,, निश्चय कर, जानकर।

प्रापय्य, प्राप्य ६-४-५७—पहुँचाकर ।
प्रक्षीय ६-४-५९—क्षीणहोकर, नष्ट होकर ।
प्रवाय ६-१-४१—बुनकर ।
प्रज्याय ६-१-४२—वृद्ध होकर ।
उपव्याय ६-१- ३—ढककर ।
परिवीय, परिव्याय ६-१-४४—चारों ओर से ढककर ।
व्यादाय ,, खोलकर, फैलाकर ।
निमील्य ,, आँख बन्दकर ।
स्मारं स्मारं नमति शिवम् ३-४-२२—निरन्तर स्मरणकर शिव को नमस्कार करता है ।
पायं पायम् ,, पी पीकर ।
भोजं भोजम् ,, खा खाकर ।
श्रावं श्रावम् ,, सुन सुनकर ।
गामंगामम्, गमंगमम् ,, जा जाकर ।
प्रलम्भं प्रलम्भम् ,, पा पाकर ।
जागरं जागरम् ,, जाग जागकर ।
यदयंभुङ्क्ते ततःपठति ३-४-२३—यह खाकर पढ़ता है ।
यदयंभुक्त्वा व्रजति ततोऽधीते ,, जब यह खाकर जाता है तब पढ़ता है ।
अग्रेभोजंव्रजति, अग्रेभुक्त्वा ३-४-२४—पहिले भोजन कर जाता है ।
पूर्वंभोगम्, पूर्वंभुक्त्वा ,, पहिले भोजनकर ।
अग्रेभोजंभोजं, व्रजति भुक्त्वा भुक्त्वा ,, पहिले खाकर जाता है ।
चौरङ्कारम् आक्रोशति ३-४-२५—चोर कह कर गाली देता हैं अर्थात् तुम चोर हो यह कहकर गाली देता है ।
स्वादुङ्कारंभुङ्क्ते ,, स्वादिष्ट बनाकर भोजन करता है ।
सम्पन्नङ्कारम् ,, मसाला डालकर ।
लवणङ्कारम् ,, नमक डालकर ।
अन्यथाकारम् ३-४-२७—दूसरे प्रकार से ।
एवङ्कारम् ,, इस प्रकार से खाता है ।
कथङ्कारम् ,, किस प्रकार से ।
इत्थङ्कारंभुङ्क्ते ,, इस प्रकार से ।

शिरोऽन्यथाकृत्वा भुङ्क्ते ३-४-२७—वह सिर को दूसरी ओर करके खाता है ।
यथाकारमहंभोक्ष्ये तथाकारं भोक्ष्ये किं तवानेन ३-४-२८—मैं जिस प्रकार से भोजन करूँगा उस प्रकार से करूँगा, इसमें तुम्हारा क्या ?
कन्यादर्शं वरयति३-४-२९—कन्या देख कर चुनता है ।
ब्राह्मणवेदं भोजयति ,, ब्राह्मण जानकर भोजन कराता है ।
यावद्वेदं भुङ्क्ते ३-४-३०—वह जितना पाता है खाता है ।
यावज्जीवमधीते ,, वह जब तक जीता है पढ़ता है ।
चर्मपूरं स्तृणाति ३-४-३१—चमड़े को ढाकने भर फैलाता है ।
उदरपूरं भुङ्क्ते ,, पेट भर भोजन करता है ।
गोष्पदं प्रवृष्टो देवः ३-४-३२—गाय के खुर से बने गड्ढे भर पानी बरसा ।
मूषिकाविलप्रम् ,, चूहे की बिल भरने भर पानी बरसा ।
चेलक्नोपं वृष्टोदेवः, वस्त्रक्नोपम्, वसनक्नोपम् ३-४-३३—कपड़ा भिगाने भर पानी बरसा ।
निमूलकाषं कषति ३-४-३४—जड़ छोड़कर घिसता है ।
समूलकाषम् ,, जड़ समेत घिसता है ।
शुष्कपेषं पिनष्टि ३-४-३५—सूखा पीसता है ।
चूर्णपेषम् ,, पीसकर चूर्ण कर देता है ।
रूक्षपेषम् ,, पीसकर रूखा कर देता है ।
समूलघातं हन्ति ३-४-३६—जड़ समेत मारता ( नष्ट करता ) है ।
अकृतकारं करोति ,, पहिले न किये गये काम को करता है ।
जीवग्राहंगृह्णाति ,, जीवित पकड़ता है ।
पादघातं हन्ति ३-३-३७—पैर से मारता है ।
उदपेषं पिनष्टि ,, जल डालकर पीसता है ।

हस्तवर्तं वर्तयति ३–४–३९—हाथ से गोली बनाता है।

करवर्तम् „ हाथ से गोली बनाता है।

हस्तग्राहं गृह्णाति,

करग्राहम्, पाणिग्राम् „ हाथ पकड़ता है।

स्वपोषं पुष्णाति, धनपोषम् ३–३–४०—धन से पालन-पोषण करता है।

गोपोषम् „ गाय से पालन पोषण करता है।

चक्रबन्धं बध्नाति ३–४–४१—पहिये में बाँधता है।

क्रौञ्चबन्धं बद्धः ३–४–४२—क्रौञ्च गाँठ से बँधा है।

मयूरिकावन्धम् „ मयूर गाँठ से बँधा है।

अट्टालिकावन्धम् „ अट्टालिका गाँठ से बँधा है।

जीवनाशं नश्यति ३–४–४३—जीवन नष्ट होता है। मर जाता है।

पुरुषवाहं वहति „ पुरुष ढोता है अर्थात् भृत्य स्वामी को अपने ऊपर ढोता है।

ऊर्ध्वशोषं शुष्यति ३ ४–४४—ऊपर ही ऊपर सूखता है।

ऊर्ध्वपूरं पूर्यते „ ऊपर ही ऊपर भरता है।

घृतनिधायं निहितं जलम् ३–४–४५—घी की तरह जल रखा है।

अजकनाशं नष्टः „ बकरे की तरह नष्ट हो गया।

मूलकोपदंशं भुङ्क्ते ३–४–४७—मूली काट कर भोजन करता है अर्थात् मूली के साथ भोजन करता है।

दण्डोपघातं गाः कालयति ३–४–४८—लाठी से मार कर गायों को एकत्र करता है।

दण्डेन चोरमाहत्य

कालयति „ लाठी से चोर को मार कर गायों को एकत्र करता है।

पार्श्वोपपीडं शेते ३–४–४९—करवट बदल कर सोता है।

व्रजोपरोधं गाः स्थापयति, व्रजेन व्रजे

उपरोधं वा ३–४–४९—गोशाले में घेर कर गायों को रखता है।

पाण्युपकर्षं धानाः संगृह्णाति,

पाणावुपकर्षं पाणिनोपकर्षं वा „ हाथ से खींचकर धान्य संग्रह करता है।

केशग्राहं केशेषु गृहीत्वा

वा युध्यन्ते३–४–५० -वाल पकड़ कर लड़ते हैं।

हस्तग्राहं

हस्तेन गृहीत्वा वा „ हाथ पकड़ कर।

द्व्यंगुलोत्कर्षं खण्डिकां छिनत्ति ३–४–५१—दो अंगुल का टुकड़ा काटता है।

द्व्यंगुलेन द्व्यंगुलेवोत्कर्षम् „ „ „

शय्योत्थायं धावति ३–१–५२–विस्तर से उठकर दौड़ता है।

यष्टिग्राहं युध्यन्ते ३–४–५३—लाठी लेकर लड़ते हैं।

लोष्टग्राहम् „ ढेला लेकर।

अस्यपगारम्, अस्यपगोरं युध्यन्ते ३–१–५३–तलवार उठा कर लड़ते हैं।

भ्रूविक्षेपं भ्रुवंविक्षेपं कथयति ६–४–५४—वह चारों ओर दृष्टि डालकर बात करता है।

शिर उत्क्षिप्य „ एक ओर सिर करके।

उरःप्रतिपेषं युध्यन्ते ३–४–५५—छाती से छाती मिलाकर लड़ते हैं।

उरोविदारं प्रतिचस्करे नखैः „ पंजे से हृदय विदीर्ण कर दिया।

गेहानुप्रवेशमास्ते ३–४–५६—घर में घुस घुसकर बैठता है।

गेहङ्गेहमनुप्रवेशम् „ „

गेहमनुप्रवेशमनुप्रवेशम् „ „

गेहानुप्रपातम् „ „

गेहानुस्कन्दम् „ „

द्व्यहात्यासं गाः पाययति ३–४–५७—दो दिन बाद गायों को पानी पिलाता है।

द्व्यहमत्यासम् „ „

द्व्यहतर्षम् „ „

द्व्यहन्तर्षं „ „

नामादेशमाचष्टे ३-४-५८—नाम बताकर कहता है।
नामग्राहमाह्वयति ,, नाम लेकर बुलाता है।
उच्चैःकृत्वा उच्चैःकारमाचष्टे ३-४-५९—जोर जोर से बुरा भला कहता है।
नीचैःकृत्वा नीचैःकृत्य नीचैःकारं प्रियंब्रूते ,, धीरे से प्रिय वचन कहता है।
तिर्यक्कृत्य तिर्यक्कृत्वा तिर्यक्कारंगतः ३-४-६०—पूरा करके (समाप्त करके) चला गया।
तिर्यक्कृत्वा काष्ठंगतः ,, लकड़ी को टेढ़ी करके चला गया।
मुखतःकृत्य मुखतःकृत्वा गतः ३-४-६१—सामने करके गया।
मुखतःकारम् मुखतोभूय मुखतोभूत्वा मुखतोभावम् ,, ,,

नानाकृत्य नानाकारम् ३-४-६२—अनेक करके।
विनाकृत्य विनाकृत्वा विनाकारम् ,, नष्ट करके।
नानाभूय नानाभूत्वा नानाभावम् ,, अनेक होकर।
एकधाभूय एकधाभूत्वा एकधाभावम् ,, एक होकर।
एकधाकृत्य एकधाकृत्वा एकधाकारम् ,, एक करके।
हिरुक्कृत्वा ,, नष्ट करके।
पृथक्भूत्वा ,, अलग होकर।
तूष्णींभूय,तूष्णींभावम् ३-४-६३—चुप होकर।
अन्वग्भूय अन्वग्भूत्वा अन्वग्भावं वा आस्ते ३-४-६४—आगे, बगल, में पीछे या अनुकूल हो कर ठहरता है।
अन्वग्भूत्वातिष्ठति ,, वह पीछे ठहरा है, वह प्रतिकूल है।

इति उत्तरकृदन्तप्रकरणम्

# अथ वैदिकप्रकरणम्

## प्रथमोऽध्यायः

पुनर्वसुर्नक्षत्रं पुनर्वसू वा १-२-६१—पुनर्वसु नक्षत्र के दो तारे।
विशाखानक्षत्रं विशाखेवा १-२-६२—विशाखा नक्षत्र के दो तारे।
क्षेत्रस्य पतिना वयम् ऋ. ४-५७-१/१-४-९—हम यजमान क्षेत्र के स्वामी देवता के साथ।
नभस्वत् १-४-९—आकाश की तरह।
अङ्गिरस्वत् ,, अङ्गिरा की तरह।
मनुष्वत् ,, मनुष्य की तरह।
वृषण्वसुः ,, इन्द्र का कोष जिसका धन दान दिया जाय।
कृषणश्वः ,, मेना के पिता का नाम।
स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेनऋ. ४-५०-५।१-४-२०—वह (बृहस्पति) सुन्दर स्तुति वाले तथा दीप्तिमान् अंगिराओं द्वारा (बलासुर का नाश किया)।

नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु ऋ.१०-७१-५-,,अर्थ जानने वाले व्यक्ति को निरूपणीय अर्थ के विषय में अलग नहीं करते।
हरिभ्यां याह्योक आ = घोड़ों पर चढ़कर घर आओ।
आमन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि ऋ३-४१-१ ,,—इन्द्र, मतवाले घोड़ों पर चढ़कर घर आओ।
समीधेदस्युहन्तमम् ऋ ६-१६-१५-१-२-६—दस्युओं को मारने वाले तुमको प्रज्वलित किया।
पुत्रईधेअथर्वणः ऋ ६-१६-१४,,—अथर्वा के पुत्र ने तुमको प्रज्वलित किया।
बभूव=हुआ।

इति प्रथमोऽध्यायः

## अथ द्वितीयोऽध्यायः

यवाग्वाग्निहोत्रं जुहोति २-३-३—यवागू नामक हविष् से हवन करता हैं।

गामस्य तदहः सभायांदीव्येयुः मै० सं० १-६-११—

पुरुषमृगश्चन्द्रमसे = चन्द्रमा के लिए नर मृग।

गोधाकालकादार्वाघाटस्ते वनस्पतीनाम् —वन देवता के लिए गोह, काल का पक्षी और दार्वाघाट।

या खर्वेण पिबति तस्यै खर्वो जायते=जो विकलाङ्ग के साथ पीती है उसके विकलांग उत्पन्न होता है।

घृतस्य घृतेन वा यजते = घी से हवन करता है।

घस्तां नूनम्=मैंने अवश्य खाया।

सग्धिश्चमे=मेरे साथ खानेवाले हो।

हेमन्तशिशिरौ=हेमन्त और शिशिर।

अहोरात्रे=दिन और रात।

वृत्रहा वृत्रं हनति=वृत्र को मारने वाले (इन्द्र) वृत्र को मारते हैं।

अहिः शयत उपस्पृक् ऋ १-३२-५—सांप नीचे सोता है।

त्राध्वं नो देवाः ऋ ११-२९-६—देवगण, हमें बचाइये।

दातिप्रियाणिचिद्वसु ऋ. ४-८-३—वे यज्ञाभिलाषी जयमान को अभीष्ट धन देते हैं।

पूर्णां विवष्टि ऋ. ७-१६-११—हवि पूर्ण स्रुवा को चाहता है।

अक्षन्नमीमदन्त हि ऋ. १-८२-२—उन लोगों ने अच्छी तरह भोजन किया और प्रसन्न हुए।

माह्वर्मित्रस्य = मित्रों के प्रति कुटिलता न हो।

धूर्तिःप्रणङ्मर्त्यस्य = हम पर मनुष्यों का आक्रमण न हो।

सुरुचो वेन आवः यजुः० १३-३—कान्तिमान् (सूर्य ने) अपने सुन्दर प्रकाश से (संसार को) प्रकाशित किया।

मा न आधक्‌ऋ. ६-६१-१४—हमको दुःखी मत करो।

आ प्रा द्यावापृथिवी ऋ १-११५-१—अकाश तथा पृथ्वी को अपनी किरणों से पूर्ण किया।

परावर्ग्भारभृद्यथा ऋ. ८-१२-६४—बोझ ढोनेवाले की तरह फेंको।

अक्रन्नुषसः ऋ. १-९२-२—प्रातः काल प्राणियों को ज्ञान दिया।

त्वे रयिंजागृवांसो अनुग्मन् ऋ. ६-१-३—धनाभिलाषी यजमान तुम्हारा अनुसरण कहते हैं।

अज्ञत तदा अस्य दन्ताः= तब इसके दांत अज्ञात थे, अर्थात् निकले नहीं थे।

नताअगृभ्णन्नजनिष्ट हि षः ऋ. ५-२-४—वह उत्पन्न हो गया था, परन्तु उन्होंने उसे नहीं पकड़ा।

इतिद्वितीयोऽध्यायः

## अथ तृतीयोऽध्यायः

अभ्युत्सादयामकः=ऊपर बैठाया।

प्रजनयामकः=उत्पन्न किया।

चिकयामकः=चुनवाया, एकत्र कराया।

रमयामकः=खेलाया।

पावयां क्रियात्=पवित्र या शुद्ध किया।

विदामक्रन् =जाना।

गृहानजूगुपतं युवम् =तुम दोनों ने हमारे घरों की रक्षा की।

मा त्वायतो जरितुः-

काममूनयी ऋ. १-५३-३—तुम अपने यजमान की अभिलाषा भंग मत करो।

मा त्वाग्निर्ध्वनयीत् ऋ. १-१६२-१५—अग्नि तुमसे शब्द न कराये।

इदं तेभ्योऽकरं नमः ऋः १०-८५-१७—उनको यह नमस्कार किया।

अमरत् = मर गया।

अदरत् = विदीर्ण किया।

यत्सानोः सानुमारुहत् ऋ १-१०-२—जब एक चोटी से दूसरी चोटी पर चढ़ा।
निष्टर्क्यं चिन्वीत पशुकामः ,, पशु कामना से विष्टर्क्य नामक ईंटो का चयन करना चाहिये।
स्पर्धन्ते वा उ देवहूये ऋ ७-८५-२—देव स्तुति के समय शत्रु हमारी स्पर्द्धा करते हैं।
प्रणीयः = ले जाने योग्य।
उन्नीयः = ऊपर ले जाने योग्य।
उच्छिष्यः = त्यागने योग्य।
मर्यः = मरने योग्य।
स्तर्या = फैलाने या ढकने योग्य।
ध्वर्यः = झुकने योग्य।
खन्यः, खान्यः = खोदने योग्य।
शुन्धध्वं दैव्याय कर्मणे-
देवयज्यायै-यजुः १-१३—देवकार्य अथवा देवयाग के लिए (इस जल से) शुद्ध हो गये।
आपृच्छ्य धरुणं-
वाज्यर्षति ऋ. ९-१०७-५—कर्म पूछने वाले तथा कर्म करने वाले यजमान को सोम अन्न देता हैं।
प्रतिषीव्यः = सीने योग्य।
ब्रह्मवाद्यम् = ब्रह्म का निरूपण या ब्रह्मकी व्याख्या।
भाव्यः = होने योग्य।
स्ताव्यः = स्तुति करने योग्य।
उपचाय्यपृडम् = संग्रह करने योग्य सोना।
उपचेयपृडम् = संग्रह करने योग्य अन्य वस्तु।
ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिम्-
वाज सं १-१७-५,१२-६ ३—ब्राह्मण और क्षत्री की रक्षा करने वाले तुमको।
उत नो गोषणिंधियम् ऋ ६-५३-१०—
येपथां पथि रक्षयः ऋ १०-१४-११—जो मार्गों की रक्षा कराने वाले हैं।
चतुरक्षौपथिरक्षी =सुन्दर अथवा चार आँख वाले मार्ग रक्षक।
हविर्मथीनाममि ऋ ७-१०४-२१—हविमथने वालों के सामने।
पृतनाषाट् = इन्द्र।

दित्यवाट् = दो वर्ष का बछड़ा।
कव्यवाहनः = श्राद्धान्न ले जाने वाला।
पुरीषवाहनः = मल ले जाने वाला।
पुरीष्यवाहनः = जल ले जाने वाला।
अग्निश्च हव्यवाहनः = हवि ले जाने वाले अग्नि।
हव्यवान्नग्निरजरः पिता नः ऋ ३-२-२—अजर तथा हवि ले जाने वाले अग्निदेव हमारे पिता हैं।
अब्जाः ऋ ७-३४-१६—जल में उत्पन्न होने वाले।
गोजाः ऋ ४-४०-५—स्वर्ग में उत्पन्न होने वाले देवता।
गोषा इन्द्रो नृषा असि ऋ ९-३-१०—गोदान करने वाले इन्द्र, आप मानव जाति के प्रेमी हैं।
इयं शुष्मेभिर्बिसखा-
इवारुजत् ऋ. ६-६१-२—यह ( सरस्वती नदी ) सुखाने वाले आत्मबल से कमल की जड़ खोदने वाले की तरह ( पर्वत की चोटियों को ) तोड़ती है।
आदधिक्राः शवसा-
पञ्चकृष्टीः ऋ ४-३८-१०—दधिक्रा ( अश्वाकार अग्निदेव ) अथवा दूध पाने वाले, आप अपने प्रभाव से पाँचों ( देव, असुर, राक्षस मनुष्य तथा पितर ) की सृष्टि करते हैं।
अग्रेगाः=अगुआ, प्रधान।
श्वेतवाः ऋ ८-२-६७—जिसको सफेद घोड़े ले जाते हैं।
उक्थशायजमानः ऋ २-३९-१—सामवेद के मन्त्रों का पढ़ने वाला, यजमान।
पुरोडाः ऋ ३-२८-२—एक प्रकार की बलि, चावलों से बनाई गई पूरी।
अवयाः ऋ १-१७३-१२—पुरोहित, पुजारी।
उपयट् = यजुर्वेद के ग्यारह छोटे मन्त्र भाग।
सुदामा ऋ. ६-२०-७—उदारता से दान करने वाला।
सुधीवा = सुन्दर बुद्धि वाला।
सुपीवा = सुन्दर पान करने वाला।

भूरिदावा ऋ. ११-२७-१७—उदार, दानी।

घृतपावा यजु. ६-१९—घी पीने वाला।

कीलालपाः ऋ. १०-९१-१४—अमृत पीने वाले।

यो मातृहा पितृहा=जो माता या पिता का वध करने वाला है।

अहं द्यावापृथिवी आततानः ३-२-१०५—मैंने आकाश और पृथिवी को विस्तृत किया।

चक्राणावृष्णिम् ऋ० ८-७-२३—शक्तिमान् बताते हुए (मरुद्गण)।

योनो अग्ने अररिवाँ
अघायुः ऋ. १-१४७-४—हे अग्निदेव, जो हमारे साथ पाप करने वाला हो अथवा शत्रु हो।

वीरुधः पारयिष्णवः=साफल्य प्रदान करने वाली लताएँ।

भविष्णुः=होने वाला।

अघायुः=पाप करने वाला।

जवेयामियूंनः ऋ. १-११२-२१—जिस पालन से तरुण (पुरुकुत्स) के वेगवान्।

ऊर्वोस्तु मेजवः ऋ. ५-८२-६—मेरी जाँघों में बल हो।

देवस्य सवितुः सवे „ सूर्यदेव की आज्ञा से।

वृष्टिंदिवः ऋ. ११-६-५—स्वर्ग से वर्षा की।

सुम्नमिष्ट्ये ऋ. ६-७०-४—यज्ञ के लिए सुख की प्रार्थना करते हैं।

पचात्पक्तीरुत ऋ. ४-२४-७—अथवा जो पुरोडाश तैयार करते हैं।

इयं ते नव्यसीमतिः ८-७४-७—हे अग्नि, यह तुम्हारी नवीन स्तुति।

विक्तिः=ज्ञान।

भूतिः=होना, ऐश्वर्य।

अग्न आयाहि वीतये ऋ. ६-१६-१०—हे अग्निदेव, हव्य-भक्षण के लिए आइये।

रातौ स्यामोयासः म-ऋ. ७-१-२०—हम दोनों (स्तोता और यजमान) तुम्हारे दान में रत रहें।

सूपसदनः तैत्ति. सं. ७-५-२०—अग्नि।

सुवेदनाम कृणोदगाम्-
ब्रह्मणे ऋ. १०-११२-८—स्तोता के लिए गोप्राप्ति सुलभ कर दी थी।

देवो देवेभिरागमत् ऋ. १-१-५—हे अग्निदेव, देवों के साथ आइये।

इदं तेभ्योऽकरं नमः ऋ. १०-८५-७—यह उनको नमस्कार है।

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः=अब यह यजमान अग्नि को होता चुनता है।

अद्य ममार=आज मरता है।

प्रण आयूंषि तारिषत् ऋ. ४-३९-६—हमारी आयु को बढ़ाएँ।

सुपेशसस्करतिजोविषद्धि आशा—
विषदर्शसानाय ऋ. १०-९९-७—(इन्द्र ने) शत्रु नाश के लिए हमको आयुध दिया अर्थात् प्रोत्साहित किया।

पताति विद्युत्=बिजली गिरती है।

प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना-
भवाति ऋ. ५-३७-५—वह सूर्य और अग्नि का प्रेमपात्र होता है।

करवाव, करवावः=हम दोनों करते हैं।

सुतेभिः सुप्रयसामादयैते ऋ. ४-४१-३—निचोड़े हुए सोम रस से सोमपान करने वाले प्रसन्न हों।

योयजातियजातइत् ऋ. ८-३१-१—जो बराबर यज्ञ करता है।

पशूनामीशै=पशुओं का स्वामी हूँ।

ग्रहा गृह्यान्तै=सोमपात्र ग्रहण करना चाहिए।

सुप्रयसामादयैते ऋ. ४-४१-३—सोमपान करने वाले प्रसन्न हों।

अहमेव पशूनामीशै=मैं ही पशुओं का (सांसारिक जीवों का) स्वामी हूँ।

नेज्जिह्मायन्तो नरकंपताम: = कपटाचरण करने से नरक में न पड़े।

गृभाय जिह्वया मधु = जिह्वा से मधुपान करो।

बधान्देव सवितः = हे सूर्य देव, बाँधो।

गृभ्णामि ते ऋ. १०–८५–३६ = तुम्हारे ( हाथ को ) पकड़वा हूँ।

मध्वाजभार = मधु को लिया।

आण्डा शुष्मस्य भेदति ऋ. ८–४०–११—शुष्म के अण्डों को (बच्चों को) तोड़ता ( मारता ) है।

जरसा मरते पतिः ऋ. १०–८६–११—वृद्धावस्था से पति मरता है।

इन्द्रो वस्तेन नेषतु = इन्द्र इस स्थान से ले जाएँ।

इन्द्रेण युजातेरुषम-
वृत्रम् ऋ. ७–४८–१३—इन्द्र की सहायता से हम शत्रु वृत्र का बध करें।

धुरि दक्षिणायाः ऋ. १–१६४–९—अभिलाषापूर्ति अथवा पृथ्वी का भार वहन करने में समर्थ।

चषालं ये अश्वयू-
पाय तक्षति ऋ. १–१२–६—जो यज्ञीय स्तम्भ के अग्रभाग को अश्व-स्तम्भ के लिए तैयार करते हैं।

ब्रह्मचारिणमिच्छते—ब्रह्मचारी को चाहता है।

प्रतीपमन्य ऊर्मिर्युध्यति = दूसरा जाँघों से विपक्ष से युद्ध करता है।

मधोस्तृप्ता इवासते = मधु से सन्तुष्ट हुए बैठे हैं।

नरः पुरुषः = व्यक्ति।

ऊधा स वीरैर्दशभिर्वियूयाः = वह दसवीरों से मिल सकता है, युद्ध कर सकता है।

श्वोऽग्नीनाधास्यमानेन = कल अग्नि स्थापित करने वाले के द्वारा।

तमसो गा अदुक्षत् ऋ. १–३३–१०—( तब इन्द्र ने चमकते हुए वज्र से ) मेघ द्वारा जल बरसाया अर्थात् अन्धकार स्वरूप काले मेघ से जल बरसाया।

मित्र वयंच सूरयः = हम और विद्वान् दोनों मित्र हैं।

अन्नादाय = अन्न भोजी के लिए।

मन्त्रं वोचेमाग्नये = अग्नि के लिए मन्त्र का उच्चारण करें।

पितरं च दृशेयं मातरंच ऋ. १–२४–१—मैं पिता और माता को देखूँ।

वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयः = उत्तम स्तुतियाँ तुम्हारी वृद्धि करें।

विशृण्विरे = उन्होंने सुना।

बभ्रिर्वज्रम् ऋ. ६–२३–४—वज्र धारण किया।

पपिः सोमम् = सोमपान किया।

ददिर्गाः = गोदान किया।

जग्मियुवा ऋ. ७–२०–२१ = युवक गया।

जघ्निर्वृत्रममित्रियम् ऋ. ९–६१–२०—अपने शत्रु वृत्र को मारा।

जज्ञिः = जमाया, उत्पन्न किया।

ततुरिः ऋ. ४–३९–२०—उछला अथवा तेरा।

जगुरिः ऋ. १०–१०८–१—निगला।

वक्षे रायः—धन कहने के लिए।

तावामेषे ऋ. ५–६६–३—प्रसिद्ध तुम दोनों के जाने के लिए।

शरदो जीवसेधाः ऋ. ३–३६–१०—जीने के लिए सौ वर्ष दो, अर्थात् हम सौ वर्ष जीवित रहें।

प्रेषे = भेजने के लिये।

गवामिव श्रियसे ऋ.५–५९–३—शोभा के लिए गायों की ( सींग की ) तरह।

जठरं पृणध्यै = उदर को ( सोमरस से ) भरने के लिए।

आहुवध्यै ऋ. ६–६०–१३—अनुकूल करने के लिए।

राधंसः सह मादयध्यै ,, हव्य द्वारा प्रसन्न करने के लिए।

वायवे पिबध्यै ऋ. ६–२७–५—वायु को पीने के लिए।

दातवाउ ऋ. १–४६–७—देने के लिए।

सूतवे ऋ. १०–१८४–३—प्रसव के लिए।

कर्तवे ऋ. १–८५–९—करने के लिए।

प्रयातुम्, प्रयै ऋ.१–१४२–६—जाने के लिए।

रोढुम्, रोहिष्यै = जमाने या उगाने के लिए।

अव्यथितुम्, अव्यथिष्यै = दुःखी न होने के लिए।

द्रष्टुम्, दृशे ऋ.१-५०-१—देखने के लिए।

विख्यातुम्, विख्ये = प्रसिद्ध होने के लिए।

विमाजं नाशकत् = विभाग न कर सके।

अपलुपं नाशक्त् = लोप करने में समर्थ न हो सके।

ईश्वरो विचरितोः = ईश्वर विचरण करने के लिए।

ईश्वरो विलिखः = ईश्वर चित्र बनाने के लिए।

न म्लेच्छितवै = म्लेच्छ भाषा (अप शब्द) न बोलने के लिए।

अवगाहे = अवगाहन करने के लिए।

दिदृक्षेण्यः ऋ. १-१०६-५ = देखने की इच्छा न करने के लिए।

भूयंस्पष्टकर्त्वम् ऋ. ३-१०-२ अनेक सोमयान करने के लिए।

रिपुणा नावचक्षे ऋ. ४-५८-५—शत्रु से न देखे जाने के लिए।

आसंस्थातोः सीदन्ति

गो. प. ब्रा. ११-२-१०—समाप्ति तक दुःखी होते हैं।

उदेतोः ,, ,, उदय होने तक।

अपकर्तोः ,, ,, अपकार करने तक।

प्रवदितोः ,, ,, बोलने तक।

प्रचरितोः ,, ,, चलने तक।

होतोः तै. ब्रा. १-४ ४-२—हवन करने तक।

आतमितोः तै. ब्रा० १-४-४-२—नष्ट होने तक।

काममाविजनितोः तै. सं. ११-५-१-५—उत्पन्न होने तक पूर्णतया।

संभवामः = उत्पन्न होने तक, उत्पन्न होते हैं।

पुरा क्रूरस्य विसृपो विरप्शिन यजु. १-२८—अनेक योद्धा वाले संग्राम होने के पहिले, हे विष्णु।

पुरा जत्रुभ्य आतृदः ऋ. ८-१-१२—पहिले गर्दन से रक्त-स्राव पर्यन्त।

इति तृतीयोऽध्यायः

## अथ चतुर्थोऽध्यायः

रात्री व्यस्त्यदायती ऋ. १०-१२७-१—आती हुई रात्रि।

वल्लीषु हित्वा १-३५-१—वल्ली नाम की ओषधियों में छोड़कर।

विम्वी ऋ. ५-३८-१—अनेक प्रकार से होने वाली।

प्रभ्वी ऋ. १-१८८-५—अच्छी तरह होने वाली।

रथीरभुन्मुद्गलानी ऋ. १०-१२०-२—मुद्गलानी रथ पर सवार हुई।

आसुरी वै दीर्घजिह्वी देवानां यज्ञवाट्

कद्रूश्च वै कमण्डलूः = भूरे रंग का कमण्डलु।

गुग्गुलूः—गूगल।

मधूः—शहद।

जतूः—लाख।

पतयालूः—गिरने या उड़ने वाली।

आविष्टयोवर्धते = दृश्यमान बढ़ता है।

वार्षिकम् = वर्षा ऋतु में होने वाला।

वासन्तिकम् = वसन्त ऋतु में होने वाला।

हैमन्तिकम् = हेमन्त में होने वाला।

शौनकिनः = शौनक से कहे गये वेदमन्त्र को पढ़ने वाले।

वाजसनेयिनः = वाजसनेय से कहे गये वेदमन्त्र को पढ़ने वाले।

शौनकीया शिक्षा = शौनक से कही गयी शिक्षा।

शरमयं बर्हिः = सरई का कुश।

यस्य पर्णमयी जुहूः = जिसका जुहू पत्तों का बना हुआ है।

मौञ्जं शिक्यम् = मूँज का बना हुआ सिकहर।

वार्ध्रीर ज्जुः—ताँत की बनी हुई रस्सी।

बैल्वो यूपः—बेल की लकड़ी का खम्भा।

सभेयो युवा सभा में बैठने योग्य (सभ्य) युवक।

मेध्याय च विद्युत्याय च यजु. १६-३८—मेघ में तथा बिजली में होने वाले (शिव को नमस्कार है)

मौञ्जवतः = मुञ्जवान् पर्वत पर होने वाला।

सोमस्येव मौञ्जवतस्य भक्षः = मुञ्जवान् पर्वत पर होने वाली सोमलता का खाने वाला।

तमुत्वा पाथ्यो वृषा ऋ. ६-१६-१५—आप सन्मार्गवर्ती अथवा हृदाकाशवर्ती सेचन कर्ता हैं।

चनोदधीत नाद्यो गिरो में ऋ. ११-३५-१—

पाथ्यः=आकाश मण्डलअथवा जल में होने वाला।

नाद्यः = नदी में होने वाला।

वैशन्तीभ्यः स्वाहा = सोमपात्र की अधिष्ठात्री देवियों के लिए यह आहुति।

हैमवतीभ्यः स्वाहा=हिमालय पर रहने वाली देवियों के लिए यह आहुति।

स्रोत्यः स्रोतस्यः ऋ. १०-१०४-८ –प्रवाह या नदी में होने वाला।

सगर्भ्यः=सगा या सहोदर भाई। छोटा भाई।

सयूथ्यः=अपने से अवस्था में छोटा मित्र।

यो नः सनुत्य उतवा जिघत्नु ऋ. ११ ३१-९—जो हमारा चोर, डाकू या घातक है।

आवः शमं वृषभं तुग्र्यासु, तुग्रियासु ऋ १-३३-१५— आप ने शान्त, गुणवान् तथा जल में मग्न व्यक्ति को बचाया है।

अग्र्यः, अग्रियः, अग्रीयः—आगे या पहले होने वाला।

समुद्रिया अप्सरसो मनीषिणम्

ऋ. ९-७८-३—अन्तरीक्ष की अप्सराएँ मेधावान् सोम की रक्षा करती हैं।

घानदतो अभ्रियस्येव घोषाः =

ऋ. १०-६८-१ = वार बार गरजते हुए बादलों के गर्जन की तरह।

वर्हिष्येषु निधिष प्रियेषु ऋ. १०-१५-५—कुश पर रखे गये प्रिय द्रव्यों पर।

दूत्यम्=दूत का भाग या कर्म।

याते अग्ने रक्षस्यातनूः—हे अग्निदेव, तुम्हारा शरीर राक्षसों को मारने वाला है।

रेवत्यम्=रेवती की प्रशंसा।

जगत्यम्=जगती की प्रशंसा।

हविष्यम्=घी की प्रशंसा।

असुर्यं देवेभिर्धायि विश्वम् म. स. १-८-३—

आसुरीमाया=असुरों की माया।

वर्चस्याः=वर्चस्वान् नामक मन्त्रों को पढ़कर रखी गई ईंटें।

ऋतव्याः=ऋतुमान् ,, ,, ,, ,, ,,

आश्विनीरुपदधाति तै. सं. ५-३-१—अश्विमान् मन्त्रों को पढ़कर ईंटों को रखता है।

मूर्धन्वतीरुपदधाति—मूर्धन्वती मन्त्रों को पढ़कर ईंटों को रखता है।

नमस्यो मासः=बादलों का महीना, श्रावण।

ओजस्या तनूः = शक्ति सम्पन्न शरीर।

माधवः, मधव्यः = मधु, शहद वाला।

ओजस्यमोजसीनं वा अहः = गर्म दिन।

वेशोभग्यः वेशोभगीनः—दृढ़ ऐश्वर्यशाली जन।

यशोभग्यः, यशोभगीनः – प्रख्यात जन।

गम्भीरेभिः पथिभिः पूर्व्याणेभिः = गम्भीर पूर्वजों द्वारा बनाये गये मार्गों से—(गम्भीर-उदार)

ये ते पन्थाः सवितः

पूर्व्यासः ऋ. १ ३५-२—हे सूर्य देव, जो यह तुम्हारा मार्ग पूर्वजों द्वारा बना गया है।

यस्वेदमप्यं हविः ऋ. १०-८६-१२—जिसका यह साकल्य जल से शुद्ध किया गया है।

सहस्रियासो अपांनोर्मयः ऋ. १-१६८-२—जल की लहरों की तरह हजारों।

सहस्रियः = हजारो रुपयों वाला।

सोम्यो ब्राह्मणः—सोमपान का अधिकारी ब्राह्मण।

सोम्यं मधु=सोम युक्त मधु।

मधव्यः=मधु (शहद) से बनाया गया।

वसव्यः—संग्रह, संचय।

छन्दस्यः=अक्षर-समूह।

नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाः=नक्षत्रों के लिए यह आहुति।

सवितानः सुवतु सर्वतातिम्

ऋ १०-३६-१४—सूर्यदेव, सर्वत्र हमारी श्रीवृद्धि करें।

प्रदक्षिणि द्देवतातिमुराणः

ऋ. ४-६-३—यज्ञ को पूर्ण करने वाले देवों की प्रदक्षिणा करता है।

शिवतातिः—कल्याण करने वाला।

यामिः शन्ताती भवथो ददाशुषे
ऋ. १–११२–२०—जिनसे हविष् देने वाले यजमान को सुख देते हो।
अथो अरिष्टतातये ऋ. १०–६९–८—और कल्याण करने वाले के लिए।

शिवतातिः=अच्छी हालत, उत्तम दशा।
शान्तातिः=शान्ति की दशा।
अरिष्टतातिः=कल्याण को दशा।

इति चतुर्थोऽध्यायः

## अथ पञ्चमोऽध्यायः

सप्तसाष्टानि असृजत्—उन्होंने उनचास राज्य बनाया।
पञ्चदशिनोऽर्धमासाः=आधे महीने में पन्द्रह दिन होते हैं।
त्रिंशिनो मासाः=महीनों में तीस दिन होते हैं।
विंशिनोऽङ्गिरसः=आङ्गि रस गोत्र वाले बीस हैं।
त्वावतः पुरूवसो ऋ. ६–२१–१०—तुम्हारी तरह पुरूवस।
नत्वावाँ अन्यः ,, ,, ,, तुम्हारी तरह दूसरा नहीं है।
यज्ञं विप्रस्य मावतः ऋ. १–१४२ २—मुझ-सरीखे मेधावी के यज्ञ में जाकर।
सादन्यं विदथ्यम् ऋ. १-९१–२०—गृहकार्य में निपुण तथा दर्शपूर्ण मासादि यज्ञ करने वाले।
इद्वत्सरीयः=पाँच वर्ष या दो वर्ष में होने वाला।
संवत्सरीणः, संवत्सरीयः=सम्वत्सर में होने वाला।
परिवत्सरीणः, परिवत्सरीयः=वर्ष भर में होने या रहने वाला।
भागऋत्वियः ऋ. १–१३५–३—यह तुम्हारा अवसर प्राप्त भाग है।
यदुद्वतो निवतः ऋ, १०–१४२–४—जब ऊपर-नीचे जाते हो।
पञ्चथम्, पञ्चमम्=पाँचवाँ।
अपत्यं परिपन्थिनम् ऋ. १–४२–३—उस तरह के शत्रु को दूर करो।
मात्वा परि परिणो विदन् यजु ४–३४–शत्रु तुमको न जानें।
मंहिष्ठमुभयाविनम्=दानी तथा लौकिक तथा पारलौकिक धन से युक्त आप को।

शुनमष्ट्राव्यचरत् ऋ. १०–१०२–८—कोड़ा लेकर सुख से चलते हैं।
रथीरभूत् ऋ. १०–१०२–२—रथवाली हुई अर्थात् रथ पर चढ़ी।
सुमङ्गलीरियं वधूः ऋ. १०–८५-३३—यह वधू शोभन कल्याण वाली है।
मघवानमीमहे ऋ. १०–१६७–२—इन्द्र को बुलाते हैं।
इदाहिव उपस्तुतिम् ऋ. ८–२७–११—इस समय आपकी स्तुति करता हूँ।
तर्हि=तब।
कथाग्रामं न पृच्छसि ऋ. १०–१४६–१—किस कारण गाँव नहीं पूछते हो।
कथादाशेम ऋ.१–७७–१—किस तरह की हविष् आप को दूँ।
पश्च हि सः=वह पीछे है।
नोत पश्चा ऋ. २–२७–११—पीछे नहीं।
आसुतिं करिष्ठः ऋ.७–९७–७—अन्न या धन देने वाले हैं।
दोहीयसी धेनुः=अधिक दूध देने वाली गाय।
तं प्रत्नथा पूर्वथा
विश्वथे मथा ऋ. ५–४४–१—प्राचीन काल के लोगों ने, पूर्वजों ने, सभी ने उनकी (इन्द्र की) पूजा की।
प्रतं नय प्रतरम् ऋ. १०–४५–९—उस श्रेष्ठ व्यक्ति को ले जाओ।
यो न दुरेवो वृकतिः ४ ४१–४—जो हमारा दुर्दमनीहिंसक है।

ज्येष्ठतातिं बर्हिषदम् ऋ. ५-४४-१—देवों में सर्वश्रेष्ठ तथा कुशासन पर बैठे हुए।

ब्रह्मसामं भवति = ब्राह्मणाच्छंसी द्वारा पढ़ा जाने वाला सामवेद होता है।

देवच्छन्दसानि = एक वैदिक छन्द।

बहुप्रजा निर्ऋतिमा-
विवेश ऋ. १-१६४-३२—अनेक बार जन्म लेकर अथवा अनेक सन्तान उत्पन्न कर दुःखमय पृथ्वी को पाया।

उभयोदतः प्रतिगृह्णाति = दोनों ओर दाँत वालों को स्वीकार करता है।

हतमाता = जिसकी माँ मारी गयी है।

इति पञ्चमोऽध्यायः

## अथ षष्ठोऽध्यायः

यो जागार ऋ. १०-४४-१४—जो जागा।

दाति प्रियाणि ऋ. ६-८-३—प्रिय वस्तुओं को देता है।

प्रमरा तूतुजानः ऋ. १-६१-१२—शीघ्रता से इसको मारो।

सूर्ये मामहानम् ऋ ३-३२-८—सूर्य का बार-बार पूजन करने वाले हमको।

दाधार यः पृथिवीम् ऋ. ३-३२-८—जिसने पृथ्वी को धारण किया।

स तूताव ऋ.१-२४-२—वह ( यजमान ) बढ़ता है।

इन्द्रमाहुव ऊतये ऋ १-३-४—रक्षा करने के लिए इन्द्र को बुलाता हूँ।

तृचं साम = तीन ऋचा वाला साम।

त्र्यृचानि = तीन ऋचाएँ।

रेवान् = धनवान्।

रयिमान् पुष्टिवर्धनः = धनवान् तथा पुष्ट करने वाला।

न्य न्यं चिक्युर्न निचिक्यु-
रन्यम् ऋ. १-१६४-३८—मनुष्य एक को ( देहको ) विशेषतया जानते हैं और दूसरे को ( आत्मा को ) नहीं जानते।

अग्निं ज्योतिर्निचाय्य = अग्नि की ज्योति को देखकर।

इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृ-
धेथाम् ऋ. ६-६९-८—इन्द्र और विष्णु, तुमने जिस वस्तु को चाहा।

अर्कमानृचुः ऋ. १-१९-४—जल की पूजा की अर्थात् वर्षा की।

वसून्यानृहुः ,, धन की पूजा की अर्थात् धन दिया।

चिच्युषे—गये।

यस्तित्याज ऋ. १०-७१-६—जिसने त्याग दिया।

श्रातास्त इन्द्रसोमाः—इन्द्र के लिए सोम पकाया गया।

श्रिता नो ग्रहाः=हमारेसोमपात्र तपा लिए (पका लिए), गये।

( न ) आशिरंदुहे ऋ ३-५३-१४—सोम में मिलाने योग्य दूध नहीं देती।

मध्यत आशीर्तः ऋ. ८-२-९—बीच में मिलाया गया—

चिखाद = दुःख दिया।

शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतः ऋ. ७-६६-.५—संसार के मस्तक के भी मस्तक अर्थात् संसार में सर्व श्रेष्ठ।

वाराही = सूअर का विकार या अवयव।

मानुषीरीळतेविशः ऋ. ५-८-३—मानवगण तुम्हारी स्तुति करता है।

शमीं च शम्यं च ऋ. ८-६९-१२—शमी की लकड़ी को।

सूर्मि सुर्म्यं सुषिरानिव ऋ. ८-६९-१२—जिस प्रकार छिद्रवाली तथा जल पूर्ण लोहे की प्रतिमा टपकती है अथवा जिस प्रकार सूर्य की किरणें सूर्य की ओर जाती हैं उसी तरह।

इज्यमानः, यज्यमानः = यज्ञ करता हुआ।

या ते गात्राणाम् ऋ. १-१६२-१९—तुम्हारे शरीर के जितने अवयव हैं।

ताता पिण्डानाम् ऋ. „ पिण्ड के उन भागों को (अग्नि में हवन करता हूँ)।

अपां त्वेमन् वा. सं. १-३ ५३—(अपस्यनामक ईंट) में तुमको वायु में रखता हूँ।

अपां त्वोद्मन् „ „ ओपधि में „।

भव्यः = भयावह।

प्रवव्या = गर्भ धारण करने योग्य (m.w.)।

प्रवेयम् = „ „

भेयम् = भयावह।

हृदय्या = जल।

उपप्रयन्तो अध्वरम् ऋ. १-७४-१—सदा यज्ञ करने वाले।

सुजाते अश्वसूनृते ऋ. ५-७९-१—सुन्दर जन्म वाली, तुम अश्व प्राप्ति के लिए।

एतास एतेर्चन्ति ऋ. १-१६५-१—ये लोग आकर पूजा करते हैं।

तेऽवदन् ऋ. १०-१०९-१—उन्होंने कहा।

वसुमिर्नो अव्यात् ऋ. ४-४-१५—धन से हमारी रक्षा करें अर्थात् धन दें।

मित्रमहो अवद्यात् = मित्रों के पूजनीय हे अग्नि देव हमारी रचा कीजिये।

मा शिवासो अवक्रमुः ऋ. ७-३२-२७ अशुभ शत्रु (हमपर) आक्रमण न करें।

ते नो अव्रत—उन्होंने हमको चुना।

शतधारो अयं मणिः—सौ धार वाली यह मणि।

ते नो अवन्तु—वे हमारी रक्षा करें।

कुशिकासो अवस्यवः ऋ. ३-४२-९—कुशिकवंश में उत्पन्न तथा तुमसे रक्षित—

तेनोऽवन्तु रथतूः ऋ. १०-७७-८—वे वेगगामी रथ से आकर हमारी रक्षा करें—

सोऽयमागात् ऋ. १-८८-२—वह यह आ गया।

तेरुणेभिः „ वे लाल रंग वाले (घोड़ों से)।

उरो अन्तरिक्षम्

यजु. वाज. ४-७—हे विस्तीर्ण अन्तरिक्ष—

आपो अस्मान् मातरः यजु. ४-२—जगत् का निर्माता जल हमको (शुद्ध करे)।

जुषाणो अग्निराज्यस्य यजु. ५-३५—प्रसन्न होकर सोम घृत पान करें—

वृष्णो अंशुभ्याम् यजु. ७-१—हे सोम, परसने वाली (टपकने वाली) तुम्हारी किरणों से।

वर्षिष्ठे अधिनाके

यजु. वा. सं. १-१२—(सूर्य) श्रेष्ठ स्वर्ग में ऊपर (स्थित हैं)।

अम्बे, अम्बाले,

अम्बिके वा. सं. २३-१८—व्यक्ति विशेष के सम्बोधन।

प्राणो अङ्गे अङ्गे

अदीध्यत् यजु. ६-२०—(पशु के) प्रत्येक अंग में प्राण का सञ्चार किया।

अयं सो अग्निः यजु. १३-४७—यह वह अग्नि है।

अयं सो अध्वरः „ यह वह यज्ञ है।

अथोग्रे रुद्रे =

सोऽयमग्निमतः =

त्री रुद्रेभ्यो अवपथाः = रुद्रों के लिये तीन बार आहुति देनी चाहिए।

यद्रुद्रेभ्योऽवपथाः=रुद्रों के लिए जो आहुति देनी चाहिए।

अभ्र आँ अपः ऋ. ५-४८-१—मेघ के ऊपर जल को—

गभीर आँ उग्रपुत्रे ऋ. ८-६७-११—हे अदिति, अच्छी तरह उत्तेजित पुत्रवाले जल में—

ईषा अक्षो हिरण्ययः ऋ. ८-५-२९—हे अश्विनी कुमार! आपके रथ का बम तथा धुरा दोनों सुवर्ण मय हैं।

ज्या इयम् ऋ. ६-७२-३—यह धनुष की रस्सी।

पूषाअविष्टु ऋ १०-२६-१—सूर्य भगवान् रक्षा करें।

एषस्य भानुः ऋ. १०-८७-४—यह वही सूर्य—

हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ऋ. ९-६६-२६—हरित धारावाले तथा मरुद्गण की सहायतावाले—

सुश्चन्द्रस्य—सुन्दर चन्द्रमावाले का।

आमागन्तां पितरा मातरा च=माता और पिता आयें।

मातरा पितरा नूचिदिष्टौ—माता और पिता अभीष्ट हैं।

सगर्भ्यः=सगा छोटा भाई।

विश्वाची च घृताची च-अप्सराओं का नाम।

देवद्रीचीं नयत देवयन्तः ऋ. ३-६-१ — देवपूजा की सामग्री स्रुवा लाओ।

कद्रीची ऋ. १-१६४-१७—जिसका जाना अनिश्चित है।

इन्द्रत्वास्मिन्त्सधमादे ऋ. ८-२-३—हे इन्द्र! इस यज्ञ में मैं तुमको बुलाता हूँ।

सोमः सधस्थम्—साथ में रहनेवाले को सोम—

कवपथः, कापथः, कुपथः=बुरा मार्ग।

मरुद्भिरुग्रः पृतनासुसाह्ला ऋ. ७-५६-२३—युद्ध में मरुतों की सहायता से ओजस्वी व्यक्ति विजयी होता है।

अष्टापदी=आठ पैरवाली।

अश्वावतीं सोमावतीम् ऋ. १०-९७-७—अश्वावती तथा सोमावती नामवाली औषधियों को।

इन्द्रियावान्मदन्तमः यजु. ६-२७—इन्द्रियों वाला तथा हर्षोत्पादक—

विश्वकर्मणाविश्वदेव्यावता ऋ. १०-१७०-४— समस्त व्यापार के कारणभूत, समस्त देवों को लाभ पहुँचानेवाले। तथा यज्ञों के प्रवर्तक हे सूर्य!

यदोषधीभ्य अदधात्योषधीसु—जो ओषधियों से निकालकर ओषधियों में रखता है।

आ तू न इन्द्र ऋ. ४-३२-१—हे इन्द्र! तुम हमारे पास आओ।

नू मर्तः—क्या मूर्त्तधारी।

उत वा घा स्यालात्—अथवा साले से।

मक्षूगोमन्तमीमहे=मैं शीघ्र ही गायवाले को बुलाता हूँ।

भरता जातवेदसम् ऋ. १०-१७६-२—अग्निदेवको सन्तुष्ट करो।

शृणोत ग्रावाणः—पत्थर सुनें।

कुमनाः—बुरे हृदय वाला।

अत्रा ते भद्रा=यहाँ तुम्हारा कल्याण है।

यत्रा नश्चक्रा=जहाँ हमारे पहिये हैं।

उरुष्याणः—हमारी रक्षा करो।

अभीषु णः सखीनाम् ऋ. ४-३१-३ - मित्रों को देनेवाले हो।

विद्मा हि। चक्रा जरसम् ऋ. ३-३२-६—तुमको जानते हैं। बुड्ढा कर दिया।

एवा हि ते ऋ. १-२-२—तुम्हारा ही।

धातृणाम्, धातॄणाम् ऋ. १०-१२८-७—सृष्टि कर्ताओं के भी सृष्टिकर्ता—

ऋभुक्षाणम्, ऋभुक्षणम्—इन्द्र को।

तक्षा—बढ़ई।

यो नः पिता जनिता ऋ. १०-८२-३—जो हमारे पालक और उत्पादक हैं।

शमिता—शान्त करनेवाला।

द्वियूय—मिलाकर अथवा अलग कर।

विप्लुय—तितर वितर कर।

आवः—चुना।

जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय ऋ. १०-७३-१—(हे इन्द्र) शत्रु संहार के लिए प्रचण्ड बल वाले तुम उत्पन्न हुए।

मा वः क्षेत्रे परबीजान्यवाप्सुः=तुम्हारे खेत (भार्या) में दूसरों के बीज (वीर्य) न बोये जायँ (पड़ें)।

प्रथमं दध्र आपः ऋ. १०-८२-५—जल ने पहले धारण किया।

वनेषु चित्रं विभ्वं-विभुवं वा ऋ.४-६-१-जंगलों में (दावाग्नि रूप से) दर्शनीय एवं समस्त जगत् के ईश्वर—

सुध्यो हव्यमग्ने सुधियो वा—सुधी अग्नि का हव्य।

तन्वं पुषेम तनुवं वा ऋ. १०-१२८-१—शरीर को पुष्ट करें।

त्र्यम्बकं त्रियम्बकं वा—तीन नेत्र वाले (शंकर) की—

वितत्निरे कवयः—कवियों ने फैलाया।

शकुना इव पप्तिम ऋ. ९-१०७-२०—चिड़ियों की तरह तुम्हारे पास जाते हैं।

सग्धिश्च मे - मुझको सहभोज प्राप्त हो।

बब्धां ते हरी धाना. नि. ५-१२—तुम्हारे ये दोनों घोड़े भुने हुए धान खाएँ।

श्रुधी हवम् ऋ. १-२-१—आवाहन ( बुलाने को ) को सुनो।

श्रुधीगिरः ऋ. ८-८४-३—वाक्यों को सुनो।

रायस्पूर्धि ऋ. १-३६-१२—धन को पूर्ण करो या दो।

उरुणस्कृधि ऋ. ८-७५-११—हमको महान् बनाओ।

अपावृधि—हमको चुनो।

रारन्धि = अधिक रमण करते हो।

अस्मै प्रयन्धि। युयोधि

जातवेदः—हे अग्निदेव, शत्रुओं को अलग करो।

त्मना देवेषु ऋ. ७-७-१—स्वयं देवों में।

त्वं रजिष्ठमनुनेषि-

ऋजिष्ठं वा ऋ. १-९१-१—तुम बिलकुल सीधे मार्ग पर ले जाते हो।

ऋत्व्यम्—ऋतु में होने वाला—

वास्त्व्यम्, वास्त्वं च—घर होने वाला, बचा हुआ।

माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ऋ. १-९०-६—हमारे लिए ओषधियाँ माधुर्य पूर्ण ( मीठी ) हों।

हिरण्ययेन सविता-

रथेन ऋ. १-३५-२—सर्य देव सुवर्णमय रथ से—

इति षष्ठोध्यायः

# अथ सप्तमोऽध्यायः

धेनवो दुहे—गाय दूध देती हैं।

घृतं दुहते—घी निकालती है।

अदश्रमस्य—इसका देखा—

अग्निर्देवेभिः ऋ. १-१-४—देवों के साथ अग्नि—

वार्त्रघ्नमितरम्—इन्द्र सम्बन्धी अन्य पदार्थ—

इतरत्काष्ठम्—दूसरी लकड़ी।

यजमानं परिधापयित्वा—यजमान को पहिनाकर।

ऋजवः सन्तु पन्थाः

ऋ. १०-८५-२३—हमारे लिए मार्ग सीधे या सरल हों।

परमे व्योमन्—श्रेष्ठ आकाश में—

धीती—पीने से या प्यास से—

मती—बुद्धि से विचार से—

सुष्टुती—सुन्दर स्तुति से—

या सुरथा रथीतमा दिविस्पृशा

अश्विना ऋ. १-२२-२—जो दोनों सुन्दर रथ वाले रथियों में श्रेष्ठ तथा स्वर्ग में रहने वाले अश्विनी कुमार हैं।

नताद् ब्राह्मणम्—नम्र या नमनशील ब्राह्मण को।

या देव विद्म ता त्वा—जिसको जानते हैं उसी को।

न युष्मे वाजबन्धवः ८-६७-१२—तुम लोगों के युद्ध सहायक नहीं हैं।

अस्मे इन्द्रा बृहस्पती ऋ. ४-४९-४—हे इन्द्र और बृहस्पति, तुम दोनों हम लोगों को—

उरुया—जाँघ से।

घृष्णुया—निपुण अथवा राशि से—

नाभा पृथिव्याः ऋ. १-१४३-४—वेदी की नाभि में अर्थात् उत्तर वेदी में—

ता अनुष्ठ्योच्यावतात् ऐ. ब्रा. ११-६-१५—

साधुया—साधु से—

वसन्ता यजेत—वसन्त ऋतु में यज्ञ करना चाहिये—

उर्विया—जाँघ से।

दार्विया—लकड़ी से।

सुक्षेत्रिया—सुन्दर खेत वाले ( किसान ) से—

दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम्

ऋ. ७-१०३-२—मशक की तरह सूखे तालाब में रहने वाले को—

म बाहवा सिसृतम् ऋ. ७-६२-५—अपनी बाहें फैलाओ।

स्वप्नया—सोने से—

स नः सिन्धुमिव नावया ऋ. १–९७–८—नाव से नदी की तरह तुम हमको-

बधीं वृत्रम् ऋ. १–१६५–८—मैंने वृत्र को मारा—

देवा अदुह्र — देवों ने दूध निकाला—

दक्षिणतः शये=दक्षिण की ओर सोता है।

उत्सं दुहन्ति=नदी या मेघ को दुहता है अर्थात् जल निकालता है।

अन्तरेवोष्माणं वारयध्वात् ऐ. ब्रा. ११–६–१४—मुंह बन्द किये हुए पशु के श्वास को नष्ट कर देना चाहिए।

यजध्वैनं प्रियमेधाः ऋ. ८–२–३—प्रियमेधा ऋषि, इन्द्र के लिए यज्ञ करो।

गात्रमस्यानूनं कृणुतात् ऐ. ब्रा. ११–६–१५, १६—इसके अवयवों को पूर्णतया काटो।

सूर्यं चक्षुर्गमयतात्=सूर्य को आँख से देखो।

शृणोत ग्रावाणः=पत्थर, (सोमरस कुचलनेवाले पत्थर) सुनें।

सुनोतन पचत ब्रह्मवाहसे ऋ. ५–३४–१—जिसकी स्तुति की जाती है उसके लिए सोमरस निकालो और पाक तैयार करो।

दधातन द्रविणं चित्रमस्मै ऋ.१० ३६–१३—हमको विविध प्रकार का धन दो।

मरुतस्तज्जुजुष्टन ऋ. ७–५९–९—हे मरुद्गण, रक्षा द्वारा हमारी सहायता करो।

विश्वेदेवासो मरुतो यतिष्ठन=जितनी संख्यावाले विश्वदेव और मरुत् हैं।

नमो भरन्त एमसि ऋ.१–१–७—नमस्कार करते हुए तुम्हारे पास आते हैं।

त्वमस्माकं तव स्मसि ऋ. ८–९२–३२—तुम हमारे हो तथा हम तुम्हारे हैं।

दिवं सुपर्णो गत्वाय ऋ. ८–१००–८—गरुड़ स्वर्ग जाकर।

इष्ट्वीनं देवान्=देवों के लिए यज्ञ करके।

स्विन्नःस्नात्वी मलादिव=पसीने से भीगा मनुष्य स्नान करके जिस प्रकार मल रहित हो जाता है।

पीत्वी सोमस्य वावृधे=सोम पान करके बढ़गया।

देवासः=देवगण।

ब्राह्मणासः = ब्राह्मणगण।

श्रीणामुदारो धरुणो रयीणाम् ऋ. १०–४५–५—अग्निदेव शोभा तथा सम्पत्ति के उदार आधार हैं।

सूत ग्रामणीनाम्=सूत तथा गाँव के मुखियों का—

विद्माहि त्वा गोपतिं शूर गोनाम् ऋ. १०–४६–१—हे सूर इन्द्र, हम तुम्हें अनेक गायों का स्वामी जानते हैं।

गवां शता पृक्षयामेषु ऋ. १–१२२–७—अन्न का नियमन करनेवाले यज्ञ में सैकड़ों गायें—

विराजं गोपतिं गवाम्=अनेक गायों का स्वामी और विशिष्ट राजा—

इन्द्रो दधीचो अस्थभिः ऋ, १–८४–१३—इन्द्र ने दधीच की हड्डियों से—

अक्षीभ्याम् ऋ. १०–१६३–१—आँखों से—

ते नासिकाभ्याम्=तुम्हारी नाक से—

कीदृङ्ङिन्द्रः ऋ. १०–१०–३—इन्द्र कैसे हैं—

स्ववान् ऋ. १ ३५–१०—धनवान्।

स्वतवान् ऋ. ४–२–६—धन ( अधिक धन ) वाला।

ततुरिः ऋ. १ १४५–३—पार करनेवाला।

जगुरिः पराचैः=

अह्रुतमसि हविर्धानम् वाज. सं. १–९—(हे अग्नि) तुम हविष के पूर्ण भण्डार हो।

अपरिह्वृता सनुयाम वाजम् ऋ. १–१००–१९—सरल गति से अन्न ग्रहण करें—

मा नः सोमो ह्वरितः=सोम हमारे लिए कुटिलता न करे।

युवं शचीभिर्ग्रसितामसुञ्चतम् ऋ. १०–३९–१३—तुम दोनों ने दया करके निकाली गयी का उद्धार किया।

विष्कभिते अजरे ऋ. ६–७०–:—धारण की गयी तथा नित्य—

येन स्वः स्तभितम् ऋ. १०–१२१–५—जिन्होंने स्वर्ग को रोक रखा है।

सत्येनोत्तभिता भूमिः = सत्य से रोकी गई पृथ्वी।

चत्ता इतश्चत्तामुतः ऋ. १०–१५५–२—इस लोक तथा परलोक से दूर करने की प्रार्थना करता हूँ।

त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्तम् ऋ. १-११७-२४— ( हे अश्विनी कुमार तुमने तीन भागों में विभक्त श्याव ऋषि को जीवित किया ।

उत्तानाया हृदयं यद्विकस्तम्—उत्तान सोती हुई को गति दी थी ।

एकस्त्वष्टुरश्वस्याविशस्ता ऋ. १-१६२-१९—तेज पुंज घोड़े को नष्ट करनेवाला केवल काल ही है ।

ग्रावग्राभ उत शंस्ता ऋ. १-१६२-५—पत्थर से सोमरस निकालनेवाला तथा नियमानुसार यज्ञ करानेवाला ।

प्रशास्ता पोता ऋ. १-९४-६—उत्तम शिक्षक तथा यज्ञ शुद्ध करानेवाला ।

तरुतारं तरूतारं रथानाम् ऋ. १०-१७८-१—रथों को जीतनेवाला ।

वरुतारं वरूतारम् ,, वरण करनेवाला, अलग या दूर करनेवाला ।

वरूत्रीभिः सुशरणो नो अस्तु ऋ. ७-३४-२२—देवों की स्त्रियों के साथ हमको शरण दो ।

विद्मा तमुत्सं यत आबभूथ ऋ. ३-२१-२—जिससे नदी या मेघ हुए उसको जानता हूँ ।

येनान्तरिक्षमुर्वाततन्थ—जिसके द्वारा तुमने अन्तरिक्ष को व्याप्त किया ।

जगृभ्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तम् ऋ. १०-४७-१—हे इन्द्र, हम तुम्हारे दाहिने हाथ को पकड़ते हैं ।

त्वं ज्योतिषा वितमो ववर्थ—तुमने प्रकाश से अन्धकार को दूर किया ।

हिरण्यवर्णाः शुचयःपावकाः—सोने के रंग की शुद्ध आग—

दधद्रत्नानि दाशुषे ऋ. १-३५-८—हविष देने वाले यजमान को रत्न देने वाले—

सोमो ददद् गन्धर्वाय ऋ. १०-८५-४१—गन्धर्व को सोम देने वाले—

यदग्निरग्नये ददात्—जिसने अग्नि के लिए अग्नि दिया—

(न) प्रमिणन्ति व्रतानि ऋ. १०-१०-५—कर्मों को लुप्त (नहीं) करता ।

सर्वमा इदम् – यह सब कुछ था ।

अधा शतक्रत्वोशतक्रतवो—

वा यूयम् ऋ. १०-९७-२—तुम लोग सौ यज्ञ करने वाले हो ।

पश्वे नृभ्यो यथा गवे,

पशवे वा ऋ. १-४३-२—पशुओं, मनुष्यों और गायों के लिए—

अनुषग्जुजोषत् ऋ. १-१३-५—हे मनीषी ऋत्विक्, परस्पर मिले हुए कुशों को वेदी के ऊपर क्रम से फैलाओ ।

अवीवृधत् ऋ. ८-८-८—बढ़ाया ।

मित्रयुः मित्र चाहने वाला ।

पुत्रीयन्तः सुदानवः ऋ. ७-९६-४—पुत्र की कामना से उत्तम दान करने वाले ।

जनीयन्तोन्वग्रवः = जन चाहने वाले—

दुष्टीयति—दुष्ट चाहता है ।

द्रविणीयति—धन चाहता है ।

वृषीयति—वैल चाहता है ।

रिष्टीयति—कल्याण चाहता है ।

अश्वायन्तो मघवन् ऋ. ७-३२-२३—हे इन्द्र, हम घोड़ा चाहने वाले—

मात्वा वृका अघायवः ऋ. १-१२०-७—तुम्हारे लिए भेड़िया तथा पापी (हिंसक) न हों ।

देवायन्तो यजमानाः = देवों को चाहने वाले यममान लोग—

सुम्नायन्तो हवामहे—भक्ति चाहने वाले हम आवाहन करते हैं—

देवाञ्जिगाति सुम्नयुः ऋ. ३-२७-१ — भक्त देवों की स्तुति करता है—

सपूर्वया निविदा

कव्यतायोः ऋ. १-९६-२ — अग्नि ने मनुष्यों की प्रथम स्तुति मन्त्र से—

अध्वर्युवा मधुपाणिम् ऋ. १०-४१-३—हाथ में मधु लिए हुए अध्वर्यु के पास—

मदयन्तं पृतन्युम् ऋ. १०-७४-५—शत्रुओं का दमन करने वाले—

हित्वा शरीरं हीत्वा वा—शरीर को त्याग कर।

गर्भं माता सुधितं-

वक्षणासु ऋ. १०-२७-१६—माता ने जल में (अग्नि में) गर्भाधान किया—

वसुधितमग्नौ—धन देने वाले अग्नि में—

नेमधिता न पौंस्या ऋ. १०-९३-१२—संग्राम में सेना (सामर्थ्य हीन होने पर) रहठ की तरह व्यर्थ हैं—

उत श्वेतं वसुधितिं

निरेके ऋ. ७ ९०-३ - और भी श्वेत रंग वाले तथा दरिद्रावस्था में धन देने वाले (वायुको)।

धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र

हस्ते ऋ. ६ १९-९—हे इन्द्र, दाहिने हाथ में वज्रधारण करो—

सुरेता रेतो धिषीय=प्रचुर जल वाले मैं जल प्राप्त करूं।

माद्भिः शरद्भिः—महीनों या वर्षों में—

स्ववद्भिः ऋ. १-३५-१०—धनवानों द्वारा—

स्वतवद्भिः ,, अधिक धनवानों द्वारा—

समुषद्भिरजायथाः ऋ. १-६-३—जलाने वाली किरणों के साथ उदय हो रहे हैं।

करीकृष्यते यज्ञकुणपः—यज्ञ का मृत शरीर खींचा जाता है।

अलर्षि युध्म खजकृत्पुरन्दरः

ऋ. ८-१-७—युद्ध कुशल तथा युद्ध करनेवाले इन्द्र आओ—

अलर्ति दक्ष उत ऋ. ८-४८-८—शत्रु जाता है।

अन्वा पनीफणत्—पीछे-पीछे आया।

कनिक्रदज्जनुषम् ऋ. २-४-४—जन्म के लिए बहुत चिल्लाया—

दविध्वतो रश्मयः सूर्यस्य

ऋ. ४-१३-४ —अत्यधिक काँपती हुई सूर्य की किरणें—

दविद्युतद्दीद्यच्छोशुचानः—अत्यन्त चमकती हुई—

सहोर्जातरिंत्रतः ऋ. ४-४०-३—दूसरों का उद्धार करने वाले के पास अन्न के लिए एकत्र होकर जाते हैं।

वक्ष्यन्ती वेदागनी गन्ति

कर्णम् ऋ ६-७५-३—प्रिय वचन बोलती हुई कान के पास जाती है।

गृष्टिः ससूव स्थविरम् ऋ ३-१८-१०—सद्यःप्रसूता गाय की तरह वृद्ध को पैदा किया।

पूर्णां विवष्टि = पूर्णाको कान्तिमान् करता है।

इति सप्तमोऽध्यायः

## अथाष्टमोऽध्यायः

प्रप्रायमग्निः ऋ. ७-८-४—जब यह अग्नि—

संसमिद्युवसे

(वृषन्) ऋ. १०-१९१-१—कामनाओं के देने वाले तथा प्रभु हो—

उपोपमे परामृश ऋ. १ १२६-७—मेरे समीप आकर स्पर्श करो अर्थात् मुझको भोग के योग्य समझो—

किंनोदुदु हर्षसे ऋ. ४-२१-९—हमको (धन देने के लिए) प्रसन्न क्यों नहीं होते—

हरिवते हर्यश्वाय ऋ ३-५२-७—हरि नामक घोड़े वाले तथा हरे रंग के घोड़े वाले के लिए—

गीर्वान् - विद्वान्—

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः ऋ. १० ७१-७—आँख वाले तथा कान वाले—

अस्थन्वन्तं यदनस्था ऋ. १-१६४-४—अस्थि (शरीर) रहित प्रकृति या माया शरीर धारी को—

सुपथिन्तरः = उत्तम मार्ग।

भूरिदावत्तरो जनः ऋ. ८-५-३९—अधिकतर दान परायण जन—

रथीतरः ऋ. १-११-१—उत्तम रथ वाला।

रथीतमं रथीनाम् ऋ. १-११-१—रथियों में श्रेष्ठ—

नसत्तमञ्जसा = झट से समीप गये हुए—

निषत्तमस्यचरतः ऋ. १-१४६-१—हविष् भक्षण करते हुए इस अग्नि के मध्य में बैठे हुए—

अनुत्तम् = गीला न किया गया।

प्रतूर्तम् = अधिक शीघ्रता किया गया।

सूर्तम्—गया हुआ—

गूर्तम्—स्वीकार किया गया।

अम्न एव, अम्नरेव—थोड़ा ही।

ऊधएव, ऊधरेव—मेघ ही अथवा थन ही।

अवएव, अवरेव—रक्षा ही।

भुव इति, भुवरिति—अन्तरिक्ष।

ओ३म् अग्नि-
मीलेपुरोहितम् ऋ. १-१-१—यज्ञ सम्पन्न करने वाले अग्नि की स्तुति करता हूँ।

ओमित्येकाक्षरम् छान्दो.उप. १-१-१—ॐ

ये ३यजामहे = जो यज्ञ या हवन करते हैं।

ये जामहे = यह पञ्चाक्षर है।

अपांरेतांसि जिन्वतोम् ऋ. ८-४४-१६—जल के वीर्य स्वरूप प्राणियों को प्रसन्न करते हैं—

जिह्वामग्ने चकृषे हव्य-
वाहा३म् ऋ. १०-८-६—हे अग्निदेव, तुम जीभ को हव्य-वाहिका बनाते हो—

अग्नयेवुब्र३हि मै. सं. १-४-२—

अग्नये गोमयानि प्रे३ष्य—अग्नि के लिए कण्डा भेजकर, देकर।

अस्तुश्रौ३षट्—ईश्वर सुत—

सोमस्याग्ने वीही३वौषट्—हे अग्निदेव सोम के लिए आप।

अग्निमा३वह = अग्नि लाओ।

ओ३श्रा३वय = मन्त्र सुनाने के लिए अनुज्ञा दीजिये।

अकार्षीः कटम्—क्या तुमने चटाई बनायी?

अकार्षं हि३—हाँ, बनाई।

कटं करिष्यति हि—चटाई बनायेगा।

कटं करोति ननु—क्या चटाई बनाता है?

अद्यामावास्येत्यात्थ३—आज अमावास्या है ऐसा कहते हो—

दस्यो३दस्यो३घातयिष्यामि त्वाम्—चोर, चोर, तुमको मरवा डालूँगा।

चौर३चौर३—चोर, चोर।

अङ्गकूज३इदानीं ज्ञास्यसि जाल्म—दुष्ट बको, बको, अब मालूम हो जायगा।

अङ्ग देवदत्त मिथ्यावदसि—देवदत्त, झूठ बोलते हो।

अङ्ग पच—पकाओ।

अङ्गाधीष्व भक्तं तव दास्यामि—भाई, पढ़ो, तुम्हे भात दूँगा।

होतव्यं दीक्षितस्य गृहा३इ—यज्ञ की दीक्षा लिये हुए व्यक्ति के घर में यज्ञ करना चाहिये।

न होतव्य३मिति—नहीं करना चाहिये।

अहिर्नु ३रज्जुर्नु—क्या यह साँप है या रस्सी।

गां मे देहि भोः—मुझको गाय दो।

हन्त ते ददामि३—हाँ, तुम्हें दूँगा।

नित्यः शब्दो भवितुमर्हति३=शब्द को नित्य होना चाहिये।

दत्त किमात्थ३=देवदत्त! क्या कहते हो।

अग्निभूत३इ=हे अग्निभूति।

पट३उ=हे पटु।

शोभनः खल्वसि माणवक३=हे माणवक! तुम सुन्दर हो।

अग्निचिद्भाया३त्=वह अग्नि की तरह चमके।

अग्निचिदिव भाया३त्=वह अग्नि की तरह चमके।

कथंचिदाहुः=कठिनता से कहा।

अग्निर्माणवको भाया३त्=माणवक अग्नि की तरह चमके।

उपरिस्विदासी३त् ऋ. १०-१२९-५—ऊपर फैला, विस्तृत हुआ।

अधः स्विदासी३त् ,, ,, —नीचे फैला, विस्तृत हुआ।

अभिरूपक३अभिरूपक रिक्तं तेऽभिरूप्यम्=अभिरूपक, तुम्हारी सुन्दरता नष्ट हो गयी।

अभिरूपक३ अभिरूपक शोभनोसि=हे अभिरूपक ! तुम मनोहर हो।

अविनीतक३ अविनीतक इदानीं ज्ञास्यसि जाल्म=हे उद्दण्ड, नीच ! अब तुमको जान पड़ेगा।

शाक्तीक३ शाक्तीक रिक्ता ते शक्तिः=हे शक्तिशाली, तुम्हारी शक्ति नष्ट हो गयी।

स्वयं ह रथेन याति३ उपाध्यायं पदातिं गमयति=स्वयं रथ से जाता है और अध्यापक को पैदल ले जाता है।

पुत्रांश्च लप्सीष्ट३ धनं च तात=बेटा, तुमको धन तथा पुत्र दोनों मिलें।

कटं कुरु३ ग्रामं गच्छ=चटाई बनाओ तब गाँव जाओ।

दीर्घायुरसि=दीर्घायु हो।

अग्नीदग्नीन्विहर=

अगमः३ पूर्वा३न् ग्रामा३न्ः=पूर्व के गाँवों में गये थे ?

अगम३म् पूर्वा३न् ग्रामा३न्=हाँ, पूर्व के गाँवों में गया था।

ऐ३तिकायन=हे ऐतिकायन ( इतिक वंशज )।

औ३पगव=हे औपगव ( उपगुवंशज )।

अगमः३पूर्वा३न् ग्रामा३न्=पूर्व के गाँवों में गये थे।

अग्निभूत३=हे अग्निभूत।

(भद्रं) करोषि पटा३इ=हे पटु, अच्छा करते हो।

होतव्यं दीक्षितस्य गृहा३इ=दीक्षित के घर यज्ञ करना चाहिये या नहीं।

न होतव्य३ंमिति=यज्ञ नहीं करना चाहिए।

आयुष्मानेधि अग्निभूता३इ=हे अग्निभूति, आयुष्मान् होओ।

स्तोमैर्विधेमाग्नया३इ तै. सं. १-३-१४-७

विष्णुभूते घातयिष्यामि त्वाम्=हे विष्णुभूति तुमको मरवा डालूँगा।

भद्रं करोषि गौरिति='गौ' यह ठीक कहते हो।

शोभने माले=दो सुन्दर मालाएँ।

अग्ना३पत्नीवः=हे पत्नीवाले अग्निदेव।

अग्ना३इयाशा

पटा३इवाशा

अग्ना३विन्द्रम्

पटा३उदकम्

अग्ना३इ वरुणौ

अग्ना३इ इन्द्रः

इन्द्र मरुत्व इह पाहि सोमम् ऋ. ३-५१-७—हे मरुद्गण सहित इन्द्र ! यहाँ सोमपान करो।

हरिवो मेदिनं त्वा ऋ. १-३-६—हे सुन्दर अश्ववाले ! रुद्र शक्तिशाली तुमको....

मीढ्वस्तोकाय तनयाय ऋ. २-३३-१ —हे सेचन समर्थ हमारे पुत्र तथा पौत्र को....

यस्त्वायन्तं वसुना प्रातरित्वः ऋ. १-१२५-२—जो (राजा) प्रातःकाल गुरुकुल से आये हुए को धनादि से....

पशूँस्तांश्चक्रे ऋ. १०-९०-८—उन पशुओं को उत्पन्न किया।

देवाँ अच्छा सुमती ऋ० ४-१-२—सद्बुद्धि द्वारा स्तोताओं को अपनी ओर...

महाँ इन्द्रो य ओजसा ऋ. ८-६-१—जिस महान् इन्द्र ने अपनी शक्ति से...

महाँ इन्द्रः=महान् इन्द्र ने ...

भुवस्तस्य स्वतवाँ पायुरग्ने ऋ. ४-३-६—हे अग्नि ! उस प्रकार मनुष्य के धन की वृद्धि करनेवाले तथा रक्षा करनेवाले होते हो।

अग्ने त्रातर्ऋतस्कविः ऋ. ८-६०-५—हे अग्नि ! तुम रक्षक सच्चे तथा प्रज्ञावान् हो।

गिरिर्न विश्वतस्पृथुः ऋ. ८-९८-४—पर्वत की तरह खूब बड़े—

वसुनः पूर्व्यः पति ऋ. १०-४८-१—धन का मुख्य स्वामी।

अग्निः प्रविद्वान्-अथर्व ५-२६-१—श्रेष्ठ विद्वान् अग्नि।

पुरुषः पुरुषः=प्रत्येक मनुष्य।

प्रदिवो अपस्कः=उत्तम स्वर्ग तथा जल का निर्माण किया।

यथा नो वस्य सस्करत् ऋ. ८-९१-४—जिससे ( इन्द्र ) हमको प्रचुर धन वाला करें।

सुपेशसस्करति ऋ. २-३५-१—सुन्दर रूपवाला अथवा आभूषण वाला कीजिये।

उरुणस्कृधि=हमको स्थानवाला या महान् बनाओ।

सोमं न चारु मघवत्सुनस्कृतम् ऋ. १०-३९-२—( हे अश्विनी कुमार आप दोनों) हमको कल्याणकारी सोम के समान सम्पन्न बनावें।

यथा नो अदितिः करत् ऋ. १-४३-२—जैसा पृथ्वी ने हमको किया या बनाया।

दिवस्परि प्रथमं जज्ञे ऋ. १०-४७-१—सर्व प्रथम आकाश में जन्म ग्रहण किया।

दिवस्पृथिव्याः पर्योजः ऋ. ६-४-७-२७—स्वर्ग तथा पृथ्वी के सार से।

सूर्यो नो दिवस्पातु ऋ. १०-१५८-१—सूर्य स्वर्गीय या आकाशीय उपद्रव से हमारी रक्षा करें।

वाचस्पतिं विश्वकर्माणम्-१०-८१-७-विद्वान् विश्वकर्मा को।

दिवस्पुत्राय सूर्याय ऋ. १०-३७-१—स्वर्ग के पुत्र सूर्य के लिये—

दिवस्पृष्ठं भन्दमानः ऋ. ३-२-१२—स्तुति किये जाने पर अन्तरिक्ष के ऊपर के प्रदेश को—

तमसस्पारमस्य ऋ. १-९२-६—इस रात्रि के अन्धकार के अन्त को—

परिवीत इळस्पदे ऋ. १-१२८-२—पृथ्वी तल पर घिरे हुए

दिवस्पयो दिधिषाणाः ऋ. १०-११४-१—आकाश में जल की सृष्टि चाहनेवाले—

रायस्पोषं यजमानेषु ऋ. १०-१७-९—यज्ञकर्ता के लिए प्रचुर अन्न धन—

इळायास्पुत्रः, इळायाः पुत्रः=पृथ्वी का पुत्र।

इळायास्पदे, इळायाः पदे=पृथ्वी के पैर में।

निष्टप्तं रक्षो निष्टप्ता अरातयः=राक्षसों को कष्ट दिया और शत्रुओं को नष्ट किया।

निस्तपति=वार वार तपाता या लाल करता है।

त्रिभिष्ट्वं देव सवितः=हे सूर्य देव! तुम तीनों से।

तेभिष्ट्वा आमिष्टे अप्स्वग्ने सधिष्टव ऋ. ८-४३-९—हे अग्निदेव! जल में तुम्हारे प्रवेश का स्थान है।

अग्निष्टद्विश्वम् ऋ. १०-२-४—अग्नि समस्त कर्मों को—

द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः=(विश्वकर्मा ने उस वनवृक्ष से) स्वर्ग तथा पृथ्वी का निर्माण किया।

तदग्निस्तदर्यमा=अग्निदेव तथा अर्यमा उस अन्न को हमें दें।

यन्म आत्मनो निन्दाभूदग्निस्तत्पुनराहार्जातवेदा विचर्षणिः-तै. सं० ३-२-५-४—यज्ञ की त्रुटियों के ज्ञाता तथा उन्हें दूर करने में निपुण अग्नि मुझ ऋत्विज से यज्ञ में हुई त्रुटि को दूर करें।

अर्चिभिष्ट्वम् ऋ. ६-४८-८—तुम अपने तेज से—

अग्निष्टे अग्रम् ऋ. १-११२-८१—तुम्हारे सामने आग—

अर्चिभिष्टतक्षुः=

नृभिष्टुतस्य, नृभिः स्तुतस्य=मनुष्यों द्वारा स्तुति किये गये-

गोष्टोमम्, गोस्तोमम्=एक दिन में सम्पन्न किया जानेवाला यज्ञ विशेष।

यदिन्द्राग्नी दिविष्ठः ऋ. १ १०८-२—हे इन्द्र और अग्नि यदि तुम दोनों स्वर्ग में रहते हो—

युवं हि स्थः स्वर्पती ऋ ९-१९-२—तुम दोनों स्वर्ग के स्वामी हो।

ऊर्ध्व ऊषु णः ऋ. १-३६-१३–हमारी रक्षा के लिए उन्नत रहो।

अभीषुणः ऋ. ४-३१-३ अच्छी तरह हमारे सम्मुख रहो।

गोषा इन्द्रो नृषा असि ऋ. ६-२-१०—गाय तथा पुत्र देनेवाले हो।

गोसनिः-अथर्व ३ (१११) २०-१०—सब प्रकार के धन को देनेवाली वाणी।

पृतनाषाहम्=युद्ध विजयी को।

ऋताषाहम्, ऋतीषाहम्=आक्रमण का सामना करनेवाले को। शत्रु को जीतनेवाले को।

न्यषीदत्, न्यसीदत्=बैठ गया।

व्यषीदत्, व्यसीदत्=दुःखी हुआ।

अभ्यष्टौत्, अभ्यस्तौत्=स्तुति की।

पितृयाणम्=श० प० १४-९१-३=पितृलोक के मार्ग के साधन—

नृमणाः-शु० य० १२-१८-२०—यजमानों को शुद्ध हृदय देनेवाले (प्रजापति)—

अग्ने रक्षाणः ऋ. ७-१५-१३—हे अग्नि! हमारी रक्षा कीजिये।

शिक्षा णो अस्मिन् ऋ. ७-३२-२६—हमको यह सिखाओ।

उरुणस्कृधि ऋ.८-७५-११–हमको स्थान वाला या महान् बनाओ।

अभीषु णः ऋ. ४-३१-३—हमारे रक्षक।

मोषु णः ऋ. ३-५५-२—(देवगण) हमको अधिक कष्ट न दें।

इत्यष्टमोऽध्यायः

इति वैदिकप्रकरणम्

अथ स्वरप्रकरणम्

# अथ साधारणस्वराः

गोपायतं नः ऋ. ६-७४-४—हमारी रक्षा कीजिये।

यज्ञं यज्ञमभिवृधे गृणीतः ३ ६-१०—प्रत्येक यज्ञ में समृद्धि के लिये (अग्निकी)।

देवीं वाचम् ऋ. ८-१००-११—देवों की स्तुति को—

देवंद्रीचीं नयत देवयन्तः ऋ. ३-६-१—देव पूजा को सामग्री स्रुवा लाओ।

दाधीचः पा० ३-१-३—दधीचि सम्बन्धी अथवा दधीचिका।

माधूचः ,, मधूचि सम्बन्धी अथवा मधूचिका।

अग्न इन्द्र वरुण मित्रदेवाः ऋ. ५-४६-२—हे अग्नि, इन्द्र, वरुण, मित्र तथा देव गण—

इमं मे गङ्गे यमुने

सरस्वति ऋ. १०-७५-५—हे गङ्गा, यमुना तथा सरस्वती (तुम लोग मेरे इस—)

शुतुद्रिस्तोमम् ऋ. १०-७५-५—हे शुतुद्रि (सतलज) इस।

अग्ने तेजस्विन्=हे तेजस्वी अग्निदेव।

अग्ने त्रातः=हे अग्निदेव, रक्षा कीजिये।

अघ्न्ये देवि सरस्वति=हे अघ्नि तथा देवी सरस्वती—

देवीः षळुर्वीरुरु नः-

कृणोत ऋ. १०-१२८-५—ये छःदेवियाँ (द्यौः, पृथिवी, दिन, रात्रि, जल तथा ओषधि) हमारी रक्षा करें।

देवाः शरण्याः=देवता शरण देने वाले हैं।

द्रवत्पाणी शुभस्पती ऋ. १-३-१—फैलाये हुए हाथ वाले तथा शुभ कर्मों के रक्षक—

यत्ते दिवो दुहितर्मर्त-

भोजनम् ऋ. ७-८१-५—हे द्युलोक की पुत्री (उषा) तुम्हारे पास मनुष्यों के लिए जो भोज्य अन्न है—

परशुना वृश्चन्=कुल्हाड़ी से काटते हुए—

अयमग्ने जरिता ऋ. १०-१४२-१—हे अग्नि। यह जरिता (पक्षिविशेष)।

एतेनाग्ने ब्रह्मणा ऋ. १-३१-१८—हे अग्नि! इस मन्त्र से—

आते पितर्मरुताम् ऋ. २-३३-१—हे मरुतों के जनक रुद्र,

प्रति त्वा दुहितर्दिवः ऋ. ७-८१-३—हे द्युलोक की पुत्री (उषा) तुमको—

उच्चैरधीयान्=उच्च स्वर से पढ़ता हुआ—

उपाग्न्यधीयान्=अग्नि के समीप पढ़ता हुआ।

अभ्यभिहि=बिलकुल सामने—

खलप्व्याशा=खलिहान साफ करने वाले (महतर, फर्राश) की आशा।

वोश्वाः ६१-२=तुम्हारे घोड़े—

क्वावरं मरुतः ऋ. १-१६८-८—हे मरुद्गण! (उस जल का आदि तथा अन्त कहाँ हैं।

वीदं ज्योतिर्हृदये=विशेषकर हृदय में यह ज्योति—

अस्य श्लोको दिवीयते=इनका यश स्वर्ग तथा पृथ्वी पर व्याप्त है।

तेऽवदन्=उन्होंने कहा।

सोयमागात्=वह यह गया।

अग्निमीळे ऋ. १-१-१—अग्नि की स्तुति करता हूँ।

तमीशानास ऋ. १-१२९-२—अच्छी तरह उसकी स्तुति करने में समर्थ—

प्र य आरुः ऋ. ३-७-१—जो (अग्नि की किरणें) वेग से ऊपर उठती हैं—

वोऽश्वाः क्वा३भीषवः ऋ. ५-६१-२—हे मरुद्ग! आपके घोड़े कहाँ के हैं और उनके बाँधने की रस्सी कहाँ की बनी है।

आगच्छ भो माणवक=हे बालक, आओ।

अग्निर्मूर्धा दिवः-

ककुत् ऋ. ८-१४-१६—यह अग्नि (सूर्य) आकाश में सर्वोपरि विराजमान होने से मस्तक तथा ककुद के समान हैं।

ममाग्नेवर्चो विहवेस्तु ऋ. १०-१२८-१—हे अग्नि ! युद्ध में मेरे बल की वृद्धि हो ।

सुब्रह्मण्योऽम् = हे इन्द्र ( सुब्रह्मण्यः इन्द्रः ओम् सम्बोधनार्थं इति सायणः )

गार्ग्यो यजते = गर्ग का पुत्र यज्ञ करता है ।

दाक्षेः पिता यजते = दाक्षिका पिता यज्ञ करता है ।

गार्ग्यस्य पिता यजते = गार्ग्य का पिता यज्ञ करता है ।

देवदत्तस्य पिता यजते = देवदत्त का पिता यज्ञ करता है ।

देवा ब्रह्माण आगच्छत = हे देवता तथा ब्राह्मण लोग ! आइये ।

इमंमे गङ्गे यमुने-

सरस्वति ऋ. १०-७५-५—हे गंगा, यमुना तथा सरस्वती इस मेरे—

सरस्वति शुतुद्रे = हे सरस्वती तथा शुतुद्रि—

व्यचक्षयत् स्वः = स्वर्ग कहा ।

दिवे दिवे ऋ १-१-३—प्रति दिन ।

इति साधारणस्वराः

## अथधातुस्वराः

गोपायतं नः = हमारी रक्षा कीजिये ।

असि सत्यः ऋ. १-८७-४—सत्कर्मों के योग्य हो ।

स्वपन्ति = सोते हैं ।

श्वसन्ति = सांस लेते हैं ।

हिंसन्ति = मारते हैं ।

स्वपानि = मैं सोऊँ ।

हिनसानि = मैं मारूँ ।

ये ददति प्रिया वसु ऋ. ७-३२-१५-जो प्रिय अथवा अभीष्ट धन देते हैं ।

दधाना इन्द्र ऋ. १-४-५—इन्द्र की सेवा करते हुए—

दधासि रत्नं द्रविणं-

च दाशुषे ऋ. १-९४-१४—हवि देने वाले यजमान को सुन्दर कर्मफल तथा धन देते हो ।

योऽग्निहोत्रं जुहोति = जो अग्निहोत्र करता है ।

ममत्तु नः परिज्मा ऋ. १-१२२-३—चारों ओर भ्रमण करने वाले ( सूर्य ) हमको प्रसन्न करें ।

माता यद्वीरं जजनत् -

दधनत् ऋ. १०-७३-१—माता ने तुझ वीर को उत्पन्न किया ।

जागर्षि त्वम् = तुम जागते हो ।

चिकीर्षकः = करने की इच्छा वाला ।

लोलूयं लोलूयम् = काट काट कर ।

लूयते केदारः स्वयमेव = खेत स्वयं काटा जाता है ।

मा हि चीकरताम् = नहीं किया ।

इतिधातुस्वराः

## अथ प्रातिपदिकस्वराः

कर्षः = खेती, खींचना ।

कर्षः = ,, ,,

पाकः = पकाना ।

वैश्वानरः कुशिकेभि-

युगेयुगे ऋ. ३-२६-३—अग्नि होताओं द्वारा प्रति दिन ।

गावः सोमस्य प्रथमस्य-

भक्षः ऋ. ६-२८-५—गायें श्रेष्ठ सोमरस का भक्षण प्रदान करें ।

उदुत्तमं वरुणं ऋ. १–२४–१५—हे वरुण उत्तम (सिर पर बँधे हुए······)

शश्वत्तममीळते ऋ. १०–७०–३—सनातन (अग्नि की) स्तुति करता है।

चतुरः कल्पयन्तः ऋ. १०–११४–६—चार प्रकार के स्थापित करते हैं।

चतस्रः पश्य = चारों ओर देखो।

अध्वर्युभिः = पाँचों अध्वर्युओं के साथ।

पञ्चभिः ऋ. ३–७–७—पाँचों।

नवभिर्वाजैर्नवती च ऋ. १०–३९–१०—निन्यानवे घोड़ों के साथ।

सप्तभ्यो जायमानः ऋ. ८–९६–१६—(हे इन्द्र) उत्पन्न होते ही तुम सातों के लिए (कृष्ण, वृत्र, नमुचि, शम्बरादि) अथवा अङ्गिरायायणियों के लिए (शत्रु हो गये)।

आदशभिर्विव-
स्वतः ऋ ८–७२–८—परिचय करने वाले यजमान के दसों उँगलियों से प्रार्थनः किये जाने पर—

आषड्भिर्हूयमानः ऋ. २–१८–४—बुलाये जाने पर छहों के साथ—

विश्वेदेवैस्त्रिभिः ऋ. ८–३५–३—तुम तीन विश्वेदेवों के साथ।

नवानां नवतीनाम् ऋ. १–१९१–१३—निन्यानवे (नदियों) का।

सर्वे नन्दन्ति यशसा ऋ. १०–७१–१०—जो सब स्तुति (नहीं) करते हैं।

यस्मिन्विश्वानि-
पौंस्या ऋ. १–५–९—जिस (सोम) में सब बल रहता है—

सुते दधिष्वनश्च नः ऋ. १–३–६—सोमयाग में हमारे अन्न (हवि) को स्वीकार करो।

अयं पन्थाः ऋ. ४–१८–१—यह मार्ग (जन्म लेने का द्वार)।

ज्योतिष्मतः पथो रक्ष ऋ. १०–५३–६—ज्योतिर्मय मार्गों की रक्षा करो।

हर्षसे दातवाउ ऋ. ८–२१–९—देने के लिए प्रसन्न होते हो।

स्वेक्षये शुचिव्रत ऋ. १०–११८–१—अपने स्थान में प्रदीप्त होओ।

जयोऽश्वः = जिसके द्वारा जीता जाय, वह घोड़ा।

वाजेभिर्वाजिनीवती १. १–३–१०—हविरूप अन्न के कारण अन्नवाली (सरस्वती)।

इन्द्रं वाणोः ऋ. १–७–१—यजुर्वेद के मन्त्रों से इन्द्र (की स्तुति करते हैं)।

चञ्चा पा० अ० ५–३–९६—

अग्निर्माणवकः = अग्नि के समान तेजस्वी बालक।

चैत्रः पा०अ० ६-२-१४८—

दत्तः = किसी व्यक्ति का नाम।

चिन्तितः = किसी का नाम।

त्रातः = रक्षा किया गया।

कृतम् = किया गया।

हृतम् = हरा गया।

अतसं न शुष्कम् ऋ. ४–४–४—जैसे सूखी लकड़ी को (जलाते हो) उसी तरह।

कृषन्नित्फालआशितम् ऋ. १०–११७–७—हल जोत कर अन्न उत्पन्न करता है।

रिक्तः = रीता, खाली, शून्य।

जुष्टो दमूनाः ऋ. ५–४–५—पर्याप्त दान देने वाला।

अर्पितषष्टिर्नचला-
चलास ऋ. १–१६४–४८—(इसमें तीन सौ) साठ चलने वाली आरें (दिन) लगी हैं।

महिषस्तव नो मम = भैंसा तुम्हारा है मेरा नहीं।

तुभ्यं हिन्वानः ऋ. २–३६–१—तुम्हारे लिए लाया गया (यह सोम······)

मह्यं वातः-
पवताम् ऋ. १०–१२८–२—वायु मुझको शुद्ध करे।

युञ्जन्त्यस्य काम्या ऋ. १-६-२३—इसके ( इन्द्र के ) ( रथ में ) अभीष्ट ( घोड़ों ) को जोतते हैं।

ईड्यो नूतनैरुत ऋ १-१-२—हमसे स्तुति किये जाते हैं।

आजुह्वात इड्यो-

वन्धश्च ऋ. १०-११०-३ - देवों को बुलाने वाले, स्तुत्य तथा वन्दनीय हो।

श्रेष्ठं नो धेहि-

वार्थम् ऋ. १०-२४-२—हमको उत्तम धन दो।

उक्थमिन्द्राय-

शंस्यम् ऋ. १-१०-५—इन्द्र के लिए हमको शस्त्र ( ऋग्वेद के मन्त्र ) ढूँढ़ना चाहिए।

इन्धानो अग्निम् ऋ. २-२५-१—अग्नि को प्रज्वलित करता हुआ।

उदुम्बरावती = उदुम्बर देश में बहने वाली नदी।

शरावती = घग्घर नदी।

वेत्रवती = वेतवा नदी।

अहीवती = साँपों वाली किसी नदी का नाम।

मुनीवती = मुनियों वाली किसी नदी का नाम।

इतिप्रातिपदिकस्वराः

## अथ फिट्सूत्राणि

उच्चैः = उच्चस्वर से।

पाटला = पाडर।

फलेरुहाः = पाडर, ताड़ का वृक्ष।

सुरूपा = शालपर्णी।

पाकला = कुष्ठ, कूट।

अपालङ्क, व्याधिघात, आरग्वध = अमलतास।

अम्बा = माता।

सागरः = समुद्र।

गेहम् = घर।

शाला = घर।

गुदम् = मल द्वार।

अन्तर्धा = छिपना।

छाया = छाया।

माया = माया।

जाया = पत्नी।

बाह्यम् = वाहरी।

इभ्या = हथिनी, लता विशेष।

क्षत्रिया = क्षत्राणी।

नखम् = नाखून।

उखा = वर्तन, पतीली।

सुखम् = सुख।

दुःखम् = दुख।

शिखा = चोटी।

मुखम् = मुँह।

वंहिष्ठैरश्वैः सुवृता रथेन ऋ. ५-६२-९—बहुत से घोड़े वाले रथ से।

परिवत्सरः = एक पूरावर्ष।

सप्ततिः = सत्तर।

अशीतिः = अस्सी।

चत्वारिंशत् = चालीस।

अभ्यूर्ण्वाना-

प्रभृथस्यायोः ऋ ५-४१-१९—तेज अथवा जल के दान से यजमान को आच्छादित करती हुई।

दक्षिणो बाहुः—दाहिना हाथ।

प्रत्यङ्मुखस्यासीनस्य-

वामपाणिर्दक्षिणो भवति = पश्चिम मुँह बैठे हुए व्यक्ति का बाँया हाथ दक्षिण की ओर हो जाता है।

दक्षिणः ऋ. १०-७-७—अनुकूल।

कृष्णानां व्रीहीणाम् = काले धानों का।
कृष्णो नोनाव वृषभः ऋ. १-७९-२—काले रंग के मेघ ने प्रचण्ड गर्जन किया।
कृष्णोरात्र्यै = रात्रि के लिए काला मृग—
अयं वां कृष्णो-
अश्विना ऋ. ८-४५-२४ —जिस प्रकार गौर मृग सरोवर में जल पीता है—
पृष्ठम्—पीठ, पत्र या पीछे।
इन्द्र आशाभ्यस्परि ऋ. २-४१-१२—इन्द्र चारों ओर से।
कृत्तिका नक्षत्रम्—कृत्तिका नक्षत्र।
घृतं मिमिक्षे ऋ. २-३ ११ घी छिड़कता है।
ज्येष्ठ आह चमसा ऋ ४-३३-५—ज्येष्ठ ऋभु ने कहा चमस ( सोमरस का पात्र, चावल की पूड़ी ) को।
कनिष्ठ आह चतुरः ,, छोटे ने कहा-चार करेंगे।
ज्येष्ठः श्रेष्ठः = बड़ा।
कनिष्ठोल्पकः = छोटा।
बलिः = नैवेद्य।
तनुः = शरीर।
वने न वायः ऋ. १०-२९-१—वन में जिस प्रकार पक्षी।
कुशाः = कुश।
काशाः = काश।
माषाः = उड़द।
तिलाः = तिल।
गोधूमाः = गेंहूँ।
पञ्च = पाँच।
चत्वारः = चार।
कर्णाभ्यां चिबुकादधि ऋ. १०-१६३-१ —दोनों कानों तथा ठुड्डी से नीचे।
ओष्ठाविव मधु ऋ. २-२९-६—दोनों ओठों को मधु की तरह—
विश्वो विहायाः ऋ १-२८-६—यह महान् विश्व ( परमेश्वर ) सबका गन्तव्य स्थान है।

काकः = कौआ।
वृकः = भेड़िया।
शुकेषु मे ऋ. १-५०-१२—मेरे ( रंगको ) तोतों में—
क्षीरंसर्पिर्मधूदकम् ऋ. ९-६३ ३२—दूध, घी तथा मादक सोमरस को।
कन्दुकः = गेंद।
वरुणं वो रिशादसम् ऋ. ५-६४-१—तुम दोनों में शत्रु नाशक।
स्वसारं त्वा कृणवै ऋ. १०-१०८-९—तुमको मैं बहिन समझता हूँ।
पीवानं मेषम् ऋ. १०-२७-१७—मोटे भेंड़े को।
एतः = चित्र विचित्र रंग।
हरिणः = हलका पीला रंग।
शितिः = सफेद या नीला रंग।
पृश्निः = चितकवरा रंग।
हरित् = हलका पीला रंग।
मुनिः = मुनि।
तस्य नाक्षः ऋ. १-१६४-१३—उसका धुरा नहीं थकता।
अक्षैर्मा दीव्यः ऋ. १०-३४-१३ पासों से मत खेलो अर्थात् जुआ मत खेलो।
अर्धो ग्रामस्य = करीब करीब आधा गाँव।
अर्धं पिप्पल्याः = पीपर का आधा अर्थात् आधा पीपर।
पीतद्रुः सरलः = देवदारु।
ग्रामः = गाँव।
सोमः = सोम लता।
यामः = पहर।
चञ्चा=पुआल से बने हुए मनुष्य की तरह का मनुष्य।
तालः=ताड़ की तरह।
मेरुः=मेरु की तरह।
व्याघ्रः=बाघ की तरह।
सिंहः=सिंह की तरह।
महिषः=भैंसे की तरह।
आङ्गः=अङ्ग देश के राजा की तरह।
अङ्गाः=अङ्ग जनपद की तरह।
कल्याणः=भलाई।
कोलाहलः=शोरगुल।

मल्लिका=बेला।

श्येनी=माँदा बाज।

हरिणी=मृगी।

तरक्षुः=लकड़बग्घा।

कुक्कुटः=मुर्गा।

तित्तिरिः=तीतर।

खञ्जरीटः=खिड़रिच।

वसन्तः=वसन्त ऋतु।

कृकलासः=गिरगिट।

श्यामाकाः=साँवा।

माषाः=उड़द।

केकयः=केकय जनपद।

पललम्=मांस।

शल्लम्=साहीं का काँटा।

एकलः=अकेला।

मल्लः=पहलवान।

कृषिः=खेती।

ललाटम्=माथा।

कपोलः=गाल।

रसना=जीभ।

वदनम्=मुख।

मलयः=मलय पर्वत।

मकरः=मगर।

शीतन्धा=

शतपुष्पा=सोया, सौंफ।

पादपः=वृक्ष।

आतपः=धूप।

अनूपम्=दलदलवाला प्रदेश, जलमय प्रदेश।

नीपम्=निम्न स्थल मे स्थित प्रदेश, पर्वत की तराई, कदम्ब।

अयुतम्=दस हजार।

धमनिः=वातापि तथा इल्वल की माता का नाम।

विपणिः=बाजार।

मकरः=मगर।

वरूढः=अन्त्यज, शूद्र।

सुगन्धितेजनाः=हरिद्वारी कुश।

राजादनफलम्=पियार, चिरउँजी का फल, खिरनी!

कुलायः=घोंसला।

सनाथा सभा=जिस सभा में राजा या अध्यक्ष उपस्थित हों।

हलीषा, लाङ्गलीषा=हरिस।

महिषी=पट्टरानी, महारानी।

आषाढा उपदधाति=आषाढा नामक ईंटों को रखता है।

शकटिः, शकटी=बैलगाड़ी।

गोष्ठजो ब्राह्मणः=गोशाला में उत्पन्न हुआ ब्राह्मण।

गोष्ठजः पशुः=गोशाला में उत्पन्न पशु!

पारावतः=कबूतर।

धूम्रजानुः=भूरे रङ्ग के घुटनों वाला।

मुञ्जकेशः=मूज की तरह कड़े बालवाला।

कालवालः=एक प्रकार की काली मिट्टी।

स्थालीपाकः=पतीली में पकाना।

कपिकेशः=भूरे बाल वाला।

हरिकेशः=भूरे बाल वाला।

न्यङ्ङुत्तानः=नीचे की ओर मुँह करके लेटा हुआ।

व्यचक्षयत्स्वः=सूर्य को दिखाया।

तिल्यम्=तिल पैदा होनेवाला खेत।

ततोबिल्वउदतिष्ठत्=उससे बेल निकाला।

स्तरीरुत्वत् ऋ० ७ १०१-३—

उतत्वः पश्यन् ऋ. १०-७१-४—कोई कोई देखता या समझता हुआ भी।

नमन्तामन्यके समे ऋ. ८-३९-१-सभी शत्रुओं को मारें।

सिमस्मै ऋ. १-११५-४—समस्त संसार में।

वासस्तनुते सिमस्मै „ समस्त संसार में वस्त्र (अंधकार) फैलाता है।

स्वाहा=यह देवता के लिए।

एव=निश्चय वाचक अव्यय।

एवम्=इस प्रकार, हाँ।

नूनम्=अवश्य।

ते मित्र सूरिभिः सह ऋ. ७-६६-९—हे मित्रदेव वरुण स्तोता ऋत्विजों के साथ (हम समृद्ध हों।

तन्नेमिमृभवोयथा ऋ. ७-७५-५ —जिस प्रकार ऋभु लोग ( देवों के रथकार ) उस रथ के पास—

यथानो अदितिः करत् ऋ. १-४३-२ —जिस प्रकार पृथिवी देवी ने हमारे लिए किया ।

पटुपटुः=अत्यन्त निपुण ।

प्रप्रायम् ऋ ७-८-४—जिस समय यह ( अग्नि ) ।

दिवेदिवे ऋ १-१-३—प्रतिदिन ।

इति फिट् सूत्राणि

## अथ प्रत्ययस्वराः

अग्निः=आग ।

कर्तव्यम् = करने योग्य ।

यज्ञस्य = यज्ञ का ।

न यो युच्छति ऋ ५-५४-१३—जो कभी नष्ट या क्षीण नहीं होता ।

नभन्तामन्यके समे ऋ. ८-३९-१ —सभी शत्रुओं को मारें ।

यकेसरस्वतीमनु ऋ. ८-१-१८—सरस्वती नदी के तट पर ।

तकत्सु ते ऋ. १-१३३-४—इस तुम्हारे थोड़े से काम को ( बहुत समझते हैं ) ।

कौञ्जायनाः =कुञ्ज की सन्तान ।

यदाग्नेयः=अग्नि की जो सन्तान ।

तिस्रो द्यावः सवितुः ऋ १-३५-६—तीन स्वर्ग हैं उनमें सूर्य के···।

वाचा विरूपः=वाणी से भद्दा ।

राज्ञो नु ते ऋ. १-९१-३— ब्राह्मणों के राजा आपके···।

विधत्ते राजनि त्वे ऋ. ६-१-१३—तुझ राजा के पास बहुत धन है—

न ददर्श वाचम् ऋ. १०-७१-४—वाणी को ( शब्द ब्रह्म को ) नहीं देखा, ज्ञान नहीं प्राप्त किया ।

परमवाचा=उत्तम वाणी से ।

इन्द्रो दधीचः ऋ. १-८४-१३—इन्द्र ने दधीचि की ।

प्रतीचो बाहून् ऋ १०-८७-४—युद्ध के लिए आप की ओर गये हुए राक्षसों की भुजाओं को तोड़ दो ।

प्रष्ठौहः=गाड़ी अथवा हल में निकाला जानेवाला बैल ।

प्रष्ठौहा=गाड़ी अथवा हल में निकाला जाने वाला बैल ।

अक्षद्युवा = जुआरी से ।

अक्षद्युवे=जुआरी के लिए ।

एभिर्नृ भिर्नृ तमः ऋ. ४-१७-११ —पशुओं के श्रेष्ठ पालक इन स्तोताओं द्वारा····।

प्र ते बभ्रू ऋ, ४-३२-२२—तुम्हारे ये दोनों लाल घोड़े····।

माभ्यां गा अनु ऋ. ४-३१-२२—( हे इन्द्र अपने ) इन दोनों घोड़ों के लिए ( हमारी ) गायों को नष्ट न करो ।

पद्भ्यां भूमिः ऋ. १०-६८-६—पैरों से पृथ्वी···।

दद्भिर्न जिह्वा = जिस प्रकार जीभ दाँतों द्वारा....।

अहरहर्जायते मासि मासि ऋ. १०-५२-३—प्रतिदिन तथा प्रतिमास होता है ।

मनश्चिन्मे हृद आ ऋ. १-२४-१२—मेरे मन तथा हृदय से सब तरह से····।

अपां फेनेन ऋ. ८-१४-१३—जल के फेन से···।

अभ्रातेव पुंसः ऋ. १·१२४-७—बिना भाई की स्त्री जिस प्रकार अपने पिता आदि के पास····।

राया वयम् ऋ. ४-४२-१०—हम लोग धन से····।

रायो धर्ता विवस्वतः ऋ.५-१५-१—सूर्य के धन (प्रकाश) को धारण करने वाले ।

उप त्वाग्ने दिवेदिवे ऋ.१-१-३—हे अग्नि प्रतिदिन तुम्हारे समीप····।

अष्टाभिर्दशभिः ऋ. २-१८-४—आठ तथा दस (घोड़ों से) ।

अच्छारवं प्रथमा जानती ऋ. ३-३१-६—उनके शब्द को ( रँभाने को ) पहिले से जानती हुई उनके शब्द के अनुसार''''।

कृण्वते ऋ. ३-२-८०—करनेवाले ।

दधती = धारण करती हुई ।

तुदन्ती = कष्ट देती हुई ।

चोदयित्री सूनृतानाम् ऋ. १-३-११—प्रिय तथा सत्य वाक्यों को प्रेरित करती हुई''''।

एषा नेत्री ऋ. ७-७६-७ – यह ( उषा ) नेत्री'''।

ऋतं देवाय कृण्वते सवित्रे ऋ. २-५०-१—जल बरसाने वाले तथा सबको काम में लगाने वाले''''।

ब्रह्मबन्ध्वा = नीच या पतित ब्राह्मण द्वारा ।

सेत्पृश्निःसुभ्वे ऋ. ६-६६-३—वह पृश्नि (मरुतों की माता) मनुष्यों की उत्पत्ति के लिए'''।

यो अब्दिमाँ उदनिमाँ इयर्त्ति ऋ. ५-४२-१४—जल देनेवाला तथा जल वाला जो ( मेघ ) जाता है ।

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायः ऋ. १०-७१-७ – आँख तथा कान वाले सखा (समान ज्ञानी,''''।

मा त्वा विददिषुमान् ऋ. २-४२-२—बाण वाला खीरा तुमको न पाये ।

मरुत्वानिन्द्रनियुत्वान्वायवागहि ऋ ३-४७-१—हे इन्द्र मरुतों वाला । हे वायु सवारियों के साथ आओ ।

रेवाँ इद्रेवतः ऋ.८-२-१३ – तुम्हारा स्तोता धनवान् हो ।

चेतन्ती सुमतीनाम् ऋ. १०-१०३-८—उत्तम बुद्धिवाले तथा अनुष्ठान करनेवालों को प्रेरणा देनेवाली ।

देवसेनानामभिभञ्जतीनाम् ऋ. १०-१०३-८— शत्रुओं को भयभीत करनेवाली देव सेनाओं के''''।

जयन्तीनां मरुतो यन्तु ऋ. १०-१०३-८—मरुद्गण विजयिनी देव सेनाओं के आगे जायँ ।

आषड्भिर्हूयमानः ऋ. २-१८-४—बुलाये जाने पर छः ( घोड़ों के साथ )''''।

त्रिभिष्ट्वं देव ऋ.९-६७-२६—हे देव ! तुम तीनों (सूर्य, अग्नि, जल) के साथ ।

गवां शता ऋ १-१२२-७—सौ गाय ।

गोभ्यो गातुम् ऋ. ८-४५-३—जल को जाने के लिए'''।

शुनश्चिच्छेपम् ऋ ५-२-७ — शुनः शेप नामक ऋषि को।

तेभ्यो द्युम्नम् ऋ. ५-७९-७ – उनको धन ।

तेषां पाहि श्रुधी हवम् ऋ. १-२-१—उस सोमरस का पान करो और हमारे बुलाने को सुनो ।

द्युभिरक्तुभिः ऋ. १-३४-८—दिन तथा रात से (युक्त, ।

उप त्वाग्ने दिवेदिवे ऋ.१-१ ७—हे अग्निदेव ! तुम्हारे पास प्रतिदिन'''।

नृभिर्येमानः ऋ ९-७५-३ — कर्म करनेवाले ऋत्विजों द्वारा पात्र में रखा गया ( सोम )''''।

क्व नूनम् ऋ. १-३८-२—इस समय तुम लोग कहाँ थे ।

कर्ता = करनेवाला ।

य आस्ते=जो रहता या बैठा ।

अभिचष्टे अनृतेभिः ऋ. ७-१०४-८—झूठी (बातोंवाला) कहता या बनाता हैं ।

पुरुभुजाचनस्यतम् ऋ. १-३-१—लम्बी भुजावाले अथवा अधिक खानेवाले तुम दोनों यथेष्ट भोजन करो ।

वर्धमानं स्वे दमे ऋ. १ १ ८—अपने घर (यज्ञशाला) में बढ़ते हुए को'''।

अभिवृधे गृणीतः ऋ. ३-६-१०—समृद्धि के लिए स्तुति करता है ।

हतो वृत्राण्यार्या ऋ. ६-६०-६—कर्म करनेवालों से किये गये उपद्रवों को ( इन्द्राग्नी नष्ट ) करते हैं,

कतीह निघ्नानाः = यहाँ कितनों को मारते हुए ।

शिश्ये = सो गया ।

ह्नुते=छिपाता है ।

यदधीते=जो पढ़ता है ।

इन्धे राजा ऋ. ७-८-१—राजा ( अग्निदेव ) प्रदीप्त होते हैं ।

यासिष्टं वर्तिरश्विनौ ऋ. ७-४ :-५—हे अश्विनी कुमार ! हमारे घर आओ ।

लुलविथ=घाटा ।

यदाहवनीये=आहवनीय (यज्ञमण्डप में स्थापित पूर्वीय अग्नि) अग्नि में जो····।

इति प्रत्ययस्वराः

## अथ समासस्वराः

यज्ञश्रियम् ऋ. १-४-७—यज्ञ की सम्पत्ति (सोमरस) को····

सत्यश्चित्रश्रवस्तमः=सच्चा तथा सर्वश्रेष्ठ विलक्षण कीर्तिवाला····।

समपादः=बराबर पैर वाला ।

तुल्यश्वेतः पा० २-१-६८=बराबर सफेद ।

किरिकाणः=सूआ अथवा छेनी से काना किया गया ।

पतयन्मन्दयत्सखम् ऋ १-४-७—यजमान के कर्म को पूरा करनेवाले तथा हर्षदायक इन्द्र के मित्र इस सोमरस को···।

शस्त्रीश्यामा=शस्त्र धारण करनेवाली स्त्री ।

अयज्ञो वा एषः ऋ. ६-६७-९—जो यज्ञ नहीं करता ।

स्नात्वा कालकः=समय पर स्नान करनेवाला ।

मुहूर्त्तसुखम्=क्षण भर सुख ।

भोज्योष्णम्=गर्म भोजन ।

कृष्णसारङ्गः=काला तथा चितकबरा मृग ।

लोहितकल्माषः=लाल तथा रङ्गविरङ्ग ।

परमकृष्णः=बिलकुल काला ।

कृष्णतिला=काले तिल ।

कृष्णैतः=काला तथा चितकबरा ।

अरित्रगाधमुदकम्=डाँड़ेभर गहरा जल ।

गोलवणम्=जितना नमक गाय को दिया जाता है उतना नमक ।

परमगाधम्=बहुत गहरा ।

धनदायाद्यः=धन का भाग ।

परमदायादः=उत्तम दायाद ।

गमनचिरम्=देर से जाना ।

व्याहरणकृच्छ्रम्=बोलने में कष्ट ।

मूत्रकृच्छ्रम्=पेशाब करने में कष्ट ।

मूत्रपदेन प्रस्थितः=पेशाव करने के बहाने चला गया ।

उच्चारपदेन=शौच करने के बहाने···।

विष्णुपदम्=विष्णु का स्थान ।

कुटीनिवातम्=कुटी की आड़ या शरण ।

कुड्यनिवातम्=दीवाल की आड़ ।

राजनिवाते वसति=राजा की शरण में रहता है ।

रज्जुशारदमुदकम्=तत्क्षण निकाला गया जल ।

उत्तमशारदम्=उत्तम शरद ऋतु की घास ।

कठाध्वर्युः=कठ शाखा का अध्वर्यु ।

दौवारिककषायः=निम्न श्रेणी की मदिरा ।

परमाध्वर्युः=उत्तम वैदिक ।

पितृसदृशः=पिता के समान ।

परमसदृशः=पूर्ण तथा माननीय ।

प्राच्यसप्तसमः=पूर्व भारत का सात वर्ष का व्यक्ति ।

व्रीहिप्रस्थः=प्रस्थ भर ( दस छटांक ) धान ।

परमसप्तसमम्=उत्तम या पूरे सात वर्ष ।

मद्रवाणिजः=मद्र जनपद का व्यापारी ।

गोवाणिजः=गाय का व्यापारी ।

परमवाणिजः=उत्तम व्यापारी ।

भिक्षामात्रम्=भिक्षा के बराबर ।

पाणिन्युपज्ञम्=पाणिनि द्वारा बनाया गया व्याकरण ।

नन्दोपक्रमम्=नन्द के शासन काल में प्रचलित ।

इषुच्छायम्=वाणों की छाया ।

कुड्यच्छायम्=दीवाल की छाया ।

गमनप्रियम्=जाने का आनन्द ।

गमनसुखम्=जाने का सुख ।

परमसुखम्=अति आनन्द ।

ब्राह्मणसुखं पायसम्=खीर ब्राह्मणों को प्रिय होती है ।

छात्रप्रियोऽनध्यायः=छात्रों को छुट्टी प्रिय होती है ।

राजसुखम्=राजा का सुख ।

गोस्वामी=गायों अथवा इन्द्रियों का स्वामी ।

परमस्वामी=उत्तम स्वामी ।

दमूनागृहपति-

दंभे ऋ. १ ६०-४—दमन करने की इच्छा से गृह रक्षक हो कर यज्ञशाला में ।

भूपतिः=पृथ्वी का स्वामी, राजा ।

वाक्पतिः=वाणी का स्वामी ।

चित्पतिः=ज्ञान का स्वामी ।

दिधिषूपतिः=पुनर्विवाहिता स्त्री का पति ।

भुवनपतिः=लोकों का स्वामी, ईश्वर ।

गमनाशङ्कमस्ति=जाने में डर है ।

गमनाबाधम्=जाने में रुकावट ।

गमननेदीयः=जाना आवश्यक या अनिवार्य है ।

परमनेदीयः=बिलकुल आवश्यक ।

आढ्यपूर्वः=पहिले का सम्पन्न ।

परमपूर्वः=बिलकुल पहिला ।

मद्रसविधम्=मद्र जनपद के समीप ।

गान्धारसनीडम्=गान्धार ( कन्दहार ) के समीप ।

काश्मीरसमर्यादम्=काश्मीर के समीप ।

मद्रसवेशम्=मद्र के समीप ।

मद्रसदेशम्=मद्र के समीप ।

समर्यादं क्षेत्रम्=सीमा या हदबन्दी वाला खेत ।

चैत्रसमर्यादम्=चैत्र का घिरा हुआ या सीमा वाला ।

विस्पष्टकटुकम्=बिलकुल कड़ुआ ।

परमलवणम्=बिलकुल नमकीन ।

विस्पष्टब्राह्मणः=शुद्ध ब्राह्मण ।

गमनश्रेष्ठम्=उत्तम सवारी, गाड़ी ।

गमनज्यायः=उत्तम सवारी, गाड़ी ।

गमनावमम्=खराब सवारी ।

गमनकनिष्ठम्=खराब सवारी ।

गमनपापिष्ठम्=खराब सवारी ।

गमनशोभनम्=सुन्दर सवारी ।

गमनश्रेयः=सुन्दर सवारी ।

कुमारश्रमणा=क्वारी संन्यासिनी ।

कुमारप्रत्येनाः=पाप रहित क्वारी ।

कुमारचातकाः=बच्चा या छोटा पपीहा ।

कुमारजीमूताः=छोटा या हलका बादल ।

पञ्चारत्निः=पाँच अरत्नि ( १ अरत्नि = १½ फुट ) लम्बा ।

दशमास्यः=दस महीने का ।

पञ्चमास्यः=पाँच महीने का ।

पञ्चकपालः=पाँच कटोरों में तैयार किया गया ।

पञ्चभगालः=पाँच खप्परों में तैयार किया गया ।

पञ्चशरावः=पाँच सकोरों में तैयार किया गया ।

पञ्चाश्वः=पाँच घोड़ों से खरीदा गया ।

परमारत्निः=बिलकुल १½ फुट ।

बहुमास्यः=बहुत महीनों का ।

बहुकपालः=अनेक कटोरों में तैयार किया गया ।

पञ्चदिष्टिः=पाँच दिष्टि लम्बा ( दिष्टि = १½ फुट )

पञ्चवितस्तिः=पाँच वितस्ति लम्बा (वितस्ति = १२ अंगुल) ।

सङ्काश्यसिद्धः=सांकाश्य (संकसिया) में तैयार किया गया ।

आतपशुष्कः=धूप में सूखा हुआ ।

भ्राष्ट्रपक्वः=भाड़ में पका हुआ ।

चक्रबन्धः=पहिये में बाँधा हुआ ।

पूर्वाह्णसिद्धः=दोपहर के पहिले तैयार किया गया ।

परित्रिगर्त्तं वृष्टो देवः=त्रिगर्त्त (काँगड़ा) को छोड़कर चारों ओर वर्षा हुई ।

प्रतिपूर्वाह्णम्=हर दोपहर के पहिले ।

प्रत्यपररात्रम्=हर रात के पिछले पहर ।

उपपूर्वरात्रम्=रात के पहिले पहर के लगभग ।

उपत्रिगर्तम्=त्रिगर्त्त ( काँगड़ा ) को छोड़ कर ।

प्रत्यग्नि = प्रत्येक अग्नि में ।

श्वाफल्कचैत्रकाः=श्वफल्क तथा चैत्रक की सन्तान ।

शिनीवासुदेवाः = शिनि तथा वसुदेव की सन्तान ।

द्वैप्यहैमायनाः=द्वीप में होने वाले तथा हैमि की सन्तान ।

संकर्षणवासुदेवौ = बलराम और कृष्ण ।

वृष्णिकुमाराः = यदुवंशियों के लड़के ।

कुरुपञ्चालाः=कुरु तथा पञ्चाल ।

द्वादश = बारह ।
त्रयोदश=तेरह ।
पाणिनीयरौढीयाः=आचार्य पाणिनि तथा रौढि के छात्र ।
पाणिनिदेवदत्तौ=पाणिनि का छात्र तथा देवदत्त ।
छान्दसवैयाकरणः = छन्द तथा व्याकरण के जानने वाले ।
आपिशलिपाणिनीये=आपिशलि तथा पाणिनि द्वारा बनाये गये शास्त्र ।
कार्तकौजपौ=कृत तथा कुजप की सन्तान ।
सावर्णिमाण्डूकेयौ=सवर्ण तथा मण्डूक की सन्तान ।
महाव्रीहिः=उत्तम धान ।
महापराह्णः महागृष्टिः=अपराह्ण का अन्तिम भाग m. w. ।
महागृष्टिः = एक बार ब्याई हुई गाय ।
महेष्वासः=बहुत बड़ा धनुर्धर ।
मयाहैलिहिलः=बहुत चञ्चल, खेलाड़ी या विलासी ।
महद्व्रीहिः=बड़े आदमी का धान ।
क्षुल्लकवैश्वदेवम्=क्षुल्लक तथा वैश्वदेव नामक ग्रह या पात्र ।
महावैश्वदेवम्=महा वैश्वदेव नामक ग्रह या पात्र ।
उष्ट्रसादी=ऊँटों का वध कराने वाला ।
उष्ट्रवामी=ऊँटों को वमन कराने वाला ।
गोसादः = गायों का वध कराने वाला ।
गोसादिः=गायों का वध करानेवाला ।
गोसारथिः=गाय अथवा बैल हाँकने वाला ।
कुरुगार्हपतम्=कुरु जनपद के गृहपतियों की संस्था ।
वृजिगार्हपतम्=वृजि जनपद ( उत्तरी विहार ) के गृहपतियों की संस्था ।
रिक्तगुरुः=खाली रहने पर भी भारी ।
असूतजरती=बच्चा न देने पर भी बुड्ढी ।
अश्लीलदृढरूपा=भद्दी होने पर भी दृढ़रूप वाली ।
पारेवडवा=उसपार में घोड़ी की तरह ।
तैतिलकद्रूः=तितिल की संतानों या छात्रों की तरह ।
पण्यकम्बलः=बिकाऊ कम्बल, जिसकी लम्लाई चौड़ाई तथा मूल्य निश्चित होते थे ।
दासीभारः=दासी का बोझ ।
देवहूतिः=देवों की प्रार्थना या आवाहन ।
सराये सपुरन्ध्र्याम् ऋ. १-५-३—वही धन के लिए तथा स्त्री के लिए (उपयुक्त हो) ।

यूपदारुः=यज्ञ के खम्भे के लिए लकड़ी ।
देवार्थम्=देवता के लिए ।
गोहितम्=गाय के लिए लाभदायक ।
श्रेणिकृताः=पंक्ति बद्ध, पंक्ति बना दी गई ।
पूगकृताः=राशि बनाई गई, एकत्र की गई ।
श्रेणिकृतम्=पंक्ति द्वारा बनाया गया ।
कृताकृतम्=किया गया और न किया गया ।
कष्टश्रितः=कष्ट पाया हुआ ।
ग्रामगतः = गाँव गया हुआ ।
कान्तारातीतः=जंगल के पार या बाहर गया हुआ ।
सुखप्राप्तः=जिसको सुख मिला हो ।
त्वोतासः = तुमसे रक्षा किया गया ।
रुद्रहतः=रुद्र से मारा गया ।
महाराजहतः=महाराज से मारा गया ।
रथयातः=रथ से गया हुआ ।
पुरोहितम् = सामने रखी हुई ।
अभ्युद्धृतः = निकाला गया, उद्धार किया गया ।
दूरादागतः=दूर से आया हुआ ।
अग्ने रायो नृतमस्य प्रभूतौ ऋ. ३-१९-३—हे अग्नि देव ! अधिक धन देनेवाले आप के प्रभाव में ( हम लोग रहें ) ।
सङ्गतिं गोः = गाय का साथ ।
प्रजल्पाकः=अधिक बोलनेवाला ।
प्रकर्ता=उत्तम करने वाला ।
आगन्तुः=आने वाला ।
अन्वेतवा उ य० ३-८-२३—प्रतिदिन आने के लिए—
ये पराञ्चस्तान् ऋ. १-१६४-१९—जो पराङ्मुख हैं उनको ।
प्रत्यञ्चो यन्तु ऋ.१०-१२८-६—(ये शत्रु) भय से चिल्लाते हुए अपने स्थान को लौट जांय—
जहि वृष्ण्यानि कृणुही पराचः ऋ. ६-२५-३–उनकी शक्ति नष्ट करो तथा उन्हें पराजित करो ।
उदञ्चनम् = ऊपर फेंकना, उलीचना, बालटी ।
न्यङ्ङुत्तानः = नीचे मुँह करके लेटा हुआ ।
अध्यङ्=श्रेष्ठ, उत्तम ।
ईषत्कडारः = कुछ भूरा ।
ईषद्भेदः = कुछ या थोड़ा सा अन्तर ।

द्विसुवर्णधनम्=दो सुवर्ण ( ३२ माशा ) धन ।
प्रस्थधनम्=प्रस्थ ( १० छटाँक ) धन ।
काञ्चनधनम् = सुवर्ण धन ।
निष्कमाला=सुवर्ण मुद्रा की माला ।
प्रथमवैयारकणः=जिसने पहले पहल व्याकरण पढ़ना प्रारम्भ किया हो ।
प्रथमो वैयाकरणः=प्रख्यात व्याकरण जाननेवाला ।
कतरकठः = कौन सा कठशाखा का अध्यापक ।
आर्यकुमारः = आर्य ( श्रेष्ठ ) कुमार ।
आर्यब्राह्मणः=श्रेष्ठ ब्राह्मण ।
परब्राह्मणः=अन्य ब्राह्मण ।
आर्यक्षत्रियः=उत्तम क्षत्रिय ।
राजाब्राह्मणः=राजा ब्राह्मण ।
राजकुमारः=राजा कुमार ।
राजप्रत्येनाः=राजा निष्पाप, पाप रहित राजा ।
नित्यप्रहसितः = सदा हँसता हुआ ।
मुहूर्त्तप्रहसितः = क्षण भर हँसने वाला ।
ग्रामनापितः = गाँव का नाई ।
परमनापितः = उत्तम नाई ।
ग्रामरथ्या = गांव की सड़क ।
राजनापितः=राजा नाई, निपुण नाई ।
राजकुलालः=राजा कुम्हार, कुशल कुम्हार ।
राजनापितः = राजा का नाई ।
राजहस्ती = राजा का हाथी ।
मुकुटे कार्षापणम्=प्राच्य भारत में प्रति व्यक्ति लगनेवाला एक विशेष कर ।
हलेद्विपदिका=प्रति हल पर लगने वाला एक कर ।
यासिकाश्वः=यज्ञ करानेवाले को दक्षिणा में दिया जाने वाला घोड़ा ।
वैयाकरणहस्ती = वैयाकरण को उपहार में दिया जानेवाला हाथी ।
स्तम्बेरमः=हाथी ।
कर्मकरवर्द्धितकः=मजदूर को दिया जानेवाला भात का पिण्ड जो नीचे स्थूल तथा ऊपर नोकीला होता था ।
बाडवाहरणम=गर्भवती घोड़ी को खाने के लिए दी जानेवाली वस्तु ।

गोवल्लवः = गाय की देखभाल करनेवाला, चरवाहा ।
गवाध्यक्षः=गाय का निरीक्षक ।
पापनापितः = दुष्टनाई ।
भार्यासौश्रुतः = भार्या के वंश में रहनेवाला सुश्रुत का वंशज ।
कुमारीदाक्षाः=कन्या प्राप्ति के लोभ से दक्ष का छात्र ।
ओदनपाणिनीयाः=भात पाने की आशा से पाणिनि व्याकरण पढ़नेवाला ।
भिक्षामाणवः = भिक्षा प्राप्ति की आशा से ब्रह्मचर्य से रहने वाला ।
भयब्राह्मणः = दण्ड के भय से ब्राह्मण की तरह आचरण करनेवाला ।
दासीश्रोत्रियः=दासी प्राप्ति की आशा से श्रोत्रिय ।
परमब्राह्मणः=उत्तम ब्राह्मण ।
मधुमैरेयः=शहद की शराब ।
परममैरेयः=उत्तम शराब ।
पुष्पासवः = फूलों का आसव ।
भक्तमन्नम्=अन्न ।
भिक्षाकंसः=भिक्षा का पात्र ।
भाजीकंसः = माण का पात्र ।
समाशशालयः = खाने का धान ।
भिक्षाप्रियः = जिसे भीख प्रिय हो ।
धान्यगवः=गाय की तरह अन्न की राशि ।
गोविडालः=गाय की तरह विडाल ।
तृणसिंहः = सिंह की तरह घास की ढेर ।
सक्तुसैन्धवः=नमक की तरह सत्तू ।
परमसिंहः = उत्तम सिंह ।
दन्तलेखकः=दांत साफ करनेवाला ।
रमणीयकर्ता=उत्तम कार्य करनेवाला, सुन्दर कार्य करनेवाला ।
इक्षुभक्षिकां मे धारयसि=तुमको मुझे ईख चुसाना है ।
उद्दालकपुष्पभञ्जिका=प्राच्य भारत का एक खेल जिसमें लिसोड़े के फूल तोड़े या कुचले जाते थे ।
जीवपुत्रप्रचायिका = उदीच्य भारत का एक खेल जिसमें जिया पूता के फूल एकत्र किये जाते थे ।
तवपुष्पप्रचायिका = फूल तोड़ने की तुम्हारी बारी ।
छत्रधारः = छाता लेने या लगानेवाला ।

काण्डलावः = डण्ठल काटनेवाला ।
तन्तुवायः = जुलाहा ।
काण्डलावः=काटने वाला ।
कुम्भकारः = कुम्हार ।
तन्तुवायो नाम कृमिः = तन्तुवाय नाम का कीड़ा, मकड़ा ।
रथकारो नाम ब्राह्मणः = रथकार नाम की ब्राह्मण जाति ।
गोपालः = ग्वाला ।
तन्तिपालः = राज्य की गायों के बड़े झुंड की देख भाल करने वाला ।
यवपालः = यव, जौ की रखवाली करने वाला ।
वत्सपालः = बछड़ों की रखवाली करने वाला ।
गोरक्षः = गायों की रक्षा करने वाला ।
पुष्पहारी = फूल लाने वाला ।
उष्ट्रक्रोशी = ऊँट की तरह बलबलाने वाला ।
ध्वाङ्क्षरावी = कौए की तरह कावें कावें करने वाला ।
वृकवञ्ची = भेड़िये की तरह धोखा देने वाला ।
गर्दभोच्चारी = गधे की तरह रेंकने वाला ।
युक्तारोही=घोड़ों का निरीक्षक ।
आगतयोधी = आये हुए से युद्ध करने वाला ।
क्षीरहोता = दूध का हवन करने वाला ।
कुटीजः = झोपड़ी में उत्पन्न होने वाला ।
काराजः = कारा में उत्पन्न होने वाला ।
तुषजः = कराई ( अलका छिलका ) भुसी में उत्पन्न होने वाला ।
भ्राष्ट्रजः = भाड़ में उत्पन्न होने वाला ।
वटजः = वरगद में उत्पन्न होने वाला ।
उपसरजः = गर्भाधान के लिए पुरुष का स्त्री के पास जाने से उत्पन्न होने वाला ।
आमलकीजः = आँवले से उत्पन्न होने वाला ।
दग्धजानि तृणानि = जलने से उत्पन्न होने वाली घास ।
मल्लग्रामः = पहलवानों का समूह ।
देवग्रामः = देवों का समूह ।
देवस्वामिकः = देवों का समूह ।
दाक्षिग्रामः = जिस गाँव में दक्ष के गोत्रज रहते हों ।
दाक्षिनिवासः=दक्ष के गोत्रजों का निवास ।
दाक्षिघोषः = दक्ष के गोत्रजों का निवास स्थान ।

दाक्षिह्रदः = दक्ष के गोत्रजों का ताल ।
छात्रिशाला = छात्रियों का मकान ।
व्याडिशाला = व्याडियों का घर ।
छात्रिशालम् = छात्रियों का मकान ।
इन्द्रप्रस्थः = पाण्डवों की राजधानी ।
दाक्षिप्रस्थः=दाक्षियों का गाँव ।
कर्कीप्रस्थः = एक नगर का नाम ।
मकरीप्रस्थः= ,, ,,
मालाप्रस्थः = मालपत ।
शोणाप्रस्थः = सोनपत ।
ब्रह्मनगरम्=एक नगर का नाम ।
महानगरम्=एक नगर का नाम ।
नवनगरम्=नया नगर ।
कार्तिकनगरम्=एक नगर का नाम ।
गुप्तार्मम्=एक नगर का नाम ।
कुक्कुटार्मम्= ,,
बृहदर्मम्= ,,
कपिञ्जलार्मम् = ,,
महार्मम् = ,,
नवार्मम्= ,,
भूतार्मम्= ,,
अधिकार्मम् = एक नगर का नाम ।
सञ्जीवार्मम् = ,,
मद्रार्मम् = ,,
अश्मार्मम् = ,,
मद्राश्मार्मम् = ,,
कज्जलार्मम् = ,,

दिवोदासाय दाशुषे ऋ. ४-३०-२०—हव्य देने वाले यजमान दिवोदास को....

सर्वश्वेतः = बिलकुल सफेद ।
सर्वमहान् = सर्व श्रेष्ठ ।
परमश्वेतः = बिलकुल सफेद ।
सर्वसौवर्णः = शुद्ध सोने का ।
सर्वश्वेतः = बिलकुल सफेद ।
अञ्जना गिरिः = एक पर्वत का नाम ।

मौण्डिनिकायः = पर्वत विशेष का नाम ।
परमगिरिः = उत्तम पहाड़ ।
ब्राह्मणनिकायः = ब्राह्मण का घर ।
परमगिरिः = उत्तम पहाड़ ।
ब्राह्मणनिकायः = ब्राह्मण का घर ।
वृद्धकुमारी = वृद्धा स्त्री ।
परमकुमारी = विलकुल क्वारी ।
गुडोदकम् = गुड़ मिला हुआ जल ।
शीतोदकम् = ठंडा जल ।
गर्गत्रिरात्रः = गर्गों का त्रिरात्र नामक यज्ञ ।
अतिरात्रः = रात को विताये हुए ।
बिल्वसप्तरात्रः = वेल के हवन की सात रातें ।
गोपालसभम् = ग्वालों की सभा ।
ब्राह्मणसेनम् = ब्राह्मणों की सेना ।
राजसभा = राजा की सभा ।
रमणीयसभम्, ब्राह्मणकुलम् = सुन्दर सभा वाला ब्राह्मणों का कुल ।
देवदत्तपुरम् = प्राच्य भारत का एक गाँव ।
नान्दीपुरम् = प्राच्य भारत का एक गाँव, नन्दिग्राम ।
शिवपुरम् = उदीच्य भारत का एक गाँव ।
अरिष्टपुरम् = एक नगर का नाम ।
गौडपुरम् = एक नगर का नाम ।
अरिष्टाश्रितपुरम् = एक नगर का नाम ।
गौडभृत्यपुरम् = एक नगर का नाम ।
हास्तिनपुरम् = हस्तिनापुर ।
फलकपुरम् = सम्भवतः जालन्धर जिले का किल्लौर ।
मार्देयपुरम् = जि० बिजनौर का मंडावर ।
कुसूलबिलम् = कोठिले का मुँह ।
कूपबिलम् = कुएँ का मुँह ।
कुम्भबिलम् = घड़े का मुँह ।
शालबिलम् = मकान का मुक्का ।
सर्पबिलम् = साँप का विल ।
कुसूलस्वामी = कठिले का मालिक ।
पूर्वेषुकामशमी = एक गाँव का नाम ।
अपर कृष्णमृत्तिका = एक गाँव का नाम ।
पूर्वपञ्चालाः = पूर्वी पञ्चाल जनपद ।

पूर्वयायातम् = पूर्व में प्रचलित ययाति की कथा । ययाति की प्राचीन कथा ।
पूर्वचानराटम् = चानराट की प्राचीन कथा ।
पूर्वपाणिनीयाः = पाणिनि व्याकरण के प्राचीन आचार्य ।
पूर्वान्तेवासी = प्राचीन छात्र ।
पूर्वपाणिनीयं शास्त्रम् = पाणिनि का प्राचीन व्याकरण शास्त्र ।
सर्वपाञ्चालकः = जिस जनपद में सभी पञ्चाल हों ।
अपर पाञ्चालकः = जिस जनपद में पश्चिमी पञ्चाल हों ।
सर्वभासः = सबको चमकाने वाला ।
सर्वकारकः = सब कुछ करनेवाला ।
विश्वकर्मा विश्वदेवः ऋ. ८–९८–२—विश्वकर्मा तथा विश्वदेव ।
आविश्वदेवम् सप्ततिम् = सत्तर विश्व देवों तक ।
विश्वेदेवाः = विश्वे देव ।
विश्वदेवः = संसार के देवता ।
वृकोदरः = भेड़िये के समान पेटवाला भीम ।
हर्यश्व = जिसका घोड़ा हरा हो, व्यक्ति विशेष का नाम ।
महेषुः = व्यक्ति विशेष का नाम ।
घटोदरः = घड़े के समान बड़ा पेट वाला, निन्दार्थक ।
कन्दुकाश्वः = गेंद के समान छोटा घोड़ा ।
चलाचलेषुः = जिसका निशाना ठीक न हो ।
गार्गीबन्धुः = गर्ग गोत्र की स्त्री जिसकी बन्धु हो ।
ब्रह्मबन्धुः = जिसका बन्धु ब्राह्मण हो ।
गार्गीप्रियः = गर्ग गोत्र की स्त्री जिसको प्रिय हो ।
प्रधौतपादः पा ६–२ १३०—जिसके पैर धुले हुए हों ।
प्रसेवकमुखः पा० ६–२–१३९—जिसका मुँह बोरे की तरह लम्बा हो ।
शुष्कमुखः = सूखे मुँह वाला ।
शुक्लकर्णः = सफेद कान वाला ।
शङ्कुकर्णः = जिसके कान पर वाण या कील का चिह्न हो ।
श्वेतपादः = सफेद पैर वाला ।
शोभनकर्णः = सुन्दर कान वाला ।
मणिकर्णः = जिसके कान पर मणि का चिह्न हो, एक यक्ष का नाम ।
गोकर्णः = गाय के समान कान वाला ।

शितिकण्ठः=नीले कण्ठवाला, महादेव जी।

काण्डपृष्ठः=जिसकी पीठ पर वाण हों, वाण वेचनेवाला ब्राह्मण या सिपाही।

सुग्रीवः=सुन्दर ग्रीवा वाला, वानर-राज का नाम।

नाडीजङ्घः=पतली जाँघ वाला, व्यक्ति विशेष का नाम।

खरकण्ठः=गधे के समान कण्ठवाला।

गोपृष्ठः=गाय के समान पीठवाला।

अश्वग्रीवः=घोड़े के समान ग्रीवावाला।

गोजङ्घः=गाय के समान जाँघवाला।

उद्गतशृङ्गः=जिसके सींग निकल चुके हों, कम अवस्था का बछड़ा।

द्व्यङ्गुलशृङ्गः=दो अंगुल सींग वाला बछड़ा।

ऋष्यशृङ्गः=एक ऋषि का नाम।

मेषशृङ्गः=भेंड़े के समान सींगवाला।

स्थूलशृङ्गः=मोटे सींग वाला।

अजरम्=वृद्ध न होनेवाला।

अमरम्=न मरने वाला।

अमित्रं मर्दय=शत्रु का नाश करो।

श्रवोदेवेष्वमृतम्=देवों को अमरत्व दो।

ब्राह्मणमित्रम्=ब्राह्मण का मित्र।

अशत्रुः=जो शत्रु न हो।

सुकर्माणः सुयुजः ऋ. ४-२ १७—सुन्दर कर्म वाले तथा सुन्दर कान्ति वाले।

स नो वक्षदतिमानः सुब्रह्मा ऋ ६-२२-७—

शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ऋ. १०-८५-४४—पशुओं का कल्याण करो, मन प्रसन्न करो तेज बढ़ाओ।

सुपेशस्करति ऋ १-३५१=सुन्दर रूप या अलंकार वाला बनाओ।

कृतकर्मा=जिसने काम कर लिया हो।

सुराजा=उत्तम राजा।

सुलोमा=अच्छे रोएँ वाला।

सूषाः पा० ६-२-१२७—जिसके लिए प्रातःकाल सुन्दर हो।

सुकर्मकः=अच्छे काम वाला।

सुस्रोतस्कः=उत्तम धारा या प्रवाह वाला।

साम्राज्याय सुक्रतुः ऋ. १-२५-१०—साम्राज्य पाने के लिए सुन्दर काम करने वाला।

सुप्रतीकः=सुन्दर आकार वाला।

सुहव्यः=जिसके लिये हव्य सुन्दर हो।

सुप्रतूर्तिमनेहसम् ऋ १-४०.४—खूब मारनेवाली तथा किसी से न मारे जानेवाली।

अधास्वश्वाः-

सुरथाँ आतिथिग्वे ऋ.८-६८-१६—अतिथिग्व नामक राजा के पुत्र को सुन्दर रथ के साथ घोड़ों को दिया।

या सुबाहुः—जो सुन्दर बाहु वाली।

सुगुरसत्सुहिरण्यः ऋ. १-१२५-२—सुन्दर गाय वाला तथा सुन्दर धन वाला।

सुवीरेण रयिणा ऋ. १०-१२२-३=सुन्दर वीरवाले तथा उत्तम धन वाले के द्वारा।

सुवीर्यस्य गोमतः ऋ. ८-९५-४=सुन्दर शक्ति वाले तथा गाय वाले का।

उपकूलम्=तट के समीप।

उपतीरम्=तट के समीप।

उपतूलम्=रूई के पास।

उपशालम्=मकान के पास।

उपाक्षम्=पासा या धुरे के पास।

सुषमम्=विलकुल समान, बिलकुल सुन्दर।

निःषमम्=शान्ति रहित।

उपकुम्भम्=घड़े के पास।

परमकूलम्=उत्तम किनारा।

द्विकंसः=दो कंस से खरीदा गया (कंस=५ सेर अथवा ६$\frac{3}{4}$ सेर)।

द्विमन्थः=दो मन्थ से खरीदा गया (मन्थ=१० सेर)।

द्विशूर्पः=दो शूर्प से खरीदा गया (शूर्प=१ मन ११ सेर १६ तोला)।

द्विपाय्यम्=दो पाय्य से खरीदा गया (पाय्य=५, ७ या १० सेर)।

द्विकाण्डम्=दो काण्ड से खरीदा गया (काण्ड, १६ हाथ या २७ फुट)।

परमकंसः=उत्तम कंस (५ या ६$\frac{3}{4}$ सेर)।

ब्राह्मणशालम्=ब्राह्मण का घर।

दृढशालम् = मजबूत घर वाला ।
ब्राह्मणकुलम् = ब्राह्मणों का कुल ।
ब्राह्मणसेनम् = ब्राह्मणों की सेना ।
ब्राह्मणशाला = ब्राह्मण का घर ।
सौशमिकन्थम् = उशीनर जनपद के एक नगर का नाम ।
आह्वरकन्थम् = उशीनर जनपद के एक नगर का नाम ।
दाक्षिकन्था=दाची की सुजनी, कथरी ।
चिहणकन्थम् = उशीनर देश के एक नगर का नाम ।
मदुरकन्थम् = उशीनर देश के एक नगर का नाम ।
पुत्रचेलम् = कुपुत्र ।
नगरखेटम् = छोटा नगर ।
दधिकटुकम् = विना स्वाद का दही ।
प्रजाकाण्डम् = कष्ट दायक प्रजा ।
परमचेलम् = उत्तम वस्त्र ।
वस्त्रचीरम् = टुकड़ा सा वस्त्र ।
कम्बलचीरम्=टुकड़ा सा कम्बल ।
परमचीरम् = उत्तम टुकड़ा ।
घृतपललम्=घी मिला हुआ मांस ।
घृतसूपः=घी मिली हुई दाल ।
घृतशाकम्=घी मिला हुआ शाक ।
परमपललम्=उत्तम मांस ।
दाक्षिकूलम् = एक गाँव का नाम ।
शाण्डिसूदम् = एक गाँव का नाम ।
दाण्डायनस्थलम् = ,,
दाक्षिकर्षः = ,,
परमकूलम् = उत्तम तट ।
ब्राह्मणराज्यम्=ब्राह्मण का राज्य ।
परमराज्यम्=उत्तम राज्य ।
कुचेलम् =बुरा वस्त्र ।
कुराज्यम् = बुरा राज्य ।
अर्जुनवर्ग्यः = अर्जुन के वर्ग का ।
वासुदेवपक्ष्यः=वासुदेव के पक्ष का ।
दामवर्ग्यः=उत्तम वर्ग का ।
रपशकिपुत्रः = दाशकि का पुत्र ।
माहिषपुत्रः=माहिष का पुत्र ।
कौनटिमातुलः = कौनटि का मामा ।
दाक्षीपुत्रः=दाक्षी का पुत्र, पाणिनि ।

आचार्यपुत्रः = आचार्य का पुत्र ।
उपाध्यायपुत्रः = उपाध्याय का पुत्र ।
शाकटायनपुत्रः = शाकटायन का पुत्र ।
राजपुत्रः = राजा का पुत्र ।
ईश्वरपुत्रः = स्वामी का पुत्र ।
नन्दपुत्रः = नन्द का पुत्र ।
ऋत्विक्पुत्रः = ऋत्विक् का पुत्र ।
याजकपुत्रः = याजक का पुत्र ।
होतुः पुत्रः = होता का पुत्र ।
श्यालपुत्रः = साले का पुत्र ।
ज्ञातिपुत्रः = सम्बन्धी का पुत्र ।
भ्रातुः पुत्रः = भाई का पुत्र, भतीजा ।
मुद्गचूर्णम् = मूँग का आटा ।
मत्स्यचूर्णम् = मछली का आटा ।
दर्भकाण्डम् = कुश का पर्व ( पोर ) ।
दर्भचीरम् = कुश का टुकड़ा ।
तिलपललम् = तिल और मांस ।
मुद्गसूपः = मूँग की दाल ।
मूलकशाकम् = मूली का शाक ।
नदीकूलम् = नदी का किनारा ।
राजसूदः = राजा का रसोइया ।
दत्तकाण्डम् = देवदत्त का काण्ड एक परिमाण )
दर्भकुण्डम् = कुश की तरह लकड़ी ।
मृत्कुण्डम्=मिट्टी का कुण्डा ।
कुम्भीभगालम् = घड़े का आधा टुकड़ा ।
कुम्भीनदालम् = ,,
कुम्भीकपालम् = ,,
शितिपादः = सफेद या नीले पैर वाला ।
शित्यंसः = सफेद या नीले कंधे वाला ।
शितिककुत् = सफेद या नीले डीलवाला ।
दर्शनीयपादः = सुन्दर पैर वाला ।
शितिभसत् = सफेद या काले रंग का पक्षी ।
प्रकारकः = उत्तमता से कार्य करने वाला ।
प्रहरणम् = शस्त्र ।
शोणा धृष्णू नृवाहसा ऋ. १-६-२—लाल रंग के, ढीठ तथा मनुष्यों को ढोने वाले ।
इध्मप्रव्रश्चनः = कुल्हाड़ी ।

उच्चैः कारम् = उच्च स्वर से ।

ईषत्करः = थोड़ा लाभ पहुँचाने वाला ।

देवस्यकारकः=देव या राजा का कार्य करने वाला ।

वनस्पतिं वन आ ऋ १०-१०१-११—लकड़ी की गाड़ी को लकड़ी पर ।

बृहस्पतिं यः ऋ. ४-५०-७—जो व्यक्ति वड़े लोगों का पालन करने वाले को या बृहस्पति को····

हर्षया ऋ. ८-१५-१३—हर्ष या सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए ( इन्द्र की स्तुति करो. ) ।

शचीपतिम् ,, ,,

तनूनपात् ऋ. ३-२९-११—अग्नि ।

नराशंसं वाजिनम् = मनुष्यों द्वारा प्रशंसनीय घोड़े को···

शुनः शेपम् = शुनशेप नाम के ऋषिको ।

आ य इन्द्रावरुणौ ऋ. ६-६-:१.. हे इन्द्र तथा वरुण जो यह...

इन्द्राबृहस्पती वयम् ऋ. ४-४-९५ – हम लोग इन्द्र तथा बृहस्पति को —

प्लक्षन्यग्रोधौ = गूलर तथा वरगद ।

अग्निष्टोमाः = यज्ञ विशेष ।

इन्द्राग्निभ्यां कं

वृषणः ऋ. १-१०९-३—सपत्नीकय जमान, इन्द्र तथा अग्नि से जिस प्रकार सुख हो ।

द्यावापृथिवीजनयन्

ऋ. १०-६६-९—आकाश तथा पृथ्वी को उत्पन्न करते हुए—

सोमारुद्रौ=सोम तथा रुद्र ।

इन्द्रापूषणौ ऋ ७-३५-१—इन्द्र तथा सूर्य ।

शुक्रामन्थिनौ = शुक्र तथा मंथिन् ।

प्रभृथस्यायोः ऋ. ५-४१-१९—यजमान के यज्ञ की ।

आवसथः = निवास स्थान ।

प्रभेदः = अधिक भेद ।

धर्ता वज्री पुरुष्टुतः-

ऋ. १-११-४ —पालन करने वाले, बज्रधारण करने वाले तथा लोगों से स्तुति किये गये ।

प्रचयः = उत्तम स्थान ।

प्रलवः = काटना ।

प्रलविन्नम् = हँसिया ।

गोवृषः = साँड़ ।

ऋतस्य योनौ सुकृतस्य ऋ. १० ८५-२४—

संस्तुतं भवता = आपने खूब स्तुति की ।

शशप्लुतम् = खरगोश का उछलना ।

उपहूतः शाकल्यः = शाकल्य बुलाया गया ।

परिजग्धः = खाया गया ।

आचितम् = एकत्र किया गया ।

आस्थापितम्=रखा गया ।

प्रवृद्धः = वढ़ा हुआ ।

प्रयुक्तः = मिलाया गया या प्रयोग में लाया गया ।

देवदत्तः=प्रार्थना करने पर देवों से दिया गया, उत्पन्न किया गया व्यक्ति विशेष ।

विष्णुश्रुतः = विष्णु से सुना गया, प्रार्थना सुनने पर विष्णु से उत्पन्न किया गया व्यक्ति विशेष ।

संभूतं रामायणम् = संभूत नामक रामायण ।

देवपालितः = देवों से पालन किया गया ।

संश्रुतः = प्रतिज्ञात ।

देवखाता = देवों से खोदी गयी ।

अनाहतो नदति देवदत्तः = बिना बजाये अर्जुन का देवदत्त नामक शंख बजता है ।

सुप्तप्रलपितम् = सोये हुए व्यक्ति का बकना ।

प्रमत्तगीतम् = मत वाले या पागल का गाना ।

पयःपानं सुखम् = दूध पीना सुखद होता है ।

राजभोजनाः शालयः=राजा के भोजन के योग्य धान ।

हस्तादायः = हाथ से लेना ।

दन्तधावनम्=दातून ।

निदर्शनम् = उदाहरण ।

रथवर्त्म=रथ का मार्ग, सड़क ।

पाणिनिकृतिः=पाणिनि की रचना ।

छन्दोव्याख्यानम्=छन्द की व्याख्या ।

राजशयनम् = राजा का शयन ।

राजासनम्=राजा का आसन ।

अश्वस्थानम् = घोड़े का स्थान ।

ब्राह्मणयाजकः = ब्राह्मण का यज्ञ कराने वाला ।

गोक्रीतः = गाय से खरीदा गया ।

प्रभूतौ सङ्गतिम् = वहुत से लोगों का समूह ।

अध्ययनपुण्यम् =अध्ययन में पुण्य ।

वेदपुण्यम् = वेद से पुण्य ।

माषोनम्=एक माशा कम ।

माषविकलम्=एक माशा कम ।

वाक्कलहः=जबान से लड़ाई, वाग्विवाद ।

धान्यार्थः = अन्न से प्रयोजन ।

तिलमिश्राः = तिल मिला हुआ ।

सर्पिर्मिश्राः = घी मिला हुआ ।

गुडधानाः = गुड़ मिला हुआ भूना जौ ।

तिलसंमिश्रा=तिल मिला हुआ ।

ब्राह्मणमिश्रो राजा = ब्राह्मणों से मिला हुआ राजा, ब्राह्मणों से सहमत राजा ।

अकार्णवेष्टकिकम् = जो कर्णाभरण के उपयुक्त न हो ।

अच्छैदिकः=जो काटने योग्य न हो ।

अवत्सीयः = जो बछड़े के लिए लाभदायक न हो ।

असान्तापिकः = जो कष्ट देने में समर्थ न हो ।

गार्दभरथिकः जो गधे के रथ पर चढ़ने के योग्य हो ।

विगार्दभरथिकः=जो गधे के रथ पर चढ़ने के योग्य न हो ।

अगार्दभरथिकः=जो गधे के रथ पर चढ़ने के योग्य न हो ।

कर्णवेष्टकाभ्यां नसंपादिमुखम्=जो मुँह कर्णाभरण के उपयुक्त न हो ।

अपाणिनीयः=जो पाणिनि का व्याकरण न पढ़ता हो ।

अवोढा = जो विवाह करने योग्य न हो ।

अपाश्या = जो जालों का समूह न हो ।

अदन्त्यम् = जो दाँतों में न हो ।

अपाद्यम्=जो जल पैर धोने योग्य न हो ।

अदेयम्=जो देने योग्य न हो ।

अदन्त्यम् = दन्त्य से भिन्न ।

अपचः = जो पका न सके ।

अपचो जाल्मः=पका न सकने का बहाना करने वाला दुष्ट ।

अविक्षिपः=जो फेंक न सके ।

अदेवदत्तः=जो देवदत्त नाम के योग्य न हो ।

अकर्तव्यः=जो करने योग्य न हो ।

अनागामुकः=जो आने वाला न हो ।

अनलङ्करिष्णुः=जो अलंकृत करने वाला न हो ।

अनाढ्यम्भविष्णुः=जो धनी होनेवाला न हो ।

अचारुः = जो सुन्दर न हो, कुरूप ।

असाधुः=जो सज्जन न हो, दुर्जन ।

अराजा=जो राजा न हो ।

अनहः=जो दिन न हो ।

अकर्ता = जो करने वाला न हो ।

अनन्तम् = जो अन्त न हो ।

अतीक्ष्णम् = जो तेज ( तीखा ) न हो, कुन्द ।

अशुचि = अपवित्र ।

इदंप्रथमः = यही पहिला, जिसका यही पहिला हो ।

एतद्द्वितीयः=यही दूसरा, जिसका यही दूसरा हो ।

तत्पञ्चमः=वही पाँचवां, जिसका वही पाँचवां हो ।

इदं प्रथमः=इससे पहिला ।

यः प्रथमः=जो पहिला, इनका जो पहिला ।

तद्बहुः=इसका वही बहुत ।

इदंप्रथमाः=जिनका यही पहिला है अर्थात् जिनका यह प्रधान है ।

इदंप्रथमाः=जिनका यह प्रधान है ।

इदम्प्रथमकः = जिसका यह पहिला है ।

द्विस्तना = दो स्तन वाली ।

चतुःस्तना = चार स्तन वाली ।

दर्शनीयस्तना=सुन्दर स्तन वाली ।

द्विशिराः = दो सिर वाला ।

द्विस्तनीं करोति वामदेवः = वामदेव, दो स्तन वाली बनाता है ।

चतुःस्तनां करोति द्यावापृथिव्योर्दोहनाय=आकाश तथा पृथ्वी को दूहने के लिए चार स्तनवाली करता है ।

देवमित्रः = व्यक्ति विशेष का नाम ।

कृष्णाजिनम्=काला मृगचर्म ।

प्रियमित्रः = जिसको मित्र प्रिय हो ।

विश्वामित्र ऋषिः=विश्वामित्र ऋषि ।

वस्त्रान्तरः = जिसका व्यवधान वस्त्र हो ।

आत्मान्तरः=जिसका स्वभाव दूसरा हो ।

गौरमुखः = गोरे मुँह वाला ।

दीर्घमुखा शाला=बड़े दरवाजे वाला मकान ।

उच्चैर्मुखः=ऊँचा मुँह वाला ।

प्राङ्मुखः=पूर्व की ओर मुँह वाला ।

गोमुखः=गाय के समान मुँह वाला ।

महामुखः = बड़े मुँह वाला ।

स्थूलमुखः=मोटे मुँह वाला ।

मुष्टिमुखः = मुट्ठी की तरह मुँह वाला ।

पृथुमुखः=चौड़े मुँह वाला ।
प्रक्षालितमुखः = मुँह धोये हुए ।
सिंहमुखः = सिंह के समान मुँह वाला ।
वत्समुखः=बछड़े के समान मुँह वाला ।
सारङ्गजग्धः=जिसने सारङ्ग (पक्षी अथवा मृग) खाया हो ।
मासजातः=महीने भर का, जिसको उत्पन्न हुए एक महीना हुआ हो ।

सुखजातः = सुख से उत्पन्न ।
दुःखजातः = दुःख से उत्पन्न ।
पुत्रजातः = जिसके पुत्र उत्पन्न हुआ हो ।
वस्त्रच्छन्नः = कपड़े से ढका हुआ ।
कुण्डकृतः=कुण्ड में बना हुआ ।
कुण्डमितः=कुण्ड से नापा गया ।
कुण्डप्रतिपन्नः=कुण्ड में पहुँचा हुआ ।
दन्तजातः=जिसके दाँत निकल आये हों ।
मासजातः=महीने भर का ।
अव्रीहिः = जिसके पास धान न हो ।
सुमाषः=जिसके पास उत्तम उड़द हो ।
अब्रह्मबन्धुकः = जिसका बन्धु ब्राह्मण न हो ।
सुकुमारीकः=जिसकी पत्नी सुकुमारी हो ।
अव्रीहिकः = जिसके पास धान न हो ।
सुमाषक = जिसके पास उत्तम उड़द हो ।
अज्ञकः=मूर्ख ।
बहुव्रीहिकः=जिसके पास बहुत धान हो ।
बहुमित्रकः=जिसके बहुत मित्र हों ।
बहुमानः=बहुतों में जिसका सम्मान हो ।
बहुगुणा रज्जुः=बहुत लड़ वाली रस्सी ।
बह्वक्षरं पदम्=बहुत अक्षर वाला पद ।
बह्वध्यायः=बहुत अध्याय वाला ग्रन्थ ।
बहुगुणो द्विजः=बहुत गुण वाला ब्राह्मण ।
प्रपृष्ठः = विशेष प्रकार की या ऊँची पीठ वाला ।
प्रललाटः=उन्नत ललाट वाला ।
दर्शनीयपृष्ठः=सुन्दर पीठ वाला ।
प्रशाखो वृक्षः=ऊँची शाखा वाला वृक्ष ।
उद्बाहुः=ऊपर की ओर बाहु करके ।
विपशुः=जिसके पास उत्तम हँसिया हो ।
तस्येदिमे प्रवणे=उसके इस उत्तम वन में ।
अन्तर्वणो देशः=जिस देश के मध्य में वन हो ।
पर्यन्तः=सीमा, किनारा ।
समन्तः = मिला हुआ, समीपवर्ती ।
न्यन्तः=सामीप्य, निकटता ।
व्यन्तः=अलग, दूरवर्ती ।
परिकूलम्=तटवर्ती भूमि ।
परिमण्डलम्=गोलाकार ।
प्रगृहम्=उत्तम घर ।
प्रपदम्=पैर का चिह्न ।
निरुदकम्=निर्जल ।
निरुपलम्=विना पत्थर का ।
अभिमुखम्=सामने ।
अभिमुखा शाला=सामने वाला मकान ।
अपमुखम्=जिसका मुँह फिरा हुआ हो, विकृत मुँहवाला ।
अपस्फिगम्=जिसका चूतड़ खराब हो ।
अपपूतम्= ,, ,,
अपवीणम्=जिसके पास वीणा न हो या खराब वीणा वाला ।
अपाञ्जः=जिसके पास मलहम न हो, जो ईमानदार न हो ।
अपाध्वम्=खराब मार्ग ।
अपकुक्षिः=विकृत पेट वाला ।
अपसीरम्=जिसके पास बुरा हल हो ।
अपहलम्= ,, ,,
अपनाम=बुरे नाम वाला ।
अधिदन्तः=दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत ।
अधिकरणम्=न्यायालय, विषय ।
अनुज्येष्ठः=जेठे के पीछे चलने वाला ।
अनुकनीयान्=पीछे चलने वाला छोटा भाई ।
अनुज्येष्ठः=पीछे चलने वाला बड़ा भाई ।
अनुपुरुषः=बाद में कहा गया पुरुष ।
अनुपुरुषः=पीछे चलने वाला पुरुष ।
अत्यङ्कुशो नागः=अंकुश के वश में न रहने वाला हाथी ।
अतिपदा गायत्री=अनेक पदवाली गायत्री ।
अतिकारकः=उत्तमता से कार्य करने वाला ।
अतिगार्ग्यः=गर्ग गोत्र में उत्पन्न उत्तम पुरुष ।
अतिकारुकः=कारीगर से बढ़ कर ।
निमूलम्=जिसकी जड़ निकल गई हो अथवा निकली हुई जड़ ।

न्यञ्चम्=निम्न श्रेणी का, नीच।

निदण्ड:=जिसने लाठी रख दी हो, अर्थात् जो शक्ति का प्रयोग नहीं करता m w.।

प्रत्यंशुः=निकली हुई किरण।

प्रतिजनः=शत्रु, प्रतिपक्षी।

प्रतिराजा=शत्रु राजा।

उपदेवः=छोटा देव।

उपेन्द्रः=इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु।

उपाजिनम्=चमड़े पर।

उपगौरः=गया हुआ गौर।

उपतैषः = गया हुआ तैष।

उपसोमः=जिसके पास सोम हो, सोमयाग करने वाला।

सुप्रत्यवसितः=कुशल पूर्वक अपने देश लौटा हुआ, विपत्ति के डर से भाग कर घर आया हुआ।

कुब्राह्मणः-बुरा ब्राह्मण।

कुवृषणम्=उत्तम वृष्टि।

उत्पुच्छः=पूँछ के ऊपर।

उत्पुच्छः = पूँछ ऊपर करके।

द्विपाच्चतुष्पाच्च रथाय ऋ. ४-५१-५—रथ के लिए दो पैर तथा चार पैर वाला।

त्रिपादूर्ध्वः द्विदन्

ऋ. १०-९०-४—ऊपर की ओर तीन पैर तथा दो दाँत वाला।

त्रिमूर्धानं सप्तरश्मिम्

ऋ. १-१४६-१—सवन रूप तीन सिर वाले तथा छन्द रूप सात किरणों वाले को।

द्विमूर्धः=दो सिर वाला।

त्रिमूर्धः=तीन सिर वाला।

कल्याणमूर्धा=शुभ उत्तम सिर वाला।

द्विमूर्धा=दो व्यक्तियों का सिर।

गौरसक्थः=गौर वर्ण की जाँघ वाला।

श्लक्ष्णसक्थः=चिकनी जाँघ वाला।

चक्रसक्थः=ऐंठी हुई या चौड़ी जाँघ वाला।

अजिसक्थमालभेत=बकरे की जाँघ को काटना चाहिए।

तुविजाता उरुक्षया ऋ. १-२-९—बहुतों के उपकार करने के लिए उत्पन्न।

नियेन मुष्टिहत्यया ऋ. १-८-२—जिस धन से घूसों या मुक्कों की मार से।

यस्त्रिचक्र ऋ १-१८३-१—जो तीन पहिये वाला है।

विश्वायुर्धेहि=सबको आयु दो।

इति समासस्वराः

## अथ तिङन्तस्वराः

पचतिगोत्रम्=अपने कुल को कष्ट देता है।

पचति पचतिगोत्रम्=विवाह आदि में अपने कुल को बारवार सुखो करता है।

पचति पापम्=बुरी तरह पकाता है।

खनति गोत्रं समेत्य कूपम्=अपने कुल को एकत्र कर कुआँ खोदता है।

अग्निमीळे ऋ. १-:-१—अग्नि की स्तुति करता हूँ।

श्वः कर्ता=कल करेगा।

यदग्नेस्यामहं त्वम् ऋ. ८-४४-२३—हे अग्नि, यदि मैं धनवान् हो जाऊँ।

युवायदाकृथः ऋ. ५-७४-५—जब तुम दोनों करते हो।

कुविदङ्ग आसन् ऋ. ७-९१-१—अच्छी तरह प्रशंसनीय थे।

अचित्तिमिश्चकृमा कच्चित् ऋ. ४-१२-४—हे अग्नि! यदि हमने अज्ञान से कोई पाप या अपराध किया हो।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति ऋ. १-८९-९— जहाँ पुत्र हमारे रक्षक होते हैं।

न ह मोक्ष्यसे=नहीं, तुमको खाना पड़ेगा।

न ह वै तस्मिन् लोके दक्षिणामिच्छन्ति=वास्तव में उस लोक में वे दक्षिणा नहीं चाहते।

सत्यं भोक्ष्यसे=क्या तुम वास्तव में खाओगे।

सत्यमिद्वा उतं वयमिन्द्रं स्तवामा=वास्तव में हमको उस इन्द्र की स्तुति करनी चाहिए।

अङ्ग कुरु=हाँ तुम करो या बनाओ।

अङ्ग कूजसि वृषल इदानीं ज्ञास्यसि जाल्म=अच्छा दुष्ट तुम बको, शीघ्र ही तुमको मालूम हो जायगा।

आ हि ष्मा याति ऋ. ४-२९-२—आवें।

आ हि रुहन्तम् ऋ. ८-२२-९-अधिवृढ्य (रथपर) चढ़ो।

अनृतं हि मत्तो वदति पाप्मा चैनं पुनाति=चूँकि मतवाला असत्य बोलता है इसलिए उसे पाप लगता है।

यथा चित्कण्वमावतम्=जिस किसी तरह कण्व की रक्षा करो।

यावत्पचति शोभनम्=जब तक अच्छी तरह पकाता है।

यथापचति शोभनम्=जैसे अच्छी तरह पकाता है।

यावद्भुङ्क्ते=जब तक भोजन करता है।

यावद्देवदत्तः प्रपचति शोभनम्=जब तक देवदत्त अच्छी तरह पकाता है।

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेनिरे ऋ. १-६-४—(मरुद्गण ने) वर्षा के बाद पुनः अन्न उत्पन्न करने के लिये मेघ को प्रेरित किया।

अहो देवदत्तः पचति शोभनम्=हर्ष की बात है देवदत्त अच्छी तरह पकाता है।

अहो कटं करिष्यति=हर्ष की बात है वह चटाई बनायेगा।

अधीष्व माणवक पुरा विद्योतते विद्युत्=माणवक शीघ्रता से पढ़ो, सामने बिजली चमकती है।

न तेनस्म पुराधीयते=वे बहुत पहले पढ़ते थे।

ननु गच्छामि भोः=महाशय, मैं जा सकता हूँ?

अकार्षीः कटं त्वम्=क्या तुमने चटाई बनाई?

ननु करोति=हाँ, बनाता हूँ।

किंद्विजः पचति आहोस्विद् गच्छति=क्या ब्राह्मण पकाता है या जाता है।

किं भक्तं पचति अपूपान् वा=क्या भात पकाता है अथवा पूआ?

किं पठति=क्या पढ़ता है अर्थात् कुछ नहीं पढ़ता।

किं प्रपचति उत प्रकरोति=क्या,वह पकाता है या बनाता है।

किं द्विजो न पचति=क्या ब्राह्मण नहीं पकाता।

देवदत्तः पचति आहोस्वित्पठति=देवदत्त पकाता है या पढ़ता है।

एहि मन्ये भक्तं मोक्ष्यसे भुक्तं तदतिथिभिः=आओ, मैं समझता हूँ कि भात खाओगे; परन्तु उसे तो अतिथियों ने खा लिया।

एहि मन्यसे ओदनं मोक्ष्ये इति सुष्ठु मन्यसे=आओ, तुम समझते हो भात खाऊँगा, ठीक ही समझते हो।

जातु भोक्ष्यसे=कभी भोजन करोगे।

कटं जातु करिष्यसि=कभी चटाई बनाओगे।

कश्चिद् भुङ्क्ते=कोई भोजन करता है।

कतरश्चित्=दोनों में से एक।

कतमश्चिद्वा=उन सब में से एक।

को भुङ्क्ते=कौन भोजन करता है।

रामः किञ्चित्पठति=राम कुछ पढ़ता है।

आहो उताहो वा भुङ्क्ते=क्या वह भोजन करता है?

देव आहो भुङ्क्ते-क्या महाराज भोजन करते हैं?

आहो देवः पचति=क्या महाराज पकाते हैं?

आगच्छ देव ग्रामं द्रक्ष्यसे तम्=हे देव, आइये आप उस गाँव को देखेंगे।

उह्यन्तां देवदत्तेन शालयो रामेण मोक्ष्यन्ते-देवदत्त धान को ढोवे, राम उसको खायगा।

पच देव ओदनं मोक्ष्यसेऽन्नम्=हे देव भात पकाइये, आप उसको खायेंगे।

आगच्छ देव ग्रामं द्रक्ष्यस्येनम्=हे देव आपको गाँव से आना चाहिए, उनको देखियेगा।

आगच्छ देव ग्रामं
पिता ते ओदनं मोक्ष्यते=हे देव, गाँव में आइये, आप के पिता भात खायेंगे।

आगच्छ देव ग्रामं त्वं
चाहं च द्रक्ष्याव एनम्=हे देव, गाँव में आइये, हम दोनों उसको देखेंगे।

आगच्छ देव ग्रामं पश्य=हे देव, आइये, गाँव को देखिये।

पच देवौदनं भुङ्क्ष्वैनम्=हे देव, भात पकाइये और उसको खाइये।

आगच्छ देव ग्रामं पश्यसि=हे देव, आइये, गाँव को देखते हैं।

आगच्छ देव ग्रामं पश्यत्वेनं रामः=हे देव, गाँव आइये, राम उसको देखें।

आगच्छ देव ग्रामं त्वं
चाहं च पश्यावः=हे देव, गाँव आइये, हम और तुम उसको देखें।

आगच्छ देव ग्रामं प्रविश=आइये देव, गाँव में चलिये।
आगच्छ देव ग्रामं पश्य=आइये देव, गाँव को देखिये।
आगच्छानि देव
ग्रामं प्रविशानि=हे देव, मैं आऊँ और गाँव में प्रवेश करूँ।
हन्त प्रविश=हाँ, प्रवेश करो।
हन्त कुरु=हाँ, करो, बनाओ।
हन्त प्रभुञ्जावहै=हाँ हम दोनों भोजन करें।
आम् पचसि देवदत्त३=देवदत्त ! पकाते हो।
आम् प्रपचसि देवदत्त=देवदत्त पकाते हो।
आम् पचति देवदत्तः=हाँ देवदत्त पकाता है।
आम् पचसि देवदत्त=हे देवदत्त, पकाते हो ?
उदसृजो यदङ्गिः=हे अंगिरा, तुमने जो त्यागा।
उशन्ति हि ऋ. १-२-४—क्योंकि ( सोम ) तुम दोनों को चाहते हैं।
आख्यास्यामि नु ते=तुमसे कहूँगा।
जाये स्वारोहावेति=श्रीमती जो, आइयें, हम दोनों स्वर्ग चलें।
देवः पचतिचन=देवदत्त, क्या पकाता है अर्थात् कुछ नहीं पकाता है ( घृणा )।
देवः पचतिचित्=देवदत्त क्या पकाता है अर्थात् कुछ नहीं पकाता है ( घृणा )।
देवः पचतीव=देवदत्त पकाता सा है।
देवः पचतिगोत्रम्=देवदत्त, कुटुम्ब को कष्ट देता है।
देवः पचतिकल्पम्=देवदत्त पकाता सा है।
देवः पचति पचति=देवदत्त, बारबार पकाता है।
देवः प्रपचतिचन=देवदत्त क्या पकाता है।
देवः पचतिच खादतिच=देवदत्त पकाता और खाता है।
देवः प्रपचति च प्रखादति च=देवदत्त पकाता और खाता है।
गाश्च चारयति वीणां वादयति=गाय चराता है और वीणा बजाता है।
इतो वा सातिमीमहे=अथवा इस जगत् से हम धन दान की याचना करते हैं।
स्वयं रथेन याति३=स्वयं तो रथ से जाता है।
उपाध्यायं पदातिं गमयति=आचार्य को पैदल चलाता है।
त्वमह ग्रामंगच्छ=तुम गांव जाओ।
स्वयं ह रथेन याति उपाध्यायं पदातिं गमयति=स्वयं रथ से जाता है और आचार्य को पैदल चलाता है।
देव एव ग्रामं गच्छतु=देव ही गाँव जायें।
राम एवारण्यं गच्छतु=राम ही वन जायें।
देव एव ग्रामं गच्छतु=देव ही गाँव जाय।
देव एवारण्यं गच्छतु=देव ही वन में जाय।
देव क्वेवमोध्यसे=देव कहीं भोजन करेगा।
इन्द्र वाजेषु नोऽव=हे इन्द्र युद्ध में हमारी रक्षा करो।
शुक्ला व्रीहयो भवन्ति= धान सफेद होता है।
श्वेता गा आज्याय दुहन्ति-घी के लिए सफेद गाय दुहता है।
व्रीहिभिर्यजेत=धान से यज्ञ करना चाहिये।
यवैर्यजेत=जौ से यज्ञ करना चाहिये।
अहर्ँ देवानामासीत्=देवों का साफ साफ दिन था।
अयं वाव हस्त आसीत् = यह प्रसिद्ध हाथ था।
अजामेकां जिन्वति ऋ. १-१६४-२०—दूसरी बकरी को पसन्द करता है।
प्रजामेकां रक्षति = दूसरी प्रजा की रचा करता है।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति=उनमें से एक (जीवात्मा) स्वादिष्ट पीपल का फल खाता है।
एको देवानुपातिष्ठत्=एक देवों के समीप गया।
योभुङ्क्त ऋ १० १२१-१०—जो भोजन करता है।
यदङ्गचङ्वायुर्वाति तै० सं० व० ५-१ १—
काष्ठाध्यापकः=काष्ठ शाखा का ऊध्यापक।
दारुणाध्यापकः=कठोर अध्यापक।
अज्ञाताध्यापकः = अपरिचित अध्यापक।
यत्काष्ठं प्रपचति = जिस लकड़ी को पकाता है।
यत्काष्ठां शुक्लीकरोति = जिस लकड़ी को सफेद करता है।
पचतिपूति=बुरी तरह पकाता है।
पचति मिथ्या=व्यर्थ पकाता है।
प्रपचति पूति=बुरी तरह पकाता है।
प्रपचति शोभनम् = अच्छी तरह पकाता है।
पचति क्लिश्नाति=पकाता और दुःखी होता है।
पचति गोत्रम्=कुटुम्बी को कष्ट देता है।
पचतिपूतिर्देवदत्तः=देवदत्त बुरी तरह पकाता है।
पचन्तिपूति=बुरी तरह पकाते हैं।
दत्तः पचति-दत्त पकाता है।
आमन्द्रैरिन्द्रहरिभिर्याहि मयूररोमभिः=हे देव, मतवाले तथा मोर के रंग की तरह के घोड़ों से आओ।
यत्प्रपचति=जो पकाता है।
प्रपचति=पकाता है।
अग्निमीळे पुरोहितम् यज्ञस्य होतारम्
रत्नधातमम् ऋ. १-१-१—मैं यज्ञ के पुरोहित, होता तथा रत्न धारण करने वाले (दीप्तिमान्) अग्निदेव की स्तुति करता हूँ।

इति तिङन्तस्वराः

इति स्वरप्रकरणम्

# शब्दानुक्रमणी

# शुद्धि-पत्र

| पृष्ठ | स्तम्भ | पंक्ति | मुद्रित | पढ़िये |
|---|---|---|---|---|
| २ | १ | ३६ | आयेतस्तु | आयतस्तु |
| ५ | २ | ५ | चाइकन्द | यारकन्द |
| ६ | २ | २६ | ऊँच | ऊँछ |
| ७ | १ | १६ | सिरस | सिरसा |
| ९ | १ | ३४ | सौवीराजन | सौवीराञ्जन |
| ९ | २ | १३ | कलिङ्गाभिमुखे | कलिङ्गाभिमुखो |
| ११ | १ | २४ | कह्वपेमंगा | कह्णपेमगा |
| १२ | २ | ३५ | मान | नाम |
| १३ | २ | २२ | नर्मना | नर्मदा |
| १६ | २ | ३५ | दात्राभित्री | दात्तामित्री |
| २५ | २ | १४ | वूलूर | वूलर |
| २६ | १ | १९ | हुंगा | हुंजा |
| २९ | २ | २२ | अमुत्रासन | अमुत्रासन् |
| ३० | १ | १ | कन | कर्न |
| ३२ | २ | १६ | द्वार | द्वारा |
| ३३ | २ | १८ | पश्चिमी | पश्चिम |
| ३३ | २ | २० | हृषद्वती | दृषद्वती |
| ३६ | १ | १५ | रथस्था | रथस्या |
| ४० | १ | ३३ | मानता | माना |
| ४१ | १ | ३० | आधार | आधार पर |
| ५७ | २ | ४ | बसाये | बसाये गये |
| ५७ | २ | २० | तत्सम | तद्भव |
| ५८ | १ | १९ | गोवंश | जो वंश |
| १ | १ | १७ | ताम्रा | ताँवा |
| १ | २ | १ | रथां | रथों |
| २ | १ | २० | दृड | दृढ |
| ४ | २ | ३५ | पुरुष का दूध | जिस दूध का स्वामी पुरुष हो |
| ६ | २ | २० | अघो | अघो |
| ९ | २ | २६ | करभः | करभूः |
| १३ | १ | २४ | पाला | वाला |
| १३ | २ | १४ | घृतस्पक् | घृतस्पृक् |
| १६ | १ | ११ | श्रोषद् | श्रौषट् |

| पृष्ठ | स्तम्भ | पंक्ति | मुद्रित | पढ़िये |
|---|---|---|---|---|
| १६ | २ | २५ | कञ्चित् | कच्चित् |
| १७ | २ | २८ | भस्त्रफला | भस्त्राफला |
| १९ | १ | २७ | सेर सेर | ५ सेर |
| १९ | २ | ३३ | कुट | फुट |
| २२ | २ | ३० | तागों | नागों |
| २४ | २ | ४ | जरते | करते |
| २६ | २ | २७ | हिलते | छिपते |
| २७ | १ | १२ | पूर्व या भाग | पूर्व भाग |
| २७ | १ | २० | के | को |
| २७ | १ | २७ | शतने | शतेन |
| २९ | २ | २३ | वैठ | वैठे |
| ३० | १ | ४ | यथेष्ठ | यथेष् |
| ३१ | १ | १२ | निर्गुण | निर्जन |
| ३१ | १ | १७ | वाते | वर्तते |
| ३१ | २ | ९ | मलिन | मुक्ति |
| ३२ | १ | २५ | ग्रामगमी | ग्रामंगमौ |
| ३२ | २ | ९ | समिधि | समिधा |
| ३२ | २ | ३० | पा गया | पगाया |
| ३३ | १ | २० | चोरसयम् | चोरभयम् |
| ३३ | १ | २३ | वृकमीः | वृकभीः |
| ३९ | २ | २३ | भोली और मोरन | मुरगा और मोरनी |
| ४१ | २ | ४ | हो | हों |
| ४२ | २ | २२ | है | समझतो है |
| ४३ | १ | ३० | द्वयाङ्गुला | द्वयङ्गुला |
| ४५ | २ | १२ | से | सी |
| ४६ | १ | १७ | उदारता | उद्गाता |
| ४८ | २ | ३ | दिवस्पृथि-व्योरातिम् | दिवस्पृथि-व्योररतिम् |
| ४८ | २ | २९ | मरती | मोरनी |
| ४९ | २ | ६ | कटप्रः | कटप्रूः |
| ५० | १ | १९ | गोदारी | गोदावरी |
| ५१ | १ | ५ | प्राचो | प्राच्वो |

| पृष्ठ | स्तम्भ | पंक्ति | मुद्रित | पढ़िये |
|---|---|---|---|---|
| ५२ | १ | १२ | मध्ये | मध्य |
| ५३ | १ | २२ | ब्रह्मणी | ब्राह्मणी |
| ५४ | १ | ७ | पलिष्क: | पन्लिष्क: |
| ५४ | १ | १९ | उदकपर्व: | उदकपर्वत: |
| ५४ | २ | ३१ | कलल | कमल |
| ५५ | १ | २१ | समझाने | समझने |
| ५५ | १ | ३० | झंड | झुण्ड |
| ५५ | २ | ३३ | ज्याष्टोम: | ज्योतिष्टोम: |
| ५६ | १ | ३१ | कदन्तम् | कदन्नम् |
| ५६ | १ | ३२ | का | वाला |
| ५८ | २ | १६ | आश्चर्यं | आचर्यं |
| ५८ | २ | २५ | विकर: | विकिर: |
| ६२ | २ | २९ | सहादेव: | साहदेव: |
| ६३ | १ | ५ | न हो | हो |
| ६५ | १ | १३ | नपित्य: | नापित्य: |
| ६५ | १ | २३ | कार्त्र्यायिणि: | कार्मायायिणि: |
| ६५ | १ | २६ | कार्त्रयणि: | कार्त्र्यायणि: |
| ६६ | २ | ११ | धौढयायनि: | धौडयायनि: |
| ६६ | २ | १२ | व्याढयायनि: | व्याडयायनि: |
| ६७ | २ | १ | वसिष्ठं | वासिष्ठं |
| ७१ | २ | १४ | वामरथ्य: | वामरथा: |
| ७१ | २ | १४ | वामरथ | वामरथ्य |
| ७२ | १ | २२ | रुनवाया | वनवाया |
| ७२ | २ | ९ | जपपद: | जनपद: |
| ७३ | २ | २३ | घोरवंद | पोरवन्द |
| ८० | २ | ९ | छन्दा | छन्द: |
| ८१ | १ | ४ | वदम् | वैदम् |
| ८१ | २ | २४ | तारि | तारिम |
| ८२ | २ | १० | वृटरों | मधुमक्खियों |
| ८३ | २ | १७ | केथे | कैथे |
| ८३ | २ | २६ | का | की |
| ८४ | १ | १६ | चावक: | यावक: |
| ८५ | १ | ८ | स्वागतिक | स्वागतिक: |
| ८५ | २ | २० | श्वामास्त्रि: | श्वाभस्त्रि: |
| ८७ | १ | ११ | ने | से |
| ८७ | २ | ६ | मुचंग | मृदंग |
| ९१ | २ | १२ | सौर्पम् | शौर्यम् |
| ९१ | २ | २३ | पाँचकलापिकम् | पाँञ्चकलायिकम् |
| ९१ | २ | २३ | कलाप | कलाय |
| ९५ | १ | ६ | नियुक्ति | नियुक्त |
| ९७ | १ | १ | जो चतुर | मूर्खता |
| ९७ | १ | २ | जो संगत | असंघीय |
| ९७ | १ | ५ | जो नमकीन | कुरूपता |
| ९७ | १ | ४ | आलसीका स्वभाव | फीकापन |
| ९७ | १ | १० | मौडचम् | मौढचम् |
| ९७ | १ | २० | समीप्यम् | सामीप्यम् |
| ९८ | १ | २५ | उभ्यम् | उर्म्यम् |
| ९९ | १ | २७ | वउवा | वडवा |
| १०० | १ | २ | उष्ट्रीयुगम् | उष्ट्रगोयुगम् |
| १०३ | २ | २६ | रसिकतावान् | सिकतावान् |
| १०४ | १ | २७ | तमिस्र | तमिस्रा |
| १०४ | २ | २७ | शीतालु | शीतालु: |
| १०५ | १ | ८ | विगापठ | विजायठ |
| ११० | २ | १७ | काकातालीय: | काकतालीय: |
| ११२ | १ | २५ | भूरिवारात् | भूरिवारान् |
| १४१ | २ | २९ | अबभाजत् | अवभ्राजत् |
| १४४ | २ | १७ | सुष्वापायिषति | सुष्वापयिषति |
| १७० | १ | १ | मेघकर: | मेघंकर: |
| १७० | २ | २९ | कपटघ्न: | कपाटघ्न: |
| १९५ | १ | १७ | आपृच्छय | आपृच्छयं |
| १९५ | १ | ३४ | मघोनाम् | मघीनाम् |
| १९६ | १ | ३३ | मोयास: | मोभयास: |
| १९७ | १ | १४ | तेरुषम | तरुषेम |
| १९९ | १ | २४ | धानदतो | नानदतो |
| १९९ | १ | २७ | निधिष | निधिषु |
| १९९ | २ | १८ | यस्वे | यस्ये |
| २२२ | १ | २८ | यासिकाश्व: | याज्ञिकाश्व: |
| २२२ | १ | ३५ | बाडवा | वाडव |
| २२४ | १ | २६ | किल्लौर | फिल्लौर |
| २२६ | १ | ३४ | रपशाकि | दाशाकि |